सञ्चालकीय वक्तव्य

कविया करणीदानजी कृत सूरजप्रकासके प्रथम भागका प्रकाशन राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालामें गत वर्ष हो चुका है। अब इस ग्रन्थका द्वितीय भाग भी उक्त ग्रन्थमालाके ग्रन्थाङ्क ५७के रूपमें उत्सुक पाठकोंको प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस भागमें जोधपुरके महाराजा गजसिंह, जसवन्तसिंह, अजीतसिंह और अभयसिंहके शासनकालका वर्णन है, जिससे अनेक नवीन ऐतिहासिक तथ्योंका सङ्केत मिलता है। इसी भागमें महाराजा अभयसिंह और सरबुलंदखांके बीच हुए अहमदाबाद-युद्धके कारण भी बताए गए हैं। चारणकुलोत्पन्न महाकवि करणीदानजी कविया महाराजा अभयसिंहके प्रमुख दरबारी कवि थे, अतएव प्रस्तुत ग्रन्थमें वर्णित तथ्य अधिकांशमें विश्वसनीय कहे जा सकते हैं। करणीदानजी अपने युगके विशेष प्रतिभासम्पन्न, अनुभवी और विद्वान् कवि थे, जिनका परिचय पाठकोंको प्रस्तुत काव्यसे स्वतः ही प्राप्त हो जायगा।

सूरजप्रकासका सम्पादन, वृहत् राजस्थानी शब्द-कोशके कर्ता व राजस्थानके विशिष्ट विद्वान् श्री सीतारामजी लाळसने निर्दिष्ट प्रणालीके अनुसार परिश्रमपूर्वक किया है, तदर्थ वे धन्यवादके पात्र हैं।

महाराजा अभयसिंह और सरबुलंदखांके बीच हुए अहमदाबाद-युद्धका ओजस्वी वर्णन और ग्रन्थ-सम्बन्धी विशेष ज्ञातव्य आदि विस्तृत रूपमें यथाशक्य शीघ्र ही ग्रन्थके तृतीय भागमें प्रकाशित किये जावेंगे।

राजस्थानी भाषाके प्रस्तुत ग्रन्थका प्रकाशन भारत सरकारके वैज्ञानिक और सांस्कृतिक मन्त्रालयके आर्थिक सहयोगसे आधुनिक भारतीय भाषा-विकास-योजनाके अन्तर्गत किया जा रहा है, तदर्थ हम भारत सरकारके प्रति आभारी हैं।

ता० १४-३-६२
सर्वोदय साधना आश्रम,
चन्देरिया, चित्तौड़, मेवाड़

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक
राजस्थान प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान
जोधपुर

विषय - सूची

भूमिका—ग्रन्थ-सार

सातमों प्रकरण

परिशिष्ट

ग्रन्थ-सारांश

चतुर्थ प्रकरण

महाराजा गजसिंह—

महाराजकुमार गजसिंहको जोधपुरमें यह संदेश प्राप्त हुआ कि उनके पिता सवाई राजा सूरसिंह दक्षिणमें रोग-ग्रसित हो गये हैं तो वे जोधपुरकी शासन-व्यवस्थाका भार अपने विश्वासपात्र मंत्रियोंको सौंप कर तुरन्त ही दक्षिणकी ओर रवाना हो गये। उनके वहां पहुँचनेके पूर्व ही सवाई राजा सूरसिंहका देहावसान हो गया था।

इस घटनाके पश्चात् बादशाहकी आज्ञासे दक्षिणमें ही बुरहानपुरमें महाराज-कुमार गजसिंहके राज्याभिषेकका दस्तूर खाँनखाँनाके पुत्र दौराबखांने किया। इस अवसर पर दौराबखाँने इनकी कमरमें तलवार बांधी और बादशाहकी ओर से भेजे हुए उपहार भेंट किये। बादशाहकी ओर से इस प्रकार सम्मानित होने पर दक्षिणमें बादशाहके सभी विपक्षी महाराजा गजसिंहके शौर्य और पराक्रमसे आतंकित हो गये।

राज्याभिषेकके कुछ ही दिन पश्चात् महाराजा गजसिंहने दक्षिणमें महकर नामक स्थान पर अमरचंपूकी बहुत बड़ी सेनाका मुकाबिला किया। भयंकर युद्ध हुआ। महाराजा गजसिंहने बड़ी वीरता दिखाई, अमरचंपू पराजित हो गया। महाराजाने बादशाही राज्यका खूब विस्तार किया। दक्षिणके खिड़की-गढ़, गोलकुंडा, आसेर, सितारा आदिको विजय कर बादशाही राज्यमें मिला दिया। बादशाह इन पर बहुत प्रसन्न हुआ और इन्हें 'दळथंभण'(न)की उपाधिसे विभूषित किया। इसके अतिरिक्त कई छोटे वड़े प्रान्त दे कर इनके राज्यकी वृद्धि की। इसके पश्चात् महाराजा गजसिंह कुछ समयके लिये अपने राज्य मारवाड़में लौट आये।

तत्पश्चात् शाहजादा खुर्रम किसी घरेलू घटनाके कारण अपने भावी भाग्यके विषयमें संदेह करने लगा। उसे यह भय हो गया कि बादशाह जहांगीर नूरजहांके हाथकी कठपुतली है और वह परवेजको ही जहांगीरके बाद बादशाहके रूपमें दिल्ली के सिंहासन पर आरूढ़ करना चाहती है। इसके अतिरिक्त महाराजा गजसिंहकी असीम शक्तिके कारण दक्षिणमें भी

वादशाही आतंक पूर्ण रूपसे फैला हुआ है। अतः वह अपने भाग्य-निर्माणके हेतु कोई उपाय सोचने लगा।

खुर्रमने अपनी कार्य-सिद्धिके लिए दक्षिणमें वहुत वड़ी सेना तैयार की। उसने वादशाहको सिंहासनसे च्युत करनेकी ठान ली और स्वयमेव वादशाह वननेकी प्रवल आकांक्षाके साथ दक्षिणसे दिल्लीकी ओर कूच किया।

कुछ समय पश्चात् मेवाड़का भीम शिशोदिया भी जो अपने समयका महान् शक्तिशाली वीर था, खुर्रमकी सहायताके लिये अपनी २५ हजार सेना सहित आ मिला।

जव वादशाह जहांगीरको खुर्रमके इस कुकृत्यका पता चला तो वह वहुत दुखी हुआ। उसने अपने मानकी रक्षार्थ और इस विषम संकटको टालनेके लिए राजपूत राजाओंको वुलाया। इस अवसर पर महाराजा गजसिंह भी अपनी सेना ले कर दिल्ली पहुँचे। वादशाहने आये हुए समस्त राजपूत राजाओंको शाहजादे परवेज़के साथ एक वहुत वड़ी सेना दे कर खुर्रमका सामना करने भेजा। इस समय आमेरके मिर्जा राजा जयसिंहके पास वहुत वड़ी सेना थी अतः वादशाहने उन्हींको सेनापतिका पद सौंपा। वीरवर महाराजा गजसिंहको यह वात कुछ कटु लगी, अतः वे अपनी सेनाको शाही फौजके दाहिनी ओर लेजा कर दूर से ही युद्धका परिणाम देखने लगे।

खुर्रमकी सेनाके अग्रणी भीम शिशोदियाने अपने योद्धाओं सहित शाहजादे परवेज़ और सेनापति मिर्जा राजा जयसिंहकी सेना पर वड़ी तेजीसे आक्रमण किया। इसका आक्रमण इतना भयंकर हुआ कि वह चालीस हजारकी शाही फौज़को विदीर्ण करता हुआ शाहजादे परवेज़ तक पहुँच गया। मिर्जा राजा जयसिंहकी सेनामें भगदड़ पड़ गई। शाही फौज़को इस प्रकार भागते देख कर भीम शिशोदियाको वड़ा गर्व हुआ और उसने दूर खड़े महाराजा गजसिंहको ललकार कर उन पर आक्रमण कर दिया। वीरशिरोमणि महाराजा गजसिंहने, जिनके पास केवल तीन हजार राजपूत थे, भीम शिशोदियाका डट कर मुकाविला किया। भयंकर युद्ध हुआ। भीम शिशोदिया वीर गतिको प्राप्त हुआ और शाहज़ादे खुर्रमकी विजय पराजयमें परिणत हो गई और वह युद्ध-स्थलसे भाग गया।

वादशाहने महाराजा गजसिंहका वहुत सम्मान किया। उनके राज्यकी वृद्धि की। उपर्युक्त घटना वि० सं० १६८१ की है। इसके पश्चात् भी महाराजा गजसिंहने चौदह वर्ष तक राज्य करते हुए वादशाहकी वहुत सेवाएँ कीं।

वे जैसे वीर शिरोमणि थे वैसे ही दानवीर भी थे। उन्होंने अपने राज्यमें कई कवियोंको बड़ी-बड़ी जागीरें देकर सम्मानित किया।

पंचम प्रकरण

राव अमरसिंह—

ये महाराजा गजसिंहके ज्येष्ठ पुत्र थे। बादशाहने इनकी वीरता पर प्रसन्न होकर इन्हें नागौर राज्यके साथ रावकी उपाधिसे सम्मानित किया।

एक समयकी घटना है—बादशाह शाहजहांका दरबार लगा हुआ था। सामन्तगण और अमीर बारी-बारीसे मुजरा करने और भेंट नज़र करनेके लिए अन्दर जा रहे थे। बादशाहका साला सलावतखां सामंतों व अमीरोंको अन्दर लेजा कर बादशाहके सामने परिचय करवाता था।

ठीक इसी समय राव अमरसिंह भी वहां पहुँचे और सलावतखाँको मुजरा करनेके लिये कहा। इस पर सलावतखाँने इन्हें 'ज़रा ठहरो' कह कर रोका और स्वयं अन्दर चला गया। कुछ समय प्रतीक्षा करनेके पश्चात् अमरसिंह स्वयं ही बिना किसी हिचकिचाहटके भीतर चले गये और बादशाहको मुजरा करने लगे। सलावतखाँको यह बुरा लगा और वह उन्हें गँवार कहनेके हेतु मुँहसे केवल "गँ" अक्षर का ही उच्चारण कर पाया था कि स्वाभिमानी राठौड़ अमरसिंहने उसके हृदयकी बात जान कर उसके मुँहसे पूरा 'गँवार' शब्द निकलनेके पहले ही अपनी कटार उसके शरीरमें भोंक दी जिससे उसके प्राण पखेरू उड़ गये। बादशाह सिंहासन छोड़ कर अंतःपुरमें भाग गया। उस वीर बाँकुरे राठौड़की क्रोधाग्नि चरम सीमा तक पहुँच चुकी थी। उस समय जो भी उसके सामने आया उसे तलवारके घाट उतार दिया। इस प्रकार रावजी शाही दरबारके पांच उच्चाधिकारियोंका, जो पंचहजारी कहलाते थे, काम तमाम करके बाहर निकले। पीछेसे अर्जुन गौड़ने, जो उन्हींका आदमी होनेका दम भरता था, बादशाहको खुश करनेके लिए इनकी पीठमें करारा वार कर दिया। वीरवर अमरसिंहने मरते-मरते ही वापिस वार किया जिससे अर्जुन गौड़का कान कट गया और ऐसे वीरका धोखेसे प्राण लेने वाला वह कुल- कलंकी सदाके लिए बूचा हो गया।

राव अमरसिंहके स्वामि-भक्त सामंत वीर राठौड़ बलू चांपावत और भाऊ कूंपावत तथा उनके कुछ साथियोंने बादशाहके अनेकों आदमियोंको आगरेके

किलेमें मार कर रावजीका वदला लिया और रावजीकी रानियोंको सती होनेमें सहायता देते हुए वीरवर वलूजी भी वीरगति को प्राप्त हुए।

महाराजा जसवंतसिंह (प्रथम)—

महाराजा गजसिंहके पश्चात् जोधपुरके राज्य-सिंहासन पर महाराजा जसवंतसिंह आसीन हुए। जसवंतसिंह अपने समयके राजाओंमें सर्वश्रेष्ठ नीतिज्ञ थे। इन्होंने कई ग्रन्थोंकी रचना की और हिन्दू धर्मकी रक्षा की।

उस समय वृद्ध वादशाह शाहजहां भयंकर रोगसे पीड़ित हो गया था। उसके पुत्र दिल्लीके सिंहासनको प्राप्त करनेके लिए भिन्न-भिन्न प्रकारसे षड़यंत्र रचने लग गये थे। वादशाह औरंगजेवने दक्षिणसे एक वहुत वड़ी सेनाके साथ राज्य पानेकी प्रवल आकांक्षासे कूच कर दिया। उस समय वादशाहके चारों ओर विपत्ति के वादल मँडरा रहे थे। इस विषम संकटको टालनेके लिये वादशाहको केवल राजपूत राजा दिखाई दे रहे थे, अतः उसने समस्त राजपूत राजाओंको बुलाया। सभी राजपूत नरेश अपनी सेनाओं सहित दिल्ली पहुँचे।

आये हुए राजपूत राजाओंमें आमेर-नरेश जयसिंह शाहजादे शूजाको रोकने वंगालकी ओर वढ़े और जोधपुरके महाराजा जसवंतसिंह शाहजादे औरंगजेवका दमन करने दक्षिणकी ओर शाही फौजके साथ वढ़े और उज्जैन पहुँच गये जहां दोनों दलोंका कड़ा मुकावला हुआ। औरंगजेवने शाहजादे मुरादको प्रलोभन देकर अपनी ओर मिला लिया जिससे उसकी शक्ति दुगुनी हो गई थी।

महाराजा जसवंतसिंह तनिक भी नहीं घवराये और अपने घोड़े महवूव पर सवार होकर विशाल यवन दल पर टूट पड़े। उन्होंने भयंकर मारकाटके साथ यवनोंका संहार किया और अपने घोड़े सहित पूर्ण रूपसे क्षत-विक्षत हुए। इस समय उनके कुछ सरदारों और रतलामके राजा राठौड़ रतनसिंहने युद्धका भार अपने ऊपर लेकर इन्हें मारवाड़ लौट जानेके लिए वाध्य कर दिया। औरंगजेव विजयी हुआ और कई योद्धाओंके साथ रतनसिंह वीर-गतिको प्राप्त हुआ।

औरंगजेव दिल्ली पहुँचा और वादशाह वन गया। कुछ समय पश्चात् उसने महाराजा जसवंतसिंहको बुलाया और उनका वहुत आदर-सत्कार किया। यद्यपि उसके हृदयमें महाराजाके प्रति पूर्ण रूपसे कपट था, फिर भी उसने उनको प्रसन्न करनेके निमित्त कीमती उपहार भेंट किये।

महाराजा जसवंतसिंहजी कवियों और विद्वानोंका बहुत आदर करते थे। उन्होंने अपने राज्यमें कई कवियोंको जागीरें देकर सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने कई युद्ध किये और अंतमें काबुलमें इनका देहावसान हो गया।

षष्ठम प्रकरण

महाराजा अजीतसिंह—

महाराजा जसवंतसिंहके काबुलमें देहावसानके समय उनकी दो रानियां गर्भवती थीं, जिनसे क्रमशः दो पुत्र अजीतसिंह और दळथंभण लाहौरमें उत्पन्न हुए। जन्मसे कुछ समय पश्चात् दळथंभणका देहान्त हो गया। महाराजा जसवंतसिंहके विश्वासपात्र राठौड़ सामंत बादशाहकी आज्ञानुसार राजकुमार और रानियों सहित दिल्ली पहुँचे। औरंगजेब पहलेसे ही मारवाड़ पर अधिकार करनेके लिए अपनी फौज भेज चुका था। उसने राठौड़ोंको दिल्लीमें बहुत लालच दिए और राजकुमारको अपने हवाले करनेका हुक्म दे दिया। स्वामिभक्त राठौड़ औरंगजेबके किसी लालचमें नहीं आए और राजकुमारको गुप्त रूपसे मारवाड़ भेज दिया। जब वे चारों ओरसे मुगल सेनासे घिर गये तो उन्होंने महाराजा जसवंतसिंहकी रानियोंकी इज्जत बचाने हेतु उन्हें तलवारके घाट उतार कर यमुनामें बहा दिया और स्वयं विशाल यवन दलका संहार करते हुए वीरगतिको प्राप्त हुए जिनमें रुघौ भाटी, सूरजमल सांदू, (चारण), चन्द्रभांण, अचलसिंह, रणछोड़दास आदि मुख्य थे। वीर राठौड़ दुर्गादासके साथ कुछ सरदार अपनी तलवारका जौहर दिखाते हुए मारवाड़ आ गये।

बादशाह राठौड़ोंके इस व्यवहारसे बहुत कुपित हुआ और उसने नागौरके राव इन्द्रसिंहसे, जो राठौड़ अमरसिंहका पौत्र था, कहा कि मेरी आज्ञाका पालन करे तो जोधपुर तुझको दे दिया जाय। इन्द्रसिंह इसके लिए राजी हो गया और बादशाहने जोधपुरका पट्टा लिख कर दे दिया। वह एक बहुत बड़ी सेनाके साथ जोधपुर आया। सभी राठौड़ोंने एक होकर उसका मुकाबिला किया। भयंकर युद्ध हुआ जिसमें इन्द्रसिंह पराजित होकर भाग गया।

मारवाड़ पर अधिकार करनेके निमित्त मुगल दलने बार-बार आक्रमण किया। राठौड़ डट कर उनका मुकाबिला करते थे किन्तु अन्तमें जोधपुर पर शाही अधिकार हो गया। इस समय मारवाड़में बहुतसे राठौड़ोंने यवनोंका प्रतिकार करनेके लिए विद्रोह करना शुरू कर दिया। वे पृथक-पृथक दलों में विभक्त होकर

चारों ओर मारकाट और लूट-खसोट करने लगे। वे अवसर मिलते ही मुगलोंकी चौकियों पर टूट पड़ते और ध्वस्त कर देते। यही नहीं, मुगलोंकी रसद लूट लेते थे और उन्हें हर प्रकारसे तंग करने लगे। उन्होंने ऐसी विकट परिस्थिति उत्पन्न कर दी कि मुगलोंको हर समय चौकन्ना रहना पड़ता था।

महाराजा अजीतसिंहका गुप्त रूपसे लालन-पालन होता रहा और जब कुछ योग्य हुए तो राठौड़ोंने उन्हें अपना अग्रणी बनाया। इनका बल दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाता था और इन्होंने मारवाड़में यत्र-तत्र मुगलोंको दबा कर उनसे कर वसूल करना शुरू कर दिया।

उस समय जोधपुरका सूबेदार शुजाअतखां था। वह लश्करिखाँको जोधपुरका प्रबन्ध सौंप कर गुजरात गया। इधर महाराजा अजीतसिंहजी अपने दलबल सहित आडावलाकी ओर गये। लश्करिखांने महाराजाका पीछा किया और कुरमालकी घाटीमें युद्ध किया किन्तु परास्त होकर भाग गया।

इस समय उदयपुरके महाराणा जयसिंह और उनके पुत्र अमरसिंहमें गृह-कलह हो गया। महाराणाने उस संकटको टालनेके उद्देश्यसे अपने छोटे भाई गजसिंहकी पुत्रीका विवाह महाराजा अजीतसिंहसे कर दिया।

महाराजाने होटलूके चौहान चतुरसिंहकी कन्यासे भी विवाह किया था जिसके गर्भसे जालौरमें संवत् १७५६ मार्गशीर्ष वदि १४को शोभनयोग, शकुनि-करण, मिथुनलग्न और विशाखा नक्षत्रमें महाराजकुमार अभयसिंहका जन्म हुआ।

महाराजा अजीतसिंहने अपनी शक्तिसे मुगलोंके नाकमें दम कर रखा था। उन्होंने दक्षिणमें औरंगजेबकी मृत्युका समाचार सुनते ही अपनी सेना लेकर जोधपुर पर आक्रमण कर दिया। जाफरकुलीने पहले तो महाराजाका सामना किया किन्तु प्रबल राठौड़वाहिनीको देख कर वह किला छोड़ कर भाग गया। यवन इतने भयभीत हुए कि वे अपनी जान बचानेके लिए दाढ़ी मुँडवा कर हाथमें माला लेकर सीतारामका उच्चारण करते हुए जोधपुरसे भागे। कई राठौड़ों द्वारा कैद कर लिये गये। महाराजाने अपने पैतृक राज्यमें प्रवेश किया। राजधानी, जो यवनोंसे दलित हो गई थी, गंगाजल आदि छिड़क कर शुद्ध की गई। मंदिरोंके स्थान पर मस्जिदें बन ग थीं और इनमें मुल्लोंकी बांगें गूंजती थीं, उनके स्थान पर वापिस मंदिर बन गये और शंखों व घंटोंकी ध्वनि गूंजने लगी। बड़े ठाट-बाटसे महाराजा अजीतसिंह राजसिंहासन पर आसीन हुए।

औरंगजेबके मरते ही शाहजादोंमें तख़्तके लिए तनातनी हुई और शाहजादा मुहम्मद मुअज्जम बहादुरशाहके नामसे भारतका बादशाह बन गया। उसने आमेर-नरेश जयसिंहसे राज्य छीन कर उसके छोटे भाई विजयसिंहको दे दिया क्योंकि विजयसिंह उसके पक्षका था। जब बादशाह बहादुरशाहको मालूम हुआ कि अजीतसिंहने जोधपुर पर अधिकार कर लिया है तो वह यवन-दलके साथ अजमेरकी ओर रवाना हुआ। इस समय राज्यच्युत आमेर नरेश जयसिंह भी उसके साथ था। महाराज अजीतसिंह और बादशाहमें मेड़तेमें संधि हो गई जिसमें बादशाहने महाराजा और उनके पुत्रोंका बहुत सत्कार किया, उन्हें उपहार भेंट किये और उपाधियोंसे सम्मानित किया।

बादशाह जल्दी ही मारवाड़में शान्ति स्थापित कर के दक्षिणकी अशान्तिको दबानेके लिए चल पड़ा। उस समय राजा जयसिंह, महाराजा अजीतसिंह, दुर्गादास आदि उनके साथ थे। यद्यपि बाहशाह ऊपरसे तो महाराजा अजीतसिंह पर खुश नजर आता था तथापि उसने जोधपुरका प्रबन्ध करनेके बहाने काजमखाँ और मेहराबखाँको भेज कर जोधपुर पर चुपचाप अपना अधिकार कर लिया। जब इसकी सूचना महाराजा अजीतसिंहको मिली तो वे बहुत क्रुद्ध हुए किन्तु परिस्थितिवश उन्हें चुप रहना पड़ा। जयसिंह और दुर्गादासके साथ महाराजाने चुपचाप बादशाहका साथ छोड़ दिया और तीनों उदयपुर जाकर महाराणा अमरसिंहसे मिले। वहां पर उनका बहुत सत्कार हुआ।

वहांसे लौट कर महाराणा और अजीतसिंहने अपने योद्धाओं सहित जोधपुर पर आक्रमण कर दिया। फौजदार मेहरावखाँ किला छोड़ कर भाग गया और जोधपुर पर पुनः महाराजाका अधिकार हो गया। महाराजा अपने उत्साहसे आगे बढ़ते गये। वे सांभर और डीडवानाको विजय कर के आमेरकी ओर बढ़े। वहाँके फौजदार सैयद हुसैनखाँको परास्त किया। महाराजा अजीतसिंहने जयसिंहको, जो उनके साथ था, पुनः आमेरका राजा बना दिया। सांभरके बराबर दो भाग कर के आधा आमेरकी ओर तथा आधा मारवाड़ राज्यमें मिला दिया और स्वयं अपनी राजधानी जोधपुर लौट आये।

कुछ समय बाद साँभरमें पुनः शाही फौजोंका जमाव होने पर जोधपुर और आमेरकी फौज ने आक्रमण कर दिया। यह युद्ध बड़ा भयंकर हुआ। इसमें जोधपुरका भीम कूंपावत मारा गया। अंतमें राजपूतोंकी विजय-दुन्दुभि बजी और महाराजा अजीतसिंहजी जोधपुर लौट आये।

राजपूतोंकी इस विजयकी खबर जब बादशाह बहादुरशाहने सुनी तो वह

बहुत कुपित हुआ और घबराया भी। वह रात-दिन राजपूतों की बढ़ती हुई शक्तिके कारण चिंतित रहने लगा। अंतमें उसने महाराजा अजीतसिंहसे संधि कर ली और जोधपुर तथा जयपुर नरेशोंके अधिकारको मान लिया।

बादशाह बहादुरशाहके मरनेके पश्चात् उसका पुत्र मुइजुद्दीन जहाँदारशाह अपने भाइयोंको मार कर दिल्लीके तख्त पर आसीन हुआ। इसके कुछ ही दिन बाद सैयदबन्धुओंकी सहायता से फर्रुखसियार मुइजुद्दीन जहाँदारशाहको कैद कर के स्वयं बादशाह बन बैठा। उसने दोनों सैयदबन्धुओंको महत्त्वपूर्ण पद दिए और उन्हें उपाधियोंसे सम्मानित किया।

जब फर्रुखसियर बादशाह बना तो नागौरके राव इन्द्रसिंहका पुत्र म्होकमसिंह दिल्ली जाकर महाराजा अजीतसिंहजीके विरुद्ध बादशाहको बहकाने लगा। महाराजा अजीतसिंह वीर होनेके साथ राजनीतिज्ञ भी थे। उन्होंने भाटी अमरसिंहके साथ कुछ सरदारों को दिल्ली भेज कर धोखेसे म्होकमसिंहको मरवा डाला।

इस घटना से बादशाह बहुत क्रोधित हुआ। उसने सैयदहुसैनअलीको एक बहुत बड़ी सेना देकर मारवाड़ की ओर भेजा। विशाल यवन दल और राजपूतोंमें मेड़तामें संधि हो गई और महाराजकुमार अभयसिंहका हुसैनअलीके साथ दिल्ली जाना तय हुआ। राजकुमार अभयसिंहके वहां पहुँचने पर बादशाहने उसका बहुत आदर-सत्कार किया। उन्हें सुनहरी तलवार, जड़ाऊ खंजर, घोड़े आदि भेंट किये तथा पंचहजारी मंसब दिया। महाराजकुमार अभयसिंह ठाट-बाटके साथ जोधपुर लौटे। महाराजा अजीतसिंह राजकुमारसे मिल कर और उनके सकुशल लौट आनेके कारण बहुत हर्षित हुए।

महाराजा अजीतसिंह अपने मनमें मुगलोंसे कभी प्रसन्न नहीं हुए। वे मुगल सल्तनतको ढाह ही देना चाहते थे। उधर सैयद बन्धुओं और बादशाह फर्रुखसियर में परस्पर वैमनस्य हो गया। इन्हीं दिनों महाराजा अजीतसिंह भी अपने सरदारों सहित दिल्ली पहुँचे। जब महाराजा दिल्लीमें प्रवेश कर रहे थे उस समय उन्होंने अपनी शैशवावस्थामें होने वाले दिल्ली युद्धमें लड़ने वाले उन वीरोंके समाधि-स्थान देखे जो इनकी रक्षार्थ औरंगजेबसे लड़ कर दिल्लीमें ही वीर-गतिको प्राप्त हो गये थे। इन्हें अपनी जन्मदात्री मांका भी स्मरण हुआ जिनकी समाधि भी इसी स्थान पर बनी हुई थी। इनके हृदयमें निद्रित प्रतिशोधकी भावना प्रबल वेगसे भड़क उठी और मन ही मन ठान लिया कि मुगल वंशका ध्वंस कर दूंगा। किन्तु इसे उन्होंने प्रकट नहीं होने दिया।

दिल्ली में महाराजाका सैयद भाइयों और बादशाह फर्रुखसियरने अलग-अलग स्वागत किया। दोनोंमें से हर एक शक्तिशाली महाराजा अजीतसिंहको अपनी ओर मिलाना चाहते थे। महाराजाका मन बादशाहसे उचट गया था अतः उन्होंने सैयद बन्धुओंका पक्ष लिया, किन्तु इस शर्तके साथ कि इस बादशाहके हटनेके बाद हिन्दुओं पर से जजिया कर हट जाना चाहिए, हिन्दू तीर्थों पर से कर हट जाना चाहिए, मंदिरोंके बनने और उनमें होने वाली नियमित पूजामें किसी प्रकारकी बाधा नहीं पड़नी चाहिए और गौ-वध बन्द हो जाना चाहिए, आदि। ये सब शर्तें सैयद बन्धुओंसे करवाई।

इधर सैयद बन्धुओंको यह विश्वास था कि आमेर-नरेश जयसिंह बादशाहको हमारे विरुद्ध बहकाता है, अतः उन्होंने और महाराजा अजीतसिंहने बादशाह फर्रुखसियर पर दबाव डाल कर जयसिंहको आमेर भिजवा दिया।

बादशाह फर्रुखसियर सैयदोंको मरवानेका षड्यंत्र कर रहा था, अतः उन्होंने अपने बन्धु सैयद हुसैनअलीको दक्षिणसे अपनी रक्षा और मददके लिए बुला लिया। वह एक विशाल दलके साथ दिल्ली पहुँचा। अब बादशाह पिटारीका सांप बन गया और बहुत भयभीत रहने लगा। सैयदोंने बादशाह फर्रुखसियरको पकड़ कर कैद कर लिया और मार डाला। बादशाहके महलका सारा माल लूट लिया गया और उसे सैयद बन्धुओं तथा महाराजा अजीतसिंहने परस्पर बांट लिया।

उस समय महाराजा अजीतसिंह और सैयद बन्धुओंकी ही दिल्लीमें चलती थी। सैयद बन्धु महाराजाका गुण गाते थे। उन्होंने रफीउद्दरजातको बादशाह बनाया किन्तु कुछ ही समय बाद वह बीमार हो गया तब उसके बड़े भाई रफीउद्दौलाको दिल्लीके तख्त पर बैठा कर बादशाह बनाया। यह बादशाह भी अधिक दिन तक जिन्दा नहीं रहा और महाराजा अजीतसिंहजीकी मंत्रणासे मुहम्मदशाहको बादशाह बनाया गया।

इन्हीं दिनों आगरामें ईरानी मुगलोंने आमेर नरेश जयसिंह आदिसे प्रेरित हो कर उपद्रव कर दिया और उन्होंने अपनी ओरसे निकोसियरको आगरेके तख्त पर बैठा कर बादशाह घोषित कर दिया। सैयद बन्धुओंने हुसैनअलीको आगरेकी ओर रवाना किया और कुछ दिन बाद स्वयं भी महाराजा अजीतसिंहजीको लेकर आगरेकी तरफ प्रयाण किया। सैयदोंने आगरे पर आक्रमण कर के बादशाह निकोसियरको पकड़ कर कैद कर लिया।

सैयद बंधु आमेर नरेश जयसिंह पर बहुत कुपित थे, अतः उन्होंने आमेर पर आक्रमण कर के जयसिंहको दण्ड देनेका निश्चय किया। जयसिंहने पहलेसे ही

भयभीत होकर महाराजा अजीतसिंहको पत्र लिख कर प्रार्थना की कि अब मेरी लज्जा आपके हाथमें है, आप ही मुझे बचा सकते हैं। इस पर महाराजा अजीतसिंहने सैयद बंधुओंको समझा-बुझा कर आमेरकी ओर जानेसे रोका, यद्यपि सैयद बंधु मनमें जयसिंहसे बहुत जलते थे, किंतु महाराजा अजीतसिंहके सामने उनकी कुछ चल नहीं सकी और सब दिल्ली लौट आये।

कुछ समय पश्चात् महाराजा अजीतसिंहने बादशाहसे विदा मांगी। बादशाहने कई बहुमूल्य वस्तुएं महाराजाको भेंट कीं और बड़े सम्मानके साथ विदा किए। महाराजा अजीतसिंह शोपुरके राजा इन्द्रसिंह, बूंदीके हाडा बुधसिंह, रामपुरके राव, शिशोदिया अखैमल और फतैमल आदिको साथ लेकर रवाना हुए। मार्गमें आमेर नरेश जयसिंहको भी साथमें ले लिया और सबके सब मनोहरपुर होते हुए जोधपुर आ गये। जोधपुरमें अतिथियों सहित महाराजा अजीतसिंहका शानदार स्वागत हुआ। सभी अतिथियोंको जोधपुरमें ठहराया और उनका खूब आदर-सत्कार किया। महाराजा अजीतसिंहके दरबारमें सभी अतिथि उपस्थित हुए और सबने महाराजाको मुजरा कर के नजरें कीं। इस अवसर पर महाराजाने अपनी पुत्रीका विवाह आमेर-नरेश जयसिंहके साथ बड़े ठाट-बाटसे कर दिया।

कुछ समय पश्चात् महाराजा अजीतसिंहजीको यह खबर मिली कि बादशाह मुहम्मदशाहने सैयद बन्धुओंमें से हुसैनअलीको मरवा डाला और दूसरे भाई अबदुल्लाको कैद कर लिया। इससे महाराजा बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने तुरन्त अपनी सेना लेकर अजमेर पर धावा बोल दिया और वहां के तारागढ़ पर राठौड़ोंकी पताका फहरने लगी। जिस अजमेरमें कुरानके पाठ होते थे, गौ-हत्या होती थी वह सब बन्द होकर मंदिरोंसे घंटा-रव और शंखनाद सुनाई देने लगा। इस समय महाराजा अजीतसिंहजी एक बादशाह की तरह शाही शान-शौकतसे अजमेर में रहने लगे। इन्हीं दिनों महाराजाने सांभर, डीडवाना आदि पर अपनी सेनाएँ भेज कर वहांके शाही फौजदारको भगा दिया और अपना अधिकार कर लिया।

बादशाह मुहम्मदशाहने महाराजा अजीतसिंहका दमन करनेके लिये मुजफ्फर-खाँको तीस हजारकी विशाल सेना देकर भेजा। मुजफ्फरखांने मनोहरपुरमें आकर पड़ाव किया। इधर महाराजा अजीतसिंहने एक बड़ा दरबार किया और महाराज-कुमार अभयसिंहको मुजफ्फरखाँका मुकाबला करनेके लिए भेजनेका निश्चय किया। महाराजकुमार अभयसिंहने इस अवसर पर बड़ा उत्साह दिखाया और अपनी सेनाके साथ रघनाथ भंडारीको लेकर रवाना हुए। राठौड़वाहिनीको

अपनी ओर बढ़ती हुई सुन कर मुजफ्फरखाँ बिना मुकाबला किये ही अपनी सेना-सहित भाग गया।

महाराजकुमार अभयसिंहने नारनौल तथा दिल्ली व आगरेके आसपासके प्रदेशको लूटना शुरू कर दिया और शाहजहाँपुर तक पहुँच गये। यहाँका फौजदार भी इनके आगे नहीं टिक सका और उन्होंने शाहजहाँपुरको लूट कर भस्मीभूत कर दिया। महाराजकुमार अभयसिंहका आतंक चारों ओर फैल गया और दिल्लीमें खलबली मच गई। इस समय महाराजकुमारका 'धौकळसिंह' नाम पड़ा। अभयसिंहजी विभिन्न प्रकारकी लूटकी वस्तुओंके साथ विपुल धन-राशि लेकर वापिस लौटे। महाराजा अजीतसिंह पुत्रके इस रणकौशल और प्रतापको देख कर बहुत प्रसन्न हुए और उनका स्वागत किया। अब उनको यह विश्वास हो गया कि मेरे बाद मेरा पुत्र भी राठौड़ोंकी शानको रखनेमें समर्थ होगा।

उधर बादशाहने घबरा कर एक दरबार किया और उसमें सब राजाओं-नबावोंकी सम्मति लेकर महाराजा अजीतसिंहके पास नाहरखाँको अपना संदेश लेकर भेजा। नाहरखाँ महाराजाके पास पहुँचा किन्तु उसके अनुचित व्यवहारके कारण वह मारा गया।

जब बादशाहने यह खबर सुनी तो वह बहुत घबराया और एक बड़ी सेना देकर शरफुद्दौला इरादतमंदखांको और हैदरकुलीको भेजा। इस विशाल दलके साथ आमेर नरेश जयसिंह, मुहम्मदखाँ बंगस आदि भी अपनी-अपनी सेनाएँ लेकर महाराजाके विरुद्ध आये। इस प्रकार शाही दलको आता देख महाराजा अजीतसिंहने नीमाज ठाकुर ऊदावत वीर अमरसिंहको अजमेरके किलेकी रक्षाका भार सौंप कर स्वयं मारवाड़ जोधपुरकी रक्षार्थ आ गये। शाही दलने अजमेरके किलेको घेर लिया। इस अवसर पर नीमाज ठाकुर ऊदावत अमरसिंहने बड़ी वीरता दिखाई। कुछ दिन युद्ध होनेके पश्चात् आमेर नरेश जयसिंहने संधि करवा दी और अजमेर पर बादशाहका अधिकार हो गया। इस संधिमें महाराजकुमार अभयसिंहका बादशाहके दरबारमें दिल्ली जाना तय हुआ।

बादशाह मुहम्मदशाहने महाराजकुमार अभयसिंहके दिल्ली पहुँचने पर उनका बहुत आदर-सत्कार किया और उन्हें कई बहुमूल्य उपहार भेंट किये। दिल्लीमें रहते हुए इन्हीं दिनों एक समय महाराजकुमार अभयसिंह बादशाह मुहम्मदशाहके दरबारमें गये और निर्भय होकर आगे बढ़ने लगे। जब वे बादशाहके बिल्कुल निकट पहुँचे तो वहाँके एक अमीरने उन्हें रोक दिया। महाराजकुमारने तुरन्त ही अत्यन्त क्रोधित होकर कटार निकाल लिया। बादशाह

मुहम्मदशाह जो सिंहासन पर बैठा यह सब कुछ देख रहा था, तुरन्त उठा और आगे बढ़ कर अपने गलेका मोतियोंका हार महाराजकुमारको पहना कर बड़ी कठिनाईसे इनके क्रोधको शांत किया। अगर बादशाह उस समय ऐसा नहीं करता तो संभवतया वही घटना घटती जो बादशाह शाहजहांके दरबारमें राठौड़ अमर-सिंह द्वारा हुई थी।

महाराजकुमार अभयसिंह उन दिनों दिल्लीमें बड़े ठाट-बाट से रह रहे थे और महाराजा अजीतसिंहजी जोधपुरमें सुखपूर्वक थे। उन्हीं दिनों एकाएक महाराजाका देहावसान हो गया। [यहाँ पर कर्नल टॉडके अनुसार बादशाह मुहम्मदशाहने ही महाराजकुमार अभयसिंहको दिल्लीमें महाराजा अजीतसिंहके विरुद्ध बहकाया और एक जाली पत्र महाराजकुमार अभयसिंहके हस्ताक्षरका उनके छोटे भाई बखतसिंह के नाम भिजवा दिया, जिसमें मारवाड़के हितके लिये वृद्ध महाराजाको मारनेका लिखा था। उसीके अनुसार राजकुमार बखतसिंहने महाराजा अजीतसिंहको मार डाला। हो सकता है कविवर करणीदान राठौड़ वंश पर लगने वाले इस कलंकको छिपानेके लिए 'सूरजप्रकास' में इस बातके लिए मौन रह गये हों।]

सप्तम प्रकरण

महाराजा अभयसिंह—

स्वाभिमानी महाराजा अजीतसिंहके स्वर्गवासके पश्चात् बादशाह मुहम्मद-शाहने महाराजकुमार अभयसिंहका दिल्लीमें अपने हाथसे राज्याभिषेक किया। इस अवसर पर बादशाहने महाराजा अभयसिंहके कमरमें तलवार बांधी, राज-मुकुट पहनाया और हीरे मोती आदि भेंट किये। कई बहुमूल्य वस्तुएँ उपहारमें दे कर बादशाहने नागौरकी शासन-सनद मारवाड़के नवीन महाराजा अभयसिंहको दे दी। इस प्रकार महाराजा बादशाह द्वारा सम्मानित होकर अपने देश मारवाड़ लौटे।

महाराजाके मारवाड़में प्रवेश करते ही प्रजाने बड़ी भक्तिसे नवीन महाराजाका स्वागत किया। ज्यों-ज्यों महाराजा अभयसिंह राजधानीकी ओर बढ़ते गये त्यों-त्यों प्रत्येक स्थानकी कुलवधुओंने शिर पर जलसे भरे कलश रख कर तथा गीत गा कर महाराजाका सम्मान किया। महाराजाने भी राजधानी लौटकर सामंतोंको उपहार दिये तथा कवियोंको पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

सदियोंसे चली आ रही प्रथाके अनुसार महाराजा अभयसिंहका जोधपुरमें ठाट-बाटसे राज्याभिषेक हुआ। तत्पश्चात् महाराजा अभयसिंहने नागौर पर

आक्रमण करनेके लिये अपनी सेना तैयार की। चिर-प्रचलित प्रथाके अनुसार ज्वालामुखी तोपोंको शक्तिका रूप मान कर बकरों आदिकी बलि दी गई। तेल-सिन्दूरसे उनकी पूजा की गई। युद्धकी सारी सामग्री तैयार की। महाराजा अभयसिंह अपने छोटे भाई बखतसिंहके साथ पूर्ण रूपसे सुसज्जित होकर नागौरकी ओर बढ़े। नागौरका राव इन्द्रसिंह महाराजाकी शक्तिके सामने झुक गया। नागौर पर महाराजाका अधिकार हो गया। महाराजाने अपने छोटे भाई बखत-सिंहको नागौरका राजा बनाया और उन्हें 'राजाधिराज' की उपाधि दी। इन्हीं दिनों महाराजाके छोटे भाई आनन्दसिंह और रायसिंहने उपद्रव कर के मेड़ता पर चढ़ाई कर दी। शेरसिंह मेड़तियाने मेड़ताकी रक्षा की। महाराजा भी नागौरकी ओरसे निवृत्त होकर अपने भाई बखतसिंहके साथ मेड़ता पहुँच गये। यहां पर आसपासके राजाओंने महाराजाके पास नजरें भेजीं और इन्हीं दिनों महाराजाने जैसलमेरकी राजकुमारीसे विवाह भी किया और जोधपुर लौट आये।

कुछ समय पश्चात् बादशाहका आज्ञा-पत्र मिलनेके कारण महाराजा अभय-सिंह अपने सामंतों सहित दिल्ली जानेके लिये रवाना हुए। जब वे दिल्ली पहुँचे तो बादशाहने उनका बहुत आदर-सत्कार किया। उसने अपने दरबारमें महा-राजाको बैठे हुए सारे उमरावों व अमीरोंसे उच्च स्थान पर आसीन किया और इनकी बहुत प्रशंसा की।

बादशाहने गुजरातके उपद्रवको दबानेके लिए सरबुलन्दखाँको भेजा था। सरबुलन्दखाँने विद्रोहियोंसे मिल कर गुजरात पर अधिकार कर के अपनेको वहांका अधीश्वर घोषित कर दिया। सरबुलन्दके इस प्रकार स्वतंत्र होनेकी खबर जब बादशाहके पास पहुँची तो वह बहुत घबराया।

बादशाहने शक्तिशाली सरबुलन्दका दमन करनेके लिए अपने विशाल दरबारमें सोनेके पात्रमें बीड़ा (ताम्बूल) रख कर घुमाया। मुगल साम्राज्यके शक्तिशाली वीरों तथा अमीरोंसे दरबार खचाखच भरा था किन्तु किसीकी भी सरबुलन्दके विरुद्ध बीड़ा उठानेकी हिम्मत नहीं हुई। बादशाहको निराश व दुखी देख कर महाबली महाराजा अभयसिंहने बीड़ा उठा कर सरबुलन्दको बाद-शाहके कदमोंमें झुकानेकी प्रतिज्ञा की। बादशाहने अजमेरके साथ गुजरात सूबेकी शासन-सनद महाराजा अभयसिंहको दे दी। इस अवसर पर बादशाहने प्रसन्न होकर महाराजाको मुकुट, सिरपेच, कीमती खंजर, कटार, तलवार आदि देकर सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त मय बारूदके विभिन्न आकारकी तोपें, अस्त्र-शस्त्र, बंदूकें तथा कुछ सेनाके साथ इकतीस लाख रुपया खर्चेका देकर विदा किया।

वहाँसे महाराजा सेना सहित जयपुर आये। आमेर नरेश जयसिंहने इनका बहुत आदर-सत्कार किया और अपने यहाँ ठहराया। वहाँसे महाराजा मेड़ते पहुँचे और अपने छोटे भाई बखतसिंहसे मिल कर उनके साथ जोधपुर लौट आये।

राजधानी लौटने पर महाराजाने सरबुलन्द पर चढ़ाई करनेके लिये अपने राज्यके सारे सामन्तोंको परवाने भेज कर सेना सहित इकट्ठा किया। महाराजाने एक विशाल दल तैयार किया। पूर्ण रूपसे अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित हुए। तोपोंको शक्तिका रूप मान कर उनकी पूजा की। महाराजाने इस प्रकार तैयार होकर अपने छोटे भाई बखतसिंहके साथ सरबुलन्दके विरुद्ध प्रयाण किया और जालोर आये। वहांसे रोहेड़ा और पौसाळियाके जागीरदारोंको परास्त किया। महाराजाने सिरोहीके रावको दण्ड देनेके लिए आक्रमण कर दिया। महाराजाकी असीम शक्तिके सामने सिरोहीके रावको झुकना पड़ा और उसने अपने भाईकी कन्याका विवाह कर के महाराजासे संधि कर ली। महाराजा अभयसिंह वहांसे रवाना होकर पालनपुर पहुंचे। यहाँका शासक फौजदार करीमदादखां महाराजासे मिल गया।

महाराजाने सरबुलन्दको एक पत्र लिखा जिसमें उसको अहमदाबाद छोड़ कर बादशाहके सामने झुकनेके लिए लिखा किन्तु सरबुलन्दने स्पष्ट इन्कार कर दिया।

महाराजाने अपने दलबल सहित रवाना होकर सरस्वती नदीके किनारे सिद्धपुरमें डेरा किया। उधर सरबुलन्द महाराजासे लोहा लेनेके लिए पूर्ण रूपसे तैयारी कर चुका था। उसने अपने अधीनस्थ सभी मुसलमानोंको सेना-सहित इकट्ठा कर महाराजाके विरुद्ध मोर्चा बांध लिया।

इस समय महाराजाने एक दरबार किया जिसमें उनकी सेनाके सभी सुभट इकट्ठे हुए। इस अवसर पर राठौड़ वंशकी भिन्न-भिन्न शाखाओंके—चांपावत, कूंपावत, ऊदावत, करणावत, करमसिहोत, मेड़तिया, जोधा, ऊहड़, रूपावत, भारमलोत आदि तथा सभी वंशोंके राजपूत जैसे भाटी, चौहान, शिशोदिया, सोनगरा, शेखावत, मांगलिया आदिके अग्रणी वीरोंने तथा चारण कवियों, राजगुरु पुरोहितों तथा ओसवाल मुत्सद्दियों आदिने सभामें बड़ी जोशीली आवाज़से यह प्रदर्शित किया कि हम सरबुलन्द पर विजय करनेके लिये वीर-गतिको प्राप्त होनेमें बिलकुल नहीं हिचकिचायेंगे।

महाराजा अभयसिंहने सभामें बड़ा जोशीला भाषण दिया। उन्होंने अपनी सेनाके वीरोंको बताया कि एक दिन मरना तो सभीको है ही फिर क्यों नहीं हम रण-भूमिमें वीर गतिको प्राप्त होवें जो कि सन्यासियों व महात्माओंकी तपस्यासे भी बढ़कर है।

सभी वीर अपनी-अपनी सेना को तैयार कर के आगेका कार्यक्रम बनानेमें जुट गये। महाराजाकी सेनामें अश्वारोही सेना बड़ी प्रबल थी। उसमें दक्षिणके भीमरथळी नामक स्थानकी अश्व श्रेणी सबसे अग्रणी थी। इसके अतिरिक्त मारवाड़के घाट, राड़धरा और काठियावाड़के अश्व प्रमुख थे। इस प्रकार राठौड़वाहिनी एक भयावनी घटाके समान तैयार होकर सरबुलन्दके विरुद्ध चल पड़ी।

उधर सरबुलन्दने इस भयंकर दलका मुकाबिला करनेके लिये पूर्ण रूपसे तैयारी करनेमें कोई कसर नहीं रखी। उसने नगरमें जानेके प्रत्येक मार्ग पर अपनी सेनाके साथ तोपें तैयार करदीं जिन्हें यूरोपियन चलाते थे। उसकी सेवामें बंदूकधारी यूरोपियन सैनिक भी थे।

[ग्रंथ-सार देने के साथ ही मैं यहां राजस्थान प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान, जोधपुरके सम्मान्य संचालक, पद्मश्री जिन विजयजी मुनि, पुरातत्त्वाचार्यके प्रति आभार प्रदर्शित किये बिना भी नहीं रह सकता कि जिन्होंने राजस्थानीके इस प्राचीन ग्रंथका सम्पादन करनेके लिए मुझे सत्प्रेरणा दी। ग्रंथ-संपादनमें श्री गोपालनारायणजी बहुरा, एम. ए., उप-संचालक, राजस्थान प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान, जोधपुरने समय-समय पर मार्ग-निर्देशन कर और ग्रंथ-सम्पादन हेतु सहायक ग्रंथोंके अध्ययनमें सहयोग देकर जो सौजन्य प्रकट किया उसके लिए मैं पूर्ण कृतज्ञ हूँ। श्री पुरुषोत्तमजी मेनारिया, एम. ए., साहित्यरत्नने भी ग्रंथके प्रूफ संशोधनमें अपना पूर्ण सहयोग दिया है, इसके लिए वे धन्यवादके पात्र हैं।]

जोधपुर; **—सीताराम लाळस**

वसंत पंचमी, वि० सं० २०१८

सहायक ग्रंथों की सूची

लेटर मुगल्स– इर्विन

उदयपुर राज्य का इतिहास– डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा कृत भाग १, २

औरंगजेबनामा– मुन्शी देवीप्रसाद

जोधपुर राज्य का इतिहास– डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा कृत भाग १, २

जोधपुर राज्य की ख्यात– (हस्तलिखित) हमारे संग्रह से

तवारीखे पालनपुर– सैयद गुलाबमियां कृत

दयालदास की ख्यात– सिढायच दयालदास कृत, भाग २–डॉ० दशरथ शर्मा द्वारा संपादित, अनूप संस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर द्वारा प्रकाशित

नैणसी मुहणोत की ख्यात– काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित, खंड १, २

नैणसी मुहणोत की ख्यात– राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

टॉड राजस्थान– हिंदी अनुवादक पं० बलदेवप्रसाद मिश्र, भाग १, २

पालनपुर राज्य नो इतिहास– (गुजराती) भाग १, नवाब सरताले मुहमंदखां कृत

मारवाड़ का इतिहास– पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ, प्रथम भाग

मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास– पं० रामकरण आसोपा

राजरूपक– वीरभांण रतनूं कृत

राजविलास– मान कवि कृत (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी का संस्करण)

वंशभास्कर– कविराजा सूरजमल मीसण

वीर विनोद– महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास कृत, भाग २

हिस्ट्री ऑव औरंगजेब– यदुनाथ सरकार

कविया करणीदांन विजैरांमोतरौ कह्यौ

सूरजप्रकास

भाग २

अथ महाराजा गजसिंघजीरौ वरणण

उठै 'गजण' आवियौ[१], अभंग दळ लियां[२] अथाहां ।
राव[३] दुवां जिम रखित[४], पेस न कियौ[५] पतिसाहां* ।
रीत सनातन धरम, क्रिया ध्रम करे अणंकळ[६] ।
राज तिलक सिर[७] धारि, तखत[८] बैठौ[९] अतुळीबळ[१०] ।
ऐराक गयंद सिरपाव असि, दिल्लीनाथ[११] जंवहर दिया[१२] ।
तदि बधे[१३] क्रीत[१४] 'गजबंध'[१५] तणी, दखिणी[१६] थाट दहल्लिया[१७] ।। १

तपत[१८] झळाहळ अतुळ, पिंड झळाहळ पौरिस[१९] ।
अति प्रकास ऊजळौ, जगत उज्जास[२०] बंधे[२१] जस ।

---

१ ख. ग. आवीयौ । २ ख. ग. लीयां । ३ ख. राज । ४ ख. ग. रषत । ५ ग. कीया ।

*ख. प्रतिमें निम्न पद्यांश छूट गया है—

"पेस न कीया पतिसाहां, रीत सनातन धरम ।"

६ ख. अंणकाळ । ग. अणकळ । ७ ख. सिरि । ८ ग. तषति । ९ ख. बैठो । १० ख. अतुलीवल । ११ ख. ग. दिलीनाथ । १२ ख. ग. दीया । १३ ख. वधे । १४ ख. ग. क्रीति । १५ ख. गजवंध । १६ ख. दशिणी । १७ ख. ग. दहल्लीया । १८ ख. ग. तप । १ ख. ग. पौरस । २० ख. ग. उजास । २१ ख. ग. वधे ।

---

१. रखित – रक्षित, धन-दौलत । अणंकळ – वीर । ऐराक – घोड़ा । जंवहर – जवाहरात । दहल्लिया – भयभीत हुए । थाट – दल, सेना ।

२. तपत – तप्त, तपस्या, तेज, कांति । झळाहळ – देदीप्यमान । पिंड – शरीर । पौरिस – पौरुष, शक्ति, सामार्थ्य ।

करण सहंस सम करग, तिमर[1] कुरियंद[2] भगौ तिण ।
दवै[3] तास तप देखि, अवर छत्रपति ताराइण[4] ।
प्रगटियौ[5] उदैगिरि जोधपुर, कमळ[6] सुकवि प्रफुलित करे ।
गह धार[7] पाट वणियौ[8] 'गजण', सूरिज[9] सूरिजसिंघरै ।। २

खळ भग्गा देखतां, चोर छळ जोर निसाचर ।
सुध्रम दांन सिनांन[10], व्रहम जप वधे[11] स्रियावर[12] ।
पूजा[13] देव प्रसाद, वधै[14] झालरि[15] घंट वाजा[16] ।
सुभ मारग मिळ[17] सयण, सकळ सुख वधे सकाजा ।
किलमांण चंद्रवंसी कमळ, देखि तास सकुचै[18] डरै[19] ।
गहधार[20] पाट वधियौ[21] 'गजण', सूरज[22] सूरजसिंघरै[23] ।। ३

उण अवसर मझि 'अमर', अधक[24] धर दुंद उठायौ ।
मिळि[25] असपत्ति खुरंभ[26], अधिक दळ बळ[27] मझि[28] आयौ ।
हरवळ 'गजबंध'[29] हुवौ[30], 'अमर' लड़ियौ[31] उण वारां[32] ।
खेड़ेचां दिखणियां[33], रीठ वागौ खग धारां ।

---

१ ख. विमर । २ ख. ग. कुरीयंद । ३ ख. दवे । ग. दवे । ४ ख. ग. तारायण । ५ ख. ग. प्रगटीयौ । ६ ख. कम । ७ ख. ग. घारि । ८ ख. ग. वणीयौ । ९ ख. सूरज । ग. सूरिझ । १० ख. ग. सन्नांन । ११ ख. वेंधे । १२ ख. ग. श्रीयावर । १३ ग. पूजो । १४ ख. ग. वधे । १५ ख. ग. झालर । १६ ग. वाजा । १७ ख. ग. मिलि । १८ ख. सकुचे । १९ ख. डरे । २० ख. महधारि । ग. गहधारि । २१ ख. ग. वणीयौ । २२ ख. ग. सूरिज । २३ ख. सूरिजसंघ । २४ ख. ग. अधिक । २५ ख. ग. मेल्हे । २६ ख. ग. षुरम । २७ ख. वळ । २८ ख. ग. सझि । २९ ख. गजवंध । ३० ख. हुओ । ३१ ख. ग. लड़ीयौ । ३२ ग. बारां । ३३ ख. ग. दषिणीयां ।

---

२. करण सहंस – सूर्य । करग – हाथ । तिमर – तिमिर, अन्धेरा । कुरियंद – दारिद्रय, कंगाली, निर्धनता । छत्रपति – राजा । ताराइण – तारागण, उडुगण, गह, गर्व । पाट – राज्यसिंहासन । गजण – गजसिंह ।

३. सुध्रम – सुधर्म, उत्तम कर्म, पुण्य कर्त्तव्य । स्त्रियावर – सीतावर, श्रीरामचन्द्र । किलमांण – यवन ।

४. अमर – मलिकअंबर चंपू नामक व्यक्ति जो जातिका हब्शी था और अहमदनगरका प्रधान मन्त्री था । असपत्ति – बादशाह । गजबंध – महाराजा गजसिंह । रीठ – प्रहार । वागो – बजा, हुआ ।

असि गयंद तबल[1] नेजा लियां[2], खड़े 'अमर' भड़ रिण[3] खळे।
भागा[4] हजार बावन[5] भिड़े[6], उभै हजारां आगळे ॥ ४

खड़की गढ़ धोखळे[7], गोळकूंडौ[8] गाहट्टे।
खत्रि[9] लियौ[10] खेलणौ[11], झाड़ि खळ दळ खग झट्टे।
तोड़िचंदी[12] तोड़ियौ[13], निहंग चढ़ियौ[14] पड़ि[15] नाळौ।
गढ़ विकराळौ 'गजण', रूक बळि[16] लियौ[17] रनाळौ[18]।
आसेर सतारौ[19] ऊभड़े[20], धोम कोम अहि धूजियौ[21]।
दळथंभ नांम असपति[22] दियौ[23], पटां वधारां पूजियौ[24] ॥ ५

दखिण धरा रस दियौ[25], असह नह करै इरादौ।
दिली लियण[26] जिण दीह, जोम भरियौ[27] साहिजादौ।
देखि चहन[28] दळथंभ, सीख मांगे[29] तै सायत[30]।
दीध सीख दळ लियण[31], असप गज करे[32] इनायत[33]।

---

१ ख. तवल। २ ख. ग. लीया। ३ ख. ग. पडि। ४ ख. नागा। ५ ख. वांवन। ग. वावन। ६ ख. ग. सुभड़। ७ ख. धौयले। ग. धौवलै। ८ ख. गोळकुंडो। ग. गोळकुंडौ। ९ ख. ग. षत्री। १० ख. ग. लीयौ। ११ ख. ग. षेल्हणौ। १२ ख. तोडिचजी। ग. तोडिचंजी। १३ ग. तोडीयौ। १४ ख. ग. चढ़ीयां। १५ ख. ग. पड़। १६ ख. वळ। ग. वळ। १७ ख. ग. लीयौ। १८ ग. रजाळौ। १९ ख. ग. सतारा। २० ख. ग. ऊजड़े। २१ ख. ग. धूजीयौ। २२ ग. असिपति। २३ ख. ग. दीयौ। २४ ख. ग. पूजीयौ। २५ ख. ग. दीयै। २६ ख. ग. लीयण। २७ ख. ग. भरीयौ। २८ ख. ग. चिहन। २९ ख. मंगै। ग. मंगे। ३० ख. ग. सायति। ३१ ग. लीयण। ३२ ख. करै। ३३ ख. ग. इनायति।

---

४. तबल – एक प्रकारका शस्त्र विशेष। खळे – विचलित हो कर, अधीर हो कर। आगळे – अगाड़ी।

५. धोखळे – युद्धमें। गाहट्टे – ध्वंश कर, पराजित कर। झाड़ि – प्रहार कर, संहार कर। खग झट्टे – तलवारोंके प्रहारोंसे। निहंग – आसमान। विकराळौ – भयंकर, जबरदस्त। गजण – महाराज गजसिंह। रूक – तलवार। आसेर – गढ़, किला। ऊभड़े – नाश हो गया। धोम – उष्णता, गर्मी। कोम – कूर्म, कच्छप। अहि – शेषनाग। दळथंभ – सेनाको मुकाबलेसे रोकने वाला, महाराजा गजसिंह की उपाधि विशेष।

६. रस – रुचि, आकर्षण। असह – शत्रु। इरादौ – विचार। दीह – दिन, दिवस। जोम – उमंग, जोश। चहन – चिन्ह, निशान। असप – अस्व, घोड़ा।

हुय विदा सभे दळ हालियौ[1], साझण[2] कज[3] सुरतांणरौ ।
जोधांण[4] अयौ[5] जोधांणपति, जगे भाग जोधांणरौ ।। ६

इतै खुरस आवियौ[6], साह परि[7] सझि दळ सव्वळ ।
धर साहां धौपटै, खलक मंडि[8] पड़े[9] खळव्भळ[10] ।
तांम[11] साह तेड़ियौ[12], 'गजण' जीपण गजभारां ।
अवस[13] को[14] (इ) ऊबरां[15], तेड़ि लीधा तिण वारां ।
करि 'गजण' थाट खटतीस कुळ, आरावा[16] गज धज अगां ।
हालियौ[17] साह संकट[18] हरण, खुरम साह भांजण खगां ।। ७

विखम तबल[19] वाजतां, गयंद गाजतां गरूरां ।
असि धमसतां अनेक, सगह वहसंतां सूरां ।
सेलां बीज[20] सिळाव, मरद मारवां[21] गहम्मह[22] ।
इम आयौ 'गजसाह', दिल्ली[23] पतिसाह दरग्गह[24] ।
मिळ[25] साह कुरव[26] बगसे महत, तेग बंधे[27] स्री हथि तठै ।
पतिसाह 'गजण' मसलति परठि, जुध आरंभ कीधौ जठै ।। ८

---

१ ख. ग. हालीयौ । २ ख ग. सजण । ३ ख. ग. काज । ४ ग. जोधांणि । ५ ख. आयौ । ६ ख. ग. आवीयौ । ७ ख. ग. पर । ८ ख. ग. मझि । ९ ग. पड़ै । १० ख. पळभ्भळ । ग. षळभ्भळ । ११ ख. ग. ताम । १२ ख. ग. तेडीयौ । १३ ख. ग. अवर । १४ ख. सकौ । ग. सकौ । १५ ख. ऊंवरा । १६ आरावा । १७ ख. आलीयौ । ग. हालीयौ । १८ ख. ग. संगठ । १९ ख. तवल । २० ख. वीज । २१ ख. ग. मारुवां । २२ ख. गहंमद । ग. गहंमहं । २३ ख. ग. दिली । २४ ख. ग. दरगह । २५ ख. ग. मिलि । २६ ख. ग. कुरव । २७ ख. वधे ।

---

६. साझण – दण्डित करनेको, सजा देनेको, संहार करनेको ।

७. धौपटै – उपद्रव करते हैं, लूटते हैं । खलक – खल्क, संसार । खळव्भळ – खलबली, घबराहट । तेड़ियौ – बुलाया । जीपण – जीतनेको । गजभारां – हाथियोंका समूह, हाथियोंकी सेना । थाट – सेना । आरावा – तोप । धज – घोड़ा । अगां – अगाड़ी ।

८. गरूरां – गंभीर । असि – अश्व, घोड़ा । धमसतां – जोशपूर्ण चलने पर । सगह – गर्व । सिळाव – बिजलीकी चमक । मारवां – राठौड़ों । गहम्मह – समूह, भीड़ । गजसाह – महाराजा गजसिंह । दरगाह – दरबार । महत – महान । परठि – रच कर ।

धोम[1] नयण सिंधुरां[2], जंगी हौदां पाखर जड़ि[3] ।
तांम हुवा[4] तइयार[5], भीड़[6] सिलहां ससत्रां भड़ि[7] ।
परठि जीण पाखरां, तुरंग सझिया[8] अतुळीबळ[9] ।
भार आराबां[10] भरे[11], मोहर[12] खड़किया[13] असंगळ ।
चढ़ि गयंद तुरां होतां चमर, धख दिल्ली सुख कजि धरै ।
मिसलां अमीर बंट[14] जुध मंडै[15], साह खुरम पतिसाहरै ॥ ९

तांम साह तजबीज[16], एम[17] चित मझि अधारै[18] ।
नयर जोध अंब[19] नयर, वडा दो[20] भूप विचारै ।
जादा दळ 'जैसाह', देखि हरवळ करि दीधौ ।
दळां मोहरि[21] 'दाहिणै, कमंध खित[22] निज दळ कीधौ ।
डहकियौ[23] साह देखे[24] डंमर[25], घणूं भेद[26] न लहै घणा ।
त्रण लाख दुसह भांजै तिसा, त्रण हजार 'गजबंध'[27] तणा ॥ १०

---

१ ग. धोम । २ ग. सीधुरां । ३ ग. जड । ४ ख. ग. हूंआ । ५ ख. ग. तईयार । ६ ख. तीडि । ७ ख. ग. भड । ८ ख. ग. सझीया । ९ ख. अतुळीवळ । १० ख. अरावां । ११ ख. ग. भरै । १२ ख. ग. मौहरि । १३ ख. ग. षडकीया । १४ ख. ग. वंटि । १५ ख. मिले । ग. मंडे । १६ ख. तजवीज । १७ ग. ऐम । १८ ख. आधारे । ग. आधारें । १९ ख. अंव । २० ख. ग. दोय । २१ ख. मौहोरि । ग. मौहोरि । २२ ख. षिज । ग. षीज । २३ ख. डहकीयौ । २४ ग. देखै । २५ ख. ग. डमर । २६ ग. भोदि । २७ ख. गजवंध ।

---

९. धोम – अग्नि, आग, लाल । सिंधुरां – हाथियों । हौदां – अम्मारी । भीड़ – कस कर, बांध कर । सिलहां – कवचों । आरावां – तोपें रखनेकी गाड़ी । मोहर – अगाड़ी । खड़किया – वजाये । असंगळ – अमांगलिक वाद्य । तुरां – घोड़ों । धख – प्रवल इच्छा । कजि – लिये । मिसलां – पंक्तियों ।

१०. अधारै – धारण करता है, विचार करता है । नयर जोध – जोधपुर नगर । अंब नयर – आमेर नगर जो जयपुर राज्यकी प्राचीन राजधानी था । जैसाह – मिर्जा राजा जयसिंह । हरवळ – हरावल, सेनाका अग्र भाग । मोहरि – अगाड़ी । डहकियौ – भौंचक्का हुआ, स्तंभित हुआ । डंमर – वैभव, ऐश्वर्य ।

उठै[1] भीम हरवलां[2], हुवौ[3] खूमांण हठाळौ।
अवर[4] खांन ऊवरां[5], चढ़े लसकर[6] कळिचाळौ।
तोप[7] दगे[8] तिण वार, अवर[9] आरवा[10] अपारां।
ओळां[11] जिम पड़ि असण, धोम[12] गोळां धोमारां।
उडि कोहक[13] वांण[14] सिर धड़ उडै, गज[15] भिड़ज्ज[16] भड़ पड़ि गरा।
खुरमरा थाट आया खड़े, भिड़ज उपाड़े 'भीमरा'॥ ११

जाडां थंडां जियार, लोह आडां भड़[17] लागा।
जेण वार 'जैसाह', भिड़े हरवळ दळ भागा।
जु मसै[18] दळ जंहगीर[19], अवर नह को आलंवण[20]।
उण वेळा ओरिया[21], थाट दारण दळथंभण।
रोकिया[22] खुरम 'भीमांण'रा[23], दळ दहुंवै फाटां दळां।
घण जरद घाट सेलां घमक, वाजि झाट घण वीजळां[24]॥ १२

---

१ ख. ग. उठो। २ ख. ग. हरवल्लां। ३ ख. ग. हूवौ। ४ ग. अवर। ५ ख. ऊवरा। ६ ग. लसकरि। ७ ग. तोप। ८ ग. दगै। ९ ग. अवर। १० ख. आरवां। ग. आरवा। ११ ख. ग. वोला। १२ ग. धौम। १३ ख. ग. कहोक। १४ ख. वांण। १५ ख. गज्ज। ग. गझ्झ। १६ ख. ग. भिड़ज्ज। १७ ख. झल। ग. झड़। १८ ख. ग. जुमसे। १९ ख. ग. जाहांगीर। २० ख. आलंवण। २१ ख. ग. ओरीया। २२ ख. रोकीया। ग. रीझीया। २३ ख. ग. भीमेण। २४ ख. ग. वीजळां।

---

११. भीम – महाराणा अमरसिंहका पुत्र भीम सीसोदिया जो महाराणा करणसिंहकी सेनाका सेनापति था। खूमांण – सीसोदिया वंशका राजपूत। हठाळौ – अपनी बात पर दृढ़तापूर्वक रहने वाला। ऊवरां – अमीर, सरदार। कळिचाळौ – योद्धा, वीर। असण – तोपका गोला, तीर, बाण। धोम गोळां – आगके गोले। धोमारां – (?)। कोहक वांण – एक प्रकारकी तोप, अग्निबाण। भिड़ज्ज – घोड़ा। गरा – समूहों। थाट – सेना, दल। खड़े – चला कर। भिड़ज – घोड़ा।

१२. जाडां थंडां – घनी सेनाओं। जियार – जिस समय। लोह आडां भड़ लागा – बहुतसे योद्धाओं पर शस्त्र-प्रहार हुआ। जैसाह – मिर्जा राजा जयसिंह। मसै – मुड़ना, खिसना। आलंवण – अवलंब, सहारा। ओरिया – झोंक दिये। दारण – भयंकर, जबरदस्त। दळथंभण – सेनाको रोकने वाला, महाराजा गजसिंहकी उपाधि विशेष। भीमांणरा – भीमसिंह सीसोदियाके। दहुंवै – दोनों ओरके। घण – बहुत। जरद – कवच। घाट – शरीर। घमक – प्रहार, वार। वाजि – बजी, ध्वनित हुई। झाट – प्रहार। वीजळां – तलवारों।

मेवाड़ां मारवां[1], वहै साबळ[2] वीजूजळ ।
तांणि वाग रवि तांम, दुगम देखंत दमंगळ ।
पिंड फूटै रत[3] पड़ै, पियै[4] चौसठि[5] भर[6] पत्तर ।
सिर तूटां[7] सूरिमां, सझै संकर गळि चौसर[8] ।
रिख हसै वरै वर अच्छरा[9], कमंध लोह स्रीहथ करै[10] ।
जमदढ़ां खंजर पिंजरां जड़ै, कळह 'भीम' 'गजबंध'[11] करै ॥ १३

बथां[12] भरै गळबाह[13], हथां[14] जमदाढ़ झळाहळ[15] ।
जड़ै घटां जरदाळ, भिड़ै नीकळै झळाहळ ।
बकै[16] छकै[17] बिकराळ[18], धुकै[19] ऊचकै[20] पड़ै धर[21] ।
निहंग हंस नीझकैं, अगन भभकै धर अंबर[22] ।
पाड़ियौ[23] 'भीम' खागां पछटि, गयौ खुरम लसि कुरंग गति ।
गहतंत एम[24] जीतौ[25] 'गजण', पूरब[26] धर जोधांणपति ॥ १४

---

१ ख. ग. मारुवां । २ ख. सावळ । ३ ख. रति । ४ ख. पीयै । ५ ख. चोसठि । ६ ख. ग. भरि । ७ ख. ग. तूटै । ८ ग. चौसरि । ९ ख. ग. अपछरां । १० ख. ग. श्रीहथि । ११ ख. गजवंध । १२ ख. वथां । १३ ख. गळवांह । १४ ख. ग. हथा । १५ ख. हलाहल । १६ ख. वकै । ग. वके । १७ ख. छवै । १८ ख. ग. विकराळ । १९ ग. धूकै । २० ख. उचकै । २१ ख. ग. धरै । २२ ख. अंवर । २३ ख. ग पाड़ीयो । २४ ख. ऐम । २५ ख. जीतो । २६ ख. पूरव ।

---

१३. मेवाड़ां – सीसोदियों । मारवां – राठौड़ां । वीजूजळ – तलवार । रवि – सूर्य । दुगम – दुर्गम, कठिन, भयंकर । दमंगळ – युद्ध । रत – रक्त, खून । चौसठि – चौसठ योगिनियोंका समूह । पत्तर – खप्पर । सझै – धारण करते हैं । चौसर – हार, माला (यहाँ मुंडमाला अर्थ हैं) । रिख – नारद ऋषि । वरै – वरण करती है । पिंजरां – शरीरोंमें । जड़ै – प्रहार करता है । भीम – भीमसिंह सीसोदिया । गजबंध – महाराज गजसिंह ।

१४. बथां – बाहुपाश । गळबाह – कंठालिंगन । झळाहळ – चमकती हुई । घटां – शरीरों । जरदाळ – कवचधारी । भिड़ै – टक्कर खाती या खाता है । झळाहळ – चमकदार, दमकती हुई । धुकै – क्रोधमें जलते हैं । ऊचकै – उचकते हैं । निहंग – आकाश । हंस – सूर्य, प्राण । नीझकैं – उत्कंठित । अगन – अग्नि । भभकै – प्रज्वलित होती है । धर – पृथ्वी । अंबर – आकाश । लसि – शोभा देता हुआ । कुरंग – हरिण । गहतंत – मस्त, जोशपूर्ण । जीतौ – विजयी हुआ ।

इम नौबत[1] बजाइ[2], दुझल जीतियौ[3] दसंगळ[4]
पटा वधारा समपि, साह पूजे भुज सब्बळ[5]।
कदे सिलह नह करी[6], विडंग ऐरि[7] बहू[8] वारां।
वौह[9] वारां[10] 'गजबंध', भिड़े[11] जीतौ[12] गजभारां।
तिण वार तेज 'गजबंध' तणौ[13], दहुं राहां सिर दीपियौ[14]।
स्त्रीहथां खाग वाहै[15] इसा, जुध करि बावन[16] जीपियौ[17]* ॥ १५

महाराजा स्त्री गर्जासघजीरौ दांनवरणण[18]

असि सिरपाव अनेक, कड़ा मोती गज कंकण[19]।
थाट दरब[20] थेलियां[21], घणा जंवहर भूषण घण।
जमदढ़ खग जंवहार, अधिक रीझे[22] जसदावै।
दिया[23] जीत दळथंभ, इता गिणतां नह आवै।
पलटियौ[24] नहीं ग्रहियां पलौ, सत हरचंद बिरदां[25] सधे[26]।
दातारपणै[27] 'गजबंध'[28] दुझल, वीकम क्रन[29] हूंतां वधे[30] ॥ १६

---

१ ख. ग. तववति। २ ख. वजाय। ग. वजाय। ३ ख. ग. जीतीयौ। ४ ख. ग. डुमंगळ। ५ ख. सव्वल। ग. सवळ। ६ ख. ग. किवी। ७ ख. ग. वोरे। ८ ख. ग. वहु। ९ ख. वौहां। ग. वहौं। १० ख ग. वारां। ११ ख. भीडे। ग. भिड़े। १२ ख. जीतो। १३ ख. गजवंध। १४ ख. दीपीयौ। ग. दापीयौ। १५ ग. वाहे। १६ ग. वांवन। १७ ग. जीपीयौ। *यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है।
१८ ख. वर्ननं। ग. वर्नन। १९ ख. ग. कंचण। २० ख. ग. दरव। २१ ख. ग. थैलीयां। २२ ख. रीझै। २३ ख. ग. दीया। २४ ख. ग. पलटीयौ। २५ ख. ग. विरदां। २६ ख. सवै। २७ ख. दातार तणै। २८ ख. गजवंध। २९ ग. कन। ३० ख. ग. वधै।

---

१५. दुझल – वीर, योद्धा। दसंगळ – युद्ध। वधारा – पूर्वजोंकी जागीर या राज्य भूमिके अतिरिक्त प्राप्त की जाने वाली नई भूमि, राज्य या ग्राम। विडंग – घोड़ा। ऐरि – युद्ध-भूमिमें झोंक कर। गजबंधतणौ – महाराजा गर्जासहजीका। राहां – सम्प्रदायों। सिर – ऊपर। दीपियौ – चमका, शोभित हुआ।

१६. थाट – ढेर, राशि, समूह। दरब – द्रव्य। जंवहर – जवाहरात। पलौ – अंचल, वस्त्र, छोर। सत हरचंद – सत्यवादी हरिश्चन्द्र। बिरदां – विरुदों। सधै – प्राप्त किये। गजबंध – महाराज गर्जसिंह। दुझल – वीर, योद्धा। वीकम – वीर विक्रमादित्य। क्रनहूंता – दानवीर राजा कर्णसे। वधे – बढ़ा, विशेष हुआ।

दूहा– गांम आठ बारह[1] गयंद, पनरह[2] लाख[3] पसाव ।
गुण पातां रीझे 'गजण', दीधा दिल दरियाव ।। १७

कवित्त– लाख प्रथम दनि लहै[4], आदि 'राजसी' अखावत ।
लख दूजौ[5] दनि[6] लहै[7], पात 'राजसी' पतावत ।
दुरस 'किसन' लख दोइ, लहै आढ़ां जस लाइक[8] ।
गाडण[9] 'केसव' गुणे, व्रवे पंचम लख वाइक[10] ।
लख छठौ 'खेम' धधवाड़ लहि, रांण जगत[11] सेवा रहण ।
धधवाड़ लाख सपतम धरे, स्यांमदास माधवसुतण ।। १८
अस्टम लख उणवार[12], लहै[13] खेतल[14] कवि[15] लाळस ।
सुकवि हेम सांमौर, जेण लख नमौ काज जस ।
दसम लाख कलियांण, राव महड़ू जाडावत ।
सिंढ़ाइच[16] हरदास, एक[17] दस लख बांणावत[18] ।

---

१ ख. ग. वारह । २ ग. पनर । ३ ख. लाषे । ४ ख. हले । ५ ख. दूजो ६ ग. दति । ७ ख. हले । ८ ख. ग. लायक । ९. ग. गाढ़ण । १० ख. ग. वायक । ११ ख ग. जगड़ । १२ ग. तिणवार । १३ ख. लहे । १४ ग. षेजळ । १५ ग. किवि । १६ ख. संटायच । ग. संढ़ायच । १७ ग. ऐक । १८ ख. वांणावत ।

---

१७. गुण – काव्य, कविता, यश । पातां – पात्रों, कवियों । गजण – महाराजा गजसिंह ।

१८. दनि – दानमें । लाख – लाखपसाव । राजसी – राजसिंह नामक अखावत बारहठको जालीवाड़ा नामक ग्राम लाखपसावमें दिया था । राजसी – राजसिंह नामक पातावत शाखाका बारहठ । दुरस – महाकवि दुरसा आढ़ा, या श्रेष्ठ । किसन – दुरसा आढ़ाका पुत्र किसना आढ़ा जिसको पांचेटिया ग्राम दिया गया था । 'रघुवरजसप्रकास'के कर्त्ता अपर किसनाजी इनसे छठी पीढ़ीमें हुये थे । केसव – केसोदास गाडणको सोभड़ावास नामक ग्राम लाखपसावमें दिया गया । व्रवे – दिया गया । वाइक – वाक्य, शब्द । खेम – खेमराज धधवाड़ियाको राजगियावास नामक ग्राम लाखपसावमें दिया गया । धधवाड़ – चारणोंमें धधवाड़िया नामक गोत्रका व्यक्ति । माधोदास धधवाड़ियाके सुपुत्र श्यामदास धधवाड़ियाको सातवां लाखपसाव दिया गया ।

१९. अस्टम लख – आठवां लाखपसाव । खेतल – खेतसिंह नामक लाळस गोत्रका कवि जिसको जोधपुर तहसीलका भाटेळाई नामक ग्राम लाखपसावमें दिया गया । हेम – हेम कवि जो सांभोरे गोत्रका चारण कवि था । इसको महाराज गजसिंहने अपना कविराजा बनाया था । इसने 'गुण भाखा चरित्र' नामक महाराजा गजसिंहके राज्य-कालमें एक ग्रंथ बनाया था जो हमारे संग्रहमें है । दसम''' बांणावत – प्रसिद्ध कवि जाडा महडूका पुत्र कल्याणदास । बाणाके पुत्र हरिदास सिंढ़ायचको ग्यारहवां लाखपसाव दिया गया ।

बारमौ लाख माधव बगसि, संढ़ायच हर[१] सुक्खनूं[२] ।
तेरमौ लाख दीधौ तदिन[३], पोह[४] कविया[५] पंच मुक्खनूं[६] ॥ १९

दोहा– सुकवि 'मांन' 'गोकळ' सुकवि, रूपग सुणि बहु[७] रीध ।
'गजै'[८] होय सुरतर[९] गहर[१०], दोय भाटां लख दीध ॥ २०
वहु[११] राजस सुखदांन वहु[१२], वहु[१३] जुध फतै[१४] निवाह[१५] ।
सो[१६] जग ऊपरि[१७] क्रीत सभि, स्रुगि[१८] गौ[१९] पह[२०] 'गजसाह' ॥ २१
पुत्र दोय 'गजपति'रै, सूर दतार सधीर ।
वडौ 'अमर' लहुड़ौ[२१] 'जसौ', वडै[२२] नखत[२३] नरवीर ॥ २२
पांण तपोवळ[२४] वयळपति[२५], 'जसै'[२६] लहे[२७] जोवांण ।
पाट विराजै छत्रपती[२८], मारू अमली[२९] मांण ॥ २३
असि सिरपाव गयंद अथ[३०], जे जंवहार[३१] अदाव[३२] ।
पातिसाह[३३] भुज पूजिया[३४], कहि महाराज[३५] किताव[३६] ॥ २४

---

१ ख. जस । ग. तस । २ ख. ग. सुप्पनूं । ३ ग. तादिन । ४ ख. ग. पहौं । ५ ख. कवीयां । ६ ख. ग. मुप्पनूं । ७ ख. पौ । ग. पहौं । ८ ख. ग. गजण । ९ ग. सुरनर । १० ख. गजर । ११ ख. वहौ । ग. वहौ । १२ ख. वहौं । ग. वौहौ । १३ ख. वहौं । ग. वहौ । १४ ख. फते । १५ ख. ग. निवाह । १६ ख. ग. सौहौं । १७ ख. ऊपर । ग. उपर । १८ ख. श्रुति । १९ ख. गौहौं । २० ग. पौह । २१ ग. ल्हुड़ौ । २२ ख. वडे । २३ ख. ग. वषति । २४ ख. तपोवल । २५ ख. यणपित । ग. वयणपित । २६ ख. जसे । २७ ग. लहे । २८ ख. ग. छत्रपति । २९ ख. अमती । ग. अवळी । ३० क. अव । ख. अथि । ३१ ख. अजवार । ग. जुवहार । ३२ ख. ग. अदाव ३३ ख. पातसाह । ३४ ख. ग. पूजीया । ३५ ख. ग. माहाराज । ३६ ख. किताव ।

---

१९. कविया पंच मुक्खनूं – कविया गोत्रके पंचायणदास कविको ।
२०. रूपग – काव्य, रूपक । रीध – प्रसन्न हो कर । गजै – महाराजा गजसिंह । सुरतर – सुरतरु, कल्पवृक्ष । गहर – गंभीर ।
२१. राजस – राज्य । क्रीत – कीर्ति, यश । स्रुगि – स्वर्गमें । पह – राजा । गजसाह – गजसिंह ।
२२. अमर – राव अमरसिंह । लहुड़ौ – छोटा ।
२३. पांण – प्राण, शक्ति, बल । वयळपति – वयळ = सूर्य + पति – सूर्यवंशका पति । जसै – जसवंतसिंह । पाट – राज्यसिंहासन । मारू – राठौड़ । अमली मांण – अपने अधिकार व ऐश्वर्यका उपभोग करने वाला ।
२४. असि – घोड़ा । अथ – अर्थ, धन, द्रव्य । जंवहार – जवाहरात । अदाव – मान, प्रतिष्ठा । किताव – (खिताव, उपाधि ?)

गज अस[1] अवि[2] नागौर गढ़, दे बहु[3] कुरब[4] दिलेस ।
ताव हुंतासण देखि तन, राव कहै[5] 'अमरेस' ॥ २५

इति चतुरथ प्रकरण ।

*

राव अमरसिंघजीरौ वरणण

कवित्त–समैं[6] तेण सुरतांण, अंब[7] दीवांण वणायौ ।
जठै राव जोमहूं[8], 'अमर' मदझर जिम आयौ ।
ऊभौ लोपि अमीर, जवन बह[9] हफतहजारी ।
मीर त्रुजक[10] इतमांम[11], कियौ तदि जड़े कटारी[12] ।
तदि गयौ साह तजि छत्र तखत, इम दहुं राह उचारियौ[13] ।
असपती सलाबति[14] मझि 'अमर', मीर सलाबत[15] मारियौ[16] ॥ १
उभै मिसल अंबखास[17], पड़ै[18] धड़हड़ अणपारां ।
राव जांणि नरसिंघ, हले करि दयंतविहारां ।
नख जमदढ़ नीझरैं[19], रुधर[20] मुख चख रातंवर[21] ।
काळरूप विकराळ, 'अमर' छिबतौ[22] भुज अंबर[23] ।

---

१ ख. ग. असि । २ ख. ग. ग्रवि । ३ ग. वहौ । ४ ख. ग कुरव । ५ ख. ग. कहे । ६ ख. समे । ग. समै । ७ ख. आव । ग. आंब । ८ क. जौमहूं । ९ ख. ग वहौ । १० ख. तुजिक । ग. तुझिक । ११ ख. ग. अतिमांम । १२ ग. कटारि । १३ ख. ऊचारीयौ । ग. उचारीयौ । १४ ख. सलावति । १५ ख. सलावति । ग. सलाबति । १६ ख. ग. मारीयौ । १७ ख. ग. अमषास । १८ ख. ग. पड़े । १९ ख. नांझरैं । २० ख. ग. रुधिर । २१ ख. मातंवर । ग. रातंवर । २२ ख. छिवतो । ग. छिवतौ । २३ ख. अंवर ।

---

२५. अवि – देकर, प्रदान कर । दिलेस – दिल्लीश, बादशाह । ताव – जोश, क्रोध । हुंतासण – अग्नि, आग । अमरेस – नागौराधिपति राव अमरसिंह ।

१. सुरतांण – सुलतान, बादशाह । अंब दीवांण – आम दरबार । जोमहूं – जोशसे । अमर – राव अमरसिंह । मदझर – हाथी, गज । मीर त्रुजक – अभियान या जलूस आदि की व्यवस्था करने वाला कर्मचारी । असपती सलावति – बादशाहसे रक्षित । मीर सलावत – बख्शी सलावतखां ।

२. अंबखास – आम खास । धड़हड़ – गिरनेसे उत्पन्न ध्वनि विशेष । राव – राव अमरसिंह । नरसिंघ – नृसिंहावतार । दयंत – दैत्य, असुर, मुसलमान । विहारां – संहार, ध्वंस । नीझरैं – झर रहा है । रुधर – रुधिर रक्त, खून । रातंवर – लाल । अंवर – आकाश ।

मल्हपियौ[1] रूप अध्रियांमणै[2], वहसंतौ[3] वंवाड़तौ[4]।
उरड़तौ सुजड़ जड़तौ असुर, पांचहजारी पाड़तौ ॥ २

पांच[5] हजारी पांच, धड़ां जड़ि हणे जमंधर।
मुख[6] सांम्हा[7] 'अमररै', न को आवै नर-नाहर।
ग्रहि[8] छळ अरजण[9] गौड़[10], परठि मनवार[11] अपारां।
नजर टाळि नाराज, वहे[12] घट हुवौ[13] विहारां।
वढ़ियै सरीर जमदढ़ वधे[14], 'अजौ' कुसळ[15] नह ऊवरै[16]।
जीवहूं लाज मोटी जिका, कांन[17] काट[18] अळगौ करै[19] ॥ ३

'अमर' लोथि आविया[20], वीर दारण[21] विकराळा।
पाड़ि खळां जुधि पड़े[22], काळभाळा किरमाळा[23]।
दियण[24] दाग[25] दारणां, 'अमर' आंणे उण वारां।
रचि आई रांणियां[26], सती करि करि सिणगारां।

---

१ ख. ग. मल्हपीयो। २ ख. ग. अध्रीयांमणै। ३ ख. ग. वहसंतौ। ४ ख. वांवाडतां। ग. वांवाडतौ। ५ ख. पंच। ६ ख. मुखि। ७ ख. सामा। ८ ख ग. ग्रह। ९ ख. ग. अरिजण। १० ख. ग. गवड़। ११ ख. मनह्वार। ग. मनह्वारि। १२ क. वहै। १३ ख. ग. हुवो। १४ ग. वहै। १५ ख. कुसलि। १६ ख. ऊवरे। १७ ख. कांनि। १८ ख. ग काटि। १९ ख. ग. करे। २० ख. ग. आवीयां। २१ ग. दारुण। २२ ग. पड़ै। २३ ख. ग. करिमाळा। २४ ख. ग. दीयण। २५ ग. दीग। २६ ख. ग. रांणीयां।

---

२. मल्हपियौ — छलांग भरी, कूदा। अध्रियांमणौ — भयंकर। वहसंतौ — विध्वंस करता हुआ। वंवाड़तौ — जोशपूर्ण आवाज करता हुआ। उरड़तौ — बलात् बढ़ता हुआ। सुजड़ — कटार। जड़तौ — प्रहार करता हुआ।

३. धड़ां — शरीरों। जड़ि — प्रहार कर। सांम्हा — सम्मुख, सामने। अमररै — राव अमरसिंहके। परठि — प्रतिष्ठा करके। नाराज — तलवार। वहे — चला कर। विहारां — विदीर्ण। वढ़ियै — कट गये। अजौ — अर्जुन गौड़। मोटी — महान, महत्त्वपूर्ण।

४. लोथि — शव। दारण — दारुण, जबरदस्त। काळभाळा — वीर, योद्धा। किरमाळा — खड्गधारी दियण दाग — अन्त्येष्टि क्रिया करनेको।

कमधज्ज[1] 'वलू'[2] सतियां[3] कनैं[4], कथ अमरहूं कहाविया[5] ।
सुरतांणहूंत घमसांण सझि, अम्हां[6] सताबी[7] आविया[8] ।। ४

सतियां[9] 'आंम'[10] सहेत, दाग वेदोगति दीधा ।
केसरियां[11] कमधजां, करे[12] म्रत[13] उच्छब[14] कीधा ।
वड चांपावत[15] 'वलू'[16], कमध्र 'भाऊ' कूंपावत ।
अवर[17] भींच उमराव[18], रोस भरिया[19] बहु रावत ।
सझि[20] तुरां साज जकड़े ससत्र, 'वलू'[21] मौड़ सिर बांधियौ[22] ।
'अमर'रै वैर[23] असपतिहूं, कमधां जुध आरंभ कियौ[24] ।। ५

आया छिबता[25] उरस[26], तेज खड़िया[27] तोखारां[28] ।
जड़ता सेलां जवन, रीठ देता खगधारां ।
सात फौज साहरी, विखम करि धार विहारां ।
झट वहता झेलता[29], मिळै दरगाह मंझारां ।

---

१ ग. कमधज्झ । ख. कमधज । २ ख. वलू । ३ ख. ग. सतीयां । ४ ख. ग. कनां । ५ ख. ग. कहावीया । ६ ख. ग. अम्हे । ७ ख. सतावी । ८ ख. ग. आवीया । ९ ख. ग. सतीयां । १० ख. ग. अमर । ११ ख. ग. केसरीयां । १२ ग करै । १३ ख. ग. मृत । १४ ख. उछव । ग. उत्छव । १५ ग. चंपावत । १६ ख. वलू । १७ ग. अमर । १८ ख. ग. अमररा । १[9] ख. ग. भरीया । २० ख. सजि । २१ ख. वलू । २२ ख. वांधीयौ । ग. वांधीयौ । २३ ग. वंरि । २४ ख ग. कीयौ । २५ ख. ग. छिवता । २६ ख. ग. उरसि । २७ ख. ग. षड़ीयां । २८ ग. तौषारां । २९ ख. ग. झीलता ।

---

४. वलू – राठौड़ वलू चांपावत । कनै – साथ । कथ – संदेश । अमरहूं – राव अमरसिंहसे । घमसांण – युद्ध । अम्हां – हम । सताबी – शीघ्र ।

५. आंम – राव अमरसिंह । दाग – अन्त्येष्टि संस्कार, दाह-संस्कार । वेदोगति – वेदोक्त विधानसे । वड – वड़ा, महान । चांपावत – राठौड़ वंशकी उपशाखा । कूंपावत – राठौड़ वंशकी उपशाखा । अवर – अपर, अन्य । भींच – योद्धा । रोस – जोश, उमंग । भरिया – पूर्ण, भरे हुए । रावत – (राजपुत्र) योद्धा, वीर । सझि तुरां साज – घोड़ों पर जीन कस कर । जकड़े ससत्र – शस्त्रोंसे सज्जित हो कर । अमररै – राव अमरसिंह राठौड़के ।

६. छिबता – स्पर्श करते हुए । उरस – आसमान । तोखारां – घोड़ों । जड़ता – प्रहार करते हुए । रीठ – प्रहार । दरगाह – दरबार ।

सत्र लोटपोट उडि दोट सिर, धजर चोट खग धोहड़ां ।
नवकोट·छ खंड वागा निडर, लालकोट[1] मझि लोहड़ां ॥ ६
दळ पाड़े[2] वह[3] रवद, पड़े[4] झिल लोह अपारां ।
करे[5] अचड़ कमधजां, वरे[6] अपछर तिण वारां ।
चढ़ विमांण[7] चलविया[8], सकौ कमधज सिरदारे ।
सूर लोक सत लोक, जाइ 'अमरेस' जुहारे ।
जावै[9] न नांम रवि चंद[10] जितै, गोम तितै[11] सिर[12] नागरै ।
उडि गया[13] थंभ तरवारियां[14], औजूं साखी[15] आगरै ॥ ७
दूहौ[16]– 'अमर' प्रवाड़ा एण[17] विध, कहिया[18] सुकवि सकाज ।
इण आगळि वरणन[19] अथग, राज तेज जसराज ॥ ८

महाराजा जसवंतसिंघरौ वरणण

कवित्त– राजतेज 'जसराज', सहस नव पति[20] संह[21] संकर[22] ।
राजनीत ध्रमरीत[23], वरण चत्र सुखी धरमवर ।
राजथंभ मंत्रियां[24], राज रच्छिक[25] उमरावां ।
राजद्वार[26] वहु[27] कुरव[28], राज जसधर कविरावां ।

---

१ ख. लालकोटि । २ क. पाडै । ३ ख. ग. वौहो । ४ क. पड़ै । ५ क. करै । ६ क. वरै । ७ ख. वमांण । ८ ख. चलवीया । ग. चालीया । ९ ख. जाए । ग. जाऐ । १० ख. ग. ससि । ११ ख. ग. जितै । १२ ख. ग. सिरि । १३ ख. उडिया । १४ ख. ग. तरवारीयां । १५ ग. सांची । १६ ख. दोहा । ग. दौहा । १७ ग. ऐण । १८ ख. ग. कहीया । १९ ग. वरन । २० ग. पच्चि । २१ क. संह । २२ ख. ग. संकर । २३ ख. ग. ध्रमरीति । २४ ख. ग. मंत्रीयां । २५ ख. ग. रछिक । २६ ख. ग. राजद्वारि । २७ ख. वहौ । ग. वहौ । २८ ख. कुरव ।

---

६. लोटपोट – कुलांचें खाते हुए । दोट – प्रहार । धजर – भाला । धोहड़ां – जखमों, राठौड़ों । लालकोट – लाल किला । लोहड़ां – अस्त्र-शस्त्रों ।

७. रवद – यवन, मुसलमान । अचड़ – महत्त्वपूर्ण कार्य, श्रेष्ठताका कार्य । सकौ – सब । सूर लोक – वह कल्पित लोक जहाँ पर वीर-गति प्राप्त योद्धागण पहुँचते हैं । सत लोक – वह कल्पित लोक जहाँ पर वे वीर पुरुष पहुँचते हैं जिनकी अर्धांगिनियाँ उनके साथ सती होती हैं । अमरेस – राव अमरसिंह । जुहारे – अभिवादन किया । गोम – पृथ्वी । नागरै – शेषनागके । औजूं – अभी तक ।

८. प्रवाड़ा – वीरताके कार्य, युद्ध, शाका । आगळि – अगाड़ी ।

९. सहस नव पति सह – मारवाड़का अधिपति । सहंसकर – सूर्य । वरण चत्र – चारों वर्णों । राजथंभ – राज्यके स्तंभरूप । रच्छिक – रक्षक । राज जसधर – महाराजा जसवंतसिंहसे प्राप्त यश वाले । कविरावां – कविराजाओं ।

दुजराज राजप्रोहित दिपत, सरब[1] राज सुख साजरौ।
पतिव्रता राज मिंदरां[2] पवित्र, राज एम[3] 'जसराज'रौ ॥ ९

*बाजराज[4] नृत[5] बेब[6], करै नटराजतणी कळ।
गजां राज घण गरज[7], गाज सरराज मदग्गळ[8]*।
रूप भूप रतिराज, प्रांण[9] अगराज[10] प्रकासण।
कौरवराज[11] धन करण, विमळ सुरराज विलासण।
अरिराज थरक[12] मांनै अमत[13], तप ग्रहराज तराजरौ।
इण राज जोड़ नह राज अनि, राज एम[14] जसराजरौ ॥ १०

नाभ राज इक न्रिमळ[15], प्रफुलि गिरराज वंसपर।
रहै जठै तन राज, रमैं रसराज रूपधर।
पंडव राज प्रधांन, मूरछन राज व्रहंमंड[16]।
जीति[17] राज तन जिता, चक्र सिवराज खंड चंड।
रतिराज पुत्र जैराजरै, किंकर राज सुरपति कियौ[18]।
'जसराज' ग्यांन दुजराज जग[19], जिकौ[20] राजपति जीपियौ[21] ॥ ११

---

१ ख. सरव। २ ख. ग. मंदिरां। ३ ग. ऐम।

*ये दो पंक्तियाँ ग. प्रतिमें नहीं हैं।

४ ख. वाजराज। ५ क. नृप। ६ ख. वेव। ७ ख. गाज। ८ ख. मद्दगल ९ ग. पांण। १० ख. मृगराज। ग. नृपगराज। ११ ख. ग. कोषराज। १२ ख. ग. थरकि। १३ ख. ग. अमल। १४ ग. ऐम। १५ ख. ग. नृमल। १६ ख. ग. वहैमंड। १७ ख. ग. जीति। १८ ख. ग. कीयौ। १९ ख. ग. जगि। २० ख. जीको। ग. जिको। २१ ख. ग. जीपीयौ।

---

९. दुजराज – द्विजराज, ब्राह्मण। राजमिंदरां – राजमहलोंमें।

१०. बाजराज – घोड़ा। बेब – दो दो। कळ – प्रकार, तरह। सरराज – समुद्र। मदग्गळ – हाथी। रतिराज – कामदेव। प्राण – शक्ति। अगराज – सिंह। विमळ – पवित्र। सुरराज – इन्द्र। करण – धनका दान देनेमें कर्णके समान। विलासण – उपभोग करने वाला। थरक – भय, डर। अमत – अमित, अपार। ग्रहराज – सूर्य। तराजरौ – समानका। जोड़ – बराबर। अनि – अन्य। जसराज – राजा जसवंतसिंह।

११. इस पद्यमें महाराजा जसवंतसिंहके गूढ़ वेदान्त एवं योग सम्बन्धी ज्ञानकी ओर संकेत है।

छंद वैताळ

ग्यांन व्रह्म 'जसराज' गुण, पुन[1] उग्र तप करि पाविया[2] ।
सार 'जसवंत' आदि 'स्रुतिवर'[3], विविध[4] ग्रंथ वणाविया[5] ।
व्रह्म[6] सिव सनिकादि[7] मुनिवर, ध्यांन नित[8] प्रत[9] चित धरै ।
त्रगुण[10] पर उर[11] वसै[12] निज तत, राज मझि जसराज'रै ॥ १२

कवित्त– ग्यांनी सीखै ग्यांन, कवी सीखै कविताई ।
सीखै खत्री संग्रांम, सस्त्र विद्या[13] मरसाई ।
मत सीखै मंत्रवी, राग सीखै रसचारी ।
सीखै ध्रम कुळ[14] सकळ, रीत सीखै छत्रधारी ।
सीखंत वेद पंडत[15] सकळ, दाता दांन[16] विध[17] दसदसौ ।
स्रब[18] जांण उतम[19] विद्या[20] प्रसध[21], जगतगरू राजा 'जसौ' ॥ १३
करै राज इम कमध[22], 'जसौ' छत्रपति जोधांणै ।
इतै[23] दिल्ली[24] ऊठियौ[25], खेध धौकळ[26] खुरसांणै ।
साहज्यहां[27] तिण समें[28], जुगत[29] त्रिय[30] वसि[31] चित जादा ।
मिळि 'अवरंग' 'मुरादि', दखिण[32] मुरड़े[33] साहिजादा ।

---

१ ख. पुण्य । ग. पुन्य । २ ख. ग. पावीया । ३ ख. वर । ४ ख. ग. विवधा । ५ ख. ग. वणावीया । ६ ख. व्रहंम । ग. व्रहम । ७ ख ग. सनकादि । ८ ख. ग. निति । ९ ख. ग. प्रति । १० ख. ग. त्रिगुण । ११ ख. ग. वर । १२ ख. वसे । ग. वसे । १३ ख. ग. विदीया । १४ ख. ग. प्रज । १५ ख. ग. पंडित । १६ ख. ग. दन । १७ ख. ग. विधि । १८ ख. श्रव । १९ ख. ग. उतिम । २० ख. ग विदीया । २१ क. प्रसद । ग. प्रसिध । २२ ग. कमंध । २३ ख. यतैं । ग. यतैं । २४ ख. ग. दिली । २५ ख. ऊठीयौ । ग. उठीयौ । २६ ख. ग. धौपळ । २७ ख. ग. साहजिहां । २८ ख. समै । ग. समें । २९ ख. जुगति । ३० ख. ग. त्रीय । ३१ ख ग. वसि । ३२ ख. दक्षिण । ३३ ग. मुरड़ै ।

---

१२. ग्यांन व्रह्म – ब्रह्मज्ञान, तत्वज्ञान । जसराज – महाराजा जसवंतसिंह । पुन – पुण्य । तत – तत्त्व ।

१३. मत – बुद्धि, मति । मंत्रवी – मंत्री । रसचारी – रसज्ञ । दसदसौ – दसों दिशाओंमें । जगतगरू – महान, जगत्गुरु । राजा जसौ – राजा जसवंतसिंह ।

१४. जसौ – राजा जसवंतसिंह । खेध – द्वेष, कलह । धौकळ – युद्ध, उत्पात । खुरसांणै – बादशाहत, बादशाह । साहज्यहां – बादशाह शाहजहाँ । त्रिय – स्त्री । अवरंग – औरंगजेब । मुरड़े – कोप कर । साहिजादा – शाहजादा ।

पूरब्ब[1] धरा[2] 'सूजै' पलटि[3], पिता हुकम सुजि लोपिया[4] ।
साहज्यां[5] अनै 'द्वारा' सुकर, कळहण दारुण[6] कोपिया[7] ।। १४

तांम 'जसौ' तेड़ियौ[8], अधिक दळ बळ[9] सझि आयौ[10] ।
सुपह मिळे[11] साहसां[12], सझे हित कुरब[13] सवायौ ।
जिण वेळां 'जैसाह', हुतौ[14] कूरम पह[15] हाजर ।
साहिजादै[16] पतिसाह, बिहूं[17] देखिया[18] बराबर[19] ।
तजबीज[20] साह कीधौ तठै, अवर सकौ[21] यांहूं[22] वरै[23] ।
कीजियै[24] विदा मांडण[25] कळह, अै साहिजादां[26] ऊपरै ।। १५

साह तांम समसेर, जड़त[27] जंवहरां जमंधर ।
मुलक वधारै समपि, हेम तौड़ा[28] गज हैंमर ।
'सूजा' दिस[29] 'जैसाह', विदा कीधौ जिण वारै ।
दो[30] साहजादां[31] दिसी[32], एक[33] 'जसराज' अधारै ।

---

१ ख. पूरव । ग. पूरव्व । २ ख. षरा । ३ ख. पटलि । ४ ख. ग. लोपीया । ५ ख. ग. साहिजां । ६ ख. दार । ग. दारण । ७ ख. ग. कोपीया । ८ ख. ग. तेड़ीयौ । ९ ख. वळ । १० ख. ग. आयौ । ११ ख. मिल । १२ ख. ग. साहसूं । १३ ख. कुरव । १४ ख. हुंतौ । ग. हूतौ । १५ ख. ग. पौहौ । १६ ख. ग. सहजादै । १७ ख. विहूं । ग. विहू । १८ ख. देषीया । ग. दैषीया । १९ ख. ग. वहादर । २० ख. ग. तजवीज । २१ ख. ग. सको । २२ ख. याहूं । २३ ख. ग. उरै । २४ ख. ग. कीजीयै । २५ ख. मंडल । ग. मंडण । २६ ख. साहजादां । २७ ख. ग. जड़ित । २८ ख. ग. तोरा । २९ ख. दिसै । ग. दिसि । ३० ख. ग. वारै । ३१ ख. ग. दोय । ३२ ग. साहिजादो । ३३ ख. ग. दिसी । ३४ ग. ऐक ।

---

१४. सूजै – शाहजादा शुजा । लोपिया – उल्लंघन किया । साहज्यां – शाहजहाँ । द्वारा – शाहजादा दाराशिकोह । कळहंण – युद्ध ।

१५. तेड़ियौ – बुलाया । सुपह – राजा । जैसाह – मिर्जा राजा जयसिंह । पह – राजा । मांडण – रचनेको ।

१६. समसेर – तलवार । जंवहरां – जवाहरात । हेम – सोना, स्वर्ण । तौड़ा – आभूषण-विशेष । हैंमर – घोड़ा । दिसी – तरफ । जसराज – महाराजा जसवंतसिंह । अधारै – आधार रूप रहा ।

आराव[1] साथ[2] वह[3] सुर असुर, फवे[4] गजां धज फरहरां।
आगराहूंत चढ़ियौ[5] 'जसौ', कीधां विकट्टां[6] लसकरां[7] ॥ १६

समं सरिता[8] घण सुजळ, वहै घण पंथ वहीरां।
पयदळ गयदळ पमंग, गज्ज[9] त्रंबाळ[10] गहीरां।
धर धूजै अहि धुकै[11], कोम कसकै कंध कंमर[12]।
चूर अनड़ तर चकै, रजां ढंके रातंबर[13]।
जमरांण इसा दळ सझि 'जसौ', दुगम रूप दरसावियौ[14]।
दिन केक मांहि खड़िया[15] दुझळ, एम[16] उजेणी आवियौ[17] ॥ १७

रचि 'अवरंग' 'मुरादि', गजां चढ़िया[18] गह धारे।
इण दळहूं चवगुणै[19], विखम दळ वळ[20] विसतारे[21]।
उभै तरफि[22] आरवा[23], मंडे[24] दळ उभै मद्दगळ[25]।
उभै तरफि बंधि[26] अणी, दमंग भाला दावानळ।

---

१ ख. आराव। २ ख. ग. साथि। ३ ख. ग. वहो। ४ ख. फवे। ५ ख. ग. चढ़ीयौ। ६ ख. ग. विकटां। ७ ख. ग. ल्हसकरां। ८ ख. ग. सलिता। ६ ख. ग. गाज। १० ख. त्रंवाल। ११ ख. धुजै। ग. धूकै। १२ ख. ग. कम्मर। १३ ख. रातंवर। १४ ख. ग. दरसावीयौ। १५ ख. ग. षड़ीयां। १६ ग. ऐम। १७ ख. ग. आवीयौ। १८ ख. ग. चढ़ीया। १६ ग. चवगुणौं। २० ख. वल। २१ ग. विसतारै। २२ ख. ग. तरफ। २३ ख. आरवा। २४ ख. ग. मंडे। २५ ख. ग. मदगल। २६ ख. वंदि। ग. वंदि।

---

१६. आराव – तोप। सुर – हिन्दू। असुर – मुसलमान। कीधां – किए हुए। विकटां – जबरदस्त, भयंकर। लसकरां – सेनाएँ।

१७. सरिता – नदी। पयदळ – पदाति, पैदल। गयदळ – हाथियोंकी सेना, गजदल। पमंग – घोड़ा। गज्ज – गर्जित किये। त्रंबाळ – नगाड़ा। गहीरां – गंभीर। अहि – शेषनाग। धुकै – जलता है। कोम – कूर्म, कच्छपावतार। चूर – ध्वंस कर। ढंके – आच्छादित कर। रातंबर – सूर्य। जमरांण – यमराज। सझि – सज्जित कर के। जसौ – महाराजा जसवंतसिंह। दुगम – भयंकर, भयावह। दरसावियौ – दिखाई दिया। खड़ियां – चलाने पर, चलाते हुए।

१८. गह – गर्व। चवगुणै – चौगुने। आरवा – तोपें। मद्दगळ – हाथी। अणी – अनीक, सेना। दमंग – अग्निकण। दावानळ – दावाग्नि।

आरोह पखर धर उडंडां, सिलह सस्त्र[1] धर ऊससै[2] ।
तेज में[3] दुरंग सझि तेवड़ै[4], जंग 'मुरादि'[5] 'अवरंग' 'जसै' ॥ १८

एक[6] साथ[7] आरबा, दुगम बिहुंवै[8] दळ[9] दग्गै[10] ।
अगन[11] सोर ऊछळै[12], लाय धर अंबर[13] लग्गै[14] ।
रोदकार[15] अरड़ाव, पड़ै[16] गोळा अणपारां ।
ह्वै[17] असि गज भड़ होम, धोम मिळि घटा अंधारां ।
घण बांण[18] कोहक[19] बांणां[20] गहक[21], दुगम घोर सिंधव डकां ।
कमधजां खाग ऊनंग करे, बाग[22] ऊपाड़ी[23] बेढ़कां ॥ १९

नाळ घमस[24] वजि[25] निहंग, धरा जहराळ कमळ[26] धुकि ।
सास नास वजि हमस, सरां सलितास नीर सुकि ।
भिड़िया[27] मूंछ[28] भुंहार, धजर कढ़ियां[29] धजफाड़ां ।
साबळ[30] भुज साहियां[31], रूप झळ भूत मुराड़ां ।

---

१ ख. ससत्र । २ ख. ऊससें । ३ ख. ग मै । ४ ख. ग. तेवडे । ५ ख. मुराद । ६ ग. ऐक । ७ ख. ग. साथि । ८ ख. ग. इहुंवें । ९ ख. ग. वळ । १० ख. ग. दगो । ११ ख. ग अगनि । १२ ख. वूछले । ग. उछळे । १३ ख. अंवर । १४ ख. लग्गे । ग. लगो । १५ ख. ग. रौदकार । १६ ख. ग. उडे । १७ ग. हूवै । १८ ख. ग. वांण । १९ ख. कहौक । ग. कौहक । २० ख. वाणा । २१ ख. ग. सघण । २२ ख. ग. वाग । २३ ग. उपाड़ी । २४ ख. घमसि । २५ ग. वज । २६ ख. ग. कमव । २७ ख. ग. भिड़ीया । २८ ख. मूछ । ग. मुंछ । २९ ग. वढ़ीयां । ३० ख. सावल । ३१ ख. ग. साहीयां ।

---

१८. पखर – घोड़ेका कवच । उडंडां – घोड़ों । तेवड़ै – तिगुना ।

१९. दुगम – दुर्गम, भयंकर । विहुंवै – दोनों । लाय – आग, अग्नि । अंबर – आकाश । रोदकार – रुद्ररूप, भयंकर । अरड़ाव – ध्वनि विशेष । अणपारां – असीम, अपार । धोम – अग्नि, आग । घण बांण – तोप विशेष । कोहक बांणा – अग्निवाण, तोप विशेष । गहक – ध्वनि । सिंधवी – वीर रस का राग । डकां – नगाड़ेके डंडों । ऊनंग – नग्न, नंगी । बेढकां – वीरों ।

२०. नाळ – तोप । घमस – ध्वनि विशेष । निहंग – आकाश । जहराळ – शेषनाग । कमळ – मस्तक, शिर । नास – नाक । हमस – घोड़ा । सरां – तालावों, सागरों, तीरों । सलितास – नदी । भिड़िया – स्पर्श किये । भुंहार – भौंहों । धजर – भाला विशेष । सावळ – भाला विशेष । साहियां – धारण किये हुए । झळ – अग्नि, आग । भूत – प्रेत । मुराड़ां – (?)

आवियौ[1] रूप अध्रियामणै[2], खुरासांण ऊखेलियौ[3] ।
महबूब[4] थंडां जाडां मही, भूप 'जसै' तदि भेळियौ[5] ।। २०

उजेणी जुधवरणण

वहै[6] घमक सावळां[7], वहै झाटक वीजूजळ ।
ढहै गयंद खळ ढहै, प्रेत भख[8] लहै[9] ग्रीध पळ ।
पड़ै भिड़ज पखरैत, पड़ै जरदैत अपारां ।
मंडै[10] मुगळ मारवां[11], इसौ धमचक इणवारां[12] ।
रक्खग[13] झड़ै दड़ड़ै रगत, गहि सगत्त[14] पत्र गड़गड़ै* ।
लड़थड़ै पड़ै के धड़ लड़ै, एम[15] असुर सुर आथड़ै ।। २१
सेल[16] जड़ै स्रीहथां, 'जसौ' पाड़ै जरदैतां ।
बगल[17] भरै महबूब[18], पमंग पाड़ै पक्खरैतां ।
जुध[19] खग वाहै 'जसौ', घणा मुगळां[20] खळ घावै ।
मसत गजां महबूब, धमक[21] उर टक्कर[22] धावै[23] ।

---

१ ख. ग. आवीया । २ ख. ग. अध्रीयामणै । ३ ख. ग. ऊपेलीयौ । ४ ख. महबूब । ५ ख. ग. भेलीयौ । ६ ख. ग. वहै । ७ ख. सावळां ८ ख. भषण । ९ ख. है । १० ख. ग. मंडे । ११ ख. ग. मारवां । १२ ख. ग. उणवारां । १३ ख. ग. रेष्पग । १४ ख. ग. सकति ।

*यह पंक्ति ख. तथा ग. प्रतियोंमें इस प्रकार है—
रेष्पग झड़ै दड़ड़ै रगत, गहि पत्र सकति गड़गड़ै ।

१५ ग. ऐम । १६ ग. सेल । १७ ख. बगल । १८ ख. महबूब । १९ ग. जुधि । २० ख. ग. मूगल । २१ ग. धमंक । २२ ख. ग. टकर । २३ ख. ग. धकावै ।

---

२०. अध्रियांमणै – भयंकर, भयावह । महबूब – प्यारे, प्रिय । थंडां – सेनाएं । जाडां – घनी । मही – में । भूप जसै – महाराजा जसवंतसिंह ।

२१. घमक – प्रहार, वार । वहै – होता है । झाटक – प्रहार । वीजूजळ – तलवार । ढहै – गिरते हैं । पळ – मांस । भिड़ज – घोड़ा । पखरैत – कवचधारी घोड़ा । जरदैत – कवचधारी योद्धा । मारवां – राठौड़ों । धमचक – युद्ध । रक्खग – रक्षक । झड़ै – वीर गति प्राप्त होते हैं । दड़ड़ै – द्रव पदार्थका ध्वनि करते हुए गिरना । रगत – रक्त, खून । सगत्त – शक्ति, रणचंडी । गड़गड़ै – गर्जना करती है । लड़थड़ै – लड़खड़ाते हैं । धड़ – कबंध । असुर – मुसलमान । सुर – हिंदू । आथड़ै – युद्ध करते हैं ।

२२. जड़ै – प्रहार करता है । स्रीहथां – अपने हाथोंसे । जसौ – महाराजा जसवंतसिंह । बगल भरै महबूब – प्रेमी आपसमें आलिंगन करते हैं; प्रेमपूर्वक परस्पर मिलते हैं । पमंग – घोड़ा । घावै – संहार करता है, मारता है । महबूब – (?) । धमक – उछल कर ।

इम करी[1] उरड़ असवारि[2] असि, घण निबाब[3] खळ[4] घाविया[5] ।
तिण वार कमंध 'सूरज'तणा[6], सूरज हाथ सराहिया[7] ।। २२

दस हजार रवदाळ[8], पड़े[9] गज भिड़ज अपारां ।
अंग असि अर आपरै, वहै रत लीह[10] विहारां[11] ।
गूड[12] हडा गहलोत[13], त्रुटे[14] सिव चखत तरासै ।
रूक झटां राठौड़, सूर पड़िया[15] सतरासै ।
वचियौ[16] न एक[17] लख दळ विचै, जवन धकै चढ़ि जेणसूं ।
'अवरंग' 'मुरादि'[18] वँचिया[19] उभै, आव न तूटी एणसूं[20] ।। २३

गाहट[21] हरवळ गोळ, चोळ चंदवळ करि चुख चुख[22] ।
निजर[23] चोळ धज नहर, मसत चख चोळ चोळ[24] मुख ।
चोळ सिलह थंड[25] चोळ, चोळ[26] हाथळ वीजूजळ ।
सफरा चोळ सरूप, जदिन रत चोळ वहै[27] जळ ।

१ ख. ग. करै । २ ख. ग. असवार । ३ ख. निवाव । ४ ख. खग । ग. खगि । ५ ख. ग. घाघीया । ६ ख. ग. सूरिजतणा । ७ ख. ग. सराहीया । ८ ग. रवदाळा । ९ क. पड़ै । १० ख. ग. लोह । ११ ख. ग. विहारां । १२ ख. ग. गौड । १३ ख. ग. गहलौत । १४ ख. तुटे । ग. तुटै । १५ ख. ग. पड़ीया । १६ ख. ग. वचीयौ । १७ ग. ऐक । १८ ख. सूराद । ग. मुराद । १९ ख. ग. वंचीया । २० ग. ऐणसूं । २१ ग. गाहटि । २२ ग. चुप्प चुप्प । २३ ख. ग. निजड़ । २४ ख. झोळ । २५ ख. ग. पिंड । २६ ग. चौळ । २७ ख. वहे ।

---

२२. उरड़ – युद्ध, आक्रमण, टक्कर । असि – घोड़ा । घाविया – संहार किये, मार डाले । सूरजतणा – सवाई राजा सूरसिंहके वंशज । सूरज – सूर्य, भानु । हाथ सराहिया – युद्ध-भूमिमें सूर्यने हाथोंसे शस्त्र-प्रहार करनेकी प्रशंसा की ।

२३. रवदाळ – मुसलमान । भिड़ज – घोड़ा । असि – तलवार । रत – रक्त, खून । लीह – रेखा । विहारां – विदीर्ण होने पर, फटने पर । गूड – गौड़ वंशके राजपूत । हडा – चौहान वंशकी हाडा शाखाके राजपूत । तरासै – (?) । रूक – तलवार । झटां – प्रहारों । आव – आयु, उम्र । तूटी – समाप्त हुई ।

२४. गाहट – नाश कर, ध्वंस कर । हरवळ – सेनाका अग्र भाग । गोळ – सेना । चोळ – लाल, घावोंसे पूर्ण । चंदवळ – सेनाके पीछेका भाग । चुख चुख – खंड-खंड । निजर – आंख, नेत्र । धज – भाला । नहर – (दिन, दिवस ?) [नोट – अरबीमें दिनको नहार कहते हैं]

सिलह – अस्त्र-शस्त्र । थंड – सेना, समूह । हाथळ – हाथ, एक शस्त्र विशेष । वीजूजळ – तलवार । सफरा – उज्जैनकी सिप्रा नदी । रत – रात, रात्रि ।

महवूब[1] चोळ लोहां महा, चोळ आप कळि चाळयौ[2]।
जुध[3] चोळ होय आयौ 'जसौ', एम[4] वाघ भूखाळयौ[5] ॥ २४

'अवरंग' असपति हुवौ, विखम चंड नयर विचाळै।
खेलू मालू खोसि[6], लिया[7] तदि 'जसै'[8] लंकाळै।
तांम[9] चूक तेवड़े, साह मसलति साधारी[10]।
उठै 'जमौ' आवियौ[11], करग[12] धारियां[13] कटारी*।
अवरंगजेव[14] इम जांणियौ[15], कमंध हणे[16] छळवळ कियां[17]।
करिमाळ चूक में[18] क्रूफ[19] करि, माळ धरी गळ मोतियां[20] ॥ २५

तांम प्रीत[21] भयतणी, व्रवै[22] वह[23] साह वधारा[24]।
तोग महीमुरतवा[25], उतंग गज तुरंग अपारा।

---

१ ख. महव्वूव। २ ख. चालुयौ। ग. चाळीयौ। ३ ग. जुधि। ४ ग. ऐम। ५ ख. भूपालुयौ। ग. भूपांलीयौ। ६ ख. पोस। ग. पौस। ७ ख. ग. लीया। ८ ख. जसौ। ९ ख. ग. ताम। १० ख. सधारी। ११ ख. ग आवीयौ। १२ ग करगि। १३ ग. धारीयां। *निम्न अंश ख. प्रतिमें नहीं है—

करग धारियां कटारी, अवरंगजेव इम जांणियौ।

१४ ग. अवरंगजेवि। १५ ग. जांणीयौ। १६ ख. ग. हणै। १७ ख ग. कीयां। १८ ख. ग. मै। १९ ख. ग. कूफ। २० ख. ग. मोतीयां। २१ ग. प्रीति। २२ ख. ग. व्रवे। २३ ख. वहौ। ग. वहौ। २४ ग. वधारा। २५ ख. ग. मुरतवा।

---

२४. लोहां – शस्त्र-प्रहारों। कळि चाळयौ – (योद्धा ?)। भूखाळयौ – भूखा, बुभूक्षित।

२५. चंड नयर – चंडी नगर, दिल्ली। विचाळै – में। जसै – महाराज जसवंतसिंह। लंकाळै – वीर, योद्धा। चूक – छल, षड़यंत्र। तेवड़े – विचार कर। साह – बादशाह। मसलति – गुप्त मंत्रणा। साधारी – (सलाह की ?)। करग – हाथ। करिमाळ – तलवार। क्रूफ – ईरानका एक नगर।

वि.वि. – ईरानके एक नगरका नाम कुफ है। इस नगरके निवासी बड़े क्रूर, निर्दय और बेईमान होते हैं, क्योंकि कूफियोंने हजरत इमामहुसैनको बड़े-बड़े वचन दे कर बुलाया था और फिर उन्हें अकेला ही छोड़ कर कत्ल होने दिया; अतः कवि महोदयने भी यह क्रूफ शब्द औरंगजेबके लिए प्रयोग किया है।

२६. व्रवै – देता है। वह – बहुत। वधारा – राज्य या जागीरमें वृद्धि। तोग – मुगल बादशाहोंके समयका ध्वज विशेष जो उच्च मनसबदारों या पदाधिकारियोंको विशेष सम्मानके रूपमें प्रदान किया जाता था। इस पर सुरागायके पूंछोंके बालोंके गुच्छे लगे रहते थे। महीमुरतवा – मछली आदिके आकारके वह निशानात जो बादशाह या राजाकी सवारीके आगे हाथियों पर चला करते थे। उतंग – उत्तुंग, ऊँचा। तुरंग – घोड़ा।

सुजड़ खंजर समसेर, कनक जंवहर[1] घण किम्मति[2]।
साह अवै[3] सिरपाव, अवै द्रब मुहम विलायति।
सुत 'गजण' जदी दळ बळ सझै, आयौ जोम उमंडरौ*।
पति त्रिखंड डंड लीधौ पछटि, खंड पांणि खट खंडरौ॥ २६

महाराजा[4] श्रीजसवंतसिंघजीरौ दांनवरणण[5]

दूहौ[6]– चत्र गज सांसण दूंण चत्र[7], दस चत्र लख दन दीध।
अवि रीझां अणपार[8] विण[9], कमध 'जसै' जस कीध[10]॥ २७

कवित्त– बारहट[11] नरहर बगसि[12], एक[13] लख प्रथम उजागर।
कवि आढ़ा 'किसन'नूं, अवे[14] लख दुवौ[15] क्रीत[16] वर।
अभंग 'खेम' धधवाड़, दोय लख हत्थे[17] दीधा।
'हरी'[18] संढ़ायच हेक, लाख अवि बह[19] जस लीधा।

---

१ ख. ग. जवहर। २ ख. ग. किंम्मति। ३ ख. ग. अवे।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है—
सुत गजण सबळ दळ बळ सझै।

४ ख. माहाराजा। ५ ख. वर्नन। ६ ख. दोहा। ग. दौहा। ७ ख. गज। ८ ख. ग. पार। ९ ख. ग. विणि। १० ख. धीर। ११ ख. बारट। ग. बारहट। १२ ख. बगसि। ग. बगसि। १३ ग. ऐक। १४ ख. ग. अवे। १५ ख. दुऔ। ग. दुओ। १६ ख. ग. क्रीतिवर। १७ ख. ग. हतै। १८ ख. हरि। १९ ख. वहो। ग. वहो।

---

२६. सुजड़ – कटार। समसेर – तलवार। कनक – सोना, स्वर्ण। जंवहर – जवाहरात। घण किम्मति – बहुमूल्य। मुहम – मुहिम, सेना, फौज। गजण – महाराजा गजसिंह। जोम – जोश। उमंडरौ – उमड़ कर। 'पति त्रिखंड···खट खंडरौ' – जब गजसिंघका पुत्र दल-बल सहित आया तो ऐसा मालूम होता था कि मानों तीनों खण्डोंका पति हाथमें खाण्डा लेकर छहों खण्डोंसे दण्ड वसूल कर के लाया है।

२७. चत्र – चार। सांसण – राजा द्वारा दान में दी गई भूमि या ग्राम, शासन। दूंण – दूना, दुगुना। दन – दान। दीध – दिये। अवि – दी, दे कर। जसै – महाराजा जसवंतसिंह। कीध – किया।

२८. नरहर – अवतार-चरित्र ग्रंथके रचयिता महाकवि नरहरदास बारहठ। लख – लाख। उजागर – अपने नाम या वंशको प्रसिद्ध करने वाला। आढ़ा किसन – प्रसिद्ध महाकवि दुरसा आढ़ा का पुत्र। अवे – दिया, दे कर। दुवौ – दूसरा। क्रीत वर – कीर्तिको प्राप्त करने वाला, यशस्वी। अभंग – वीर। खेम धधवाड़ – धधवाड़िया गोत्रका खेमराज चारण कवि। हरी संढ़ायच – हरिदास संढ़ायच गोत्रका चारण कवि। हेक – एक।

लहि हेक लाख महड़, 'वलू'[1] लख[2] ग्रण[3] सांदू 'नाथ' लहि[4] ।
ग्राढ़ा 'महेस' हूं रीझ[5] ग्रति, पांच लाख दीधा सुपह ॥ २८

हद्दा[6]–इम दत खग वहु करि ग्रचड़, सुख करि राजा समाज* ।
परम हंस मिळियौ[7] पवित्र, राजहंस 'जसरास'[8] ॥ २९

इति पंचम प्रकरण ।

*

महाराजा ग्रजीतसिंघजीरी जनम

कवित्त–तिण दिन जसवंततणा, निडर[9] वह[10] भड़ नर नाहर ।
साथ रखत ले सकळ, दिली ग्राविया[11] वहादर[12] ।
उदरि हुतौ[13] उणवार, 'ग्रजौ'[14] सोव्रन[15] कुख[16] जद्दवि[17] ।
जेण समैं[18] जनमियौ[19], रैण नवसहंसतणौ[20] रवि ।
छक वधे कमध सयणां उछव, तदि मुख प्रफुलति[21] कमळतिम[@] ।
जनमतां 'ग्रजौ' ग्रवरंग जळै[22], जनम किसनरै कंस जिम ॥ १

---

१ ख. वलू । २ ख. लषि । ३ ख. ग. त्रिण । ४ ख. लह । ग. लहै । ५ ख. ग. रीझि । ६ ख. दोहा । ग. दोहा ।

*यह पंक्ति ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न प्रकार है—
इम पग दन वहौ करि ग्रचड ।

७ ख. मिलीयौ । ८ ग. जराजा । ९ ख. निजर । १० ख. ग. वहौ । ११ ख ग. ग्रावीयां । १२ ख. ग. वहादर । १३ ख. हुतो । ग. हूंतौ । १४ ग. ग्रजो । १५ ग. सोव्रन । १६ ख. कुष । ग. कुषि । १७ ख. जदवि । ग. जादवि । १८ ख. समै । ग. समैं । १९ ख. ग. जनमीयौ । २० ख. ग. नवसहसणौत । २१ ख. ग. प्रफुलित ।

@ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है—
'छक वधे सयग़ा कमधां उछव ।' २२ ख. ग. जले ।

---

२८. ग्रण–तीन । सांदूनाथ–नाथा सांदू । ग्राढ़ा महेस–प्रसिद्ध कवि ग्राढ़ा दुरसाका पौत्र तथा ग्राढ़ा किसनाका पुत्र महेशदास ग्राढ़ा । सुपह–राजा, नृप ।

२९. ग्रचड़–महान कार्य, वड़ा कार्य । परम हंस मिळियौ–मोक्षको प्राप्त हुग्रा । जसरास–महाराजा जसवंतसिंह ।

१. रखत–रक्षित, धनदौलत । उदरि–गर्भमें । ग्रजौ–महाराजा ग्रजीतसिंह । सोव्रन–सुन्दर वर्णवाला । कुख–कुक्षि, गर्भ । जद्दवि–यादववंशकी पुत्री महाराणी यादवी । रैण–भूमि, पृथ्वी । नवसहंसतणौ–मारवाड़का । रवि–सूर्य । छक–कांति, दीप्ति, खूब । सयणां–सज्जनों ।

'जसै' दिया[1] जवनरै, उवर[2] मझि दाह अकारा।
वे चितारि[3] 'अवरंग'[4], जोध तेड़िया[5] 'जसारा'।
कमधांहूता[6] कहै, उभै देहमें[7] 'जसावत'।
मुनसफ[8] खावौ मुलक, उतन जावौ[9] सब[10] रावत।
इम सुणि जवाब[11] 'अवरंगहूं', रावत 'जसवंत'रा रटै।
नह[12] दियां साह खावंद[13] नरिंद, सीस दियां[14] खावंद सटै ॥ २

आयौ[15] लालच उतनुं[16], सु तौ पह[17] बखत[18] सिधारै[19]।
दइव[20] उतन करि दियौ[21], अवर कुण[22] सकै उतारै[23]।
रखौ सेवतां[24] रखां, अवर[25] मुहमां[26] करि जांणौ।
रखौ नहीं तौ रखां, उतन खग बळ[27] आपांणौ।
कथ एम[28] सिरै[29] दीवांण कहि, चख धिखे[30] मुरड़े[31] चालिया[32]।
ऐ वचन साह 'अवरंग' उर[33], सेलतणी विध[34] सालिया[35] ॥ ३

---

१ ख. ग. दीया। २ ख. उवा। ३ ख. ग. वै-चितगरि। ४ ख. ग. अवरंगि। ५ ख. ग. तेडीया। ६ ख. कमंधहूंतां। ग. कमधांहूता। ७ ख. ग. देहमैं। ८ ग. मुनसप। ९ ग. जाओ। १० ख. सव। ११ ख. जवाव। १२ ग. नहं। १३ ख. ग. षांवद। १४ ख. ग. दीयां। १५ ख. ग. आपौ। १६ ख. ग. उतन। १७ ख. ग. पौहौ। १८ ख. वषत। ग. वषति। १९ क. सधारे। २० ख. ग. दई। २१ ख. ग. दीयौ। २२ ग. कंण। २३ क. उतारे। २४ ख. सेवतौं। ग. सेवतौ। २५ ग. जबर। २६ ख. महिमा। ग. महुमां। २७ ख. ग. वलि। २८ ग. ऐम। २९ ख. ग. सरै। ३० ग. धिषि। ३१ क. मुरडे। ३२ ख. ग. चालीया। ३३ ख. ग. उवरि। ३४ ख. ग. विधि। ३५ ख. ग. सालीया।

---

२. जसै – महाराजा जसवंतसिंह। उवर – हृदय, उर। अकारा – भयंकर। तेड़िया – बुलाये। जसारा – महाराजा जसवंतसिंहके। उभै देहमें जसावत – महाराजा जसवंतसिंहके दोनों राजकुमार, अजीतसिंह और दलथंभन। मुनसफ – मनसव, पद, अधिकार। उतन – जन्मभूमि, वतन। रावत – योद्धा। साह – बादशाह। नरिंद – राजा, नरेन्द्र। सटै – एवजमें।

३. सु – दह। पह – राजा, प्रथम। सिधारे – चले गये, चला गया। दइव – दैव, ईश्वर। जवर – जवरदस्त। मुहमां – युद्धों, मुहिम। सिरै दीवांण – आम दीवान, आम दरबार। चख – नेत्र, चक्षु। चख धिखे मुरड़े चालिया – क्रोधमें प्रज्वलित हो कर चले। सेलतणी विध – भालेकी तरह। सालिया – शल्य रूप हुये।

दिलीजुधवरणण

'अवरंग'हूं करि आंटि[1], अडर[2] डेरां[3] भड़ आया ।
जोध साथ करि जतन, पहुव[4] मुरधर पुंहचाया[5] ।
करि सिनांन[6] वँदन[7] करि[8], ध्यांन चित धरे चक्रधर ।
सिलह कसे कसि सस्त्र, पमंग साखति[9] सझि पक्खर[10] ।
ऊससै[11] करे[12] दूणा अमल, वोम[13] छिबै[14] उर[15] वर[16] उरै[17] ।
इम कहे राड़[18] मांडां इसी, अचड़ प्रथी[19] सिर ऊवरै[20] ॥ ४

कवित्त दोढ़ौ[21]

छक[22] वोलै[23] रिणछोड, सूर जोधौ 'गोयंद' सुत ।
भड़ वोलै[24] चंद्रभांण, दूठ जोधौ द्वारावत ।
भाटी सुरतांणोत[25], 'रुघौ' बोले[26] विरदाळौ[27] ।
आगै पड़ि ऊपड़ै[28], भिड़ै[29] उज्जेण[30] भुजाळौ ।
ऊदावत वोलिया[31], अडर भारमल दलावत ।
निडर वोल[32] रुघनाथ[33], सूर दारण सूजावत ।

---

१ ख. ग. आंट । २ ख. अरड । ३ ख. हेरां । ४ ख. ग. पहीव । ५ ख. ग. पहुंचाया । ६ ख. ग. सनांन । ७ ख. ग. दन । ८ ख. ग. करे । ९ ख. ग. साकति । १० ख. ग. पष्पर । ११ ख. ऊससैं । १२ ग. करैं । १३ ख. ग. वोम । १४ ख. ग. छिवैं । १५ ख. ग. इम । १६ ख. ग. वर । १७ ख. ग. वरै । १८ ख ग. राडि । १९ ख. ग. प्रिथी । २० ख. ऊवरैं । ग. ऊवरैं । २१ ख. दोढ़ौ । २२ ग. छकि । २३ ख. वोले । ग. वोलै । २४ ख. वोलै । ग. वोले । २५ ख. सुरतांणोत । ग. सुरतनौत । २६ ख. वोले । २७ ख. ग. विरदाली । २८ ख. ग. ऊपडे । २९ ख. ग. भिडे । ३० ख. उजेण । ग. उजेणि । ३१ ख. वोलीया । ग. वोलीया । ३२ ख. वोलि । ३३ ख. ग. रघुनाथ ।

---

४. आंटि – शत्रुता, वैर । अडर – निर्भय । जोध – योद्धा । जतन – रक्षा । पहुव – राजा । चक्रधर – विष्णु । पमंग – घोड़ा । साखति – जीन । पक्खर – घोड़ेका कवच । अमल – अफीम । वोम – व्योम, आकाश । राड़ – युद्ध । मांडां – रचेंगे, करेंगे । ऊवरै – रक्षित रहे, शेष रहे ।

५. छक – जोशमें आ कर । दूठ – जवरदस्त । विरदाळौ – विरुदधारी, यशस्वी । भुजाळौ – शक्तिशाली, समर्थ ।

स्यांम छळ[1] करां जुध साहसां[2], धार समंद झूलण धसां।
किरमरां[3] विहंड[4] असुरां कटक, वरां रंभ सुरपुर वसां॥ ५

सुणि इम कहियौ[5] सुकवि, सूर नाथावत 'सूजै'।
राजा भुज रावतां, पटां[6] इण[7] दिन कजि पूजै।
इसड़ौ इज[8] बोलियौ[9], कूंत जिम हुतौ[10] करारौ।
धणी कांम खगधार, मरण अवसांण 'समारौ'।
ऐ पाय वसां स्रगि[11] एकठा[12], इण विध[13] सांदू आखियौ[14]।
पित मूझ 'जसै'[15] त्रण लख समपि, राजा हित करि[16] राखियौ[17]॥ ६

जिकौ[18] करूं ऊजळौ[19], जंग करि लूण 'जसा'रौ।
आज करूं ऊजळौ, प्रगट वड कुरब[20] पितारौ।
मौहरि[21] गोठि वीमाह, मौहर[22] दरबार[23] मझारां।
रहां मौहरि[24] रावतां, सदा जिम वहतां सारां।

---

१ ख. ग. छलि। २ ख. ग. साहसूं। ३ ख. ग. करिमरां। ४ ख. ग. विहंडि। ५ ख. ग. कहीयौ। ६ ख. ग. पटा। ७ क. इस। ८ ख. ग. ईज। ९ ख. बोलीया। ग. बोलीया। १० ख. हुंतौ। ग. हूंतौ। ११ ख. ग. स्रग। १२ ग. ऐकठा। १३ ख. ग. विधि। १४ ख. ग. आषीयौ। १५ क. लसै। १६ ख. कर। १७ ख. ग. राखीयौ। १८ ख. जिको। १९ ग. उजळौ। २० ख. ग. कुरव। २१ ख. मौहोर। ग. मौहौरि। २२ ख. मौहौर। ग. मौहौरि। २३ ख. ग. दरवारि। २४ ख. मौहोर। ग. सोहौरि।

---

५. स्यांम – स्वामी। छळ – लिये। साहसां – बादशाहसे। धार समंद – तलवारोंके समुद्रमें, युद्धमें। झूलण धसां – स्नान करनेको प्रवेश करे। किरमरां – तलवारों। विहंड – नाश कर। असुरां – मुसलमानों। कटक – सेना, दल। वरां – वरण करें। रंभ – अप्सरा। सुरपुर – स्वर्ग। वसां – निवास करें।

६. सुकवि – चारण। सूर – वीर। नाथावत सूजौ – नाथा सांदू चारणका पुत्र सूरजमल। रावतां – योद्धाओं। कजि – लिए। स्रगि – स्वर्ग। एकठा – एक साथ। सांदू – चारण कुलका एक गोत्र, सूरजमल सांदू (चारण)। आखियौ – कहा। जसै – महाराजा जसवंतसिंह। त्रण – तीन। लख – लाखपसाव। समपि – समर्पण किया, समर्पण कर के।

७. जिकौ – वह, जो। जसारौ – महाराजा जसवंतसिंहका। मौहरि – अग्र, अगाड़ी। गोठि – मित्र-मंडलीका वह सामूहिक भोजन जो किसी सुअवसर या सुन्दर मौसमके समय किया जाय अथवा किसी बड़े व्यक्तिके सम्मानमें किया जाय। वीमाह – विवाह। मौहर – अग्र, अगाड़ी। मझारां – में, मध्यमें। रहां मौहरि रावतां, सदा जिम वहतां सारां – तलवारोंके भयंकर प्रवाहमें भी सदैव ही मेरा वंश (चारण) योद्धाओंके अगाड़ी युद्ध करता और प्रोत्साहन देता रहता है।

वीजळां मौहरि[1] खळ दळ विहंडि, वप विहंडाय परी वरां ।
स्रग[2] करँ[3] वास अंजस सरव[4], कुळ सौ वीस कवेसरां ।। ७

सुणि अनि[5] भड़ कथ सुकवि, कांम[6] आवण नीमण कर ।
आसावत उण वार, दुगम[7] वोलियौ[8] वहादर[9] ।
दांत चढ़ै दळ रवद, जितौ[10] विहंडू वीजूजळ[11] ।
इसड़ा करूं[12] अनेक, दिलीपतिहूंत दमंगळ ।
वह[13] करूं दिली धोकळ[14] वडा, अंग वळि[15] अकळ[16] उरैवरै[17] ।
उर मांहि अघट क्रोधा[18] अगनि, जाळूं 'अवरंग'[19] जेव[20]रै ।। ८

करतां इम मचकूर, अडर 'अवरंग' दळ आया ।
राजलोक भूपरा, सज्जि[21] खग[22] सुरग[23] वसाया ।
सावळ[24] पकड़े सूर, तुरां चढ़िया[25] जम तेहा ।
पड़तौ आभ प्रचंड, अडर झालै[26] भुज एहा[27] ।

---

१ ख. महौर । ग. महौरि । २ ग. अगि । ३ ख. ग. करां । ४ ख. सरव । ५ ग. अन । ६ ग. कांनि । ७ ख. ग. दुरग । ८ ख. वोलीयौ । ग. वोलीयौ । ९ ख. वाहादर । ग. वाहादर । १० ख. जितो । ग. जितां । ११ ग. वीजूजळ । १२ ख. ग. करू । १३ ख. ग. वहौ । १४ ख. धौकल । ग. धौंकळ । १५ ख. ग. वल । १६ ख ग. अकलि । १७ ख. उरे वरै । ग. उरै वरै । १८ ग. क्रौधा । १९ ग. अवरंग । २० ख. जेवरै । २१ ख. ग. साझि । २२ ख. पझि । ग. पगि । २३ ग. सुरगि । २४ ख. ग. सावल । २५ ख. ग. चढ़ीया । २६ ख. जालै । २७ ग. ऐहा ।

---

७. वीजळां – तलवारों । विहंडि – नाश कर, ध्वंस कर । वप – वपु, शरीर । विहंडाय – संहार करवा कर । परी – अप्सरा । वरां – वरण करूं । स्रग – स्वर्ग । अंजस सरव – सबको गर्वोन्मत्त कर-कर के मेरे कुलके एक सौ वीस गोत्रके कवेसरोंको (कवीश्वरों, चारणों) गर्वयुक्त करूं ।

८. नीमण – (?) । आसावत – आशकर्णका पुत्र । दुगम – दुर्गम, जबरदस्त । रवद – मुसलमान । विहंडू – नाश करूं, संहार करूं । वीजूजळ – तलवार । दमंगळ – युद्ध । धोकळ – युद्ध, उत्पात । अकळ – जबरदस्त । उरैव – उर, हृदय, साहस. तलवार । अघट – अपार, असीम ।

९. मचकूर – सलाह, विचार, मज्कूर । राजलोक – महारािणयाँ, राजाके जनाने । सज्जि – प्रहार कर । सुरग – स्वर्ग, देवलोक । सावळ – एक प्रकारका भाला । सूर – वीर । तुरां – घोड़ों । जम – यमराज । तेहा – तैसे । आभ – आसमान । झालै – थामते हैं, धारण करते हैं ।

चमराळ फिरै[1] दळबळ[2] चिहूं[3], दगै[4] तोप गोळा दमंग[5] ।
तिण वार भड़ां मुरधरतणा, परम[6] कहे ओरै[7] पमंग ॥ ९

समर हुवा[8] सैंफळा, जोध 'अवरंग' 'जसारां' ।
धड़ चवधारां धमकि[9], रीठ वागा[10] खगधारां ।
छौळ रुधिर ऊछळै[11], कमळ ऊछळै कराळां ।
पत्र भर[12] चंडी[13] पियै[14], मंडै[15] संकर रुंडमाळा ।
जजरंग घाट तूटै जरद, भाट[16] पड़ै भड़ औझड़ां ।
दळ खोद बढ़ै हूंकळ[17] दिली, धोकळ[18] कीधौ धूहड़ां ॥ १०

सिरै भड़ां नवसहंस, जो(ध) रैणायल[19] जूटै ।
वाहै खग वैरियां[20], विखम धड़ कळस विछूटै ।
तूटै भारा त्रजड़[21], अंग ऊपरा अपारा ।
रत छूटै अणपार, धड़ां फूटै चवधारा ।

---

१ ख. फिरे । २ ख. दळवळ । ३ ख. ग. चहूं । ४ ख. दगे । ५ ख. दमक । ६ ख. पमर । ७ ख. ग. वोरे । ८ ख. ग. हूआ । ९ ख. ग. धमक । १० ग. वागां । ११ ख. ग. उछलै । १२ ख. ग. भरि भरि । १३ ख. चंड । १४ ख. ग. पीश्रै । १५ ख. मंडे । १६ ग. भाडै । १७ ग. हूंकळि । १८ ग. धौकळ । १९ ख. रैणायर । ग. रैंणायर । २० ख. ग. वैरीयां । २१ ख. ग. त्रिजड़ ।

---

९. चमराळ – यवन, मुसलमान । चिहूं – चारों ओर । दमंग – अग्निकरण । परम – ईश्वर, परमात्मा । ओरै – युद्धमें झोंकते हैं । पमंग – घोड़ा ।

१०. समर – युद्ध । सैंफळा – अस्त्र-शस्त्रोंसहित । अवरंग – औरंगजेब बादशाह । जसारां – महाराजा जसवंतसिंहजीके । चवधारां – चारों ओर पैनी धारका भाला विशेष । धमकि – प्रहार करके । रीठ – प्रहार या प्रहारकी ध्वनि । वागा – वजे, ध्वनित हुए । छौळ – धारा, प्रवाह । कमळ – शिर, मस्तक । पत्र – खप्पर । जजरंग – जबरदस्त, मजबूत । घाट – बनावट । जरद – कवच । भाट – प्रहार, भड़, निरन्तर होने वाली वर्षाके समान । औझड़ां – भयंकर । खोद – यवन, मुसलमान, बादशाह । हूंकळ – कोलाहल । धोकळ – युद्ध । कीधौ – किया । धूहड़ां – राठौड़ों ।

११. नवसहंस – राठौड़, मारवाड़ । जो(ध) – जोधा शाखाका राठौड़ । रैणायल – रणछोड़दास जोधा । जूटै – भिड़ते हैं । कळस – मस्तक । विछूटै – दूर होते हैं । भारा – समूह । त्रजड़ – तलवार । अपारा – असीम । रत – रक्त, खून । अणपार – अपार, असीम । चवधारा – भाला विशेष ।

लोहड़ां धाप[1] इण विध[2] लड़ै[3], सूर पड़ै[4] हंस नीसरै[5] ।
रंभ वरे[6] सुरग[7] वसियौ[8] 'रयण', अचड़ प्रिथी सिर[9] ऊवरै[10] ॥ ११

खांडां[11] झट[12] छः खंड, दळां विहंडे द्वारावत[13] ।
आय[14] आय बह[15] असुर, घाट सावळ[16] खग घावत[17] ।
लीधौ पांणी लूंण, महीपतिरौ घण मोहीं[18] ।
जिम पिंड कीधौ जोध, लूंण पांणी जिम लोहीं[19] ।
इम लड़े खेत[20] पड़ियौ[21] 'अचळ', पह[22] छळ[23] जस व्रद पावियौ[24] ।
चंद्रभांण अछर[25] वरि रथ चढ़े, अमरापुर मझि आवियौ[26] ॥ १२

भाटी 'रुघौ'[27] भुजाळ, खाग[28] झाटी कळि खाटी ।
आवियाटी[29] घड़ असुर, धकै चाढ़े असि धाटी ।
अंग वरंग[30] ऊछळै[31], किलम[32] विहरंग खग[33] कमळ[34] ।
सुरंग रंग[35] सांपड़े[36], जांणि सिधमल्ल[37] गंग जळ ।

---

१ ख. ग. धापि । २ ख. ग. विधि । ३ ख. ग. लड़े । ४ ख. ग. पड़े । ५ ग. नीसरे । ६ क. वरै । ७ ख. सरगि । ग. सुरगि । ८ ग. वसीयौ । ९ ख. ग. सिरि । १० ख. ऊवरे । ग. ऊवरे । ११ ख. ग. षंडा । १२ ख. ग. झाट । १३ ख. ग. द्वाराउत । १४ ख. आप । १५ ख. वहौ । ग. वौहौ । १६ ख. सावल । १७ ख. घावत । १८ ख. मोहा । ग. मौहां । १९ ख ग. लोहां । २० ग. षेति । २१ ख. ग. पड़ीयौ । २२ ख. ग. पौहौ । २३ ख. ग. छलि । २४ ख. ग. पावीयो । २५ ग. अपछर । २६ ख. ग. आवीयौ । २७ ख. रुघै । ग. रुघे । २८ ग. षगा । २९ ग. अवियाटी । ३० ख. वरंग । ३१ ख. उछळै । ३२ ख. विम । ३३ ख. षंगि । ग. षगि । ३४ ख. ग. कंम्मल । ३५ ख. रंप । ३६ ख. सावडै । ग सापड़ै । ३७ ख. ग. मलंग ।

---

११. लोहड़ां – अस्त्र-शस्त्रों । धाप – तृप्त हो कर । हंस – प्राण । नीसरै – निकलता है । रंभ – अप्सरा । वरे – वरण कर के । रयण – रणछोड़दास जोधा । अचड़ – कीर्ति ।

१२. खांडां – तलवारों । झट – प्रहार । विहंडे – नाश कर, ध्वंस कर । द्वारावत – मानका पुत्र द्वारा । असुर – यवन । घाट – शस्त्रका पैना भाग । घावत – प्रहार करते हुए । पह – राजा । छळ – युद्ध, लिये । व्रद – विरुद, कीर्ति । पावियौ – प्राप्त किया ।

१३. रुघौ – रुघनाथसिंह । भुजाळ – शक्तिशाली । आवियाटी – तलवार । घड़ – शरीर । धकै – अगाड़ी । असि धाटी – धाटदेशोत्पन्न घोड़ा । वरंग – खंड, टुकड़ा । किलम – मुसलमान । विहरंग – नाश करता हुआ । कमळ – शिर, मस्तक । सुरंग – लाल । सांपड़े – स्नान कर । जांणि – मानों । सिधमल्ल – महादेव ।

'सुरतांण' सुतन पड़ियै[1] समर, मनि प्रबवातां[2] मुर वसी ।
उर वसी जिसी खाटे अचड़, सुरग[3] गौ वरे उरवसी ।। १३

उदैभांण अरिहरां, वाहि खग करे विहारां ।
अरिहर घण आछटै, धोम[4] झेलै खगधारां ।
उडै बूथ[5] पळ अंग, जूथ ढाहै जवनांणां ।
एम[6] पड़े[7] अणबीह[8], पाड़ि बहौ[9] मुगळ पठांणां ।
इळ अंबर[10] तितै[11] खाटी अचड़[12], वर[13] रंभ सुजस वधारियौ[14] ।
रवि मंडळ लोप[15] घाटी रसण, इम भाटी स्रग[16] आवियौ[17] ।। १४

वाहि सेल खग वाहि[18], करै 'भाऊ' कळिचाळौ[19] ।
ऊदावत अणबीह[20], किलम गज हणै[21] लंकाळौ ।
साबळ[22] दंतूसळां, घाट फबियौ[23] दीपक घट ।
कमळ पंख जिम कमळ, झेल[24] घण[25] हुवौ[26] खगां झट ।

---

१ ख. ग. पड़ीयौ । २ ख. प्रववात । ग. प्रववात । ३ ख. ग. श्रुगि । ४ ग. धौम । ५ ख. ग. वूथ । ६ ख. ऐम । ७ क. पड़ै । ८ ख. ग. अणवीह । ९ ख. वहौ । १० ख. अवर । ११ ख. जितै । १२ ख. अचल । १३ ख. ग. वरि । १४ ख. ग. वधावीयौ । १५ ख. लौपि । ग. लोपि । १६ ख. ग. श्रुगि । १७ ख. ग. आवीयौ । १८ ग. वाह । १९ ख. कळचाळौ । २० ख. ग. अणवीह । २१ ग. हणै । २२ ख. सावल । २३ ख. फवीयौ । ग. फबीयौ । २४ ग. झेलि । २५ ग. पण । २६ ख. हूऔ ।

---

१३. **सुतन** – पुत्र । **पड़ियौ समर** – युद्धमें वीरगति प्राप्त की । **मनि** – मनमें । **प्रब** – पर्व, उत्सव । **मुर** – तीन । **उर वसी** – जैसे हृदयमें निवास किये हुए थी । **जिसी** – जैसे ही । **खाटे** – प्राप्त कर । **अचड़** – कीर्ति । **गौ** – गया । **वरे** – वरण कर के । **उरवसी** – उर्वशी नामक अप्सरा, अप्सरा ।

१४. **अरिहरां** – शत्रुओं । **विहारां** – संहार, ध्वंस, विदीर्ण । **आछटै** – प्रहार करते हैं । **धोम** – क्रोधाग्नि । **बूथ** – मांसके गुत्थे या खंड । **पळ** – मांस । **जूथ** – समूह । **ढाहै** – मारता है । **जवनांणां** – यवन, मुसलमान । **अणबीह** – वीर, योद्धा । **वर** – वरण कर के । **वधारियौ** – बढ़ाया ।

१५. **कळि चाळौ** – युद्ध । **किलम** – मुसलमान । **लंकाळौ** – वीर, योद्धा । **दंतूसळां** – हाथियोंके बारह दांत । **घाट** – शरीर । **साबळ······घट** – भालों और हाथियोंके दांतोंके प्रहारोंसे योद्धाका शरीर 'घुड़लों'के समान सुशोभित हुआ । (देखो भाग १, पृ. २५२)

तदि पड़ै[1] खेत दळपत[2] सुतण, वरि रंभ वांणक[3] विंदरै[4] ।
नरिंदरै[5] कांम[6] आयौ[7] नरिंद, आयौ सुरपुर इंदरै[8] * ॥ १५

करै[9] वरंग[10] दळ[11] किलम, 'रुघौ'[12] सूजावत[13] रुकां ।
वढ़े घाट रत वहै, वाहि[14] झळ जेम[15] भभूकां ।
भड़ भिड़ज्ज[16] गजभार, धार विहरे[17] पाड़े[18] धड़[19] ।
ढहियां[20] सिर पौढ़ियौ[21], वौळ[22] झक वौळ वहादर[23] ।
'ऊदल' कुळोध[24] परणे[25] अछर, जयत[26] खीम विरदां जगे ।
चढ़ि रथां हले होतां चमर, अयौ[27] अमरपुर ऊमगे[28] ॥ १६

सांदू चारण 'सूर', मोहर[29] रावतां महावळ[30] ।
दो हुंडै खळ दळ दुगम, विखम[31] झाटक वीजूजळ ।

---

१ ख. ग. पड़ै । २ ख. ग. दळपति । ३ ख. वांणक । ग. वांणिक । ४ ख. ग. व्यंदरै । ५ ग. नरव्यंदरै । ६ ग. कांमि । ७ ख. आया । ८ ग. यदरै ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

९ ख. ग. करै । १० ख. ग. वरंग । ११ ग. दळि । १२ ग. रुघो । १३ ग. सुजावत । १४ ख. ग. माहि । १५ ग. जैम । १६ ख. ग. भिड़ज । १७ क. विहरै । ग. विहेरे । १८ क. पाडै । १९ ख. ग. घर । २० ख. ग. ढहीयां । २१ ख. ग. पौढ़ीयौ । २२ ख. ग. वोल । २३ ख. वाहादर । ग. वहादर । २४ ख. कलो । ग. कलोध । २५ ग. परणि । २६ ख. जयति । २७ ख. अयो । २८ ग. ऊमगे । २९ ख. मौहोर । ग. मौहोरि । ३० ख. महावल । ३१ ख. ग. विखम ।

---

१६. वरंग – खंड, टुकड़ा । किलम – मुसलमान । रुघौ सूजावत रुकां – तलवारोंसे सूरजमलका पुत्र रघुनाथसिंह शत्रु-दलको खंड-खंड करता हुआ वीरगति प्राप्त हुआ । वढ़े – कट कर । रत – रक्त, खून । भभूकां – (?) । भड़ – योद्धा । भिड़ज्ज – घोड़ा । गजभार – हाथियोंका समूह । धार – तलवार । विहरे – विदीर्ण कर, संहार कर । ढहियां – कटने पर, गिरने पर । वौळ – लाल, रक्तपूर्ण । झक वौळ – (भिगो कर लाल किया हुआ ?) ऊदल कुलोध – उदयसिंहके वंशका । परणे – वरण कर के । अछर – अप्सरा । ऊमगे – उत्कंठित हो कर ।

१७. सांदू – चारणोंका एक गोत्र । सूर - सूरजमल वीर । मोहर – अगाड़ी । रावतां – योद्धाओं । खळ दळ – शत्रु दल । दुगम – दुर्गम जवरदस्त । झाटक – प्रहार । वीजूजळ – तलवार ।

अंग चुख चुख आवधां, तूट[1] पड़ियौ[2] तिणवारां ।
वरि रंभ चढे विमांण[3], वणे सुरवप जिणवारां[4] ।
पित कुरब[5] लूंण भूपाळरौ, करि ऊजळ[6] जुध जस करगि ।
मगरूर भेदि सूरजमंडळ[7], सूरजमल पहुंतौ सरगि ।। १७

खांप[8] खांपरा[9] खत्री, अवर बहु[10] सूर अकारा ।
करि करि तंडळ किलम, धणी छळि तीरथि धारां[11] ।
इम करि करि बहु[12] अचड़, मोह परहर[13] वप माया ।
दिब[14] धरि धरि सुर देह, अछर वर[15] स्रुगि आया ।
जुध[16] दुरंग दंत[17] चढ़िया[18] जिता, खित पाड़े मुगळां[19] खळां ।
दळ साह डोहि आयौ दुभल, वेढ़क रंगियां[20] वीजळां ।। १८

'अजौ' बाळ[21] अवसता, लेख[22] दइवै[23] गढ़ लीधौ ।
धर[24] छळ[25] भड़ धूहड़ां, कटक तड़ तड़ मिळ[26] कीधौ ।

---

१ ख. ग. तूटि । २ ख. ग. पडीयौ । ३ ख. ग. विमांणि । ४ ग. जिणवरां । ५ ख. कुरव । ६ ख. वज्जल । ग. ऊजळ । ७ ग. सूरिजमंडळ । ८ ख. पांष पाष । ९ ख. खांपरां । १० ख. ग. वहौ । ११ ख. ग. धारा । १२ ख. ग. वहौ । १३ ग. परहरि । १४ ख. ग. दिव्य । १५ ख. ग. वरि वरि । १६ ख. ग. जुधि । १७ ख. ग. दांति । १८ ख. ग. चढ़ीया । १९ ख. ग. मूगल । २० ख ग. रंगीयां । २१ ख. वाल । २२ ख. ग. लेषि । २३ ख. ग. दूदै । २४ ख. धरि । २५ ख. ग. छलि । २६ ख. ग. मिळि ।

---

१७. चुख चुख – खंड-खंड, टूक-टूक । आवधां – आयुधों, अस्त्र-शस्त्रों । तूट – कट कर । पड़ियौ – वीर गति प्राप्त हुआ । विमांण – वायुयान । लूंण – नमक । भूपाळरौ – राजा जसवंतसिंहका । मगरूर – वीर, जोशीला । पहुंतौ – पहुँच गया । सरगि – स्वर्गमें ।

१८. खांप – शाखा या गोत्र । अकारा – जबरदस्त । तंडळ – नाश, ध्वंस । छळि – युद्ध, लिये । अचड़ – महत्त्वपूर्ण कार्य । परहर – छोड़ कर । वप – शरीर । दिब – दिव्य । अछर – अप्सरा । स्रुगि – स्वर्गमें । डोहि – विलोड़ित कर के । वेढ़क – जबरदस्त, योद्धा । वीजळां – तलवारों ।

१९. अजौ – महाराजा अजीतसिंह । बाळ अवसता – बाल्यावस्था । लेख – प्रारब्ध । धर – पृथ्वी, राज्य । छळ – लिये । धूहड़ां – राव धूहड़के वंशजों, राठौड़ों । कटक... कीधौ – शाखा-शाखाके वीरोंने मिल कर सेना तैयार की ।

चांपा कूंपा अचळ, अभंग दूदा ऊदावत[1] ।
जोधा जैता जोध, अडर करनावत[2] रावत ।
हठि[3] चढ़े क्रोध[4] क्रीमसीहरा, करण धरा ब्रद कीतरा ।
ऊससै[5] लड़ण इंद्रसिंघहूं, जाजुळ[6] भड़ 'अगजीत'रा ॥ १९

'ईंदा'रा उणवार, अमल थांणा उट्ठाए[7] ।
ऊ बांटै[8] इळ तणा, खाग वळि हास लखाए[9] ।
'अमरावत' खीजियौ[10], एम[11] धर देख[12] उखेळा ।
सझि दळ बळ[13] इंद्रसिंघ[14], विढ़ण आयौ जिण वेळा ।
ऊगतां भांण 'अगजीत'रा, वेढ़क[15] भड़ अरिघड़ बना[16] ।
सांमुहा अया भारथ सझण, एक[17] उतनरा[18] ऊपना ॥ २०

---

१ ख. ग. वूदावत । २ ग. करणावत । ३ ग. हठ । ४ ख. ग. क्रोधि । ५ ख. ऊससे । ग. ऊससैं । ६ ग. जाजुलि । ७ ख. ऊठावे । ग. उठावै । ८ ख. वांटै । ९ ग. लखाऐ । १० ख. ग. षीजीयौ । ११ ग. ऐम । १२ ख. ग. देषि । १३ ख. वळ । १४ ग. इंद्रसींघ । १५ ख. ग. वेढ़कि । १६ ख. ग. वना । १७ ग. ऐक । १८ ख. रततरा ।

---

१९. चांपा – वीर चांपा राठोड़के वंशज चांपावत । कूंपा – राव कूंपाके वंशज कूंपावत । अभंग – वीर । दूदा – राव दूदाके वंशज मेड़तिया राठौड़ । ऊदावत – राव उदयसिंहके वंशज राठौड़ । जोधा – राव जोधाके वंशज राठौड़ । जैता – जैतावत शाखाके राठौड़ । जोध – योद्धा । करनावत – करणके वंशज राठौड़, करणोत । हठि – हठसे । क्रमसीहरा – करमसीके वंशज राठौड़, करमसीहोत राठौड़ । ऊससै – जोशमें आते हैं । इंद्रसिंघहूं – नागौराधिपति राव अमरसिंहके पुत्र रामसिंहके पुत्रसे । इसको बादशाह औरंगजेबने खासा खिलअत, जड़ाऊ साजकी तलवार, सोनेके साजका घोड़ा, हाथी, नक्कारा और निशान दे कर जोधपुरका राजा बना दिया था । जाजुळ – जाज्वल्यमान, तेजस्वी । भड़ – योद्धा । अगजीतरा – महाराजा अजीतसिंहके ।

२०. ईंदा – राव इन्द्रसिंह । अमल – अधिकार । अमरावत – राव अमरसिंहका वंशज, राव इन्द्रसिंह । खीजियौ – क्रुद्ध हुआ । उखेळा – युद्ध, उत्पात । विढ़ण – युद्ध करनेको । ऊगतां – उदय होता हुआ । अगजीतरा – महाराजा अजीतसिंहके । वेढ़क – युद्ध करने वाला । अरिघड़ – शत्रु-दल । बना – दुलहा । सांमुहा – सम्मुख, सामने । भारथ सझण – युद्ध करनेको । उतनरा – जन्मभूमिके । ऊपना – उत्पन्न ।

विखम तबल[1] वाजिया[2], डंका सिंधव[3] दहुंवै दळ।
साकति पमंगां[4] सझै, झिलै पाखर झाळाहळ।
सिलह पूर करि सूर, सस्त्र कसि पकड़े साबळ[5]।
पाव[6] रकेबां[7] परठि, बहसि[8] चढ़िया[9] अतुळीबळ[10]।
हौकबा[11] राग सिंधू[12] हुवा, दगे तोप झळ दारुवां[13]।
अम्हसम्हा रीठ गोळां उडै, मारू धर कजि मारवां[14] ॥ २१

गोळी तीर व्रजागि, आगि झड़ पड़ै[15] अंगारां।
उण वेळा औरिया[16], जंगम जोधार 'अजारां'।
घड़ भड़(नि) जोड़ा[17] धमक, घड़ा झूलाळ बड़ड़[18] घट[19]।
रिख हड़हड़ रत बड़ड़[20], रूक औझड़ झट रूंझट।
आवियौ हुतौ आंटौ लियण[21], 'अमर' 'जसा' आगौररौ[22]।
अमराव[23] जोधपुररां अगै, नठौ[24] राव नागौररौ[25] ॥ २२

---

१ ख. त। २ ग. वाजीया। ३ ख. ग. सीधव। ४ ख. पमांगां। ५ ख. सावल। ६ ख. पाष। ७ ख. ग. रकेवां। ८ ख. ग. वहसि। ९ ख. ग. चढ़ीया। १० ख. ग. अतुळीवल। ११ ख. ग. हौकपा। १२ ख. सींधव। १३ ग. दारवां। १४ ख. ग. मारूवां। १५ ग. पड़े। १६ ख. ओटीया। ग. ओरीया। १७ ख. ग. निजडा। १८ ख. ग. वडड। १९ ख. घड। २० ख. ग. दड़ड़। २१ ख. ग. लीयण। २२ ख. ग. आगोररै। २३ ख. ग. उमराव। २४ ख. ग. नठै। २५ ख. नागोररौ।

---

२१. तबल – वड़ा ढोल। डंका – नगाड़ा वजानेका डंडा। सिंधव – वीर रसका राग। दहुंवै – दोनों ओर। साकति – जीन। सझै – सज्जित कर। झिलै – चमके, दमकयुक्त हुये। पाखर – घोड़ेका कवच। झाळाहळ – देदीप्यमान, चमकदार। परठि – प्रतिष्ठा कर के। बहसि – जोशमें आ कर। अतुळीबळ – शक्तिशाली। हौकबा – हर्ष, खुशी, उत्सव। राग सिंधू – वीर रसका राग। दारुवां – बारूद। अम्हसम्हा – आमनेसामने। रीठ – प्रहार। मारू धर – मारवाड़। कजि – लिये। मारवां – राठौड़ों।

२२. औरिया – झोंक दिये। जंगम – घोड़ा। अजारां – महाराजा अजीतसिंहके। घड़ – सेना। झूलाळ – समूह। बड़ड़ – ध्वनि विशेष। रिख – नारद ऋषि। हड़हड़ – अट्टहासपूर्वक हँसना। रत – रक्त, खून। औझड़ – भयंकर। रूंझट – लड़ाई। आंटौ – शत्रुता। अमर – राव अमरसिंह। जसा – महाराजा जसवंतसिंह। नठौ – भग गया। राव नागौररौ – नागौरका राव इन्द्रसिंह।

भड़ जीता भाराथ, एण[1] विध[2] 'अजमल'[3] वाळा ।
सुणि कथ 'अवरंग' साह, जळे ऊठे[4] उर[5] ज्वाळा ।
विदा किया[6] तिण[7] वार, धूत दळ असुर मुरद्धर[8] ।
'अवरंग' भड़ आविया[9], भूत गिड़कंध भयंकर ।
जड़ि ठांम ठांम थांणा जवर[10], बैठा[11] मुगळ महाबळी[12] ।
आसुरां[13] सुरां प्रजळी[14] अगनि[15], छोह ध्रोह[16] झळ ऊछळी[17] ॥ २३

विखम विखौ जिण वार, धोम धिखि[18] हुवौ[19] मुरद्धर[20] ।
दौड़ण[21] लागा दुझल, वडा तरवार बहादर[22] ।
खग झाटां खेसिया[23], मारि थाटां[24] मुगळांणा ।
जमी अमल नह जमै, खपे थाका खुरसांणा ।
'अवरंग' भीच पाड़े[25] इता, खग झाटां दीधा खळै ।
असि नीठ नीठ धावै इळा, घोर[26] सथांनां आगळै ॥ २४

'सोनिग' 'दुरंग' सकाज, हणै मुगळांण हजारां ।
अै 'अवरंग' आगळै, पड़ै नित दिली पुकारां ।

---

१ ग. ऐण । २ ख. ग. विधि । ३ ग. अजमेल । ४ क. उठे । ५ ख. ग. उरि । ६ ख. ग. कीया । ७ ख. ग. जिण । ८ ख. ग. मुरधर । ९ ख. ग. आवीया । १० ख. ग. जवर । ११ ख. वेठा । १२ ख. महावली । १३ ख. असुरां । १४ ग. प्रजल । १५ ग. अगनी । १६ ग. धोह । १७ ख ग. वूछळी । १८ ख. ग. धधि । १९ ख. ग. हुओ । २० ग. मुरधर । २१ ख. ग. दौड़ण । २२ ख. वहादर । ग. वाहादर । २३ ख. ग. खेसीया । २४ ख. झाटां । ग. थांणां । २५ क. पाडै । २६ ख. गोर ।

---

२३. अजमल वाळा – महाराजा अजीतसिंहके । धूत – धूर्त, शैतान । असुर – मुसलमान । भूत – उन्मत्त, प्रेत रूप । गिड़कंध – जबरदस्त । आसुरां – यवनों, मुसलमानों । प्रजळी – प्रज्वलित हुई । छोह – क्रोध, क्षोभ । ध्रोह – द्वेष, शत्रुता । झळ – आगकी लपट ।

२४. विखौ – संकटका समय । धोम – आग । धिखि – प्रज्वलित हो कर । खेसिया – लूटे । थाटां – सेनाओं, समूहों । मुगळांणा – मुसलमानोंके । खपे – कोशिश कर के । खुरसांणा – मुसलमानों, बादशाहों । अवरंग – औरंगजेब । भीच – योद्धा । खळै – नाश, ध्वंस । घोर – कब्रिस्तान, कब्र । सथांनां – स्थानों । आगळै – अगाड़ी ।

२५. सोनिग – चांपावत शाखाका राठौड़ वीर सोनंग । दुरंग – प्रसिद्ध राठौड़ वीर दुरगादास ।

असपति निसदिन अकस, रहै भेजै अमरावां[1] ।
कमधज विहंडै किलम, घणा आवै सुजि घावां[2] ।
'अवरंग' हियै[3] क्रोधाअगनि, दाह अघट जुध करि दियौ[4] ।
दुरगेसहुंता मसलति दिली, कहियौ[5] जिम तिमहिज[6] कियौ[7] ॥ २५

प्रगट खांप खांपरा, एम[8] दौड़ै वड रावत ।
ठौड़[9] ठौड़ राठौड़, घणा[10] मुगळां[11] खग[12] घावत ।
पचि थाकौ पतिसाह, किलम विहंडाय कराळा ।
क्रोध[13] जतन कीजतां, ठहे नह कमध हठाळा ।
जूटा कंठीर छूटा जिसा, तूटा दळ असपति तरै ।
अवरंगजेब[14] अगजीत नूं, जाळंधर दीधौ जरै ॥ २६

तेज पुंज 'अगजीत', जोम[15] भरियौ[16] महाराजा[17] ।
त्रहक तूर करि तबल[18], सूर दळ सजे सकाजा ।
'अवरंग'तणौ अमीर, घोर[19] मंडियौ[20] गोळां[21] घण ।
सायक घण साबळां[22], रूक झाटां कीधौ रण ।

---

१ ख. ग. उमरावां । २ ख. घावों । ३ ग. हीयै । ४ ख. दीयौ । ५ ख. ग. कहीयौ । ६ ख. तिमहीज । ७ ख. ग. कीयौ । ८ ग. ऐम । ९ ग. ठौर ठौर । १० ख. घणों । ११ ख. मूगलां । १२ ख. ग. षगि । १३ ख. ग. क्रोड़ि । १४ ख. अवरंगजेव । ग. अवरंजेवि । १५ ग. जोमि । १६ ख. ग. भरीयौ । १७ ख. ग. माहाराजा । १८ ख. तवल । १९ ख. ग. घेरि । २० ख. ग. मंडीयौ । २१ ग. गौळा । २२ ख. ग. सावळां ।

---

२५. असपति – बादशाह । अकस – दुःख, डाह, द्वेष । विहंडै – संहार करते हैं, ध्वंश करते हैं । दाह – जलन । अघट – निरन्तर । दुरगेसहुंता – राठौड़ वीर दुरगादाससे ।

२६. खांप – शाखा । पचि – यत्न कर के, पूर्ण कोशिश कर के, । विहंडाय – संहार करवा कर । हठाळा – अपने हठ पर दृढ़ रहने वाला । जूटा – भिड़ गये, युद्ध किया । कंठीर – सिंह । तूटा – नाश हुआ । तरै – तब । अगजीत – महाराजा अजीतसिंह । जाळंधर – जालोर नगर ।

२७. पुंज – समूह । जोम – जोश, उमंग । भरियौ – भरा हुआ । त्रहक – नगाड़ेकी आवाज । तूर – वाद्य विशेष । तबल – वाद्य विशेष । घोर – भयंकर ध्वनि । सायक – तीर, बाण । साबळां – भालों विशेष । रूक – तलवार ।

लसियौ[1] निवाव[2] कटिया[3] किलम, गह[4] नृप[5] धरि गजगाहरौ।
लसकरी खांन लूटे[6] लियौ[7], सोवौ[8] औरंगसाहरौ[9] ॥ २७

इम वासर ऊगतां, डाक वागी दसदेसां।
जुध जीता 'अगजीत', सुणे जवनेस नरेसां।
हिंदसथांन[10] हरखियौ[11], तांम[12] दहले तुरकांणौ[13]।
जगत सरब[14] जांणियौ[15], जोध लेसी जोधांणौ।
'गजबंध'[16] दुवै[17] धरियौ[18] गुमर, राज धरम कुळरीतरौ।
तिण दीह घटे 'अवरंग' तप, तप वधियौ[19] 'अगजीत'रौ ॥ २८

वड वड कुळ वरियांम[20], साख पैंतीस[21] सकाजां।
सुता दियण[22] वासतैं, रजित[23] स्रीफळ सभि राजां।
'अजण' भेट आंणियौ[24], कमध पह[25] लिया[26] उछव[27] करि।
विंद[28] इंद वणि वरे, सकति रूपा वहु[29] सुंदरि।

---

१ ख. ग. लसीयौ। २ ख. नवाव। ग. नबाब। ३ ख. ग. कटीया। ४ ग. गृह। ५ ख. ग. नृप। ६ ग. लूटं। ७ ख. ग. लीयौ। ८ ख. ग. सोवौ। ९ ख. ग. अवरंगसाहरौ। १० ख. ग. हिंदुसथांन। ११ ख. ग. हरषीयौ। १२ ख. ग. ताम। १३ ख. ग. तुरकाणौ। १४ ख. सरव। १५ ख. ग. जांणीयौ। १६ ख. गजवंध। १७ ख. ग. विये। १८ ख. ग. धरीयौ। १९ ख. ग. वधीयौ। २० ग. वरीयांम। २१ ख. ग. पैंतीस। २२ ख. ग. दीयण। २३ ख. ग. रजत। २४ ख. आंणीयां। ग. आंणीया। २५ ख. ग. पीहौ। २६ ख. ग. लीया। २७ ख. ग. उछव। २८ ख. ग. वीद। २९ ख. वहु। ग. वहुं।

---

२७. लसियौ – पराजित होकर भाग गया। कटिया किलम – मुसलमान मारे गये। गजगाहरौ – युद्धका। सोवौ – प्रान्त, सूबा। औरंगसाहरौ – बादशाह औरंगजेबका।

२८. वासर – दिन। ऊगतां – उदय होने पर। डाक – डंका। अगजीत – महाराजा अजीतसिंह। जवनेस – बादशाह। हरखियौ – हर्षित हुआ। दहले – भयभीत हुए। तुरकांणौ – बादशाहत। जोध – वीर। गजबंध – महाराजा गजसिंह। दुवै – द्वितीय, दूसरे। गुमर – गर्व, जोश। दीह – दिन। अवरंग – बादशाह औरंगजेब। तप – तेज, तपस्या।

२९. वरियांम – श्रेष्ठ। सुता – कन्या, लड़की। वासतैं – लिये। रजित – चांदी या सोनेका। स्रीफळ – नारियल। अजण – महाराजा अजीतसिंह। आंणियौ – लाया। पह – राजा। विंद – दुलहा।

रंगराग अमर[1] केसर[2] अतर, उच्छबि[3] छक[4] आणंद अति ।
अनपुरां आदि उदियापुरां[5], परणे कमधज छत्रपती[6] ॥ २९

'रांण' राज तिण वार, जुगति[7] धर वेध लगे जदि ।
'अमर' कुमर[8] मुरड़ियौ[9], तंत ऊथपे दियौ[10] तदि ।
जदि आयौ जैसिंघ, सरण कमधां तदि[11] सब्बळ[12] ।
'रांण' मदति[13] महाराज[14], दीध 'अगजीत' सबळ[15] दळ ।
तदि 'रांण' 'जसौ' चाढ़ै तखति, कंवर[16] नमे बांधै[17] करां ।
'जसराज'तणै कीधौ 'अजै', आंक एह[18] उदियापुरां ॥ ३०

---

१ ख. डंवर । ग. डंवर । २ ख. ग. केसरि । ३ ख. उछव । ग. उत्छव । ४ ख. छकि । ५ ख. उदयांपुरां । ग. उदीयांपुरां । ६ ख. ग. छत्रपति । ७ ग. जुगत । ८ ग. कुंवर । ९ ख. ग. मुरडीयौ । १० ख. ग. दीयौ । ११ ख. ग. तकि । १२ ख. ग. सब्वल । १३ ख. सछति । १४ ख. ग. माहाराज । १५ ख. सवल । १६ ख. ग. कुंवर । १७ ख. वांधे । ग. वांधे । १८ ग. ऐह ।

---

२९. अमर – अंबर ।

३०. रांण – महाराणा जयसिंह उदयपुर । जुगति – युक्ति । वेध – युद्ध, उपद्रव । अमर कुमर – महाराजकुमार अमरसिंह । वि.वि. – वि. सं. १७४८ (ई.स. १६९१)में महारानाके जेष्ठ कुमार अमरसिंहने अपने पितासे राज्य छीननेका षड़यंत्र रचा । जब इसकी खबर महाराना जयसिंहको मिली तब वे तत्काल ही उदयपुर छोड़ कर कुंभलगढ़ होते हुए घाणेराव चले गये और वहांके तत्कालीन ठाकुर गोपीनाथ मेड़तियाकी सलाहके अनुसार महाराजा अजीतसिंहके पास आदमी भेज कर उनसे सहायताकी प्रार्थना की । इस पर महाराजा अजीतसिंहने चांपावत भगवानदास, वीर करणोत दुरगादास आदि प्रमुख व्यक्तियोंके साथ बड़ी भारी सेना देकर महारानाकी सहायतार्थ घाणेराव भेजे । इन्होंने वहां पहुँच कर सीसोदियोंसे मिल कर पिता-पुत्रमें परस्पर संधि करा दी । संधि हो जाने पर महाराना साहब उदयपुर चले गये और महाराजकुमार राजसमंद तालाब पर रहने लगे । —देखो महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास कृत वीर विनोद भाग २, पृ० ६७३ से ६७६ तक ।

मुरड़ियौ – कुपित हुआ । तंत – सार, तत्व । ऊथपे दियौ – उलटा कर दिया, बदल दिया । रांण – महाराना जयसिंह । मदति – सहायता । अगजीत – महाराजा अजीतसिंह । रांण जसौ – महाराना जयसिंह । बांधै करां – करबद्ध हो कर । जसराजतणै – महाराज जसवंतसिंहके पुत्र । अजै – महाराजा अजीतसिंह । आंक – अहसान, उपकार ।

महाराजा 'अजमाल', करै[१] राजस अधकारे[२] ।
प्रिय चहुवांण[३] पतिव्रता, धरम थित[४] गरभ सधारे ।
महि वीता दसमास, जांम नृप[५] कुंवर जनंम्मे[६] ।
वधाउवां जिण वार[७], 'अजै' वहु[८] दरव उधंमे[९] * ।
घण धमण[१०] जेम[११] नववति[१२] घुरै[१३], त्रिय प्रफुलति[१४] गावै तठै ।
चत्रलख सुजांण जोतसि[१५] चतुर, जनमपत्री वरती जठै ।। ३१
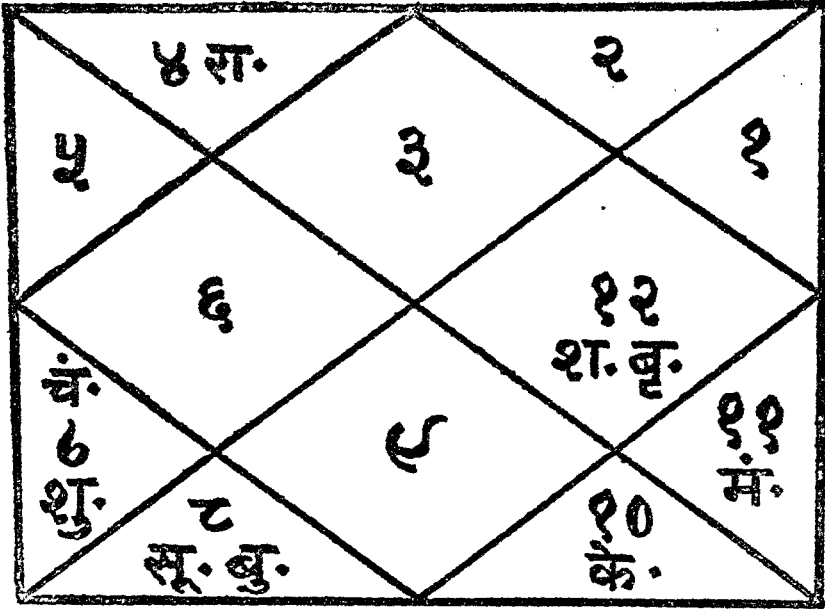
महाराजकुमार स्री अभैसिंघजीरी जनमपत्री

१ क. करे । २ ख. ग. अधिकारे । ३ ख. ग. चहुांणि । ४ ख. ग. थिति । ५ ख. ग. नृप । ६ ख. ग. जन्नमे । ७ ग. तिण वार । ८ ग. वहो । ९ ग. उंधमे ।

*ख प्रतिमें यह पंक्ति अपूर्ण है ।

१० ख. ग. घमळ । ११ ख. ग. मंगळ । १२ ख. ग. नववति । १३ ख. मुरे । ग. धुरे । १४ ख. ग. प्रफुलित । १५ ख. ग. जोतिस ।

३१. अजमाल – महाराजा अजीतसिंह । प्रिय चहुवांण पतिव्रता – होठलूके अधिपति चौहान चतुरसिंहकी पुत्री जिसका विवाह महाराजा श्री अजीतसिंहके साथ वि. सं. १७५७में हुआ था । इसीके गर्भसे महाराजकुमार अभयसिंहजीका जन्म वि. सं. १७५९ मार्गशीर्ष वदि १४ को हुआ । जांम – रात्रि । वधाउवां – मांगलिक खबर देने वाले । अजै – महाराजा अजीतसिंह । उधंमे – दान-पुरस्कारादिमें खर्च किया । घण – बहुत, मेघ, घन । धमण – (?) । नववति – नौबत । घुरै – वजती है । त्रिय – स्त्रियें ।

महाराजकुमार[1] महाराजा श्री अभैसिघजीरी जनमपत्री ।

छंद पद्धरी

स्रीगणपति सरसति प्रणम[2] साधि[3] * ।
इम लिखे पत्र स्रीपति अराधि ।
वाखांण[4] सतरसै समत[5] वीर ।
सुजि वरस गुणसठै तप सधीर ।। ३२

सोळसै[6] साक चववीस[7] तास ।
मधि हिमरित[8] वर अघण मास ।
सनि[9] चतुरदसी वद[10] पख सकाज ।
सिध जोग प्रगट उच्छब[11] समाज® ।। ३३

तदि निसा च्यार[12] घटिका वितीस[13]* ।
ऊपरा वळे पळ सताईस[14] ।
वणि नखित्र[15] विसाखा जेणि वार[16] ।
'अभमाल' जनम लीधौ उदार ।। ३४

---

१ ख. ग. माहाराजा । २ ख. ग. प्रणमि । ३ ग. साध ।
*ख. प्रतिमें यह पंक्ति 'स्री गणपति' से प्रारम्भ नहीं हुई है, केवल 'पति सरसति' से ही प्रारम्भ हुई है ।
४ ख. ग. वाषांणि । ५ ख. संमति । ग. समंति । ६ ख. सोलैसै । ग. सोलासै । ७ ख. चौवीस । ८ ख. ग. रिति हिमंत । ९ ग. सति । १० ख. ग. वदि । ११ ग. उत्छव ।
®यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।
१२ ग. च्यारि । १३ ग. ववितीस ।
*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।
१४ ग. सताइस । १५ ग. नक्षत्र । १६ ग. तेणि वार ।

---

३२. स्रीपति – विष्णु । अराधि – आराधना कर के । वाखांण...सधीर – वि. सं. १७५९ ।

३३. सोळसै...तास – शक सं. १६२४ । हिमरित – हेमन्त ऋतु । अघण मास – मार्गशीर्ष मास । सनि – शनिश्चरवार । वद पख – कृष्ण पक्ष । सिध जोग – सिद्ध योग ।

३४. वितीस – व्यतीत हुई । विसाखा – अश्विनी आदि सताईस नक्षत्रोंमें से सोलहवां नक्षत्र जो मित्र गणके अंतर्गत है । अभमाल – महाराजकुमार अभयसिंह ।

व्रस्चक[1] सक्रांत दिन खट वितीस[2] ।
ससि सुक्र रासि[3] तुल वर सधीस ।
राजै तदि मंगळ कुंभ रासि ।
कहि[4] मीन व्रहस्पति[5] वळ[6] प्रकासि[7] ॥ ३५

रचि मीन रासि सनि करक राह ।
अरु मकर रासि केतह[8] अथाह ।
कहि व्रस्चक[9] भांण बुध बुध[10] प्रकास ।
तन लगन[11] मिथुन सुभ अनत तास ॥ ३६

चित सुद्धि रासि ग्रह[12] इम चवेस ।
कहि[13] ग्रह प्रताप वरणन[14] कवेस ।
रवि छठै भुवन[15] खळ हणै रूक* ।
°आरांण[16] फतै पावै अचूक ॥ ३७

तप वधै भांण उद्योत[17] तेम ।
अन[18] भूप दवै[19] खद्योत[20] एम[21]° ।

---

१ ख. वृश्चक । ग. विश्चक । २ ख. ग. वितीत । ३ ग. राशि । ४ ख. ग. कहै । ५ ख. ग. वृहस्पति । ६ ख. ग. वळ । ७ ग. प्रकास । ८ ख. केतक । ९ ख. ग. वृश्चिक । १० ग. बुधि । ११ ग. लग्न । १२ ख. ग. यम । १३ ग. करि । १४ ख. वरर्णं । ग. वरणण । १५ ख. ग. भुवनि ।

*यह पंक्ति 'ख' प्रतिमें अपूर्ण है ।
°ये पंक्तियां 'ख' प्रतिमें नहीं हैं । १६ ग. आरांणि ।

१७ ग. उद्योत । १८ ग. अनि । १९ ग. दवै । २० ग. पिदोत । २१ ग. ऐम ।

---

३५. व्रस्चक सक्रांत – वृश्चिक संक्रान्ति । दिन खट वितीस – वृश्चिक संक्रांतिके छः अंश व्यतीत हो चुके थे । ससि······धीस – चंद्रमा और शुक्र तुला राशिमें थे । राजै···मीन ···कुंभ रासि – इस समय मंगल ग्रह कुंभराशिमें था । कहि···प्रकासि – वृहस्पति राशिमें था ।

३६. रचि······राह – जन्मकुंडलीमें मीनका शनि और कर्क राशिका राहु है । अरु मकर···केतह – मकर राशिमें केतु ग्रह है । कहि······बुध प्रकास – वृश्चिक राशिमें सूर्य और बुध ग्रह हैं जो बुद्धिका प्रकाश करते हैं । तन······तास – तनु भावमें शुभ मिथुन लग्न है । लगन = पूर्व क्षितिजमें उदय होने वाली राशि, लग्न ।

३७. चवेस – कहे जाते हैं । कवेस = कवीश – महाकवि । रवि······अचूक – छठवें स्थानमें सूर्य रहनेसे शत्रुओंको नष्ट करता है, युद्धमें विजय होगी और अन्य राजा उसके सामने खद्योतके (नक्षत्र अथवा जुगनू) समान रहेंगे ।

पांचमैं भवन ससि सुक्र पेखि* ।
दाखै कवि जातक - भरण देखि ।। ३८
ऊजळ कुमार[1] उपजै[2] उदार ।
प्रगटै बुधि[3] राजस विध[4] अपार ।
इळ राजनीत[5] जांणै अनेक ।
वर मंत्र - सकति कविता विवेक ।। ३९
गुरजणांहूंत अति विनय ग्यांन ।
धारंत सुपह हित गुणनिधांन ।
विध[6] राह करकरौ फळ वखांणि ।
जोतिखी ग्रंथरौ पंथ जांणि ।। ४०
अति कोक - कला - भोगी अपार ।
दातार सूर अति चित उदार ।
वळिवंत[7] हुवै आजांनबाह[8] ।
असि गयंद हुवै दळ बळ[9] अथाह ।। ४१
तेजमैं[10] रूप बहु[11] पुत्र ताच ।
सोभा अपार गुण एह[12] साच ।

---

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें अपूर्ण है ।

१ ख. ऊवार । ग. ऊंवार । २ ख. ऊपजै । ३ ख. वुधि । ४ ख. ग. विधि । ५ ख. ग. नीति । ६ ग. विधि । ७ ख. ग. वळिवंत । ८ ख. ग. आजांनवाह । ९ ख. ग. वळ । १० ख. ग. तेजमै । ११ ख. ग. वहु । १२ ग. ऐह ।

---

३८. पांचमैं······देखि – पंचम भवनमें चंद्र शुक्र देख कर ज्योतिषके ग्रंथ जातकाभरणके अनुसार कवि महोदय फलित बतलाते हुए लिखते हैं —'महाराजकुमार अभयसिंह उज्ज्वल और उदार चित्त, बुद्धिमान, राजनीतिज्ञ, मंत्रशक्तिमें श्रेष्ठ, कविता और ज्ञानमें प्रवीण होगा ।'

४०. गुरजणांहूंत···गुण निधांन – गुरुजनोंका आज्ञाकारी, विनयशील तथा गुणोंका खजाना होगा । विध राह······वखांणि – ज्योतिष ग्रन्थोंके ज्ञानके आधार पर राहु और कर्कका फलित ज्ञान कह रहा हूँ ।

४१. अति······अथाह – कामशास्त्रमें प्रवीण और विषयभोगमें लिप्त रहने वाला होगा । साथ ही बड़ा दातार, वीर और उदारचित्त भी होगा । आजानुबाहु महाराजकुमार बड़ा-बलशाली होगा, और इसकी सेनामें अपार हाथी, घोड़े होंगे ।

ब्रहसपति[1] भवन दसमै वखांणि ।
जिण हीज भवन रविनंद जांणि ॥ ४२

द[2] ग्रहां जोड़ि फळ किसूं दाखि ।
सुजि कहूं जातिकाभरण साखि ।
ह्वै महासूर[3] बहु[4] देस होय[5] ।
दस दिसा सुजस दन खाग दोय[6] ॥ ४३

जाणंत कळा वहतरि[7] सुजांण ।
प्रिय[8] जूथ मोह अतिसै प्रमांण ।
सनि[9] गरुके[10] इंद्र एकणि[11] सथांनि[12] ।
इण जोड़ि[13] हुवै नहिं[14] नृपति[15] आंनि[16] ॥ ४४

वळि[17] जुदौ जुदौ गुण कहि वताय[18] ।
गुरतणौ जिकौ गुण प्रथम[19] गाय ।
आवै दिलेसरौ[20] धन अपार ।
केवांण[21] पांग[22] दहुंवै प्रकार ॥ ४५

---

१ ख. व्रहसपती । ग. व्रसपती । २ ख. ग. द । ३ ग. माहासूर । ४ ख. वीहौ । ग. बीहौ । ५ ख. कोय । ६ ख. होय । ७ ख. वहौतरि । ग. वहौतरि । ८ ख. ग. प्रीय । ९ ख. अति । १० ख. ग. गुरुके । ११ ग. ऐकणि । १२ ख. ग. सथांन । १३ ख. ग. जोड । १४ ख. नह । ग. नहं । १५ ख. ग. नृपति । १६ ख. आंण । ग. आंन । १७ ख. ग. वलि । १८ ख. ग. वताय । १९ ग. प्रथमि । २० ख. दिलेसरो । २१ ग. कैवांण । २२ ख. ग. पाणि ।

४२, ४३. व्रहसपति······जांणि – बृहस्पति दसवें स्थान पर है और उसी स्थान पर रविनंद (शनि) भी है। दोनों ग्रहोंकी युतिका फल जातकाभरण ग्रन्थानुसार कहता हूँ। महाराज-कुमार महासूरवीर होंगे और दस ही दिशाओंमें इनके दानकी और खड्गकी प्रशंसा अद्वितीय रहेगी।

४४. सुजांण – चतुर। जूथ = यूथ – समूह। सनि···आनि – शनिश्चर और गुरु (बृहस्पति) दसवें स्थानमें युतिका फल कहता हूँ। इसके समान कोई दूसरा राजा नहीं होगा।

४५. वळि – फिर, पुनः। जुदौ – पृथक्। गुरतणौ – बृहस्पतिका। दिलेस – बादशाह। केवांण – कृपाण, तलवार। पांण – शक्ति, से। दहुंवै – दोनों।

अति वधै कीत[1] दीरग्घ[2] आव[3] ।
सुजि[4] हुवै जोग[5] दारण[6] सभाव[7] ।
उच्छाह[8] सदा राखै अनंत ।
कांमणि जिम भुगतै[9] भूमिकंत ॥ ४६

सुग्रही अनै[10] के इंद्र सार ।
इण रीत व्रहसपति[11] गुण उदार[12] ।
अब[13] कहूं सनीसर गुण अनेक ।
अन्नेक तणौ तत वचन एक[14] ॥ ४७

नृप[15] जोग असी[16] चत्र अडिग नेम ।
जगि करत राज चक्रवरत[17] जेम ।

महाराजकुमाररा सामुद्रिक चिन्हांरौ वरणण

सठिक[18] त्रकूंण कर चह न सम्म[19] ।
पै उरध[20] - रेख जळहळ पदम्म[21] ॥ ४८

---

१ ख. ग. कीति । २ ख. ग. दीरघ्घ । ३ ख. अवा । ४ ख. सजि । ५ ख. ग. जोम । ६ ग. दारुण । ७ ग. भाव । ८ ख. उछाह । ग. उत्छाह । ९ ख. भोगतै । १० ग. अन्नै । ११ ख. ग. वृहसपति । १२ ख. ग. अपार । १३ ख. ग. अव । १४ ग. ऐक । १५ ख. ग. नृप । १६ ग. असि । १७ ख. ग. चक्रवति । १८ ख. ग. सठि । १९ ग. नसंम्म । २० ख. ऊरध । २१ ख. ग. पदम ।

---

४६. कीत – कीर्ति । दीरग्घ – दीर्घ । आव – आयु । दारण = दारुण – उग्र । सभाव – स्वभाव । उच्छाह – उत्साह, जोश । कांमणि – कामिनी, स्त्री । भूमिकंत – राजा ।

४७. सनीसर – शनिश्चर । तत वचन – तत्व वचन, सार शब्द ।

४८. सठिक – शरीरमें विशिष्ट अंगोंमें होने वाला सामुद्रिक चिन्ह जो 卐 स्वस्तिकके आकारका होता है । यह सामुद्रिक शास्त्रानुसार बहुत शुभ माना जाता है । त्रकूंण – सामुद्रिक △ त्रिकोणाकार चिन्ह विशेष जो पैरमें तथा मतान्तरसे हाथकी हथेलीमें भी होता है । पै – पैर, चरण । उरध रेख – वह चरणमें होने वाली रेखा जो अंगूठे और अंगूठेके समीपवर्ती उंगुलीके बीचसे निकल कर सीधे और लम्बे आकारमें ऐंडीके मध्य भाग तक गई हुई हो, ऊर्ध्वरेखा । जळहळ – देदीप्यमान । पदम – सामुद्रिक विद्याके अनुसार पैरमें होने वाला विशेष आकारका चिन्ह जो भाग्यसूचक माना जाता है, पद्म ।

कहि हस्त - चिह्न बांणिक[1] प्रकार ।
सति सांम[2] दुरग विध[3] वचन सार ।
मणिवंध[4] तीन मणि जब प्रमांणि[5] ।
मछ कच्छ[6] कुंभ गज रथ मंडांणि[7] ॥ ४९

असि खड़ग सकति तोरण उदार ।
अंकुसां संख चक्र सुभ अपार ।
परचंड दंड हर गदा पांणि[8] ।
बिहुंवै[9] अकार[10] वणि धनक बांणि[11] ॥ ५०

---

१ ख. ग. वांणिक । २ ख. ग. साम । ३ ख. ग. विधि । ४ ख. मणिवंध । ५ ख. ग. प्रमांण । ६ ख. कछ । ग. कत्छ । ७ ख. ग. मंडांण । ८ ख. ग. पांण । ९ ख. ग. विहुंवै । १० ग. आकार । ११ ख. वांण । ग. बांण ।

---

४९. चिह्न – चिन्ह । सति – (?) । सांम – (?) । दुरग – एक प्रकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिन्ह । मणिवंध – कलाई । मणि – (?) । जव – यवके आकारका वह सामुद्रिक चिन्ह जो मणिवंधके उभरे हुए भाग पर होता है । मछ – मत्स्यके आकारका हाथमें होने वाला एक प्रकारका सामुद्रिक चिन्ह जो शुभ माना जाता है । कच्छ – कच्छपके आकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिन्ह । कुंभ – कलशके आकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिन्ह विशेष । गज – हस्तिके आकारका हाथकी हथेलीके उभरे भाग पर होने वाला सामुद्रिक चिन्ह । रथ – कनिष्ठिका उंगुलीके मूलके पास होने वाला सामुद्रिक चिन्ह विशेष ।

५०. असि – अश्वके (घोड़े) आकारका हथेलीके उभरे भाग पर होने वाला शुभ सामुद्रिक चिन्ह विशेष । खड़ग – मध्यमा उंगुलीके मूल स्थानसे कुछ अगाड़ी हाथकी हथेलीमें होने वाला खड्गाकार सामुद्रिक चिन्ह । सकति – शक्ति नामक शस्त्रके आकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिन्ह विशेष । तोरण – वंदनवारके आकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिन्ह विशेष । अंकुस – अंकुशके आकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिन्ह । संख – हाथकी उंगलीके ऊपरके पोरमें होने वाला शंखके आकारका सामुद्रिक चिन्ह विशेष । मतान्तरसे पैरके तलवेमें होने वाला सामुद्रिक चिन्ह विशेष । चक्र – हाथकी मध्यमा उंगुलीके मूल स्थानका समीपवर्ती चक्रके आकारका सामुद्रिक चिन्ह विशेष मतान्तरसे हाथोंकी उंगुलीके पोर पर होने वाला चक्रके आकारका चिन्ह विशेष । परचंड – प्रचंड, प्रवल । दंड – हथेलीके मणिवंधकी ओरके उभरे हुए भाग पर होने वाला दण्डाकार सामुद्रिक चिन्ह विशेष । हर गदा – हरि गदा, विष्णुकी गदाके आकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिन्ह । पांणि – हाथ । बिहुंवै – दोनों । अकार – आकार । धनक – हथेलीमें होने वाला धनुषाकार सामुद्रिक चिन्ह विशेष । बांण – तीरके आकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिन्ह ।

धज चमर छत्र कर रेख धन्न ।
चक्रवतीतणा साचा[1] चहन्न[2] ।
उजळंग आरकत छिब[3] अनंग ।
ऊगता भांण सारीख अंग ॥ ५१
तपवंत हुवै[4] 'अजमल' सुतन्न ।
धनि वेळा महुरत[5] वार धन्न ।
.... ।
.... ॥ ५२

कवित्त– मँगळ धमळ[6] उदमाद, वजे वाजंत्र जिण वेळा ।
ग्रहि ग्रहि उडि गुड्डियां[7], मिळे सज्जण घण मेळा* ।
विमळ कतूहळ वधे, हुवौ[8] उच्छब[9] हिंदुवांणै ।
'अवरंग' चित औदके[10], तेज घटियौ[11] तुरकांणै ।
कमधजां वंस मझि सहंस किर[12], निडर भूप अनुमांनमौ ।
'अजमाल' ग्रेह जनमे 'अभौ', पह[13] अवतार पचीसमौ ॥ ५३

---

१ ख. ग. सारा । २ ख. चहंन्न । ३ ख. ग. छवि । ४ ख. हुवो । ग. हुवौ । ५ ग. महुर । ६ ख. धम । ७ ग. गूडीयां । *यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है । ८ ख. ग. हुवो । ९ ख. उछव । ग. उत्छव । १० ग. औदकै । ११ ख. ग. घटीयौ । १२ ख. ग. करि । १३ ख. पौहो । ग. पौह ।

---

५१. धज – ध्वजाके आकारका कनिष्टका उंगुलीके मूलके पास होने वाला सामुद्रिक चिन्ह विशेष जो शुभ माना जाता है । चमर – चँवरके आकारका हथेलीमें होने वाला सामुद्रिक चिन्ह विशेष । छत्र –हथेलीमें होने वाला छत्रके आकारका सामुद्रिक चिन्ह विशेष । धन्न – (?) । चक्रवती – चक्रवर्ती, राजा । चहन्न – चिन्ह, लक्षण । उजळंग – उज्ज्वलाङ्ग । आरकत – स्वर्ण, सोना । छिब – शोभा, कांति, मूर्ति । अनंग – कामदेव । ऊगता भांण – सूर्यादयकाल सूर्यका । सारीख – सदृश, समान ।

५२. तपवंत – तपस्यावान । सुतन्न – पुत्र । धनि – धन्य-धन्य । वेळा – समय । महुरत – मुहूर्त । धन्न – धन्य-धन्य ।

५३. मँगळ धमळ – मांगलिक गायन या गीत । उदमाद – हर्ष, प्रसन्नता । वाजंत्र – वाद्य-यंत्र । ग्रहि······गुड्डियां – घर-घरमें ध्वजाएँ फहराईं या गुलाल उड़ी । कतूहळ – कौतूहल । उच्छब – उत्सव, हर्ष । हिंदुवांणै – हिन्दुस्तानमें, हिन्दुओंमें । अवरंग – औरंगजेब बादशाह । औदके – भयभीत होता है । तुरकांणै – यवनोंमें । सहंस किर – सहस्रकिरण, सूर्य । अजमाल – महाराजा अजीतसिंह । ग्रेह – घरमें, वंशमें । अभौ – महाराजकुमार अभयसिंह । पह – वीर, योद्धा ।

दूहौ[1]–जनमे रांम अजौधिया[2], तिम वरणी तिण वार।
'अभा' जनम[3] वणियौ[4] इसौ, जाळंधर जिण वार ॥ ५४

गाथा–सुत राघव कवसळळ[5], किसन मात जनमे देवकी[6]।
इम जनमे 'अभमल्लं', राजकुंवर[7] सुव्रण कुख[8] रांणी ॥ ५५

कवित्त– पह[9] कुमार[10] पय पांन, 'अभौ' खांचै मुख[11] अंचळ।
सीत पांन जिम साह, होय[12] तप खंच[13] भळाहळ[14]।
पह[15] कुवार[16] पालणै, पौढ़ि झूलाळै प्रंमळ[17]।
तनि[18] झोला सुरतांण, दिली झोला[19] खाए[20] दळ।
पह[21] कुंवर[22] हसै तदि तदि[23] प्रसन, काळ हसै अवरंग कमळ[24]।
जक पाय कुंवर पौढ़ै जरै, दिली अजक खुरसांण दळ[25] ॥ ५६
वधै राज सुख विहद, वधै हित संपत[26] वधायक।
अवर वधै दिन इतौ, वधै पल पल वरदायक।

---

१ ख. दूहा। २ ख. अजोधिया। ग. अजोधीया। ३ ख ग. जनमि। ४ ख. वणीयौ। ग. वरणीयौ। ५ ख. कौसल्लं। ग. कवसल्लं। ६ ग. देवक्की। ७ ख. ग. राजकुंवरि। ८ ग. कुषि। ९ ख. ग. पौहौ। १० ख. ग. कुंआर। ११ ख. ग. मुषि। १२ ख. ग. हुयै। १३ ख. ग. षंचै। १४ ख. हलाहल। १५ ख. ग. पौहौ। १६ ख. ग. कुंमार। १७ ख. ग. प्रम्मल। १८ ख. ग. तन। १९ ख. झोणा। २० ख. ग. पाये। २१ ख. ग. पौहौ। २२ ख. कुंवरि। २३ ग. नदि। २४ ग. कमळि। २४ ख. ग. दळि। २६. ख. ग. संपति।

---

५४. अभा – महाराजकुमार अभयसिंह। वणियौ – वना। जाळंधर – जालोर नगर।

५५. कवसळळ – कौशल्या। अभमल्लं – महाराजकुमार अभयसिंह। सुव्रण – सुवर्ण चौहान-वंशकी सोनंगरा शाखा। कुख – कुक्षि, गर्भ।

५६. पह – राजा। पय पांन – दूध पीना। अभौ – महाराजकुमार अभयसिंह। अंचळ – स्तन। भळाहळ – अग्नि, आग। पालणै – झूलामें। पौढ़ि – सो कर। झूलाळै – पालनामें झूला दिया जाता है। प्रंमळ – (?)। झोला – वायु-प्रवाह, वायुका झोंका। सुरतांण – बादशाह। दिली......दळ – अस्थिर होना, व्याकुल होना, मुर्झाना। पह कुंवर – राजकुमार। तदि तदि – तब-तब। काळ – मौत। अवरंग – बादशाह औरंगजेब। कमळ – शिर। जक – चैन, आराम। जरै – जब। अजक – बेचैन, घबराहट। खुरसांण – बादशाह।

५७. संपत – स्नेह, धनदौलत। वधायक – बढ़ाने वाला। वरदायक – यशस्वी, विरुदधारी।

कवि सुभड़ां वधि कुरब[1], जोम[2] वधियौ[3] जोधांणै।
वपि 'अवरंग'[4] दुख वधै[5], सोच[6] वधियौ[7] खुरसांणै*।
हिंदवां[8] धरम मुरधर हरख, सुजस वधै[9] सरसाविया[10]।
तन वेस 'अभै' 'अगजीत'तण, वधतां इता वधाविया[11] ॥ ५७

वधे दुजां स्रुत[12] वांणि, वधे कवि वांणि[13] सुजस विध[14]।
वधे अस्ट[15] सिध[16] विमळ, नरिंद घरि वधे नवै निध[17]।
अकल[18] वधे[19] मंत्रियां[20], धरा सति[21] वधे सांमध्रम[22]।
सरस वधे अरिन[23] साख, पांण भड़ वधे पराक्रम[24]।
सत सील वधे[25] बहु[26] राज सुख, ग्यांन वधे प्रभु गाविया[27]।
तन वेस 'अभै' 'अगजीत'तण, वधतां इता वधाविया[28] ॥ ५८

तेज पुंज नृप सुतण, हुवौ जस[29] वेस[30] झळाहळ।
सांईनां[31] साथियां[32], मिळे खेले[33] मझि मंडळ।

---

१ ख. कुरव। २ ग. जौम। ३ ख. ग. वधीयौ। ४ ग. अवरंगि। ५ ग. वधै। ६ ग. सौच। ७ ग. वधीयौ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है।

८ ख. हींदवा। ९ ग. वधै। १० ख. ग. सरसावीया। ११ ख. ग. वधावीया। १२ ख. ग. श्रुति। १३ ख. ग. वांण। १४ ख ग. विधि। १५ ख. ग. अष्ट। १६ ख. ग. सिधि। १७ ख. ग. निधि। १८ ग. अकलि। १९ ग. वधै। २० ख. ग. मंत्रीयां। २१ ख. स्न। ग. सत। २२ ग. संसार। २३ ख. ग. अन। २४ ग. प्राक्रम। २५ ग. वधै। २६ ख. वहौ। ग. वहौ। २७ ख. गावीयौ। ग. गावीया। २८ ख. ग. वधावीया। २९ ख. ग. ससि। ३० ग. वेसि। ३१ ख. ग. सांमीना। ३२ ख. ग. साथीयां। ३३ ख. ग. षेलै।

---

५७. सुभड़ां – सुभटों, योद्धाओं। जोम – जोश। वधियौ – बढ़ा। वपि – वपु, शरीर। तन – शरीर। वेस – आयु, वयस्। अभै – महाराजकुमार अभयसिंह। अगजीत-तण – अजीतसिंहके तनय, या पुत्र। वधाविया – बढ़ाये।

५८. दुजां – द्विजों, ब्राह्मणों। स्रुत – श्रुति, वेद। अस्ट सिध – आठ प्रकारकी सिद्धियें। नरिंद – राजा। घरि – भवनमें। नवै निध – नौ निधियें। सति – सत्य। सांमध्रम – स्वामी-धर्म। पांण – बल, हाथ।

५९. पुंज – समूह। सुतण – पुत्र। जस वेस – यश और आयु। झळाहळ – देदीप्यमान। सांईनां – समवयस्क। मंडळ – मंडली, समूह।

हुवै वाळ[1] हेकसा[2], विखम गढ़ कोट वणावै।
आप साह ऊपरा, 'अभौ' दळ वळ[3] सझि आवै।
सझियास कोट गढ़ साहरा, धूम लूटि धन ऊवमै।
ऊगतौ भांण वाळक[4] 'अभौ', राय आंगण[5] इण[6] विध रमै॥ ५६

सझि वाळक[7] सिरपोस, नांम कित्ताव[8] निबावां[9]।
साह वाळ[10] दळ सवळ[11], सझै भेजंत[12] सतावां।
सझि दळ साजि[13] संग्रांम, आप सांमुहा[14] चलावै।
असि गठ[15] चढ़[16] औरवै[17], भिड़े निव्वाव[18] भजावै।
लहि फतै भड़ां निजरां लियै[19], सझि नौवति[20] नंद[21] तिण[22] समै।
ऊगतौ भांण वाळक 'अभौ', राय आंगण[23] इण विध[24] रमै॥ ६०

सुजि वाळक[25] पतिसाह, माफ करि खूंन मनावै।
अंवखास[26] सझि[27] अडर, उरसि[28] छिवतौ[29] भुज आवै।
अनराजा[30] र[31] अमीर, उभै लोपै जां ऊपर।
'ऊभौ' रहै इनांम[32], धरै निज करग जमंधर।

---

१ ख. वाळ। २ ख. ग. हिकसाह। ३ ख. ग. वळ। ४ ख. वाळक। ५ ख. ग. अंगण। ६ ख. ग. विधि। ७ ख. वाळक। ८ ग. किताव। ९ ख. नवावां। ग. नवाबां। १० ख. वाल। ११ ख. सवळ। १२ ख. भंजंत। १३ ख. ग. साज। १४ ख. सुमुहा। १५ ग. कठि। १६ ख. ग. सझि। १७ ख. ग. वोरवै। १८ ख. नवाव। ग. नव्वाब। १९ ख. ग. लीयै। २० ख. नौवति। २१ ख. ग. नद। २२ ग. जिण। २३ ख. ग. अंगण। २४ ख ग. विधि। २५ ख. वाळक। २६ ख. आंवपास। ग. आंवषास। २७ ख. ग. मझि। २८ ख. ग. उरस। २९ ग. छिवतौ। ३० ख. अनिराजा। ३१ ग. रु। ३२ ख. ग. अनम।

---

५९. हेकसा – एक बादशाह, एकसे, समान, एकत्रित। अभौ – अभयसिंह। सझियास – सज्जित किये। धूम – धूमधामसे, जोर-शोरसे (?)। ऊगतौ भांण – सूर्योदयके समान। राय आंगण – राजाके प्रांगणमें। रमै – क्रीड़ा करता है, खेलता है।

६०. सिरपोस – शिरस्त्राण। सतावां – शीघ्र। संग्रांम – युद्ध। सांमुहा – सम्मुख, सामने। ओरवै – झोंकता है। भिड़े – टक्कर ले कर, भिड़ कर। भजावै – पराजित करता है।

६१. खूंन – अपराध, गुनाह। मनावै – खुश करता है। अंवखास – आमखास। उरसि – आकाशमें। छिवतौ – स्पर्श करता हुआ। करग – हाथ। जमंधर – कटार विशेष।

दिल्लेस खीज[1] रीझां[2] दियै[3], खोद[4] हियै परिहंस खमै ।
ऊगतौ भांण बाळक[5] 'अभौ', राय आंगण[6] इण विध[7] रमै ॥ ६१

एका[8] बाळ[9] अमीर[10], वडौ करि आंटि[11] वणावै ।
इण[12] पाए[13] असपती, खवद तिण[14] खड़ौ रहावै[15] ।
सझि आवै 'अभसाह', तेज दळ सझै विढ़ण तदि ।
संकि अमीर[16] पतिसाह, जाय अंबखास[17] तजे जदि ।
सांमुहा मिळै उमराव सुजि[18], निजर करै अनमी नमै ।
ऊगतौ भांण बाळक 'अभौ', राय आंगण[19] इण विध[20] रमै ॥ ६२

सिसु[21] उथापि इक[22] साह, साह सिसु[23] अवर सथप्पै ।
सिसु सुभड़ां हित सझै, पटै गढ़ देस समप्पै ।
सिसू इक[24] मंत्री सरूप, धार[25] दफतर भर धारै ।
सिसु दुज करे सरूप, एक[26] सिसु कथा उचारै ।
कवि होय एक सिसु गुण कहै, सांसण गज दै तिण समै ।
ससि वेस 'अभौ' 'अगजीत' सुत, राय आंगण[27] इण विध[28] रमै ॥ ६३

---

१ ख. ग. खीजि । २ क. रिजां । ३ ग. दीयै । ४ ख. षोद । ग. षोंदै । ५ ख. वाळक । ६ ख. ग. अंगण । ७ ख. ग. विधि । ८ ख. एक । ग. ऐक । ९ ख. ग. वाल । १० ख. ग. अम्मीर । ११ ख. ग. आंट । १२ ख. ग. यण । १३ ग. पाये । १४ ख. तण । १५ ख. ग. रषावै । १६ ख. अम्मीर । १७ ख. अंवषास । १८ ख. ग. सुजि । १९ ख. ग. अंगण । २० ख. विधि । २१ ख. ग. ससि । २२ ख. ग. हिक । २३ ख. ग. ससि । २४ ग. ईक । २५ ख. ग. धारि । २६ ग. ऐक । २७ ख. ग. अंगण । २८ ख. ग. विधि ।

---

६१. दिल्लेस – बादशाह । खीज – कोप कर । रीझां – दान, पुरस्कार । खोद – खुद, स्वयं । परिहंस – परिहास हो कर, हँस कर ।

६२. आंटि – गर्व, शत्रुता । खवद – मुसलमान । अभसाह – अभयसिंह । विढ़ण – युद्ध करनेको । तदि – तब । जदि – जब ।

६३. सिसु – बच्चा, लड़का । उथापि – हटा कर, औंधा कर । साह – बादशाह । अवर – अन्य । सथप्पै – नियुक्त करता है । पटै – जागीर । समप्पै – देता है । गुण – कीर्ति, यश । ससि वेस – बाल्यावस्था । अगजीत – महाराजा अजीतसिंह ।

दूहा[1]–जग[2] सास्तर[3] कहिया[4] जिता, सुभ सुभ चह्न संसार ।
रांमत[5] सझि 'अभमल' रमै, कमधज राजकुमार[6] ॥ ६४

तप वधियौ[7] 'अभमल'तणौ, इळ ससि वेस अभंग ।
तपधर मुगळांणातणौ[8], आथमियौ[9] अवरंग ॥ ६५

कवित्त–जदि दळ सजि[10] 'अगजीत', उतन जोधांणै आयौ ।
लसकर जाफर लूटि, जमीं निज अमल जमायौ ।
जाफरखां जिण वार, असुर मुख[11] त्रणा[12] अधारे ।
'अजा'तणां ऊमरां, ओट[13] सस जीव उवारे[14] ।
साहरौ हजारी पांच सुजि, किलम भिख्यारी[15] जिम कढ़े ।
'गजसाह' दुवौ जोधांण गढ़[16], चमर हुंतां 'अभमल' चढ़े ॥ ६६

मंगळीक नंदि[17] महा, वजै नौवति[18] जिण वेळा ।
मंगळ करै चंद्रमुखी, चित्र अवछाड़ सचेळा ।

---

१ ख. ग. दोहा । २ ग. जगि । ३ ख. सासत्र । ग. सात्स्त्र । ४ ख. ग. कहीया । ५ ग. संगति । ६ ग. राजकुवार । ७ ख. ग. वधीयौ । ८ ख. मुगलाणी । ग. मुगलाणां । ९ ख. ग. आयमीयौ । १० ख. ग. सझि । ११ ग. मुपि । १२ ख. ग. त्रिणां । १३ ख. ग. वोट । १४ ख. ग. उवारे । १५ ख. विपारी । ग. भिपारी । १६ ग. गढ़ि । १७ ख. नदि । ग. नद । १८ ग. नौवति ।

---

६४. चह्न – चिन्ह । रांमत – क्रीड़ा, खेल । मझि – मध्य, में । अभमल – महाराजकुमार अभयसिंह ।

६५. तप – ऐश्वर्य, रौब । इळ – पृथ्वी, संसार । ससि वेस = शिशु-वयस – बाल्यावस्था । तपधर – तप=ऐश्वर्य-प्रकाश+धर – धारण करने वाला सूर्य । मुगळांणांतणौं – मुगलोंका । आथमियौ – अस्त हो गया, अवसान हो गया । अवरंग – औरंगजेब बादशाह ।

६६. अगजीत – महाराजा अजीतसिंह । उतन – वतन, जन्मभूमि । जोधांणै – जोधपुर । लसकर – सेना, दल । जाफर – जाफरबेग नामक यवन जिसको, वि. सं. १७६१में बादशाहने जोधपुर पर भेजा था । अमल – अधिकार । जमायौ – स्थापित किया । त्रणा – घासका तिनका । अधारे – मुखमें लिया । अजातणा – महाराजा अजीतसिंहके । ओट – आड । सस – (सहस्र, हजारों ?) । किलम – यवन, मुसलमान । भिख्यारी – भिक्षुक । कढ़े – निकाल दिया । गजसाह – महाराजा गजसिंह । दुवौ – दूसरा, वंशज ।

६७. मंगळीक – मांगलिक । नंदि – नाद, वाद्य-ध्वनि । मंगळ – उत्सव, हर्ष, मांगलि कगायन । अवछाड़ – रक्षा, आच्छादनका वस्त्र । सचेळा – (?) ।

अंब डाळ कुंभ आंणि, विमळ वर तरणि वंदावै।
वांदि कळस तिण वार, भूप द्रब[1] रूप भरावै।
आवियौ[2] वांदि तोरण 'अजौ', पह सिंगार चौकी[3] परै।
तदि मिळै[4] लोक मुरधरतणा, कोड[5] दरब[6] निजरां करै॥ ६७

महाराजा अजीतसिंहरै स्वागतरौ वरणण

छंद नाराच

अनेक जोध मंत्र आय, बंदवै[7] बळा[8] बळा।
कहै[9] अनेक बांणि[10] क्रीत[11], पात[12] गीत प्रग्घळा[13]।
रचै विलंद छौळ रीझ, क्रुंद सीस कापियौ[14]।
'अजौ' नरिंद[15] जेण[16] वार, इंद्र जेम ओपियौ[17]॥ ६८

दुजिंद[18] वेद मंत्र दाखि[19], आस्रिवाद[20] उच्चरै[21]।
सतोत्र पाठ ह्वै[22] सकत्ति[23], कोटि पारथी करै।

---

१ ख. ग. द्रव्य। २ ख. ग. आवीयौ। ३ ख. चौरी। ४ ख. ग. मिले। ५ ख. ग. कोडि। ६ ख. दरव। ७ ख. ग. वंदवै। ८ ख. ग. वळा वळा। ९ ख. कहे। १० ख. ग. वांणि। ११ ख. ग. क्रीति। १२ ख. प्रीत। १३ ख. ग. प्रघळा। १४ ख. ग. कोपीयौ। १५ ख. ग. नरिंद्र। १६ ख. जिण। १७ ख. वोपीयौ। ग. वौपीयौ। १८ ख. ग. दुज्यंद। १९ ग. दाष। २० ग. आश्रीवाद। २१ ग. उचरै। २२ ग. हुवै। २३ ख. सकति। ग. सक्ति।

---

६७. अंब – आम्र, आम। डाळ – टहनी, वृक्ष-शाखा। कुंभ – जल-कलश। तरणि – तरुणी, स्त्री, रमणी। वंदावै – नमस्कार कराती हैं। वांदि – वंदना कर, नमस्कार कर। अजौ – महाराजा अजीतसिंह। पह – राजा। सिंगार चौकी – जोधपुरके किलेमें बना एक स्थान विशेष।

६८. जोध – योद्धा। मंत्र – मन्त्री। बंदवै – वंदन करते हैं। बळा बळा – चारों ओरसे। क्रीत – कीर्ति। पात – कवि, चारण। गीत – डिंगलका छंद विशेष। प्रग्घळा – बहुत। विलंद – महान, बुलंद। छौळ – हिलोर, लहर। रीझ – पुरस्कार, दान। क्रुंद – निर्धनता, कंगाली। कापियौ – काटा। नरिंद – नरेन्द्र, राजा। ओपियौ – सुशोभित हुआ।

६९. दुजिंद – द्विजेन्द्र, ब्राह्मण। दाखि – कह कर पढ़ कर। आस्रिवाद – आशीर्वाद। सतोत्र – स्तोत्र। पारथी – प्रार्थना या पार्थिव-शिवलिङ्गका अर्चन।

हुवै पुरांण ज्याग होम, जोड़ भांण जोपियौ[1] ।
'अजौ'[2] नरिंद[3] जेण वार[4], इंद्र जेम ओपियौ[5] ॥ ६९
विनोदवांन[6] वागवांन फूलवांन[7] केवळं[8] ।
छभा मधे धरंत छाव, आंण[9] भूप अग्गळं[10] ।
लहंत द्रव्व[11] साख[12] लाख, रंभ खंभ रोपियौ[13] ।
'अजौ' नरिंद[14] जेण वार, इंद्र जेम ओपियौ[15] ॥ ७०
करंत कुंकमं तिलक्क[16], पांणि राजप्रोहितं[17] ।
अक्षत[18] मोतियां[19] चढ़ाय, सोभ भाळ सोहितं ।
महीख[20] चक्र[21] चाढ़ि मात, स्रोण[22] चंड सो पियौ[23] ।
'अजौ' नरिंद[24] जेण वार[25], इंद्र जेम ओपियौ[26] ॥ ७१

कवित्त– इंद्र जेम ओपियौ[27], 'अजौ' नरिंद[28] अवतारी* ।
हित सु[29] वहौ[30] छक हरख, धरै उच्छव[31] छत्रधारी ।

---

१ ख. ग. जोपीयौ । २ ग. अजो । ३ ख. नरिंद्र । ४ ख जिण वार । ५ ख. वोपीयौ । क. औपीयौ । ६ ग. वेनोदवांन । ७ ख. ग. फूलपांन । ८ क. केवलं । ग. केफळं । ९ ख. ग. आंणि । १० ख. अगलं । ११ ख. ग. द्रव्य । १२ ग. सष । १३ ख. ग. रोपीयौ । १४ ख. ग. नरिंद्र । १५ ख. वोपीयौ । ग. ओपीयौ । १६ ख. ग. तिलक । १७ ग. राजप्रोहितं । १८ ख. ग. अष्यत । १९ ख. ग. मोतीयां । २० ख. ग. महिष । २१ ख. ग. वक्र । २२ ग. श्रोणि । २३ ख. सोपीयौ । ग. सौपीयौ । २४ ख. ग. नरिंद्र । २५ ख. जिण वार । ग. जेण वार । २६ ख. वोपीयौ । ग. औपीयौ । २७ ख. ग. ओपीयौ । २८ ख. नरिंद्र । ग. नर इंद ।

*इससे पहलेकी निम्नलिखित पंक्तियां क. प्रतिमें नहीं मिली हैं—
पतिव्रता समूह प्रेम आवीयौ अवप्पती ।
वजंत गायणी वजाय तान गांन नृतती ।
रती रते सजोड़ रूप लेषि अछ लोपीयौ ।
'अजौ' नरेंद्र जेणि वार इंद्र जेम ओपीयौ ।

२९ ख. सूं । ग. सं । ३० ख. वौहौ । ग. वोह । ३१ ख. ग. उछव ।

---

६९. ज्याग – यज्ञ । जोड़ – बराबर, समान । जोपियौ – तेजस्वी हुआ ।

७०. छभा – सभा । मधे – मध्य । छाव – फूल या फल आदि रखनेकी डलिया । आंण – ला कर । अग्गळं – अगाड़ी । लहंत – लेते हैं । द्रव्व – द्रव्य, धन । रंभ – रंभा, केला । खंभ – स्कंभ, खंभा ।

७१. पांणि – हाथ । सोभ – कान्ति, शोभा । भाळ – ललाट । महीख – भैंसा । चक्र चाढ़ि मात – देवीको बलि दे कर । स्रोण – शोणित, रक्त । चंड – चंडी, दुर्गा । अजौ – महाराजा अजीतसिंह ।

७२. छक – शोभा । हरख – हर्ष, प्रसन्नता । उच्छव – उत्सव, हर्ष । छत्रधारी – राजा, नृप ।

सुजि खटव्रन सांसणां, अधिक सुख दियौ[1] असीसां ।
सुख प्रज[2] सेवा सुभ्रण, तांम सुर कोड़ि[3] तेतीसां[4] ।
महिहूंत खप्परांणौ[5] मिटै, हिंदवांणां[6] मुरधर हुवौ[7] ।
जोधांण[8] 'अजौ' आयौ जदिन[9], दुजड़ पांण[10] 'गजबंध' दुवौ[11] ॥ ७२

समें[12] तेण सुरतांण, दिली फबि[13] 'साह बहादर'[14] ।
दळ[15] सजि[16] आयौ दुगम, अभंग दखणी[17] धर ऊपर[18] ।
मिळे निसंक 'अजमाल', जाय सांमुहौ जियारां ।
खाबै[19] कीधा खूंन, तिकै[20] नह गिणै[21] तियारां ।
अंबखास[22] मिळे[23] असपत्तिहूं, कुरब[24] घणौ[25] असपति कियौ[26] ।
सिरपाव तुरंग मदफर समपि, लारां दक्खण[27] दिस लियौ[28] ॥ ७३

सवाई राजा जयसिंहसूं बादसारौ आंबेर छीनणौ अर महाराजा अजीतसिंहरी मदद करणी

जदिन साह 'जैसाह', अंबगढ़[29] हूंत[30] उथप्पे[31] ।
'जैसा' कणेठी 'विजौ', अंब[32] गढ़ जेनूं[33] अप्पे[34] ।

---

१ ख. ग दीयै। २ ख. व्रज। ३ ख. काडि। ४ ख. ग. त्रितीसां। ५ ख. ग. षांफरांणौ। ६ ख. हिंदुवांणौ। ७ ख. हूवौ। ८ ग. जोधाणि। ९ ग. जुदिन। १० ख. ग. पाणि। ११ ख. दुवो। १२ ख. ग. समै। १३ ख. ग. फवि। १४ ख. ग. वहादर। १५ ग. दलि। १६ ख. ग. सझि। १७ ख. ग. दषिणी। १८ ख. ग. उप्पर। १९ ख. ग. षावै। २० ख. ग. तिके। २१ ख. ग. गिणे। २२ ख. अंवषासि। २३ ख. प्रतिकी इस पंक्तिमें यह 'मिले' शब्द नहीं है। २४ ख. कुरव। २५ ख. णौ। २६ ख. ग. कीयौ। २७ ख. दक्षिण। ग. दषिण। २८ ख. ग. लीयौ। २९ ख. अंवगछ। ग. अवगढ़। ३० ग. हूंन। ३१ ख. अथापै। ग. उथापै। ३२ ख. अंव। ३३ ग. जेतू। ३४ ख. ग. आपै।

---

७२. खटव्रन – राजस्थानकी ब्राह्मणादि छः जातियां। प्रज – प्रजा। महिहूंत – पृथ्वीसे। खप्परांणौ – यवनत्व, मुसलमानोंका धर्म। हिंदवांणौ – हिन्दू धर्म। दुजड़ – तलवार। पांण – हाथ। गजबंध दुवौ – दूसरा महाराजा गजसिंह या महाराजा गजसिंहका वंशज।

७३. साह वहादर – वहादुरशाह बादशाह। अजमाल – महाराजा अजीतसिंह। सांमुहौ – सम्मुख, सामने। जियारां – जिस समय। खावै – वांकुरा, वीर। खूंन – गुनाह, अपराध। तियारां – उस समय। अंबखास – आम खास। असपत्तिहूं – बादशाहसे। समपि – देकर। लारां – पीछे, साथ। दिस – तरफ।

७४. जैसाह – आमेर का राजा जयसिंह। अंबगढ़ हूंत – आमेरके गढ़से। उथप्पे – हटाये गये। जैसा – आमेरका राजा जयसिंह। कणेठी – कनिष्ठ, छोटा भाई। जेनूं – जिसको। अप्पे – दिया। विजौ – आमेरके राजा सवाई जयसिंहका छोटा भाई विजयसिंह।

जद[1] अजमलहूं[2] 'जसै', आय मिळ एह[3] उचारी।
बोल[4] बांह[5] वगसियौ[6], धणी मुरधर छत्रधारी।
'जैसाह'हूंत कहियौ[7] 'अजै', असपति कहि इळ तो अपूं।
उथप्पै[8] तूझ असपति इळा, असपतिनूं हूं[9] ऊथपूं॥ ७४

हियै तांम हरखियौ[10], सुणे कथ 'अजण'[11] सवाई।
कहै कुरम[12] कमधज हुं[13], बिहूं[14] कर जोड़ वडाई।
आप सिरै हिंदवां[15], आप हिंदवां[16] उजागर।
राज आप राखियौ[17], कमंधपति ग्रहे मूझकर[18]।
परठिवी[19] जागि पतसाह[20] नूं[21], कवण आंट दूजौ करै।
मो राज इसी वेळा[22] मही[23], आपहीज करि ऊवरै[24]॥ ७५

एकठ[25] करि नृप[26] उभै, हिले[27] सांमल[28] पतिसाहां।
पातिसाह[29] मुनसंम[30], दिये[31] नह कहै[32] दुराहां।
जोधांणै[33] 'अजण'नूं, थाट वगसण कथ थापै।
'जैसाह'नूं जयार[34], उतन[35] आंवेर[36] न आपै।

---

१ ख. ग. जदि। २ क. अभमल। ३ ख. ऐह। ४ ख. ग. वोल। ५ ख. ग. वांह। ६ ख. ग. वगसीयौ। ग. वगसीयौ। ७ ख ग. कहीयौ। ८ ख. ग. ऊथपै। ९ ग. हुं। १० ख. ग. हरषीयौ। ११ ख. अण। १२ ख. ग. कूरम। १३ ख. ग. हूं। १४ ख. विहुं। ग. विहूं। १५ ख. हिंदुवां। ग. हींदुवा। १६ ग. हींदुवां। १७ ख. ग. रापीयौ। १८ ख. मुभकर। १९ ख. ग. परछठी। २० ख. ग. पतिसाह। २१ ख. ग सूं। २२ ग. वेळा। २३ ख. ग. मही। २४ ख ग. ऊवरै। २५ ग ऐकठ। २६ ख. ग. नृप। २७ ख. ग. हले। २८ ख. ग. सांमिल। २९ ख. यातसाह। ३० ख. मुनिसप्प। ग. मुनसुप्प। ३१ ख. दीए। ग. दीयै। ३२ ख. ग. कहे। ३३ ख. ग. जोधांणौ। ३४ ख. ग. जियार। ३५ ख. ऊतन। ३६ ख. ग. आंवेर।

---

७४. अजमलहूं – महाराजा अजीतसिंहसे। जसै – सवाई राजा जयसिंहका। जैसाहहूंत – सवाई राजा जयसिंहसे। अजै – महाराजा अजीतसिंह। तो – तुझको। अपूं – दे दूं। उथप्पै – हटा दे। हूं – मैं।

७५. हियै – हृदय, मन। हरखियौ – हर्षित हुआ। अजण – महाराजा अजीतसिंहका। सवाई – सवाई राजा जयसिंह, विशेष। कुरम – कछवाह राजा जयसिंह। बिहूं – दोनों। सिरै – श्रेष्ठ। उजागर – उज्ज्वल। आंट – शत्रुता। मो – मेरा।

७६. हिले – चले। सांमळ – साथ। अजणनूं – महाराजा अजीतसिंहको। थाट – वैभव। वगसण – बख्शीश करनेको। जैसाहनूं – सवाई राजा जयसिंहको। जयार – जब।

एकलौ न लै[1] 'अजमल' उतन, पलटै वचन न आपरा।
नरबदा[2] हूंत[3] मुरड़े नरिंद, करे नगारो कूचरा[4] ॥ ७६

कमधांपति कूरमां, उभै मुरड़िया[5] अधप्पति[6]।
सुणे बहादरसाह[7], उवर[8] प्रजळे असपत्ती।
देससुबां[9] लिख[10] दियौ[11], कथन स्रीमुखां[12] कहै[13] इम।
सराजांम जंग सभै, किला राखौ दहुं[14] कायम।
इम लिखे साह दिस[15] ऊंबरां[16], सुणि भूपति सरसाविया[17]।
'अमरेस' मिळण[18] कागद[19] दिया[20], उदियापुर[21] दिस[22] आविया[23] ॥७७

महारांणा अमरसिंह द्वतीयसूं दोनां राजाग्रांरौ मिळण सारू उदैपुर जाणौ

'अमर रांण' करि उछब[24], पोह[25] सांमुहौ पधारे[26]।
असिहूं पहिलां उतरि, जाय 'अगजीत' जुहारे[27]।
महारांण[28] महाराज[29], सभै हित मिळे सकाजा।
महारांण बळ[30] मिळे, रचे हित मिरजा राजा।

---

१ ग. ले। २ ख. नरवदा। ३ ख. हुंत। ४ ख. कूंचरा। ५ ख. ग. मुरड़े। ६ ख. ग. अधपती। ७ ख. वहादरसाह। ग. बाहादरसाह। ८ ख. ग. उवरि। ९ ख. दिसिसूंवां। ग. दिसिसूबा। १० ख. ग. लिषि। ११ ख. ग. दीयौ। १२ ख. श्रीमुख। ग. श्रीमुषि। १३ ख. कही। ग. कहा। १४ ख. दुहुं। ग. दुहू। १५ ख. ग. दिसि। १६ ख. ऊंवरां। १७ ख. सरसरसावीया। ग. सरसावीया। १८ ख. ग. मिळण। १९ ख. ग. कागल। २० ख. ग. दीया। २१ ख. ग. उदीयापुर। २२ ख. ग. दिसि। २३ ख. ग. आवीया। २४ ख. उछवि। ग. उत्छव। २५ ख. ग. पहां। २६ ग. पधारै। २७ ग. जुहारै। २८ ख. ग. माहारांण। २९ ख माहाराज। ३० ख. ग. वलि।

---

७६ अजमल – महाराजा अजीतसिंह। मुरड़े – कुपित होकर, मुड़े, लौटे।

७७. कमधांपति – महाराजा अजीतसिंह। कूरमां – मिर्जा राजा जयसिंह। उभै – दोनों। मुरड़िया – कुपित हुए, लौटे। अधप्पति – राजा। उवर – हृदय। प्रजळे – प्रज्वलित हुआ। असपत्ती – बादशाह। अमरेस – महाराणा अमरसिंह द्वितीय।

७८. अमर रांण – महाराणा अमरसिंह द्वितीय। पोह – राजा। सांमुहौ – सम्मुख। असिहूं – घोड़ासे। अगजीत – महाराजा अजीतसिंह। जुहारे – अभिवादन किया। मिरजा राजा – मिर्जा राजा जयसिंह।

चवि वडम[1] बोल[2] गयंदां चढ़े[3], चमर डमर कह[4] चालिया[5] ।
सिव विसन ब्रह्म[6] सुर जांणि स्रव[7], हेक साथ[8] मिळ[9] हालिया[10] ।। ७८
हुतां[11] राग हौकवा, त्रहूं[12] आए[13] छत्रपत्ती[14] ।
तांम[15] गजां ऊतरे[16], पौहमि[17] हित चढ़े प्रभत्ती ।
मुंहगा घण मोलरा, पड़ै[18] पगमंडा अपारां ।
मह पसमी मुखमलां, तास अतलस जरतारां ।
तांणाव हीर खंभ नग जड़त, तृण जरकस चंद्र तांणिया[19] ।
त्रण तखत छत्र सझि छत्रपती, एम[20] अंबासां[21] आंणिया[22] ।। ७९
महमांनी सझि 'अमर', जुगति करि सुपह जिमाए[23] ।
पांन कपूर[24] अरोगि, अनैं[25] मिळ दरगह आए[26] ।
दुझल सिरै[27] दीवांण[28], वणे त्रिहुं[29] भूप विराजे ।
छभा सहित छत्रपती, छत्र चांमर सिर छाजै[30] ।

---

१ ख. ग. वडिम । २ ख. वोल । ३ ग. चढ़ै । ४ ख. ग. करि । ५ ख. ग. चालीया । ६ ग. व्रह्म । ७ ख. श्रव । ८ ख. साथि । ९ ख. ग. मिलि । १० ख. ग. हालीया । ११ ख. ऊतां । १२ ख. त्रिहूं । ग. त्रिहू । १३ ग. आगै । १४ ख. ग. छत्रपती । १५ ख. ग. ताम । १६ ख. उतरे । ग. ऊतरै । १७ क. पोहम । ग. पहौमि । १८ ख. ग. पडे । १९ ख. ग. तांणीयां । २० ग. ऐम । २१ ख. ग. अवासां । २२ ख. ग. आंणीयां । २३ ग. जिमाऐ । २४ ख. कपूरि । २५ ख. अनं । २६ ग. आऐ । २७ ख ग. सरै । २८ ग. दीवांणि । २९ ख. ग. त्रिहूं । ३० ख. छाजे ।

---

७८. चवि – कह कर । वडम – वड़ा । चमर – चंवर । डमर – (डंवर, समूह) । विसन – विष्णु । हालिया – चले ।

७९. हौकवा – जलसा, उत्सव, आनन्द । त्रहूं – तीनों । पौहमि – पृथ्वी । पगमंडा – वह कपड़ा या विछौना जो आदरके लिये किसीके मार्गमें विछाया जाता है और जिस पर पैर रख कर सम्मानित व्यक्ति चलता है । अपारां – बहुत । मह पसमी = महा पश्म + ई – वढ़िया ऊनके वस्त्र । मुखमलां – मखमल । तास – एक प्रकारका जरदोजी कपड़ा, ताश, जरवफ्त । अतलस – एक प्रकारका वहुमूल्य रेशमी वस्त्र, अत्लस । जरतारां – सोनेके तारोंसे वना या गूँथा हुआ । जरकस – सोने व चांदीके तारोंसे वना कपड़ा । चंद्र – चंदोवा । अंबासां – आवास, भवन ।

८०. महमांनी – आतिथ्य । सझि – तैयार कर । अमर – महाराणा अमरसिंह । जुगति – युक्ति । सुपह – राजा । दरगह – दरवार । दुझल – वीर । सिरै दीवांण – खास दरवार ।

पुर अंब[1] उदैपुर जोधपुर, इम तप निजरां आवियौ[2] ।
'जैसाह' व्रहम 'अमरौ' त्रजट[3], दइव[4] 'अजौ' दरसावियौ[5] ॥ ८०

महाराजारौ जोधपुर पर अमल करणौ

जंगम असि जवहार[6], 'अमर' बहु[7] निजर अधारे[8] ।
सझि दळ दहुंवै[9] सुपह, प्रगट मुरधरा पधारे ।
मुगळ जोधपुर मांह[10], हुंतौ सोबै[11] छ हजारी ।
जेण ग्रहण 'अगजीत', विकट फौजां विसतारी[12] ।
महराब[13] खांन दहले मुगळ, गयौ भाजि तजि छक गजै ।
पतिसाह हुकम विण[14] जोधपुर, इम खग बळि[15] लीधौ[16] 'अजै' ॥ ८१

महाराजा अजीतसिंहरी सवाई राजा जयसिंहरी मदद करणी

जमे[17] अमल जोधांण, करे दळ सबळ[18] कराळा ।
'अजौ'[19] करण आवियौ[20], चंड नयरां धखचाळा ।
हुतौ[21] सयद हुसैन[22], अंब[23] गढ़ मझि अजरायल ।
लोक विदा करि लगस, तिकौ[24] काढ़े खळ तायल ।

---

१ ख. अंव । २ ख. ग. आवीयौ । ३ ख. त्रजढ़ । ग. त्रचष । ४ ख. दैव । ग. देव । ५ ख. ग. दरसावीयौ । ६ ग. जव झंवहार । ७ ख. वहौ । ग. वहौं । ८ ख. अधारै । ९ ख. दुहुवै । १० ख. ग. गाह । ११ ख. ग. सूवै । १२ ग. विस्तारी । १३ ख. ग. महराव । १४ ख. ग. विणि । १५ ख. ग. वल । १६ ख. लीधो । १७ क. जमै । १८ ख. सवल । १९ ग. अजो । २० ख. ग. आवीयौ । २१ ख. हुंतौ । २२ ख. ग. हुस्सेन । २३ ख. अंव । २४ ख. तिको ।

---

८०. पुर अंब – आमेर नगर । तप – तेज । जैसाह – सवाई राजा जयसिंह । व्रहम – ब्रह्मा । अमरौ – महाराणा अमरसिंह । त्रजट – महादेव । दइव – विष्णु । अजौ – महाराजा अजीतसिंह । दरसावियौ – दिखाई दिया ।

८१. जंगम – घोड़ा । असि – तलवार । जवहार – जवाहरात । अमर – महाराणा अमरसिंह । दहुंवै – दोनों । सुपह – राजा । हुंतौ – था । सोबै – सूबा । अगजीत – महाराजा अजीतसिंह । दहले – भयभीत हो कर । छक – गर्व, रोब । लीधौ – लिया । अजै – महाराजा अजीतसिंह ।

८२. अमल – अधिकार, शासन । कराळा – भयंकर । चंड नयरां – दिल्ली । धखचाळा – युद्ध । अंब गढ़ – आमेरका किला । अजरायल – वीर, जबरदस्त । लगस – सेना, दल । तायल – आततायी, दुष्ट, क्रोधी ।

इम करे अमल राजा 'अजै', धर मुरधर ढूंढाड़[1] धर।
असपत्ति[2] तणा लीधा उभै, सांभर[3] डीडवांणा[4] सहर॥ ८२

सुजि डीडवांणा संभरि, सहित बहु[5] मुलक सकाजा।
ऊ बांटै[6] 'अजमाल', रैंण भुगतै[7] महाराजा[8]।
आवै दरब[9] अपार, पेस आवै बहु[10] पाए[11]।
वाका एक[12] अनेक, जवनपति आगळ[13] जाए[14]।
सुणि धिकै साह वाका सहर, जवन रीस[15] पावक जिसी।
फुरमांण लिखे भेजे फजर, दिलीनाथ सयदां दिसी॥ ८३

इम दसकत आविया[16], देखि वाचिया[17] सयद्दां।
करे[18] हुकम विण[19] कही, मुलक नह दिये[20] मरद्दां।
सो तुम[21] लोपिस रीत[22], मुलक दे अमल मिटाया।
सिंघ-अजीत 'जैसिंघ'[23], अमल गज सिका उठाया।
अब[24] तुम सताव[25] जावौ उहां, मझम कसम[26] महमंदरां।
का[27] करौ जंग संभरि किलै, का[28] चूड़ी पहरौ[29] करां॥ ८४

---

१ ख. ढुढ़ाडु। २ ख. ग. असपती। ३ ख. ग. सांभरि। ४ ख. ग. डिडवांणां। ५ ख. वहौ। ग. वहौ। ६ ख. ऊ वांटे। ग. ऊंवाटै। ७ ख. भुगते। ८ ग. महाराजा। ९ ख. दरव। १० ख. ग. वहौ। ११ ग. पाऐ। १२ ख. एह। ग. ऐह। १३ ग. आगलि। १४ ग. जाऐ। १५ ख. ग. रीझ। १६ ख. ग. आवीया। १७ ख. वांचीया। ग. वाचीथा। १८ ग. करै। १९ ख ग. विणि। २० ख. दीयां। ग. दीया। २१ ख. त्रुम। २२ ख. ग. रीति। २३ ग. जैसींघ। २४ ख. अव। २५ ख. सताव। २६ ग. कस। २७ ख. ग. काय। २८ ख. ग. काय। २९ ख. ग. धारौ।

---

८२. अजै – महाराजा अजीतसिंह।

८३. संभरि – सांभर नगर। अजमाल – महाराजा अजीतसिंह। रैंण – भूमि, राज्य। भुगतै – उपभोग करते हैं। पेस – नजर, भेंट। वाका – घटना। जवनपति – बादशाह। आगळ – अगाड़ी। धिकै – कोप करता है, प्रज्वलित होता है। जवन – यवन, मुसलमान। पावक – अग्नि, आग। दिसी – तरफ, ओर।

८४. दसकत – हस्ताक्षर, दस्तग़। सयद्दां – यवनों। सिंघ-अजीत – अजीतसिंह। का – या, अथवा। जंग – युद्ध। करां – हाथोंमें।

महाराजा अजीतसिंहरौ सांभरपुररै वास्तै तैयारी करणी, जोधारांरौ वरणण

सुणे सयद ऊससे, अडर[1] वाहर[2] पुर वाळा ।
अगनिकुंड[3] ऊछळे[4], जांणि सींची घ्रत[5] ज्वाळा ।
जीण पखर असि जड़े, जड़े असुरां जरदाळा ।
कसि जमदढ़ खग[6] कसे, कसे भूतांण[7] कराळा ।
वडफरां अलीबंध करि विखम, आतस धोम[8] उफांणियां[9] ।
आंणिया[10] जोध छिबता[11] उरस, तांणि चिला मुळतांणियां[12] ॥ ८५

सझि हौदां[13] जंग सजे[14], महारावतां मदग्गळ[15] ।
हुकम हुंता[16] हाजरां, मसत आंणिया[17] महाबळ ।
बैसारे[18] चख[19] बोळ[20], छके आया वेछाड़ां[21] ।
चढ़े सयद फिर चढ़े, प्रचंड कंठीर पहाड़ां ।
अनि चढ़े तुरां विकटां[22] अगै[23], रबिल[24] आलमींनां रटै[25] ।
*खळ खटै[26] रमण झपटै[27] खगां, असुरांयण दळ ऊपटै[28] ॥ ८६

सझि दळ आया सयद, कहै[29] इण विध[30] हलकारां ।
कया[31] नकीबां हुकम, 'जसै' 'अजमल' जिणवारां[32] * ।

---

१ ख. अड । २ ग. वारह । ३ ग. अगनिकूंड । ४ ख. ग. उछले । ५ ख. ग. घृत । ६ ग. षगे । ७ ख. ग. भूथांण । ८ ख. ग. क्रोध । ९ ख. ऊफाणीयां । ग. उफांणीयां । १० ख. आणीया । ग. अणीया । ११ ख. विछीपा । ग. छिवीया । १२ ख. ग. मुलतांणीयां । १३ ख. ग. हौदा । १४ ख. ग. सझे । १५ ख. मदगगल । ग. मद्दगळ । १६ ख. हुवां । ग. हुंतां । १७ ख. ग. आंणीयां । १८ ख. ग. वैसरि । १९ ग. विष । २० ख. वोल । २१ ख. वेछाडा । ग. बेछाडां । २२ ख. ग. विकटे । २३ ख. ग. अंगे । २४ ख. ग. रविल । २५ ख. ग. रटे । २६ ख. ग. षटे । २७ ग. झपटे । २८ ग. ऊपटे । २९ ग. कहे । ३० ग. विधि । ३१ ग. करिया । ३२ ग. जिणवारां ।

*ये पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं ।

---

८५. ऊससे – जोशमें आये । जांणि – मानों । सींची – आहुति दी हो । जीण – जीन, काठी । पखर – घोड़ेका कवच । असि – घोड़ा । जड़े – सुसज्जित किये । असुर – यवन । जरदाळा – कवचों । जमदढ़ – कटार विशेष । भूतांण – तर्कश । वडफरां – ढालें । अलीबंध – ढालको पीठ पर कसनेका बंधन । आतस – अग्नि । धोम – धुंआ । उरस – आसमान । चिला – प्रत्यंचा । मुळतांणियां – मुलतानके ।

८६. महारावतां – महा योद्धा । मदग्गळ – हाथी । मसत – मस्त । बैसारे – बैठाये । चख – नेत्र । बोळ – लाल । छके – मस्त हो कर, छक कर । वेछाड़ां – (?) । कंठीर – सिंह । तुरां – घोड़ों । अगै – अगाड़ी । रबिल – (रब, विधि ?) । आलमीं – संसारी, संसार व्यापी ईश्वर । खळ – शत्रु । खटै – नाश होते हैं । झपटै – प्रहार करते हैं । असुरांयण – बादशाह, यवनोंका । ऊपटै – उभड़ता है ।

८७. अजमल – महाराजा अजीतसिंह ।

फिर[1] नकीब[2] चहुंतरफ, एम[3] वक[4] कहै अवाजां।
वेग[5] चढ़ौ वेढ़कां, सभ्भे जुध काज[6] सकाजां।
*साकति तुरां केजम सभ्भे, सिलह ससत्र[7] केजम[8] सजां।
सिंधुरां जंगी हौदा सभ्भै[9], धर[10] नौबत[11] नेजां धजां* ॥ ८७

सभ्भे सिलह करि[12] ससत्र[13], महाराजा राजा मिळि।
अड़े सीस असमांन[14], भौंह मूंछां अणियां[15] मिळि।
चोळ वदन[16] जखचोळ, करै ऊतोळ सेल करि[17]।
तुरां चढ़े भड़ तांम, हुवा दहुंवै[18] दळ हाजर।
तीसरौ हुवां[19] डाकौ[20] तवल[21], होण[22] अलल जुध हालिया[23]।
आरंभे[24] समर चक्रवति उभै, चमर ढुळंतां चालिया[25] ॥ ८८

'अजमल' सकति अराधि[26], ओण[27] रक्केब[28] उधारे[29]।
चढ़े सवाई चढ़े, इस्ट[30] स्रीरांम उचारे[31]।

---

१ ख. फिरि। २ ख. नकीव। ३ ग. ऐम। ४ ख. ग. वक। ५ ग. वेगि। ६ ख. साभ्भ। ग. साज। ७ ग. सस्त्र। ८ ग. सूरां। ९ ग. सभ्भे। १० ख. ग. धरि। ११ ख. नौवति। ग. नौवति।

*ये पंक्तियां ख. प्रतिमें अपूर्ण हैं।

१२ ख. ग. करि। १३ ख. ग. सस्त्र। १४ ग. असमांनि। १५ ख. ग. अणीयां। १६ ख. ववदन। १७ ख. ग. कर। १८ ख. दहूंवै। १९ ख. ग. हुवा। २० ख. ग. डाकै। २१ ख. तवल। २२ ग. हौण। २३ ख. ग. हालीया। २४ ग. आरंभै। २५ ख. ग. चालीया। २६ ग. आराधि। २७ ग. औण। २८ ख. रक्केव। २९ ख. ग. अधारे। ३० ख. ग. इष्ट। ३१ ख. उवारे।

---

८७. वेग – शीघ्र। वेढ़कां – योद्धाओं, वीरों। साकति – घोड़ोंकी जीन। केजम – (?)। सिंधुरां – हाथियों। नेजां – नेजा, भाला। धजां – ध्वजाएँ।

८८. सिलह – कवच। भौंह – भौंहों। अणियां – नोंकों। मिळि – स्पर्श की, मिल गई। चोळ – लाल। ज[च]ख चोळ – लाल नेत्र। ऊतोळ – उठा कर। करि – हाथमें। डाकौ – नगाड़े पर डंका। तवल – बड़ा ढोल। अलल – त्वरायुक्त, चंचल। समर – युद्ध। चक्रवति – राजा।

८९. सकति – शक्ति, देवी। अराधि – आराधना कर के। ओण – पैर। रक्केब – रकेब। उधारे – रखे। सवाई – सवाई राजा जयसिंह।

छजे सीस[1] छांहगीर[2], करे अस[3] वाग करग्गां[4] ।
रांवण ऊपर रांम, जाए घड़ियाळ स वग्गां* ।
घण मोहर[5] अराबा[6] गज घटा, घटा[7] मोहरि रावत घणा ।
वरियांम दहूं झळहळ वरण, तरण जांणि ग्रीखमतणा ॥ ८९

अठी एम[8] पह[9] उभै, दळां पारंभ दरसाया ।
सयद उठी सिर जोर[10], अगन[11] झळ जिम दळ आया ।
वजि[12] त्रंबाळ[13] दहुं वळां[14], कळळ हूकळां कराळां ।
धिक[15] नाळां झळ धुबै[16], वीज[17] करड़क वरसाळां[18] ।
धोमार धोम रज डंबर[19] धर, मार[20] बांण[21] गोळां[22] मंडै[23] ।
चकि[24] इल[25] लथराक तिमराक चढ़ि, चक्रवाक दळ ऊचकै[26] ॥ ९०

---

१ ग. सीसि । २ ख. छांहांगीर । ग. छाहांगीर । ३ ख. ग. असि । ४ ग. करगां ।

*यह पंक्ति ख. और ग. प्रतियोंमें निम्न प्रकार है—

रांमण ऊपर रांम, गयौ घड़ियाळ स वग्गां ।

५ ख. ग. मौहरि । ६ ख. आरावा । ग. अरावा । ७ ख. घणा । ८ ग. ऐम । ९ ख. ग. पहौ । १० ग. जोरि । ११ ख. ग. अगनि । १२ ग. बजि । १३ ख. त्रंवाल । १४ ग. बळां । १५ ख. ग. धिषि । १६ ख. धुवे । ग. धुबे । १७ ग. बीज । १८ ग. बरसाळां । १९ ख. डंवर । ग. डवर । २० ख. माण । २१ वाण । २२ ख. ग. गोळा । २३ ख. ग. मंडे । २४ ख. ग. चक । २५ ख. ग. यल । २६ ख. ग. ऊचंडै ।

---

८९. छांहगीर – (छत्र; आतपत्र) । घण – बहुत । मोहर – अगाड़ी । अराबा – तोप । घटा – सेना । मोहरि – अगाड़ी । रावत – योद्धा । वरियांम – श्रेष्ठ, वीर । दहूं – दोनों । झळहळ – देदीप्यमान । वरण – रंग, कांति । तरण = तरणि, सूर्य । ग्रीखमतणा – ग्रीष्मके ।

९०. प्रारंभ – प्रारंभ, शुरू । सिर जोर – जबरदस्त । अगन – अग्नि । झळ – लपट । त्रंबाळ – नगाड़ा । दहुं वळां – दोनों ओर । कळळ – कोलाहल । हूंकळां – घोड़ोंकी हिनहिनाहट; सेनाका कोलाहल । कराळां – भयंकर । धिक – प्रज्वलित हो कर । नाळां – तोपों, बन्दूकों । धुबै – प्रज्वलित होती है । वीज – बिजली । करड़क – ध्वनि विशेष । वरसाळां – वर्षा ऋतुएँ । धोमार धोम – पूर्ण धुंआ, आच्छादित । रज – धूलि । डंबर – समूह । चकि – चक्र । लथराक – कंपायमान । तिमराक – अंधेरा । चक्रवाक – चकवा ।

उभै तरफ ऊपड़ी[1], वाग तिण वार विड़ंगां।
अम्हौसम्हा सुर असुर, जुड़ै सर संभर[2] जंगां।
कसि कवांण[3] सुर कसे[4], पार वगतर[5] उर पंजर।
पमंगां हूं(त) भड़ पड़ै, जांण[6] ग्रह वाज[7] कबूतर[8]।
घण पड़े[9] धमक सेलां घटां, लह[10] सकत्ति[11] पत्र लोहियां[12]।
लोहियां[13] ऊक वाजी[14] धरा, रूक असल सीरोहियां[15]॥ ६१

अठै[16] जठै असि ओरि[17], लोह स्रीहथां लगाया।
सेलां मैंगळ साभि, घाय खग मुग्गळ[18] घाया।
सयदां सिर हंस स्रोण, जटी हूरां लहै जोगण।
त्रपत[19] होय इम तवै, तपौ स्रव[20] सिरै 'जसा'तण।
खगि[21] रद्द[22] हसन हुस्सेन खां, गजां धुजां विहंडै[23] 'गजौ'।
हाकलै भड़ां 'गजबंध' हरौ, इसी भांति जूटै 'अजौ'॥ ६२

---

१ ख. ग. उपड़ी। २ ख. ग. संभरि। ३ ख. कवांण। ४ ख. ग करै। ५ ख. वगतर। ६ ख. ग. जांणि। ७ ख. वाज। ८ ख. कवूतर। ९ ख. ग. पड़ै। १० ख. ग. लहै। ११ ख. ग. सकति। १२ ख. ग. लोहीयां। १३ ख. ग. घोहीयां। १४ ग. वागी। १५ ख. ग. सीरोहीयां। १६ ग. अजै। १७ ख. वोरि। १८ ख. ग. मूंगल। १९ ख. ग. त्रिपत। २० ख. श्रव। २१ ख. ग. पांगि। २२ ख. ग. रंद। २३ ग. विहंग्डे।

---

६१. वाग– लगाम। विड़ंगां – घोड़ों। अम्हौसम्हा – आमने सामने। सुर – हिन्दू। असुर – मुसलमान। जुड़ै – भिड़ते हैं। सर – तालाब, झील। संभर – सांभर। जंगां – युद्धों। पंजर – शरीर। पमंगां – घोड़ों। धमक – प्रहार। सेलां – भालों। घटां – शरीरों। पत्र – खप्पर। लोहियां – खूनका। ऊक – तेज धारा। रूक – तलवार। सीरोहियां – सिरोही देशकी बनी हुई।

६२. अठै… ओरि – इधर-उधर, जहां-तहां घोड़े झोंक कर। लोह – शस्त्र-प्रहार। स्रीहथां – खुदके हाथसे। मैंगळ – हाथी। साभि – संहार करके। घाया – संहार किये, मार डाले। सयदां – यवनों, मुसलमानों। हंस – प्राण। स्रोण – शोणित, रक्त। जटी – महादेव। जोगण – रणचंडी, रणयोगिनी। त्रपत – तृप्त, संतुष्ठित। तवै – कहते हैं। तपौ – ऐश्वर्यवान हो, राज्य-वैभवयुक्त हो। जसातणा – महाराजा जसवंतसिंहका पुत्र। खगि – तलवारसे। रद्द – नाश, संहार। हसन हुस्सेन खां – सैयद हसनअलीखां और हुसेन खाँ नामक यवन सेनापति जो इतिहासमें सैयद-बंधुओंके नामसे प्रसिद्ध है। गजौ – महाराजा गजसिंहजीका वंशज। हाकलै – उत्तेजित करता है। गजबंध – महाराजा गजसिंह। हरौ – वंशज। जूटै – भिड़ता है। अजौ – महाराजा अजीतसिंह।

छंद विराज

जुड़ै[1] भूप जंगं, रसै रोद्र रंगं ।
सयद्दांण सूरं, किलम्मं[2] करूरं ।। ९३
कूरंमं[3] कमंधं[4], बिनै[5] नेत बंधं[6] ।
छछोहं[7] छड़ाळां, झटां खाग झाळां ।। ९४
वहै लोह[8] वंका[9], घटां[10] ह्वै[11] घणंका ।
बिनै[12] तीर बारा[13], धड़ां[14] स्रोण धारा ।। ९५
करं[15] पाव केकं[16], उडै धू अनेकं[17] ।
करै ले कराळा, महारुद्र[18] माळा ।। ९६
विनां[19] धू विहंडं[20], सचै[21] जंग संडं[22] ।
कढ़ी खाग कोपै, जिसा राह जोपै ।। ९७
हुवै लोह हत्थं[23], बिन्है[24] लूथ बत्थं[25] ।
जड़ै[26] जंमदाढ़ं[27], करं[28] पार काढ़ं ।। ९८

---

१ ख. ग. जोडै । २ ख. किलम्मा । ग. किलम्मां । ३ ख. ग. कूरम्मां । ४ ख. ग. कमंधां । ५ ख. विन्हे । ग. विन्हैं । ६ ख. वंधं । ग. बंधां । ७ ख. ग. छछोहां । ८ ख. होल । ९ ग. बंका । १० ख. ग. घंटा । ११ ग. हुवै । १२ ख. विन्हे । ग. बीन्है । १३ ख. वारा । १४ ख. धडा । १५ ख. करः । १६ ख. ग. केकां । १७ ख. ग. अनेकां । १८ ग. माहारुद्र । १९ ख. विना । ग. विवां । २० ख. ग. विहंडां । २१ ख. ग. रचै । २२ ख. रूडां । ग. रुंडां । २३ ख. ग. हत्थां । २४ ख. विन्हे । ग. विन्है । २५ ख. वथां । ग. वत्थां । २६ ग. तजै । २७ ख. जमः दाढ़ं । ग. जसः दाढ़ं । २८ ख. ग. करां ।

---

९३. जुड़ै – भिड़ते हैं । रसै रोद्र रंगं – रौद्र रसमें रंगे हुए हैं । सयद्दांण – सैयद, यवन, सैयद-बंधु । सूरं – शूरवीर । किलम्मं – यवन, मुसलमान । करूरं – भयंकर ।

९४. कूरंमं – कछवाह वंश । कमंधं – राठौड़ वंश । बिनै – दोनों । नेत बंधं – ध्वजाधारी, योद्धा । छछोहं – तेज । छड़ाळां – भाला । झटां – प्रहारों । झाळां – आग, लपट ।

९५. लोह – अस्त्र-शस्त्र । घटां – शरीर । घणंका – ध्वनि विशेष । बारा – छेद, बाहर । धड़ां – शरीरों । स्रोण – खून, रक्त ।

९६. करं – हाथ । धू – मस्तक, शिर । कराळा – भयंकर । माळा – मुंडमाला ।

९७. विहंडं – नाश, ध्वंस । संडं – वीर, रुंड । जोपै – जोशमें आते हैं ।

९८. बिन्है – दोनों । लूथ बत्थं – गुत्थमगुत्थ । जंमदाढ़ं – कटार विशेष ।

लगां लोह लूटै, जमी सीस[1] जूटै ।
पड़ै[2] स्रोण[3] पांणै, जगा[4] जेठ जांणै[5] ॥ ९९

परी कंत पावै, अनै हूर आवै
मंडै[6] कंठमाळा, वरै[7] विक्कराळा[8] ॥ १००

त्रुटै घाव तुंडं, भिड़ै रुंडमुंडं[9]
लड़ै फौज लाडा, उडै लोह आडा ॥ १०१

भंभारा भभक्कै, चौरंगा उचक्कै[10] ।
करै वीर हक्कं, छके जांणि छक्कं ॥ १०२

धुबै खाग धारू, महासूर[11] मारू ।
खिलै[12] झाट खंडे, वयंडं[13] विहंडै ॥ १०३

तई कुंभ[14] तूटा[15], छिले स्रोण छूटा[16] ।
मही रंग मट्टा, फबै[17] जांणि फुट्टा[18] ॥ १०४

---

१ ग. सीसि । २ ख. पडे । ३ ख. श्रोण । ग. श्रौण । ४ ख. ग. जग्ग । ५ ख. जांणे । ६ ख. मंडे । ७ ख. ग. वरैं । ८ ख. ग. विकराळा । ९ ख. ग. रुंडभिडं । १० ख. ग. उच्चकै । ११ ख. ग. माहासूर । १२ ख. ग. पेल्है । १३ ख. ग. वयडां । १४ क. कुंभ । १५ ख. ग. तुट्टां । १६ ख. ग. छुट्टा । १७ ख. फवे । ग. फवे । १८ ख. ग. फट्टा ।

---

९९. स्रोण – खून, रक्त । पांणै – (?) ।

१००. परी – अप्सरा । कंत – पति । अनै – और । हूर – अप्सरा । वरै – वरण करती है । विक्कराळा – भयंकर ।

१०१. तुंडं – मस्तक, मुख । भिड़ै – युद्ध करते हैं । रुंडमुंड – विना मस्तकका धड़, कबंध । लाडा – योद्धा, वीर । उडै आडा – प्रहार होते हैं ।

१०२ भंभारा – छेद, घाव । भभक्कै – उभड़ते हैं । चौरंगा – विना हाथ-पैर और शिरका धड़ । उचक्कै – कूदते हैं । वीर हक्कं – वीर ध्वनि । छके – मस्त ।

१०३. धुबै – तेज क्रोधमें होते हैं, तेज युद्ध होता है । मारू – राठौड़ । झाट – प्रहार । वयंडं – हाथी । विहंडै – मारते हैं ।

१०४. कुंभ – हाथीके सिरके दोनों ओर ऊपर उभड़े हुए भाग । छिले – उमड़ गया, छलछला कर । स्रोण – शोणित । मही – पृथ्वी । मट्टा – बड़ा मिट्टीका पात्र, मटका । फबै – शोभा देते हैं । फुट्टा – टूट गये ।

खगां धार खूटै[1], तई संड[2] तूटै ।
परां नाग पाए[3], जांणै उड्ड[4] जाए[5] ॥ १०५
पड़ै पक्खराळा[6], तड़प्फै[7] उताळा ।
जळां[8] तौछ[9] जेहा, ओपै[10] मच्छ एहा[11] ॥ १०६
किलक्कै हकारै, काळिक्का[12] डकारै ।
हसै रिक्ख हासं, रचै वीर[13] रासं ॥ १०७
तुरी वाग तांणं[14], भाळै खेल भांणं ।
चौरंगं[15] सचूंपौ[16], कमंधां[17] स कूंपौ ॥ १०८
सयद्दांण सारां, धुबै[18] खाग धारां ।
कियौ[19] रूप केहौ, जड़ा रुद्र जेहौ ॥ १०९
सुतं सच्छळेसं[20], विढ़ै काळवेसं ।
अरी थाट आवै, घणा लोह घावै ॥ ११०
तई सीस[21] तूटै[22], जई भींच[23] जूटै[24] ।
सभै रोद[25] सूरं[26], पड़ै[27] लोह पूरं[28] ॥ १११

---

१ ख. घुहै । ग. घुट्टै । २ ख. सुंड । ग. सुंडि । ३ ग. पाऐ । ४ ख. उड । ग. ऊड । ५ ग. जाऐ । ६ ख. ग. पष्षराळा । ७ ख. ग. तड़फै । ८ ख. ग. जळं । ९ ख. ग. तोछ । १० ख. ग. वोपै । ११ ग. ऐहा । १२ ख. कालिका । १३ ग. बीर । १४ ख. ग. ताणं । १५ ख. ग. चौरंगा । १६ ख. ग. सचूंपौ । १७ ख. ग. कमंधे । १८ ख. ग. धुबै । १९ ख. कीयां । ग. कीया । २० ख. ग. सव्वलेसं । २१ ग. सीसि । २२ ख. ग. तुट्टै । २३ ख. ग. भीम । २४ ख. ग. जुट्टै । २५ ख. ग. रौद । २६ ख. ग. सूरां । २७ ख. ग. पड़े । २८ ख. ग. पूरां ।

---

१०५. खूटै – प्रहार होता है । संड – हाथीकी सूंड । परां – पांखें । नाग – सर्प । जांणै – मानों ।

१०६. पक्खराळा – कवचधारी । तड़प्फै – तड़फड़ाते हैं । उताळा – तेज । जळां–पानी । तौछ – थोड़ा, कम । ओपै – शोभा देते हैं । मच्छ – मछली ।

१०७. किलक्कै – किलकारी मारती है । रिक्ख – नारद ऋषि ।

१०८. तुरी – घोड़ा । भाळै – देखता है । भांण – सूर्य । चौरंग – युद्ध । सचूंपौ – चतुर, दक्ष । कूंपौ – कूंपावत शाखाका राठौड़ ।

१०९. सयद्दांण – यवन, सैयद । धुबै – संहार करता है । जड़ा – जटा । रुद्र – महादेव । जेहौ – जैसा ।

११०. विढ़ै – युद्ध करता है । काळवेसं – काल, यमराज । घावै – संहार करता है ।

१११. तई – उसके । जई – जिससे । भींच – योद्धा । जूटै – भिड़ते हैं । रोद – यवन ।

अपच्छं[1] उमाही, वरंमाळ वाही ।
झड़ै[2] घाव[3] झल्लै, हुवै[4] हंस हल्लै ॥ ११२

हुवै[5] दिव्यदेहा, सुरत्री सनेहा ।
विवांणं[6] विराजै, गयं[7] स्रग्गि[8] गाजै[9] ॥ ११३

'अजै' जेण[10] वारां, हकाले हजारां ।
लगी मांहि लग्गी, वधे खाग वग्गी ॥ ११४

मारू फील मंता, दियै[11] पाव दंता ।
कड़क्कै[12] कपाळां, चढ़ै[13] वीर चाळां ॥ ११५

हुवै[14] जंग हौदां, रचै[15] जंग रौदां ।
गहै[16] क्रुंद[17] गाढ़ं, जड़ै[18] जंमदाढ़ं[19] ॥ ११६

सयद्दां संघारै, धरा लोथ[20] धारै[21] ।
विढ़े[22] सयद[23] वीता, जुड़े भूप जीता ॥ ११७

---

१ ख. ग. अपछ्रा । २ ख. ग. झड़े । ३ ख. ग. घाट । ४ ख. हुवे । ५ ग. हुवो । ६ ख. ग. विवाणां । ७ ख. गया । ग. गयो । ८ ख. ग. श्रगि । ९ ख. ग. गाजे । १० ख. ग. जेणि । ११ ख. ग. दीयै । १२ ख. ग. कड़के । १३ ख. वढ़े । ग. चढ़े । १४ ग. हुवे । १५ ख. ग. रचे । १६ ख. ग्रहे । ग. ग्रह । १७ ख. कांद । ग. कौंद । १८ ख. ग. जड़े । १९ ख. ग. जम्मदाढ़ं । २० ख. ग. लोथि । २१ ख. ग. धारे । २२ ख. विढ़ै । २३ ख. ग. सैद ।

---

११२. अपच्छं – अप्सरा । उमाही – उत्कंठित । झड़ै – वीरगति प्राप्त होते हैं । हंस – प्राण । हल्लै – चलते हैं ।

११३. सुरत्री – अप्सरा । विवांणं – वायुयान । विराजै – बैठते हैं । स्रगि – स्वर्ग ।

११४. अजै – महाराजा अजीतसिंह । हकाले – उत्साहित किये । मांहि – में । लग्गी – लग गई । वग्गी – प्रहार हुआ ।

११५. मारू – राठौड़ । फील – हाथी । मंता – मस्त, मस्तक । दंता – दांत । कड़क्कै – ध्वनि विशेष होती है । वीर चाळां – युद्धों ।

११६. जंग – युद्ध । हौदां – अम्मारियों । रौदां – यवनों, मुसलमानों ।

११७. सयद्दां – यवनों, सैयदों । संघारै – संहार करता है । धरा – पृथ्वी । लोथ – लाश । विढ़े – युद्ध कर के । वीता – व्यतीत हो गये, वीर गति प्राप्त हुए ।

कवित्त—के कूरम कमंधरा, विहंड घायल जिण वारां।
विखम इकहथी वही, पड़े खळ थाट अपारां।
हर अपछर रिख हूर, चंड खेचर ग्रह[1] भूचर।
सिरवर कौतिग सु वर, रुधिर पळ नूत[2] मिळ डंबर।
'जैसाह' सहित[3] नौबति[4] बजवि[5], गुमर धार[6] दूजौ गजौ।
सांभरी[7] खेत जसवंततण[8], अभंग एम[9] जीतौ अजौ॥ ११८

बादसाह बहादुरसाहरौ महाराजा अजीतसिंहसूं कुपित होणौ अर महाराजारौ दिल्लीरी सलतनतमें उथल-पुथल करणौ

सयदां(ण) इम साजिया[10], उडे वाका अणथाहै[11]।
सुणे बहादर[12] साह, मंगळ प्रजळे उर माहै[13]।
बडा[14] अमीर बुलाय, साह भेजे[15] तिण सम्मै।
'अजा' 'जसा' दिस असुर, मुहम[16] नंह को आंगम्मै[17]।
भेजै अमीर असपति भिड़ण, वरियांमां[18] दिस[19] दळ वडै[20]।
दै नहीं हाथ पांनां रवद[21], असतीफा दे औछड़ै॥ ११९

---

१ ख. गृह। ग. गृभ्र। २ ख. ग. नृत। ३ ग. सहति। ४ ख. ग. नौवंति। ५ ख. ग. वजवि। ६ ख. ग. धारि। ७ ख. ग. संभरी। ८ ख. ग. सुतण। ९ ग. ऐम। १० ख. ग. साझीया। ११ ख. ग. अणथाहे। १२ ख. वहादर। ग. बाहादर। १३ ख. ग. माहे। १४ ख. ग. वडा। १५ ख. ग. भेजै। १६ ख. ग. मुहुम। १७ ख. आगंम्मं। ग. आंगंम्मैं। १८ ख. ग. वरीयांमां। १९ ख. ग. दिसि। २० ख. वलै। २१ ख. दवद।

---

११८. कूरम—कछवाह। विहंड—संहार कर के। इकहथी—एक प्रकारका शस्त्र-विशेष, छोटी तलवार। थाट—सेना, दल, समूह। हर—महादेव। अपछर—अप्सरा। रिख—नारद ऋषि। हूर—परी। चंड—युद्धप्रिय योगिनी। खेचर—आकाशचारी। भूचर—भूमि पर विचरण करने वाले। सिरवर—श्री वर। कौतिग—कौतूहल। सु वर—श्रेष्ठ, अच्छा। पळ—मांस। डंबर—समूह। जैसाह—सवाई राजा जयसिंह। गुमर—गर्व। दूजौ—दूसरा। गजौ—महाराजा गजसिंह। सांभरी—सांभर। जसवंततण—जसवंतसिंहका पुत्र। अजौ—महाराजा अजीतसिंह।

११९. सयदांण—यवन, मुसलमान, सैयद। साजिया—संहार किया। उडे—फैल गये। वाका—घटनाएँ। अणथाहै—अपार। मंगळ—अग्नि, आग। प्रजळ—प्रज्वलित हो कर। माहै—में। सम्मै—समय। अजा—महाराजा अजीतसिंह। जसा—सवाई राजा जयसिंह। मुहम—मुहिम्म, युद्ध। आंगम्मै—साहस कर सकता है। भिड़ण—युद्ध करनेको। वरियांमां—श्रेष्ठ। पांनां—पानका वीड़ा। रवद—यवन, मुसलमान। औछड़ै—पीछे हटते हैं।

प्रजळै उर पतिसाह, दाह औरिस[१] अति दाझै[२] ।
मनै न[३] (हि) हुकम अमीर, साह मनसूवा[४] साझै[५] ।
दहुंवां दिस[६] लिख[७] दिया[८], साह फुरमांण सकाजा ।
उतन दुरंग आपणा[९], रखौ[१०] राजा महाराजा[११]* ।
इम लिखे साह हुय[१२] दीन[१३] अति, मिटै[१४] दिली पौरिस[१५] मजा ।
इम सुणे राह उचरै उभै, वाह तेज राजा 'अजा' ॥ १२०

नीसांणी हंसगति

इम पतिसाह नमाय लीध इळ, एहा[१६] भूप[१७] 'अजीत' उजागर ।
डंडे माल लिया[१८] डीडवांणा[१९], भोगवि माळ लिया[२०] सर संभर ।
दावागरां साल पोह[२१] दारुण[२२], दिल्लेसुरांतणौ[२३] दावागर ।
जम कैळास दिसा नह जावै, इम जोधांण न आवै आसुर[२४] ॥ १२१
'अजमल' तेज दिलेसां ऊपरि, वरखै[२५] ग्रीखम भांण विहंतर[२६] ।
आठ पहर दहलै[२७] असपत्ती, कमधज तोलै दिन्न किरंमर ।

---

१ ख. वोरिस । ग. वौरिस । २ ख. दाझे । ३ ख. नह । ग. न । ४ ख. मनसूवा । ५ ग. सझि । ६ ख. ग. दिसि । ७ ख. ग. लिपि । ८ ख. ग. दीया । ९ ग. आपणां । १० ग. राषौ । ११ ग. माहाराजा ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

१२ ख. होय । ग. हौय । १३ ख. दीण । १४ ख. ग. मिटे । १५ ख. ग. पौरसि । १६ ग. ऐहा । १७ ख. भूत । १८ ख. ग. लीया । १९ ख. ग. डिडवाणां । २० ख. ग. लीया । २१ ख. ग. पौहौ । २२ ख. ग. दारण । २३ ख. ग. दिलेस्वरांतणौ । २४ ग. असुर । २५ ख. ग. वरतै । २६ ख. विहतरि । ग. विहत्तर । २७ ग. दहले ।

---

१२०. प्रजळै – जलता है । दाह – जलन । औरिस – उर, हृदय । मनसूवा – विचार । साझै – रचता है । दहुंवां – दोनों । साह – बादशाह । फुरमांण – आज्ञा-पत्र । उतन – वतन, जन्मभूमि । दुरंग – दुर्ग, गढ़ । अजा – महाराजा अजीतसिंह ।

१२१. सर संभर – सांभर झील । दावागरां – शत्रु । साल – शल्य । पोह – राजा । दिल्लेसुरांतणौ – बादशाहोंको । जम – यमराज । आसुर – यवन, मुसलमान ।

१२२. अजमल – महाराजा अजीतसिंह । दिलेसां – दिल्लीशों, बादशाहों । वरखै – बरसता है । विहंतर – भयंकर, अधिक । दहलै – भयभीत होता है । तोलै – प्रहार हेतु शस्त्र उठाता है । दिन्न – दिन । किरंमर – तलवार ।

'अजमल' फौज जदिन सझि आवै, धावै फौज तदिन साहां धर।
तखत[1] वैठि[2] छत्र चमर धरैं तदि, चगथौ[3] तखत तजै छत्र चंमर[4] ॥ १२२
मूंछां वळ[5] घालै[6] महाराजा[7], घूंघट घालै[8] तांम दिलीधर।
एहा[9] दूठ नरेस 'अजीता', कुळ दीता दळ पूर भयंकर।
जिण बहु[10] वार मुगळ दळ जीता, प्रजळे[11] तेणि दिलेस्वर पंजर।
असपति सोच पड़े पीळा अंगि[12], भिळ[13] वहु[14] सोच पड़ै[15] मुख भंमर[16] ॥
खिलवति[17] करै न[18] खिलवति खांनै, तसबी[19] खांनै अजू न तंतर।
आलंमीन[20] रवील[21] न उचारै[22], सझै न न्याव अदालित[23] सध्धर[24]।
धरै न जोम चमर[25] छत्रधारै, अंब[26] दिवांण[27] सझै न अबसर[28]।
अंबखास पतिसाह न आवै, अंग[29] पौसाक न पहरै अंतर[30] ॥ १२४
नौख न जौख करै नव रोजै[31], जौख[32] न भूखण धरै जवाहर[33]।
दसकत[34] करै न मिळै दिवांणां[35], अरजी फरज[36] मतालब[37] ऊपर।

---

१ ख. ग. तषति। २ ख. वैठि। ३ ख. ग. चगथौ। ४ ख. ग. चम्मर। ५ ग. वळ। ६ ग घातै। ७ ख. ग. माहाराजा। ८ ख. ग. घातै। ९ ग. ऐहा। १० ख. वौहौ। ग. वहौ। ११ ख. ग. प्रजलै। १२ ख. ग. अंग। १३ ख. ग. भिलि। १४ ख. वहौ। ग. बहौं। १५ ख. पडे। १६ ख. भम्मर। ग. भमर। १७ ख. ग. षिलवति। १८ ख. त। १९ ख. ग. तसवी। २० ख. ग. आलमीन। २१ ख. ग. रविल। २२ ख. ग. उच्चारै। २३ ख. ग. अदालति। २४ ख. सच्चर। ग. सव्वर। २५ ख. चम्मर। २६ ख. ग. आंव। २७ ग. दीवांण। २८ ख. अवसर। ग. अव-स्सर। २९ ख. अमि। ग. अंगि। ३० ख. अतर। ग. अत्तर। ३१ ग. रौजै। ३२ क. जोप। ३३ ख. ग. जवाहर। ३४ ख. दसकति। ३५ ग. दीवांणां। ३६ ख. ग. फरंद। ३७ ख. मतावल।

---

१२२. जदिन – जिस दिन। सझि – कटिवद्ध हो कर। तदिन – उस दिन। चगथौ – चगताई वंशका, मुगल बादशाह।

१२३. दूठ – जबरदस्त, शक्तिशाली। अजीता – महाराजा अजीतसिंह। कुळ दीता – कुल-आदित्य, सूर्यवंशी। दिलेस्वर – बादशाह। पंजर – शरीर। भंमर – श्याम, काला।

१२४. खिलवति – हंसी-मजाक, मखौल। खिलवति खांनै – सभा, समाज, विलासगृह। तसबी खांनै = तस्वीहखान – जप-माला जपनेका स्थान। अजू – वजूअ, नमाजसे पहले हाथ-पैर धोना, पवित्र होना। तंतर – (?)। आलंमीन रवील – 'रबीउल् आलमीन्' ये कलमे के शब्द हैं। न्याव – न्याय। अदालित – न्यायालय, कचहरी। सध्धर – दृढ़, पक्का। जोम – जोश। अंब दिवांण – आम दीवान। अंबखास – आमखास। पतिसाह – बादशाह।

१२५. नौख – नवीन। जौख – आनन्द, खुशी, हर्ष। नव रोजै – नो रोजके त्यौहार में, जश्न में। फरज – फर्द (आज्ञा)। मतालब – मतालिब, मतलबका बहुवचन जिसका अर्थ वांछित, मनोनीत अर्थात् वसूल करने योग्य रकम। अर्जी, फरज (फ़र्द) और मतालिव ये तीन प्रकारके कागज पेश होते थे। उन पर हस्ताक्षर नहीं करता था।

राग न रंग उमंग न राजस, हौज न बाग फुंहार न हुन्नर।
ह्वे असवार सिकार न हालत, पाठ कुरांन न पीर पैकंवर ॥ १२५

अंग संनिपात[1] ज्यंहीं[2] हुय[3] आळस[4], आठूं[5] पहर[6] रहै घर अंदर।
विरहा अगनि जळै चंदवदनी[7], हुरमां कदे[8] न आवै हाजर।
इम 'अजमाल'तणै भय असपति, औरस[9] अगनि जळै[10] उर[11] अंतर[12]।
सुख करि नींद कदे[13] नहिं सूता, दुख मंझि बीता साह बहादर ॥ १२६

सझि दळ पूर आए[14] साहिजादा[15], धोखळ[16] धोम[17] वधे[18] दिल्ली धर।
जोगणि दिली तजे[19] वर जूनां, वांनै चढ़ी नवा धारण वर।
देखि कटाच्छ[20] लड़े साहिजादा, जोबन[21] मसत कांम वट निज्जर[22]।
वढ़ि[23] खग धार अवर सव[24] बीता, जीता मौजदीन दळ[25] जाहर[26] ॥ १२७

---

१ ख. सझि। २ ख. ग. जही। ३ ख. ग. होई। ४ ग. आलम। ५ ख. आठ। ६ ख. पौहौर। ग. पहौर। ७ ग. चंदवदनी। ८ ख. कदै। ९ ग. औरिस। १० ख. ग. जले। ११ ग. उरि। १२ ख. अंतरि। १३ ख. कदै। १४ ख. अये। ग. आऐ। १५ ग. साहिजादो। १६ ख. धौखल। ग. धौंखल। १७ ग. धोम। १८ ख. वधै। १९ ग. तजै। २० ख. ग. कटाछि। २१ ख. ग. जोवन। २२ ख. नज्जर। ग. नझ्झर। २३ ख. ग वढ़ि। २४ ख. ग. सह। २५ ख. धम्म। ग. धम। २६ ख. ग. जग्गर।

---

१२५. पीर – धर्म-गुरु मुर्शिद, बूढ़ा। पैकंवर – पैगंवर, ईश्वरका दूत।

१२६. संनिपात – उन्मत्तता, पागलपन। विरहा अगनि – विरहाग्नि। औरस – हृदय की। साह बहादर – बहादुरशाह।

१२७. पूर – पूर्ण, पूरा। साहिजादा – शाहजादा। धोखळ – युद्ध, उपद्रव। धोम – अग्नि। जोगणि – योगिनी, रणप्रिय, चंडीरूपी। वर – पति। जूनां – पुराना, प्राचीन। वांनै = वांनौ – विवाहसे पूर्व की जाने वाली रस्म विशेष जिसमें वर-वधूको अपने-अपने कुटुम्बी-जन निमंत्रण दे कर उत्तम और पौष्टिक भोजन कराते हैं, मंगल गीत गाते हैं और प्रसन्नता प्रकट करते हैं। कटाच्छ – कटाक्ष। जोबन – यौवन। मसत – उन्मत्त, मस्त। कांम – कामदेव, अनंग। मौजदीन – बहादुरशाहका पुत्र मोइजुद्दीन जो अपने भाइयोंको मार कर वि. सं. १७६९ की चैत्र सुदि १५ पूर्णिमा (तदनुसार ई.सं. १७१२ की १० अप्रेल)को दिल्लीके तख्त पर बादशाह बन कर बैठा।

जीता[1] मौजदीन दळ जीता, कैद करे तकबीर[2] करद्दर* ।
असपति फरकसेर तिण अवसर[3], वींद जुवांन[4] हुवा दिल्लीवर[5] ।
अबदल हसनअली अजराइल[6], मारे[7] जुलफगार तै मौसर ।
एक[8] उजीर हुवा असपत्ती, इक उमराव अमीरल अज्जर[9] ।। १२८
अवर अमीर भूपजां आगळि, करै सिलांम[10] दहूं[11] जोड़े कर ।
सयदां[12] विदा किया[13] गज सिक्का[14], धर अन[15] लीध न लीध मुरद्धर[16] ।
अवर नरेस नमे असपत्ती, एक[17] 'अजीत' नमे नह अड्डर ।
'अजमलि'[18] नाटसाळ असपतियां, ऊगा तदिनहूंत जम[19] ऊधर[20] ।। १२९
जिण 'अवरंग'तणा दळ जीता, आतम सकति वजाई[21] असमर[22] ।
मारि बहादर[23] साह[24] मनाया, जोरै मुलक लिया[25] जोरावर ।

---

१ ख. ग. जुध करि । २ ख. तकवीर ।

*निम्न पंक्तियां ख. और ग. प्रतियोंमें हैं, किन्तु उपरोक्त क. प्रतिमें नहीं हैं—

हरवल सैद कीयां दष्षण हूं, आया फरकसेर तै ऊपर ।
आगलि हसन अली अवदुल्ला, विहुं दारुण तेग वहादर ।

३ ख. औसरि । ग. औसर । ४ ख. जवा । ग. जवांन । ५ ग. दिल्लीवर । ६ ख. ग. अजरायल । ७ ग. मारै । ८ ग. ऐक । ९ ग. अजर । १० ग. सलांम । ११ ख. विहूं । ग. विहूं । १२ क. ख. सदां । १३ ख. ग. कीया । १४ ख. सिका । १५ ख. ग. अनि । १६ ख. मुरधर । १७ ग. ऐक । १८ ख. ग. अजमल । १९ ख. ग. धर । २० ख. ग. उद्धर । २१ ख. ग. वजाय । २२ ख. ग. असंम्मर । २३ ख. वहादर । ग. वाहादर । २४ ग. साहि । २५ ख. ग. लीया ।

---

१२८. मौजदीन – मोइजुद्दीन जहांदार शाह । तकवीर – ईश्वरकी प्रशंसा (यहाँ सहायतार्थ ठीक बैठता है) तकब्बुर, अभिमान, गर्व । करद्दर – (?) । फरकसेर = फर्रुखसियर – इसने भी मोइजुद्दीनको कैद कर लिया था और स्वयं दिल्लीके सिंहासन पर वि. सं. १७६९ की माघ वदि १०को बादशाह बन कर बैठ गया था । अबदल – अब्दुल्लाखां । अजराइल – जबरदस्त, शक्तिशाली । जुलफगार – जुल्फकार नामक यवन । मौसर – अवसर, मौका । उजीर – वजीर । असपत्ती – बादशाह । अमीरल – अमीरोंका सरदार । अज्जर = अमीर उल् अज़र–बड़े रुतबे वाला, अमीर ।

१२९. अवर – अवर, अन्य । अमीर – सरदार । आगळि – अगाड़ी, आगे । जोड़े कर – करबद्ध हो कर । सयदां – सैयद भाई । अजीत – महाराजा अजीतसिंह । अड्डर – निर्भय । अजमलि – महाराजा अजीतसिंह । नाटसाळ – शल्य रूप, वीर ।

१३०. अवरंग – बादशाह औरंगजेब । असमर – तलवार । जोरावर – शक्तिशाली ।

'अजमलि'[1]तणी एम[2] वणि[3] आई, साहांहूंत[4] करंतां सम्मर।
आप करै खातर सुज[5] आवै, खूंदालमां न आंणै खातर ॥ १३०

मोहकम[6] मारि लिया[7] दिल्ली मझि, गिणिया[8] नहीं दिलेस्वर गुम्मर।
इण विध[9] देखि गरूर 'अजम्मल'[10], असपति कोप कियौ[11] पहु[12] ऊपर[13]।
सझि हसनली लार बाईसी[14], कीधा[15] विदा सतेज लसक्कर।
आया हसनअली अजरायल, जाजुळमांन भयंकर जज्जर[16] ॥ १३१

---

१ ख. ग. अजमल। २ ग. ऐम। ३ ख. वणी। ग. वणि। ४ ख. हुंत। ग. हुंता। ५ ख. ग. सुजि। ६ ख. ग. मौहोकम। ७ ख. ग. लीया। ८ ख. ग. विणीया। ९ ख. ग. विधि। १० ख. ग. अजमल। ११ ख. ग. कीया। १२ ख. ग. पहो। १३ ख. ऊपरि। १४ ख. ग. वाईसी। १५ ख. कीध। १६ ग. जज्झर।

---

१३०. सम्मर – युद्ध। खातर – इच्छा, मर्जी। सुज – वह। खूंदालमां – बादशाहों। खातर – विचार, ध्यान।

१३१. मोहकम – यह नागौरके राव इन्द्रसिंहका पुत्र था। बादशाह फर्रुखसियर राव इन्द्रसिंहकी रुख रखता था, अतः महाराजा अजीतसिंहजीने जब मोहकमसिंह नागौरसे बादशाह फर्रुखसियरसे मिलने दिल्ली गया था तब भाटी अमरसिंह केसोदासोत, राठौड़ अमरसिंह नाथावत, कर्णसिंह विजैसिंहोत (थोब) एवं राठौड़ दुर्जनसिंह सबलसिंहोत, जोधा (पाटोदी)को बीस-पच्चीस सवारोंके साथ उसको मारने के लिए भेजा। वे व्यापारियोंके रूपमें दिल्ली पहुँचे और जब एक दिन कुंवर मोहकमसिंह संध्या समय किसी नवाबके यहांसे मातमपुर्सी कर के लौट रहा था तब इन लोगोंने उसे मार्गमें ही मार डाला। —देखो महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीराचंद ओझा कृत जोधपुर राज्यका इतिहास, द्वितीय खंड, पृ. ५५५। दिलेस्वर – दिल्लीश्वर, बादशाह। गुम्मर – शक्ति, बल, गर्व। गरूर – गर्व, अभिमान। अजम्मल – महाराजा अजीतसिंह। पहु – राजा। सझि – सुसज्जित कर, तैयार कर। हसनली – सैयद हुसेन अलीखां। वि.वि. – जब महाराजा अजीतसिंहके भेजे हुए योद्धाओंने राव इन्द्रसिंहके कुंवर मोहकमसिंहको मार डाला तो फर्रुखसियर बहुत कुपित हुआ और उसने बड़ी सेना दे कर मारवाड़ पर सैयद हुसेन अलीखांको भेजा था। यह घटना वि सं १७७० पौष सुदि प्रतिपदा की है। —देखो महामहोपाध्याय पं. गौरीशंकर हीराचंद ओझा कृत जोधपुर राज्यका इतिहास, द्वितीय खंड पृ० ५५६। बाईसी – सेना, फौज जिसमें बाईस सरदार या अफसर होते थे। अजरायल – जबरदस्त। जाजुळमांन – जाज्वल्यमान। जज्जर – यमराज।

'अजमल' विदा कियौ[1] जिण औसरि[2] धरि दळ पूर 'अभौ' पाटोधर।
'अभमल' मिळे हसनली अणभंग, साइत मज्झि[3] फिरै[4] घैसाहर[5]।
सू-वस[6] राखि मुलक न सामंद, दळ सामंद मोड़ै[7] दावागर[8]।
'अभमल' उभळ दळां सझि आयौ, नर[9] सिणगार[10] जोगणी नग्गर॥ १३२

मिळिया[11] असपतिहूंत 'अभैमल', असपति कुरब किया अ(प)रंपर।
व्रवि सिरपाव तुरी गज व्रविया[12], खग जमदाढ़ जड़ित नग[13] खंजर[14]।
मनसप[15] पंचहजारी समपे, परठे कुरब[16] राह दो[17] ऊपर।
इण विध[18] विदा किया[19] असपत्ती, क्रांमति 'अभपती' सुजि संकर॥ १३३

झळहळ रती भुजां भर झल्ले, हल्ले उतन[20] नरेस 'जसाहर'।
आयौ जोधदुरंग ऊमहियां[21], डहियां[22] फौज गजां धज डंबर[23]।

---

१ ख. ग. कीयौ। २ क. औसर। ग. उसरि। ३ ख. मझि। ग. मझिझ। ४ ख. ग. फिरे। ५ ख. ग. घांसाहर। ६ ख. ग. सूव। ७ ख. मोडे। ८ ख. दीवागर। ९ ख. ग. नरां। १० ख. ग. सिंगार। ११ ख. ग. मिलीया। १२ ख. ग. व्रवीया। १३ ग. जुग। १४ ख. षंज्जर। ग. षंझर। १५ ख. मुनसप। ग. मुनसुप। १६ ख. कुरव। १७ ख. ग. दोय। १८ ख. ग. विधि। १९ ख. ग. कीया। २० ग. उतनि। २१ ख. ग. ऊमहीयां। २२ ख. ग. डहीयां। २३ ख. डंव्वर। ग. डंव्वर।

---

१३२. अजमल – महाराजा अजीतसिंह। औसरि – अवसर, मौका। दळ – सेना। पूर – पूर्ण। अभौ – अभयसिंह। पाटोधर – युवराज, पट्टाधिकारी। अभमल – अभयसिंह। अणभंग – वीर, योद्धा। साइत – क्षण भरका समय। मज्झि – मध्य, में। घैसाहर – सेना, दल। सू-वस – कुशल, निष्कंटक। सांमंद – समुद्र। दावागर – शत्रु। उभळ – उमड़ कर। नर सिणगार – नर-श्रेष्ठ, नर-पुंगव। जोगणी नग्गर – दिल्ली शहर।

१३३. अभैमल – महाराजकुमार अभयसिंह। कुरब – मान, सम्मान। अ(प)रंपर – अपार, असीम। व्रवि – दे कर। तुरी – घोड़ा। व्रविया – दिये, प्रदान किये। परठे – प्रतिष्ठा कर के। राह – संप्रदाय। ऊपर – विशेष। क्रांमति – कांति, दीप्ति, तेज। अभपति – महाराजकुमार अभयसिंह। सुजि – मानों, जैसे। संकर (?)

१३४. झळहळ – देदीप्यमान। रती – कांति, दीप्ति, तेज। भर – उत्तरदायित्व, जवाबदेह, जिम्मेदारी। झल्ले – धारण कर के। उतन – वतन, जन्मभूमि। जसाहर – महाराजा जसवंतसिंहका पौत्र, वंशज। जोधदुरंग – जोधपुरका दुर्ग। ऊमहियां – उत्कंठित, जोशपूर्ण। डहियां – लिए हुए। गजां – हाथियों। धज – घोड़ा। डंबर – समूह।

जाय 'अभै' 'अगजीत' जुहारे, चक्रवत्ती[1] होतां सिर चंमर[2] ।
मिळे 'अजीत' सनेह 'अभैमल', 'गजपति' दुवै धरे वहु[3] गुम्मर ॥ १३४
देखि 'अभैमल' तेज जिकै दिन[4], आलम एह[5] कथै[6] कथ उच्चर ।
सूरजवंस 'अजीत'तणौ सुत, सूरजवंसतणौ सहसक्किर[7] ॥ १३५

कवित्त– असपति मेळ 'अजीत', धरा नायक नह धारे[8] ।
आदि सुरां आसुरां, वैर जिम दाव विचारे[9] ।
वळि 'अवरंग'हूं वैर, उवर[10] मझि जिकौ[11] अमावौ ।
जेण तजै न 'अजीत', दिलीपतिहूंता दावौ* ।
कमधजां राव[12] 'अवरंग' किलम, तूं थपि चह तौ आपणौ[13] ।
उण आंटहूंत चाहै 'अजौ', अवरंग वंस उथापणौ[14] ॥ १३६
समें[15] जेण पतिसाह, दुगम वुधिकाळ दवायौ ।
सैद ग्रहण पतिसाह, आप भय चूक उठायौ ।
खेध[16] पड़ै चित खांन[17], खोद[18] उज्जीर हुवा खळ ।
सांभळि अलीहुसेन[19], दखिणहूं[20] अयौ[21] सझे दळ ।

---

१ ख. चक्रवति । २ ख. ग. चम्मर । ३ ख. वहु । ग. वहौ । ४ ग. दिनि । ५ ग. ऐह । ६ ख. कहै । ७ ख. ग. सहंसक्कर । ८ ख. ग. धारै । ९ ख. ग. विचारै । १० ख. उवरि । ११ ग. जिको । *यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है । १२ ख. ग. राव । १३ ग. आपणै । १४ ग. उथापणै । १५ ख. ग. समै । १६ ख. क. पेल । १७ ख. ग. षांति । १८ ग. पौंद । १९ ख. अलिहुसेन । २० ख. दक्षिण । ग. दष्पिण । २१ ग. आयौ ।

---

१३४. अभै – महाराजकुमार अभयसिंह । अगजीत – महाराजा अजीतसिंह । जुहारे – अभिवादन किया । चक्रवत्ती – राजा । चंमर – चँवर । अजीत – महाराजा अजीतसिंह । अभैमल – महाराजकुमार अभयसिंह । गजपति – महाराजा गजसिंह । दुवै – दूसरे, वंशज । गुम्मर – गर्व, अभिमान ।

१३५. आलम – संसार । सहसक्किर – सूर्य ।

१३६. सुरां – हिन्दुओं । आसुरां – मुसलमानों । दाव – अवसर । अमावौ – न समाने वाला, अपार । दावौ – दावा, नालिश । अवरंग – बादशाह औरंगजेब । किलम – मुसलमान । थपि – स्थापित कर । आंटहूंत – शत्रुतासे । अजौ – महाराजा अजीतसिंह । उथापणौ – उन्मूलन करना, नाश करना ।

१३७. सैद – सैयद । चूक – षड़यंत्र । खोद – बादशाह । उज्जीर – वजीर, दीवान । खळ – शत्रु ।

पतिसाह ग्रहण जोधांणपति, पेखे मौसर पावियौ[1] ।
दइवांण[2] 'ग्रजौ' दळ सझि दिली, ग्राप मुरादौ ग्रावियौ[3] ॥ १३७

ग्राइ[4] दिली ईखिया[5], जोध चौतरा 'जसारां' ।
सुजि 'ग्रवरंग' सजी[6] (···), इता खटके उणवारां[7] ।
जूना भड़ां जियार, कहै[8] इण भांत[9] हकीकत ।
माति[10] ग्रादि जादम्म[11], मात ग्रनि ग्रठै खगां म्रत[12] ।
ग्राइठांण[13] देखि कथ सुणि 'ग्रजै', धिखे क्रोध इम चित धरी ।
ग्रसपती मारि मांडू ग्रठै, एक[14] कबरि[15] ग्रसपत्तिरी ॥ १३८

धख[16] इम चख[17] (···) धिखे, तांण[18] मूंछां खग तोलै[19] ।
भड़ांहूंत[20] भूपाळ, बहसि[21] नाहर जिम बोलै[22] ।
खत्री खांडाधार[23], एह[24] वायक ग्रवखांणै[25] ।
जिकौ[26] विरद उजवाळि[27], खूंद पलटौ खुरसांणै[28] ।

---

१ ख. ग. पावीयौ । २ ख. ग. दईवांण । ३ ख. ग ग्रावीयौ । ४ ख. ग. ग्राय । ५ ख. ईषीयां । ग. इषिया । ६ ख. साया । ग. साभीया । ७ ग. उणवारां । ८ ख. कहे । ९ ख. ग. भांति । १० ख. ग. मात । ११ ख. जादृम्मि । ग. जादृमि । १२ ख. ग. मृत । १३ ख. ग्रायठांण । ग. ग्रायवांण । १४ ग. ऐक । १५ ख. ग. कवर । १६ ख. धग । १७ ख. ग. धरि चष । १८ ख. ग. तांणि । १९ ग. तोले । २० ग. हुंतं । २१ ख. वहिसि । ग. वहसि । २२ ग. बोले । २३ ख. ग. षंडाधार । २४ ग. ऐह । २५ ख. ग्रवषांणौ । २६ ख. ग. जिको । २७ ख. ग्रजुवालि । ग. ग्रजवाळि । २८ ख. षुरसाणौ ।

---

१३७. पेखे – देख कर । मौसर – ग्रवसर, मौका । पावियौ – प्राप्त किया । दइवांण – वीर, शक्तिशाली । ग्राप मुरादौ – ग्रपनी इच्छासे कार्य करने वाला । ग्रावियौ – ग्राया ।

१३८. ईखिया – देखे । जोध – महाराजा ग्रजीतसिंह राव जोधाका वंशज, वीर । चौतरा – शवके दाह-स्थान पर या समाधि-स्थान पर बनायी गयी स्मृति-चिन्हकी चौकी । जसारां – महाराजा जसवंतसिंहके । सुजी – संहार किये, मारे । खटके – कसके, दर्द रूप हुए । उणवारां – उस समय । जूना – प्राचीन, पुराना । जियार – जिस समय । माति – माता । जादम्म – यादव । म्रत – मृत्यु प्राप्त हुई । ग्राइठांण – चिन्ह, संकेत-स्थान । ग्रजै – महाराजा ग्रजीतसिंह । धिखे – प्रज्वलित हुग्रा । कबरि – कब्र ।

१३९. भड़ांहूंत – योद्धाग्रोंसे । बहसि – जोशमें ग्रा कर । खांडाधार – तलवारकी धार । वायक – वाक्य । ग्रवखांणौ – कहावत, लोकोक्ति । खूंद – बादशाह । खुरसांणै – मुसलमानों ।

महि वैर वंस गोहरि मंडप, 'अवरंग'[1] वहु[2] कीधा इसा ।
तावूत[3] (रा) वैर भूलै तिके, कहै 'अजौ' राजा 'किसा' ।। १३९

छंद हणूंफाळ[4]

कथ एम[5] सुणि मचकूर[6], स्रब[7] कहै इण विध[8] सूर ।
महि वंस रवि महाराज[9], अन[10] भूप जोड़[11] न आज ।। १४०

अनि करै कुण इण भांति, खित वयर काढ़ण खांति ।
इक वयर धरा अबीह, सुजि[12] वंस दूजौ 'सीह' ।। १४१

अरु वैर[13] तीजौ गाय, प्रम मंडप[14] चौथौ पाय ।
ऐ च्यार वयर[15] अजेब, जग[16] कीध[17] 'अवरंगजेब' ।। १४२

पह[18] कही वात प्रमांण, जुड़[19] वयर लेण सुजांण ।
कमधज्ज[20] तड़ तड़[21] केक, 'अवरंग'[22] हणे अनेक ।। १४३

सुजि काढ़ि वैर सकाज, उत्थापि[23] असपति आज ।
इक साह[24] तखत उथापि, पतिसाह दूजौ थापि ।। १४४

---

१ ग. अवरंगि । २ ख. वहौ । ग. वहौ । ३ ख. तावुरा । ग. तावरा । ४ ख. ग. हनूफाल । ५ ग. ऐम । ६ ख. ग. मचकूर । ७ ख. श्रव । ८ ख. विदि । ग. विधि । ९ ग. माहाराज । १० ख. ग. अनि । ११ ख. ग. जोजन । १२ ग. सूजि । १३ ख. ग. वयर । १४ ख. मंड । १५ ख. वैर । ग. वैरि । १६ ग. जगि । १७ ख. ग. कीया । १८ ख. ग. पौहौ । १९ ख. ग. जुड़ि । २० ख. कमधज । ग. कमधज्झ । २१ ग. भड़ । २२ ग. अवरंगि । २३ ख. ग. ऊथापि । २४ ख. साहि ।

---

१३९. गोहरि मंडप – कब्र, समाधि-भवन । तावूत – वह संदूक जिसमें शवको वन्द कर के गाड़ते हैं । नोट – यहाँ कब्रका ही अर्थ ठीक वैठता है ।

१४०. मचकूर – मज़कूर, लिखित विवरण, विचार-विमर्श । वंस-रवि – सूर्यवंश । ज़ोड़ – वरावर, समान ।

१४१. खित – भूमि । वयर – वैर, शत्रुता । खांति – विचार । अवीह – अद्वितीय, वीर । सीह – राव सीहाका वंशज ।

१४२. प्रम मंडप – देवालय, देव मन्दिर, विष्णु भवन । अजेब – अजव, अद्भुत ।

१४३. पह – राजा । जुड़ – भिड़ कर, युद्ध कर । तड़ – शाखा, उपशाखा । केक – कई ।

१४४. उत्थापि – हटा कर । थापि – स्थापित कर ।

कीजिये[1] इण विध[2] कांम, निज पंग नृप[3] जिम नांम ।
विध[4] एम[5] करतां वात, भिळ[6] सैद दहुंवै भ्रात ।। १४५
तन जीव असपति[7] त्रास, पह[8] अया[9] 'अजमल' पास ।
खांहसन्न[10] अबदुलखांन, इम कही वात अमांन ।। १४६
'अजमाल' सुणिजै एह[11], कर जोड़[12] एम[13] कहेह* ।
इस[14] साह की हुइ[15] और[16], जंग किया[17] हम वरजोर ।। १४७
विढ़[18] पड़े जुध[19] उस वेर, सिर खमे[20] वह[21] समसेर ।
अति लोह झेले[22] अंग, इम फतै कीध अभंग ।। १४८
मिळ[23] मौजदीनह मारि, करि एक[24] इस इकतारि[25] ।
इस तरह दिल्ली आंणि, पतिसाह कीया प्रमांणि ।। १४९
इक साइयां[26] कै एह, दिल अवर न धरी देह ।
सरियत्त[27] निमख सिपाह, सो गिणी नह पतिसाह ।। १५०
'जैसिंघ' ध्रोह जणाय, रचि दीध चित मझि राय ।
सो मांनि फररक[28]–साह, चित[29] हमै मारण चाह ।। १५१

---

१ ख. कीजिए । ग. कीजिऐ । २ ख. ग. विधि । ३ ख. ग. नृप । ४ ख. ग. विधि । ५ ग. ऐम । ६ ख. ग. मिलि । ७ ख. असति । ८ ख. ग. पौहौ । ९ ग. आय । १० ख. ग. सन । ११ ग. ऐह । १२ ग. जौड़ि । १३ ग. ऐम ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें अपूर्ण है ।

१४ ग. इम । १५ ख. ग. होय । १६ ख. ग. ओर । १७ ख. ग. कीया । १८ ख. ग. वढ़ि । १९ ख. ग. जुधि । २० ख. खमौ । २१ ख. वहौ । ग. बहौ । २२ क. झेलै । २३ ख. ग. मिलि । २४ ग. ऐक । २५ ख. कतार । २६ ख. सांईयां । ग. सांइयां । २७ ख. ग. सरीयत । २८ ख. ग. फररक्क । २९ ग. चित ।

---

१४५. पंग नृप – राजा जयचन्द जिसका विरुद 'दलपांगला' था । सैद – हसनअलीखां और अब्दुल्लाखां नामक दोनों सैयद भाई ।
१४६. अजमल – महाराजा अजीतसिंह ।
१४७. कहेह – कहता है ।
१४८. विढ़ – युद्ध कर । वेर – वेला, समय । खमे – सहन करते हैं । समसेर – तलवार । लोह – शस्त्र-प्रहार । झेले – सहन करे ।
१४९. मौजदीन – मुइजुद्दीन जहांदार शाह । इकतारि – सत्ता, प्रभुत्व, हुकूमत ।
१५०. सरियत्त – धर्म-शास्त्र । निमख – नमक । सिपाह – सेना, बल, फौज ।
१५१. ध्रोह – द्वेष, डाह । फररक-साह – फर्रुखसियर नामक बादशाह ।

दिन राति[1] हम मझि[2] दाव, इम करै साह उपाव ।
चित दूध फट्टा चाय, जो फेर नहिं[3] मिळ[4] जाय ॥ १५२
कथ कहे[5] एम[6] कुरांण, महमंदका फुरमांण[7] ।
बिन[8] खूंन ग्रोह[9] विचार[10], मारै सुलीजे[11] मार[12] ॥ १५३
कहै ग्रालमीन कताव[13], इण[14] मांहि नांहि ग्रजाव ।
दिल करै वीच[15] दरोग, जो पहिल मारण जोग ॥ १५४
सो किया[16] यंह[17] 'जैसाह', रुख साख[18] दहुंवै राह ।
कम[19] उतन जमियत[20] काज, इह दाव में[21] है ग्राज ॥ १५५
लख दोय दळ हम लार, है इसै दोय हजार ।
जुड़ि पहल[22] इससै[23] जंग, ग्रब[24] मार लेहि[25] ग्रभंग ॥ १५६
जंग जीत तखतह जाय, ग्रसपती दीय[26] उठाय ।
कमधज्ज[27] तुम विन[28] कोय, हम दोय सैन हि[29] होय ॥ १५७
ग्रनि[30] करै कुण विण ग्राप, इहं[31] दिली[32] थाप उथाप ।
ततवीर कर धरि तौर[33], ग्रसपती[34] कीजे[35] ग्रौर ॥ १५८

---

१ ग. रात । २ ख. ग. परि । ३ ग. नह । ४ ग. मिलि । ५ ख. ग. कहै । ६ ग. ऐम । ७ ख. फरमांण । ८ ग. विण । ९ ख. ग ध्रोह । १० ख. ग. विचारि । ११ ग. सलीजै । १२ ख. ग. मारि । १३ ख. ग. किताव । १४ ख. ग. इस । १५ ख. ग. वीचि । १६ ख. ग. कीया । १७ ख. ग. इस । १८ ग. साषि । १९ ख. ग. कमि । २० ख. ग. जमीयत । २१ ख. ग. मैं । २२ ग. पहिल । २३ ख. ईससै । २४ ख. ग. ग्रव । २५ ख. ग. लेह । २६ ख. दीयां । ग. दीया । २७ ख. कमधज । ग. कमधज्झ । २८ ख. ग. विण । २९ ख ग. ह । ३० ख. ग. ग्रन्य । ३१ ख. ग. यह । ३२ ग. दिल्ली । ३३ ग. तौरि । ३४ ख. ग. ग्रसपति । ३५ ख. जीकै । ग. कीजै ।

---

१५२. चाय – चेत्, यदि । चित···जाय—यदि चित्त ग्रौर दूध फट जाते हैं तो वे फिर नहीं मिलते ।

१५३. खूंन – गुनाह ।

१५४. ग्रालमीन कताव – धर्म-पुस्तक । ग्रजाव – पापोंका वह दंड जो यमलोकमें मिलता है, कष्ट, पाप । दरोग – कपट, दुरोग ।

१५५. जैसाह – सवाई राजा जयसिंह । साख – साक्षी । दहुंवै – दोनों । कम उतन काज – थोड़ीसी जमीन ग्रौर सेनाके लिए । जमियत – जमीग्रत – फौज ।

१५६. लार – पीछे । ग्रभंग – वीर ।

१५८. इहं – यह । तौर – तरीका, विधि । ततवीर – तदबीर, उपाय

हम रहैं[1] नौकर[2] होय, दिल[3] आप बंधव दोय ।
पलटां न वायक पेस, नहिं[4] तजां हुकम नरेस ।। १५९
महाराज[5] विच[6] रहमांण, करि सौंस छिबी[7] कुरांण ।
तदि धरे[8] दिल परतीत, इम बोलियौ[9] 'अगजीत' ।। १६०
हिंदवांण[10] तीरथ होय, कर जठै न लगै कोय[11] ।
साळग्गरांम[12] सिलाह, दै नहीं आसुर दाह ।। १६१
जिग होय दुज जप जाप, आसुर करै न उथाप ।
जिण मोह[13] महि दुर जाय[14], ग्रह तठै मन[15] ह्वै[16] गाय ।। १६२
*असुरांण सीस उपाड़ि, परसाद न सकै पाड़ि ।
प्रासाद[17] नवनवा प्रमेस, हिंदवांण[18] सझै[19] हमेस* ।। १६३
आगै जु दियौ[20] छुडाय, जेजियौ[21] सुज[22] मिट[23] जाय ।
अर साह दरगह आइ[24], मह[25] पूज हूं[26] महमाय[27] ।। १६४

---

१ ख. कहै । २ ख. नौकरि । ३ ख. दिलि । ४ ख. ग. नह । ५ ख. ग. माहाराज । ६ ख. ग. विचि । ७ ख. ग. छिवे । ८ ग. धरै । ९ ख. ग बोलीयौ । १० ख. हिंदुवांण । ग. हीदुवांण । ११ ग. कोइ । १२ ख. ग. साळगरांम । १३ ख. ग. मुह । १४ ख. दूजाय । ग. दुजाय । १५ ख. ग. न । १६ ख. ग. हुवै । १७ ग. परसाद । १८ ख. ग. हिंदुवांण १९ ख. सझे ।

*यह पंक्तियाँ ख. प्रतिमें अपूर्ण हैं ।

२० ख. ग. दीयौ । २१ ख. ग. जेजीयौ । २२ ख. ग. सुजि । २३ ख. ग. मिटि । २४ ख. ग. आय । २५ ख. ग. महि । २६ ख. ग. वूं । २७ ख. महामाय । ग. माहामाय ।

---

१६०. रहमांण – ईश्वर । सौंस – शपथ । छिबी – तसवीह, माला । परतीत – विश्वास । अगजीत – महाराजा अजीतसिंह ।

१६१. साळग्गरांम – शालिग्राम । दाह – जलन (?) ।

१६२. जिग – यज्ञ । दुज – द्विज, ब्राह्मण । आसुर – यवन, मुसलमान ।

१६३. असुरांण – यवन, मुसलमान । परसाद – प्रासाद, मंदिर, देवालय । पाड़ि – गिरा कर । प्रासाद – देव-मंदिर । प्रमेस = परमेश – विष्णु, ईश्वर । हिंदवांण – हिन्दू, हिन्दुस्तान । सझै – तैयार करें ।

१६४. जेजियौ – एक प्रकारका कर जो मुसलमानी राज्यमें अन्य धर्म वालोंसे लिया जाता था, जजिया । महमाय – देवी, दुर्गा, महामाया ।

मिळ[1] लालकोट मझार, झालरां ह्वै झणकार।
परमळा[2] धूप प्रकास, उदियात[3] रवि[4] अंबखास ॥ १६५
राखूं सुरहि[5] रनधीर[6], मेटूं स मिटै अमीर।
हरवळे[7] कूरम[8] हूंत[9], कळि तजौ विग्रह कूंत[10] ॥ १६६
*सुजि वाळ[11] वय समराथ, हद ग्रहे मैं इण हाथ।
आलंमहूंत अमेळ, खित करे लीध उखेळ* ॥ १६७
राखियौ[12] डगतौ राज, ईसांन[13] मांनै आज।
सुजि करूं वळि ईसांन, थट रखण हिंदुसथांन[14] ॥ १६८
आ मिटण न दूं[15] अनादि[16], मो थकां हिंदु म्रजादि[17]।
तजि दाव छळ[18] तुरकांण, 'जैसाह' दीजै जांण ॥ १६९
दिल्लीस[19] रखत दरव्व[20], सुजि लियूं[21] वांटि सरव्व[22]।
ह्वै हुकम जिम हिज होय, करि उजर न सकै कोय ॥ १७०
विध[23] इती मांनौ वात[24], तौ साह कितियक[25] वात[26]।
ऊथाप[27] दूं[28] इण वार, करि जुद्ध[29] वुद्ध[30] प्रकार ॥ १७१

---

१ ख. ग. मिलि। २ ख. प्रमल्ला। ग. प्रम्मला। ३ ख. ग. उदगार। ४ ख. हुवै। ग. ह्वै। ५ क. सरहै। ६ ख. ग. सधीर। ७ ग. हरवल। ८ ग. कुरम। ९ ग. हुंत। १० ख. हूंत। ११ ख. वाल।

*यह पंक्ति ग. प्रतिमें नहीं है।

१२ ख. ग. राषीयौ। १३ ग. इसांन। १४ ग. हिंदूसथांन। १५ ख. ग. द्यूं। १६ ख. ग. अनादी। १७ ख. ग. मृजाद। १८ ख. छलि। १९ ख. ग. दिल्लेस। २० ख. ग. दरब। २१ ख. लिहूं। ग. लिऊं। २२ ख. ग. सरब। २३ ख. ग. विधि। २४ ख. ग. वात। २५ ख कितीक। ग. कितीयक। २६ ख. ग. वात। २७ ख. ग. ऊथापि। २८ ख. ग. द्यूं। २९ ग. युद्ध। ३० ख. ग. वुद्धि।

---

१६५. झालरां – देव-मन्दिरोंमें बजाया जाने वाला घंटा विशेष। झणकार – ध्वनि विशेष। परमळा – सुगंध। अंबखास – आमखास।

१६६. हरवळे – हरावल। कूरम हूंत – कछवाहोंसे। कळि – विचार कर (?)। विग्रह – युद्ध। कूंत – भाला।

१६७. वय – आयु, उम्र। अमेळ – शत्रुता। उखेळ – युद्ध।

१६८. डिगतौ – डाँवाडोल होता हुआ। ईसांन – अहसान। थट – वैभव, ठाठ।

१६९. थकां – होते हुए। म्रजादि – मर्यादा। तुरकांण – यवन।

१७०. दिल्लीस – दिल्लीके बादशाह। दरव्व – द्रव्य, धन-दौलत। उजर – उज्र, दावा।

१७१. कितियक – कितनी। वुद्ध – वुद्धि।

इण मांहि एक[1] अदाब[2], नह मनूं[3] एक[4] निबाब[5] ।
जदि आपहूंता जंग, ऊखेळ करूं अभंग ॥ १७२

सुणि कहे[6] इम सयदांण[7], पह[8] हुकम सरब[9] प्रमांण ।
सझि एम[10] तरह सलाह, दहुं[11] गए[12] सयद दुबाह[13] ॥ १७३

'जैसाह'हूंत जबाव[14], सुजि कहे 'अजै' सताब[15] ।
उण वार अंब नरेस, दिय[16] सिख[17] सलाह दिलेस ॥ १७४

जदि सीख करि 'जैसाह', दिस[18] उतन चढ़े दुबाह[19] ।
तन लगे नह खग ताप, पह[20] 'अजन'[21] रै[22] परताप[23] ॥ १७५

सयदांण कमध सकाज, मिळ[24] थाट सझि महाराज[25] ।
अंब[26] खास मांझळि[27] आय, असपत्ति[28] लीय[29] उठाय ॥ १७६

ग्रहि हणे साह गहेर, सुज[30] नांम फररकसेर ।
इम वयर लीध अथाह, नरइंद[31] मुरधरनाह ॥ १७७

---

१ ग. ऐक । २ ख. अवाद । ३ ख. ग. मनौ । ४ ख. ग. कदे । ५ ख. नपाव । ग. नदाव । ६ ग. कहै । ७ ख. ग. सईदांण । ८ ख. पौहौ । ग. पहौ । ९ ख. सरव । १० ख. ग. इम । ११ ख. ग दहूं । १२ ख. गये । ग. गऐ । १३ ख. दुवाह । ग. दुवाह । १४ ख. जवाव । १५ ख. सताव । १६ ख. ग. दीय । १७ ख. ग. सीख । १८ ख. ग. दिसि । १९ ख. ग. दुवाह । २० ख. ग. पौहौ । २१ ख. ग. अजण । २२ ख. ग. तणै । २३ ख. ग. प्रताप । २४ ख. ग. मिलि । २५ ख. ग. माहाराज । २६ ख. अंव । २७ ख. ग. मांझिल । २८ ख. ग. असपती । २९ ख. ग. लीयौ । ३० ख. ग. सुजि । ३१ ख. ग नरयंद ।

---

१७२. अदाव – आदर, अदव (?) ।

१७३. सयदांण – सैयद भाई—ये दो भाई थे जिनके नाम क्रमशः सैयद हुसेनअलीखां (अमीरुल उमरा) और अब्दुल्लाखां (कुतुवुल्मुल्क) थे ।

१७४. अजै – महाराजा अजीतसिंह । अंब नरेस – आमेर नरेश सवाई राजा जयसिंह । नोट – सैयद अब्दुल्लाखांका (कुतुवुलमुल्कका) ख्याल था कि आमेर नरेस जयसिंहजी भी उसके विरुद्ध वादशाहको भड़काते हैं । इससे उसने फर्रुखसियरको दबा कर उन्हें अपने देशको लौटनेकी आज्ञा दिलवा दी । दिलेस – दिल्लीश, वादशाह ।

१७५. उतन – जन्मभूमि । दुबाह – वीर, योद्धा । ताप – भय, आशंका । पह – राजा । अजन – महाराजा अजीतसिंह ।

१७६. थाट – सेना, दल । अंबखास – आमखास । मांझळि – मध्य, में । असपत्ति – वादशाह ।

१७७. ग्रहि – पकड़ कर । गहेर – जवरदस्त (?) । सुज – जिस । फररकसेर – फर्रुखसियर । वयर – वैर, शत्रुता । लीध – लिया । अथाह – अपार । नरइंद – नरेन्द्र, राजा ।

सुज[1] तेज देखि[2] सधीर, अड़ियौ[3] न कोय अमीर ।
सझि तांम 'अजण' सलाह, सा' थियौ[4] दौलासाह[5] ॥ १७८
इक साह तखत उथापि, इक साह तखतह आपि[6] ।
कथ कहे जिम कमधेस, द्रव[7] वांटि[8] लीध दिलेस ॥ १७९
रजतेस कनक रखत्त, तै चमर छत्र तखत्त ।
असि गयंद लीध अपार, हद माल मुलक जुहार ॥ १८०
निज जोगणीपुर[9] नाह, सुजि पड़े दौला साह ।
तीसरौ असपति तांम, वळि[10] थापियौ[11] वरियांम[12] ॥ १८१
अणभंग तप अणथाह, सुजि नांम[13] महमंद साह ।
दे तखत छत्र दुझाळ, अति धरे छक 'अजमाल' ॥ १८२
आगरै गढ़ उणवार[14], ऊठियौ[15] दुंद उदार[16] ।
धर छत्र वहसे[17] धांम, निज नेक सेरह नांम ॥ १८३

---

१ ख. ग. सुजि । २ ख. देष । ३ ख. ग. अडीयौ । ४ ख. ग. सथपीयौ । ५ ख. दोलासाह । ६ ग. आप । ७ ख. द्रव । ग. द्रव्य । ८ ग. वांटि । ९ ख. जोगणिपुर । १० ख. ग. वलि । ११ ख. ग. थापीयौ । १२ ख. वरियाम । ग. वरीयांम । १३ ख. तांम । १४ ग. उणवार । १५ ख. ऊठीयौ । ग. उठीयौ । १६ ख. ग. अपार । १७ ख. वहले ।

---

१७८. अड़ियौ – भिड़ा, टक्कर ली । अजण – महाराजा अजीतसिंह । सलाह – राय । सा' – शाह, बादशाह । दौलासाह – रफीउद्दौला नामक व्यक्ति जिसको सैयद भाइयोंसे मिल कर महाराजा अजीतसिंहने दिल्लीके सिंहासन पर शाहजहाँ सानीके नामसे वि. सं. १७७६ को राज्यसिंहासन पर बैठाया था ।

१७९. उथापि – उठा कर, उच्छेद कर । आपि – दे कर । दिलेस – दिल्लीश, बादशाह ।

१८०. रजतेस – चांदी, रोप्य । कनक – स्वर्ण, सोना । रखत्त – द्रव्य, धन । जुहार – जवाहिरात ।

१८१. जोगणीपुर – दिल्ली । नाह – नाथ, राजा, बादशाह । पड़े – मर गये, अवसान हुआ । थापियौ – मुकर्रर किया, स्थापित किया । वरियांम – श्रेष्ठ ।

१८२. अणभंग – वीर । तप – ऐश्वर्य, तेज । अणथाह – अपार, असीम । महमंद साह – शाहजादा रोशनअख्तर जिसको सैयद भाइयोंसे मिल कर महाराजा अजीतसिंहजीने रफीउद्दौलाकी बाद रोशनअख्तर नासिरुद्दीन मोहम्मद शाहके नामसे दिल्लीके सिंहासन पर बैठाया । दुझाल – वीर । छक – गर्व । अजमाल – महाराजा अजीतसिंह ।

१८३. दुंद – द्वन्द्व । वहसे – जोशमें । सेरह नांम – (?) ।

सझि तोप कोट सनाह, सुजि जोम भरियौ[1] साह ।
सुणि दुंद इम 'सयदांण', जगजीत पह[2] जोधांण ॥ १८४

सझि थाट चढ़िया[3] सूर, रोसंग अंग गरूर ।
अकबर[4] बहादर[5] आय, जुध कीध धोम जगाय ॥ १८५

दगि नाळ झाळ दुरंत, गढ़ घेरियौ[6] गहतंत ।
उडि रीठ गोळां आग[7], लख अगन[8] मे'[9] झड़ लाग[10] ॥ १८६

जुध सुणे इम 'जैसाह'[11], दळ पूर सज्जि[12] दुबाह ।
लड़ि करण नेक दिलेस, निज सीम[13] आय[14] नरेस ॥ १८७

सुणि एह[15] कथ 'सयदांण', मिळ[16] 'अजण' अमली[17] मांण ।
चाढ़ाय असि उर चोट[18], करि हाक भेळे[19] कोट ॥ १८८

गढ़ लीध करि गजगाह, सुजि गहे[20] नेकहसाह ।
'जैसाह' दिस[21] जमरांण[22], खळ चढ़े दळ खुरसांण ॥ १८९

---

१ ख. ग. भरीयौ । २ ख. पौ । ग. पौहो । ३ ख. ग. चढ़ीया । ४ ख. अकवरा । ग. अकबरा । ५ ख. ग. वादह । ६ ग. घेरीयौ । ७ ख. ग. आगि । ८ ख. ग. अगनि । ९ ख. ग. मैं । १० ख. ग. लागि । ११ ग. जयसाह । १२ ख. ग. सझे । १३ ग. सीस । १४ ख. ग. आयौ । १५ ग. ऐह । १६ ख. ग. मिलि । १७ ग. अवली । १८ ख. चोवट । १९ क. भेळै । २० ख. ग. ग्रहे । २१ ख. ग. दिसि । २२ ख. रांण ।

---

१८४. सनाह – कवच । सुजि – वह । जोम – जोश । सयदांण – दोनों सैयद भाई । जोधांण – जोधपुर ।

१८५. थाट – सेना । रोसंग – रोषपूर्ण शरीर वाला । गरूर – गर्व । धोम – अग्नि, क्रोधाग्नि ।

१८६. नाळ – तोप । झाळ – ज्वाला, आगकी लपट । दुरंत – भयंकर । गहतंत – गंभीर, वीर । रीठ – प्रहार या प्रहारकी ध्वनि । झड़ – निरंतर होने वाली छोटी-छोटी बूंदोंकी वर्षा ।

१८७. जैसाह – सवाई राजा जयसिंह । दुबाह – वीर, योद्धा । नेक – हित, भलाई ।

१८८. अजण – महाराजा अजीतसिंह । अमली मांण – अपने ऐश्वर्यका उपभोग करने वाला । हाक – जोशपूर्ण आवाज । भेळे – जीत लिया, हरा दिया ।

१८९. गजगाह – युद्ध । जमरांण – यमराज ।

चळचळे चवदह चाळ, थट हुवा जिम जळ थाळ[1] ।
सुत विसन[2] वह[3] वधि सोच[4], इम लिखे खत आलोच[5] ॥ १९०

स्रीहत्थ लेखि सकज्ज[6], 'अजमालहूंत' अरज्ज[7] ।
स्री महाराज[8] सकाज, इळ वंस सूरिज[9] आज ॥ १९१

मो मदत[10] कीध हमेस, निज ग्रहे हाथ नरेस ।
वरियांम[11] आलम वार[12], मो राज उतन मंझार[13] ॥ १९२

यां[14] हूंत होत[15] उथाप, 'अजमाल'[16] राखै[17] आप ।
बलि साह फररक वार, अरि हुता[18] सयद अपार ॥ १९३

सझि थाट कुरब सुथाळ, मो[19] राखियौ[20] 'अजमाल' ।
वरियांम[21] तीजी वार, अब[22] नको अवर अधार ॥ १९४

कीजिये[23] फेर[24] सकाज, 'अजमाल' ऊपर आज ।
उमराव[25] मंत्रिय[26] आंणि, पह[27] दीध कागद पांणि ॥ १९५

---

१ ख. थाह । २ ग. विसन । ३ ख. वहो । ग. वहो । ४ ग. सौच । ५ ग. आलौच । ६ ख. सकज । ग. सकज्झ । ७ ख. अरक । ग. अरज्झ । ८ ख. ग. माहाराज । ९ ग. सूरिझ । १० ख. ग. मदति । ११ ग. वरीयांम । १२ ग. वार १३ ख. ग. मझार । १४ ख. ग. इळ । १५ ख. हुंता । ग. हुतां । १६ ख. ग. अगजीत । १७ ख. ग. रापे । १८ ख. हुंता । ग. हुंतां । १९ ख. मौ । २० ख. ग. रापीयौ । २१ ख. वरीयाम । ग. वरियांम । २२ ख. ग. अव । २३ ख. कीजीए । ग. कीजीऐ । २४ ख. वले । ग. बले । २५ ख. उंवराव । ग. जवराव । २६ ख. ग. मंत्रीय । २७ ख. ग. पौहो ।

---

१९०. चळचळे – चलायमान हुए, भयभीत हुए । चाळ – लोक । थट – सेना । आलोच – विचार कर । सुत विसन – विष्णुसिंहका पुत्र सवाई जयसिंह ।

१९१. इळ – पृथ्वी । वंस सूरिज – सूर्यवंश ।

१९३. साह फररक वार – बादशाह फर्रुखसियर । अरि – शत्रु । सयद – दोनों सैयद भाई ।

१९४. सुथाळ – ठीक, अनुकूल । अवर – अन्य । अधार – आधार, सहारा । नको – कोई नहीं ।

१९५. फेर – फिर । ऊपर – मदद, रक्षा । पह – राजा । पांणि – हाथ ।

मुख[1] वचन बह[2] मनुहारि[3], कहि[4] भांत[5] भांत प्रकारि[6] ।
मेल्हिया[7] 'जसै' महीप, आविया[8] 'अजण' समीप ॥ १९६

मुख वचन कहि[9] सामाज[10], करि[11] दीध अरज[12] सकाज ।
इम वांचि खत 'अजमाल', खितनाथ हुवौ खुस्याळ ॥ १९७

तै सुभड़ मंत्री तांम, विध[13] कीध हित वरियांम ।
बिहुं 'सैद' तांम बुलाय, इम कहै बुद्धि उपाय ॥ १९८

कथ अगै कीध करार, लोपां न हुकम लिगार ।
इक वात जिण[14] मझि आज, करि करौ आतुर काज ॥ १९९

'जैसाह'हूंता जंग, आरंभ तजौ अभंग ।
मुनसप[15] तजोस[16] प्रमांण, फिर[17] देह लिखि फुरमांण ॥ २००

तै लिखौ हित कथ तीख, सझि एम[18] वरसह सीख ।
इम लिखौ हेत[19] उपाय, जोधांण मो संग[20] जाय ॥ २०१

सुण[21] वयण इम सयदांण, उर[22] धिखे क्रोध उफांण ।
दिल मांहि लागौ दाह, 'अजमाल' कुरब अथाह ॥ २०२

---

१ ख. मुषि । २ ख. वहौ । ग. वहौ । ३ ख. ग. मनुहार । ४ ख. ग. कहै । ५ ख. ग. भांति भांति । ६ ख. ग. प्रकार । ७ ख. ग. मेल्हीया । ८ ख. ग. आवीया । ९ ख. कहे । ग. कहै । १० ख. ग. समाज । ११ ख. ग. कर । १२ ख. वचन । १३ ख. ग. वधि । १४ ग. जिणि । १५ ख. सप्प । ग. सुप्प । १६ ख. जितौ । ग. जीतौ । १७ ग. फिरि । १८ ख. ग. एक । १९ ख. हेठ । २० ख. ग. संगि । २१ ख. ग. सुणि । २२ ख. ग. उरि ।

---

१९६. अजण – महाराजा अजीतसिंह ।

१९७. खितनाथ = क्षितिनाथ – राजा । खुस्याळ – प्रसन्न, खुश ।

१९८. सुभड़ – सुभट, योद्धा । बिहुं सैद – दोनों सैयद भाई हुसेनअलीखां (अमीरुल उमरा) और अब्दुल्लाखां (कुतुबुल्मुल्क) ।

१९९. करार – वायदा, कौल । लिगार – किंचित, थोड़ा ।

२००. जंग – युद्ध । अभंग – वीर ।

२०२. धिखे – क्रोधाग्निसे प्रज्वलित हुए । उफांण – उबाल ।

सो लोप न सकै सैद[1], कथ कीध पहलां[2] कैद ।
कथ कहे[3] तजे[4] करूर, जो[5] हुकम पह[6] मनजूर ॥ २०३

सजि[7] दसकतां सुरतांण, महपती[8] दिस[9] फुरमांण ।
दाखियौ[10] जिम लिख दीध, कूरमां ऊपर कीध ॥ २०४

सो लीध पह[11] 'जैसाह', आवियौ[12] सझे उछाह ।
जदि सीख किय[13] जगजीत, जोधांण दिस[14] अगजीत ॥ २०५

सझि रीझ वह[15] सुरतांण, सझि निजर वह सयंदांण ।
इम[16] मेलियौ[17] अणपाल, मुरधरा दिस[18] 'अजमाल' ॥ २०६

महाराजा अजीतसिंहरौ दूजा राजावांरै साथ जोधपुर आगमन

'जैसाह' मिळै[19] जियार, लख गौड़ हाडा लार ।
इंद्रसिंघ सोपुर[20] ईस, सुजि लार नांमत सीस ॥ २०७

रचि बुधौ बूंदी[21] राव, पह[22] लार बंदत[23] पाव ।
सीसोद[24] हिक सुवियांण[25], 'राजसी' दादौ रांण ॥ २०८

उण नांम भड़[26] 'अखमाल', सुजि थाट लार सुथाळ ।
यां सहित 'विसन' सुजाव, रचि थाठ कूरम[27] राव ॥ २०९

---

१ ग. भेद । २ ख. पहिलै । ग. पहिलां । ३ ग. कहै । ४ ग. तजै । ५ ख. जौ । ६ ख. ग. पौहो । ७ ख. ग. सझि । ८ ख. महपति । ग. पहीपती । ९ ख. ग. दिसि । १० ख. ग. दाषीयो । ११ ख. ग. पौहो । १२ ख. ग. आवीयौ । १३ ख. ग. कीय । १४ ख. ग. दिसि । १५ ख. वहो । ग. वहो । १६ ख. ग. यम । १७ ख. ग. मेल्हीयौ । १८ ख. ग. दिसि । १९ ग. मिळि । २० ख. ग. पर । २१ ख. बूंदी । ग. बूदी । २२ ख. ग. पौहो । २३ ख. वंत । २४ ग. सीसोद । २५ ख. ग. सभियांण । २६ ख. भड । २७ ख. कुरम । ग. कूरम ।

---

२०३. सैद – सयद भाई ।

२०४. महपती – राजा । दिस – ओर । फुरमांण – फरमान, आज्ञापत्र ।

२०५. पह जैसाह – सवाई राजा जयसिंह । जदि – जब । अगजीत – महाराजा अजीतसिंह ।

२०६. मेलियौ – भेजा । अणपाल – वीर, योद्धा । दिस – तरफ । अजमाल – महाराजा अजीतसिंह ।

२०७. जियार – जब ।

२०८. बुधौ – बून्दीका राव राजा बुद्धसिंह । लार – पीछे । सीसोद – सीसोदिया वंशका राजपूत । हिक – एक । सुवियांण = सुभियांण – श्रेष्ठ । राजसी रांण – महाराणा राजसिंह ।

२०९. अखमाल – (?) । थाट – सेना, दल । सुथाळ – श्रेष्ठ । विसन सुजाव – विष्णुसिंहका पुत्र । नोट – मिर्जा राजा जयसिंहके पौत्र और रामसिंहके पुत्रका नाम विसनसिंह था, वही सवाई जयसिंहके पिता थे ।

वड वडा गढ़ वरियांम[1], तावीन[2] 'अजमल' तांम ।
आवियौ[3] अमलीमांण, जोधांण-पति जोधांण ॥ २१०

हरखंत सहर उछाह, चक्रवरत[4] दरसण चाह ।
गजगमणि मंगळ गाय, वर[5] कुंभ हरित वंदाय[6] ॥ २११

छक विच[7] पुर अवछाड़ि[8], पौसाक दुरंग पहाड़ि[9] ।
जरतार जगमग जोति[10], अति भांण जांण उदोति* ॥ २१२

पौसाक तास अपार, स्रब[11] नारि[12] नर स्रंगार[13] ।
भूखणस[14] नवनव भाव, जगमग्ग[15] कनक जड़ाव ॥ २१३

सिणगार गज असि सोभ, लखि हुवै इँदर विलोभ ।
मिळ[16] मंत्रि[17] सुभड़ समाज, साजंत[18] निज[19] रस[20] साज[21] ॥ २१४

बाजंत्र[22] बजत[23] बमेक[24], ऋत[25] राग रंग अनेक ।
नवछावरेस नरंद[26], उछळंत द्रब[27] झड़ इंद ॥ २१५

---

१ ग. वरीयांम । २ ख. ग. तावीन । ३ ख. ग. आवीयो । ४ ख. ग. चक्रवर्ति । ५ ग. वरि । ६ ग. बदाय । ७ क. चित्र । ८ ख. ग. अवछाड़ । ९ ख. ग. पहाड़ । १० ग. जोत ।

* ख. तथा ग. प्रतियोंके अनुसार— अति जांण भांण उदोत ।

११ ख. अव । १२ ख. जारि । १३ ख. ग. सिणगार । १४ ख. भूषणजू । ग. भूषणसु । १५ ख. ग. जगमग । १६ ख. ग. मिलि । १७ ख. मंत्री । ग. मंत्रीय । १८ ख. ग. साझंत । १९ ख. ग. नज । २० ख. ग. रिस । २१ ख. ग. काज । २२ ख. वाजित्र । ग. वाजित्र । २३ ख. ग. वजत । २४ ख. ग. वमेक । २५ ख. ग. कृत । २६ ख. ग. नरचंद । २७ ख. द्रव ।

---

२१०. तावीन – आज्ञाकारी, हुक्म मानने वाले तावईन । जोधांण – जोधपुर ।

२११. हरखंत – हर्षित होता है । चक्रवरत – चक्रवर्ती राजा । चाह – इच्छा । मंगळ – मांगलिक गायन । वर···वंदाय – घट के ऊपर हरी दूबें रख कर सौभाग्यवती स्त्रियाँ सामने आती हैं; इस मांगलिक रस्म को 'हरी वंदाना' कहते हैं ।

२१२. छक – वैभव, ऐश्वर्य । पहाड़ि–पहिन कर ।

२१३. कनक जड़ाव – स्वर्ण-जटित ।

२१४. सिणगार – शृंगार । सोभ – शोभा, दीप्ति । विलोभ – मोहित ।

२१५. बाजत्र – वाद्य । नवछावरेस – न्यौछावर । नरंद – नरेन्द्र, राजा ।

*सिर[1] चमर होत सकाज, कहि ब्रद्द[2] वह[3] कविराज ।
बंदि[4] तोरणां जिम इंद[5], आवियौ[6] गढ़ नरइंद* ॥ २१६
पतिव्रता[7] नेह अपार, सझि सोळ सरस सिंगार[8] ।
वह[9] कळा लछण[10] वतीस, सझि[11] आभरण खटतीस ॥ २१७
अति रूप क्रांति उजास, प्रप्फुल्ल[12] वदन[13] प्रकास ।
आवियौ[14] पह[15] उण वार[16], मिंदरां[17] राज मंझार ॥ २१८
गायणी नृत्त[18] संगीत, रंग करत उरवस[19] रीत ।
करि हावभाव अनेक, कट्टाच्छ[20] मनमथ केक ॥ २१९
वाजंत्र[21] वजत[22] विसाळ, रस रागरंग रसाळ ।
मिळ[23] झूळ सुकिया[24] बांम, क्रत[25] रूप रति जिम कांम ॥ २२०
'अजमाल' भूप अवास[26], वणि इंद्र जेम विलास ।
तिण वार निसा वितीत, आवियौ[27] गौख 'अजीत' ॥ २२१
तदि हुवा[28] हाजर तांम, वड वडा सव वरियांम ।
तळि[29] गौख ऊभा तांम, सोझंत सुपह सलांम ॥ २२२

---

१ ख. सिरि । २ ख. विरद । ३ ख. वहौ ।
*यह पंक्ति ग. प्रतिमें नहीं है ।
४ ख. वंदि ५ ख. व्यंद । ६ ख. आवीयौ । ७ ग. परिव्रता । ८ ख. ग. श्रृंगार । ९ ख. वहौ । ग. बहौ । १० ग. लछिण । ११ ग. सझ । १२ ख. प्रफुलंत । ग. प्रफुलित । १३ ग. वदन । १४ ख. ग आवीयौ । १५ ख. ग. पौहौ । १६ ग. उणवार । १७ ख. ग. मंदिरां । १८ ख. ग. नृत्य । १९ ग. उरवसि । २० ख. काटाछ । ग. काटाछि । २१ ख. वाजित्र । ग. वाझित्र । २२ ख. ग. वजति । २३ ख. ग. मिलि । २४ ख. ग. स्वकीया । २५ ख. ग. कृत । २६ ग. अवास । २७ ख. ग. आवीयौ । २८ ख. हूआ । ग. हूवा । २९ ख. तयि । ग. लपि ।

---

२१६. व्रद्द – विरुद । नरइंद – नरेन्द्र, राजा ।
२१७. सिंगार – श्रृंगार । आभरण – आभूषण ।
२१८. उजास – प्रकाश, दीप्ति । प्रप्फुल्ल – हर्षित, प्रफुल्लित । वदन – मुख । मिंदरां राज – राजभवन । मंझार – में, मध्य ।
२१९. गायणी – वेश्या, नृत्यकी । उरवसी – उर्वशी नामक अप्सरा । कट्टाच्छ – कटाक्ष । मनमथ – कामदेव । केक – कई ।
२२०. वाजंत्र – वाद्य । झूळ – समूह । सुकिया – स्वकीया, पतिव्रता । बांम – स्त्री । रति – कामदेवकी स्त्री ।
२२१. निसा – रात्रि । वितीत – व्यतीत । गौख – गवाक्ष, झरोखा ।
२२२. वरियांम – श्रेष्ठ । तळि – नीचे । सुपह – वीर, योद्धा ।

तवि[1] निजर दौलति तांम, निज कहै वळ जस नांम* ।
हुय[2] निजर[3] दौलति[4] हांम, संग्रांम करै सलांम ।। २२३
पह[5] सरण सेवत पाव, श्रौ रांमपुर रौ राव ।
ह्वै निजर[6] स्रीमहाराज[7], दूसरौ राव दराज ।। २२४
श्रौ बुधौ बूंदी[8] ईस[9], सो नमत कदांमां[10] सीस ।
सिंघ[11] महाबळी सकाज[12], महि निजर[13] ह्वै महाराज[14] ।। २२५
नृप[15] गौड़ निज ताबीन, तसलीम साजत[16] तीन ।
गढ़ एण[17] सौपुर[18] गांम, इंद्रसिंघ[19] इणांरौ नांम[20] ।। २२६
नरिइंद नजर नगाह, सुत चित्रगढ़ पतिसाह ।
सुत जियां[21] दोइ[22] सुथाळ, मिळ[23] मालफत श्रखमाल® ।। २२७
सीसोद करत सलांम, ऊंमेद[24] मुलक इनांम ।
सजि निगह निजर सताब, नमि करत कुनस[25] निबाब[26] ।। २२८

---

१ ग. रवि ।
*ख. श्रौर ग. में— निज कहै जस वलनांम ।

२ ख. ग. होय । ३ ग. नजर । ४ ख. ग. दौलत । ५ ख. ग पहो । ६ ग. नजर । ७ ख. माहाराज । ८ ग. बुंदी । ९ ख. इस । १० ख. ग. कदमां । ११ ख. सिंह । १२ ग. सक्काज । १३ ख. ग. नजर । १४ ख. माहाराज । १५ ख. ग. नृप । १६ ख. ग. साझत । १७ ग. ऐण । १८ ख. ग. सोपर । १९ ख. इंदसिंघ । २० ख. ग. नांव । २१ ख. ग. जीयां । २२ ख. ग. दोय । २३ ग. मिलि ।
®ख. श्रौर ग. प्रतियोंके श्रनुसार इस पंक्तिमें— मिलि माल श्रखफत माल ।
२४ ख. ग. उमैद । २५ ख. कनस । ग. क्रुनस । २६ ख. ग. नबाब ।

---

२२३. तवि – कह कर । निजर दौलति – नकीब द्वारा राजा-महाराजाके श्रगाड़ी उच्चारण किये जाने वाले शब्द जिसका श्रर्थ यह होता है कि जिस पर श्राप कृपा-कटाक्ष डालते हैं वह दौलतमन्द हो जाता है । हांम – इच्छा ।

२२४. पह सरण – शरण में श्राए हुए राजा । दराज – महान ।

२२५. बुधौ – बून्दीका राव राजा बुधसिंह । महि निजर–नीची निगाह ।

२२६. तावीन–श्राधीन, मातहत, श्राज्ञाकारी । तसलीम···तीन – तीन बार सलाम करता है ।

२२७ चित्रगढ़ – चित्तौड़गढ़ । मालफत – फतहमल या फतहसिंह सीसोदिया जो राणा राजसिंहका पुत्र था । श्रखमाल – श्रखेसिंह सीसोदिया ।

२२८. सीसोद – सीसोदिया वंशका राजपूत । कुनस = कुर्नुश; कोरनिस – श्रभिवादन । गर्दन झुका कर तीन कदम पीछे हटना श्रौर प्रत्येक कदम पर हाथ से सलाम करना कोरनिस करना कहलाता है ।

तूरांण मुलक तवंद[1], रोहिलाखांन रवंद[2] ।
पह[3] करत वंदण[4] पाव, इम[5] साहका उमराव ॥ २२९
सझि सज्झि तीन सलांम, अति खमे सिर इतमांम ।
जुड़ि खड़ा विहुं[6] कर[7] जोड़, मदमसत गज घड़[8] मोड़ ॥ २३०
दूहुं राह दिस[9] कुळ दीत, इक नजर[10] कीध 'अजीत' ।
तप इसौ झळहळ तौर, 'अजमाल' जोड़ न और ॥ २३१
छक वंस पूर छतीस, स्रव[11] पाइ नांमै[12] सीस[13]* ।
'अजमाल' भूप अरोड़, जयचंद भूपति जोड़ ॥ २३२
कवित्त—ऐरापति आरिखां, पबै घण गाज पटाझर ।
ऊंच[14] स्रवा आरिखां, तुरंग घण वर सालोतर ।
राजलोक नृप[15] मिंदर[16], सकौ[17] पतिव्रत दिढ़ सुंदर ।
देस कोस अदुतीय, घणा द्रव[18] उछब[19] घरोघर ।
पाटवी कुंवर[20] दिनकर प्रभा, वसिस्ठ[21] प्रोहितराज वर ।
सासत्र[22] अजाद[23] मंत्री सदिढ़, धरपति 'अजमल' छत्रधर[24] ॥ २३३

---

१ ख. ग. तवद्द । २ ख. रवद्द । ग. रवद । ३ ख. ग. पहौ । ४ ग. वंदण । ५ ख. ग. इह । *यहाँ पर ख. और ग. प्रतियोंमें— सझि तीन तीन सलांम ।
६ ख. ग. विहुं । ७ ग. करि । ८ ख. ग. अघमोड़ । ९ ख. ग. दिसि । १० ख. नीजर । ग. निजर ।
*ख. और ग. प्रतियोंमें— छक पूर वंस छतीस ।
११ ख. पाय । १२ ख. ग. नांम । १३ ख. ग. तसीस । १४ ख. ग. उची । १५ ख. ग नृप । १६ ख. ग. मंदिर । १७ ख. ग. सको । १८ ग. द्रव्य । १९ ग. उत्छव । २० ग. कवर । २१ ख. ग. वसिष्ठ । २२ ग. सास्त्र । २३ ग. मृजाद । २४ ग. छत्रधरि ।

---

२२९. तवंद – कहते हैं । रवंद – यवन, मुसलमान ।
२३०. इतमांम – समाप्ति, पूर्ति, इत्माम । मदमसत – मदोन्मत्त । गज घड़ मोड़ – हाथियोंके दलको पीछे हटाने वाले ।
२३१. कुळ दीत– कुल आदित्य, सूर्यवंश । जोड़ – बराबर ।
२३३. पटाझर – हाथी । ऊंच स्रवा – उच्चैःश्रवा नामक इन्द्रका श्वेत रंगका घोड़ा । आरिखां– समान । तुरंग – घोड़ा । वर – श्रेष्ठ । सालोतर – शालिहोत्र । राजलोक – राजाकी पट्टराणिएं । सकौ – सब । दिढ़ – दृढ़, अटल । कोस – खजाना, कोष । अदुतीय – अद्वितीय । घरोघर – प्रत्येक घरमें । पाटवी कुंवर–जेष्ठ कुमार । दिनकर – सूर्य । सासत्र···सदिढ़ – शास्त्र-मर्यादा में सुदृढ़ ।

दूहौ[1]–अस्ट अंग राजस अडिग, जीव मंत्रि[2] दिढ़ जांणि ।
जो केहौ नृप[3] 'अजण'रै, वड कवि तिकौ[4] वखांणि ॥ २३४

कवित्त–सैंद मुगळ साजतां[5], अमी 'महमंद' वंचाए[6] ।
रांण मंत्री करि[7] अरज, दरस वड प्राग कराए[8] ।
अंब नयर[9] उथपतां, थाट 'जैसाह' थपाए[10] ।
देह सतीतफा दिली, जेण जेजियौ[11] छुडाए[12] ।
'अजण'[13]रै मंत्रि[14] पतिसाह अग्र, सझि[15] हिंदू[16] ध्रम सीमसी ।
ईसांन कियौ[17] ध्रू जिम अडिग, खलक तणै सिर खीमसी ॥ २३५

जयचंद जेम[18] 'अजीत', मसत उच्छब[19] घर मांणे ।
इंद्र जेम ओपियौ[20], 'जोध' दूजौ[21] जोधांणे ।
दिली तखत दइवांण[22], हेल मांही[23] करि[24] हिंम्मति ।
ऊथलपथल अनेक, पांन जिम किया[25] असप्पति[26] ।
'जसराज' सुतण ग्रहराज जिम, विखम राज[27] जग सिर वहै ।
तिण वार महाराजा[28] तणै, राव राजा सरणै रहै[29] ॥ २३६

---

१ ग. दुहा । २ ख. ग. मंत्री । ३ ख. ग. नृप । ४ ग. तकौ । ५ ख. ग. साझतां । ६ ग. वंचाऐ । ७ ग. कर । ८ ग. कराऐ । ९ ख. नैपर । ग. नैयर । १० ग. थपाऐ । ११ ख. ग. जेजीयौ । १२ ग. छुडाऐ । १३ ग. अजसाल । १४ ख. ग. मंत्री । १५ ग. साझि । १६ ख. ग. हींदू । १७ ख. ग. कीयौ । १८ ख. एम । १९ ख. उछ्व । ग. उत्छव । २० ख. ग. ओपीयौ । २१ ख. दुजै । २२ ख. दैवांण । ग. दईवांण । २३ ख. महि । ग. माहे । २४ ख. कर । २५ ख. ग. कीया । २६ ख. असपति । २७ ख. ग. राह । २८ ख. ग. माहाराजा । २९ ख. रह ।

---

२३४. अजण – महाराजा अजीतसिंह ।

२३५. सैंद – सयद भाई । साजतां – मारने पर । अंब नयर – आंबेर नगर । उथपतां – उन्मूलन करने पर, हटाने पर, उलटने पर । जेजियौ – जजिया नामक कर । खीमसी – भंडारी शाखाका खीमसी नामक ओसवाल जो महाराजा अजीतसिंहका पूर्ण कृपापात्र था । सतीतफा – स्तीफा, त्यागपत्र; महाराजा अजीतसिंहजी ने जजिया माफ कराने के लिए दिल्ली से सम्वन्ध-विच्छेद करने तक का निश्चय किया था ।

२३६. मांणे – उपभोग किया । ओपियौ – शोभायमान हुआ । जोध – राव जोधा । दूजौ – दूसरा । दइवांण – स्वामी, दीवान । हेल – क्रीड़ा, खेल । ऊथलपथल··· असप्पति – जिस तरह पान को उलटपुलट करते हैं उसी तरह इच्छानुसार एक के बाद एक दिल्लीके बादशाहोंको वदला । जसराज सुतण – यशवंतसिंहका पुत्र । ग्रहराज – सूर्य ।

समें[1] जेण[2] हुसनली, चूक करि हणे चकत्थां[3] ।
'अजौ'[4] क्रोध ऊफणै[5], कमध[6] सांभळ[7] इम[8] कत्थां[9] ।
वळे हुई[10] तिण वार, महीपति[11] हूं कथ मालिम ।
जुध[12] करि ग्रहियौ[13] जवन, खांन अवदुल खूंदालिम[14] ।
तदि 'अजै' भेजि दळ हणि तुरक, विखम लियौ[15] झळहळ वखत ।
आगरा दिली हूंता अधिक, तारागढ़ दूजौ[16] तखत ॥ २३७

दळ सझि 'अजौ' दुझाल, 'अजौ' तारागढ़ आयौ ।
ऊथापे असुरांण, विमळ हिंदुवांण वणायौ ।
पीर जठै पूजता, पवित्र सुर[17] जठै पुजाया[18] ।
तंबा कटती तठै[19], जिग्ग वह होम जगाया* ।
तवता[20] कुरांण काजी तठै, व्रहम पुरांण वचाविया[21] ।
आसुरां धरम मेटे 'अजै', सुरां धरम दरसाविया ॥ २३८

---

१ ख. ग. समै । २ ग. जैण । ३ ख. ग. चगयां । ४ ग. अजो । ५ ख. ऊफणे । ६ ख. कमंध । ७ ख. ग. सांभळि । ८ ग. इक । ९ ख. ग. कथां । १० ग. हुई । ११ ख. महिपति । १२ ग. जुधि । १३ ख. ग. ग्रहीयौ । १४ ख. षुंदालिम । १५ ख. ग. लीयौ । १६ ख. ग. तीजौ । १७ ग. सूर । १८ ग. पूजाया । १९ ख. तवै ।

*ख. प्रतिमें—जिठै जग होम जगाया ।
ग. प्रतिमें—जठै जिग होम जगाया ।

२० ग. हुवता । २१ ख. ग. वचावीया ।

---

२३७. हुसनली = सैयद हुसेनअली – मुहम्मद बादशाहने इसे धोखेसे मीर हैदर खां काशगरीके द्वारा मरवा डाला । चूक – धोखा, छल । चकत्थां – चगताई वंशके मुगल । अजौ – महाराजा अजीतसिंह । कमध – राठौड़ । सांभळ – सुन कर । कत्थां – वृत्तान्त । खांन अवदुल – सैयद अब्दुल्लाखां जिसको सैयद हुसेनअलीके मारे जानेके बाद मुहम्मद शाहने सुल्तान इब्राहीमके साथ ही कैद कर लिया । खूंदालिम – बादशाह । अजै – महाराजा अजीतसिंह ।

२३८. दुझाल – वीर, योद्धा । असुरांण – बादशाह । विमळ – पवित्र, उज्ज्वल । हिंदवांण – हिन्दुस्तान या हिन्दू धर्म । पीर – मुसलमानोंके धर्म गुरु, मुर्शिद । सुर – देवता । तंबा – गाय । तवता – पढ़ते, स्तवन करते थे । आसुरां – असुरों, मुसलमानों ।

संभरि[1] लीध तिण समै, लूटि डिडवांणौ[2] लीधौ।
करि दफतर तिर[3] कलम, कमंध आरंभ कीधौ।
आप[4] आय अजमेर[5], मिळै दळ सबळ महाबळ।
कागद भेजे सकळ, आय मिळळे दळ सव्वळ*।
धर-थंभ रखै खग पांण धर, धर साहां लूटै धखां।
उण वार[6] करै राजा 'अजौ', लखां खरच ओपत[7] लखां॥ २३९

समद पूर दळ सबळ, हुवा देखे[8] झाळाहळ।
'अजौ'[9] दिली ऊपरां, विखम तोलै[10] वीजूजळ।
तखत वैठि धर छत्र, कमंध इम चमर करावै।
जिकौ करै अजमेर, आपनूं जिकौ सुहावै।
गजमिका[11] तराजू अदल[12] गहि, तोग मही-मुरतब, तुरंग।
पतिसाह हुवौ 'अजमाल' पह[13], दिली जेम तारादुरंग॥ २४०

तखत रवा तइयार[14] रहै, नाळकियां[15] हाजरि[16]।
बहसि[17] गुरज बरदार, करै अतमांम[18] भयंकरि।

---

१ ग. सांभरि। २ ख. डीडवांणी। ३ ख. ग. तर। ४ ग. आय। ५ ग. मेर।
*यह पंक्ति ख. और ग. प्रतियोंमें नहीं है। यहां पर ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्ति है—
दरव झलल पहो दियै, वढ़ै दाद नीवळो वळ।
६ ग. उणवार। ७ ख. ओपत। ८ ख. देवै। ९ ख. अजो। ग. अजै। १० ख. ग. तोले। ११ ख. ग. गजसिका। १२ ख. ग. अदलि। १३ ख. ग. पौहो। १४ ख. ग. तईयार। १५ ख. ग. नाळकीयां। १६ ख. ग. हाजर। १७ ख. ग. वहसि। १८ ख. ग. अतिमांम।

---

२३९. संभरि – सांभर नगर। तिर – (?)। कलम – मुसलमान। धर थंभ – भूमिका रक्षक या सहारा, राजा। साहां – बादशाहों। धखां – (?)। अजौ – महाराजा अजीतसिंह। ओपत – आय, आमदनी।

२४०. विखम – विषम, भयंकर। तोलै – प्रहार हेतु शस्त्र उठाता है। वीजूजळ – तलवार। जिकौ–जो, वह। गजमिका–(?)। अदल–न्याय, इन्साफ। तोग–देखो पृ. २२, भाग २ की टिप्पणी। मही मुरतब – मुसलमान बादशाहोंके तथा मुगलकालीन राजाओंके आगे हाथी पर चलने वाले सात झंडे जिन पर मछली और ग्रहों आदिकी आकृतियाँ होती हैं, माहीमरातिब। तुरंग – घोड़ा। तारादुरंग – अजमेरके पासका तारागढ़।

२४१. रवा – रौनक, शोभा, रवाई। बहसि – जोशमें, उत्साहमें। गुरज बरदार–गदा नामक शस्त्र उठा कर राजा या बादशाहके आगे चलने वाला, गुर्जबरदार। अतमांम – एहतमाम।

रावराजा'र अमीर, करै सेवा जोड़े कर।
अमल कीध धर इती, सरां तीरां सर संभर[1]।
उचरेस मंडै वाका अखर[2], केवी भाजै जिम कुरंग।
पतिसाह हुवौ[3] 'अजमाल' पह[4], दिली जेम तारा दुरंग ॥ २४१

खत्रियां[5] गुर अंवखास, अनै पह[6] सभै अदालत[7]।
भुगतै सुख वह[8] भोग, सुपह[9] नित सायत[10] सायत[11]।
रमणै रमण सिकार, सभै दळ पूर सकाजा।
नौबति वाजा निहंसि[12], रजां ढांकै ग्रहराजा।
दळ उझळ[13] हुवै दसही दिसा, अलल खुरां धूजै उरंग।
पतिसाह हुवौ 'अजमाल' पह[14], दिली जेम तारा दुरंग ॥ २४२

पह[15] दाखल[16] पौसाक, अनै जवहर धर आए[17]।
एम[18] खवर[19] अनि पहां, ज्वाव पल[20] पल मझि जाए[21]।
आमदांनी[22] इक दोय[23], अनै तीसरी अवाई।
दिली तणा दसतूर, सरा तोरा पतिसाई[24]।
गजसिंघ हरौ भारी गुमर, सरव करै असपक सुरंग।
पतिसाह हुवौ[25] 'अजमाल' पह[26], दिली जेम तारा दुरंग ॥ २४३

---

१ ख. ग. संम्भर। २ ख. ग. अखिर। ३ ग. हुवो। ४ ख. ग. पौहो। ५ ख. ग. पत्रीयां। ६ ख. पोहो। ग. पौहो। ७ ख. ग. अदालति। ८ ख. ग. बहो। ९ ख. सुपहो। १० ख. आयत। ११ ख. ग. सायति। १२ ख. ग. निहसि। १३ ग. ऊझळ। १४ ख. ग. पौहो। १५ ख. ग. पौहो। १६ ख. दाखिल। ग दाखलि। १७ ख. आऐ। १८ ग. ऐम। १९ ग. खबरि। २० ख. पलि पलि। २१ ख. जाऐ। २२ ख ग. आमंदनी। २३ ख. दोइ। ग. दोई। २४ ख. पतिसाही। २५ ग. हुवो। २६ ख. ग. पौहो।

---

२४१. केवी – शत्रु। कुरंग – हरिण। अजमाल – महाराजा अजीतसिंह।

२४२. अंवखास – आम-खास। सुपह – राजा। सायत – क्षण। रमणै – शिकार खेलनेके मैदानमें। रमण – शिकार खेलनेको। नौबति – वाद्य विशेष। निहंसि – बज कर, ध्वनि कर। रजां – धूलि कणों। ढांकै – आच्छादित करता है। ग्रह राजा – सूर्य। अलल – घोड़ा। उरंग – शेषनाग। अजमाल – महाराजा अजीतसिंह।

२४३. ज्वाब – जवाब, उत्तर। अवाई – आनेकी खबर (?)। हरौ – वंशज, पौत्र। भारी – बहुत। गुमर – गर्व। असपक सुरंग – असपक, शफकतका बहुवचन है जिसका अर्थ अपनी अनुकम्पा या महरबानीसे सबको पूर्ण हर्षयुक्त करना है।

बादसाहरौ मुदफरखांन नैं महाराजा अजीतसिंह पर अजमेर छोडाण सारू दळबळ सहित भेजणौ

मंगळ क्रोध हमंद, साह प्रजळे[1] दळ सव्बळ[2] ।
खेधक मुदफरखांन, मुगळ तेड़ियौ[3] महाबळ[4] ।
तोरा फील तुरंग, बगसि[5] आरवा खजांनां ।
तीस सहंस[6] ताबीन[7], असुर दळ दीध[8] अमांना[9] ।
मुरतबौ[10] हजारी हफ्त सहि, पांन ग्रहंतां[11] पावियौ[12] ।
इम विदा होय[13] मुदफरअली[14], 'अजण' भूप दिस[15] आवियौ[16] ॥ २४४

महाराजा अजीतसिंहजीरौ महाराजकुमार अभयसिंहजीनूं मुदफरसूं मुकाबलौ करण सारू तैयार कर सांमां भेजणौ

एम[17] सुणे 'अजमाल', आप ऊपरि दळ[18] आया ।
दुझल[19] सझै[20] दरबार[21], वडा भड़[22] मंत्र[23] बुलाया ।
तेज-पुंज तेड़ियौ[24], कुंवर झळहळ क्रांमत्ती[25] ।
ऊससतौ आवियौ[26], उरस छिबतौ[27] अभपत्ती[28] ।
'अजमल' जुहार[29] बैठौ[30] 'अभौ', सनमुख[31] तेज समीपियौ[32] ।
रघुनाथ जांणि रवि[33] वंस रवि, दसरथि आगळ दीपियौ[34] ॥ २४५

---

१ ग. प्रजुळे । २ ग. सवळ । ३ ख ग. तेड़ीयौ । ४ ग. महाव्वळ । ५ ख. ग. वगसि । ६ ख. ग. सहस । ७ ख. ग. तावीन । ८ ख. लीध । ग. दीध । ९ ख. अमानां । ग. अमांमां १० ख. मुरतवौ । ११ ख. ग्रहंता । १२ ख. ग. पावीयौ । १३ ग होइ । १४ ग. मदफरली । १५ ख. दिसि । १६ ख. ग. आवीयौ । १७ ग ऐम । १८ ख. दल । १९ ग दुझले । २० ग. समें । २१ ख. दरवार । २२ ख. भड । २३ ख. ग. मंत्री । २४ ख. ग. तेडीयौ । २५ ख. ग. क्रांमती । २६ ख. आवीयौ । ग. आवयौ । २७ ख. बवतौ । ग. छत्रतौ । २८ ख. अभपती । २९ ख. ग. जुहारि । ३० ख. वैठो । ३१ ख ग. सनमुष । ३२ ख. समीपीयो । ग. समपीयौ । ३३ ग. रघुवंस । ३४ ग. दीपीयौ ।

---

२४४. मंगळ – अग्नि, आग । प्रजळ – प्रज्वलित हुई । सव्बळ – शक्तिशाली, जबरदस्त । तेड़ियौ – बुलाया । तावीन – आज्ञाकारी लोग, तावईन । मुरतबौ – पद, ओहदा । अजणभूप – महाराजा अजीतसिंह ।

२४५. मंत्र – मन्त्री । तेज-पुंज – तेजस्वी । झळहळ – देदीप्यमान । क्रांमती – कांति, दीप्ति । ऊससतौ – जोशपूर्ण होता हुआ । उरस – आसमान । छिबतौ – स्पर्श करता हुआ । अभपत्ती – महाराजकुमार अभयसिंह । अजमल – महाराजा अजीतसिंह । जुहार – अभिवादन, अभिवादन कर के । अभौ – महाराजकुमार अभयसिंह । जांणि – मानो । रवि वंस रवि – सूर्यवंशका सूर्य । आगळ – अगाड़ी । दीपियौ – शोभित हुआ ।

उण मौसर 'अगजीत', तई भुज गयण सु तोलै[1] ।
कर[2] मूंछां[3] धरि कमध[4], वहस[5] तोलै[6] खग बोलै[7] ।
सुज[8] दळ[9] महमंदसाह[10], असुर मुदफर खड़ि आए[11] ।
जियां[12] हूंत जुध करूं, चुरस सांमुहा[13] चलाए[14] ।
सुणि कहै सुभड़[15] मंत्री सकळ, लड़ण[16] वडौ मौसर[17] लभौ ।
सुण[18] एम[19] वयण 'अगजीत' सुत, अजरायल वोले[20] 'अभौ' ॥ २४६

रहौ अठै महाराज, आप आणंद उपाए[21] ।
वीड़ौ[22] मो बगसिजे[23], जड़ूं[24] मुदफर हूं[25] जाए[26] ।
जुड़ै[27] त मारूं जवन[28], भांति[29] वळ[30] काय भजाऊं ।
करि झट खंड कराळ[31], चाक खंड[32] खंड चढ़ाऊं[33] ।
पुर नारनौळ साहिजांपुरां[34], दळि[35] लूटूं[36] दसदेसनूं ।
अजमेर सोच दियूं[37] उवर[38], दिल्ली सोच दिलेसनूं ॥ २४७

---

१ ख. तोले । २ ख. करि । ३ ख. ग. मूछां । ४ ख. ग. कमंध । ५ ग. वहसि । ६ ख. ग. तोले । ७ ग. वोले । ८ ख. ग. सुजि । ९ ख. दल । १० ख. ग. महमद-साह । ११ ग. आऐ । १२ ख. जीयां । ग. जीया । १३ ग. सामुंहा । १४ ग. चलाऐ । १५ ख. सुभड । १६ ख. लडण । १७ ग. मोसर । १८ ख. झण । १९ ग. ऐम । २० ख. वोले । २१ ख. ऊपाए । ग. उपाऐ । २२ ख. वीडा । ग. वीड़ा । २३ ख. वरगसिजै । ग. वगसिजै । २४ ख. जुडुं । ग. जुडूं । २५ ग. हत । २६ ग. आऐ । २७ ग. गुडे । २८ ख. जव । २९ ख. ग. भांजि । ३० ख. वल । ३१ ख. कराल । ३२ ख. ग. खट । ३३ ग. चडाटाऊं । ३४ ग. साहिजावुरां । ३५ ख. दलि । ३६ ग. लूटू । ३७ ख. ग. जिमछूं । ३८ ख. ग. उवरि ।

---

२४६. मौसर – अवसर, मौका । अगजीत – महाराजा अजीतसिंह । तई – (?) । गयण – आकाश । वहस – जोशमें आ कर । महमंदसाह – वादशाह मुहम्मदशाह । असुर – मुसलमान । मुदफर – मुजफ्फरअलीखां । चुरस – ठीक (?) । सांमुहा – सम्मुख, सामने । वडौ – वड़ा । लभौ – प्राप्त हुआ, मिला । अजरायल – जवर-दस्त, शक्तिशाली । अभौ – महाराजकुमार अभयसिंह ।

२४७. जड़ूं – पकड़ लूं, वंधनमें डाल दूं । दिलेसनूं – वादशाहको ।

महाराजकुमारनूं जोसमें करणौ

सुत स्याबासे[1] सुपह, पांन[2] दीधा निज पांणे[3]।
कम[4] धरि[5] कसे कटार, 'अजै' बह[6] छक[7] चित आंणे[8]।
साथ दिया[9] तिण समै, उभै मिसलां उमरावां।
मंत्री रुघपति मौहरि[10], सूर ध्रम[11] अचळ सभावां[12]।
कथ कहै 'अभौ' मदफर[13] किस्यूं[14], चढ़ै[15] धकै जुध[16] चाहनूं।
जो[17] करै[18] आय पतिसाह जुध, पकडूं[19] तौ पतिसाहनूं ॥ २४८

तइ[20] साज साजि तुरग[21], आंणि पंडवां अधारे।
मेघाडंबर[22] मदफर[23], सभै[24] माहुतां[25] सिंगारै[26]।
साथ तुरां सभि साथ[27], पहर[28] समहर पौसाकां।
सावळ[29] पकड़े सूर, चढ़े दारण न्रुप चाकां।
हल्ले बहि[30] भिल्ले हमस[31], जळध उभळ्ळे करि जुवा।
दरगाह 'अजण' विमरीर[32] दळ, हुय तयार हाजर[33] हुवा ॥ २४९

---

१ ख. सावा। ग. सावा। २ ख. पांण। ३ ख. पांणे। ४ ख. ग. करि। ५ ख. भरि। ६ ख. रहौ। ७ ख. बक। ८ ख. आणे। ९ ख. ग. दीया। १० ख. मोहोरि। ग. महोरि। ११ ग. धरम। १२ ख. सुभावां। ग. सुभावा। १३ ख. ग. मुदफर। १४ ख. किसू ग. किसू। १५ ख. ग. चठै। १६ ग. जध। १७ ख. ग. जो। १८ ख. करि। १९ ख. पकडू। २० ख. तई। २१ ख. ग. तुरां। २२ ख. मेघमंदर। ग. मेघमंबर। २३ ख. मदफरां। ग. मदफरा। २४ ख. ग. सभै। २५ ख. ग. माऊतां। २६ ग. सिधारे। २७ ग. साज। २८ ख. ग. पहरि। २९ ख. सावल। ३० ख. वहीर। ग. बहीर। ३१ ख. ग. हसम। ३२ ख. विमलीर। ३३ ग. हाजरि।

---

२४८. स्यावासे – शावास कहा, धन्य-धन्य कह कर। सुपह – राजा। पांणे – हाथसे। अजै – महाराज अजीतसिंह। छक – जोश। रुघपति – भंडारी रघुनाथसिंह। मौहरि – अगाड़ी। अभौ – महाराजकुमार अभयसिंह। मदफर – मुजपफरअली। किस्यूं – क्या।

२४९. साज…तुरंग – घोड़े पर चारजामा कस कर। मेघाडंबर – छत्र विशेष। समहर – युद्ध। सावळ – भाला विशेष। जळध – जलधि, समुद्र। उभळ्ळे – उमड़े। अजण – महाराजा अजीतसिंह। विमरीर – जबरदस्त।

महाराजकुमार अभयसिंहजीरी तैयारीरो वरणण

सझि 'अजणहूं' सलांम, तांम[1] मल्हपे 'अभपत्ती'।
उरस भुजां तोलियौ, करे जप महा सकत्ती।
खुटहड़ गज जिम[2] विखम, भरे[3] पौरस भाळाहळ।
पय रकेव[4] धरि पमंग[5], हरख[6] चढ़ियौ[7] भाळाहळ।
हुय[8] तवल[9] वंब[10] दळ[11] सझि हले, दुगम गरद उडि नभ दिसौ।
उण वार रूप 'अभमाल' रौ, जोम देह धरियां[12] जिसौ॥ २५०

छंद हणूंफाळ

इम चढ़े कंवर अभंग, जगजीत करण[13] जंग।
सजि[14] साथ दळ वह[15] साज[16], रुघनाथ मंत्री[17] राज॥ २५१
वड वडा भड़ विकराळ, कमधज्ज चढ़ि कळचाळ[18]।
धर धूजि अस[19] नग धोम, वणि गरद धूंधळि[20] वोम॥ २५२
भिळे[21] तिमर ढंकियौ[22] भांण, नद घोर घण नीसांण।
हुवि[23] कमळ[24] सेस हजार, पड़ि कोम सीस[25] अपार॥ २५३

---

१ ग. ताम। २ ख. ग. जिमवीख। ३ ख. ग. भरै। ४ ख. ग. रकेव। ५ ख. पमंगे। ग. पलंगि। ६ ख. ग. हरखि। ७ ख. चढीयो। ८ ख. ग. होय। ९ ख. तवल। १० ख. वंव। ११ ख. दल। १२ ख. ग. धरीयां। १३ ग. कारणि। १४ ख. ग. सझि। १५ ख. वहो। ग. वहो। १६ ग. साझ। १७ ख. ग. मंत्रीय। १८ ख. ग. कलिचाल। १९ ख. ग. असि। २० ख. धूंधल। ग. धूंधळ। २१ ख. ग. भिलि। २२ ख. ढकीयो। ग. ढंकीयौ। २३ ख. ग. हुवि। २४ ख. कमल। २५ ख. पीठ। ग. पीव।

---

२५० अजणहूं – महाराजा अजीतसिंह। मल्हपे – छलांग भरी, कूदे। अभपत्ती – महाराजकुमार अभयसिंह। खुटहड़ – वीर। पौरस भाळाहळ – पुरुषार्थसे लबालब भरा हुआ (?)। पय – पैर। रकेब – रकाब। पमंग – घोड़ा। भाळाहळ – जोशपूर्ण (?)। तवल – बड़ा ढोल। वंब – नगाड़ा। दुगम – दुर्गम। गरद – धूलि। नभ – आकाश। दिसौ – ओर। अभमाल – महाराजकुमार अभयसिंह। जोम – जोश। जिसौ – जैसा।

२५२. विकराळ – भयंकर, जबरदस्त। कळचाळ – युद्ध। अस – घोड़ा। नग – पैर। वणि...वोम – आकाश धूलिसे आच्छादित हो गया।

२५३. तिमर – अन्धेरा। ढंकियौ – आच्छादित कर दिया। भांण – सूर्य। नद – नाद, ध्वनि। नीसांण – वाद्य विशेष। कमळ – शिर। सेस – शेषनाग। कोम – कच्छपावतार।

भरि[1] कोम कसकत भार, ढ़ह[2] जात भार अढ़ार ।
वढ़ि विखम पाहड़ वाट, घण हुवै अवघट[3] घाट ।। २५४
धर सिखर[4] थरहर धांम, तुटि[5] नदी सर जळ तांम ।
असपती धर औद्राक[6], चक च्यार चढ़िया[7] चाक ।। २५५
ऊडंत[8] खग असमांण, पड़ि गरद छूटत पांण[9] ।
परइंद नाग अपार, घण धोम वोम[10] संघार ।। २५६
आमुज्झि[11] अग[12] अकुळाइ[13], पड़ि जाय धर अत[14] पाइ ।
गजगाज[15] हींस तुरंग, दहलंत साह दुरंग[16] ।। २५७
त्रंव[17] गजर तूर त्रहाक[18], ह्वै[19] कळळ हूंकळ[20] हाक ।
तपवंत खूटत[21] ताळ[22], वणि जांणि निस वरसाळ[23] ।। २५८
हुय[24] धांम जळ विरहक्क, चय तांम छंडत चक्क ।
सझि थाट असपति साल, इम आवियौ[25] 'अभमाल' ।। २५९

---

१ ख. ग. भार । २ ख. टह । ३ ख. अणघट । ४ ख. ग. सिषर । ५ ख. ग. त्रुटि । ६ ग. ओद्राक । ७ ख. ग. चढीया । ८ क. उडंड । ९ ख. ग. प्राण । १० क. वौम । ११ ख. आंमूझि । ग. आंमुझि । १२ ख. ग. मृग । १३ ख. ग. अकुलाय । १४ ख. ग. मृत । १५ ख. ग. गजगाह । १६ ख. दुरंत । १७ ख. त्रंव । १८ ग. त्रदाक । १९ ख. ग. हुव । २० क. हुक्ल । ग. हुंकळ । २१ ख. ग. पूटत । २२ ख. ताल । २३ ख. वरसाल । २४ ख. ग. होय । २५ ख. ग. आवीयौ ।

---

२५४. भार अढ़ार – अष्टादश भार वनस्पति, आवू पर्वतका एक नाम । विखम – विषम । वाट – मार्ग । अवघट घाट – ऊँचे-नीचे, ऊबड़-खावड़ स्थान ।

२५५. औद्राक – भय, डर, उद्रेक । चक…चाक – चारों दिशाएँ चाक पर चढ़ गई, कंपायमान हो गईं ।

२५६. परइंद नाग – सपक्ष सर्प । वोम – व्योम ।

२५७. हींस – घोड़ोंकी हिनहिनाहट । तुरंग – घोड़ा । दहलंत – भयभीत, कंपायमान । साह – वादशाह । दुरंग – दुर्ग, गढ़ ।

२५८. त्रंव – नगाड़ा । गजर – आवाज । तूर – वाद्य विशेष । त्रहाक – ध्वनि । कळळ…हाक – सेनाका कोलाहल वघोड़ोंके हिनहिनाहटकी सम्मिलित ध्वनि हो रही है ।

२५९. जळ विरहक्क – जलविहीन । चय – दिग्गज, दिग्पाल । चक्क – दिशा । सझि – सुसज्जित हो कर । थाट – सेना । असपति – वादशाह । साल – शल्य । अभमाल – महाराजकुमार अभयसिंह ।

इम खबर[1] मुदफर आय, जुध आंगमिण[2] नह जाय।
इम सुणे दळ औसाप, तन मुगळ खाधी ताप ॥ २६०

विध वाघ[3] जिम वधवाव[4], पलटंत गज पछ पाव।
इम गाज सुणि 'अभमल्ल'[5], गह छाडि थाट मुगळ्ळ ॥ २६१

मुदफरखांनरौ भाग जाणौ

भजि गया विण[6] गजभार, हय थाट तीस हजार[7]।
मिट[8] लाज छाडि गुमांन, खड़ि गयौ मुदफर खांन[9] ॥ २६२

वहसतौ खाग संवाहि[10], मारतौ तो पल[11] मांहि।
'अभमाल' विरद उदार, लागै न भागां लार ॥ २६३

परि लसे सारंग[12] पीव, जिण[13] वचे मुदफर जीव।
इम करे विरद अपाल[14], मन धारि छक 'अभमाल' ॥ २६४

धर साह लूटण धाव, दळ हले जिम दरियाव।
वहसंत खांधीवंध[15], कळिचाळ सूर कमंध ॥ २६५

महाराजकुमाररौ डेरमें आग लगाणी तथा माल लूटणौ

अति धरै धक[16] अणभंग, जोधार मंडण[17] जंग।
जोजनां[18] तीन जयार[19], वणि[20] हले दळ विसतार[21] ॥ २६६

---

१ ख. पवरि। ग. पवरि। २ क. अगमिण। ख. आंगमण। ३ ख. वाग। ४ क. वधिवाव। ग. वधवाव। ५ ख. अभमल। ६ ख. ग. विणि। ७ ख. हंजार। ८ ख. ग. मिटि। ९ ख. गांन। १० ख. संवादि। ११ ग. पळ। १२ ग. सारंगि। १३ ख. ग. जिणि। १४ ग. अपाळ। १५ ख. षांगीवंध। १६ ख. ग. धप। १७ ख. रमंण। १८ ख. ग. जोजंन्न। १९ ख. ग. जियार। २० ख. ग. पणि। २१ ग. विस्तार।

---

२६०. मुदफर – मुजफ्फरअलीखां। आंगमणि – वशमें, अधिकारमें। औसाप – शौर्य, पराक्रम। ताप – भय, डर।

२६१. विध – विधि, प्रकार। वधवाव – व्याघ्रके महककी हवा। पछ – पीछा। अभमल्ल – महाराजकुमार अभयसिंहजी। गह – गर्व।

२६२. गजभार – हाथी दल। थाट – समूह, दल। खड़ि – चला कर। मुदफर खांन – मुजफ्फरअलीखां।

२६३. वहसतौ – जोशपूर्ण। संवाहि – सम्हाल कर, धारण कर। लार – पीछे।

२६४. अपाळ – अमर्यादित, अत्यन्त।

२६५. धाव – दाव, पेच। दरियाव – समुद्र। वहसंत – जोशपूर्ण होते हैं। खांधीवंध – राठौड़। कळिचाळ – युद्ध।

२६६. धक – प्रबल इच्छा। अणभंग – वीर। मंडण – करनेको। जोजनां तीन जयार – तीन योजन तक।

आवैस थकै अमास, उडि जाय गढ़[1] असि हास ।
लूटंत संपति[2] लाख, सरदांण ह्वै[3] घण साख ॥ २६७
करि तहसमहसां केक, असपत्ति सहर अनेक ।
महि साह सहरां मौड़, ठहराव सोबा[4] ठौड़ ॥ २६८
सिप्पाह[5] वसै कमंध, बावीस[6] हसती-बंध[7] ।
निज नारनौळह नांम, धुर तेग - बंदां[8] धांम[9] ॥ २६९
अनि लोक संपति इंद, जिण मांहि दळ - वाजंद[10] ।
दइवांण[11] सोबादार[12], पाठांण[13] सूर अपार ॥ २७०
अै[14] सहर को[15] ऊफांण[16], 'अभमाल' घेरे[17] आंण ।
चहुं[18] तरफ थाट चलाय, लागाय वळ वळ लाय ॥ २७१
धुबि[19] झाळ[20] झळहळ[21] धोम, हणमंत लंक जिम होम ।
जाळीस सबळ पट जागि, आलीस आलिय आगि ॥ २७२
खट[22] छपर चंदण[23] खाट, प्रजळंत[24] चँदण कपाट ।
लगि झाळ[25] प्रजळत[26] लाख, खंभ पाट चंदण खाख ॥ २७३

---

१ क. गड । ग. गडि । २ ख. असपति । ३ ग. हुवै । ४ ख. सोवा । ५ ख. ग. सिपाह । ६ ख. वावीस । ७ ख. हस्तीवंध । ग. हस्तीवंध । ८ ख. वंधां । ग. वंधां । ९ ख. धाम । १० ख. ग. वाज्यंद । ११ ख. दईवांण । १२ ख. सूवादार । ग. सूबादार । १३ ग. पाठाण । १४ ख. ग. वो । १५ ख. ग. कीध । १६ ख. ग. उफांणि । १७ ग. घेरै । १८ ख. चहुं । ग. चहु । १९ ख. ग. धुवि । २० ख. झाल । २१ ख. खलहल । २२ ख. ग. पट । २३ ख. चंद । २४ ख. प्रजलंत । २५ ख. झाल । २६ ख. प्रजलत ।

---

२६७. आवैस – आवेश, उत्साह । सरदांण – (?) ।
२६८. तहसमहसां – तहस-नहस, नाश । महि – पृथ्वी । सोबा – सूबा, प्रान्त ।
२६९. सिप्पाह – योद्धा (?), सेना । हसती-बंध – बड़ा सरदार जिसके यहाँ हाथी सवारीमें काम लिया जाता हो ।
२७०. इंद – इन्द्र । वाजंद – घोड़ा । दइवांण – महान, वीर । सोबादार – सूबादार, प्रान्तपति ।
२७१. थाट – सेना, दल ।
२७२. धुबि – प्रज्वलित हो कर । झाळ – ज्वाला, आगकी लपट । धोम – अग्नि, आग । आलीय – बढ़िया, श्रेष्ठ ।
२७३. झाळ – ज्वाला, आगकी लपट । खंभ = स्कंभ – खंभा ।

घड़[1] पड़ै सझि घमसांण, प्रजळंत[2] मुगळ[3] पठांण।
रोगनी खंभ चितरांम, विकराळ[4] झाळ[5] विरांम ॥ २७४

उड़ि पड़ै पाट दिवाळ, लगि लाल पाथर लाल।
धड़ड़ंत[6] झळ[7] धौमाल, कड़ड़ंत[8] वीज कराळ ॥ २७५

कटहड़ा[9] मंडप कराळ, झळि काठ वभकत झाळ[10]।
हिम हीर जळि[11] हिंडलाट, अंगीर दमंग उपाट ॥ २७६

इम ठांम ठांम अगन्नि[12], गहतंत लगन[13] गगन्नि[14]।
किरि[15] मिळै रवि हितकारि, पावक्क वांह[16] पसारि ॥ २७७

इम जळे घण[17] आगार[18], जळियौ[19] न वीच[20] वजार[21]।
उण ठौड़ लोक अपार, हलि धसे लूटणहार[22] ॥ २७८

सुणि[23] लूट पहल सिपाह, असि[24] सुतर लूटि[25] अथाह।
अति लीध ससत्र[26] अनोप, तहं[27] झिलम वगतर[28] टोप ॥ २७९

---

१ ख. ग. घण। २ ख. प्रजलत। ३ ख. मुगल। ४ ख. विकराला। ५ ख. झाल। ६ ख. धडडंत। ७ ख. झाल। ८ ख. कडडंत। ९ ख. कटहडा। १० ख. झाल। ११ ख. जले। १२ ग. अगिन्नि। १३ क. लगनि। १४ क. प्रगन्नि. १५ क. करि। १६ ख. वांह। १७ ख. घणा। १८ ख. अगार। ग. अंगार। १९ ख. जलीयौ। ग. जळीयौ। २० ख. ग. वीचि। २१ ख. वजार। २२ ख. आस। २३ ख. ग. सुजि। २४ ख. असी। २५ ख. ग. लीध। २६ ख. ग. सस्त्र। २७ ख. तह। ग. तहा। २८ ख. वगतर।

---

२७४. घड़ – सेना। घमसांण – युद्ध। रोगनी – रौगनी, चिकना। विरांम – निरन्तर।

२७५. पाट – मकानके छतके पत्थरोंकी दृढ़ताके लिए उनके नीचे दीवारों पर लगाया जाने वाला लम्बोतरा पत्थर। धड़ड़ंत – ध्वनि करते हुए अग्निका प्रज्वलित होना। धौमाल – अग्नि, आग।

२७६. कटहड़ा – कटघरा। वभकत – भभकती हैं। हीर – लकड़ीका मध्य ठोस भाग। हिंडलाट – (?)। दमंग – छोटे-छोटे अग्नि-कण।

२७७ किरि – मानों। रवि – सूर्य। पावक्क – अग्नि।

२७८. आगार – भवन, घर।

२७९. सुतर – ऊँट। झिलम वगतर – एक प्रकारका कवच जो युद्धके समय शिर पर धारण किया जाता है, शिरस्त्राण।

मिळ[1] थाट लुटे[2] अमीर, हिम जड़ित भूखण हीर।
तारख[3] सरखत वितांन, मूकेस[4] जरियसि मांन ॥ २८०
करि रजत कंचन केक, नागजड़ित वंस अनेक।
.... ॥ २८१
नग - जड़ित सुजड़ नराज, वडवडा मदफर[5] वाज[6]।
पौसाक ऊंच अपार, भलि[7] लुटै द्रव्य[8] भंडार ॥ २८२
बाजार[9] लुटत बजाज[10], तखतास तहतह ताज।
वधि पोत कीमति वेस[11], मझि कारचौभ मुकेस[12] ॥ २८३
सिकलात मुखमल खास, तहताज अतलस तास।
खुल[13] इळाइच खिमखाप[14], सुजि मुलमुला[15] स्रीसाप ॥ २८४
बासता[16] भिड़बच[17] बंध, सूपेत माल सुबंध[18]।
कसबीस[19] चीरा कौर, अंगरेज फिरंगी और ॥ २८५

---

१ ख. ग. मिलि। २ ग. लूटे। ३ ख. ग. तारक। ४ ख. ग. मुक्केस। ५ ख. मदझर। ६ ख. ग. बाज। ७ ख. भिलि। ग. भिळि। ८ ग. द्रव्य। ९ ख. वाजार। १० ख. वजाज। ११ ख. वेसि। ग. बेसि। १२ ख. ग. मुकेसि। १३ ख. ग. षुलि। १४ ख. ग. किमषाप। १५ ग. मुषमल। १६ ख. ग. वासता। १७ ग. भिड़चव। १८ ख. सवंध। १९ ख. कसवीस।

---

२८०. अमीर – धनाढ्य। हिम – सोना, स्वर्ण। हीर – हीरा। मुकेस – चांदी सोनेके चौड़े तार, इन तारोंका बुना कपड़ा, मुक्केस। जरियसि – चांदी सोनेके तार जिन पर सुनहला मुलम्मा हो।

२८१. रजत – चांदी, रौप्य। कंचन – स्वर्ण, सोना।

२८२. सुजड़ – कटार। नराज – तलवार। मदफर – हाथी।

२८३. पोत – वस्त्र, रेशम। वेस – पहनावा। कारचौभ – लकड़ीका चौखटा जिसमें कपड़ा कस कर कसीदेका काम होता है, जरदेजी, कसीदाकारी।

२८४. सिकलात – बहुमूल्य ऊनी बनात, सिकलात। तहताज – (?)। अतलस – एक प्रकारका बहुमूल्य रेशमी वस्त्र विशेष, अतलस। तास – एक प्रकारका सुनहले तारोंका जड़ाऊ कपड़ा। खुल – (?)। इलाइच – एक प्रकारका बहुमूल्य कपड़ा। खिमखाप – खीनखाप, एक प्रकारका बहुमूल्य कपड़ा। मुलमुला – एक प्रकारका पतला बारीक सूतसे बुना कपड़ा विशेष। स्रीसाप – एक प्रकारका बहुमूल्य कपड़ा।

२८५. बासता – एक प्रकारका लाल रंगका कपड़ा। भिड़बच – एक प्रकारका कपड़ा। सूपेत – सफेद। कसबीस – (?)। चीरा – पगड़ी (?)। कौर – गोटा, किनारी।

भर मौल[1] नीलक भार, ग्रासावरीस उदार।
दुल्लीच गिलम दुसाल, थिरमा सफंभ[2] सुथाळ[3] ॥ २८६

महि[4] माल बह[5] पसमीर, कर उतन जे[6] कसमीर।
इकतार पोत असाधि, विरहांनपुर रंग वाधि ॥ २८७

बह[7] माल सामंद बीट, छिवदार[8] वंदर छींट[9]।
गुलदार रंग गहीर, चित्रकार नाटी चीर ॥ २८८

सुजि तार[10] रेसमसूत, अति रंग छवि[11] अदभूत।
भर लुटत कीमति भार, इक[12] कपड़ गंज अपार ॥ २८९

पासार हट्ट प्रियोग, लूटंति[13] किंकर लोग।
स्रब[14] चीज मेवा सोय, कजि भार न लिए कोय ॥ २९०

बावना[15] चंदन[16] बोह[17], महि डमरग्रंबर[18] मोह[19]।
किसतूर[20] केसर[21] केक, असि ऊंट[22] भरत अनेक ॥ २९१

---

१ ख. मोर। २ ख. ग. सुपंभ। ३ ख. ग सुसाल। ४ ख. पहि। ५ ख. वहौ। ग. वहौ। ६ ख. ग. जै। ७ ख. ग. वह। ८ ख. ग. छिविदार। ९ ख. ग. छीट। १० क. तीर। ११ ख. ग. छवि। १२ क. ईक। १३ ख. ग. लूटति। १४ ख. ग. श्रब। १५ ख. वावना। १६ ख. चंदण। १७ ख. वोह। ग. वौह। १८ ख. ग. भंवर। १९ क मोह। २० ख. कस्तूर। ग. कस्तूरि। २१ ख. ग. केसरि। २२ ख. ऊट।

---

२८६. नीलक – (?)। आसावरीस – एक प्रकारका सूती कपड़ा। दुल्लीच – एक प्रकार का कालीन अथवा दुली ? गिलम – बहुत मोटा मुलायम गद्दा या बिछौना, ऊनका बना हुआ नरम और चिकना कालीन। दुसाल – एक प्रकारका ओढ़नेका कीमती कपड़ा। थिरमा – (?)। सुथाळ – (?)।

२८७. पसमीर – एक प्रकारका बहुत बढ़िया ऊनी कपड़ा जो बड़ा मुलायम और मजबूत होता है और कश्मीरमें ही सबसे अच्छा बनता है, पश्मीना। इकतार – (?)। पोत – वस्त्रकी मोटाई। वाधि – विशेष।

२८८. बीट – टापू। छिवदार – सुन्दर। छींट – एक प्रकारका कपड़ा। गुलदार – एक प्रकारका कशीदा अथवा इस प्रकारके कसीदा वाला कपड़ा। नाटी चीर – (?)।

२९०. किंकर – सेवक।

२९१. बावना चंदन – सर्वश्रेष्ठ चंदन। बौह – खुशबू।

परिपूर[1] लच्छि प्रताप, सुजि लुटत[2] हाट[3] सराप[4] ।
बह[5] मौहर रिपिया[6] बांधि[7], सिर धरे[8] चोमट[9] सांधि ॥ २६२

ग्रहि[10] ग्रमीरस[11] बेगार[12], हम्माल जेम हजार ।
तदि जंवहरी[13] हट तांम, जंवहार[14] लूटिय[15] जांम ॥ २६३

ग्रति किमति[16] हीर उदार, मांणिक्क[17] लाल मंझार ।
सझि सीप[18] ग्रोपति सिंध[19], बड वार मुकत[20] ग्रविंध[21] ॥ २६४

कलरंग घाट कुमाच, पन्नास[22] नीलम पाच ।
संग रंग ढंग सुढ़ाल[23], पुखराज ग्रन्य[24] प्रवाळ ॥ २६५

लसणिया[25] नील झळक्क[26], दुति[27] वंस[28] गोमीदक्क[29] ।
चत्र ग्रसी जाति उचार, जिण वार लूटि[30] जुहार[31] ॥ २६६

---

१ ख. परपूर । ग. पपूरि । २ ख. ग. लूटत । ३ ख. हाठ । ४ ख. सराफ । ५ ख. वौहौ । ग. बौहौ । ६ ख. रुपैया । ७ ख. बाधि । ८ ग. धरै । ९ ख. ग. चौमट । १० ग. ग्रहे । ११ क. ग्रभीरस । ग. ग्रभीर । १२ ख. वेगार । १३ ख. जवहरी । ग. जवहरी । १४ ख. जवहार । १५ ख. लूटीया । ग. लुटीया । १६ ग. कामति । १७ ग. मांणक्क । १८ ख. ग. सींप । १९ ख. सिध । ग. संधि । २० ख. मुकति । २१ ग. ग्रवीध । २२ ख. पंनास । ग. पंनांस । २३ ख. ग. सुठाल । २४ ख. ग्रनै । ग. ग्रनैं । २५ ख. ग. लसणीया । २६ ख. झलक्क । २७ ख. ग. जति । २८ ख. ग. वंत । २९ ग. गोमींदक । ३० ग. लूटै । ३१ ख. ग. जंहार ।

---

२६२. लच्छि – लक्ष्मी । सराप – सोने-चांदीका व्यापारी, सर्राफ । मौहर – स्वर्ण-मुद्रा विशेष । चोमट – (?)

२६३. वेगार – वलात् कराया हुग्रा काम । जंवहरी – जवाहरात वेचने या परखने वाला जौहरी । हट – हाट, दुकान । जंवहार – जवाहरात ।

२६४. हीर – हीरा । मुकत – मोती । ग्रविंध – बिना छेद किया हुग्रा ।

२६५. कलरंग – (?) । घाट – प्रकार । कुमाच – एक प्रकारका कपड़ा । पन्नास – पन्ना । नीलम – नीले रंगका रत्न, नीलमणि । पाच – (?) ।

२६६. लसणिया – धूमिल रंगका एक रत्न विशेष या वहुमूल्य पत्थर, रुद्राक्षक । नील – (?) । झलक्क – (?) । वंस – (?) । गोमीदक्क – एक प्रसिद्ध मणि जिसकी गणना नौ रत्नोंमें की जाती है, गोमेदक । चत्र'''जाति – चौरासी प्रकारके । जुहार – जवाहरात

लूटे[1] न ग्रेह अलीण, दुजराज न लुटे दीण।
अनि लूटि सब[2] असहास[3], सकि[4] नार-नोलह[5] नास ॥ २९७

सुणिया[6] न दीठा सोय, पहरंत[7] जंवहर[8] पोय।
अति हुवा द्रब्य[9] उपाव, रंक हुता स हुवा राव ॥ २९८

इळ[10] कनक मौ'र[11] उडाय, वधि जोम तवल[12] वजाय।
दे साह रै उर[13] दाह, इम आवियौ[14] 'अभसाह' ॥ २९९

बादसाहरौ भयभीत होणौ

इम आप डेरां ओप, दिन रात[15] वसियौ[16] दोप।
वळ[17] सभै दळ[18] विकराळ[19], चढ़[20] हले[21] कजि धक[22] चाळ[23]।

पड़[24] दिली तांम प्रकार, पड़ि[25] भार जमना[26] पार।
जवनेस लोक जितोक[27], चळचळे चंदन[28] चौक[29] ॥ ३०१

धूजंत धर तन धीर, अनि भूप सरब[30] अमीर।
दिल सोच महमंद दाह, हुय कंप[31] उर पतिसाह ॥ ३०२

---

१ ख. ग. लूट। २ ख. अव। ग. अब। ३ ख. अनहास। ४ क. ससि। ५ ख. नार-नोलह। ग. नार-नोळह। ६ ग. सुणीयां। ७ ग. पहरत। ८ ख. जवहर। ९ ख. ग. द्रव। १० ख. इल। ११ ख. ग. मोर। १२ ख. तवल। १३ ग. उरि। १४ ख. ग. आवीयो। १५ ग. रति। १६ ख. वसीयो। १७ ख. ग. बल। १८ ख. दल। १९ ख. विकराल। २० ख. ग. चठि। २१ ग. हले। २२ ख. ग. धख। २३ ख. ग. चाल। २४ ख. पडि। ग. पड़ि। २५ ख. पडि। २६ ग. जमनां। २७ ख. ग. जितोक। २८ ख. ग. चंदण। २९ क. चोक। ३० ग. सराब। ३१ ग. कैऐ।

---

२९७. अलीण – अग्राह्य, अनुचित। दुजराज – द्विजराज, ब्राह्मण। दीण – दीन, गरीब।
२९८. पहरंत – पहिनते हैं, धारण करते हैं। जंवहर – जवाहरात, रत्न। उपाव – उपाय। रंक – गरीब। हुता – थे। राव – राजा, समृद्ध।
२९९. इळ – पृथ्वी। कनक – स्वर्ण, सोना। मौ'र – मुहर, मोहर। जोम – जोश। तवल – वाद्य विशेष। अभसाह – महाराजकुमार अभयसिंह।
३००. ओप – शोभायमान हुए। दोप – (?)। कजि – लिए। धक चाळ – युद्ध।
३०१. जवनेस – यवनेश, बादशाह। जितोक – जितना। चळचळे – कम्पायमान हुये। चंदन चौक – चांदनी चौक।
३०२. अनि – अन्य। कंप – भय, डर।

ह्वै[1] करत कूक[2] हजार, पड़ि[3] ठौड़ ठौड़[4] पुकार।
दळ[5] दहल[6] ऊजड़ि[7] देस, चढ़ि तटां[8] लोक चलेस ॥ ३०३
घण सोर जोर न[9] घात[10], पड़ि दिली मझि उतपात।
धुजि मीरजादा धांम, वेसुतर[11] भाजत[12] बांम[13] ॥ ३०४
दळ दिली कळळ[14] दरोळ[15], चढ़ि वेगमां चख[16]-डोळ[17]।
तिण वार दळ[18] सुरतांण, खळ[19] भळे[20] इम खुरसांण ॥ ३०५
रुघ तपत वांण[21] सधार, खळ[22] भळे[23] जिम जळ[24] खार।
इम खड़े बाज[25] अलंग[26], आविया दळ अणभंग ॥ ३०६

साहज्यांपुर लूटणो

जवनेस नगर सजोस, पुर साहिजां सिर पोस[27]।
दळ[28] पूर सूर दुबाह, सो घेरियौ 'अभसाह' ॥ ३०७
जुध करे हण जवनांण[29], पाड़ेस[30] मुगळ[31] पठांण[32]।
जाळेस[33] पुर जिणवार, होळिका[34] जांणि हजार ॥ ३०८

---

१ ख. हुव। ग. हुव। २ ख. कूंक। ३ ख. पड़ि। ४ ख. वौड़। ५ ख. ग. दल। ६ ख. ग. दहलि। ७ ख. ग. उजड़। ८ ग. तहां। ९ ख. ग. जोरनि। १० ख. धाम। ११ ख. ग. वेसतर। १२ ग. भाजंत। १३ ख. वाम। १४ ख. कलल। १५ ख. दरोल। १६ ख. ग. चक। १७ ख. ग. डोल। १८ ख. ग. दल। १९ ख. खल। २० ख. भले। २१ ख. वाण। ग. वांण। २२ ख. खल। २३ ख. भले। २४ ख. ग. जल। २५ ख. ग. वाज। २६ ख. ग. अलंग। २७ ग. पौस। २८ ख. दल। २९ ख. जवनाण। ३० ख. पाडेस। ३१ ग. मुगल। ३२ ख. पठाण। ३३ ख. ग. जालेस। ३४ ख. ग. होलिका।

---

३०३. कूक – त्राहि-त्राहिकी पुकार। दहल – भयभीत हो कर।
३०४. मीरजादा – (मीरजाद.) मीरका लड़का शाहजादा। वेसुतर – अशान्त, भयभीत, वेसुकून। बांम – स्त्री।
३०५. कळळ – त्राहि-त्राहि। वेगमां – रानियें, वीवियें। चख-डोळ – एक प्रकारका वाहन विशेष। दळ – सेना, फौज। सुरतांण – वादशाह, सुल्तान। खळ भळे – भयभीत हो गये, घवराहटमें पड़ गये। खुरसांण – वादशाह।
३०६. रुघ – श्रीरामचंद्र भगवान। जळ खार – खारा समुद्र, लवणोद। खड़े – चल कर। बाज – घोड़ा। अलंग – दूरसे। अणभंग – वीर।
३०७. जवनेस – वादशाह। पुर साहिजां – शाहजहाँपुर। सिर पोस – सर-पोश, रक्षक। दुबाह – वीर। अभसाह – महाराजकुमार अभयसिंह।
३०८. जवनांण – यवन, मुसलमान। जांणि – मानों।

धन लूट[1] कीधौ[2] धांण, वधि नारनोळ[3] विनांण[4] ।
चंड नयर[5] रा[6] परचंड[7], दो[8] नगर अै भुजदंड[9] ।। ३०९
भांजिया[10] जिके भुजाळ[11], 'अभमाल' विरद उजाळ[12] ।
मंडियौ[13] न धके[14] मुगळ्ळ[15], इम जीपियौ[16] अभमल्ल ।। ३१०
धर साह धोकळ[17] धींग[18], सो[19] कहै धोकळसींग[20] ।
सझि साह मुलक सरद्द, मोसरां[21] पहल मरद्द ।। ३११
कुळ भांण विरद कहाय, जुध जीत तबल[22] वजाय ।
इम हले थाट अथाह, छिल[23] उरस छिब[24] 'अभसाह' ।। ३१२
गाजतां गयंद गहीर, वाजतां नौवत[25] वीर[26] ।
आवियौ[27] थाट अथाग, रंग हुवां उच्छव[28] राग ।। ३१३
'अजमाल' सजि उच्छाह, गह-महत भड़[29] दरगाह ।
उण वार 'अभमल' आय, पह[30] कीध वंदण[31] पाय ।। ३१४

---

१ ख. ग. लूटि । २ ख. कीधो । ग. कीधउ । ३ ख. नालिर । ४ ख. विनाण । ५ ख. ग. नगर । ६ ख. ग. तणा । ७ ख ग. प्रचंड । ८ ख. ग. दोव । ९ ग. भुजडंड । १० ख. भांजीया । ग. भेजीया । ११ ख. भुजाल । १२ ख. उजाल । १३ ख. ग. मंडीयौ । १४ ख. ग. धकै । १५ ग. मुगल । १६ ख. ग. जीपीयौ । १७ ख. धौंकल । ग. धोकल । १८ ख. ग. धींग । १९ ख. ग. सौंहौ । २० ग. धोकल-सींग । २१ ख. मौसरां । ग. मौसरा । २२ ख. तवल । २३ ख. ग. सिर । २४ ख. ग. छिवि । २५ ख. नौवति । ग. नौबति । २६ ग. बीर । २७ ख. ग. आवीया । २८ ख. ग. उछव । २९ ख. भड । ३० ख. ग. पीहौ । ३१ ख. ग. बंधण ।

---

३०९. कीधौ – किया । धांण – नाश, ध्वंश । विनांण – नाश । चंड नयर – दिल्ली नगर । भुजदंड – जबरदस्त ।

३१०. भुजाळ – वीर; शक्तिशाली । अभमाल – महाराजकुमार अभयसिंह । जीपियौ – विजयी हुआ । अभमल्ल – देखो ऊपर अभमाल ।

३११ धोकळ – युद्ध, लड़ाई । धींग – जबरदस्त । सरद्द – सरहद । मौसरां पहल – अवसरके पूर्व ही, श्मश्रुके बाल निकलनेके पहिले ही । मरद्द – मर्द, वीर ।

३१२. कुळ भांण – सूर्यवंश । विरद – विरुद, कीर्ति । तबल – एक प्रकारका बड़ा ढोल । थाट – सेना, दल । अथाह – अपार, असीम । छिल – उमड़ कर । उरस – आसमान ।

३१३. अथाग – अपार, असीम । रंग – हर्ष, आनन्द । उच्छव – उत्सव ।

३१४. अजमाल – महाराजा अजीतसिंह । उच्छाह – उत्साह, हर्ष । गह-महत – भीड़, समूह । दरगाह – दरबार । पह – वीर । कीध – किया ।

महाराजा अजीतसिंहजीसूं महाराजकुमार अभयसिंहजीरो मिळणो

सुत तात मिळे[1] सनेह। दो जांणि सूरज[2] देह।
अति पूर छक अमराव। पति करत वंदण[3] पाव[4] ॥ ३१५

हसि मिळे 'अजण[5]' हुळास। कमधज्ज जोम प्रकास।
उण समें[6] छभा उदार। वेखवा जिसड़ी[7] वार ॥ ३१६

धर दिली पड़ियौ[8] धोम[9]। जोधांण धरियौ[10] जोम।
उण वार सुकवि अनंत। कमधजां[11] क्रीत कहंत ॥ ३१७

धनि कमध कुळ[12] अवधेस। दुति धन्य[13] मुरधर देस।
धनि अगंज गढ़ जोधांण। पह[14] 'अजण' धनि परमांण[15] ॥ ३१८

दळ[16] साह जीपि[17] दुवाह[18], सुत तास धनि 'अभसाह।
.... ॥ ३१९

कवित्त—जदिन 'अभै'[19] जांणियौ', इळा[20] थंभण उमरावां।
गज समपण लख गांव[21], एम जांणै उमरावां[22]।
अकलवंत मंत्रियां, दुवां जांणे[23] सुखदायक।
'अजै' 'अभौ' जांणियौ, वंस[24] सूरज[25] वरदायक।

---

१ ख. ग. मिले। २ ख. ग. सूरिज। ३ ग. वंदण। ४ ख. पाय। ५ ग. अंजण। ६ ख. वार। ग. वार। ७ ख. जिसठी। ग. जिसडी। ८ ख. ग. पाडियौ। ९ ख. धौम। १० ख. थरियौ। ११ ख. कमधज्ज। ग. कमधझा। १२ ख. ग. कुल। १३ ख. ग. धन। १४ ख. पौहो। ग. पोहो। १५ ख. परमाण। १६ ख. दल। १७ ख. जीत। ग. जीते। १८ ख. दुवाह। १९ ख. ग. अभौ। २० ख. इला। २१ ख. ग. गांम। २२ ख. ग. कविरावां। २३ ख. जाणे। २४ ग. वस। २५ ग. सूरजि।

---

३१५. तात — पिता। छक — हर्ष, प्रसन्नता।

३१६. अजण — महाराजा अजीतसिंह। हुळास — हर्ष। जोम — जोश। छभा — सभा, दरबार। वेखवा — देखनेको। जिसड़ी — जैसी। वार — समय।

३१७. धोम — अग्नि, आग। जोम — जोश, उमंग। क्रीत — कीर्ति।

३१८. धनि — धन्य-धन्य। कमध — राठौड़। अवधेस — श्रीरामचन्द्र भगवान। अगंज — अजयी।

३१९. जीपि — जीत कर। दुवाह — वीर। अभसाह — अभयसिंह।

३२०. जदिन — जिस दिन। अभै — महाराजकुमार अभयसिंह। इळा — पृथ्वी। इळा थंभण — भूमि रक्षक, वीर, राजा। उमरावां — सरदारों। अजै — महाराजा अजीतसिंह। अभौ — महाराजकुमार अभयसिंह। वरदायक — यशस्वी, वीर।

जांणियौ साह महमंद[1] जदिन, जाजुळ तप 'अगजीतरौ'।
जांणियौ[2] 'अभै'[3] सारै जगत्त[4], अवतारी 'अगजीतरौ'॥ ३२०

सजि मसलत[5] सुरतांण, अनै दीवांण अमीरां।
मिळि[6] अमखास मझार[7], सझै मचकूर सधीरां।
एक छांडि अजमेर, अवर[8] लीजियै[9] मुलक अथि[10]।
नाहर-खांन नरिंद[11], कन्है[12] मेलियौ[13] कहै कथि[14]।
आवियौ खांन नाहर अडर[15], सांभ्रण[16] दाव सरीतनूं।
मगरूर सरा दरवार[17] मझि[18], जाय मिळै[19] 'अगजीत'नूं॥ ३२१

पह[20] 'अजमल' परताप, प्रसिद्ध[21] दौलत[22] इण पाई।
वार वार कीरत करै, जांणै सब लोक वडाई।
नारनौळ जाळियौ, लूट साहिजांपुर लीधौ।
बूंब हुई सब जगत, दाह साहां उर दीधौ।

---

१ ख. महमद। २ ग. जाणीयो। ३ ख. ग. अभौ। ४ ख. ग. जगति। ५ ख. ग. मसलति। ६ ख. ग. मिलि। ७ ख. ग. मझारि। ८ ग. अबर। ९ ख. ग. लीजीयो। १० ख. ग. अथ। ११ ख. रिंदरै। ग. रिंद। १२ ख. ग. कन्हे। १३ ख. मेलीयौ। ग. मेल्हीयौ। १४ ख. ग. कथ। १५ ख. ग. अडर। १६ ग. सोभ्रण। १७ ख. दरबार। १८ ख. मजि। १९ ख. मिले। ग. मिलें। २० ख. ग. पौहो। २१ ख. ग प्रसिध। २२ ख. ग. दौलति।

---

३२०. जाजुळ – जाज्वल्यमान। तप – तेज, कांति। अगजीतरौ – महाराजा अजीतसिंहका।

३२१. मसलत = मस्लहत – परामर्श, सलाह। अनै – और। अमखास – आमखास। मझार – मध्य, में। मचकूर – (?)। सधीरां – वीरों। छांडि – छोड़ कर। अवर – अपर, अन्य। अथि – अर्थ, धनदौलत। नरिंद – नरेन्द्र, राजा। कन्है – पास। कथि – कथा, वृत्तान्त। नाहर खांन – नाहरखां नामक यवन। सांभ्रण… सरीतनूं – अपना मतलब हल करनेको। मगरूर – गर्वपूर्ण, अभिमानी। अगजीतनूं – महाराजा अजीतसिंहको।

३२२. अजमल – महाराजा अजीतसिंह। प्रसिद्ध – प्रसिद्धि, कीर्ति। वडाई – वड़प्पन। साहिजांपुर – शाहजहांपुर। लीधौ – लिया। बूंब – त्राहि-त्राहिकी पुकार। दाह – जलन। साहां – बादशाहों। दीधौ – दिया।

जाळतां सहर ऊठी जिके, परजाळां असपत्तिरै ।
ऊफणि बराळां क्रोध, उरि वे झाळां असपत्तिरै ।। ३२२

आप हुवै उसवास, रविदपति सुणि इम रीसां ।
जांमन ह्वां तिण जतन, बोल बांहां बावीसां ।
खोद तजै स्रब खून, प्रगट इम आप पधारै ।
तिल उसवास न तिकौ, एम 'अभमल' उच्चारै ।
'अभमाल' कहै जांमन अवर, परठां नह तजि पांणरी ।
साहरै अम्हां जांमन सदा, जमदढ़ खग जोधांणरी ।। ३२३

सुणि कथ इम 'जैसाह', अनै उमराव इकीसां ।
जाजुळि तप जांणिऔ, विखम छवि विसवा वीसां ।
वाह वाह 'अभमाल', बोल इम कहै सवाई ।
हीमति मरदां हुवै, सझै ज्यां मदत गुसांई ।
इम कहे सकळ भड़ ऊठिया, साझण कूच समाजरौ ।
हालज्ये दिली रच्छिक हुसी, राज तपौवळ राजरौ ।। ३२४

छंद पद्धरी

किलमांण मार[1] बहु[2] गरद[3] कीध ।
लसकर तुरंग[4] गज लूटि[5] लीध ।

नोट – छंद नं० ३२२ और ३२३ ख. व ग. प्रतिमें नहीं मिले ।
१ ख. ग. मारि । २ ख. वहौ । ग. बहौ । ३ ग. गरव । ४ ग. तुरग । ५ ख. लूट ।

---

३२२. परजाळां – प्रज्वलन, दाह । असपत्तिरै – बादशाहके । ऊफणि – उबाल खा कर । बराळां – वाष्प, भाप । झाळां – आगकी लपटें ।

३२३. उसवास – दुखकी अवस्थामें ऊपरको चढ़ती हुई सांस, उच्छ्वास, लम्बी सांस । रविद-पति – बादशाह । जांमन – जामिन, प्रतिभू । खोद – बादशाह । अभमाल – महा-राजकुमार अभयसिंह । अम्हां – हम । बाहां बावीसां – बाईसों सामन्तोंकी तलवारें ।

३२४. जैसाह – सवाई राजा जयसिंह । अनै – और । जाजुळि – जाज्वल्यमान । विखम – विषम, भयंकर । विसवा वीसां – पूर्ण, पक्का, दृढ़ । वाह वाह – धन्य-धन्य, शाबास । सवाई – सवाई राजा जयसिंह । गुसांई – गोस्वामी, ईश्वर । रच्छिक – रक्षक । राज तपौ वळ – राज्य तप-बलसे प्रतिष्ठित रहे । राजरौ – श्रीमानका, आपका ।

३२५ किलमांण – यवन, मुसलमान । गरद – नाश, ध्वंश, धूलि । कीध – किये । लसकर – सेना । तुरंग – घोड़ा । लीध – लिये ।

संभळी[1] वात महमंद[2] साह ।
उर[3] क्रोध अगनि प्रजळे[4] अथाह ।। ३२५
वड वडा खांन भूपति वुलाय[5] ।
अंबखास[6] कीध पतिसाह आय ।
पहिला ज दीध पतिसाह पांन ।
खिलकत्ति इरादतिमंद खांन ।। ३२६
हैदरकुळी[7] दळ[8] बळ[9] गहीर ।
महि विदा कीध आतस[10] समीर[11] ।
महमंदखांन अमलीक - मांण ।
परठियौ[12] विदा बगसी[13] पठांण ।। ३२७
करि क्रोध विदा कीधा सक्रोध ।
'जैसिंघ' सहित वावीस[14] जोध ।
दळ[15] बळ[16] तुरंग गज ससत्र[17] द्रव्व[18] ।
समपिया[19] साह तोरा सरव्व ।। ३२८
ऊडंत घमस नौवति[20] अग्राज[21] ।
साहरा थाट हाले[22] सकाज ।

१ ख. सांभलो । ग. सांभलि । २ ख. ग. महमद । ३ ख. ग. उरि । ४ क. प्रजळै । ५ ख. वुलाय । ६ ख. अंवखास । ७ ख. हैरादकुलो । ग. हैदराकुली । ८ ख. दल । ९ ख वल । १० क. आतम । ११ ग. अमीर । १२ ख. ग. परठीयो । १३ ख. वंस । ग. वंगस । १४ ख. वम्वीस । १५ ख. दल । १६ ख. वल । १७ ख. ग. सस्त्र । १८ ख. द्रव्व । १९ ख. समपीया । ग. समपीयों । २० ख. नौवत । २१ ख. अजग्रो । २२ ख. हाले ।

---

३२५. संभळी – सुनी ।

३२६. अंवखास – आमखास । खिलकत्ति – जन-समूह, भीड़ । इरादतिमंद खांन – शर्फुद्दौला इरादतमंदखां नामक व्यक्ति, जिसे वादशाहने अजमेरका हाकिम बनाया था ।

३२७. हैदरकुळी – हैदरकुलीखां नामक व्यक्ति, जो अहमदावादसे इस समय वापिस दिल्ली आ रहा था । महमंदखांन – मुहम्मदशाह । अमलीक-मांण – अपने ऐश्वर्यका उपभोग करने वाला । परठियौ – भेजा । विदा – कूच ।

३२८. जोध – योद्धा, वीर । समपिया – समर्पण किये, दिये । तोरा – कुरब मान, तोड़े, द्रव्यकी थैलियाँ ।

३२९. घमस – ध्वनि विशेष । अग्राज – गर्जना ।

घण हले गयंद बजि[1] घरर[2] घोर ।
सहनाय तूर नक्कीब[3] सोर ।। ३२९

वहतां[4] दळ[5] ऊजड़[6] हुवै वाट[7] ।
घण घटा रूंख[8] चढ़ि गिरंद[9] घाट ।
बेबे[10] कबांण[11] तरगस्स बंध[12] ।
असुरांण कंध गिड़[13] जोम अंध ।। ३३०

काळरा[14] कुटंबी[15] रूप काळ ।
झाळरा[16] रूप चख क्रोध झाळ ।
धमचक्क चाळरा[17] बंध[18] धूत ।
भाळरा भयंकर रूप भूत[19] ।। ३३१

हालंत इसा उजबक[20] हरोळ[21] ।
चिख[22] चोळ[23] गोळ[24] एहां[25] चंदोळ[26] ।
भड़[27] इसा दसत चख[28] क्रोध भाळ[29] ।
रवदाळ[30] इसा ही जस्तराळ[31] ।। ३३२

---

१ ख. ग. वाजि । २ ख. ग. घंट । ३ ख. नक्कीव । ४ ग. वह । ५ ख. ग. दल । ६ ख. ग. उवट । ७ ख. ग. घाट । ८ ख. ग. रूप । ९ ख. ग. गिरद । १० ख. वेवे । ११ ख. कवांण । १२ ख. वंध । १३ ख. डिग । १४ ख. कालरा । १५ ख. कुटंवी । १६ ख. ग. झालरा । १७ ख. चालरा । १८ ख. वंध । १९ ग. भूप । २० ख. ग. उजवक । २१ ख. हरौल । ग. हरोळ । २२ ख. ग. चख । २३ ख. चोल । २४ ख. गोल । २५ ख एहां । ग. ऐहा । २६ ख. ग. चंदौल । २७ ख. भड । २८ ख. ग. चप । २९ ख. ग. मास । ३० ख. रवदाल । ३१ ख. ग. जदस्तरास ।

---

३२९. सहनाय – वाद्य विशेष । तूर – वाद्य विशेष । नक्कीव – वादशाह या राजाकी सवारीके अगाड़ी नजरदौलतकी आवाज लगाते हुए चलने वाला व्यक्ति विशेष ।

३३०. ऊजड़ – ऊबड़ खावड़ स्थान, उवट । वाट – मार्ग, रास्ता । गिरंद – पर्वत । घाट – पहाड़ोंके मध्यके तंग रास्ते । बेबे – दो दो । कबांण – कमान, धनुष । तरगस्स – तर्कश, भाथा । असुरांण – यवन, मुसलमान । गिड़ – मस्त ऊँट या सूअर । जोम – जोश ।

३३१. झाळ – ज्वाला, आग, आगकी लपट । चख – नेत्र । धमचक्क – युद्ध । चाळ – अंचल, वस्त्र, छोर । धूत – उन्मत्त । चख क्रोध भाळ – क्रोधमें आँखोंसे लपट निकलती हुई ।

३३२. हालंत – चलते हैं । उजबक – तातारियोंकी एक जाति, उद्दण्ड, मूर्ख । हरोळ – सेनाका अग्र भाग, हरावल । चिख – चक्षु, नेत्र । चोळ – लाल । गोळ – सेना, सेनाका मध्य भाग । चंदोळ – सेनाका पीछेका भाग । दसत – दस्त, हाथ या दिखाई देते हैं। रवदाळ – यवन, मुसलमान । जस्तराळ – छलांग भरने वाला ।

ऽवां[1] मांहि मिळै[2] 'जैसाह' आय ।
वैसंदर जांणिक झोल वाय ।
जवनांण आवियौ[3] सुणे जांम ।
तारागढ़ सझियौ[4] 'अजण' तांम ॥ ३३३

सुत 'कुसळ'[5] 'ऊद' हरवळ[6] सकज्ज[7] ।
'अमरेस'[8] तांम कीधी अरज्ज[9] ।
'अवरंग' छोडि मुन[10] सप[11] अभंग ।
'जगसाह' आप झळि[12] कीध जंग ॥ ३३४

सझियौ[13] जैतारण[14] जुध सधीर ।
'अवरंग' तणौ मारे[15] अमीर ।
दळ[16] सझि 'अवरंग'रौ फौजदार ।
विढ़ियौ[17] गढ़ आए जेण[18] वार ॥ ३३५

आपरा लूंण परताप[19] अन्न ।
'जगसाह' अगै लड़ियौ[20] जवन्न ।

---

१ ख. ग. वडां । २ ख. मिले । ग. मिलै । ३ ख. ग. आवीयौ । ४ ख. ग. सझीयौ । ५ ग. कुसुल । ६ ख. वल । ग. वल । ७ ख. सकेज । ग. सकज्ज । ८ ग. अमेरेस । ९ ख. अरज । १० ख. ग. मन । ११ ख. ग. सुप । १२ ख. वलि । १३ ख. ग. सझीयौ । १४ ख. ग. जैतारणि । १५ ख. ग. मारै । १६ ख. दल । १७ ख. विढीयौ । ग. विढीयौ । १८ ख. ग. जेणि । १९ ख. परतापि । ग. प्रताप । २० ख. ग. लडीयौ ।

---

३३३. जैसाह – सवाई राजा जयसिंह । वैसंदर – (वैश्वानर) अग्नि, आग । जांणिक – मानों । झोल – प्रवाह । जवनांण – यवन, बादशाह । जांम – समय । तारागढ़ – अजमेरके पासका किला । सझियौ – सुसज्जित किया । अजण – महाराजा अजीतसिंह ।

३३४. कुसळ – नीमाजके ठाकुर जगरामसिंहका पुत्र कुमार कुशलसिंह उदावत । ऊद – राठोड़ोंकी उदावत शाखाका वीर । हरवळ – सेनाके अगाड़ी । अमरेस – नीमाजका ठाकुर, उदावत अमरसिंह राठोड़ । अरज्ज – अर्ज, प्रार्थना । जगसाह – नीमाजके ठाकुर जगरामसिंहके लिये यह प्रयोग आया है । झळि – लिए ।

३३५. विढ़ियौ – युद्ध किया ।

३३६. अगै – पहिले, पूर्वकालमें ।

'जगसाह' आप छळि समर जोड़ि ।
मोहकम[1] दळ[2] लूटे दीध मोड़ि[3] ॥ ३३६
अनि घणा कीध जुध सुछळि[4] आप ।
पह[5] जिकौ[6] आज कीजे[7] प्रताप ।
ऊथाप हुवै नह अरज आज ।
मांगू[8] सुजि पाऊं[9] महाराज[10] ॥ ३३७
दइवांण[11] 'अजण' तद[12] वचन दीध ।
कर जोड़ि 'अमर' तदि अरज कीध ।
'महमंद' असुर पतिसाह माप ।
इम हिंदवांण[13] पतिसाह आप ॥ ३३८
तुल वाद[14] बरोबर[15] राज तेज ।
महाराज आप वधतै[16] मजेज ।
ऊथपे थपे पतिसाह आप ।
ऽवां कदे भूप न किया उथाप ॥ ३३९
धरथंभ बरोबर[17] तुजकधार[18] ।
वेढ़रौ[19] एम[20] कीधौ[21] विचार ।

---

१ ख. ग. मोहोकम । २ ख. दल । ३ ख. मोडि । ४ ख. सुछलि । ५ ख. ग. पौहो । ६ ख. ग. जिको । ७ ख. ग. कीजै । ८ ख. मांगु । ९ ख. पांऊं । ग. पाऊ । १० ख. ग. माहाराज । ११ ख. ग. दईवांण । १२ ख. ग. तदि । १३ ख. ग. हीदवांण । १४ ख. वारि । १५ ख. वरोवर । १६ ख. वधतौ । ग. वधतो । १७ ख. वरोवरि । ग. वरोवरि । १८ क. त्रुजकधार । १९ ख. ग. वेढ़िरौ । २० ग. ऐम । २१ ख. ग. कीजै ।

---

३३७. सुछळि – लिए । ऊथाप···आज – मेरी प्रार्थना आज रद्द नहीं की जाय ।

३३८. दइवांण – स्वामी, वीर । अमर – नीमाजका ठाकुर अमरसिंह उदावत जिसने तारागढ़की रक्षार्थ वड़ा शौर्यका कार्य किया था । महमंद – अवुल्फतह नासिरुद्दीन मुहम्मदशाह । हिंदवांण – हिन्दू, हिन्दू धर्म ।

३३९. तुल – तुला, तकड़ी । वधतै – विशेष । मजेज – मिजाज, गर्व । ऊथपे···आप – आपने कई वादशाहोंको तख्तसे हटा दिए और कईको वादशाह वना दिये । कदे – कभी भी ।

३४०. धरथंभ – भूमिस्तंभ, भूमिरक्षक, राजा । तुजक – तुजुक, सैन्य-सज्जा करने वाला, फौजकी व्यवस्था करने वाला, प्रवंध करने वाला । वेढ़ – युद्ध ।

साह हूं साह जूटै सक्रोध ।
जोधांण[1] हुं जूटै[2] सदा जोध ॥ ३४०

छक बाध[3] नोख[4] जोधांण छात ।
वधि तेम कीजिये[5] नोख वात ।
उण साह जोध मेले[6] अनेक ।
अर आप मेलजे[7] मूझ[8] एक[9] ॥ ३४१

गढ़ चढ़े नाळ दगऊं गरीठ ।
रवदां दळ[10] गोळां[11] करूं रीठ ।
आपरा तेजहूंता अभंग ।
जवनां[12] दळ[13] अटकूं करे जंग ॥ ३४२

मुरधरा मौहर[14] दळ सझि अमाप* ।
ऊपर[15] कजि रहिजे[16] भूप आप ।
इम सुणे रीझियौ[17] पह[18] 'अजन्न'[19] ।
जमदढ़ खग वगसे दळ[20] 'जतन्न'[21] ॥ ३४३

---

१ ख. ग. जोधां । २ ग. जुटै । ३ ख. छकवाघ । ग. छकवाधि । ४ ख. नीक । ५ ख. कीजीए । ग. कीजीयै । ६ ख. ग. मेल्हे । ७ ख. ग. मेल्हजे । ८ ख. मुझ । ९ ग. ऐक । १० ख. दल । ११ ख. गोलां । ग. गोळा । १२ ख. जवनां । १३ ख. दल । १४ ख. ग. मौहोरि ।

*ख. प्रतिमें यह पंक्ति— 'मुरधरा मौहोरि सझि दल अमाप है ।'

१५ ग. उपरि । १६ ख. रहजै । ग. रहजे । १७ ख. ग. रीझीयौ । १८ ख. ग. पोहो । १९ ख. अज्जंन । ग. अंज्झंन । २० ख. दल । २१ ख. जतत्र । ग. जतंत्र ।

---

३४०. जूटै – भिड़ते हैं ।

३४१. छक – वैभव, शौर्य । बाध – पूर्ण, सब, विशेष । नोख – श्रेष्ठ । जोधांण छात – जोधपुरका राजा । जोध – योद्धा, वीर । अर – और ।

३४२ नाळ – तोप । गरीठ – जबरदस्त, महान गरिष्ठ । दगऊं – तोप दागूं । रवदां – यवनों, मुसलमानों । रीठ – युद्ध ।

३४३. पह – राजा । अजन्न – महाराजा अजीतसिंह । जमदढ़ – कटार विशेष । दळ – सेना । जतन्न – यत्न, रक्षा ।

सिरपाव बगसि[1] बह[2] सिलह साज[3] ।
स्रीहथां[4] खाग बांधे[5] सकाज ।
कमधज्ज[6] 'अखा' हर[7] देवक्रन्न[8] ।
तड जोध सथांना[9] 'हर' सुतन्न[10] ॥ ३४४

धारे[11] छक 'मोहण'[12] हर सुधांम ।
सुजि किलादार[13] मंत्री संग्रांम ।
विजपाळ मंत्रि[14] दळ अवरि[15] बाधि[16] ।
सांमांन दीध गढ़ पहलि[17] साधि ॥ ३४५

दे कुरब[18] भाल बह[19] खांन[20] दीध ।
कमधज्ज[21] 'अमर' इम विदा कीध ।
सझि त्रण सलांम भड़ थाग[22] संग ।
भुज उरस छिवै[23] मलपै[24] अभंग ॥ ३४६

नव खंड सिरै जुध करण नांम ।
तारागढ़ चढ़ियौ[25] 'अजण'[26] तांम ।
धर ऊवर[27] कज[28] पह[29] तेज धांम ।
मुरधरा मौहर[30] मंडियौ[31] मुकांम ॥ ३४७

---

१ ख. वगसि । २ ख. वौहौ । ग. बोहो । ३ ग. सांझ । ४ ख. ग. श्रीहथां । ५ ख. वांधे । ६ ग. कमधझ्झ । ७ ख. आपहर । ग. अषाहर । ८ ख. देवक्रन । ग. देवक्रंन । ९ ख. ग. साथ । १० ख. ग. सुतंन । ११ ख. ग. धारक । १२ क. मौहण । १३ ख. किलार । १४ ख. ग. मंत्री । १५ ख. ग. अवर । १६ ख. ग. वाधि । १७ ख. ग. पहल । १८ ख. कुरव । १९ ख. वहौ । ग. बहौ । २० ख. ग. पांन । २१ ख. कमधज । ग. कमधझ्झ । २२ ग. थाट । २३ ख. ग. छिवे । २४ ख. महपे । ग. मल्हपे । २५ ख. ग. चढ़ीयौ । २६ ख. ग. अमर । २७ ख. ग. ऊपर । २८ ख. ग. कजि । २९ ख. ग. पौहौ । ३० ख. ग. मौहौरि । ३१ ख. ग. मंडीया ।

---

३४४. सिलह – अस्त्र-शस्त्र । तड़ – शाखा । सुतन्न – सुत, पुत्र ।

३४५. छक – जोश, उमंग ।

३४६. अमर – नीमाजका ठाकुर अमरसिंह । त्रण – तीन । थाग – (?) । उरस – आसमान । छिवै – स्पर्श करते हैं । मलपै – कूदते हैं । अभंग – वीर ।

३४७. सिरै – श्रेष्ठ, शिरमोर । अजण – महाराजा अजीतसिंह । मौहर – सहायक, अग्रणी । मंडियौ – बना, रचा । मुकांम – पड़ाव ।

वणियौ[1] गढ़ 'अम्मर' सूरवीर ।
कळचाळ[2] जांणि पाखर कंठीर ।
उण वार[3] असुर दळ लगा आइ[4] ।
धुवि तोप[5] मंगळ[6] गिर तर धुजाइ[7] ॥ ३४८

'अमरेस' सघण गोळां अपार ।
वरसै असुरां सिर[8] वारवार[9] ।
अति गोळां[10] झळहळ झपट आय ।
लागी वह[11] खळदळ वीच[12] लाय[13] ॥ ३४९

चालंत[14] इसा गोळा अचूक ।
भड़ भिड़ज पटाझर हुवै भूक ।
दहुं[15] तरफ झाळ धर अंबर[16] दीठ ।
रुख ओळां गोळां पड़ै रीठ ॥ ३५०

मिळ[17] उडै अरध घट रंग माट[18] ।
घण दिये[19] कबर[20] खळ अरध घाट ।

---

१ ख. ग. वणीयौ । २ ख. ग. कळिचाळ । ३ ग. बार । ४ ख. ग. आय । ५ ख. तोव । ६ ख. मंग । ७ ख. ग. धुजाय । ८ ख. ग. सिरि । ९ ग. बारवार । १० ख. गोलां । ग. गोळा । ११ ख. वौहौ । ग. वौहौ । १२ ख. ग. वीचि । १३ ख. याल । १४ ग. चाल्लत । १५ ग. दुहु । १६ ख. अंवर । १७ ख. ग. मिलि । १८ ख. ग. मांट । १९ ख. ग. दीयै । २० ख. कवर ।

---

३४८. अम्मर – नीमाज ठाकुर अमरसिंह । कळचाळ – युद्ध । जांणि – मानों । पाखर – कवच । कंठीर – सिंह । धुवि – तोपोंके छूटनेसे आवाज हो कर । मंगळ – (?) । गिर = गिरि – पर्व । तर = तरु – वृक्ष ।

३४९. अमरेस – नीमाजका ठाकुर अमरसिंह । सघण – घना । झळहळ – प्रज्वलित, आग । झपट – आगकी लपट । खळदळ – शत्रु सेना । लाय – अग्निकांड ।

३५०. भड़ – योद्धा । भिड़ज – घोड़ा । पटाझर – हाथी । भूक – चूरचूर, नाश । झाळ – आगकी लपट । धर – पृथ्वी । अंबर – आसमान । रुख – प्रकार, तरह । ओळां – वर्षा उपल । रीठ – प्रहार ।

३५१. घट – शरीर । रंग माट – रंगके मिट्टीके बने बर्तन । कबर – कब्र ।

बैरिहरां[1] दीसै रूप वाधि ।
अजमेर मेर हूंता[2] असाधि ॥ ३५१

गीत[3]

कहर इरादतमंद्र[4] 'जैसाह' हैदुरकुळी[5] ,
दळ बंगस[6] पखै[7] लागै न को[8] दाव ।
एक उमराव 'अगजीत'रै अटकिया[9] ,
असपति तणा बावीस[10] उमराव ॥ ३५२(१)
धोम धड़हड़ अनड़ दीठ[11] तोपां धुबै[12] ,
रीठ पड़ि दड़ड़ गोळां विरोधा ।
'अजा'रै हेक जोधार थांभै असुर ,
जवनरा हेक इकवीस जोधा ॥ ३५२(२)
हारि मांने[13] कियौ[14] मेळ भड़ साहरां ,
हाथ भट हजारी पंच हायौ ।
वाजतां नगारां गुमर धरियां[15] बिमर[16] ,
'अमर' छूटां पटां[17] मिळण आयौ ॥ ३५२(३)

---

१ ख. ग. वैरहरा । २ ग. हुतां । ३ ख. गीत सांणोर । ग. गीत साणोर । ४ क. मंजैसाह । ५ ख. ग. हैदरकुली । ६ ख. वगस । ग. वगस । ७ ख. ग. षपै । ८ ग. कौ । ९ ख. अटकाया । ग. अटकीया । १० ख. डावीस । ११ क. ढीठ । १२ ख. धुवै । १३ ख. माने । ग. मांनै । १४ ख. ग. धरीयां । १५ ख. ग. कीयौ । १६ ख. विहद । ग. विरद । १७ ख. झंडां ।

---

३५१. वैरिहरां – शत्रुवंशजों । वाधि – विशेष । असाधि – (?) ।

३५२(१). कहर – (कह्र) कोप, गुस्सा । इरादतमंद्र – शर्फुद्दौला इरादतमंदखां नामक व्यक्ति जिसको अजमेर छीननेके लिए अजमेरका हाकिम बना कर बादशाहने महाराजा अजीतसिंहके विरुद्ध दलवल सहित भेजा । जैसाह – सवाई जयसिंह । वंगस – यवन, मुसलमान । एक उमराव – यह नीमाज ठाकुर अमरसिंहके लिए प्रयोग किया गया है ।

३५२(२). धोम – अग्नि । धड़हड़ – आगके प्रज्वलित या तोप आदिके छूटनेकी तेज ध्वनि । अनड़ – गढ़, किला । धुबै – तोपें छूटती हैं । रीठ – प्रहार । दड़ड़ – ध्वनि विशेष । अजा – महाराजा अजीतसिंह । हेक – एक । जोधार – योद्धा, वीर । थांभै – रोक दिये ।

३५२(३). हारि – पराजय, हार । मेळ – मित्रता । गुमर – गर्व । विमर – जबरदस्त । अमर – नीमाज ठाकुर अमरसिंह । छूटां···आयौ – पूर्ण जोशमें भर कर, मिलनेके लिये आया ।

मिळे[1] 'जैसाह' उमराव[2] खांनां मिळे[3] ,
आप[4] सुत 'कुसळ' पह[5] मिळे एतै[6] ।
कहै जग थाय नह अचड़ इण विध[7] कही ,
जाय नह नांम रवि[8] चंद[9] जेतै[10] ॥ ३५२(४)

दूहौ[11]—सझि वळ[12] महमंदसाहरा, आया दळ अणपाल[13] ।
सुपह 'अजै' जै[14] सांमुहौ, मोकळियौ[15] 'अभमाल' ॥ ३५३

कवित्त—मोकळियौ[16] 'अभमाल', सझै दळ पूर सकाजा ।
असुर दळां मझि अयौ[17], विमळ वाजंतां वाजा ।
सहर लूटि[18] साहरा, अगै[19] कीधा थळ ऊथळ ।
तिण[20] नह गिणिया[21] तिकै[22], मसत छक हूंत[23] 'अभैमल'[24] ।
विच[25] साह दळां डेरा वणे, तेज पुंज आयौ तदिन ।
उतरियौ[26] गयंदहूंता 'अभौ', जळ[27] चढ़ियौ[28] मुरधर जदिन ॥ ३५४

---

१ ग. मिलै । २ ख. ग. उवराव । ३ ग. मिलै । ४ ख. आयं । ५ ख. ग. पौहौ । ६ ग. ऐतैं । ७ ख. विधि । ८ ख. ग. ससि । ९ ख. ग. सूर । १० ग. जैतैं । ११ ख. दूहा । ग. दूहो । १२ ख. दल । ग. वलि । १३ ख. अणपार । १४ ख. ग. ज्यां । १५ ग. मोकलीयौ । १६ ख. ग. मोकलीया । १७ ग. आयौ । १८ ख. लूट । १९ ग. आगैं । २० ग. तिल । २१ क गिणीयां । २२ ख. ग. तिके । २३ ग. हूं । २४ ग. अभमल । २५ ख. ग. विचि । २६ ख. ऊतरीयौ । ग. उतरीयौ । २७ ख. जलि । २८ ख. ग. चढ़ीयौ ।

३५२(४). जैसाह — सवाई राजा जयसिंह, आमेर । उमराव खांनां — निजमुल्मुल्कके लिये प्रयोग किया गया है । कुसळ — नीमाजका ठाकुर कुशलसिंह । पह — योद्धा । रवि — सूर्य ।

३५३. वळ — सेना, दल । महमंदसाह — नासिरुद्दीन मोहम्मद शाह । अणपाल — बेरोक, निःशंक । सुपह — राजा । अजै — महाराजा अजीतसिंह । जै — जिस । सांमुहौ — सम्मुख, सामने । मोकळियौ — भेजा । अभमाल — महाराजकुमार अभयसिंह ।

३५४. थळ ऊथळ — उथल-पुथल । छक — जोश । अभैमल — महाराजकुमार अभयसिंह । साह — बादशाह । तदिन — उस दिन । अभौ — महाराजकुमार अभयसिंह । जळ — कांति, शोभा । जदिन — जब, जिस दिन ।

डेरां दाखिल[1] दुभल, होय दरबार[2] कीध हद ।
जठै आदि 'जैसाह', जवन सह[3] आय मिळे जद ।
ताछ ताछ बंटि[4] अतर, संडि[5] डंवर[6] मनुहारां[7] ।
नरमी करै अनेक, 'अभा' आगळि उण वारां[8] ।
*असपती भड़ां मांझलि 'अभौ', दिपै अंजस[9] जगदीसमौ ।
बाईस[10] दबे[11] देखे बहस[12], तेज पुंज तेईसमौ[13]* ।। ३५५

---

१ ख. ग. दाषिल । २ ख. ग. दरवार । ३ ख. ग. सौंहौं । ४ ख. ग. वंटि । ५ ख. ग. मंडे । ६ ख. ग. डंवर । ७ ख. मनुह्वरा । ग. मनह्वारा । ८ ग. वारां । ९ ग. अंजस । १० ग. वाईस । ११ ख. ग. दवे । १२ ख. ग. वहस । १३ ग. तेवीसमौ ।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यहांसे आगे निम्न वर्णन अधिक मिला है—

असपति भड़ वोलीया, अभा हूता तिण ओसर ।
अजण लीध अजमेर, सहर डिडवांणां संभर ।
मारे दोय अमीर, कटक आपहर वलि कीधौ ।
नारनौल जाळीयौ, लूटि साहज्यांपुर लीधौ ।
जालतां सहर ऊठि जिके, पर जाळां तसपत्तिरै ।
उफणें वराळां क्रोध उरि, वैफाळां असपत्तिरै ।
आप हुवै असवार, रवदपति सुणि इम रीसां ।
जासन ह्वां तिण जतन, बोल वाहां वावीसां ।
खोद तजै अव पूंन, प्रगट इम आप पधारै ।
तिल उसवास नतिकौ, ऐम अभमल उचारै ।
अभमाल कहै जांमन अवर, परठांन हत जिपांणरी ।
साहरै अम्हा जांमन सदा, जमदढ़ खग जोधांणरी ।
सुणि कथ इम जैसाह, अनै उमराव इकीसां ।
जाजुलि तप जांणीयौ, विखम छवि विसवांवीसां ।
वाह वाह अभमाल, वोल इम कहे सवाई ।
हिमत्ति मरदां हुवै, सभै ज्यां मदति गुसाई ।
इम कहै सकळ भड़ उठीया, साझण कूचे समाजरौ ।
हालजे दिली रछिक हुसी, राज तपौ बळ राजरौ ।।

---

३५५. दुभल – वीर । ताछ – भांति, प्रकार । अतर – इत्र । डंबर – सुगंध, महक । नरमी – विनम्रता । अभा – महाराजकुमार अभयसिंह । आगळि – अगाड़ी । वारां – समय । असपती – बादशाह । भड़ां – योद्धाओं । मांझळि – मध्य, में ।

आय डेरां ऊमरां, कूच नग्गारा कीधा।
साह मिळे[1] 'अभसाह', दुभल नग्गारा[2] दीधा।
सझि दळ 'अजमल' सुतण, चढ़े गज हौद चमीरां।
चढ़े गजां दळ चढ़े[3], अवर बावीस[4] अमीरां।
बोह[5] ढळक[6] ढाल नेजास बोह[7], बह[8] पटझर डग[9] वेड़िया[10]।
दळसाह मोड़ि जूनी[11] दिली, खूंनी धोकळ[12] खेड़िया[13] ॥ ३५६

केक दीह मझि कमंध, 'अभौ' जोगणिपुर आए[14]।
दळ वगसी[15] र दिवांण[16], जाय अरजां गुजराए[17]।
सायत[18] देखे साह, तांम तेड़ियौ[19] 'अजण' तण।
आयौ दळ सझि 'अभौ', घणै[20] छकहूंत विरद घण।
ऊतरे गजां दरगह असुर, तेज चढ़े जगचख तिसौ।
जदि हले मसत मदझर जिहीं[21], दिलीनाथ 'महमंद'[22] दिसौ ॥ ३५७

---

१ ख. ग. मिलण। २ ख. ग नगारा। ३ ख. ग. चले। ४ ख. ग. वावीस। ५ ख. वौहौ। ६ ख. ग. ढळकि। ७ ख. वौहौं। ग. बौहो। ८ ख. वौहौं। ९ ग. गज। १० ख. वेडीया। ग. वेडीया। ११ ख. जूंनी। १२ ख. ग. धौकळि। १३ ख. ग. षेडीया। १४ ख. ग. आये। १५ ख. वगसी। १६ ख. दीवांण। १७ ग. गुराजराऐ। १८ ग. साय। १९ ख. ग. तेडीयै। २० ख. ग. घणा। २१ ख. ग. जहीं। २२ ख. महमद। ग महंमद।

---

३५६. ऊमरां – अमीरों, सरदारों। साह – बादशाह। अभसाह – महाराजकुमार अभयसिंह। अजमल – महाराजा अजीतसिंह। सुतण – पुत्र। हौद – हाथीका चारजामा विशेष। चमरां – सोनेका, स्वर्णका। ढळक – [ढालें ?]। नेजा – भाला। बह – बहुत। पटझर – हाथी। डग वेड़िया – हाथीके पैर बांधनेकी जंजीर निगड। खूंनी – कुपित। धोकळ – युद्ध।

३५७. केक – कई, कुछ। दीह – दिवस, दिन। कमंध – राठौड़। अभौ – महाराजकुमार अभयसिंह। जोगणिपुर – दिल्ली। वगसी – सेनाको वेतन देने वाला, वख्शी। दिवांण – वजीर, दीवान। सायत – अवसर, मौका। तेड़ियौ – बुलाया। अजण – महाराजा अजीतसिंह। तण – तनय, पुत्र। घणै – बहुत। छकहूंत – जोशसे। विरद घण – बहुतसे विरुदोंको धारण करने वाला। दरगह – दरबार। असुर – मुसलमान। जगचख – सूर्य। मसत – मस्त। मदझर – हाथी, गज। महमंद – नासिरुद्दीन मोहम्मद शाह नामक बादशाह। दिसौ – तरफ, ओर।

अंबखास[1] 'अभमाल', झळळ पौरस[2] झाळाहळ ।
आयौ छिवतौ[3] उरसि, बोल[4] चख चोळ महाबळ ।
तुजकमीर ताप हूं, जाव[5] दीधौ नह जाए[6] ।
सझे[7] अनंम[8] सलांम, एम[9] पाए[10] निज आए[11] ।
तप देखि हुवौ[12] दिन चंद तिम, मंद कळा महमंद मुख ।
उमराव खांन दबिया[13] अत्रर[14], रवि उदोत[15] खिद्दोत[16] रुख ।। ३५८

एम[17] देखि 'अभमाल', पांण तप तेज प्रभत्ती[18] ।
कमंध हूंत तद[19] कीध, प्रीत[20] भय[21] हुं असपत्ती[22] ।
तौरा[23] जवहर[24] तांम, किलमपति दीध कुरब कर[25] ।
सरब खून पतिसाह, माफ कीधा जिण मौसर[26] ।
इम जांण[27] साह पूजै[28] 'अभौ', आकथ वियां[29] अचंभसी[30] ।
कोपियां[31] धरा लूटी तिकौ[32], थाट दियां[33] दळ थंभसी ।। ३५९

---

१ ख. ग. आंवषास । २ ख. ग. पौरिस । ३ ख. ग. छिवितौ । ४ ख. वोल । ५ ख. जाव । ६ ग. जाऐ । ७ ख. ग. साझे । ८ ख. ग. अनम । ९ ग. ऐम । १० ग पाऐ । ११ ख आऐ । १२ ख. ग. हुवो । १३ ख. दवीया । ग. दबीया । १४ ग. अवर । १५ ख. उद्दोत । ग. उद्दौत । १६ ख. ग. षिदोत । १७ ग. ऐम । १८ ख. ग. प्रभती । १९ ख. ग. तदि । २० ख. ग. प्रीति । २१ ग. भयं । २२ क. अभपती । २३ ख. ग. तोरा । २४ ख. जंवहर । २५ ख. कुवरकर । ग. कुरबकरि । २६ ख. ग. मौसरि । २७ ख. ग. जांणि । २८ ख. पूजे । २९ ख. वीयां । ग. बीया । ३० क. अवंभसी । ३१ ख. ग. कोपीयां । ३२ ख. ग. तिको । ३३ ख. ग. लीयां ।

---

३५८. अंबखास – आम-खास । अभमाल – महाराजकुमार अभयसिंह । झळळ – देदीप्यमान । पौरस – पौरुष, शक्ति । झाळाहळ – सूर्य, अग्नि । छिवतौ – स्पर्श करता हुआ, छूता हुआ । उरसि – आसमान । चख – चक्षु, नेत्र । चोळ – लाल, रक्तवर्ण । तुजकमीर – अभियान या जलूस आदिकी व्यवस्था करने वाला कर्मचारी, मीरतुजक । ताप – भय, डर, रौब । जाव – जवाब । दीधौ – दिया । उमराव – अमीर, सरदार । खांन – मुसलमान । रवि – सूर्य । उदोत – उदय । खिद्दोत – खद्योत, नक्षत्र, जुगनू । रुख – प्रकार तरह ।

३५९. पांण – प्राण, बल, शक्ति । प्रभत्ती – प्रभा, कांति । असपत्ती – बादशाह । तौरा – आभूषण विशेष, तुर्रा । जवहर – जवाहरात । किलमपति – बादशाह । दीध – दिये । कुरब – मान, प्रतिष्ठा । खून – गुनाह, अपराध । मौसर – अवसर । पूजै – मान करता है । वियां – दूसरों । अचंभसी – आश्चर्ययुक्त ।

एक[1] समें[2] 'अभमाल', एम[3] आवियौ[4] पुजाए[5]।
दुझल वार दूसरी, चढ़ण कटहड़ै[6] चलाए[7]।
अनवह[8] चढ़े अमीर, साहजादां नह मौसर।
उठै[9] चढ़े[10] धर[11] जोम, बहसि[12] 'अभमाल' बहादर[13]।
गज तजै डांण अन[14] पह[15] गुमर, तेज साह इसड़ौ[16] तठै।
अटकियौ[17] असुर तिण पर[18] 'अभै', जमदढ़ कर धरियौ[19] जठै॥ ३६०

पेखि रोस पतिसाह, माळ मोतियां[20] समप्पै[21]।
वगसी[22] भेजि सताव[23], आंणि माळा[24] सुज[25] अप्पै।
मीर-तुजक मारिवा, धिखे जमदढ़ कर धारै[26]।
दुझल खांनदौरांस, पटाझर जिम पूंतारै[27]।
असतूत[28] करै[29] बह[30] करि अरज, जोड़े हाथ जुहारियौ[31]।
असपती मौहर[32] आंणे 'अभौ', इण विध[33] कोध उतारियौ[34]॥ ३६१

---

१ ग. ऐक। २ ख. ग. समैं। ३ ग. ऐम। ४ ख. ग आवीयौ। ५ ग. पुजाऐ। ६ ख. कटहलै। ७ ग. चलाऐ। ८ ख. अतिनह। ग. अनिनह। ९ ख. ग. जठै। १० ख. ग चढ़े। ११ ख. ग. धरि। १२ ख. ग. वहसि। १३ ख. वहादर। १४ ख. ग. अनि। १५ ख. ग. पौहो। १६ ग. इसडो। १७ ग. अटकीयौ। १८ ग. परि। १९ ख. ग. धरीयौ। २० ख. ग. मोतीयां। २१ ख. समप्पे। ग. सम्मपे। २२ ख. वगसी। २३ ख. सताव। २४ ख. ग. माला। २५ ख. ग. सुजि। २६ ख. धारे। २७ ख. ग. पौंतारे। २८ ग. असतुति। २९ ग. करे। ३० ख. वौहो। ग. वौहो। ३१ ख. जवारीयौ। ग. जह्वारीयौ। ३२ ख. मौहोरि। ग. मौहोरि। ३३ ग. विधि। ३४ ख. ग. उतारीयौ।

---

३६०. आवियौ – आया। दुझल – वीर। वार – समय, वेला। कटहड़ै – कटहरा। धर – धारण कर के। जोम – जोश, आवेश। वहसि – जोशमें आ कर (?)। डांण – मद जो हाथीके मस्तक पर श्रवता है, दान। अन – अन्य। पह – राजा, योद्धा। गुमर – गर्व। साह – बादशाह। इसड़ौ – ऐसा। अभै – महाराजकुमार अभयसिंह।

३६१. वगसी – बख्शी। सताव – शीघ्र। समप्पै – समर्पण किया। मीर तुजक – सेनाका या अभियान तथा जलूसकी तैयारीका प्रबंधकर्त्ता कर्मचारी। धिखे – क्रोधपूर्ण हो कर। जमदढ़ – कटार विशेष। खांन दौरां – (?)। पटाझर – साथी। पूंतारै – जोश दिलाता है, उत्साहित करता है। असतूत – अस्तुति, प्रार्थना। जोड़े हाथ – करबद्ध हो कर। जुहारियौ – अभिवादन किया। असपती – बादशाह। मौहर – अगाड़ी, अग्र। आंणे – ला कर। अभौ – महाराजकुमार अभयसिंह।

खौदालम अंबखास, अचड़ कटहड़ै उबारी[1] ।
धरे[2] गरब[3] जोधांण, करग धारतां कटारी ।
इण विध[4] मेळ अमेळ, करै साहां कळिनारौ ।
सीख करे साहसूं, अडर मलपियौ[5] 'अजा'रौ[6] ।
असवार हुवौ[7] गज ऊपरा, चढ़ि छक थाट चलावियौ[8] ।
इम अचड़ खाट[9] छिबतौ[10] उरस[11], 'अभमल' डेरां आवियौ[12] ॥ ३६२

सोरठा[13]

इम अचड़ां अणपाल, कंवरांगुर दिन दिन करै ।
मरूधर 'अभमाल', अति छक धारै 'अजण' उत[14] ॥ ३६३
जोधांणौ[15] जिण वार, इळ[16] मांणै राजा 'अजौ' ।
आसीसै[17] अणपार, जस खट व्रन[18] 'जसराज' उत[19] ॥ ३६४
सांसण जूना[20] सोय, दत मुकदम भूपाळ[21] दत ।
करै न खेचल कोय, जगपाळग 'जसराज' उत[22] ॥ ३६५

१ ख. ग. उवारी । २ ख. ग. धरीयौ । ३ ख. ग्रव । ग. गरव । ४ ख. ग. विधि । ५ ख. ग. मल्हपीयौ । ६ ख. अडारौ । ७ ख. हूवौ । ८ ख. चलाइयौ । ग. चलावीयौ । ९ ख. खाटि । १० ख. ग. छिवतौ । ११ ग. उरसि । १२ ख. ग. आवीयौ । १३ ख. दूहा सोरठा । ग. दुहा सोरठा । १४ ख. ग. ऊत । १५ ख. जोधांणै । ग. जोधणै । १६ ख. इण । १७ ख. आसी । १८ ख. व्रण । ग. व्रण । १९ ख. ग. ऊत । २० ख. जूनो । २१ ख. नूपाल । २२ ख. ग. ऊत ।

---

३६२. खौदालम – बादशाह । अंबखास – आमखास । अचड़ – कीर्ति । कटहड़ै – राजा-महाराजा या बादशाहके इर्द-गिर्द बनी काष्ठकी प्रवेष्ठिनीमें । उबारी – रक्षा की । मेळ – मैत्री । अमेळ – शत्रुता । कळिनारौ – (?) । मलपियौ – कूदा, छलांग भरी । अजारौ – महाराजा अजीतसिंहका, महाराजकुमार अभयसिंह । खाट – प्राप्त कर के ।

३६३. अणपाल – बेरोकटोक । कंवरांगुर – महाराजकुमार श्रेष्ठ अभयसिंह । छक – जोश, शक्ति । अजण उत – महाराजा अजीतसिंहका पुत्र महाराजकुमार अभयसिंह ।

३६४. इळ – पृथ्वी । मांणै – उपभोग करता है । अजौ – महाराजा अजीतसिंह । खट व्रन – ब्राह्मणादि छः जातियाँ विशेष । जसराज उत – महाराजा जसवंतसिंहका पुत्र महाराजा अजीतसिंह ।

३६५. जूना – प्राचीन, पुराना । दत – दान । मुकदम – प्रधान, मुख्य, मुकद्दम । खेचल – तकलीफ, कष्ट । जगपाळग – संसारका पालनकर्त्ता ।

जस ध्रम काज[1] जगीस, नवां गांव[2] 'अजमल' नरिंद ।
तांवापत्र[3] व्रवि[4] तीस, जस लीधौ[5] 'जसराज'-उत[6] ॥ ३६६

कवि उमरावां केक[7], दुजां केक मंत्रियां[8] दिया ।
इम गज किया[9] अनेक, जगि घर[10] घर 'जसराज'-उत[11] ॥ ३६७

सुजि घर असि सिरपाव, दुफ्ल कड़ा मोती दुगम[12] ।
दिल 'अजमल' दरियाव, जग[13] दीधा 'जसराज'-उत[14] * ॥ ३६८

वणि हरचंद जिम वार, वधियौ[15] सुख चहुंवै वरण ।
तप रवि जिम तिण वार, जग ऊपर[16] 'जसराज'-उत[17] ॥ ३६९

°धरि[18] हिंदवांणां ढाळ, दावावंध दिलेसरां[19] ।
इम स्रुग[20] गौ 'अजमाल', जस खाटे 'जसराज'-उत[21] ॥ ३७०

इति षस्ट प्रकरण ।

*

१ ख. ग काजि । २ ख. ग. गांम । ३ ख. तांवापत्र । ४ ववि । ग. व्रवि । ५ ख. ग लीधा । ६ ख. ग. ऊत । ७ ख. केम । ८ ख. ग. मंत्रीयां । ९ ख. ग. कीया । १० ख. ग. घरि घरि । ११ ख. ग. ऊत । १२ ख. दरव । ग. दरब । १३ ख. ग. जगि । १४ ख. ग. ऊत ।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है— 'अजमल दिल दरियाव ।'

१५ ख. ग. वधीयौ । १६ ख. ग. ऊपरि । १७ ख. ग. ऊत । १८ ग. धर । १९ ग. दिलेसुरां । २० ग स्रुगि । २१ ग. ऊत ।

°ये दो पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं ।

३६६. जगीस – राजा, नृप । तांबापत्र – दानमें दी गई भूमिका सनद-पत्र जो तांबकी चद्दर पर बना हुआ होता है । व्रवि – दे कर ।

३६७. दुजां – द्विजों, ब्राह्मणों ।

३६८. अजमल – महाराजा अजीतसिंह ।

३६९. हरचंद – सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र । वार – समय । चहुंवै – चारों ।

३७०. हिंदवांणां – हिन्दुओं । दावावंध – दावा करने वाला, शत्रु । दिलेसरां – बादशाहों । स्रुग – स्वर्ग । गौ – गया । अजमाल – महाराजा अजीतसिंह ।

दिल्लीमें महाराजा अभयसिंहरै राजतिलकरौ वरणण

कवित्त—तदिन 'अभा'रै तिलक, साह स्रीहथां सधारे[1]।
ते[2] अबींद मोतियां[3], अखित स्रीहथां अधारे*।
राज इंद्र राजेस[4], रटै[5] स्रीमुख महाराजा[6]।
स्री कमळे[7] सोहिया[8], रूप स्रीवंत ग्रहराजा।
स्रीहथां साह सिरपाव सजि[9], असि[10] गज ब्रविस्रीनग[11] अथां[12]।
स्रीहथां खाग खंजर सहित, सुजड़ बंधाए[13] स्रीहथां ॥ १

दूहौ[14]—इम विध[15] विध 'अभमाल'रौ, सझै कुरब[16] सुरतांण।
अति झळहळ तप ओपियौ[17], भळहळ कमधां भांण ॥ २

छंद पद्धरी

तपवंत भूप[18] निज धांम तत्र।
छज कनक सिघासण चमर छत्र।
दुतिवंत करे सन्नांन[19] दांन।
विध[20] राज रीत सासत्र[21] विधांन ॥ ३
पौसाक ऊंच[22] जवहर अपार।
करि जोतवंत[23] भूखण प्रकार।

---

१ ख. अधारे। २ ग. तै। ३ ग. मोतीयां।
*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है।
४ ग. राजेसु। ५ ख. ग. रटे। ६ ख. ग. माहाराजा। ७ ख. कम्मलि। ग. कंम्मलि। ८ ख. ग. सोहीया। ९ ख. ग. सझि। १० ख. अजि। ११ ग. भग। १२ ख. हथां। १३ ख. वंधाए। ग. वंधाऐ। १४ ख. ग. दोहा। १५ ख. ग. विधि विधि। १६ ख. कुरव। १७ ख. ग. ओपीयौ। १८ ख. धूप। १९ ख. ग. संन्नांन। २० ख. ग. विधि। २१ ख. ग. सास्त्र। २२ ख. उंच। २३ ख. ग. जोतिवंत।

---

१. तदिन – उस दिन। अभारै – महाराजा अभयसिंहके। अबींद – अविद्ध, बिना छेदके। साह – बादशाह। अखित– अक्षत। स्रीहथां – अपने स्वयंके हाथों। अधारे – किया। राजेस – सुशोभित होता है। कमळे – शिर पर, शिरसे। सोहिया – सुशोभित हुआ। स्रीवंत – लक्ष्मीवान्। ग्रहराजा – सूर्य, भानु। ब्रवि – दे कर। सुजड़ – कटार। बंधाए – धारण करवाए।

२. अभमाल – महाराजा अभयसिंह। झळहळ – प्रज्वलित, देदीप्यमान। तप – ऐश्वर्य। कमधां – राठौड़ों। भांण – सूर्य।

३. तपवंत – तपस्यापूर्ण, ऐश्वर्यवान। तत्र – वहां। छज – सुशोभित हो कर। कनक – सुवर्ण, सोना। दुतिवंत – कांतिवान। सन्नांन – स्नान। विध – विधि, ढंग, कानून।

४. ऊंच – बढ़िया, श्रेष्ठ। जवहर – जवाहरात। जोतवंत – ज्योतिवान। भूखण – आभूषण।

*कसि जड़ित जवाहर खग कटार ।
तुररास जवाहर रूप तार ॥ ४
सोव्रन्न[1] जवाहर अति सरूप ।
धरि जड़ित जवाहर पांणि धूप ।*
जयजरी सिमांनां खंभ जड़ाव ।
तै रूप मेख रेसम तणाव ॥ ५
पग मंडा जरकसी वणि अपार ।
वरियांम मलपियौ[2] जेण[3] वार ।
आवियौ[4] सिंहासण[5] राज इंद्र[6] ।
व्राजियौ[7] सिंघासण[8] कीत विंद[9] ॥ ६
ओपियौ[10] छत्र जगमग उदार ।
चौसरा चमर उजळंग चार ।
प्रत जोतग सासत्र[11] सुभ[12] प्रमांण[13] ।
अभिखेक दीध द्विजराज आंण[14] ॥ ७

---

१ ग. सोवन्न । *ख. प्रतिमें ये पंक्तियां अपूर्ण हैं ।
२ ख. ग. मलपीयौ । ३ ख. ग. जेणि । ४ ख. ग. आवीयौ । ५ ख. सिंहासणि । ग. सिंघासणि । ६ ख. ग. यंद । ७ ख. ग. व्राजीयौ । ८ ख. ग. सिंघासणि । ९ ख. वंद । ग. वंद । १० ख. वोपीयौ । ग. ओपीयौ । ११ ख. सास्त्र । १२ ग. सुत । १३ ख. ग. प्रमांणि । १४ ख. ग. आंणि ।

---

४. जवाहर – जवाहरात ।

५. स्रोव्रन्न – सोना, सुवर्ण । सरूप – सुन्दर, मनोहर । पांणि – हाथ (?) । धूप – तलवार । जयजरी – जरीदार । सिमांनां – शामियाना । तणाव – वे रस्सियाँ जिनके सहारे तंबू खड़ा किया जाता है ।

६. पग मंडा – वह कपड़ा या बिछौना जो आदरके लिए किसी महापुरुष या राजा महाराजाके मार्गमें बिछाया जाता है । वरियांम – वीर, श्रेष्ठ । मलपियौ – चला, छलांग भरी । व्राजियौ – बैठा, सुशोभित हुआ । कीत – कीर्ति । वींद – दूल्हा, पति ।

७. जगमग – चमक-दमकयुक्त । चौसरा – पुष्पहार, फूलोंकी मालाएँ । उजळंग = उज्ज्वल + अंग – उज्ज्वल । जोतग – ज्योतिष । अभिखेक – अभिषेक । दीध – दिया । द्विजराज – ब्राह्मण । आंण – आ कर, बुला कर ।

पह[1] तिलक कीध कुंकम सु पांणि[2] ।
मोतियां अक्षत[3] चाढ़े[4] प्रमांणि ।
जस जोतख[5] द्विज्ज[6] लिखंत[7] जंत्र ।*
मुख[8] पढ़त महा[9] द्विज[10] वेद[11] मंत्र ॥ ८
करि करि नौछावरि[12] द्रव्व[13] केक ।
उछळंत हीर मोती अनेक ।
पन्नास[14] लाल मांणिक अपार ।
ध्रवि जांणि जवाहर[15] सघण धार ॥ ९
सहनाय मुरसलां रंग सवाद ।
नववती[16] घोर मंगळीक नाद ।
सुभ[17] सुभड़ मंत्रि[18] कनि[19] लोक सव्व[20] ।
दुति करति[21] नजर घण रज[22] दरव्व[23] ॥ १०
वरदाइ[24] पढ़त गुण कवि वखांणि[25] ।
मंगळीक वयण मौसर प्रमांणि[26] ।

---

१ ख. ग. पौहो। २ ख. प्रमांणि। ३ ख. ग. अषित। ४ ग. चाढ़े। ५ ख. ग. जैत। ६ ख. ग. दुज। ७ ख. ग. लिखत।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है—

जस जैत पत्र दुज लिखत जंत्र।

८ ख. ग. मुषि। ९ ख. माहा। १० क. द्वज। ११ ख. देव। १२ ख. ग. नवछावरि। १३ ख. द्रव। ग. द्रव। १४ ख. पनास। १५ ग. जंवाहर। १६ ख. नववति। ग. नववत्ति। १७ ख. ग. सुजि। १८ ख. ग. मंत्री। १९ ख. करि। २० ख. स्रव्व। ग. श्रव्व। २१ ख. ग. करत। २२ ख. रतन। ग. रजत। २३ ख. ग. द्रव्व। २४ ख. ग. वरदाय। २५ ख. ग. वषांण। २६ ख. ग. प्रमांण।

---

८. सु पांणि – सुन्दर हाथसे। जोतख – ज्योतिष। द्विज्ज – ब्राह्मण। जंत्र – यंत्र।

९. नौछावरि – न्यौछावर। द्रव्व – द्रव्य, धन। हीर – हीरा। ध्रवि – वर्षा, बरसात हुई। जांणि – मानों, जैसे। सघण – सघन, घना।

१०. सहनाय – सहनाई नामक वाद्य विशेष। मुरसलां – वाद्य विशेषों। नववती – नौबत। मंगळीक – मांगलिक। सुभड़ – योद्धा। सव्व – सर्व, सब। रज = रजत, चांदी। दरव्व – द्रव्य, धन-दौलत।

११. वरदाइ – जोश दिला कर, विरुदां कर। गुण – कीर्ति, यश। वयण – वचन, शब्द। मौसर – अवसर, मौका।

राजसी अंग पौसाक रूप ।
भळहळत जोत रवि जेम भूप ॥ ११

अंग तेजवंत सोभा अनंग ।
'अजमाल' पाट[1] 'अभमल' अभंग ।
वरियांम[2] सीस[3] किय[4] जेण[5] वार[6] ।
आरती राज - प्रोहित उदार ॥ १२

सोहियौ[7] 'अभौ' इण विध[8] सकाज ।
रघुवंस[9] उजागर महाराज[10] ।
वाधारण हिंदुसथांन[11] वांन ।
'अभमाल' जोड़[12] नह भूप आंन ॥ १३

स्री भगवतगीता हित सधार ।
स्री क्रस्ण[13] अजन हूं कहै[14] सार ।
नर देह तणै[15] मझ्क[16] हूं नरिंद ।
औ 'अभौ' जिकौ जोधांण इंद* ॥ १४

---

१ ख. पाटि । ग. पाटि । २ ख. वरीयाम । ग. वरीयाम । ३ ग. सीसि । ४ ग. कीय । ५ ख. ग. जेणि । ६ ग. वार । ७ ख. ग. सोहीयौ । ८ ख. ग. विधि । ९ ग. रघुवंसि । १० ख. ग. माहाराजा । ११ ख. ग. हींदुसथांन । १२ ग. जोड़ि । १३ ख. ग. कृष्ण । १४ ख. ग. कहे । १५ ग. तणैं । १६ ख. ग. मझ्कि ।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति इस प्रकार है—

औ जिको अभौ जोधांण इद ।

---

११. झळहळत – देदीप्यमान होता है । रवि – सूर्य ।

१२. अनंग – कामदेव । अजमाल – महाराजा अजीतसिंह । अभमल – महाराजा अभयसिंह । अभंग – वीर, योद्धा ।

१३. सोहियौ – सुशोभित हुआ । अभौ – महाराजा अभयसिंह । उजागर – उज्ज्वल करने वाला । वधारण – बढ़ानेको । वांन – कीर्ति, यश । जोड़ – बराबर, समान । आंन – अन्य, दूसरा ।

१४. अजन – वीर अर्जुन । अभौ – महाराजा अभयसिंह । जिकौ – वह । जोधांण इंद – जोधपुरका स्वामी या राजा ।

प्रम अंस सूर दाता प्रमांण ।
वित[1] दियण लियण[2] मुंहगा[3] वखांण ।
लख समपण भांजण खळां[4] लाख ।
सूरजकुळ[5] सूरज[6] तेर साख ॥ १५

थट नाथ फबै[7] बळ[8] पूर थाट ।
परताप चौगुणै[9] 'अजण' पाट ।
.... ।
.... ॥ १६

कवित्त–चढ़ि प्रताप चौगुणै, पाट[10] पिततणै[11] प्रभत्ती ।
असपत्ती अरधियौ[12], पेखि पौरस[13] छत्रपत्ती ।
भड़[14] तोरा[15] गज भिड़ज, जड़ित सोव्रन्न[16] जवाहर[17] ।
गढ़ बगसै[18] नागोर[19], दुसह दहले[20] दावागर ।
साह हूं विदा हुय[21] दळ सझै, नरिंद असौ फबियौ[22] नभौ ।
'अजमाल' व्रहम लग आखिया[23], इता नीर चाढ़ै 'अभौ' ॥ १७

---

१ ग. वित्त । २ ख. ग. लीयण । ३ ख. ग. मौहगा । ४ ख. लषां । ५ ख. ग. सूरिजकुल । ६ ग. सूरिज । ७ ख. फते । ग. फवे । ८ ख. वल । ९ ख. चौगणे । ग. चौंगणें । १० ख. ग. पाटि । ११ ग. तणें । १२ ख. ग. अरधीयौ । १३ ग. पौरिस । १४ ख. ग. भर । १५ ख. नोरा । १६ ख. सोवन । ग. सोव्रन । १७ ख. जंवाहर । ग. जंवारह । १८ ख. ग. वगसे । १९ ग. नागौर । २० ख. दहवे । २१ ख. ग. होय । २२ ख. फवीयौ । ग. फबीयौ । २३ ख. ग. आषीया ।

---

१५. प्रम – परम, विष्णु, ईश्वर । वित – धन, द्रव्य । दियण – देने वाला । लियण – लेने वाला । मुंहगा – महंगा । वखांण – कीर्ति, यश । लख – लाख, लक्ष । समपण – देनेके लिये । भांजण – नाश करनेको ।

१६. थट – वैभव, ऐश्वर्य । फबै – सुशोभित होता है । थाट – वैभव, सेना । अजण – महाराजा अजीतसिंह । पाट – राज्यसिंहासन ।

१७. पिततणै – पिताके । प्रभत्ती – कीर्ति, यश । असपत्ती – बादशाह । अरधियौ – आधे भागका मालिक, अर्द्ध शक्तिवान । पेखि – देख कर । पौरस – पौरुष, शक्ति । छत्रपत्ती – राजा । भड़ – योद्धा । तोरा – तोड़ा, रुपयोंकी थैली । भिड़ज – घोड़ा । सोव्रन्न – सुवर्ण, सोना । दुसह – शत्रु । दहले – भयभीत हुए । दावागर – शत्रु । साहहूं – बादशाहसे । विदा – प्रस्थान, कूच । असौ – ऐसा । फबियौ – सुशोभित हुआ । नभौ – आकाश, नभ । अभौ – महराजा अभयसिंह ।

महाराजा अभयसिंहरौ जोधपुर दिस आगमन

सभि दळ झळहळ सकळ, गयंद चढ़ियौ[1] गह धारे ।
हळाबोळ[2] दळ हले, वाजि दुंदुभ[3] जिण वारे ।
धमस नाळ रजधोम[4], झळळ तप झंख कमळ झळ ।
धर थरसळ धरधरण, उतन दिस हलै[5] 'अभैमल' ।
ढळकतां[6] ढाल[7] मदधर[8] धजां, घंट घोर अग्राज[9] घण ।
चढ़ियां[10] मजेज होतां चमर, तेजपुंज 'अगजीत'तण ।। १८

दाह[11] केक मझि[12] दुझल, 'अभौ' मुरधर मझि आए[13] ।
मिळे बंधव[14] भड़ मंत्री, प्रजा आणंद सुख पाए[15] ।
दावागर गा दहलि, मिळे[16] सरणां गिर-झंगर ।
चित सयणां सुख चहै, कहै जस विरद कवेसर[17] ।
करि ठांम ठांम वंदण कळस, सरस गांम निज गांम सुख ।
ह्वै नजर नरां सांमंद हरख, राका निस सांमंद रुख ।। १९

---

१ ख. ग. चढ़ीयौ । २ ख. हळावोळ । ३ ग. दुंदुभि । ४ ग. रजधौम । ५ ख. हले । ६ ग. ढळकंत । ७ ख. ग. ढाळ । ८ ग. मदझर । ९ ग. आग्राज । १० ख. ग. चढ़ीयां । ११ ग. दीह । १२ ग. सझि । १३ ग. आऐ । १४ ख. वंधव । १५ ग. पाऐ । १६ ग. झळे । १७ ग. कवेसुर ।

---

१८. झळहळ – तेजस्वी (?) । सकळ – सव । गह – गर्व । हळाबोळ – समुद्र, महासागर । दुंदुभ – नक्कारा । धमस – प्रहार । नाळ – घोड़ोंके टापके नीचे लगाया जाने वाला वृत्ताकार उपकरण । रज – धूलि । धोम – धुँआ । झळळ – सूर्य । तप – प्रकाश, तेज । झंख – मन्द दिखाई देनेका भाव । कमळ झळ – कमल मुर्झा गये । धर – पृथ्वी । थरसळ – कंपायमान । धरधरण – शेषनाग । उतन – जन्म-भूमि, वतन । दिस – तरफ, ओर । अभैमल – महाराजा अभयसिंह । ढळकतां – लुढ़कते हुए । मदधर – हाथी । धजां – ध्वजाएँ । घंट – घंटा । घोर – तेज । अग्राज – गर्जना, ध्वनि । घण – बहुत, मेघ । मजेज – शीघ्र । अगजीत – महाराजा अजीतसिंह । तण – तनय, पुत्र ।

१९. दाह – जलन । केक – कई, कुछ । दुझल – वीर । अभौ – महाराजा अभयसिंह । मझि – मध्य, में । दावागर – शत्रु । दहलि – भयभीत हो कर । गिर-झंगर – गिरि-कुंज या पहाड़ोंकी झाड़ी । सयणां – हितैषियों । विरद – विरुद । कवेसर – कवीश्वर, महाकवि । ठांम – स्थान । वंदण – अभिवादन । सरस – आनन्दपूर्वक । सांमंद – समुद्र । राका – पूर्णमासी । निसा – रात्रि । रुख – तरह, प्रकार ।

जदि नजीक जोधांण, सभै मुक्कांम सकाजा ।
अंग केसर वहौ अतर, मंडे डंबर महाराजा ।
मंडे गोठ जीमियौ[1], जोध कवि थाट जिमाए[2] ।
करि[3] जळ नूमळ[4] कपूर, पांनि[5] आरोगि प्रभाए[6] ।
पौसाक ऊंच जवहर पहरि, कसि आवध[7] चढ़ियौ[8] करी ।
वणि हले थाट सोभा वणी, इंद्र जेम 'अभमल्ल'री ।। २०

महाराजा अभयसिंहजीरा स्वागतरौ वरणण

छंद हणूंफाळ[9]

उण वार[10] वणि नरइंद्र, 'अभमाल' वांणिक इंद्र ।
पौसाक ऊंच अपार, स्रव[11] गत्थ[12] वणि सिणगार ।। २१
गजबोल चित्रह[13] गात, सिर इंद्रधनुख सुभात ।
जरकसीके जरतार, पिंड भूल[14] फूल[15] अपार ।। २२

महाराजा अभयसिंहरै लवाजमारौ वरणण

वणि रतन[16] हौदा वाधि, सोवनी रजत असाधि ।

लवाजमारा हाथियांरौ वरणण

कळवूत[17] जरकस केक, नव मेघाडंबर[18] अनेक ।। २३

---

१ ख. ग. जीमीयौ । २ ग. जीमाऐ । ३ ख. ग. जरि । ४ ख. ग. नूमल । ५ ग. पांन । ६ ग. प्रभाऐ । ७ क. आवस । ८ ख. ग. चढ़ीयौ । ९ ग. हणुफाल । १० ग. बार । ११ ख. ग. श्रव । १२ ख. ठाथ । ग. थाट । १३ ख. ग. चित्रत । १४ ग. फूल । १५ ग. भूल । १६ ग. रजत । १७ ग. कळवूत । १८ ख. मेघाडंवर । ग. मेघडंबर ।

---

२०. जोध – योद्धा, वीर । थाट – समूह । जिमाए – भोजन करवाये । पांनि – हाथ, तांबूल । आवध = आयुध – अस्त्रशस्त्र । करी – हाथी, गज । थाट – दल, सेना । अभमल्ल – महाराजा अभयसिंह ।

२१. नरइंद्र – नरेन्द्र, राजा । अभमाल – महाराजा अभयसिंह । वांणिक – कांति, शोभा ।

२२. गजबोल – (?) । जरकसी – सोने-चांदीके तारोंका काम, कलाबूतका काम । जरतार – सोने-चांदीके तारोंसे बना हुआ या गूंथा हुआ । फूल – फूलपत्तीकी चित्रकारी ।

२३. हौदा – अम्मारी । सोवनी – सोनेकी, स्वर्णिम । रजत – चांदीकी । असाधि – (?) मेघाडंबर – एक प्रकारका छत्र विशेष ।

के जड़ित जवहर कांम, धुर मेघडंवर[1] धांम ।
लड़ लूंब मोतिय[2] लागि, जग जोति अति छवि जागि[3] ।। २४
पौसाक ऊंच अनोप[4], इम पीलवांनह ओप[5] ।
असवार गज उण वार[6], पुज देव दुज अणपार ।। २५
महमाय पूजा मांन, महरंग[7] गज[8] मसतांन ।
करि घंट घोर किलाव, वणि चमर वंध[9] बणाव ।। २६
भळहळत[10] चित्रत भाल, ढळकंत रंग रंगढ़ाल ।
धज फरर नेजा धार, सभि तोग धर असवार ।। २७
वणि मही-मुरतव[11] वाग, नौबत्ति[12] धारक नाग ।
धरहरत मदभर धार, वप सघण जिम विसतार[13] ।। २८
वह[14] लंगर धर चख बोळ, क्रीड़ंत भसर कपोळ ।

लवाजमारा घोड़ांरी वरणण

तदि नचत नाच तुरंग, अति चपळ नटवर अंग ।। २९

---

१ ख. मेघडंवर । २ ख. ग. मोतीय । ३ ख. जाग । ४ ग. अनोप । ५ ग. ओप । ६ ग. उण द्वार । ७ ख. मोहोरंग । ग. मोहरंग । ८ ग. ज । ९ ख. वंध । १० ख. भलहलत । ११ ग. मही मुरतव । १२ ख. ग. नौवति । १३ ग. विस्तार । १४ ख. वोहो । ग. वौहो ।

---

२४. जवहर – जवाहरात । मेघडंवर – मेघाडंबर । लड़-लूंब मोतिय – मोतियोंके गुच्छोंकी पंक्ति । छवि – शोभा ।

२५. ऊंच – श्रेष्ठ । अनोप – अनुपम, बढ़िया । पीलवांनह – महावत । ओप – शोभा देती है । दुज = द्विज – ब्राह्मण । अणपार – असीम, अपार ।

२६. महमाय – महामाता, देवी, दुर्गा । महरंग – (?) । मसतांन – मस्त । करि – हाथी । घंट – घंटा जो हाथीकी झूलके साथ लटकता रहता है । किलाव – हाथी, ऊँट, कुत्ते आदिके गलेका पट्टा, किलादः । चमर वंव – (?) ।

२७. भळहळत – देदीप्यमान । भाल – ललाट । ढळकंत – लुढ़कती है । धज – ध्वजा । फरर – छोटी-छोटी झंडिएँ जो भालोंके साथ लगी रहती हैं । नेजा – भाला । तोग – मुगलकालीन बादशाहोंका ध्वज विशेष जिस पर सुरा गायके पूंछके बालोंके गुच्छे लगे रहते थे ।

२८. मही-मुरतव – यवन बादशाहोंके आगे हाथी पर चलने वाले सात झंडे जिन पर मछली और ग्रहों आदिकी आकृतियाँ होती थीं, माहीमरातिब । नौबत्ति – नौबत, नगाड़ा विशेष । धारक – धारण करने वाला । नाग – हाथी । धरहरत – ध्वनि विशेष । मदभर – हाथी । वप – वपु, शरीर । सघण – घना ।

२९. लंगर – शृंखला, जंजीर । चख – चक्षु, नेत्र । बोळ – लाल । क्रीड़ंत – क्रीड़ा करते हैं । तुरंग – घोड़ा । चपळ – चंचल । नटवर – श्रेष्ठ नट (जैसे फुर्तीले) ।

सझि रजत सोव्रन[1] साज, तारीफ छबि[2] तह ताज ।
रेसमी मुखमल रंग, सकळाति ऊच[3] सुचंग ।। ३०

जरतार कस गुलजार, दमकंत घण रंगदार ।
वादळां-याळ[4] वणाव[5], सझि झळक वीज सिळाव ।। ३१

किलंगी स तुररा केक, असि सीस फबत अनेक ।
गरकाब[6] केसरि अंग, उच्छाह[7] अंग उमंग ।। ३२

पौसाक जवहर[8] पूर, जगचख्य जोति जहूर ।
वां[9] तुरां पर उणवार[10], असवार इसा अपार ।। ३३

ऊंटांरौ वरणण

जर वफत[11] झूल जमाज[12], सकळात मुखमल साज ।
सीसम्म[13] कूंचिय[14] सांम, करि दंत वेलिय[15] कांम ।। ३४

---

१ ख. ग. सोव्रण । २ ख. ग. छवि । ३ ग. झंच । ४ क. वाळदां याळ । ५ ग. वणाव । ६ ख. गरकाव । ७ ख उछाहै । ग. उत्छाह । ८ ख. जवहर । ग. जंवहर । ९ क. वा तुरां । १० ग. उणबार । ११ ग. वफत । १२ ख. जमाल । १३ ख. ग. सीस्संम । १४ ख. ग. कूंचीय । १५ ख. ग. वेलीय ।

---

३०. रजत – शोभा देता है, चांदी । सोव्रन – सुवर्ण, सोना । साज – घोड़े, ऊँट आदिके चारजामाके उपकरण । सुचंग – सुन्दर, श्रेष्ठ ।

३१. कस – (?) । गुलजार – यहां गुलनार शब्द होना चाहिए जिसका अर्थ एक प्रकारका कसीदा होता है । दमकंत – चमकते हैं । वादळां-याळ – घोड़ेकी गर्दनके वालों पर चांदी या सोनेके चमकीले तार गूंथे हुए हैं, जो इस प्रकार चमकते हैं मानों बिजली चमकती हो । सिळाव – बिजलीकी चमक, दमक ।

३२. किलंगी – एक प्रकारका आभूषण विशेष जो शिर पर लगाया जाता है । तुररा – एक प्रकारका आभूषण विशेष । असि – घोड़ा । फबत – शोभा देते हैं । गरकाव – डूबा हुआ । उच्छाह – उत्साह । उमंग – जोश ।

३३. जवहर – जवाहरात । जगचख्य = जगत् चक्षु – सूर्य । जोति – प्रकाश । जहूर – जुहूर, प्रकट, जाहिर होना । वां – उन । तुरां – घोड़ों ।

३४. जर – स्वर्ण, सोना । जर वफत – सोने-चांदीके तारोंसे बना कपड़ा, जरबफ्त । झूल – पाखर । जमाज – ऊँट । सकलात – ओढ़नेका वस्त्र (?) । सीसम्म – एक प्रकारका वृक्ष, शीशम । कूंचिय – ऊँटका चारजामा । करि – हाथी ।

अवनोस[1] चंदण अंग, करि रूप मोर कुरंग ।
कठ रजत मझि छवि कोर, चित्र कनक हंस चकोर ।। ३५
दहुं तंग रेसम दीध, कसणास[2] रेसम कीध ।
सोभंत स्त्रीय सकाज, ता सीस कुल्लह ताज ।। ३६
नक्केल सुरंग नराट, पचरंग डोरिय[3] पाट ।
तक्खी स[4] रंग महताव[5], जरताव[6] पंख जुगाव[7] ।। ३७
पचरंग मौहरिय[8] पेस, वणि लूंब[9] रेसम वेस[10] ।
अति रूप जूंग अपार, कुंझरा[11] जांणि कुमार ।। ३८
रेसम्म[12] सांमळ रंग, जकसेस घूघर जंग ।
पल पंच दस धव पाय, जोजन्न[13] ऊपरि जाय ।। ३९
वां पीठि चह[14] असवार, दे खवरि[15] खव्वरदार[16] ।
द्रुति साज जिल्लहदार, कलंगेपसर[17] हौकार ।। ४०

---

१ ग. अचतोरा । २ ग. कसणासे । ३ ख. डोरीय । ग. दोरीय । ४ ख. तषीस । ग. तापीस । ५ ग. महताव । ६ ग. जरताव । ७ ग. जुगाव । ८ ख. मौहीरीय । ग. महीरीय । ९ ख. लूंव । १० ख. पेस । ग. वेस । ११ ख. कूंझरा । ग. कूझरा । १२ ख. ग. रेसम । १३ ख. ग. जोजन । १४ ख. चही । ग. वही । १५ ख. देषवरि । ग. दैषवरि । १६ क. पच्चरदार । १७ ग. कलंगेसपर ।

---

३५. अवनोस – अवनूसका वृक्ष । कुरंग – हरिण । कठ – काष्ट । रजत – चांदी । कनक – स्वर्ण, सोना ।

३६. तंग – जीन कसनेका तसमा । कसणास – फीता । कुल्लह – घोड़ा विशेष, संभव है यह शब्द कुलाह हो जिसका अर्थ भूरे रंगका घोड़ा होता है और जिसके पैर गांठसे सुमों तक काले होते हैं अथवा घोड़ेके शिरका आभूषण विशेष । ताज – घोड़ा ।

३७. नक्केल – ऊँटके नाकमें डाला जाने वाला उपकरण विशेष । सुरंग – लाल, सुन्दर । नराट – बहुत । पचरंग – पांच रंगका । डोरिय – रस्सी या डोर । पाट – रेशम । तक्खी – एक प्रकारकी गद्दी जो ऊँटके चारजामाके नीचे रखी जाती है । महताव – चांद, चंद्र (?) । जरताव – (?) । पंख – (?) । जुगाव – (?) ।

३८. मौहरिय – ऊँटको नाकसे बांधनेकी रस्सी विशेष । लूंब – गुच्छा । जूंग – ऊँट । कुंझरा – क्रोंच पक्षी । वि.वि. – सुन्दर ऊँटको प्रायः "कुरझरी वच्यौ है" ऐसा कह कर पुकारते हैं ।

३९. जकसेस – ऊँट । घूघर – घूघरियां । जंग – (?) । धव – दौड़ । जोजन्न – योजन । ऊपरि – अधिक, विशेष ।

४०. वां – उन, उनकी । चह – इच्छा करता है, चाहता है । खव्वरदार – संदेश देने वाला, सूचना पहुँचाने वाला । जिल्लहदार – कांतियुक्त, चमकदार । कलंगेपसर – (?) । हौकार – ध्वनि विशेष ।

सझि तीन हाथ सलंब, कर आबनूंसिय[1] कंब ।
करहास धारक केक, आवंत जात अनेक ।। ४१
कोतिल्ल[2] बह[3] केकांण, पांडवा दोरिय[4] पांण ।
झळहळत साज झळूस, झड़फिया[5] पोस झळूस ।। ४२
नरयंद[6] हालत नग्रि, उछटंत[7] कोतिल अग्रि ।
कहता बरोबर[8] कोर, जसवल्ल[9] हाक सजोर ।। ४३
करि कनक छड़ियां[10] केक, अनि छड़ी रूप अनेक ।
जवहार हीर जड़ीस, छाजंत हाथ छड़ीस ।। ४४
इम चोपदार उदार, अत मोल[11] करत अपार ।

बाधांरो वरणण

तालंग घोर तबल्ल[12], सहनाय नद मुरसल्ल ।। ४५
वाजंत कळहळ वाज, गाजंत बह[13] गजराज ।
सनमुक्ख[14] मिळण[15] सकाज, रचि नजर बह[16] महाराज[17] ।। ४६

---

१ ख. आवनूसी । ग. आबनूसी । २ ख. कोतिल । ग. कौत्तिल । ३ ख. वहौ । ग. वहौ । ४ ख. ग. दोरीय । ५ ख. ग. झडफीया । ६ ख. नरयंद । ग. नरीयंद । ७ क. उवटंत । ८ ख. वरोवर । ९ क. कसवल्ल । १० ख. ग. छड़ीयां । ११ ग. मांम । १२ ख. तवल्ल । १३ ख. ग. बौहौ । १४ ख. सनमुख्व । ग. सनमुष्षि । १५ ख. मिलन । ग. मिलत । १६ ख. वहौ । ग. बहौ । १७ ख. माहाराज ।

---

४१. सलंब – लम्बाई सहित, लम्बायमान । कर – हाथ । आबनूंसिय – आबनूसका वृक्ष । वि.वि. – आवनूसका वृक्ष बहुत ही मजबूत होता है । इसकी छड़िएँ प्रसिद्ध होती हैं । कंब – छड़ी । करहास – ऊँट । धारक – धारण करने वाला, रखने वाला ।

४२. कोतिल्ल – राजाकी सवारीका घोड़ा । केकांण – घोड़ा । पांडवा = पांवडा – डगकी दूरीका फासिला । झळहळत – देदीप्यमान, चमकदार । साज – जीनके उपकरण । झळूस – (?) । झड़फिया – तेज गतिसे चलाये ।

४३. नरयंद – नरेन्द्र, राजा । नग्रि – नगर । उछटंत – छलांग भरते हैं । अग्रि – अगाड़ी । जसवल्ल – यश (?) । हाक – आवाज ।

४४. करि – हाथमें । कनक – सुवर्ण, सोना । अनि – अन्य । रूप – चांदी, रौप्य । जवहार – जवाहरात । हीर – हीरा । जड़ीस – जटित । छाजंत – शोभा देती है । छड़ीस – छड़ी ।

४५. तालंग – वाद्य विशेष । तबल्ल – वाद्य विशेष । सहनाय – सहनाई नामक वाद्य । नद – ध्वनि, नाद । मुरसल्ल – वाद्य विशेष ।

४६. वाजंत – ध्वनि करते हैं । कळहळ – कोलाहल । वाज – घोड़ा । गाजंत – गर्जना करते हैं । गजराज – हाथी । सकाज – लिए । नजर – भेंट ।

आवंत लोक अपार, वणि उछव वह[1] जिणवार[2] ।

दरसणारथी प्रजारा समूहरो वरणण

वह[3] नारि नर जुथ वेह, *आवंत लोक अछेह* ॥ ४७

स्रंगार[4] विधि विधि साज[5], कमधज्ज दरसण काज[6] ।
हुय[7] जांण[8] समंद हि्लोळ, लख लोक[9] हाल किलोळ ॥ ४८

चालंत इम चतुरंग, रंगराग वह[10] रसरंग ।
देखिवा जिसौ दुभाल, उणवाररौ[11] 'अभमाल' ॥ ४९

त्रिय[12] जूथ मिळि वह[13] तांम, विधि[14] रूप अति छवि वांम ।
सझियांस सोळ स्रंगार[15], चित उछव मंगळचार[16] ॥ ५०.

प्रफुलंत वदन प्रवीत, गावंत रस रंग गीत ।

महाराजा अभयसिंहजीरी वधावौ

त्यां माहि[17] त्रिय[18] सिरताज, सोभाग भाग सकाज ॥ ५१.

सुभ चिहन सील सुचंग, अति रजत भूषण अंग ।
सिर कळस[19] धरियां[20] सोय, हरखंत अति चित होय ॥ ५२.

---

१ ख. वीही । ग. वही । २ ख. जिणिवार । ३ ख. वीहो । ग. वही ।

*ख. प्रतिमें यह अंश— 'आवतंत लोक लोक अछेह' ।

४ ख. शृंगार । ५ ग. साजि । ६ ख. ग. काजि । ७ ख. ग. होय । ८ ख. जांणि । ९ क. लोल । १० ख. ग. वही । ११ ग. उणवाररी । १२ ग. त्रीय । १३ ख. ग. वीहो । १४ ग. वधि । १५ ख. ग. शृंगार । १६ ग. मंगळाचार । १७ ग. मांहि । १८ ख. ग. त्रीय । १९ ख. कल । २० ख. ग. घरीयां ।

---

४७. जुथ – यूथ, समूह । अछेह – अपार, असीम ।

४८. विध विध – तरह-तरहके । साज – सजा कर । काज – लिये । जांण – मानों । हिलोळ – विलोड़ित, तरंगित । किलोळ – क्रीड़ा ।

४९. चतुरंग – चतुरंगिनी सेना, सेना । दुभाल – वीर ।

५०. त्रिय – स्त्री । जूथ = यूथ – समूह । छवि – सुन्दरता । वांम – स्त्री । मंगळचार – मांगलिक काम ।

५१. प्रफुलंत – प्रफुल्लित होते हैं । वदन – मुख । प्रवीत – पवित्र । रस – आनन्द ।

५२. चिहन – चिन्ह । सुचंग – सुन्दर । रजत – शोभा देते हैं ।

वर रजत[1] कुंभ त्रिसाळ, दुतिवंत मझि अंब डाळ ।
दांहिणै हथ अंब डाळ, रति फूल फळित रसाळ ॥ ५३

सुजि वांम भुज समराथि, हरियाळ[2] दोवज[3] हाथि ।
करि मंगळीक करग्रि, उद्रिग्रास पुत्र मुख अग्रि ॥ ५४

इम भूप[4] सनमुख[5] आय, वर तरुणि कळस वंदाय[6] ।
कुंभ मंगळीक सकांम, वंदेस कर[7] वरियांम ॥ ५५

द्रब रूप[8] भरि[9] दूझाल, इम आवियो[10] 'अभमाल' ।
राजेस उच्छव[11] रीध, करि वंदण तोरण दीध ॥ ५६

बाजाररो वरणण

वहु[12] चित्रहट[13] बाजार[14], सझियास बहु[15] सिणगार ।
अवछाड़ जरकस ओप[16], अति जोत[17] रंग अनोप ॥ ५७

लहरीस[18] कोर हुलास, तह[19] ताज पड़दा तास ।
रवि किरण[20] रूप रसाळ, वादळां[21] बंदरवाळ ॥ ५८

---

१ क. रजन । २ ख. ग. हरीयाळ । ३ ग. दोवज । ४ ख. ग. भूष । ५ ग. सनमुषि । ६ ग. वंदाय । ७ ख. ग. करि । ८ ग. भूप । ९ ख. ग. भरे । १० ख. ग. आवीयो । ११ ख. उछव । ग. उत्छव । १२ ख. वहौ । ग. वहो । १३ ख. ग. चित्रहट्ट । १४ ख. बाजार । ग. वजार । १५ ख. वौहों । ग. वहो । १६ ख. वोप । १७ ख. ग. जोति । १८ ख. ग. लहरीक । १९ ख. ग. तैहै । २० ख. ग. किरणी । २१ ख. वांदरां । ग. वादळां ।

---

५३. रजत – चांदी, रौप्य । कुंभ – घट । दुतिवंत – द्युतिवान । अंब डाळ – आम वृक्षकी टहनी ।

५४. वांम – बामा । समराथि – समर्थ, शक्तिशाली । हरियाळ – हरित । दोवज – दूर्वा । मंगळीक – मांगलिक । करग्रि – हाथका अग्र भाग । उद्रिग्रास – (?) ।

५५. वर तरुणि – सौभाग्यवती स्त्रिएँ । कळस वंदाय – कलशका अभिवादन करवा कर के । वरियांम – श्रेष्ठ ।

५६. दूझाल – वीर, योद्धा । अभमाल – महाराजकुमार अभयसिंह । राजेस – महाराजा । उच्छव – उत्सव । रीध – प्रसन्न हो कर । वंदण – नमस्कार, अभिवादन ।

५७. सझियास – सजाये गये । अवछाड़ – ढकनेका वस्त्र । जरकस – सोने-चांदीके तारोंसे बना हुआ कपड़ा । अनोप – सुशोभित हुए ।

५८. लहीरस – लहरदार या लहर युक्त । हुलास – हर्ष, प्रसन्नता । तह – नीचेका भाग । ताज – शाही मुकुट । रवि – सूर्य । तास – कपड़ा विशेष । रसाळ – मनोहर । वादळां – चाँदी या सोनेका चिपटा चमकीला तार, कामदनीके तार । बंदरवाळ – फूल-पत्तों या कपड़ेकी झालरी जो मंगल-सूचनार्थ द्वार पर या खंभों पर बांधी जाती है, तोरण ।

सुनहरिय[1] तार[2] सकाज. रूपहरिय[3] जोति विराज ।
भळहळत इम पुर भूप, रवि चंद्र किरण[4] सरूप ॥ ५९
विच हट्ट हट्ट विछात, दुतिवंत अति दरसात[5] ।
भर मुखमलां पर भार, पसमीस वाव[6] अपार ॥ ६०
करि जाजमां पर कीध, दुल्लीच तकिया[7] दीध ।
गींदवां[8] पर गरकाब, वह[9] ऊंच मुखमल वाब[10] ॥ ६१
धनवंत कोड़ियधज्ज[11], सुजि दीप[12] लाख सकज्ज[13] ।
दुतिवंत दौलतिदार, पौसाक तास अपार ॥ ६२
नखसिक्ख[14] भूखण नौख, जवहार[15] कंचण जौख ।
उण विछायत अणथाह, स्रीवंत सोभ[16] अथाह[17] ॥ ६३
जगमगत इम बह[18] जोति, अति जांण[19] भांण उदोति ।
धर तरणि जांणिस धारि[20], साजोति तण[21] सिणगार[22] ॥ ६४

---

१ ख. ग. सुनहरीय । २ ग. त्तार । ३ ग. रूपहरीय । ४ ग. किरणि । ५ ख. दुरसात । ६ ख. वाव । ७ ग. तकीया । ८ ग. गींदवा । ९ ख. वहो । १० ख. वाव । ११ ख. ग. कोड़ीयधझ्झ । १२ ख. दीय । १३ ख. ग. सकझ्झ । १४ ख. ग. नखसिख्य । १५ ग. जंवहार । १६ ख. ग सोभत । १७ ख. ग. साह । १८ ख. वहो । ग. वहो । १९ ख. जांणि । २० ख. ग. धार । २१ ख. ग. तणां । २२ ख. ग. सिंगार ।

---

५९. सुनहरिय – सोनेके । रूपहरिय – रूपके । भळहळत – चमकते हैं, देदीप्यमान होते हैं ।

६०. विछात – विछायत । दरसात – दिखाई देती है । पसमीस – एक प्रकारका बढ़िया ऊनी कपड़ा, पश्मीन । वाव – वाप्त, बुना हुआ, वस्त्र, कपड़, प्रकार तरह ।

६१. दुल्लीच – दुलीचा, एक प्रकारकी विछायत । गींदवां – गाल तकिये विशेष ।

६२. कोड़ियधज्ज – करोड़पति । दौलतिदार – धनाढ्य, संपन्न ।

६३. नौख – श्रेष्ठ । कंचण – सुवर्ण, सोना । जौख – आनन्द, हर्ष । अणथाह – अपार, असीम । स्रीवंत – श्रीमान्, लक्ष्मीवान । सोभ – शोभा, कीर्ति । अथाह – अपार, असीम ।

६४. जांण – मानों । भांण – सूर्य । उदोति – उदय होता है । तरणि – सूर्य, तरुणी । साजोति – सज्योति ।

आवंत पह[1] 'अभमाल', देखंत जोख दुझाल ।
पर हट्ट अट्ट अपार, आवास चित्र उदार ।। ६५

*सझि वांम सोळ सिंगार, झळकंत वीज सिलार ।
छक पूर जोबन[2] छाक, तन रूप मनि मुसताक* ।। ६६

सझि[3] आभ्रणेस छतीस, तनि[4] लच्छण सुभ जुगतीस ।

प्रजारा महाराजारा दरसण करणा

निरखंत म्रिग बह[5] नैण⊗, वप[6] कनक कोकल[7] वैण ।। ६७

हरखंत मुख जुत[8] हास, आणंद[9] चंद उजास ।
निरखंत वह[10] वर नार[11], मिळि गोख गोख मझार[12] ।। ६८

सुभद्रस्ट[13] करि 'अभसाह', निरखंत पुर नरनाह ।
उच्छाह[14] घर घर एम[15], जळ छौळ सागर जेम ।। ६९

---

१ ख. ग. पौहो ।

* प्रस्तुत पंक्तियाँ ख. प्रतिमें इस प्रकार मिली हैं—
नवकाम झलहल नीप, गुलदार चिग वहो गोप ।
वां चढ़ी रूप उदार, सझि वांम सोळ सिंगार ।।

२ ख. ग. जोवन । ३ ख. छजि । ग. छवि । ४ ख. ग. तनि । ५ ख. वौहो । ग. बहौ ।

⊗ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है— निरषंत वहो मृग नैण ।

६ ख. वेप । ग. वपि । ७ ख. ग. कोकिल । ८ ग. जुच । ९ ख. आनंद । ग. आंनंद । १० ख. ग. पौहो । ११ ख. ग. नारि । १२ ख. ग. मंझारि । १३ ख. सुभदृष्टि । ग. सुभदृष्ट । १४ ख. उछाह । ग. उत्छाह । १५ ग. ऐम ।

---

६५. अभमाल — महाराजा अभयसिंह । जोख — आनन्द, हर्ष । दुझाल — वीर, योद्धा । हट्ट — दुकान । अट्ट — महल, अट्टालिका । आवास — भवन ।

६६. सझि — सज कर । वांम — स्त्री । सोळ सिंगार — सोलह शृंगार । झळकंत — चमकती है । वीज — बिजली । सिलार — बिजलीकी चमक ।

६७. आभ्रणे — आभूषणोंमें । तांनि — उनके । जुगतीस — बत्तीस । वप — वपु, शरीर । कनक — सोना, स्वर्ण । वैण — वचन, वाणी ।

६८. मुख जुत हास — हास्ययुक्त मुखसे । गोख — गवाक्ष, झरोखा ।

६९. अभसाह — महाराजा अभयसिंह । नरनाह — नरनाथ, राजा ।

निज नगर एम[1] निहारि[2], आवियौ[3] राज दुवारि[4] ।
उण ठौड़ लोग[5] अनंत, मन राज छक मदमंत ॥ ७०

आभूखणरो वरणण

सिरपाव जरकस साज[6], तुररा ज सिर[7] तह ताज ।
सुतसीप स्रवणां सोहि, महि[8] लाल सोव्रण[9] मोहि ॥ ७१
करि कड़ा सोव्रन काज, सोव्रन्न[10] आवध[11] साज ।
वणि कंठ[12] सोव्रन वेस, सोव्रन्न[13] जगि[14] पवित्रेस ॥ ७२
धुगधुगी सोव्रन्न[15] धार, जिण[16] वीच जड़त[17] जुहार[18] ।
सोव्रन्न[19] पन्न[20] सधीर, हद जड़त[21] सोव्रन[22] हीर ॥ ७३
वींट सी[23] सोव्रन वेल, मांणक्क[24] सोव्रन मेल ।
सुजि करां इम सिणगार, दुति लहत वह[25] दरवार ॥ ७४

---

१ ग. ऐम। २ ख. निहार। ३ ख. ग. आवीयो। ४ ख. दुवार। ग. दरवारि। ५ ख. ग. लोक। ६ ग. साझ। ७ ख. ग. सिरि। ८ ख. ग. मझि। ९ ख. ग. सोव्रन। १० ख. ग. सोव्रन। ११ ख. आवत। १२ ख. ग. कंठि। १३ ख. सोव्रन। घ. सोवृन। १४ ख. जग। १५ ग. सोवृन। १६ ख. ग. जिणि। १७ ख. ग. जडित। १८ ख. जह्वार। जंह्वार। १९ ख. ग. सोव्रन्न। २० ख. पन। ग. पंन्न। २१ ख. ग. जड़ित। २२ ग. सोवन। २३ ग. वींटीसं। २४ ख. ग. माणिक। २५ ख. ग. वौहो।

---

७०. निहारि – देख कर। राज दुवारि – राज्यद्वार पर। छक – तृप्त। मदमंत – मस्त, मदोन्मत्त।

७१. जरकस – सोने-चांदीके तारोंसे बुना कपड़ा। तुररा – सुनहरे तारोंसे बना आभूषण जो शिरकी पगड़ी पर लगाते हैं। तह – नीचे। सुतसीप – मोती। स्रवणां – कानोंमें। सोहि – शोभा देते हैं। महि – (?)। सोव्रण – सुवर्ण, सोना।

७२. कड़ा – वलय। आवध – आयुध, अस्त्र-शस्त्र। साज – अस्त्र-शस्त्रोंकी सजावटके उपकरण। वेस – आभूषण। जगि पवित्रेस – यज्ञोपवीत।

७३. धुगधुगी – एक प्रकारका आभूषण विशेष। जड़त – जटिल। जुहार – जवाहरात। पन्न – पन्ना नामक फिरोजेक जातिका रत्न विशेष। हीर – हीरा।

७४. वींटी – मुद्रिका। सोव्रन मेल – एक प्रकारका आभूषण।

वणि एम[1] छबि विसतार, गढ़नाथ खिदमतिगार[2] ।
सह्चरीय[3] रंभ समांन, गावंत मंगळ गांन ॥ ७५

सोभंत रूप सरीर, चंद जांणि कढ्ढ्य[4] चीर ।
इम[5] कुंभ सीस[6] अधारि, उणहीज कुंभ उणहारि ॥ ७६

गजगमणि[7] सोळ सिंगार, क्रत[8]कास्स[9] भूंब[10] प्रकार ।
अति रंग उच्छब[11] गाइ[12], 'अभमाल' सनमुख[13] आइ ॥ ७७

उणहीज विध[14] सुत अस्स, सिर[15] अंब[16] डाळ कळस्स ।
इकहत्थ[17] रूप सु अच्छ[18], मझि एक[19] हथ[20] दधि मच्छ[21] ॥ ७८

कुंभ सुपह बंदण[22] कीध, द्रब[23] रजत मझि धर दीध ।
धरथंभ निज गढ़ धांम, वंदि[24] तोरणां[25] वरियांम ॥ ७९

---

१ ग. ऐण । २ ख. ग. छवि । ३ ख. ग. षिजमतिगार । ४ ख. कंठीय । ग. कट्टीय । ५ ख. ग. इक । ६ ख. ग. सीसि । ७ ग. गगमणि । ८ क. कृतक । ९ ग. क्रत-गास । १० ख. ग. भूल । ११ ख. उछव । ग. उत्छव । १२ ख. ग. गाय । १३ ग. सनमुषि । १४ ख. ग. विधि । १५ ख ग. सिरि । १६ ख. अंव । १७ ख. ग. इकहत्थि । १८ ख अछ । ग. अत्छ । १९ ग. ऐक । २० ख. ग. हथि । २१ ख. मछ । ग. मत्छ । २२ ख. वंदण । ग. बदण । २३ ख. ग. द्रव । २४ ग. बंदि । २५ ख. ग. तोरणा ।

---

७५. खिदमतिगार – सेवक, नौकर । सहचरीय – सखी, सहेली, पत्नी, भार्या । रंभ – रंभा नामक अप्सरा, अप्सरा । मंगळ गांन – मांगलिक गायन ।

७६. सोभंत – शोभा देते हैं । चंद – चंद्रमा । जांणि – मानों । कुंभ – कलश । अधारि – धारण कर के । उणहारि – सूरत (?)

७७. क्रतकास्स – कृतिका नक्षत्र जिसकी प्रायः युवतियोंको उपमा दी जाती है । भूंब–समूह । रंग – आनन्द, हर्ष । उच्छब – उत्सव । अभमाल – महाराजा अभयसिंह ।

७८. उण···मच्छ – (?) ।

७९. सुपह – राजा । वंदण – अभिवादन । कीध – किया । द्रब – द्रव्य । रजत – चांदी । दीध – दिया । धरथंभ – धरास्तंभ, राजा । बंदि – नमस्कार कर के । वरियांम – श्रेष्ठ ।

इळ चढ़ पह[1] उणवार[2], पह[3] चढ़े दुरंग पगार ।
पगमंडा हीर पसम्म[4], नवरंग वांणि[5] नरम्म[6] ॥ ८०
असलूफ रंग उजास, खित मंडे मुखमल खास ।
अतिलूंव[7] छिव[8] उणवार[9], द्रुति जरी[10] छापादार ॥ ८१
धर फरस जेम धरीस, रंग लहरदार जरीस ।
धर सिरै राजस धांम, तासरा[11] धरिया[12] तांम ॥ ८२
पग मंड थांन अपार, हिक[13] हिक्क मोल हजार ।
रंग विछाइत[14] अनिराज, द्रुति इसा पायंदाज ॥ ८३
सिर[15] मौहरि[16] चौक[17] सिंगारु, चौ पसम गिलमां चारु ।
वणि कनक जवहर वंस, कसि हीर डोरि कसंस ॥ ८४
इण[18] वणे रूप उमंग, समियांन जरिय[19] सचंग ।
वह[20] कासमीर विलौर[21], अनि रंग छवि धर और ॥ ८५

---

१ ख. ग. पोहों। २ ख. उणवार । ग. ऊणवार। ३ ख. पहो। ग. पोहो। ४ ख. पस्संम। ग. पस्संग। ५ ख. ग. वणे। ६ ख. नरंम। ग. नरंग। ७ ख. अतलू। ग. अतल्लस। ८ ख. ग. विछि। ९ ख. ग. अणपार। १० ख. ग. जरीय। ११ ग. तसपरा। १२ ख. ग, धरीया। १३ ग. हिक्क। १४ ख. विछायत। ग. विछायति। १५ ख. ग. सिरि। १६ ख. ग. मौहौरि। १७ ख. ग. चोकि। १८ ख. ग. इम। १९ ख. जरीय। ग. जरीप २० ख. ग. वहो। २१ ख. ग. विलोर।

---

८०. इळ – इला, पृथ्वी। पगार – (?)। पसम्म – बढ़िया बहुमूल्य ऊनी वस्त्र विशेष, पश्म।

८१. असलूफ – (?)। खित – क्षिति, पृथ्वी। अतिलूंव – (?)। छिव – शोभा। द्रुति – द्युति, कांति। छापादार – छापयुक्त।

८२. धर फरस – परशु धारण करने वाला (?)। धरीस – राजा (?)। जरीस – (?)। सिरै – श्रेष्ठ। राजस धांम – राज-भवन। तासरा – सुनहरे तारोंके जड़ाऊ कपड़ेके।

८३. विछाइत – विछानेका कपड़ा, जाजम आदि। अनिराज – अन्य राजा। पायंदाज – फर्शके किनारेका वह मोटा कपड़ा जिस पर पैर पोंछ कर अन्दर जाते हैं, पैर पोंछनेका कपड़ा।

८४. मौहरि – अगाड़ी। चौक सिंगारु – जोधपुरके गढ़के अन्दरका स्थान विशेष, शृंगार-चौकी। चौ – चारों, चारों ओर। गिलमां – बहुत मोटा मुलायम गद्दा या विछौना। चारु – श्रेष्ठ। कनक – सुवर्ण, सोना। जवहर – जवाहरात। हीर डोरि – वे रस्सिएँ जिनके हीरे जड़े हुए होते हैं। कसंस – कसते हैं।

८५. उमंग – जोश। समियांन – शामियाना, वड़ा तंबू। जरिय – जरीके। सचंग – सुन्दर। विलौर – एक प्रकारका स्वच्छ पत्थर जो पारदर्शक होता है, स्फटिक।

मंडि जाब[1] ज्वाब मतंग, संग असम सरवर संग ।
तै[2] वीच सरवर[3] तत्र, छजि तखत जवहर[4] छत्र ।। ८६
कथ खमां खमां कहंत, गजमसत जिम गहतंत ।
दुति एम[5] हूंत दुझाल, आवियौ[6] पह[7] अभमाल ।। ८७

महाराजा अभयसिंहजीरै दरबाररौ वरणण

लख लोक गहमह लार, क्रत[8] रागरंग[9] नृतकार ।
अति करत सुकवि असीस, सिणगार-चौकी[10] सीस[11] ।। ८८
चढि एण[12] विध[13] चक्रवत्ति[14], तदि ब्राजियोस[15] तखत्ति[16] ।
चौसरा[17] चमर सचार[18], वणि झपट वारंवार[19] ।। ८९
नवछावरेस सनेह, मोतियां[20] मंडियौ[21] मेह ।
दहुं मिसल थाट दुबाह[22], गहतंत भड़ दरगाह ।। ९०

---

१ ख. ज्वाव । ग. ज्वाब । २ ख. ते । ३ ख. ग. जगमग । ४ ग. जंवहर । ५ ग. ऐम । ६ ख. ग. आवीयौ । ७ ख. ग. पौहो । ८ ख. ग. कृत । ९ ख. ग. नृतकार । १० ख. चावकी । ग. चवकी । ११ ख. सीष । १२ ग. ऐण । १३ ख. ग. विधि । १४ ख. ग. चक्रवर्ति । १५ ख. ग. व्रजीयौस । १६ ग. तिषत्ति । १७ ख. चोसरा । १८ ख. ग. सचारु । १९ ग. वारंवारु । २० ख. ग. मोतीयां । २१ ख. ग. मंडीयौ । २२ ख. ग. दुवाह ।

---

८६. मंडि – रच कर, बना कर । जाब ज्वाब = जा-ब-जा – स्थान-स्थान, जगह-जगह । मतंग – हाथी । संग असम = संगे-असवद – एक प्रकार का काले रंगका पत्थर विशेष । सरवर – (?) । छजि – सुशोभित कर के ।

८७. खमां खमां – राजा महाराजाओंके सामने उच्चारण किया जाने वाला शब्द जिसका अर्थ "क्षमा करने वाले" हैं । गज ... गहतंत – मस्त हाथीके समान गर्वसे पूर्ण हैं । दुति – द्युति । दुझाल – वीर । अभमाल – अभयसिंह ।

८८. गहमह – भीड़, समूह । लार – पीछे । क्रत – करते हैं, करते हुए । नृतकार – नृत्यकार । असीस – आशीश । सीस – पर, ऊपर ।

८९. चक्रवत्ति – चक्रवर्ती, राजा । ब्राजियोस – शोभायमान हुआ, आसीन हुआ । तखत्ति – तख्त, राज्य सिंहासन । चौसरा – पुष्पहार । चमर = चमर – चंवर । सचार – (?) । झपट – चँवरका झोंका या संचालन ।

९०. नवछावरेस – न्यौछावर । सनेह – स्नेह, स्नेहपूर्वक । मंडियौ – रचा गया, बना । मिसल – राजाके पार्श्वमें बैठने वाले सरदारोंकी पंक्ति । थाट – शोभा । दुबाह – वीर । गहतंत – गर्वपूर्ण, समूह । दरगाह – दरबार ।

मंत्रीस सकवि[1] समाज, राजंत[2] प्रोहित राज ।
साजंत दुज स्रुति साधि, वाजंत नौवत[3] वाधि ॥ ६१

वाजत्र[4] वजत विमेक, नृत[5] गांन करत अनेक ।
सोभंत इंद्र समाज, रवि वंस रवि महाराज[6] ॥ ६२

अतरेस छंटि अवास, पह[7] पंग सेज[8] प्रकास ।

अंतहपुररौ वरणण

दुति भांण पदमणि[9] देखि, पति जेम पदमणि[10] पेखि ॥ ६३

सज्जंत[11] सोळ सिंगार[12], आभरण दूण अढ़ार ।
°नव जरी वेलि अनूंप°, चिग नौंख गौख सचूंप ॥ ६४

सहचरी चतुर सवोह[13], मिळ[14] रचत उच्छव[15] मोह ।
वर करत चौक वणाव[16], करि कुंमकुंमां छिड़काव[17] ॥ ६५

---

१ ख. षकवि । ग. सुकवि । २ ख. राजंति । ३ ख. ग. नौवति । ४ ख. ग. वाजित्र । ५ ख. ग. नृत । ६ ख. माहाराज । ७ ख. ग. पोहो । ८ ख. ग. सेझि । ९ ख. ग. पद्मणि । १० ग. पद्मणि ।

*यह पद्यांश ख. प्रतिमें अपूर्ण है ।

११ ख. साजंत । ग. सालंज । १२ ख. ग. शृंगार ।

°ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है— 'चिग गोप नोप सचूंप ।'

१३ ख. संचोह । ग. संवोह । १४ ख. ग. मिलि । १५ ख. उछव । ग. उत्छव । १६ ख. वणाय । १७ ख. छड़काय । ग. छड़काव ।

---

६१. मंत्रीस – महामात्य, महामंत्री । राजंत – शोभा देते हैं । साजंत – करते हैं । दुज– द्विज, ब्राह्मण । वाधि – वाद्य, विशेष ।

६२. वाजत्र – वाद्य, वाजे । विमेक – विवेक । रवि वंस रवि – सूर्यवंशका सूर्य ।

६३. अतरेस – इत्र । अवास – भवन । पह पंग – राजा जयचन्द । पेखि – देख कर ।

६४. आभरण – आभूषण । दूण अढ़ार – छत्तीस । नव जरी – (?) । चिग – बांस या सरकंडेकी तीलियों से बना हुआ झझरीदार पर्दा, चिलमन । नौख – श्रेष्ठ । सचूंप – सुन्दर, मनोहर ।

६५. सहचरी – सखी, सहेली । सवोह – सब । उच्छव – उत्सव । चौक – मांगलिक अवसरों पर आंगनमें या खुले स्थानोंमें आटे, अवीर, अनाजके दानोंसे या मोतियोंसे बनाए हुए रेखा चित्र । कुंमकुंमां – (?) ।

मझि छभा राज मंझारि, नव उछब[1] इम नर नारि ।

जोधपुरमें महाराजा अभयसिंहजीरौ राज्याभिसेक

पढ़ि मंत्र ब्रहम[2] प्रवीत[3], दुतिवार[4] देखि अद्वीत ॥ ९६

बर तिलक कीजै[5] वार, अबिखेक[6] राज उदार ।

स्रीकमळ[7] फबि सिरताज, स्री अनुज अखित सकाज ॥ ९७

सब लोक नजर सुपेस, निज हत्थ लीध नरेस ।

धुर[8] थाळ प्रोहित धारि[9], किय[10] आरती अधिकारि[11] ॥ ९८

इम वणे निज आथांण[12], पहु[13] पंगराज प्रमांण[14] ॥ ९९

महाराजरौ अंतहपुरमें पधारणौ

कवित्त–पंगराज प्रमांण[15], प्रगट चढ़ियौ[16] 'अभपत्ती' ।

सहु[17] जांणियौ[18] संसार, राज[19] झाळाहळ रत्ती ।

कवि सुभड़ां करि[20] कुरब, सझै आणंद समाजा ।

मगज धार[21] माल्हियौ[22], राजमिंदर[23] महाराजा[24] ।

---

१ ख. ग. उछव । २ ख. ब्रहम । ग. ब्रह्म । ३ ख. प्रतीत । ४ ग. दुतिबार । ५ ख. ग. कीय । ६ ख. ग. अबवेष । ७ ख. ग. श्रीकम्मल । ८ ख. ग. धुरि । ९ ख. ग. धारी । १० ख. ग. कीय । ११ ख. अधिकार । १२ ख. ग. अथांणि । १३ ख. ग. पौहो । १४ ख. ग. प्रमांणि । १५ ख. परमाणि । ग. प्रमांणि । १६ ख. ग. चढ़ीयौ । १७ ख. ग. सहुं । १८ ख. ग. जांणीयौ । १९ क. राग । २० क. कसि । २१ ख. ग. धारि । २२ ख. ग. मल्हपियौ । २३ ख. ग. राजमंदिरां । २४ ख. ग. माहा-राजा ।

---

९६. मझि – मध्य, में । छभा – सभा । मंझारि – मध्य, में । ब्रहम – ब्राह्मण । प्रवीत – पवित्र । अद्वीत – अद्वितीय ।

९७. अबिखेक – अभिषेक, राज्यतिलक । स्रीकमळ – श्रीमुख (?) । फबि – शोभा दे कर । सिरताज – मुकुट, श्रेष्ठ । अनुज – छोटा भाई ।

९८. सुपेस – सुन्दर भेंट, भेंट ।

९९. आथांण – भवन, घर । पहु पंगराज – वीर राठौड़ राजा जयचन्द । प्रमांण – समान, तुल्य ।

१००. अभपत्ती – राजा अभयसिंह । झाळाहळ – रवि, सूर्य । रत्ती – कांति, दीप्ति । सुभड़ां – योद्धाओं । कसि – कस कर, बांध कर । मगज – गर्व । माल्हियौ – गौरवपूर्ण मंदगतिसे चला ।

सुकिया[1] समूंह[2] मिळ[3] नेह सुख, नूत[4] गायन[5] आणंद[6] में[7] ।
सुरराज[8] जेम नरराज सुख, 'अभमल'[9] राजस इंद में[10] ॥ १००

गिलम विछायत गरक, पसम मौड़ा[11] तकिया[12] पर ।
तठै विराजै[13] तांम, सझै आणंद[14] नरेसुर ।
सझि सझि तीन सलांम, चंद[15] वदनिग्रां[16] उछव[17] चित ।
हुवां[18] विराजै[19] हुकम, हरखि आणंद सहित[20] हित ।
जगपीलसोत[21] गिरदां जरी, जोतीवंती[22] कपूर[23] जळि ।
अगरेल[24] चिराकां जोति अति, कळा जोति भळहळ कमळि[25] ॥ १०१

गाथा

सोळह सझि सिणगार, सोळह वीस आभरण सुंदरि[26] ।
वाजंत्र[27] सझि विसतारं, गांन संगीत करण मिळ[28] गाइण[29] ॥ १०२
मुगधा वेस प्रमांणै[30], लखि अति रूप उरवसी लज्यत[31] ।
पय घूघर बंध[32] पांणै[33], सझियौ[34] नमसकार[35] सारदा[36] ॥ १०३

---

१ ख. ग. सुकीया । २ ख. ग. समूह । ३ ख. मिलि । ग. मिले । ४ ख. ग. नृति । ५ ख. ग. गायणि । ६ ख. ग. आनंद । ७ ख. में । ग. सें । ८ ग. सुररा । ९ क. अजमल । १० ख. मैं । ग. में । ११ ख. ग. मोड़ा । १२ ख. ग. तकीया । १३ ख. विराजे । १४ ख. आण । १५ ख. ग. चंद्र । १६ ख. वदनीया । ग. वदीय । १७ ख. ग. उछव । १८ ग. हुंवा । १९ ख. ग. विराजे । २० ख. ग. सहत । २१ ख. ग. जगिपीलसोत । २२ ख. ग. जोतिवती । २३ ख. ग. कप्पूर । २४ ग. अगरेलि । २५ ख. कमति । २६ ग. सुंदर । २७ ख. ग. वाजित्र । २८ ख. ग. मिलि । २९ ख. गायण । ग. गायणि । ३० ख. ग. प्रमांणे । ३१ ख. लज्जत । ग. लझ्झत । ३२ ख. वंधि । ग. वंधि । ३३ ख. ग. पांणे । ३४ ख. ग. सझीयौं । ३५ ख. ग. नमस्कार । ३६ ग. सरद्द ।

---

१००. सुकिया – अपने ही पतिसे अनुराग रखने वाली, पतिव्रता । नेह – स्नेह । सुरराज – इन्द्र । अभ मल – महाराजा अभयसिंह ।

१०१. गिलम – बहुत मोटा मुलायम गद्दा । गरक – डूबा हुआ । पसम – बढ़िया ऊन, पश्म । मौड़ा – मसनद । नरेसुर – नरेश्वर, राजा । जग – जगि, प्रज्वलित हुई । पीलसोत – एक प्रकारका दीपक विशेष । गिरदां जरी – (?) । अगरेल – एक प्रकारका सुगंधित पदार्थ । भळहळ – देदीप्यमान, कांतिमान । कमळ – शिर, मस्तक, मुख ।

१०२. वाजंत्र – वाद्य । गाइण – गाने वाली ।

१०३. मुगधा – साहित्यमें वह नायिका जो पूर्ण युवावस्थाको प्राप्त हो परन्तु जिसमें काम-चेष्टाएँ न हो, अज्ञात यौवना । वेस = वयस – आयु, उम्र । उरवसी – उर्वशी नामक अप्सरा । लज्यत – लजायमान होती है । पय – पैर । घूघर – घुंघरू । सझियौ – किया ।

ताल अदंग[1] तंबूरं, सुर वीणा वीणाधरि सुंदरि[2] ।
हरखत[3] नृपत[4] हजूरं, सभे सलांम अलाप कीध सुर ॥ १०४

दोहा– गांन सप्त सुर ग्रांम मुर, अरु[5] मुरछन यकवीस[6] ।
तांन कोटि गुणचासते, मूरतिवंत मईस[7] ॥ १०५
ताल अस्ट द्वादस तवन[8], सोळह भेद संगीत ।
राग छत्तीसह[9] रागणी, पंच उकति सुप्रवीत ॥ १०६
जुगति च्यार जुग च्यार जंत्र, अस्ट च्यार परमांण[10] ।
चौरासी नाटक[11] चतुर, विध[12] रसरीत[13] वखांण ॥ १०७
अति प्रकास गति भेद अति, विगति एह[14] विसतार ।
आदि आदि कहिया[15] इता, सति प्रबंध ततसार ॥ १०८
सौ[16] प्रवीण गायण सकळ, उछटत[17] उच्छब[18] आखि ।
महि संगीत सागर महीं, स्रीधर वायक साखि ॥ १०९

---

१ ख. ग. मृदग । २ ख. सुंदर । ३ ख. ग. हरषित । ४ ख. ग. नृपति । ५ ख. ग. अर । ६ ख. इकवीस । ग. ईकवीस । ७ ग. इमईस । ८ ख. तबल । ९ ग. छतीसीह । १० ख. ग. परवांण । ११ ख. ग. नाटिक । १२ ख. ग. विधि । १३ ग. रसरीति । १४ ग. ऐह । १५ ख. कहीया । ग. कहीयै । १६ ख. सो । १७ ख. ग. उघटत । १८ ख. उछव । ग. उत्छव ।

---

१०४. तंबूरं – वाद्य विशेष । वीणाधरी – वीणा नामक वाद्यको धारण करने वाली । अलाप – संगीतके सात स्वरोंका साधन, तान, अलाप । सुर – संगीतमें वह शब्द जिसका कोई निश्चित रूप हो और जिसकी कोमलता या तीव्रता अथवा उतार-चढ़ाव आदिका सुनते ही सहजमें अनुमान हो सके ।

१०५. सप्त सुर – (नोट–संगीत संबंधी शब्दोंके लिए विस्तारपूर्वक टिप्पणि परिशिष्टमें देखें —सम्पादक ।) ग्रांम – संगीतमें सुभीतेके लिये षड़ज, मध्यम, और गांधार ये तीन ग्राम माने गये हैं जिन्हें क्रमशः नंद्यावर्त, सुभद्र, और जीमूत भी कहते हैं । मुर – तीन । मुरछन – संगीतमें एक ग्रामसे दूसरे ग्राम तक जानेमें सातों स्वरोंका आरोह, अवरोह, मूर्च्छना ।

१०८. विगति – वृत्तान्त, हाल, विवरण । सति – सच्चे । प्रबंध – पूर्वापर संगति लेख या अनेक संबद्ध पद्योंमें पूरा होने वाला काव्य, निबंध । ततसार – सारतत्व, निचोड़ ।

१०९. गायण – गाने वाली, वेश्या । उछटत – (?) । उच्छब – उत्सव, जलशा । आखि – कह कर ।

अथ संगीत नृत[1] भेद वरननं[2] कवित्त

धुनि म्रदंग[3] धुघकटस[4], धुकट धुधुकटस[5] धुकट धुर[6] ।
झणणणणण[7] जंत्र झणकि, प्रगट[8] झिमझिम[9] धुनि नूपर ।
उमंग अंग उछरंग, रंग क्रुकु थुंग थुंग रत ।
थेइय[10] थेइय तत थेइय[11], ततततत थेइय[12] थेइय तत ।
नवरँग कटाच्छ रस रंग नृत[13], जंग जंग वाजिय[14] जगत ।
ह्वैरमिय[15] उरप तुरपंग हृद, लाग दाट त्रेवट लगत ॥ ११०

भाव हाव रंग भेद[16], कांम कट्टाच्छ[17] उघट क्रत[18]* ।
राग वखत[19] परमांण[20], नवल रति रूप करत नृत[21] ।
वीणताल सुरवीण, तार तंवूर[22] चंग तदि ।
प्रत खंजरी पिनाक, जुगति[23] मरदंग[24] वजत[25] जदि ।

---

१ ख. ग. नृत । २ ख. ग. वर्ननं । ३ ख. ग. मृदंग । ४ ग. घुवकटत । ५ ग. घुवकटत । ६ ख. सर । ग. धर । ७ ग. झणण । ८ ग. प्रगटि । ९ ख. जिम । ग. रिमझिम । १० ख. ग. थेईय थेईय । ११ ख. ग. थेईय । १२ ख. ग. थेईय थेईय । १३ ख. नृति । ग. नति । १४ ख. ग. वाजीय । १५ ख. ग. ह्वरमईय । १६ ख. भेव । १७ ख. कटाछि । ग. कट्टाछि । १८ ख. ग. कृत ।

*यहाँ पर ख. प्रतिमें 'छप्पय' तथा ग. प्रतिमें 'छप्पै' शीर्षक दिया हुआ है ।

१९ ग. वपत । २० ख. प्रमांण । ग. परमांण । २१ ख. ग. नृत । २२ ख. चवूंर । २३ ख. जुगत । २४ ख. ग. मिरदंग । २५ ग. वजत ।

---

११०. जंत्र – वीणा । धुनि – ध्वनि । उछरंग – उत्साह, जोश । उरप – (?) । तुरपंग – (?) । लाग – (?) । दाट – (?) । त्रेवट – (?) ।

१११. भाव – नवयुवती स्त्रियोंके २८ प्रकारके स्वभावज, अलंकारोंके अंतर्गत तीन प्रकारके अंगज अलंकारोंमें से पहला, नायक आदिको देखनेके कारण अथवा और किसी प्रकार नायिकाके मनमें उत्पन्न होने वाला विकार । हाव – नायिकाकी स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुषको उसकी ओर आकर्षित करती हैं । साहित्यमें इनकी संख्या ग्यारह मानी गई है, इन सबके लिए परिशिष्टमें देखें । कांम – कामदेव । कट्टाच्छ – कटाक्ष, तिरछी चितवन । उघट – (?) । नवल – नवीन । रति रूप – कामदेवकी स्त्रीके सौंदर्यके समान । तंवूर – वाद्य विशेष । चंग – वाद्य विशेष । पिनाक – वाद्य विशेष । जुगति – युक्ति । मरदंग – मृदंग ।

ऐराक[1] पियै[2] प्याला 'अभौ', सुख मुसताक[3] नरेसुरां[4] ।
सुरपति विभूल ह्वै देखि सुख, मन विभूल[5] मुनि ईस्वरां ॥ १११

छंद विरवेखक[6]

वांणिक एम[7] विनोद, 'अभैमल' इंद्र इसौ ।
ओपम[8] रूप अनोप, जठै रतिराज जिसौ ।
जोवत जोख[9] जमाव, घणूं नृत[10] भेद घणै[11] ।
क्रीड़ति[12] जांणि किसन्न, व्रंदावन[13] रास वणै[14] ॥ ११२

दूहा– लग कलियांण विहंग लग, सुणि रंगराग सुथाल ।
सुख सुकिया[15] सेझां वसै[16], महाराज[17] 'अभमाल' ॥ ११३
उच्छब[18] हास विलास अति, पतिव्रत रीझ प्रभाज ।
सोभा दंपति नेह सुख, रति सोभा रतिराज ॥ ११४

---

१ ख. ग. अैराक । २ ख. ग. पीयै । ३ ख. मुषताक । ४ ग. सूरपति । ५ ख. थिमूल । ६ ख. विखेषक । ग. विसेषक । ७ ख. ऐक । ८ ख. ग. वोपत । ९ ख. ग. जौष । १० ख. ग. नृत । ११ ख. ग. घणे । १२ ख. ग. क्रीडंत । १३ ख. वृंदावन । ग. बंदावन । १४ ख. रासणे । ग. वणे । १५ ख. सुकीयां । ग. सुकीया । १६ ख. ग. वसे । १७ ख. ग. माहाराजा । १८ ख. उछव । ग. उत्छव ।

---

१११. ऐराक – तेज शराब । मुसताक – उत्कंठित, उत्सुक, मुश्ताक । विभूल – भ्रमित । मुनि ईस्वरां – मुनीश्वरों, महर्षियों ।

११२. वांणिक – ढंग, व्यवस्था । अभैमल – महाराजा अभयसिंह । ओपम – उपमा । अनोप – अनुपम । रतिराज – कामदेव । जोख = योषा – स्त्री, महिला । जमाव – समूह, यूथ । क्रीड़ति – क्रीड़ा करता है । जांणि – मानों । किसन्न – श्रीकृष्ण । रास – रासलीला ।

११३. लग – तक, पर्यन्त । कलियांण – सम्पूर्ण जातिका एक शुद्ध राग, कल्याण । इसके गानेका समय रात्रिका पहला प्रहर है । विहंग – एक राग जो आधी रातके बाद लगभग २ बजे गाया जाता है, विहाग । रंगराग – गायन, गायनका रसास्वादन, आनन्द । सुथाल – व्यवस्थित, सुन्दर ढंगसे । सुकिया – स्वकीया, पतिव्रता । सेझां – शय्याओं । अभमाल – अभयसिंह ।

११४. उच्छव – उत्सव, जलसा । हास – परिहास, दिल्लगी । विलास – प्रसन्न या प्रफुल्लित करनेकी क्रिया । रति – कामदेवकी पत्नी । रतिराज – कामदेव ।

इम[1] निस[2] विति[3] आणंदमैं[4], प्रगटे भांण प्रताप[5] ।
'अभौ'[6] झरोखै आवियौ[7], छत्रपति जोधां छात ।। ११५

प्रातकालीन नगररौ वरणण

खट वरनां ताळा खुलै[8], सीस नमै[9] संसार ।
करै[10] निजर रीझां करै[11], इंद्र झड़ दरब अपार ।। ११६
करि[12] वंदण[13] सूरिज कमंध, दिस[14] सूरज्ज[15] उदार[16] ।
ईखे[17] सूरज[18] अंजसियौ[19], सूरिज कुळ सिणगार ।। ११७
हाका आसीसां[20] हुवै, तांम निजर[21] विसतार ।
इण सोभा दीठौ 'अभौ'[22], जोधांणै[23] जिणवार ।। ११८

छंद नाराच[24]

सझंत व्रह्म के सिनांन[25], केक त्रप्पणं करै ।
धरत्त[26] केक न्यास ध्यांन, चंडि[27] पाठ उच्चरै ।

---

१ ग. ईम । २ ख. निसि । ३ ख. ग. वीती । ४ ख. ग. आणंदमै । ५ ख. ग. प्रभात । ६ ख. अभो । ७ ख. ग. आवीयौ । ८ ख. ग. षुले । ९ ख. ग. नमे । १० ख. ग. करे । ११ ख. ग. करे । १२ ख. ग. करे । १३ ग. वंदण । १४ ख. ग. दिसि । १५ ख. सूरज । ग. सूरिज । १६ ख. ग. ऊदार । १७ ग. इषे । १८ ख. ग. सूरिज । १९ ख. ग. अंजसीयौ । २० ख. आसासां । २१ ग. निजरि । २२ ग. अभै । २३ ख. जोधांणो । २४ ख. ग. नाराज । २५ ख. ग. सनांन । २६ ख. ग. धरंत । २७ ख. चंडि ।

---

११५. निस – रात्रि । विति – व्यतीत हुई । भांण – सूर्य । अभौ – महाराजा अभयसिंह । छत्रपति – राजा । जोधां – राव जोधाके वंशजों । छात – श्रेष्ठ, शिर-मौर ।

११६. खट वरनां – राजस्थानकी छः प्रमुख जातियां यथा— ब्राह्मण, सन्यासी, जती आदि । ताळा – भाग्य, पेशानी । इंद्र झड़ – इन्द्रकी वर्षाके समान । दरब – द्रव्य, धन-दौलत ।

११७ वंदण – नमस्कार । सूरिज – सूर्य । दिस – तरफ, ओर । सूरज्ज – सूर्य, भानु । ईखे – देख कर । अंजसियौ – गर्वित हुआ, गर्वयुक्त हुआ ।

११८. हाका – आवाज । दीठौ – देखा गया ।

११९. सझंत – साधन करते हैं । व्रह्म – ब्राह्मण । के – कई । सिनांन – स्नान । त्रप्पणं – कर्मकाण्डकी एक क्रिया जिसमें देव, ऋषि और पितरोंको तुष्ट करनेके लिये हाथ या अरघेसे जल देते हैं, तर्पण । न्यास – पूजाकी एक तांत्रिक पद्धति जिसके अनुसार देवताके भिन्न-भिन्न अंगोंका ध्यान करते हुए मंत्र पढ़ कर उन पर विशेष वर्णोंका स्थापन ।

जपंत गायत्रीस जाप, वेद मंत्र व्रहमळा[1] ।
करंत पूज नौ प्रकार, केक कंत कम्मळा ॥ ११९

जिगंन[2] ज्वाळ होम ज्वाप[3], अहुत्तं[4] घ्रतं[5] अपै ।
करंत पारथी अनेक, जोग इंद्र के[6] जपै ।
उचार स्त्री[7] सुभागवंत[8], संस्त्र[9] नाम संभरै ।
गिनांन उग्र स्त्रीय गीत, केकयं कथा करै ॥ १२०

खिरोद[10] कन्न[11] खीनखास, धारियं[12] धुजंबरं[13] ।
सुसोभितं[14] सिखा स सुत्र, [15] सेनयं[16] पितंबरं ।
हरी कुसं समुद्र हाथ[17], चित्र भाळ चंदणं ।
करंत पांण जोड़ि केक, वेणि[18] भांणि[19] वंदणं ॥ १२१

सनांन के खत्री सभ्भंत[20], ते[21] करंत[22] तरपणं[23] ।
दुजंस[24] दान गाय दांन, आय देत अरपणं[25] ।

---

१ ख. विमाला । ग. विम्मळा । २ ख. जिगांन । ग. जिग्गन । ३ ख. ग. जाप । ४ ख. ग. आहुतं । ५ ख. ग. घृतं । ६ ग. कै । ७ ख. ग. श्रीय । ८ ख. ग. भागवंत । ९ ख. संश्र । ग. संश्री । १० ख. ग. षीरोद । ११ ख. ग. कंन । १२ ख. ग. धारीयां । १३ ख. ग. धूतंबर । १४ ख. ग. ससोभितं । १५ ख. ग. सूत्र । १६ ख. तेनयं । ग. तैनयं । १७ ग. हाथि । १८ ख. ग. बेषि । १९ ख. भाल । ग. भांण । २० क. सकंत । २१ ख. ग. तै । २२ ग. करतं । २३ ख. तर्पणं । ग. तिर्पणं । २४ ख. ग. दुजे । २५ ख. ग. अर्पणं ।

---

११९. गायत्रीस – गायत्रीमंत्र । व्रहमळा – विमल, पवित्र । केक – कई । कंत कम्मळा – लक्ष्मीपति ।

१२०. जिगंन – यज्ञ । ज्वाप – जाप । अहुत्तं – आहुति । घ्रतं – घृत । अपै – देते हैं । पारथी – प्रार्थना ।

१२१. खिरोद – एक प्रकारका वस्त्र विशेष, क्षीरोद । खीनखास – एक प्रकारका वस्त्र विशेष, खीनखाप । सिखा – शिखा, चोटी । सूत्र – यज्ञोपवीत, जनेऊ । पितंबरं – पीताम्बर वस्त्र । हरी – दुर्वा, दोव । चित्र भाळ – ललाटमें तिलकादि ।

१२२. सनांन – स्नान । खत्री – क्षत्रिय । सभ्भंत – करते हैं । तरपणं – कर्मकाण्डकी एक क्रिया, तर्पण । दुजंस – द्विज, ब्राह्मण । अरपणं – अर्पण ।

प्रमांण खोडसं[1] प्रकार, देत उग्र दानयं[2] ।
प्रमेस चंड रुद्र[3] पूज, सेवतं समांनयं[4] ।। १२२
अनट्ट जे अखा[5] अवाच्य[6], सूरमंस[7] री नरा ।
परं सती[8] अभेट पिंड, दास गाय दीनरा[9] ।
धणी स अग्र होत ढाल, जूटि[10], धांमजग्र में[11] ।
इसा वसंत के अपार, गाढ़ पूर नग्र में[12] ।। १२३
सनांन दांन के सजंत[13], तै बईस उग्रता ।
जईन सास्त्र त्रांण जांण[14], ध्यांन ग्यांन धारता ।
पौसाक ऊंच द्रव्व[15] पूर, भूखणं धरं भरं ।
जगत्त[16] जै कनंक जोत[17], जोति जै जवाहरं ।। १२४
खुले बजार[18] हाट खूटि, छज्जयं[19] विछायतं ।
इसा बईस तेणि[20] वार, वेण[21] ठौड़[22] आवतं ।
वणैस[23] हट्ट हट्ट वीच, वाणिजं स्रबेसरा[24] ।
लखां खरीद देत लेत, रूप में[25] धनेसरा ।। १२५

---

१ ग. षोडशं । २ ग. दांनयं । ३ ख. रूद्र । ४ ग. समांनयं । ५ क. मृषा । ६ ख. ग. अवाचि । ७ ख. ग. सूरिमांस । ८ ख. ग. सत्री । ९ ख. दानरा । १० ग. जूफि । ११ ख. ग. मैं । १२ ख. मै । ग. में । १३ ख. ग. सभंत । १४ ख. ग. जांणि । १५ ख. द्रव । ग. द्रव्व । १६ ख. जगंत । १७ ख. ग. जोति जोति । १८ ख. ग. वजार । १९ ख. ग. छजयं । २० ख. ग. तेण । २१ ख. ग. वेणि । २२ ख. ठौर । ग. ठौड़ि । २३ ख. ग. वणेस ।

*ख. प्रतिमें यह पद्यांश— 'लषां खरीद लेत देत ।'

२४ ख. स्त्रवेसरां । ग. श्रवेसरां । २५ ख. ग. मै ।

---

१२२. प्रमेस – (परम+ईश) विष्णु, ईश्वर । चंड – चंडिका, दुर्गा । रुद्र – महादेव । समांनयं – (?) ।

१२३. अनट्ट – कभी याचकको न नहीं कहने वाला । अखा – मृषा, असत्य । अवाच्य – जो कहने योग्य न हो । परं – दूसरे की । अभेट – अस्पर्श, स्पर्श न करनेकी क्रिया । पिंड – शरीर । ढाल – रक्षक, रक्षा । जूटि – लग कर । धांमजग्र – युद्ध । वसंत – रहते हैं । गाढ़ पूर – शक्तिशाली ।

१२४. जईन – जैन । ऊंच – श्रेष्ठ । द्रव्व – द्रव्य । कनक – स्वर्ण, सोना ।

१२५. छज्जयं – सुशोभित । विछायतं – वह कपड़ा जो बड़ी सभा आदिमें बैठनेके लिये बिछाया जाय । बईस – वैश्य वर्ण । हट्ट हट्ट – प्रति दूकान । वाणिजं – वाणिज्य, व्यापार । स्त्रबेसरा – सबका । धनेसरा – कुबेरका ।

सिधं[1] निधं अठं नवं स, सच्चयं[2] घरं घरै ।
इकौस[3] नांम आखतं[4], अनेक साद उच्चरै ।
समुद्र के[5] क्रतं[6] सनांन, रुद्र जाप रच्चयं ।
खटं स क्रम्म[7] वांटि खाइ[8], आप वांट[9] अच्चयं ॥ १२६

दुवार है सरव्व[10] दास, जै वसेख दुज्जयं[11] ।
अतीत ग्रेह तप्प[12] आय, प्रीत हूंत[13] पुज्जयं[14] ।
वसै सुखी छहु वरन्न[15], अन्न[16] धन्न[17] अग्घळा[18] ।
अवास गोख ग्रेह ऊंच, एक[19] एक अग्गळा* ॥ १२७

करी तुरी चित्रांम[20] केळि, द्वार द्वार डंबरं[21] ।
गुलाब के लगंत गात, अंतरेस अंबरं ।
नचंत केक रंत[22] राग, विम्मळं विलावळं ।
करंत गोख जोख केक, हेम[23] में[24] झळाहळं ॥ १२८

---

१ ग. सिंधि । २ ख. ग. रच्चयं । ३ ख. ईकोस । ग. इकोस । ४ ख. आयतां । ग. आपतां । ६ ख. ग. जे । ७ ख. ख. क्रष । ८ ख. खाय । ९ ख. ग. वंट । १० ख. ग. सरव । ११ ग. दुज्झयं । १२ ख. ताप । ग. ताम । १३ ख. ग. प्रीति । १४ ख. ग. पुज्झयं । १५ ख. ग. वरन । १६ ख. अन । ग. अंन । १७ ग. धंन्न । १८ ख. सघळा । ग. अघळा । १९ ग. ऐक ऐक ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

२० ग. चित्रांग । २१ ग. डब्बरं । २२ ख. ग. तांन २३ ग. हैम । २४ ग. मैं ।

---

१२६. सिधं – आठ प्रकारकी सिद्धियाँ । निधं – नव प्रकारकी निधियाँ । सच्चयं – सञ्चित, वास्तविक रूप में । आखतं – कहते हैं । साद – आवाज, शब्द ।

१२७. दुवार – दरवाजा । वसेख – विशेष । दुज्जयं – द्विज, ब्राह्मण, पंडित । अतीत – सन्यासी, फकीर । पुज्जयं – पूजे जाते हैं । वरन्न – वर्ण, जाति (हिंदू) । अग्घळा अधिक, अपार । अवास – भवन । गोख – झरोखा । अग्गळा – विशेष ।

१२८. करी – हाथी । तुरी – घोड़ा । चित्रांम – चित्र । केळि – केल वृक्ष । डंबरं – समूह । अंतरेस – इत्र । अंबरं – (?) । विम्मळं – पवित्र । विलावळं – एक राग जो केदार और कल्याणके योगसे बनता है । यह दीपक रागका पुत्र माना जाता है । यह सवेरेके समय गाया जाता है । जोख – आनन्द, हर्ष । हेम – स्वर्ण, सोना । झळाहळं – देदीप्यमान, चमकयुक्त।

करंत केक चित्र कांम, रूप भूप[1] रंगरा[2] ।
कवी विनोद[3] भूप क्रत्त[4], उच्चरै[5] उमंगरा ।
वईदराज[6] के विसाळ, औखधी[7] उपाइकं[8] ।
तई[9] रसायणी[10] स्वधातु[11], स्वच्छयं[12] रसायकं[13] ।। १२६

पढ़ंत जोतकी[14] पुरांण, तारकेस के तवै ।
रघुंस[15] सांम जुभ्र[16] अथ्र[17], च्यार[18] वेद[19] के[20] चवै ।
सिखंति[21] केक भेद सौंण, साधनं सरोदरा[22] ।
महा मंत्रेस अग्गमं[23], मही[24] अभ्यास मोदरा ।। १३०

अराध वीर मंत्र एक, साधनं सधीतरा ।
सिखंत भेद कोक[25] सार, सासत्रं संगोतरा ।

---

१ ख. ग. रूप । २ ख. रंगता । ३ ग. विनोद । ४ ख. ग. क्रीति । ५ ख. ग. उचरै । ६ ग. वइदराज । ७ ख. अवधी । ग. उषधी । ८ ख. ग. उपायकं । ९ ख. भई । १० ग. रसाइणी । ११ ख. सुधातु । ग. सुधातुर । १२ ख. ग. रच्चयं । १३ ख. ग. रसाइकं । १४ ख. ग. जोतिकं । १५ ख. ग. रघुस । १६ ख. ग. जुज्र । १७ ख. अथ्र । ग. अथु । १८ ख. ग. च्यारि । १९ ग. वेद । २० ग. कै । २१ ख. ग. सीषंत । २२ ख. सरोदया । २३ ख. ग. आगमं । २४ ख. ग. महा । २५ ख. ग. केक ।

---

१२९. केक – कई । कांम – कामिनी, कार्य । रंगरा – आनंदका । क्रत्त – कीर्ति । उच्चरै – उच्चारण करते हैं । उमंगरा – जोशके । वईदराज – वैद्यराज, चिकित्सक । औखधी – औषधी, दवा । उपाइकं – उत्पन्न करने वाला, बनाने वाला । तई – उनमें । रसायणी – रसायन विद्याको जानने वाला । स्वधातु – (?) । स्वच्छयं – साफ, मैलरहित । रसायकं – रसायन ।

१३०. जोतकी – ज्योतिषी, यहाँ पंडित अर्थ ठीक जँचता है । तारकेस – तर्क-शास्त्र अथवा तारकेश्वर, शिव । तवै – स्तवन करते हैं । रघुंस – ऋग्वेद । सांम – सामवेद । जुभ्र – यजुर्वेद । अथ्र – अथर्ववेद । चवै – पढ़ते हैं । सौंण – शकुन । सरोदरा – स्वरोदयके । महा मंत्रेस – महामंत्र । अग्गमं – दुर्लभ । मोदरा – हर्ष ।

१३१. वीर मंत्र – वीरोंको जगानेके मंत्र, भूत-प्रेतके मंत्र । सावनं – किसी कार्यको सिद्ध करनेकी क्रिया, सिद्धि । सधीतरा – (?) । सिखंत – सीखते हैं । कोक-सार – काम-शास्त्र ।

मलं अखाड़ केक मंड, दाव घाव दायकं ।
वहंत के पटास्य[1] बंक[2], पांणवंत पाइकं[3] ।। १३१
सजंत[4] के चिकन्न[5] साज, सुंदरां[6] ससोभरा[7] ।
करंत के मुकेस कांम, भार कार चौभरा[8] ।
तणंत के बणंत[9] तास, प्रम्मळं[10] पटंबरं ।
सिवंत[11] के जरी सकाज, अंग अंग अंबरं[12] ।। १३२
करंत कनंक[13] कांम, जोति भांण मैं जसं ।
सिंगार आवध[14] सिरै, तिसं[15] जरंत तैनसं[16] ।
वणाय खाग चाढ़ि वाढ़[17], ओपवै[18] उजासरा ।
वणंत वोच[19] नीर वाधि; रूप में[20] वणासरा ।। १३३
वढ़ाळ सेल के वणाय, कीध ओपमै कळा ।
जिकै[21] कुमार बीज[22] जांणि, चंचळा अपच्चळा[23] ।

१ ख. ग. पटास । २ ख. ग. वांकि । ३ ख. ग. पायकं । ४ ख. ग. सझंत । ५ ख. ग. चिक्कंन । ६ ख. ग. सुंदरं । ७ ख. सुशोभरा । ग. सुसोभरा । ८ ख. चौभरा । ९ ख. ग. वणंत । १० ख. प्रमल्लं । ११ ख. ग. सीवंत । १२ ख. अंवरं । ग. अंब्बरं । १३ ख. नकंस । ग. गकस । १४ ख. ग. आदधां । १५ ख. निसां । ग. निसा । १६ ख. ग. हंनसां । १७ ख. वाट । ग. वाढ़ि । १८ ग. ओपवै । १९ ग. बीज । २० ख. ग. मै । २१ ख. ग. जिके । २२ ख. ग. वीज । २३ ख ग. अचप्पळा ।

---

१३१. मलं – मल्ल, द्वन्द युद्ध करने वाला, पहलवान । अखाड़ – अखाड़ा, कुश्ती लड़नेका स्थान । वहंत – धारण करते हैं । पटास्य – पटा, प्राय: दो हाथ लम्बी किर्चके आकारकी लोहेकी पट्टी जिससे तलवारकी काट और वचाव सीखते हैं । बंक – तलवार विशेष, वक्र । पांणवंत – बलवान । पाइकं – चतुर, दक्ष, नौकर ।

१३२. चिकन्न – एक प्रकारका कशीदा जो रेशम या सूतसे कपड़े पर काढ़ा जाता है । ससोभरा – शोभासहित, शोभा व कांति वाला । मुकेस – सोने-चांदीके चौड़े तार, इन तारोंका बना हुआ कपड़ा, मुक्कैश । भार – (?) । कार चौभरा – लकड़ीका चौखटा जिसमें कपड़ा कस कर कसीदेका काम हो, जरदोजी । तास – कपड़ा विशेष । प्रम्मळं – सुन्दर । पटंबरं – रेशमके वस्त्र । सिवंत – सीते हैं ।

१३३. केक – कई । कनंक – स्वर्ण, सोना । भांण – सूर्य, भानु । वाढ़ – शस्त्रका पैना भाग, शस्त्रकी धार । ओपवै – उज्ज्वल करते हैं । बीज – बिजली । वणासरा – वनास नदी ।

१३४. वढ़ाळ – तलवार । सेल – भाला । ओपमै – चमकमें, द्युतिमें । अपच्चळा – चंचल, उदण्ड ।

करंत नोख[1] नोख कांम, सोवनी संवाहरं[2] ।
घड़ंत हेम घाट के, जड़ंत के जंवाहरं ॥ १३४
रंगै अनेक[3] रंगरेज, आबदार अंबरं[4] ।
हुलास ह्वै मुनिंद्र हांसि[5], देखि देखि डंबरं[6] ।
रजंत के कनंक[7] रूप, भार द्रव्य[8] भारखं ।
विराजमांन स्रीवरं[9], रचे[10] करंत पारखं ॥ १३५
जंवाहरं[11] परक्ख[12] जोत[13] के जवाहरी करै ।
अनोप रंग तोल आब[14], संग ढंग संभरै ।
घरं घरं सघन्न[15] झंब फूल पै झलं ।
तरं तरं करंत तांम - क्रील बांणि कोकिलं ॥ १३६

स्त्री वरणण

निवांण त्री भरंत नीर, रूप कुंभ हेमरा ।
मैमंत जोबनं[16] मनोज, नेह कंत नेमरा ।
चलै गयंद जेम चाल, भाल इंदु[17] सोभयं[18] ।
महामुनेस[19] होत मोह, लेख[20] रूप लोभयं ॥ १३७

---

१ ख. ग. नौप नौप । २ ग. संवाहरां । ३ ग. अनैक । ४ ख. अव्वरं । ५ ख. ग. हौंस । ६ ख. डंव्वरं । ग. डंव्वरं । ७ ख. ग. कन्नंक । ८ ख. द्रव्व । ग. द्रव्व । ९ ख ग. श्रीवरं । १० ख. ग. रजै । ११ ग. जवाहरं । १२ ख. ग. परष्प । १३ ख. ग. जोति । १४ ख. अव । १५ ख. सघ्घन । ग. सघन । १६ ख. ग. जोवनां । १७ ख. ग. इंद्र । १८ ग. सभयं । १९ ख. ग. माहामुनेस । २० ग. लेषि ।

---

१३४. नोख – श्रेष्ट । सोवनी – स्वर्णमयी । घडंत – घड़ते हैं । हेम – सोना । जंवाहरं – जवाहरात ।

१३५. आवदार – चमकदार, द्युतिवान । अंबरं – वस्त्र । हुलास – हर्ष, प्रसन्नता । डंबरं – (?) । रजंत – शोभा देते हैं, चांदीके । के – कई । कनंक – स्वर्ण । स्रीवरं – धनाढ्य ।

१३६. परक्ख – परीक्षा । जोत – ज्योति, कांति । जवाहरी – जौहरी । अनोप – अनुपम । आव – कांति, चमक । संग – (?) । संभरै – (?) । सघन्न – घना । झंब – फूल, फल व घने पत्तोंयुक्त टहनी, टहनी । तरं – वृक्ष । क्रील – क्रीड़ा ।

१३७. निवांण – जलाशय, तालाव । त्री – स्त्री । कुंभ – कलश, घड़ा । हेमरा – स्वर्णके, सोनेके । मैमंत – मस्त, उन्मत्त । जोवनं – जवानी । मनोज – कामदेव । गयंद – हाथी, गज । भाल – ललाट । इंदु – चंद्रमा । सोभयं – शोभा देती है । महामुनेस – महामुनि, महर्षि । लेख – प्रारब्ध ।

वणै[1] भुजंग रूप वेणि, मंग[2] सीस मोतियं[3] ।
प्रजा[4] लजै न छत्र[5] पांति[6], जोय तास जोतियां[7] ।
छुटी अलक्क[8] नाग छौन[9], सोभ एम[10] साज ही ।
रथंस जांणि चंद्र रासि, रूप में[11] विराजही[12] ॥ १३८

राजै[13] मुखं सबाधि[14] रूप, *जोति चंद्र हूं जहीं ।
रहै सदा अखंड रूप,* निक्ख[15] सांमता[16] मही[17] ।
सिंदूर बिंदु[18] भाल सोभ, ओपियौ[19] आणंद रै ।
जिकौ[20] उरम्म[21] माल[22] जांणि, चाढ़ि दीध चंद[23] रै ॥ १३९

सरीस मोतियां[24] सधार[25], कोर भाल केसरी ।
कला तमंस[26] वीच[27] कीध[28], चंद[29] जांणि चंदरी ।
भँजै[30] धनंख चक्र भौंह, सोभ कांम साबळं[31] ।
प्रफूलयं[32] कटाच्छ[33] फूर कंत[34] नेत्र कम्मळं[35] ॥ १४०

---

१ ख. ग. वणे । २ ख. ग. मांग । ३ ख. ग. मोतीयां । ४ ख. प्रभा । ग. प्रला । ५ ग. छत्र । ६ ख. पांणि । ७ ख. ग. जोतीयां । ८ ख. अलक । ग. अल्लक । ९ ग. छौंन । १० ख. ए । ग. ऐम । ११ ख. ग. मैं । १२ ख. बिराजही । १३ ख. ग. रजै । १४ ख. ग. सवाधि । ख. प्रतिमें नहीं है ।
१५ ख. विष । ग. न्रिषि । १६ ग. सांमंता । १७ ग. नही । १८ ख. ग. विंदु । १९ ख. औपीयौ । ग. ओपीयौ । २० ख. ग. जिको । २१ ख. उरंम । ग. उरम । २२ ग. मोज । २३ ख. ग. वंदरै । २४ ख. मोतीया । ग. मोत्तीयां । २५ ख. ग. सधारि । २६ ख. ग. तमं । २७ ख. विचै । ग. विचें । २८ ख. म. कीध । ग. सकीध । २९ ग. आडं । ३० क. जुजै । ३१ ख. ग. सावल । ३२ ख. प्रफुलयं । ३३ ख. कटाछ । ग. कछ । ३४ ख. ग. पुरकांति । ३५ ख. ग. कंम्मलं ।

---

१३८. भुजंग – सर्प । वेणि – स्त्रियोंके शिरके बालोंकी गुंथी हुई चोटी । मंग – शिरके बालोंके बीचकी वह रेखा जो बालोंको दो ओर विभक्त कर के बनाई जाती हैं, मांग, सीमंत । अलक्क – मस्तकके इधर-उधर लटकने वाले मरोड़दार बाल, अलकें । छौन – बच्चा । सोभ – सुन्दरता, शोभा । रथंस – (?) । विराजही – मानों चंद्रमा अलका रूप रास (वल्गा)की पकड़ कर रथमें बैठा हो ।

१३९. राजै – शोभा देता है । सबाधि रूप – पूर्ण रूप । निक्ख – निकष, कसौटी ? सांमता – कालापन । भाल – ललाट । सोभ – शोभा देता है । ओपियौ – सुशोभित हुआ । उरम्म माल = ऊर्मिमाल – समुद्र, सागर ।

१४०. सरीस···चंदरी – ललाटमें केशोंके पास-पास मोतियोंकी लड़ी इस प्रकार शोभायमान हो रही है मानों रात्रिकी श्यामतामें चंद्र का प्रकाश हो ।

अनंग बांण लाजि जाइ[1], ईख[2] नैण अंजणं[3] ।
मनी तजै कुरंग मीन, जोय रूप खंजणं ।
जड़ावमें[4] तिलक्क[5] जोति, एम[6] भाल अंकरै ।
निजं वरंस[7] 'जोति' निक्र[8], ओपियौ[9] मयंकरै ॥ १४१
ससोभ भूखणं स्रुतं[10], वणे जड़ाव वांमरा[11] ।
विराजमांन जांणि वीर, कोर बांधि[12] कांमरा[13] ।
चमंकवै त्रटंक चक्र, ओपमा उमंदरा ।
जडाव चक्र दोय जै, रथंस जांणि चंदरा ॥ १४२
सुकीर नासिका सरूप, *वेस रीत राजियै* ।
सुरू[14] गुरू[15] र भोम सुक्र[16], राजद्वार राजियै[17] ।

---

१ ख. ग. जाय। २ ख. ग. ईषि। ३ ख. ग. अंज्जणं। ४ ख. ग. मै। ५ ख. तिल्लक। ग. तिलक। ६ ग. ऐम। ७ ख. उरंस। ग. उरम। ८ ख. ग. न्यक्र। ९ ख. वोपीयौ। ग. वौपीयै। १० ख. श्रुतं। ग. शुभं। ११ ख. वामरा। ग. वांमरा। १२ ख. वांधि। १३ ख. ग. कामरा।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पद्यांश इस प्रकार है— 'वेसरी विराजियै।'

१४ ख. ग. सुर। १५ ख. ग. ग्रु। १६ ख. जोड। ग. जाड़। १७ ख. ग. राजीयै।

---

१४१. अनंग – कामदेव। लाजि जाइ – लज्जित हो जाते हैं। ईख – देख कर। नैण – नेत्र। अंजणं – काजल। मनी – गर्व। कुरंग – हरिण। मीन – मछली। जोय – देख कर। खंजणं – एक प्रसिद्ध पक्षी विशेष जो स्वभावसे बहुत ही चंचल होता है। इसकी चंचलताकी स्त्रियोंके नेत्रोंको उपमा दी जाती है। निक्र – (?)। ओपियौ – शोभायमान हुआ। मयंक – चंद्रमा।

१४२. ससोभ – शोभापूर्वक, शोभासहित। भूखणं – आभूषण। स्रुतं – श्रुति, कान। वांमरा – स्त्रीका। त्रटंक – तारंक, कानका आभूषण। ओपमा – उपमा।

१४३. सुकीर···राजियै – सुन्दर तोतेके नाकके समान नाक है और उसमें मोतीयुक्त वेसर (नामक आभूषण (नथ) इससे वह ऐसा शोभायमान होता है मानो सुरगुरु (बृहस्पति) भोम (मंगल) और शुक्र ये तीनों राजद्वार पर उपस्थित हो गये हों। यहाँ वेसर जो सोनेकी बनी हुई, उसका रंग सुर-गुरु (बृहस्पति) समान है, पीत है तथा वेसरमें जो मोती है उनका रंग श्वेत है। वह शुक्रके समान प्रतीत होता है और ओठोंका रंग लाल है जहाँ पर मोतियोंयुक्त वेसर लटकता है, वे ओठ मंगलके समान लाल प्रतीत होते हुए आनंददायक हैं।

मुखं प्रकास हास मंद, ओपमा[1] उजासयं[2] ।
उदै[3] अरद्ध[4] भांणए[5], मयंकजं प्रकासयं ॥ १४३

चुंनी[6] सुचंग रूपचै, कणंस नील क्रांमती ।
दिठौण[7] रूप भोम[8] दीध, रीझियै रतीपती[9] ।
कपोन[10] कंठ पोत केम, मोह ओपमा[11] मिळी ।
जिका तनूज[12] भांणि जांणि[13], मेर[14] स्रंग[15] मंडळी ॥ १४४

सरीसकंठ[16] सोभयं, मुकत्त[17] माळ नूम्मळी[18] ।
सुमेर[19] स्रंग[20] हुंत स्रोत, जांणि गंग ऊजळी* ।
हमेळ बेल चंद्रहार, सोभयै सकाजयं ।
उडंत[21] नेक चंद्र अग्र[22], राज पंत राजयं ॥ १४५

---

१ ख. ग. ओपमं । २ ख. उभासयं । ३ ख. ग. उदौ । ४ ख. अरद । ग. ऊरद्व । ५ ख. एम । ग. ऐम । ६ ख. ग. चुभी । ७ ग. दिठौंण । ८ ख. ग. भोमि । ९ ग. रत्तिपती । १० ख. ग. कपोळ । ११ ग. ओपमां । १२ ख. तनूंज । ग. तन्नज । १३ ख. ग. भांणि । १४ ख. ग. मेरि । १५ ख. शृंग । ग. श्रंग । १६ ख. सरीर । १७ ख. ग. मुक्कत । १८ ख. ग. नूमळी । १९ ग. समेर । २० ख. ग. शृंग ।

*ग. प्रतिमें यह पंक्ति इस प्रकार है— सुमेर शृंग हूंत जांणि, श्रोत गंग ऊजळी ।

२१ ख. ग. उडं । २२ ख. ग. अग्रि ।

---

१४३. अरद्ध – आधा । भांणए – सूर्य । मयंकजं – चंद्रमा ।

१४४. चुनी – माणिक्यादि रत्नका बहुत छोटा टुकड़ा, चुन्नी । सुचंग – सुन्दर । नील – रत्न विशेष । क्रांमती – कांति, चमक । दिठौण – (?) । भोम – मंगल । रीझियै – मोहित हुआ । रतीपती – कामदेव । पोत – एक प्रकारका अत्यन्त बारीक मोती विशेष जो स्त्रियोंके कंठाभरण (तिमणिया) विशेषमें पिरोया जाता है । तनूज भांणि – सूर्यतनया, यमुना । जांणि – मानों । मेर – सुमेरु ।

१४५. सरीस – श्री नामक कंठाभरण । सोभयं – शोभायमान हो रही है । मुकत्त माळ – मोतियोंका हार । नूम्मळी – स्वच्छ, उज्ज्वल । सुमेरु – सुमेरु पर्वत । स्रंग – शिखर स्रोत – श्रोत, यहां झरना अर्थ बैठता है । गंग – गंगा नदी । हमेळ – एक प्रकारका कंठाभरण । बेल – आभूषण विशेष । चंद्रहार – आभूषण विशेष । सोभयै – शोभायमान होता है । उडंत–उड़ते हैं । नेक – ठीक, मानों । राज पंत – (?) । राजयं – शोभायमान होते हैं ।

दुहूं[1] विसाळ चंपडाळ, ओपयं[2] भुजा इसी ।
दुरद्द दंत रंगदार, चंद्रबाह[3] चौपसी[4] ।
विनै[5] जड़ाव बाजुबंध[6], सम्म[7] पाट[8] सोहिया[9] ।
त्रिखंड साखि[10] जांणि स्रप्प, मैण[11] धार मोहिया[12] ॥ १४६
प्रवीण कंकिणीस[13] पौच[14], गज्जरा[15] ज नौग्रही[16] ।
हिमंकरं रखत्त[17] हस्त, भेद जांणि सोभही[18] ।
*विराजमांन रूप[19] बाधि, अंगुली अनोपए ।
°अनोप पंकजं अरद्ध, पंख जांणि ओपए* ॥ १४७
समुद्रिका छलास छाप, सो जड़ाव संगरा ।
अनेक भौंर[20] जांणि आय, रीझ[21] रंगरागरा[22] ।

---

१ ख. दुहुं । २ ख. ओपीए । ग ओपीयं । ३ ख. बाह । ग. बांह । ४ क. बौपसी । ग. चौंपसी । ५ ख. विन्है । ग. विन्है । ६ ख. बाजुबंध । ७ ख. ग. सांम । ८ ख. ग. पाटि । ९ ख. ग. सोहीया । १० ख. ग. साप । ११ ख. ग. मेणि । १२ ग. मोहीया । १३ ख. ग. कंकणीस । १४ ग. पौंचि । १५ ख. ग. गह्झरा । १६ ख. ग. नवग्रही । १७ ख. ग. नपत्र । १८ ग. ओपऐ ।

*ये दो पंक्तियां ग. प्रतिमें नहीं हैं । °यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

१९ क. रूख । २० ख. भोर । ग. भौंरि । २१ ख. ग. रीझि । २२ ख. ग. रंगरंगरा ।

---

१४६. चंपडाळ – चम्पाकी डाली । ओपयं – शोभायमान होती हैं । दुरद्द – हाथी, गज । दंत – दांत । चंद्रबाह – हाथी-दांतकी पतले चीरकी विशेष प्रकारकी रंगदार चूड़ियोंके चूड़ेका नाम जिसे चंद्रबाई या चंद्रबाहका चूड़ा कहते हैं । चौपसी – शोभित होती है । विनै – दोनों । जड़ाव – जटित । बाजुबंध – स्त्रियोंके बांह पर धारण करनेका आभूषण विशेष । सम्म पाट – श्याम रंगका रेशम । वि.वि. – बाजूबंध रेशम या सूतके धागोंमें पिरोया जाता है । सोहिया – सुशोभित हुए । त्रिखंड – चंदन-वृक्ष । साखि – शाखा, टहनी । जांणि – मानों । स्रप्प – सर्प, सांप । मैण धार = मणि-धर – मणिको धारण करने वाला कृष्ण सर्प । मोहिया – मोहित कर दिया गया हो ।

१४७. कंकिणीस – स्त्रियोंके हाथका आभूषण विशेष । पौच – स्त्रियोंकी कलाईका आभूषण विशेष । गज्जरा – स्त्रियोंकी कलाईका आभूषण विशेष । नौग्रही – स्त्रियोंकी कलाईका आभूषण । हिमंकरं – चंद्रमा । रखत्त – नक्षत्र, ऋक्ष । सोभही – शोभित होता है । विराजमांन – सुशोभित । अनोपए – अनुपम । पंकजं – कमल ।

१४८. समुद्रिका – मुद्रिकासहित । छलास – एक प्रकारकी सादी अंगूठी जो धातुके तारके टुकड़ेको मोड़ कर बनाई जाती है । भौंर – भौंरा । रीझ – मोहित हो कर । रंगराग – हर्ष, आनंद ।

रजै सुमंध[1] बूंद[2] रेख,कोमळं करै[3] क्रिया[4] ।
अनंग जांणि रूप अंक, चित्रकार[5] चित्रिया[6] ।। १४८
उरंस रूप में[7] उदार, राजए[8] उरोजयं ।
लघू[9] चित्रांम जांणि लेख, सोव्रनं कळस्सयं[10] ।
क़से हरीस कूंचकी[11], उरोज ओप आंणिजै ।
छिपा रिमं[12] जुगं छिपै[13], जळंज[14] पात्र जांणिजै ।। १४९
कुचं[15] अलक्क[16] छूटि क़ेस, वेस जे[17] प्रभा वणी ।
अई महेस पूजिवा, नवीन जांणि नागणी ।
कनंक[18] अंग रंग क्रंति, सोभ नाभ सुंदरं* ।
मुनेस मोह रूप भोम[19], रास जांणि रंधरं ।। १५०
छजं[20] चित्रं[21] कटीस छीण, छुद्रघंट[22] छाजयं ।
सकौ ग्रहं ससिंघ रासि, एक[23] साथि आजयं ।

---

१ ख. ग. सुमंधि । २ ख. बूंद । ग. बुद । ३ ख. ग. कर । ४ ख. त्रीया । ५ ग. चित्रवकार । ६ ख. ग. चित्रीदा । ७ ख. ग. मै । ८ ख. रज्जए । ग. रझ्झऐ । ९ ख. लघुं । ग. लघु । १० ख. कस्सयं । ११ ख. कुंचकी । ग. कंचुकी । १२ ख. ग. छिपारिपं । १३ ख. ग. छिपे । १४ ख. जलंज । ग. जल्लज । १५ ग. कुंच । १६ ख. ग. अल्लक । १७ ख. ग. जं । १८ ख. ग. कंनक ।

*ग. प्रतिमें यह पंक्ति इस प्रकार है— 'कंनक रंग अंग क्रांति सोभि नाभि सुंदरं ।'

१९ ख. ग. भोमि । २० ख. ग. छजं । २१ ख. ग. चितं । २२ ख. ग. छुद्रघंटि । २३ ग. ऐक ।

---

१४८. चित्रिया – चित्रित किये ।

१४९. उरंस – वक्षस्थल । उदार – (?) । उरोजयं – स्तन, कुच । लघु – छोटा । चित्रांम – चित्र । सोव्रनं – सुवर्ण, सोना । कळस्सयं – कलश, घट । कूंचकी – कंचुकि । उरोज – स्तन, कुच । ओप – उपमा । छिपा – रात्रि । रिमं – शत्रु । जळंज – कमल । जांणिजै – मानों ।

१५० कुचं – स्तन, कुच । अलक्क – मस्तकके इधर-उधर लकटते हुए मरोड़दार बाल । वेस – (?) । प्रभा – कांति, दीप्ति, शोभा । महेस – महादेव । पूजिवा – पूजा करनेको । जांणि – मानों । कनंक – कनक, सुवर्ण, सोना । क्रंति – कांति, दीप्ति । सोभ – शोभा । नाभ – नाभि । मुनेस – मुनीश, महर्षि । भोम – भूमि । रास – (?) । रंधरं – रंध्र, छिद्र ।

१५१. छजं – शोभा । कटीस – कटि । छुद्रघंट – क्षुद्रघंटिका, करधनी । छाजयं – शोभित होती है । सकौ – सब । हंग्र – (?) । आजयं – अजा (?)

रजंत जंघ खंभ रंभ, उरध[1] सोव्रनं[2] इसी ।
घुमत्त[3] घग्घरं[4] स घेर[5], क्रंत[6] में[7] जरक्कसी ।। १५१

सरूप पिंड[8] कस्स[9] सोभ, सुंदरं सुसुब्भरं[10] ।
झमंक कंचनं झुलास[11], झूल पाइ[12] झंझरं ।
घमं[13] घमंक होत घेर, झंन्नीकार[14] झंझरै ।
जसौल[15] कांम फौज जांणि, यंत्र[16] तमांम ऊचरै[17] ।। १५२

पाए[18] सुचंग स्यांम पाट[19], पै कनंक नूपरं[20] ।
मक्रंद कंज रक्खिमांन[21], पीत भौर ऊपरं ।
झणंक नूपुरास झीण, ओप तास[22] एहड़ा[23] ।
वदंत तोतळीस बांणि[24], जांणि पुत्र जेहड़ा[25] ।। १५३

---

१ ख. ग. ऊर्द्ध । २ ख. सौव्रनं । ३ ख. ग. घुमंत । ४ ख. ग. घघ्घरं । ५ ख. घेरा । ६ ख. ग. क्रांति । ७ ख. ग. मैं । ८ ग. पिंडि । ९ ख. ग. कासु । १० ख. सुसुभ्भरं । ग. सुसुभ्रं । ११ ख. ग. झलूस । १२ ख. ग. पाय । १३ ख. ग. घणं । १४ ख. ग. झातकार । १५ ग. जसोल । १६ ख. ग. आंति । १७ ख. ग. उच्चरं । १८ ख. पोए । ग. पोऐ । १९ ख. ग. पाटि । २० ख. ग. नूपुरं । २१ ख. ग. रष्पिमांन । २२ क. आपतास । २३ ख. एहडी । ग. ऐहडी । २४ ख. ग. वांणि २५ ख. ग. जेहड़ी ।

---

१५१. रजंत – शोभा देती है । जंघ – पिंडली, जंघा । खंभ – स्तंभ, खंभ । रंभ – केला । उरध – उर्ध्व । घग्घरं – लहंगा, घघरी । घेर – फैलाव (?) । क्रंत – कांति, दीप्ति । जरक्कसी – सोने-चांदीके तारोंका काम, जरकशी ।

१५२. सरूप – स्वरूप, सौंदर्य । सोभ – कांति । सुसुब्भरं – सुशुभ्र, स्वच्छ । झमंक – ध्वनि विशेष । झुलास झूल – स्त्रियोंका समूह, यूथ । पाइ – पैर । झंझरं – झांझर नामक आभूषण । घमं घमंक – चलनेकी ध्वनि । झंन्नीकार – ध्वनि विशेष । जसौल – यश गायक । यंत्र – वाद्य । तमांम – सब ।

१५३. सुचंग – सुन्दर, मनोहर । पाट – रेशम । पै – चरण । नूपरं – पैरोंका आभूषण विशेष । मक्रंद – फूलोंका रस जिसे मधुमक्खियाँ और भौंरे आदि चूसते हैं, मकरंद । कंज – कमल । रक्खिमांन – (?) । झणंक – ध्वनि । नूपुरास – नूपुर । झीण – महीनतम ध्वनि । ओप – उपमा । एहड़ा – ऐसा । वदंत – बोलता है । तोतळीस – तुतलाते हुए बोलने वाली । जांणि – मानों । जेहड़ा – जैसा ।

अणोट वींछिया[1] उदार, पाय पंख पंकजं ।
अनंग ह्वै छनंग अंग, रंग रंग में[2] रजं ।
पयंस थांन रंग पूर, जावकं[3] तणा जगै ।
जिकै[4] समांन रंभ जांणि, आविया[5] अगे[6] अगे ॥ १५४

कळाबतोस[7] पोस कांम, जोति तास यौं[8] जगै ।
जिकैस[9] चाल हंस जांणि, लोभ धार पै लगै ।
इसी जिलंभ[10]रै अनेक, रंग राग उच्चरी ।
इसी[11] अनेक राजद्वार[12], सुंदरी सहच्चरी ॥ १५५

परी[13] चौगणास[14] रूप, इंद्र लोक इंदरां ।
इयांसु[15] चौगणा[16] उदार, रूप राज[17] मिंदरां[18] ।

घोड़ांरौ वरणण

तुरी झळूस साज तांम, धाव देत धारकं ।
उडांण पंखराज एम[19], पांण में[20] अपारकं[21] ॥ १५६

---

१ ख. ग. वींछीया । २ ख. ग. मैं । ३ ख. ग. जावकां । ४ ख. ग. जिके । ५ ख. ग. आवीया । ६ ख. ग. पयं । ७ ख. ग. कलावतीस । ८ क. यौ । ९ ख. ग. जिकेस । १० ख. जलंभ । ११ ख. ग. यसी । १२ ख. ग. राजद्वारि । १३ ख. ग. परीस । १४ ख. ग. चौगुणास । १५ ख. ईयांस । ग. ईवास । १६ ख. ग. सौगुणा । १७ ख. राज्य । १८ ख. ग. म्पंदरां । १९ ख. ग. ऐम । २० ख. ग. मै । २१ ख. अपारकं ।

---

१५४. अणोट – पैरके अंगूठेमें पहिननेका एक प्रकारका छल्ला । वींछिया – पैरोंकी अंगुलियोंमें धारण करनेका स्त्रियोंका आभूषण विशेष । पाय – पैर । पंकजं – कमल । अनंग – कामदेव । छनंग अंग – खंड-खंड, टूक-टूक । रंग – आनंद । रजं – तुष्ट, खुश । पयंस थांन – (?) । जावकं तणा – मेंहदीके । जगै – सुशोभित होते । जिकै – जिस । रंभ – अप्सरा, रंभा नामक अप्सरा ।

१५५. पोस कांम – कामदेवको पोषण करने वाली । जिलंभ – आभा । सहच्चरी – सखी, सहेली, सेविका ।

१५६. परी – अप्सरा । चौगणास – चौगुना । राज मिंदरां – राज भवनों । तुरी – घोड़ा । झळूस – (?) । साज – सजावट कर के । धाव – विचार । धारकं – धारण करने वाला । उडांण – दौड़ । पंखराज – गरुड़ । पांण – शक्ति । अपारकं – असीम, अपार ।

पवन्नि[1] सांमुहै पवंग, आसवार धारवै ।
वजंत[2] सौक[3] पाइ[4] वे, उवारतै[5] विहारवै ।
उलट्ट ए[6] पलट्ट यौं, झपट्ट तै सझावतं ।
समीर नां[7] मिळै[8] सकै, इतैंस[9] फेर[10] आवतं ॥ १५७

वछेर केतलं सवागि[11], फेरकं फरावतं ।
नटंस नाटकं[12] विधांन[13], साझना[14] सझावतं ।
नचंत चातुरीस नृत्य[15], जोड़ तातुरी जिसी[16] ।
परी न पांतुरी न पाइ[17], आतुरी करै इसी[18] ॥ १५८

छमासहूं मसत्त[19] छाक, चाचरै नरं चढ़ै ।
अरोह वाज डाक आंणि, काळ कीठगै[20] चढ़ै[21] ।
तरील ह्वै हरोळ[22] तांम, हट्ट[23] हूंत हल्लवै ।
पटा गिरंद खाळ पूर[24], ऊपटा[25] उझल्लवै ॥ १५९

---

१ ख. ग. पव्वनि । २ ख. ग. वजंत । ३ ख. ग. सोक । ४ ख. पायवै । ग. पायवे । ५ ख. उवायतै । ग. उंवायनै । ६ ग. ऐ । ७ ख. ग. न । ८ ख. ग. म्मिले । ९ ग. इतैंस । १० ग. फेरि । ११ ख. ग. सवाग । १२ ख. ग. नाटिकं । १३ ग. निघांन । १४ ख. ग. साधना । १५ ख. ग. नृति । १६ ख. यसी । १७ ख. ग. पाय । १८ ग. इ । १९ ख. ग. मसत । २० क. गीठगै । २१ ख. कढ़े । ग. कढ़ै । २२ ख. ग. हरोल । २३ ख. हव । ग. हव्व । २४ ख. दूर । २५ ख. ऊपट्टा ।

---

१५७. पवन्नि – पवन, वायु । सांमुहै – सम्मुख, सामने । पवंग – घोड़ा । आसवार – असवार । सौक – तेज दौड़, गति, प्रवाह आदिकी ध्वनि । विहारवै – (?) । झपट्ट – दौड़, तेज दौड़ । समीर – हवा, पवन ।

१५८. वछेर – छोटा घोड़ा । सवागि – वल्गा सहित । फेरकं – घोड़े, ऊँट आदिको चाल सिखाने वाला । विधांन – ढंग, प्रकार । साझना – सावना सिद्धि । चातुरीस – दक्षता, चतुराई । जोड़ – समानता । तातुरी – त्वरा, शीघ्रता, चंचलता (?) । परी – अप्सरा । पांतुरी – वेश्या, रंडी । पाइ – पैर । आतुरी – शीघ्रता ।

१५९. मसत्त – मस्त । छाक – (?) चाचरै – ललाट, माथा । अरोह – सवारी, आरोह । वाज – घोड़ा । तरील – (?) । हरोळ – अगाड़ी, हरावल । हट्ट हूंत – (?) । हल्लवै – चलते हैं या चलाये जाते हैं ।

हाथियांरौ वरणण

डगंस[1] बेड़ियां[2] डहै[3], जंभीर[4] भार जूवळां ।
करंत खून काळकीट, सुंड नाग सांमळां ।
धतांधतां चरक्ख[5] धोम, ऊडि[6] झाळ ऊछळै[7] ।
कराळ रूप कोप में[8], उखाड़ि व्रच्छ[9] आंमळै ।। १६०

उधूत[10] भूत-सा अनेक, जोम काळ जेहड़ा ।
सझंत सूंड[11] हूं सलांम, आय आय एहड़ा[12] ।
घडाळ[13] नौबती[14] घुरंत, जैदराज[15] नागरं ।
हिलोळ में[16] किलोळ होत, सद्द जेम सागरं ।। १६१

दिपंत[17] एम[18] राजद्वार, राजनग्र राज में[19] ।
जोधांण हिंदवांण[20] जोड़, एणवार[21] आजमें[22] ।
इसौ विलोकि[23] रीझयौ[24], धरं[25] छकं 'अभौ'[26] धणी ।
अमीं सुद्रस्ट[27] सींचियौ[28], वळे[29] घणो प्रभा वणी ।। १६२

---

१ ग. डंगंस २ ख. ग. बेड़ीयां । ३ ख. ग. डहे । ४ ख. ग. जंजीर । ५ ख. ग. चरख । ६ ख. ग. उडि । ७ ख. ग. उछळै । ८ ख. ग. मैं । ९ ख. ग. वृछ । १० ख. ग. औधूत । ११ ग. सूंडि । १२ ग. ऐहड़ा । १३ ख. ग. घड़ाळि । १४ ख. ग. नौवती । १५ ख. जद्दराग । ग. जद्दराग । १६ ख. मैं । ग. में । १७ ग. दिपांत । १८ ग. ऐम । १९ ख. मै । ग. में । २० ख. हूंदुवाण । ग. हूंदुवोन । २१ ग. ऐणवार । २२ ग. आजमें । २३ ग. विलोकि । २४ ख. रीझीयौ । ग. रीझियौ । २५ ख. धरे । ग. धरै । २६ ग. अभै । २७ ख. सुद्रिष्ट । ग. सुद्रिष्टि । २८ ख. ग. सींचीयौ । २९ ख. वले । ग. वळै ।

---

१६०. डगंस – निगड, हाथीके पैर बांधनेकी जंजीर । डहै – धारण करते हैं । जूवळां – पैर, चरण । काळकीट – अत्यन्त श्याम । सांमळां – श्याम, काला । धतांधतां – हाथीको पीछे हटानेका शब्द । चरक्ख – तोप । धोम – अग्नि । झाळ – अग्निकी लपट । आंमळै – दलमलते हैं, कुचलते हैं ।

१६१. उधूत – उद्दण्ड । भूत – प्रेत । सा – समान, तुल्य । जोम – जोश । काळ – यमराज । जेहड़ा – जैसे । सझंत – करते हैं । सलांम – नमस्कार, अभिवादन । एहड़ा – ऐसे । घडाळ – घड़ियाल, घंटी । नौबती – राजाओं और अमीरोंके दरवाजे पर बजने वाला वाद्य विशेष, नौबत । घुरंत – बजती है । जै – जय । दराज – महान । हिलोळ – तरंग । किलोळ – ध्वनि, क्रीड़ा, खेल । सद्द – शब्द ।

१६२. दिपंत – शोभा देता है । राजनग्र – राजनगर । हिंदवांण – हिन्दुस्तान । एणवार – इस समय । छकं – वैभव । अभौ – अभयसिंह । धणी – स्वामी । अमीं – अमृत । सुद्रस्ट – शुभ दृष्टि । सींचियौ – सींचा । प्रभा – कांति, शोभा ।

इसौ समाज राज ऊँच, दीपियौ[1] नरिंदरै[2] ।
समाज अम्मरं स्त्रग[3] इसौ, जिसौ न राज इंदरै ।
दुवौस[4] जोड़ि[5] खाग दन्नि[6], तेण सूं धरापती[7] ।
नरांपती जोधांण नाथ, ऐहड़ौ[8] 'अभैपती'[9] ॥ १६३

दूहा[10]—स्रव हिंदू[11] राजा[12] सिरै, अभपति अमलीमांण ।
स्रब गढ़ हिंदवांणां[13] सिरै, जाजुळ[14] गढ़ जोधांण ॥ १६४
जे[15] चाकर जोधांणरा, इळ इतरा गढ़ आंन ।
अंबनयर मंत्री इसौ, उदियापुर[16] परधांन ॥ १६५

प्रथम बगीचांरौ वरणण

दवावैत

ऐसा[17] गढ़ जोधांण और सहरका दरसाव, जिसके[18] चौतरफकौं वागीचूंका डंवर और दरियाऊंका[19] वणाव। पहिलै वागीचूंकी सोभा कहिके[20] दिखाय[21], पीछे[22] दरियाऊंकी[23] तारीफ जिसके[24] गुन[25] गाय।* सो कैसे[26] कही[27] दिखाय, जळ[28] निवांणूंका निवास

---

१ ख. ग. दीपीयौ। २ ख. ग. नरचंद। ३ ख. श्रुमं। ४ ख. दुवोन। ग. दुवौन। ५ ख. ग. जोड़। ६ ख. दांनि। ग. दानि। ७ ख. ग. धरप्पती। ८ ख. एहडौ। ९ ख. ग. अभप्पती। १० ख. ग. दोहा। ११ ख. ग. हींदू। १२ ग. राजां। १३ ख. हिंदुसिरै। ग. हिंदवांणा। १४ ख. ग. जाजुलि। १५ ग. जो। १६ ख. ग. उदीयापुर। १७ ख. ग. अैसा। १८ ख. ग. जिसकै। १९ ख. ग. दरीयाऊंका।

*यह वाक्य ग. प्रतिमें नहीं है।

२० ख. कहिकै। २१ ख. दिपाव। २२ ख. पाछूं। २३ ख. दरीयाऊं। २४ ख. जिसकै। २५ क. न.। २६ ख. सो सो कैसे। ग. सोकैसै। २७ ख. ग. कहि। २८ ख. ग. जल।

---

१६३. ऊंच – श्रेष्ठ। दीपियौ – शोभायमान हुआ। नरिंदरै – नरेन्द्रका, राजाका। अम्मरं – देवता। स्त्रग – स्वर्ग। दुवौस – दूसरा ही। जोड़ि – समानतामें। खाग दन्नि – युद्ध और दानमें। तेण – इससे। धरापती – राजा। नरांपती – राजा, नरेश। अभैपती – अभयसिंह।

१६४. स्रव – सब। सिरै – श्रेष्ठ। अभपति – अभयसिंह। अमलीमांण – अपने ऐश्वर्यका उपभोग करने वाला। हिंदवांणां – भारतवर्ष। जाजुळ – जाज्वल्यमान, तेजस्वी।

१६५. इळ – पृथ्वी, संसार। आंन – अन्य। अंबनयर – आमेर। उदियापुर – उदयपुर।

१६६. दरसाव – दृश्य, नज्जारा। चौतरफकौं – चारों ओरका। डंवर – समूह। वणाव – रचना, वनावट, शोभा, शृंगार। जळनिवांणूंका – जलाशयोंका।

रतिराजका वास । गुलजारके रसतै हौजूंका[1] वणाव । इंद्र लोकका सा उदोत[2] अवांसूंका दरसाव । फौहारूंकी पंकति जळ-चादरूंका[3] उफांण[4] । जळ-चादरूंकी धरहर मांनूं छिल्लै महिरांण । स्रीखंडूंका डंबर समीर[5] सैं भोला[6] खावै । मलियागिरके[7] भौळै[8] भूलि पंखेसर मिणधर भुजंग आवै । अंबूंका[9] समूह फळ जंबूंका[10] विसतार[11] । कोकिलूंकी कोहक[12] मोर चात्रक[13] अपार । चंपूंकी अंधेरी बोळसरूंके[14] थंड । रतिराजके[15] असपक्क आसापालवके[16] भंड । सोनजुह[17] रियाबेल[18] चंबेल[19] चंबेलीके फुलवाद मोगरैकी[20] महक गुलाब फूलूंकी[21] सुगंध जवाद ।

---

१ ख. ग. हौजूका । २ ख. ग. उद्दोत । ३ ख. ग. धारूंका । ४ ग. ऊफांण । ५ ख. समैर । ६ ख. भूला । ग. भूल । ७ ग. मिलियागिरके । ८ ख. भोलें । ९ ख. अंवूका । ग. अंबुका । १० ख जंवूका । ग. भंवूका । ११ ग. विस्तार । १२ ख. ग. कौहीक । १३ ख. ग. चात्रिक । १४ ख. वौलसरूके । ग. वौलसूंरी । १५ ख. ग. रतिराजकेसे । १६ ख. ग. आसपल्लवके । १७ ख. ग. सोनजुही । १८ ख. यवेल । ग. राबेल । १९ ख. चंवेली । ग. चंबेली । २० ख. ग. मोगरेकी । २१ ख. फुलूंकी । ग. फूलंकी ।

---

१६६. **रतिराज** – कामदेव, वसंत ऋतु । **गुलजारके** – उद्यानके, वाटिकाके । **उदोत** – प्रकाशमान । **अवांसूंका** – भवनोंका । **फौहारूंकी** – फव्वारोंकी । **जळचादरूंका** – पानीकी चौड़ी धार जो कुछ ऊपरसे गिरती हो । **उफांण** – उमड़ना । **धरहर** – ध्वनि, आवाज । **छिल्लै** – उमड़ रहे हों, सीमा-उलंघन कर रहे हों । **महिरांण** – महार्णव, सागर, समुद्र । **स्रीखंडूंका** – चंदनका । **डंबर** – समूह । **समीर** – वायु । **भोला** – वायु-प्रवाह या वायु-प्रवाहका आघात । **मलियागिर** – चंदनगिरि । **भौळै** – भ्रममें । **भूलि** – भूल कर, भ्रममें पड़ कर । **पंखेसर** – पंखधारी । **मिणधर** – मणिधारी सर्प । **अंबूंका** – आमोंका । **जंबूंका** – जामुनका (?) । **कोहक** – कोयलकी आवाज । **चात्रक** – चातक । **चंपूंकी** – (चम्पाकी ?) । **वोळसरूंके** – मौलश्रीके । **थंड** – समूह । **असपक्क** – बड़ा तंबू, खेमा, अस्वक । **आसापालवके** – अशोक वृक्षके । **भंड** – समूह । **सोनजुह** – एक प्रकारकी जूही जिसके फूल पीले रंगके होते हैं, स्वर्णयूथिका । **रियाबेल** – रायबेल, चमेली आदिकी जातिका एक प्रकारका छोटा पौधा जिसमें सफेद रंगके सुगंधित फूल लगते हैं । **चंवेल** – (?) । **चंवेलीके** – चमेलीके । **फुलवाद** – पुष्प, फूल । **मोगरैकी** – एक प्रकारका बहुत बढ़िया वेला (पुष्प) । **जवाद** – (जवाजा ?) ।

मालती सेवती केतकी प्रफूलमांन[1]। फूलूंकी सोभा असमांनके[2] तारूंका विधांन[3]। *केवड़ूंकी वाड़ी[4] सिरूंका विकास।* नाफरमां हजारा औरे[5] गुलहूवास[6]। गुललालके[7] डंवर[8] सूरगुलूंका[9] प्रकास। दावदो[10] अजूवां गुलरोसनूंका उजास। गुल-नौरंग महंदी गुल-रेसमी गुल सोहै। मुनमथका इंदका[11] मुनेस्वरूंका मन मोहै। फल-फूलूंके[12] भार भरी अढ़ार[13] भार। ठांम ठांमके ऊपर मोरूंका तंडव भौंरूंका गुंजार[14]। ठांम ठांम सेती रतिराजके[15] नकीव कोकिला वोलै। ⊕सीतल मंद सुगंध तीन प्रकारके झोलै।⊕ अंजीरूंके[16] दरखत नागलताके वरेलि[17]। अंगूर सरदूं फळी[18] अनेक[19] वेलि[20]।

१ ख. प्रफुलमांन। २ ग. आसमांनके। ३ ख. विकास।
*ख. प्रतिमें नहीं है।

४ ग. वाड़ि। ५ ख. ओर। ग. ओर। ६ ख. ग. गुलहकेवास। ७ ख. गुललालूके। ग. गुललालूंके। ८ ख. डंवर। ग. डंव्वर। ९ ग. सूरजगुलूंका। १० ख. ग. दाऊदी। ११ ख. ग. इंद्रका। १२ ग. फूलके। १३ ग. अट्टार। १४ ग. गुंझार। १५ ख. ग. रतिराजकेसे।

⊕ग. प्रतिमें इस प्रकार है—सीतल मंद सुगंध तीन प्रकारके पवनके झोले। १६ ख. ग. अंजरूके। १७ ख. ग. वरेल। १८ ग. सरदूंसेंफली। १९ ख. ग. अन्नेक। २० ख. वेल। ग वेल।

१६६. मालती – एक प्रकारकी लता जो हिमालय और विंध्याचल पर्वतके वनोंमें अधिकतासे पाई जाती है। सेवती – गुलावकी एक किस्म जिसके फूल सफेद रंगके होते हैं। केतकी – एक प्रकारका छोटा झाड़ विशेप, केवड़ेका एक भेद विशेप। प्रफूलमांन – प्रफुल्लित, विकसित। तारूंका – तारागरणके, उडुगरणके। विधांन – रचना, वनावट, निर्माण। केवड़ूंकी – सफेद केतकीके पौधेकी जो केतकीसे कुछ वड़ा होता है। सिरूंका – सिरूंका पौधा विशेष। नाफरमां – एक प्रकारका पौधा जिसके फूल ऊदे या बैंगनी रंगके होते हैं, ना-फरमान। हजारा – जिसके हजार या अधिक पंखड़ियांहों, सहस्त्रदल। गुलहूवास – गुले-अब्बास, लाल व पीले फूलों वाला पोधा, गुलहवास। (?)। गुललालके – गुल्लालाके (?) डंवर – समूह, महक। सूरगुलूंका – (?) दावदो – एक प्रकारका पौधा जिसके श्वेत रंगका पुष्प होता है, दाऊदी। अजूवां – (?)। गुलरोसनूंका – (?) गुल नौरंग – (?)। महंदी – मेंहदी। मुनमथका – मन्मथका, कामदेवका। अढ़ार भार – अष्टादश भार वनसपति। मोरूंका – मोरोंका। तंडव – नृत्य। भौंरूंका – भौंरोंका। रतिराजके – वसंत ऋतुके। नकीव – राजा महाराजा व वादशाहकी सवारीके आगे नजरदौलत शब्दका उच्चारण करने वाला। झोलै – वायु-प्रवाह, वायुका झौंका। सरदूं – एक प्रकारका लम्बोतरा खरवूजा जो कावुलमें अधिक होता है, खरवूजोंमें यह श्रेष्ठ गिना जाता है।

बेदांनै[1] दाखां बेदांनै[2] अनार। चिलकौचै[3] बेह[4] और सेवूंका विस्तार[5]। कपूर-गरभ केळीका जूथ केळूंकी झूंब। स्रीफळ विदांम[6] और नींबूके[7] लूंब। कमळा रेसमी नारंगी पैबंदूका[8] हूंनर[9] अदभूत। रोसनी हमरांनी सुरखांनी सहतूत। ऐसे[10] दरखतूंके[11] ऊपर रिसीले[12] फळूंका रसपांन कर[13]। कीर क्रीला करते हैं। रस सुगंधके डंबर[14] भोम[15] पर भरते हैं। ऐसै वगीचूंके[16] वीचमें[17] सलियळ[18] सरोवर[19] कैसे। महाराजा वसंतकी फौजके नीसांण जैसे। सघन गंभीर आरामूंका[20] पार नहीं[21] आवै। आफताफका तेज जिसकी छांहको[22] भेद जमी लग न जावै। ऐसै[23] ही जोधांण तैसे[24] वगीचै[25]। मंडोवरके वीच[26] निवास। जहां स्री महाराजके[27] खड़ग जैतकारी काळे गोरे महावीरूं[28] भैरूंका[29] वास। ऐसै[30] वगीचूंका

---

१ ख. वेदांने। ग. वेदानै। २ ख. ग. वेदांने। ३ ख. ग. चिलकौचे। ४ ख. वेही। ग. वीही। ५ ख. ग. विसतार। ६ ख. ग. वदांम। ७ ग. नीवूं। ८ ग. पैवंदका। ९ ख. ग. हुंन्नर। १० ख. अैसे। ग. अैसैं। ११ ख. दषतूं। १२ ख. रसीले। ग. सीतल। १३ ख. ग. करि। १४ ख. डंवर। ग. डंब्बर। १५ ग. भौम। १६ ख. ग. वागीचूंके। ग. वगीचूंकै। १७ ख. वीचमैं। ग. बीचमें। १८ ख. ग. सलीयल। १९ ख. ग. सरोस। २० ग. आरांमूका। २१ ख. ग. नही। २२ ख. ग. छांहकूं। २३ ख. अैसे। ग. अेसे। २४ ख. ग. तेसे। २५ ख. ग. वगीचे। २६ ग. वीचि। २७ ख. माहाराजाके। ग. माहाराजके। २८ ख. ग. महावीर। २९ ख. भैरूंका। ग. भैरूऊंका। ३० ख. अैसे। ग. अैसैं।

---

१६६. चिलकौचै – एक प्रकारका मेवा। बेह – कमलकी नाल। सेवूंका – सेव नामक फलका। कपूर-गरभ – कपूर है गर्भमें जिसके। केळीका – कदलीका। जूथ – यूथ, समूह। केळूंकी – केला नामक फलका। झूंब – फलोंका गुच्छा, गुच्छा। स्रीफळ – नारियल। लूंब – गुच्छा, जो लटकता है। पैबंदूका – किसी वृक्षकी शाखा काट कर उसी जातिके दूसरे वृक्षमें जोड़ कर बांधना जिससे फल बढ़ जाय और स्वादमें भी नवीनता हो जाय। रोसनी – (?)। हमरांनी – (?)। सुरखांनी – (?)। रिसीले – रसिक, रसास्वदन करने वाला। कीर – तोता। क्रीला – क्रीड़ा, खेल। डंबर – समूह। भोम – भूमि। सलियळ – पानीसे पूर्ण। नीसांण – वाद्य विशेष। सघन – घना। गंभीर – गहरा। आरामूंका – वाटिकाएँके, उपवनोंके। आफताफका – सूर्यका। तेज – धूप, प्रकाश। जैतकारी – विजयी। भैरूंका – भैरव नामक देवका।

सिंगार[1] सोभाका अथाग। *सिरूंका सिंगार असे वने हैं बाग। ◎कागा नांम काकरिख भुसंडी[2] दिलके वीच धारी। सव भूमि सेती उत्तिम भूमि देखि तपस्या करनेकी[3] विचारी। केतेक दिन तपस्या करि आरांम लगाया। तिस काकरिखके नांम[4] कागा कहाया। तिस बगीचूंके[5] दरम्यांन वरणै[6] जेते फळफूलूंका विस्तार[7]। सव्वूके[8] सिरपोस आनारूंका अधिकार। सौ वेदांणै[9] अनारके[10] से रसके पूर हीरूं मांणीकूंकी[11] जोती[12]। स्वात[13] बूंदसे[14] दूसरे मांनूं अम्रतके[15] मोती। ऐसै[16] अलोकीक मेवै[17] विसन सकतिकूं[18] अरपण करि प्रसादीक[19] आरोगैणेमे[20] आवै[21]। केतेक हजूरके[22] सेवगर दुज कवि उमराव मंत्री तिनकूं बगसावै। श्रैसे अनार बहुत सी मनुंहार[23] बहुत सी लिखेतै[24] किसी किसी वखत पातसाहूंके पास रसाळ

---

१ ख. ग. शृंगार। *यह पंक्ति ख. तथा ग. प्रतियोंमें नहीं हैं।
२ ख. भ्रुसंडी। ग. भ्रुसुंडी।

◎ग. प्रतिमें यहांसे आगे निम्न पंक्तियां और मिली हैं। इसमें उपरोक्त पंक्ति भी निम्न प्रकार है—

'कागा नांम काक रिप भ्रुसुंडीका वाग। सो किस वजै सें हू वाकहि दिषाय।
ऐक समैंके वीच काकरिप भ्रुसुडी दिलके वीच धारी।'

३ ख. करनैंकी। ग. करनें। ४ ख. ग. नांय। ५ ख. ग. वागीचेके। ६ ख. ग. वरणे। ७ ख. ग. विसतार। ८ ख. सव्वूंके। ग. सव्व्रूंके। ९ ख. ग. वेदानें। १० ख. ग. अनारकै। ११ ख. ग. मांणिकू। १२ ख. जोति। १३ ग. स्वांत। १४ ग. वूंदसै। १५ ख. ग. अमृतके। १६ ख. श्रैसे। ग. श्रैसै। १७ ख. ग. मेवे। १८ ख. सकतीकूं। १९ ख. प्रादीक। २० ख. अरोगनमैं। क. आरोगनेमैं। २१ ग. आवैं। २२ ग. हभ्रुरके। २३ ख. ग. मनुहार। २४ ग. लिखतैं।

---

१९९. काकरिख—एक ब्राह्मण जो लोमश ऋषिके शापसे कौआ हो गये थे, काकभुशुंडि। कागा—जोधपुर नगरके पास स्थित एक पवित्र स्थान। दरम्यांन—मध्य, बीच। सव्वूके—रजनीगंधा नामक पौधा या उसका फूल (?)। सिरपोस—शिरका आवरण। हीरूं—हीरे। मांणीकूं—माणिक्योंको। स्वात बूंदसे—स्वाति नक्षत्रकी बूंद जैसे मोती। विसन—विष्णु। सकती—दुर्गाको, देवीको। अरपण—भेंट, अर्पण। प्रसादीक—प्रसाद। सेवगर—सेवक। दुज—ब्राह्मण। रसाळ—स्वादिष्ट और मीठे फल।

तरीक भिजवावै[१]। जिन्हूंके[२] रस सवाद देखै[३] सै विलायतके पातसाहके[४] भेजै[५]। विलायत त[क]के बेदांने अनार सो[६] पैमाल जावै[७]। जिनके[८] रस सवादके[९] मजा देवतूंका[१०] मन हरै[११]। दिल्लेसुर[१२] परमेसुर जिसकी स्रीमुखसे[१३] तारीफ* करै। ऐसै[१४] वगीचै[१५] अनेक सो तौ[१६] संखेप[१७] वरनै[१८] सुभाय।

ताळावांरी वरणण

अब दरियाऊंकी तारीफ* सो[१९] कहिकै दिखाइ[२०]। जगजीत जोधांणके[२१] दरियाव कैसै[२२]। अभैसागर बाळसमंद दोऊ मांनसरोवर जैसै[२३]। अम्रितके समुद्र तैसै लहरूंके[२४] प्रवाह छाजै[२५]। जिनका[२६] रूप देखे सै छीरसमुद्रका गुमर भाजै। गंभीर नीर तिम तिममंगळ[२७] ग्राह। थाग[२८] तै[२९] अनेक[३०] पावै नहीं थाह। सारस बतक मुरगाबी बक खेल संजे। हरख[३१] नचंत तीर खंजनकुमार[३२] हंजे। छहूं रिति[३३] जिन्हूंके[३४] तट[३५] परि ब्रह्मग्यांनी[३६]

१ ग. भिजवांवै। २ ख. जिन्हुके। ग. तिन्हूके। ३ ग. देखें। ४ ग. पातिसाहके। ५ ख. ग. भेजे। ६ ख. ग. सोपै। ७ ग. जावें। ८ ख. ग. जिसके। ९ ख. ग. स्वादका। १० ग. देवतुंकां। ११ ग. हरें। १२ ख. ग. दिलेसुर। १३ ग. स्रमुखसें।

*···*ये पंक्तियां ग. प्रतिमें नहीं हैं।

१४ ख. ग्रैसें। १५ ख. वागीचे। १६ ख. तौ। १७ ख. संपेष। १८ ख. वरने। १९ ग. सौ। २० ख. ग. दिषाय। २१ ग. गढ़ जोधांणके। २२ ग. कैसे। २३ ख. जैसे। २४ ख. हलरूके। २५ ग. छाजें। २६ ख. जिन्ह। ग. जिन्हूं। २७ ख. ग. तिमतिमगल। २८ ग. थाघ। २९ ग. तें। ३० ग. अन्नेक। ३१ ग. हरषि। ३२ ग. कुंमार। ३३ ख. रति। ३४ ख. ग. जिन्हुके। ३५ ख. ग. तटि। ३६ ख. ब्रह्म के ग्यांनी।

---

१६६. तरीक – विधि, प्रकार, ढंग, तरीका। मजा – आनन्द, रसास्वादन। दिल्लेसुर – दिल्लीश्वर, बादशाह। संखेप – संक्षेप। दरियाऊंकी – तालावोंकी। लहरूंके – तरंगोंके, हिलोरोंके। छाजै – शोभा देते हैं। सै – सब। छीरसमुद्रका – क्षीरसागरका। गुमर – गर्व। भाजै – नाश होते हैं, मिट जाते हैं। तिममंगळ – समुद्रमें रहने वाला मत्स्यके आकारका एक बड़ा भारी जंतु जो तिमि नामक बड़े मत्स्यको भी निगल जाता है। ग्राह – मगर, घड़ियाल। थाग – नदी, तालाब, समुद्र आदिके नीचेकी जमीन, थाह। मुरगाबी – मुरगेकी जातिका एक पक्षी जो जलमें तैरता है और मछलियाँ पकड़ कर खाता है। हरख – हर्ष। नचंत – नृत्य करते हैं। तीर – तट, किनारा। हंजे – सुन्दर, मनोहर। छहूं – छहो। रिति – ऋतु।

सिध[1] मुनिराज छावै[2]। मांनसरोवरके[3] भौळै[4] भूल[5] अनेक(क)[6] लीलंग[7] आवै। ऐसे[8] दरियाऊंके[9] वीचमें[10] जिहाज सते से धरवाय। चंदणी[11] विछायत करवाय महताबी जरदौजीके[12] बंगळै समीयांने[13] तणवावै[14]। तहां स्री महाराजा राजराजेस्वर नरलोकके इंद्र छभा संजुत[15] विराजमांन होय मजळस वणवावै[16]। रस-कवितूंकी चरचा रंगराग[17] अपार। कुमुदाँकी[18] फूलूं पर भंवरूंका गुंजार[19]। सरदकी चंदणी[20] चंद्रवंसी विमळूंका उजास। रितराजके[21] दिवस तहां सूरज वंसी[22] कंवळूंका[23] प्रकास। इस वजै खटरितुकी क्रीला जल्ले[24] गुलांबूंकी छाक। तिसके देखे[25] तें होत रितराज मुसताक। लावन्य रूप देखि रितराज[26] लोभा। सब राजसकी जळूस सेती गढ़ जोधांणकी सोभा। ऐसा[27] एक[28] प्रथमीकी[29] पीठ पर अगंजी

---

१ ग. सिद्ध। २ ग. छावैं। ३ ख. ग मांनसरवरकै। ४ ख. भोलै। ग. भौलैं। ५ ग. भूलि। ६ ख. ग. अन्नेक। ७ ख. लालंग। ८ ख. अैसे। ग. अैसै। ९ ग. दरियाऊंकै। १० ख. वीचमै। ग. वीचमें। ११ ख. चांदणी। ग. चांदणीकी। १२ ख. ग. जरदोजीके। १३ ख. ग. ससियांने। १४ क. तनवावे। ग. तणवांवें। १५ ख. ग. संजुगत। १६ ग. वणवांवें। १७ ख. रागरंग। १८ ख. कुमदूंकी। ग. कुमदूंके। १९ ग. गुंझ्झार। २० ख. ग. चांदणी। २१ ख. रितिराजके। २२ ग. वंसी। २३ ख. ग. कमलूंका। २४ ख. लगे। ग. गले। २५ ख. देवै। ग. देवे। २६ ख. तराज। २७ ख. ग. अैसा। २८ ग. ऐक। २९ ग. प्रिथमी।

---

१६६. छावै – शोभा देते हैं, फैले हुए हैं। भौळै – भ्रममें, भूलमें। लीलंग – हंस। सते से – धीरेसे। धरवाय – रखवा कर। चंदणी – विछानेका सफेद रंगका कपड़ा। विछायत – विछानेका कपड़ा या विछानेकी क्रिया। महताबी – किसी बड़े भवनके आगे अथवा वागके वीचमें बना हुआ गोल या ऊँचा चबूतरा जिस पर लोग रात्रिमें बैठ कर, चांद-चादनीका आनन्द लेते हैं, अथवा = जरवत्फ। जरदौजीके – सल्मे सितारा और जरीका काम, कारचोबीके। समीयांने – शामियाना, बड़ा तंबू। छभा – सभा। संजुत – संयुक्त, सहित। मजळस – बहुतसे लोगोंके बैठनेकी जगह, मजलिस, सभा। कुमुदाँकी – लाल कमलोंकी, कुमुदोंकी। भंवरूंका – भौंरोंका। रितराजके – वसंत ऋतुके। दिवस – दिन। कंवळूंका – कमलोंका। रितु – ऋतु। क्रीला – क्रीड़ा। जल्ले – (खिले हुए चमकदार ?)। छाक – (ठाठ ?)। रितराज – ऋतुराज, वसंत ऋतु। मुसताक – उत्कंठित, मुश्ताक। लावन्य – सुन्दरता, लावण्य। लोभा – लुभायमान हुआ। अगंजी – अजयी।

गढ़ जोधांण । जिसने[1] वारंवार सरण रक्खे[2] राव राजा रावळ रावत अरु रांण । अंबगढ़का राजा, चित्रगढ़का[3] रांणा सिर ईसांन वहै[4] । और भी राव राजूंकूं बखत पड़ै सो सरणा गह्या[5] चहै । सरण तकिके[6] महाराजाके[7] कदमूं आवै[8] । जिसकूं समसेरके पांणि फिर[9] उतनकी[10] मसलति[11] वैठावै[12] । जैसा जिस[13] जोधांणगढ़का पातिसाह सो कीरतिका नाह ।

महाराज अभैसींघजीरो वरणण

सरणाई साधार सरणाई[14] राय विजै[15] पंजर रूपका अनंग आजांनबाह[16] । *खटव्रनका सुरतर हिंदुसथांनका पातिसाह ।* तेजका झाळाहळ पौरसका धांम । जससुगंधका भंमर आरंभका रांम । वाचका जुजिस्तर[17] साचका विधांन । सतका[18] हरचंद[19] द्रोणसा[20] मांन[21] । सीलका गंगेव भारथका पाथ । नरूंका जंवहरी जोधांणका नाथ । मेरसा अचळ धू जैसा ध्यांन । संकरसा तपसो गोरखसा ग्यांन । लाजका समुद्र[22]

---

१ ख. जिसनै । ग. जिसनें । २ ख. ग. रखे । ३ ख. ग. चित्रकोटका । ४ ग. वहै । ५ ख. ग. गति । ६ ख. ग. तकीकै । ७ ख. ग. माहाराजाके । ८ ग. आंवै । ९ ख. ग. फिरि । १० ग. उत्तनकी । ११ ख. ग. मसलंद । १२ ख. वैठावै । ग. वैठांवै । १३ ख. जिसि । १४ ख. ग. सरणाय । १५ ग. विजैं । १६ ग. आझझान ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

१७ ख. ग. जुजिस्तल । १८ ग. सत्तक । १९ ग. हरच्चंदद । २० ख. जोण । ग. झोण । २१ ख. सःमान । २२ ख. सामुद्र ।

---

१६६. अंबगढ़का – आमेरका । चित्रगढ़का – चित्तौड़गढ़का । ईसांनं – अहसान । वहै – धारण करता है । कदमूं – चरणोंमें । समसेरके – तलवारके । पांणि – बल, शक्ति । उतनकी – जन्मभूमिकी, वतनकी । मसलति – परामर्श, सलाह, मस्लहत । पातिसाह – सम्राट । नाह – नाथ, स्वामी । सरणाई साधार – शरणमें आए हुएकी रक्षा करने वाला । सरणाई राय – राजा, महाराजाओंको शरण देने वाला । पंजर – शरीर । अनंग – कामदेव । आजांनबाह – आजानुबाहु । खटव्रनका – ब्राह्मणादि छः जातियोंका । सुरतर – कल्पवृक्ष । झाळाहळ – सूर्य, अग्नि । भंमर – भौंरा । वाचका – वचनोंका । जुजिस्तर – सत्यसंध, युधिष्ठिर । हरचंद – हरिश्चंद्र राजा । द्रोण – द्रोणाचार्य ऋषि । सीळका – सदाचारका, सद्वृत्तिका । गंगेव – गांगेय, भीष्म पितामह । भारथ – युद्ध । पाथ – पार्थ, अर्जुन । नरूंका – नरोंका, वीरोंका । जंवहरी – जौहरी । मेरसा – सुमेरु पर्वतके समान । धू – भक्तराज ध्रुव, ध्रुव नक्षत्र ।

करण-सा दातार। बीकम-सा[१] विवेकी[२] परा-उपगार। पांणका कपिराज सूरजका[३] वंस। देवीका वरदाई दईवका अंस। दिलका दलेल लहरूंका दरियाव। रूपक[४] केसरीज[५] गजबंधका[६] सभाव[७]। दवागीरूंका[८] सुरतर[९] दावागीरूंका साल। सब राजूंका[१०] सिरपोस[११] महाराजा[१२] अभमाल। जस[१३] बखतमें[१४] सनांन[१५] दांन अंबाका[१६] पूजन करि सिरै[१७] दरबारका हुकम किया[१८]। फरमांवरदारूंनै आदाब वजाय[१९] लिया[२०]। आठूं[२१] मिसलके[२२] हवालगीर केउ[२३] धाए[२४]। फरासूंनै[२५] आवासूं[२६] वीच[२७] विछायत वणवाए[२८]। लाहानूंर[२९] मुसैद[३०] अंजीलकी चोपस्मी गिलमूंकी[३१] विछायत करै[३२]।

---

१ ख. ग. वीकमसा। २ ख. ग. विवेकी। ३ ग. सूरिजका। ४ ख. ग. रूप। ५ ख. कौसैरीभ्र। ग. कौसैरीभ्र। ६ ख. गजवंघका। ७ ख. ग. सुभाव। ८ ख. ग. दवागीरूंका। ९ ग. सूरतर। १० ग. राजौंका। ११ ग. सिरपौस। १२ ख. ग. माहाराजा। १३ ख. ग. जिस। १४ ख. वखतमै। ग. बखतमें। १५ ख. ग. सन्नांन। १६ ख. ग. अंविका। १७ ख. ग. सरे। १८ ख. ग. कीया। १९ ग. बजाय। २० ख. ग. लीया। २१ ख. ग. आठो। २२ ख. ग. मिसके। २३ ख. हवालगीरनको। ग हवालगीरनवी। २४ ख. वधाए। ग. बधाऐ। २५ ग. फरासूनें। २६ ख. ग. आरासूं। २७ ख. ग. वीचि। २८ ख. वाणवाए। ग. वणवाऐ। २९ ख. ग. लाहानूर। ३० ग. मुसैंद। ३१ ख. ग. गिल्मूंकी। ३२ ग. करैं।

---

१६६. वीकम-सा – विक्रमादित्य जैसा। परा-उपगार – परोपकार। पांणका – प्राणका, शक्तिका, बलका। कपिराज – हनुमान। देवीका वरदाई – देवीसे वरदान प्राप्त करने वाला। दईवका – परब्रह्मका, ईश्वरका, श्रीरामचंद्र भगवान्‌का। दलेल – उदार, विशाल। लहरूंका – तरंगोंका, हिलोरोंका। रूपक – स्वरूपका। केसरीज – जाति विशेषका सिंह। गजवंधका – महाराजा गजसिंहके। दवागीरूंका – दुआ करने वालोंका, दुआगोओंका, शुभचिंतकोंका। सुरतर – कल्पवृक्ष। दावागीरूंका – शत्रुओंका। साल – शल्य। सिरपोस – शिरत्राण, शिरका रक्षक। जस – जिस। अंबाका – दुर्गाका, देवीका। फरमांवरदारूंनै – आज्ञाकारियोंने, हुक्म मानने वालोंने। आदाब – शिष्टाचार। आठूं मिसलके – वे आठ ही बड़े सरदार जो जोधपुरके राजाके पासकी पंक्तिमें बैठते थे। हवालगीरके – (?)। उधाए – (?)। फरासूंनै – वह व्यक्ति जिसके जिम्मे दरवार या मजलिस आदिके फर्श आदि बिछाने या रोशनी आदि करनेका प्रबंध हो, फर्राशने। आवासूं – भवनों। विछायत – बिछानेका वस्त्र। लाहानूंर – कच्चे रेशमके चमकदार। मुसैद – (?)। अंजीलकी – (?)। चोपस्मी – चार प्रकारकी ऊनकी। गिलमूंकी – वहुत मोटा मुलायम गद्दे या बिछौनेकी।

ज्वाब ज्वाबके ऊपर सबज हमरंग वर मतंगे धरै। सुनही[1] गुलजार कस्मीरके[2] कांम। सबजी असमसिंघ मीनेके[3] विरांम। ऐसे[4] ठांम ठांमके विछायतके ऊपर[5] सोहै[6]। *सो कैसे[7], मनमथ बालके[8] खिलौने[9] मनमथके मन[10] मोहै[11]।* तिस गिलमूंके[12] ऊपर रंग वेल[13] बूंटूंका विसतार[14]। सो कैसे, रूपकी भोम[15] पर अनंगका गुलजार। जिस अवासकी सीढ़ियूंके[16] ऊपर[17] रंगदार सबजू[18] पसमीन पायंदाज राजै। सो कैसे जिसकी सोभाके[19] देखे[20] तै[21] नील घन सघनके वद्दल लाजै। जरकसी आफतावके[22] सूरतके[23] समियांने[24] जड़ाऊ[25] खंभूंपर खड़े किये[26]। किरमजी रेसमके तणाव[27] दिये[28]। जोतिके वीचतैं[29] सुरख डोरि कैसी खुली।

---

१ ख. ग. सुनहरी। २ ख. कस्मीरके। ग. कास्मीरके। ३ ख. मीनैके। ग. मीनकै। ४ ख. ग. असैं। ५ ख. ग. ऊपरि। ६ ख. सांवै। ग. सौंहै। ७ ग. कैसै। ८ ख. ग. बालके। ९ ग. षिलौंने।

*ग. प्रतिमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है—

'सो कैसें मनमथ बालके षिलौंने माहाराजूंके मनमथके दिल मोहैं।

१० ख. ग. दिल। ११ ग. मोहैं। १२ ख. गिल्मूकं। १३ ग. वेल। १४ ग. विस्तार। १५ ख. भोमि। ग. भोंमि। १६ ख. ग. सीढ़ीयूंके। १७ ख. यह शब्द ख. प्रतिमें नहीं है। १८ ख. ग. सबज। १९ ख. ग. सोभाकूं। २० ख. ग. देष। २१ ग. तैं। २२ ख. ग. आफताफकी। २३ ख. सूरतिके। २४ ख. समियांनै। ग. समियांनें। २५ ख. जड़ाऊं। २६ ख. ग. कीयै। २७ ग. तनाव। २८ ख. ग. दीयै। २९ ख. ग. वीचिमैं।

---

१९९. **ज्वाब ज्वाब** –जगह-जगह, जा-ब-जा, उपर्युक्त-स्थान पर। **हमरंग** – समान रंग वाले। **मतंगे** – विछायतको उड़नेसे रोकनेके लिए भारी मीरफर्श (?)। **सुनही** – स्वर्णिम। **गुलजार** – उपवन, वाटिका। **असमसिंघ** – (?)। **ठांम ठांमके** – स्थान-स्थानके। **मनमथ बालके खिलौने** – कामदेवके बच्चेके खिलौने, वे मीरफर्श इतने सुन्दर थे मानों कामदेवके बच्चेके मनोहर खिलौने हों। **भोम** – भूमि। **अनंगका** – कामदेवका। **अवास** – भवन। **सीढ़ियूंके** – जीनेके। **सबजू** – हरे रंगका, हरा। **पसमीन** – बढ़िया मुलायम ऊनका पश्मीन। **पायंदाज** – पैर पोंछनेका बिछावन, फर्शके किनारे पर रखा हुआ वह कपड़ा जिस पर पैर पोंछ कर फर्श पर जाते हैं। **राजै** – शोभायमान होते हैं। **सोभाके** – कांतिके, दीप्तिके। **वद्दल** – बादल, मेघ। **जरकसी** – कलाबतूका काम। **आफताबके** – सूर्यकी रोशनीसे बचनेके लिए एक प्रकारका छोटा शामियाना या छत्ता जिस पर जरी कलाबतूका काम हुआ रहता है वह आफताबी कहलाता है। **समियांने** – शामियाने, तंबू। **जड़ाऊ** – जटित। **खंभूंपर** – खंभोंपर, स्तंभोपर। **किरमजी** – किमिजके रंगका, लाल। **तणाव** – वे रस्सिएं जो तंबू खड़ा करते समय खूंटियोंसे कसी जाती हैं।

तारामंडळतै[1] और[2] धार सुरसतीकी[3] चली। तिसी समन्नेके[4] वीचिमें[5] कनक सिंघासन छत्र मसंद गाव-तकियै। तकियौ[6] संजुगत विराजमांन किये[7]। मांनूं[8] इंद्रसूं[9] जंग कर[10] जीतके[11] लियै[12]। सतखनै[13] आवासूंको[14] हलहल नरचंदूंका[15] निवास। गौखूंके[16] वीचमें[17] जोतिका उजास। चित्रके[18] कांम रास-मंडळूंका[19] वणाव। तावदानके[20] जलूस[21] अस्टपदीका भाव। अस्मूंकी[22] आव[23] जे[24] महतावूंका[25] ताव[26]। जाळियूंके[27] वीचमें[28] प्रवाळियूंके[29] जाव[30]। कलाबुतूका[31] हूनर[32] साईवांनूंका कांम। जरकसके वगीचे लगे[33] ठांम ठांम। तिलाकारीके पड़दे जोतिके जहूर जरबफ़्ती चिगैका[34] वणाव[35]।* गुलजारूंके क्यारे वसंतका

---

१ ख. तारामंडळमैं। २ ख. ग. च्यार। ३ ख. सस्वतकी। ग. सरसतीकी। ४ ख. समांनेके। ग. समांनै। ५ ख. ग. वीचमें। ६ ख. तकीयौ। ग. तकियौं। ७ ख. कीए। ग. कीयें। ८ ख. मांनो। ग. मांनौं। ९ ख. इंद्रसौ। ग. इन्द्रलौंसौं। १० ख. ग. करि। ११ ख. ग. जीतिके। १२ ख. लाए। ग. लीयें। १३ ख. ग. सतपणे। १४ ग. आवासूंका। १५ ख. ग. नरिंदूंका। १६ ख. गोषूंकै। १७ ख. वीचिमैं। ग. वीचिमैं। १८ ख. प्रतिमें यह नहीं है। ग. का। १९ ख. ग. मंडलका। २० ख. तावदानूंका। ग. तावदांनूका। २१ ख. ग. अष्ट। २२ क. अैस्मूंकी। २३ ख. अव। २४ ख. जेव। ग. जेब। २५ ख. महतावूंका। ग. महतावूंका। २६ ग. ताव। २७ ख. ग. जालीयूंके। २८ ख. वीचमैं। ग. वीचमैं। २९ ख. ग. प्रवालीयूंके। ३० ख. ग. ज्वाव। ३१ ख. कलावुत्तू। ग. कलाबुतूं। ३२ ख. हुंनर। ग. हुंन्नर। ३३ ख. लग्गे। ग. लगो। ३४ ग. चिगैंका। ३५ ख. ग. वणाव।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यहांसे आगे निम्न पंक्तियां मिली हैं-
'उद्दोत सूर, समीरके झोलेसैं अैसी दरसावैं।
विद्रलताके वीज सिळाव जिसके देषे सें पैंमाल जावैं।
फौहारूंके रसतै हौज चादरूंका वणाव।

---

१६६. तारामंडलतै ··· चली – जिन रस्सियोंसे जरीके कामके शामियानें व आफतावियाँ बाँधी गई थीं वे ऐसी मालूम होती थी मानों तारामंडलसे सरस्वती नदी की धाराएं पृथ्वी पर आ रही हैं। तिसी – उस, वही, उसी। समन्नेके– शामियाना। गावतकियै – मसनद जो पीठके नीचे रखा जाता है, बड़ा तकिया। संजुगत – संयुक्त, सहित। सतखनै – सात मंजिलके। आवासूंकी – भवनों, प्रासादों। हलहल – दमक, चमक (?)। नरचंदूंका– नरेन्द्रोंका, राजाओंका। तावदानके – रोशनदानके। अस्टपदीका – सोनेकी। अस्मूंकी – कीमती पत्थरकी। आब – कांति, दीप्ति। महतावूंका – रोशनीका। ताव – प्रकाश। प्रवाळियूंके – मूंगोका। जाव – जवाव, जोड़। तिलाकारी – सोनेका मुलम्मा चढ़ानेका काम। जहूर – प्रकाश। जर-वफ्ती – चांदी-सोनेके तारोंसे वना कपड़ा, जरवफ्त। चिगैका – चिलमनका। गुलजारूंके – उपवनोंके।

भाव। ऐसी हवाके वीच[1] ऐसे[2] डंबर[3] दरसाए[4]। उस वखतमें[5] हुकम माफक[6] खटतीस वंसूं[7] राजकुळ उमराव आए[8]। सो कैसे, पौसाकूंसें[9] जळूंस[10] मदमस्त गयंदकी चाल। आवधूंसें[11] कड़ाजूड़ ढ़ळकती ढ़ाल। भुजदंडांके[12] जोर पड़ता आभ[13] झेलै। खगझाटूंके खेल जमरामसें[14] खेलै[15]। स्यांमके सहाय मुरधरके[16] किंवाड़[17]। पिंडके प्रचंड पौरसके पहाड़। दातार सूर सीळके[18] निवास। दीनके[19] सहाय द्विज गऊके दास। जंगूंके[20] जैतवार अजांनवाह[21]। ऐसे[22] भड़ आय विराजै[23] महाराजकी[24] दरगाह। बुधिवंत[25] वजीर[26] अकलके अथाह। खांनसांमा बगसी[27] मिळि आए[28] दरगाह। वेदव्याससे पिंडत[29] व्रहसपतिसे कविराज। आए[30] अनेक जहां कीरतिके काज। और[31] ही[32] खिजमतदार[33] लोग[34] अपने हवाले[35] पर सब ही दरसाए[36]। गण ग्रंधप[37] गांनधारी सब[38] ही मिळ[39] आए[40]।

---

१ ख. ग. वीचि। २ ख. ग. असै। ३ ख. ग. डब्बर। ४ ग. दरसाऐ। ५ ख. वखतमैं। ग. वखतमें। ६ ग. माफ। ७ ख. ग. वंस। ८ ग. आऐ। ९ ख. पोसाकूंसूं। ११ ख. ग. जलूस। १० ख. ग. आवधूसूं। १२ ख. ग. भुजदंडोंके। १३ ख. आसमान। ग. आसमांन। १४ ख. मजरावसूं। १५ ग. खेलैं। १६ ख. ग. मुरधराके। १७ ग. किंवाड़ि। १८ ग. सीलकै। १९ ख. दिनके। २० ख. जगूंके। ग. जंगूके। २१ ख. ग. आजांनबाह। २२ ख. ग. असे। २३ ख. ग. विराजे। २४ ग. म्हाराजाकी। २५ ख. वुद्धिवंत। ग. बुधिवंत। २६ ग. वझ्झीर। २७ ख. वगसी। २८ ख. आऐ। २९ ख. ग. पंडित्त। ३० ग. आऐ। ३१ ख. ओर। ३२ ख. ग. भी। ३३ ख. ग. षिजमतगार। ३४ ख. लोक। ३५ ख. हवाले। ३६ ग. दरसाऐ। ३७ ख. गणगंध्रप। ३८ ख. वसही। ३९ ख. मिलि। ४० ग. आऐ।

---

१६६. डंबर – समूह। जलूंस – सज्जित, प्रकाशमान। मदमस्त – मदोन्मत्त। आवधूंसें – अस्त्र-शस्त्रसे। कड़ाजूड़ – सुसज्जित। ढ़ळकती – लुढ़कती हुई। झेलै – ढाभते हैं, रोकते हैं। जमरामसें – यमराजसे। स्यांमके – स्वामीके, मालिकके। सहाय – सहायक, मदद करने वाला। किंवाड़ = कपाट = रक्षक। निवास – रहनेका स्थान। दीनके – गरीवके। जंगूंके – युद्धोंके। जैतवार – विजयी। अजांनवाह – आजानुवाहु। दरगाह – दरबार। खिजमतदार – सेवक। गण गंध्रप गांनधारी – गंधर्व-गायिकाओंके गण।

जिस बखत[1] स्री महाराजा[2] * केसरिया[3] ऊंच पौसाक पहरि[4] खांघी पाघ पेच वणवाय[5]। जंवहरके® सिरपेच[6] सिर सोवा[7] जग जोति जगाय। मणि मांणिक हीर पन्नै[8] सोव्रन संयुगत[9] मीनेके[10] कांम पाघ पर जंवहरी[11] किलंगी धरी सो साजोतिकी सिखा परि[12] मांनूं नवग्रहूंनै[13] पंकति करी मोतियांका[14] तुररा[15] रतनपेचूंके वीच ऐसा[16] दरसाए[17]। मांनूं नवग्रहूं[18] पास तारागण आए[19]। सो तारागण कैसा। कृतका[20] नक्षत्रका[21] जोतिगण जैसा। जिस[22] बखत सिर सोभाके हरवळका मोती पाघके जवाहरके ऊपर तारीफसूं[23] झोला खावै[24]। जिसका जवाब[25] इस वजै कहता है जो आलमके विच[26] इस भूपतिकी जोड़ और भूपति कोई नहीं[27] आवै। जिसके[28] देखेसैं[29] होत सब हिंदुसथांनका[30] आघ। ऐसी सोभा से विराजांन स्री महाराजा[31] अभमालकै सीस[32] पाघ।

---

१ ख. ग. वपत। २ ग. माहाराज। ३ ख. केसरीय्यां।

ख. प्रतिमें यहांसे आगे— 'रूप हरितास' है।

४ ख. ग. पहर। ५ ख. ग. वणाय।

®यहां पर ग. प्रतिमें 'हीरूके' शब्द मिला है।

६ ग. सरिपेच। ७ ख. ग. सोभा। ८ ख. ग. पन्ने। ९ ख. संजुगत। १० ख. मीनेंके। ग. मीनेंकै। ११ ख. ग. जवहरी। १२ ख. पर। १३ ख. नवग्रहहूंनै। ग. नव-ग्रहूंनूं। १४ ख ग. मोतीयूंका। १५ ग. तूररा। १६ ख. ग. अैसा। १७ ग. दरसाऐ। १८ ख. नवग्रह। १९ ग. आऐ। २० ख कृतिका। ग. कृतका। २१ ग. नषित्रका। २२ ख. ग. जिम। २३ ख. ग. तारीफसं। २४ ग. पांवें। २५ ख. जवाव। ग. जबाव। २६ ख. ग. वीच। २७ ख. न। ग. नां। २८ ख. जिसकें। २९ ख देषैसें। ३० ख. ग. हींदुसथांनका। ३१ ख. महाराज। ग. माहाराजा। ३२ ख. सिर। ग. सिरि।

---

१६६. ऊंच – श्रेष्ठ, वढ़िया। खांघी – खांघेवाली, तिरछी। पाघ – पगड़ी। जंवहरके – जवाहरातके। सिरपेच – पगड़ी पर धारण करनेका आभूषण विशेष। जग जोति – चमक, दमक। संयुगतकी – संयुक्तकी, सहितकी। किलंगी – सिरकी पगड़ी पर धारण करनेका आभूषण विशेष। साजोतिकी – प्रकाश या ज्योतियुक्तकी। तुररा – शिर पर पगड़ीके साथ धारण करनेका आभूषण विशेष। रतनपेचूंके – शिरमें पगड़ीके साथ धारण करनेका आभूषण विशेष। कृतका – छः तारों वाला सताईस नक्षत्रोंके अंतर्गत तीसरा नक्षत्र, कृतिका। हरवळका – आगेका। झोला खावै – शोभायमान होता है। आलमके – संसारके। विच – में। जोड़ – समानता। आघ – सन्मान, प्रतिष्ठा।

केसरका[1] तिलक ऊदार[2] भळहळतै भाल पर वणवाय। अवींध[3] मोतियूंके[4] अक्षत[5] चढ़वाये[6]। सो कैसौ[7], मांनूं महाराजाका[8] जस दिगविजय[9] करि रवि-किरण अरोहि[10] जगजीत होय स्री कमळि आए[11]। आबदार ऊजळ[12] बडवार मुकताफळ सोव्रन लाल संजुति[13] रूपवंत स्रवणूंवीच[14] राजै। सो कैसे[15], मांनूं च्यार नक्षत्र[16] दोइ[17] रूप धरि मंगळ बाळ-अवसता धरि व्रहस्पतिकी[18] बाहू[19] कुंडळी[20] कीला[21] करंत छाजै। मुगतफळ[22] मांणिकूंकी कंठी सोभै माळाका विसतार[23]। सो[24] कैसै, मांनूं मिळ[25] चली सरस्वती गंगाकी धार। और भी[26] भांति भांतिके सासत्र गाए[27] जैसै[28] राजूंका[29] वणाव। जोतिके[30] जहूर[31] दिनकरका[32] दरसाव। जरकंवर[33] धुगधुगी नवग्रही विराजै[34]। जहांगीर[35] हथ सांकळै[36] सोभाका रूप छाजै[37]।

---

१ ख. केसरिका। २ ख. ग उदार। ३ ग अंवीध। ४ ख. ग. मोतीयूंके। ५ ख. अषित। ग. अषित्त। ६ ख. चढ़वाए। ग. चढ़वाऐ। ७ ख. ग. कैसे। ८ ख. माहा-राजाका। ९ ग दिगविजय। १० ख. ग. अरोहि। ११ ग. आऐ। १२ ख. उज्जल। ग. उज्झल। १३ ख. संजुगति। ग. संयुगति। १४ ख. ग. स्रवणवीचि। १५ ग. कैसै। १६ ख. ग. नषित्र। १७ ख. ग. दोय। १८ ग. व्रहसपतिकी। १९ ख. वाहु। ग. बाहूं। २० ख. ग. कुडळ। २१ ख. क्रीळा। २२ ख. मुकताफळ। २३ ग. विस्तार। २४ ख. सा। २५ ख. ग. मिलि। २६ ग. की। २७ ग. गाऐ। २८ ख. जैसे। २९ ख. राजूके। ग. राजूकै। ३० ग. जोतिकै। ३१ ख. ग. जहूर। ३२ ग. दीनकरका। ३३ ख. ग. जरकंव्वर। ३४ ग. विराझै। ३५ ख. ग. जहंगीर। ३६ ख. ग. संकले। ३७ ख. ग. साजैं।

---

१६६. उदार – विशाल। भळहळतै – देदिप्यमान। भाल – ललाट। अवींध – विना छेद किया हुआ। रविकिरण – सूर्यकी किरणों। अरोहि – चढ़कर। आबदार – कांतियुक्त। बडवार – बड़ा (?)। मुकताफळ – मोती। सोव्रन – सुवर्ण, सोना। लाल – माणिक्य नामक रत्न। संजुति – संयुक्त। स्रवणूंवीच – श्रवणमें, कानमें। राजै – शोभा देते हैं। सो कैसे, मांनूं ··· कीला करंत छाजै। मानों चार नक्षत्र बालावस्थामें दो मंगलके साथ वृहस्पतिकी बाहुमण्डलीमें क्रीड़ा कर रहे हैं। वृहस्पतिका रंग पीला, वह सोनेकी बालीका रंग है। मुक्ताफल श्वेत नक्षत्रके समान हैं, और लाल मंगल है। जहूंर – जुहूर, प्रकाश। दिनकरका – सूर्यका। दरसाव – दर्शन। जरकंवर – (?)। धुगधुगी – कंठमें धारणकरनेका आभूषण विशेष। नवग्रही – आभूषण विशेष। जहांगीर ·· सांकळै – एक प्रकारका हाथका आभूषण विशेष। छाजै – सुशोभित होते हैं।

हीरै[1] मांणिक पन्नौसौं[2] जड़ित कनंक[3] मुद्रका[4], कैसी ? जगजीत विरदूंकी[5] रूप पंकति जैसी। अैसे[6] भूखणूंसूं जुगति पन्नूंके[7] मोहरे[8] जूंसै[9] कम्मर[10] पेचकसि[11]। जवह(र)के साज सूं जमदढ़ खग कसि। बुलगारूंकी उदगार चौतरफकूं वसी। अहमंदनगरका बालाबंध[12] भळूस[13] पल्लेदार। सोव्रनी तारूंकी[14] लाज वरकी[15] बेलूंकी तरह कौरका[16] विसतार। गुलअनारका हौद[17] गुलनाफरमांके दीदार कारचौभके[18] बूंटे[19] जरीके तार। अैसै बालाबंधके[20] दहूं[21] पल्ले[22] बरोवर[23] करि केसरिए[24] सिरपाव ऊपरि[25] वणाए[26]। कसूंबल वालेके[27] पर[28] पेच पै ठहराए[29]। अैसे भळूसके साज सूं महाराजा[30]। अभमाल[31] पांन कपूर अरौगाए[32]। जदी गुलावी अतर[33] पहरि करि धूप धारे। खमां[34] खमां

---

१ ख. ग. हीरे। २ ख. पनासो। ३ ख. ग. कनक। ४ ख. ग. मुद्रिका। ५ क. ग. विरद्दूंकी। ६ ख. अैसैं। ७ ख. पंन्नूके। ग. पन्नूंकै। ८ ख. मोहरे। ९ ग. जूंसें। १० ख. कंम्मर। ११ क. पैचकसि। १२ ख. वालावंध। १३ ख. भ्फल्लूस। १४ ख. ग. तारूकी। १५ ख. वरजका। १६ ख. ग. कोरका। १७ ख. हौव। १८ ख. कारचोवके। ग. चोवके। १९ ग. छूंटे। २० ख. ख. वालावंधके। ग. बाळवंधके। २१ ख. ग. दोऊ। २२ ख. पले। २३ ख. वरोवर। ग. वरोवरि। २४ ख. केसरीये। ग. केसरीऐ। २५ ख. ग. उप्पर। २६ ख. वणाए। ग. वणाऐ। २७ ख. वाळेके। २८ क. घर। २९ ग. हठराऐ। ३० ख. माहाराजा। ३१ ग. श्रीअभमाल। ३२ ख. अरोगिए। ग. अरोगिऐ। ३३ ग. अंतर। ३४ ख. षमा षमा। ग. षम्मा षम्मा।

---

१६६ कनंक – सुवर्ण, सोना। मुद्रका – मुद्रिका। विरदूंकी– विरुदकी। पंकति – पंक्ति, कतार। संजुगति – संयुक्त, सहित। पन्नूंके– पिरोजेकी जातिका हरे रंगका एक रत्न विशेष। मौहरे – जोड़। पेचकसि – शस्त्र विशेष। जमदढ़ – कटार, तलवार। बुलगारूंकी – कपड़ा विशेपकी। उदगार – (?)। चौतरफकूं – चारों ओरका। बालावध – एक प्रकारका कपड़ा विशेष जो चांचदार पगड़ी पर लपेटा जाता है। कसूंबल – लाल। वालेके – पगड़ी विशेपके। पेच – पगड़ीकी लपेट। भळूसके – सजावटके, समूहके। साज – सजावट, सज्जा। अभमाल – अभयसिंह। आरौगाए – खाए। जदी – जब। धूप – तलवार। खमां खमां – राजा महाराजा व बड़े सरदारके आगे उच्चारण किया जाने वाला शब्द जिसका अर्थ होता है– "आप समर्थ हैं, हमारे अपराध क्षमा करने वाले हैं।"

हाके[1] होते[2] अंदरसे[3] बाहर[4] पधारे[5]। तिस बखत सब दरबारके लोगूंनै[6] अदाब बजाय सनमुख आय मुजरा किया[7]। दवागीरूंनै दुजराजूंनै[8] आस्त्रीवाद[9] दिया[10]। चौपदारूंके हमत्त[11] न[ज]र दौलतूंकी[12] हाक। पलकूं हाथूंसै कुरब करि[13] दुवा[14] मुसताक। द्वजराजूंकी[15] तरफ नजरका इसारा दिया[16]। दोऊं कर जोड़िके[17] नमसकार किया। अैसी जळूस कियै[18] मदमसतज्यूं[19] पाव धरता तखतकी तरफ हल्ले। दोऊ[20] भुजदंडूंसैं[21] आसमांनका तोल करता तिस[22] बखतका स्त्री महाराजा[23] 'अभमाल'का वांणिक देखै[24] ही वणि आवै। जेता तुजक[25] तेता किस ही सौं कहणेमें[26] नावैं[27]। ऐसे मगजसौं[28] आय तखतपरि[29] विराजै[30]। चौसरै[31] चमर होय[32] इंद्रा सा छाजै[33]।

---

१ ग. हाकें। २ ख. होतै। ग. होंतैं। ३ ख. अंदरसैं। ग. अंदरसैं। ४ ख. वाहिर। ग बाहरि। ५ ग. पधारैं। ६ ख. लोगूनो। ग. लोगांनैं। ७ ख. ग. कीया। ८ ख. दवाद्विजराजूनै। ग. दवाद्विजराजूंनै। घ. दुजराजूनैं। ९ ग. आश्रीवाद। १० ख. ग. दीया। ११ ख. ग. हमतमन। घ. हमजर। १२ ख. दौलतूकी। ग. दौलतूंकी १३ ख. ग. कर। १४ ख. हुआ। ग. हुंआ। १५ ख. द्विजराजूकी। ग. द्विजराजूंकी। १६ ख. ग दीया। १७ ख. ग. जोड़कै। १८ ख. कीयै। ग. कीयें। १९ ख. मदमस्तजू। ग. मदमस्तज्ये। २० ग. दोऊं। २१ ख. भुजदंडौसो। ग. भुजदंडौंसो। २२ ख. ग. जिस। २३ ख. ग. माहाराजा। २४ ख. देषै। ग. देषैं। २५ ख. ग. तुजक। २६ ख. ग. कहणंमी। घ. कहणमैं। २७ ग नावैं। २८ ख. मगजसों। ग. मगजसौ। २९ ख. ग. तखत पर। ३० ख. विराजे। ग. विराजै। ३१ ख. ग. चौसरे। ३२ ख. ग. होइ। ३३ ख छाजे।

---

१३६. अदाब – मान, प्रतिष्ठा। मुजरा – अभिवादन, सलाम। दवागीरूंनै – दुआ मांगने वालोंने, शुभचिंतकोंने, दुआगोओंने। दुजराजूंनै – द्विजराजोंने, [ब्राह्मणोंने। आस्त्रीवाद – आशीर्वाद। चौपदारूंके – वह नौकर जिसके पास चोब या आशा हो, चोबदारके। हमत्त – समान, तुल्य, हमता अथवा महतंग जिसका अर्थ अनुकूल, मुआफिक। दौलतूंकी – नजरदौलतके लिये प्रयोग किया गया है। हाक – आवाज। दुवा – प्रार्थना, दुआ। मुसताक – बहुत अधिक इच्छा या कामना रखने वाला, मुश्ताक। द्वजराजूंकी – द्विजराजोंकी, ब्राह्मणोंकी। जळूस – सिंहासनारोहण, धूमधामकी सवारी, समारोह। दोऊं – दोनों। हल्ले – दोनों गतिमान हुए, चले। अभमालका – अभयसिंहका। वांणिक – शोभा, कांति, सजावट। तुजक – सजावट, प्रबंध, वैभव। मगजसौं – रोबसे। विराजै – बैठे, आरूढ़ हुए, शोभायमान हुए। चौसरै – चारों ओर। चमर – सुरा गायके पूंछके बालोंके गुच्छे जो काठ, सोने, चांदी आदिके दंडमें लगाये जाते हैं, चँवर।

जळ चादरूंकी धरहर तमासेका विसतार[1]। सो कैसी, वैकूंठसैं[2] छूटी जांणि गंगा हजार धार। छछोहै[3] आब गहर फौंहारा[4] छूटै[5]। जमींसे[6] मेघ जांणि आसमांनसे[7] जूटै[8]। जिस वखतका[9] तेज प्रताप[10] मेरगिर-सा दरसावै[11]। अनि रावराजूंके वूते कंकरसे नजर आवै[12]। दऊं[13] मसल[14] बहादरूंकी[15] कोरवंधी[16] * प्रोहितराज व्यास कविराज पंडितराज विराजै[17]। वजीर[18] खांनसांमां वगसी अपने-अपने मुरातबके पाये[19] पर छकपूर छाजै[20]। खवास पासवांन सफर[21] समसेर जड़ाऊ पांनदांन लिए[22] खड़े[23] सो[24] कैसा[25]। अनि राव अनि राजूंके अंग भोळै पड़ैं अैसा[26]। दरियावका[27] पूर छभाका दरसाव। पोसतकी[28] वाड़ी फुलवादका[29] वणाव। अैसे[30] नरलोकके वीच[31] नरियंद[32] 'अभैमाल'[33]

---

१ ग. विस्तार। २ ख. ग. वैकुंठसे। ३ ख. छछोहे। ग छछोहै। ४ ख. फोहारे। ग. फौंहारें। ५ ख. छूटे। ग. छुटे। ६ ख. जमीसे। ग. जमीसैं। घ. जमीसें। ७ ख. आसमानसैं। ग. आसमानकौं। ८ ख. जूटे। ग तुट्टै। ९ ख. ग. वषतका। १० ख. ग. परताप। ११ ग. दरसांवै। १२ ग. आवें। १३ ख. दोऊं। ग. वोऊ। १४ ख. ग. मिसल। १५ ख. वाहादरूंकी ग. वाहादरूकी। १६ ख. ग. कोरवंधी।

*यहां पर निम्न पंक्तियां ख. तथा ग. प्रतिमें और मिली हैं—

'चित्र का साथाळ। वाजूसें वाजू लगे ढ़ालू सनमुखकी कोरवंधी प्रोहितराज।

१७ ग. विराजे। १८ ख. वज्जीर। ग. वझ्झीर। १९ ख. पाए। ग. पाऐ। २० ख. छाजे। २१ ख. सपर। २२ ख. लीयै। ग. लीयें। २३ ख. षड़ै। २४ ख. सौ। २५ ख. ग. कैसे। २६ ख. अैसे। ग. अैसै। २७ ख. दरियावका। ग. दरीयावका। २८ ख. पोतसकी। २९ ख. फुलवादिका। ग. फूलवादका। ३० ख. ग. अैसैं। ३१ ख. ग. वरलोकके वीचि। ३२ ख. ग. नरयंद। ३३ ख. ग. अभमाल।

---

१६६. चादरूंकी – पानीकी चौड़ी धारा जो ऊपरसे गिरती हो। धरहर – ध्वनि विशेष। छछोहै – स्वच्छ, निर्मल। मेरगिर-सा – सुमेरु पर्वतके समान। दरसावै – दिखाई देते हैं। वूते – शक्ति, बल, सामर्थ्य। कंकरसे – किंकरसे, सेवकसे। दऊं – दोनों। मसल – पंक्ति। कोरवंधी – पंक्तिवद्ध। मुरातबके – प्रतिष्ठाके। छक – शोभा। छाजै – शोभायमान होते हैं। खवास – राजाओं और रईसोंके खास खिदमतगार। पासवांन – राजा महाराजाओंके पास नित्य रहने वाले। सफर – (?)। भोळै – भ्रांति। दरियावका – समुद्रका। पूर – पूर्ण। छभाका – सभाका। दरसाव – दृश्य। वाड़ी – वाटिका, उपवन। पोसतकी – अफीमका पौधा। फुलवाद – फूल लगने वाले पौधे या पुष्प। वणाव – शोभा। नरियंद – नरेन्द्र, राजा। अभैमाल – अभयसिंह।

राजै । जिसकी तारीफ सुणि[1] सुरलोकके वीच[2] सुरियंद[3] लाजै[4] । जिसका मयांना[5] इस[6] नरयंदनै[7] अनेक[8] गज कविराजौंको[9] दिया[10] । उस[11] सुरयंदसै[12] अेक गज[13] अैरापति दिया[14] न[15] गया । लालच करि राखि लिया[16] । नरलोकमें[17] नरियंद[18] सांसण बहौ[19] बगसाए[20] । सुरलोकमें[21] सुरियंदके दिये[22] सांसण सुणबेमें[23] न आए[24] । इससै 'अभमाल'का प्रताप देखि इंद्रका गरब[25] भजै[26] । नरइंदकी[27] कीरति सुणि सुरिइंद्र[28] यौ[29] लजै[30] । नरियंदका[31] प्रताप सुणि समुद्रका गरब[32] जावै । इसकी जोड़ उससै[33] करणैमें[34] नावै[35] । उसके[36] हीरे पन्ने मांणिक मोती उसहीमें[37] रहै । इसके हीरे पन्ने मांणिक मोती रीझूंमें[38] सब[39] आलम लहै[40] । जिसका राज तेजकी करौं तारीफ सो[41] कैसा । झाळाहळ चक्र सुदरसण[42] जैसा । जिसके तेज नजर[43]

---

१ ख. सुंणि । २ ख. ग. सुरलोककेवीचि । ३ ख. ग. सुरीयंद । ४ ग. लाजैं । ५ ख. मांईना । ग. माईना । ६ ग. ईस । ७ ख. नरिइंदनै । ग. नरियंदनें । ८ क. नेंक । ख. अन्नेक । ९ ख. कवराजांकौ । ग. कवीराजांकौं । १० ख. ग. दीया । ११ ख. ऊस । ग. और । १२ ख. ग. सुरीयंदसै । ग. सुरयंदसें । १३ ग. गभ्र । १४ ख. ग. दीया । १५ ख. मैं । १६ ख. ग. लीया । १७ ख. नरलोकमैं । ग. नरलोकमें । १८ ख. नरइंद । ग. नरयंद । १९ ख. ग. वहौ । २० ख. वगसाण । ग. वगसाऐ । २१ ख. सुरलोकमैं ग. सुरलोंकमें । २२ ख. दीये । ग. दीऐ । २३ ख. सुणवेमैं । ग. सुणवैमे । २४ ग. आऐ । २५ ख. गरव । २६ ग. भज्झैं । २७ ख. ग. नरियंदकी । २८ ख. ग. सुरियंद । २९ ख. यौं । ३० ख. लज्झै । ग. लज्झैं । ३१ ख. ग. नरइंदका । ३२ ख. ग. गर्व । ग. गर्व । ३३ ख. ऊससै । ग. उससैं । ३४ ख. करणैंमैं । ग. करणैमें । ३५ ख. नआवै । ग. नआवैं । ३६ ग. उसही । ३७ ख. उसहीमैं । ग. उसहीमें । ३८ ख. रीझमै । ग. रीझंमें । ३९ ख. सव । ४० ग. लहैं । ४१ ख. ग. तारीफ सौ । ४२ ख. ग. सुदरसन । ४३ ग. नर ।

---

१६६. राजै – शोभायमान होते हैं । सुरियंद – सुरेन्द्र, इन्द्र । मयांना – मतलब । सुरयंदसै – इन्द्रसे, सुरेन्द्रसे । अैरापति – ऐरावत नामक इन्द्रका हाथी । सांसण – पुरस्कारमें दी गई जागीर, शासन, राजाकी दान की हुई भूमि । अभमालका – अभयसिंहका । प्रताप – ऐश्वर्य, वैभव, तेज । भजै – नष्ट होते हैं । नरइंदकी – नरेन्द्रकी, राजाकी । यौ – ऐसे । नरियंदका – नरेन्द्रका, राजाका । जोड़ – समानता, वरावर । रीझूंमें – दानमें, पुरस्कारमें । आलम – संसार । झाळाहळ – देदीप्यमान । चक्र सुदरसण – सुदर्शन चक्र ।

आगै[1] मदमस्त गजराज आवै सो मदको[2] छाडि अरु सिरकूं[3] नमावै। गिरवरूंके[4] वीचमें[5] सांमल[6] रहत सींह[7] अरु[8] गाय। पांणी भी पीयत एक ठौड़ एकठे[9] आय[10]। रंकसै[11] राव जोरावर करणै[12] न पावै। पंखीकी पर सेतो वाज दहसति खावै[13]। असे[14] तेजपुंज महाराजा[15] स्री 'अभमाल' सिरै[16] दीवांण[17] तखतपर खुस:वखतीसै[18] विराजे[19]। छत्र चमर धरै[20]। जिस वखत अपणै[21] अपणै किसवूंके[22] हुन्नरकी[23] तारीफ सब लोग मालूम करै। जिस वख्वत[24] वेवाहवाज[25] गुणी-जणूंनै[26] सुरूंका[27] अलाप[28] किया[29]*। सप्त सुर तीन ग्रांम इकवीस मूरछना[30] अस्ट[31] ताल गुनचास कोटि तांनूं संजुगति[32] छ राग छतीस[33] रागणीका भेदग जिनूंनै वखत[34] प्रमांण उचार[35] कियै[36]। मांनूं सवके दिलूं विच[37] मोहनीमंत्र वसीकरण कियै[38]। स्वर

---

१ ग. आगें। २ ख. ग. मदकू। ३ ग. सिरकौं। ४ ख. ग. गिरवरौं। ५ ख. ग. वीचिमैं। घ. वीचमें। ६ ख. ग. सांमिल। ७ ख. ग. सेरकूं। ८ ख. ग. और। ९ ख. इक्कठे। १० ग. आये। ११ ग. रंकसें। १२ ख. करणे। १३ ग. पांवै। १४ ख. ग. असैं। १५ ख. ग. माहाराजा। १६ ख. ग. सरै। १७ ग. दीवांणि। १८ ख. ग. खुसिबखत। १९ ग. विराजै। २० ख. वरे। २१ ग. आप आपणं। २२ ख. किसव। ग. किसव। २३ ख. हुंनर। ग. हुंन्नर। २४ ख. वषत। २५ ख. वेवाहवाहवाज। ग. वेवाहवाज। २६ ख. जणुंनें। २७ ख. सरूं। २८ ख. आलाप। २९ ख. ग. कीया।

*यहांसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें— 'सो कैसैं' मिला है।

३० ख. मूर्छना। ग. मुर्छना। ३१ ख. ग. अष्ट। ३२ ख. संजुगत। ३३ ख. ग. छपंच। ३४ ग. वषत। ३५ ख. ग. उच्चार। ३६ ख. ग. कीया। ३७ ख. ग. दिल वीचि। ३८ ख ग. कीया।

---

१६६. गिरवरूंके – गिरिवरोंके, पर्वतोंके। सांमल – साथ। एकठे – एकत्रित। रंकसै – गरीबसे। राव – संपन्न, धनाढ्य राजा। पंखीकी – पक्षीकी। सेती – सहित, से। दहसति – दहश्त, भय, आतंक। स्री अभमाल – श्री अभयसिंह। सिरै दीवांण – प्रमुख दीवान। खुसवखतीसै – हर्षपूर्वक। वेवाहवाज – (?)। गुणीजणूंनै – गवैयों, गायकों। सुरूंका – स्वरोंका। अलाप – आलाप। नोट – सप्त सुर तीन ग्राम आदि संगीत शब्दोंके लिए परिशिष्ट देखें। संजुगति – सहित। भेदग – भेदज्ञ या रहस्य जानने वाला।

वाजंत्रूंका भेद कहि[1] दिखाय सो[2] कैसे खडज[3] रखव[4] गंधार मधम[5] पंचम धईवंत[6] निखाख[7] सप्त[8] सुरके अलाप करि कोकिलूंकी बांणीसै[9] बोलते है जिसके आनंदतैं इत्यादिक नरूंके[10] मन मोह वसि[11] हुवा तिसका अचिरज कैसा। देवतूंके मन भूलते डोलते[12] हैं म्रदंगूंके परन धौलकूंके टिकौर[13]। सुरवीणूंके[14] झणहण तंबूरूंके[15] घोर। तालूंकी झमक झंझरूंके[16] झणकार। कांमके घुघर[17] जैसै[18] जंत्रके[19] तार। पिनाकूंका[20] परवेज स्रीमंडळूंका सवाद। रंगकी वरखा अलगौजूंके[21] नाद। असी भांति अनेक[22] उछबसैं[23] गावते है[24] तारीफकी तांन आसमांनसे[25] लावते[26] है। असा मूरतिवंत[27] रागका थाट रचि जरकस[28] जंवहरूंके[29] इनांम[30] पाए[31]। जिस[32] बखतमैं पिंडतराजनैं[33] अपनैं[34] कसबका हुंन्नर करि दिखाए[35]। सो पिंडत[36]

---

१ ख. ग. कहै। २ ग. सौ। ३ ग. खड्जः। ४ ग. रखवः। ५ ग. मधमः। ६ ख. धईवंत। क. वंत। ७ क. निखास। ८ क. प्रसुर। ग. ऐ सप्त। ९ ख. ग. वांणीसे। १० ग. भरूंके। ११ ग. वसि। १२ ख. डोलतै। ग. डोलते। १३ ख. ढ़कोर। ग. टःकोर। १४ ख. सुरवीणूंके। ग. सुरवीणंके। १५ ख. तंवरुंके। ग. तंबुरूंके। १६ ख. झंभूरुके। ग. झंभूंके। १७ ख. ग. घूघर। १८ ख. ग. तैसे। १९ जंत्रको। २० ख. पिनाकूंको। २१ ख. ग. अलिगुंजुं। २२ ख. अनेक। ग. अन्नेक। २३ ख. उछव। ग. उत्छव। २४ ग. हैं। २५ ख. ग आसमांनसै। २६ ख. ग. ल्यावते। २७ ख. ग. मूरतवंत। २८ ग. जरकसि। २९ ख. ग. जवहरू। ३० ख. ग. अनांम। ३१ ग. पाऐ। ३२ ख. ग. तिस। ३३ ख. ग. पंडितराजूनौ। ३४ ग. अपनै। ३५ ग. दिषाऐ। ३६ ख. ग. पंडित।

---

१६६. वाजंत्रूंका – वाद्योंका। खडज – षडज। रखव – ऋषभ। गंधार – गांधार। मधम – मध्यम। पंचम – सात स्वरोंमें पाँचवाँ स्वर। निखाख – संगीतके सात स्वरोंमेंसे अन्तिम स्वर निषाद। अचिरज – आश्चर्य। म्रदंगूंके – मृदंगोंके। धौलकूंके – चमड़ेका मंढ़ा वाद्य विशेषका। टिकौर – घंटा। सुरवीणूंके – वाद्य विशेषके। झणहण – ध्वनि विशेष। तंबूरूंके – वाद्य विशेषके। घोर – ध्वनि, आवाज। तालूंकी – तालकी। झमक – ध्वनि विशेष। झंझरूंके – स्त्रियोंके पैरोंमें धारण करनेका आभूषण विशेषकी। झणकार – ध्वनि विशेष। घुघर – घुंघुरू। जंत्रके – वीणा नामक वाद्यके। पिनाकूंका – वाद्य विशेषका। परवेज – (?)। स्रीमंडळूंका – वाद्य विशेषका। सवाद – स्वाद, आनन्द, रसानुभूति। अलगौजूंके – वाद्य विशेषके। नाद – ध्वनि, आवाज। थाट – ठाठ, मूल स्वर।

कैंसे[1]। चौवीसमां[2] अवतार वेदव्यास जैसे। सो कैसे वाळ-वय विद्या[3] वुधि सनकादिकूं जैसे। सुखदेवसे[4] तरुण व्रिध[5] सो वेदव्यास तैसे। त्रकालग्यांनदरसी[6] निज[7] व्रमकूं[8] पहिचांनै[9]। भूत, भवस्त[10], वरतमांन जुगतिसौं[11] जांणै[12]। च्यार वेद नौ व्याकरण खट सासत्रूंके विनांण। पिंडत[13] विद्यामें[14] पारावार जांणै[15] नवदूण[16] पुरांण। सो पिंडतराज[17] स्री महाराजाकी[18] कीरति प्रतापका वरणणका[19] सिलोक पढ़ते[20] हैं जिस सिलोकांका[21] आदि प्रवंध अस्ट अखिरूंसे[22] लेकरि इकीस अक्षरूं[23] लग पद वणावणैका[24] ठहराव च्यार[25] पद हुवै[26] एक सिलोकका[27] वणाव सो वतीस अखिरूंसैं[28] लेकरि[29] चौरासी अखिरूं लंग लही[30] इस ऊपर[31] होय सो[32] दंडक कहियै[33]। तिसमें[34] फिर[35] भेद वहौत सालंकार अठार वरणण[36] मात्राका विचार।

---

१ ख. कंसै। २ ख. चौवीसमों। ३ ख. विद्या। ४ ख. ग. सुकदेव। ५ ख. ग. वृद्ध। ६ ख. ग. त्रिकालग्यांनदरसी। ७ ग. नि। ८ ख. ग. व्रह्मकूं। ९ ख. ग. पहचांणें। १० ख. भविष्य। ग. भाविषि। ११ ग. जूगतिसूं। १२ ख ग. जांनै। १३ ख. ग. पंडित। १४ ख. ग. विद्यामैं। १५ ग. जांणें। १६ ग. नवदूंण। १७ ख. ग. पंडितराज। १८ ख. ग. माहाराजाकी। १९ ख. ग. वर्णनका। २० ख. पढ़तं। २१ ख. सिलोकूंका। ग. सिलोकूंका। २२ ख. अखिरूंसै। ग. अखिरूंसें। २३ ख. ग. अखिर। २४ ख. ग. वणावणेका। २५ ख. चार। २६ ग. हुयें। २७ ख. ग. इलोकका। २८ ग. अखिरुसें। २९ ग. लेकर। ३० ख. ग. लहीयै। ३१ ख. उपरां। ग. उपरांत। ३२ ग. होईसो। ३३ ख. ग. कहीयें। ३४ ख. तिसमैं। ग. तिसमें। ३५ ख. ग. फिरि। ३६ ग. वरनन।

---

१६६. वाळ वय – वाल्यावस्था। तरुण – युवा। त्रकालग्यांनदरसी – तीनों ही कालोंको देखने वाला, त्रिकालज्ञ। व्रमकूं – व्रह्मको। भवस्त – भविष्यत् काल। विनांण – व्याख्या, विवेचन। पारावार – समुद्र, पूर्ण। नवदूण पुरांण – अठारह पुराण। जिस सिलोकां ···· पद वणावणैका ठहराव – संस्कृतके विद्वानोंमें परम्परासे प्रचलित रीति चली आ रही है कि वे वर्ण छंदोंमें सवसे छोटे आठ अक्षरोंके अनुष्टुप छंदसे लेकर सवसे वड़े स्रग्धरा छंद (२१ अक्षरोंके) तक प्रधानतासे व्यवहार करते आये हैं। उसीका यहां पर ग्रंथकर्ता कविराजा करणीदांनजीने वर्णन किया है। ठहराव – विश्राम, यति, ठहरनेका स्थान। दंडक – छंदोंका एक भेद, वह छंद जिसमें वर्णोंकी संख्या २६ से अधिक हो। वहौत – वहुत। सालंकार – अलंकारोंसहित, वह काव्य जिसमें अलंकार हों।

जिसका तौए[1] देवविद्यासौ[2] कोई अंत न पार। जिस वीच[3] फिर[4] कोई पंडितराज कविराज पूछै मनके वीच संदेह राखि तिस संदेहके मेटणैको[5] दोइ[6] ग्रंथ एक व्रतरतनाकर दूसरा[7] स्रुतबोध साखि[8] और फिरि एक[9] आगलै[10] पंडितका वणाया स्लोक[11] इसही साखिका सो कहणैमें[12] आवै[13] साखि उही[14] सच्ची जौ[15] औरका कह्या वतावै सो कैसे[16] कहि दिखाय।

श्लोक—*अनुस्टप[17] अष्टपदं जुक्तं[18], इंद्रवज्र इकादस[19]।
ऊपिंद्रवज्र[20] इकादस[21], वसंततिलक चतुर्दसः ॥ १६६
पंच-दस[22] मालनी छंद, संक्षनी[23] सप्तदस्तथा।
एकौनविंसतीसार्दूल[24], इकवींसति[25] श्रगधरा ॥ १६७

एतौ प्रस्थावका सिलौक[26] आगिले पिंडतका[27] कह्या साखिके

---

*यह पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं है।

१ ग. तौऐ। २ ग. देवविद्यासो। ३ ग. जिसिवीचि। ४ ग. फिरि। ५ ग. मेटणेंको। ख. मेटणकौ। ६ ग. दोय। ७ ख. ग. दूसिरा। ८ ख. ग. श्रुतिबोधसाषि। ९ ग. ऐक। १० ख. ग. आगले। ११ ख. ग. श्लोक। १२ ख. कहणेमै। ग. कहणेमें। १३ ग. आवें। १४ ख. ग. वही। १५ ख. ग. जो। १६ ख. केसै। ग. कैसें। १७ ख. अनुष्टुप। १८ ख ग. युक्त। १९ ख. ग. एकादश। २० ख. ग. उपेंद्रवज्र। २१ ख. ग. द्वादस। २२ ख. ग. पंचदश। २३ ख. ग. संषनो। २४ ख. एकोर्नविंशतिसार्दूल। ग. एकोनविंशतिसार्दूल। २५ ख. इक विंसति। ग. इक विसती। २६ ख. श्लोक। ग. सलोक। २७ ख. ग. पंडितका।

---

१६५. देवविद्यासौ—संस्कृतका सा (?)।

१६६. उपर्युक्त श्लोकका पाठ बहुविज्ञ एवं आशुकवि स्वर्गीय पं० नित्यानन्दजी शास्त्री चांद बावड़ी, जोधपुरने निम्न प्रकारसे शुद्ध किया है—
अनुष्ठुब् अष्टाक्षरं, एकादशार्णा भवतीन्द्रवज्रा।
(अष्टाक्षरं अनुष्ठुब् वै) उपेन्द्रवज्रा लघुपूर्विका सा।
ज्ञेयं वसन्ततिलकं तु चतुर्दशार्णम्।
पञ्चदशभिर्वर्णकैः स्यान् मालती संगीर्णा।
रसैरुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।
सूर्याश्वैर्मसजस्ततः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।
म्र-भ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्त्तितेयम् ॥ १

वास्ते[1] कहि[2] दिखाया।

*

पंडतौवाच: काव्य[3]

®सिधाणां[4] च शिरोमणिं सिव इति[5] नागेस्तथेरावतं।
देवाणां[6] च शिरोमणीं[7] रिति तथा चंद्रो भवे[8] चातुर[9]।
पंखीणां[10] गुरुड़ो नगैस्तथैं[11] मेरूं[12]।
सदा लौ कन्यां[13] महान्
³श्रा राज्ञं[14] च शिरौमणी[15] रभपति[16] वरर्वति सर्वोपरि[17] ॥ १६९
नृपतिरभयसिंहश्च[18] तैद्रमेवांवभा[19]।
सूस्वर[20] पई[21] वरतिसौ[22] मांनि[23] नमांन[24] व्रंवी[24]।
रवि कुल कृत[25] जन्मा शत्रुहंतां[26] प्रथव्य[27]।
जयतु सकल दाता धन्य धन्यौ नरेस[28] ॥ १७०

---

१ ख. ग. वासतं। २ ग. कहे।

®यहां पर निम्न पंक्तियां ख. तथा ग. प्रतियोंमें और मिली हैं—

'सो चातुरी कळा प्रवीण भूपालूंके मन भाया। अब नवीन श्लोक महाराजका जसवरननका पंडितराज राज छभाके वीचि कहते हैं सो कैसे कहि दिपाय।

३ ख. ग. श्लोक। ४ ख. ग. सिद्धानां। ५ ख. ग. शिव इती। ६ ख. ग. देवानां। ७ ख. ग. शिरोमणि। ८ ख. ग. चन्द्रोभवे। ९ ख. ग. च्चातुरं। १० ख. ग. पंक्षीणां। ११ ख. नगैस्वर्थे। ग. नगेस्वथै। १२ ख. ग. मेरु। १३ ख. ग. कांत्या। १४ ख. राज्ञां। ग. राज्ञां। १५ ख. ग. शिरोमणि। १६ ग. रंभपति। १७ ख. वरर्वत्ति सर्व्वोपरि। १८ ख. नृपतिरभयसिहश्च। १९ ख. ग. वाव। २० ख. ग. स्वरू। २१ ख. ग. पइ। २२ ख. मानी। ग. मांनी। २३ ख. नांमांन। २४ ख. ग. वृद्व। २५ ख. ग. कृत। २६ ख. त्रात्रु। २७ ख. ग. पृथिव्यां। २८ ग. नरेश।

---

१६९. इन श्लोकोंका पाठ भी पूर्व वर्णित विद्वद्वर्य स्वर्गीय पं. नित्यानन्दजी शास्त्रीने निम्न प्रकारसे शुद्ध किया है—

®पण्डित उवाच काव्यम्—
सिद्धानां शिव इत्युदीरित, इतो नागेषु चैरावतो,
देवानां च शिरोमणिस्तदनु वै चन्द्रश्चकोरे हित:।
पक्षिष्वा ! गरुडो जगत्सु बलवान् मेरुर्नगानां तथा।
राज्ञां तत्त्वकाव्यविदामसावभयराट् वर्वर्त्ति सर्वोपरि।

१७०. ³नृपतिरभयसिंह: श्रान्त एवावभासी
स्वक-पर-समवर्ती मानिनां मानदायी।
रविकुलकृतजन्मा शत्रुहन्ता पृथिव्यां
जयतु सकलदाता धन्यधन्यो नरेश: ॥

ऐसी विध[1] पंडतराज[2] चातुरच[3] कळा प्रवीण त्रिलोकूंका[4] प्रबंध अनेक विध[5] विमळ बांणीसैं[6] उच्चरैं जिनूंसैं रीझ[7] स्री माहाराज कनक जग्योपवीत[8] चढ़ाया[9]। कनक रजत द्रब्यसौं[10] पूजा करै ऐसे[11] उछाहके सरूपसूं[12] देखि स्री माहाराजा[13] अरु[14] चंडीके पुत्र चारण बोलै[15] कविराजसो स्री माहाराजाकी छभाके* कैसे कविराजूंकी तारीफ कहि वताया[16]। आदि तौ अमरलोगके[17] अग्रकारी अमर-लोगसैं[18] आए[19], आय स्री नारायण जस अमर करणैके काज नर-लोग वीच[20] प्रथु[21] अवतार करिके[22] प्रगटाए[23]। जिसकी साखि स्री भागवत महापुरांणमें[24]° गाए[25]। जहां जहां देवसभाका[26] वरणण[27] किया[28] तहां तहां सिध[29] चारण कहि कहि वताए[30] ऐसे कुळके कविराज, बुधके[31] दराज। ˣचातुरी कळाकी सब आलमसैं[32]

---

१ ख. ग. विधि। २ ख. ग. पंडितराज। ३ ख. ग. चातुर्ज। ४ ख. त्रिलोकूंका। ग. त्रिलोक्कं। ५ ख. ग. विधि। ६ ख. ग. वांणीसैं। ७ ख. ग. रीझि। ८ ख. ग. जगोपवित्र। ९ ख. ग. चढ़ाय। १० ख. ग. द्रव्यसैं। घ. द्रव्यसैं। ११ ख. अैसे। ग. अैसैं। १२ ख. ग. सरूपसौ। १३ ख. माहाराजा। ग. माहाराज। १४ ख. ग. अर। १५ ख. वोले।

*यहांसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है—

'छभाके कविराज कैसे कविराजूंकी तारीफ कहि वताया।

१६ ख. वताय। १७ ख. ग. अमरलोककै। १८ ख. ग. अमरलोकसैं। १९ ख. आऐ। २० ख. ग. नरलोक वीचि। २१ ख. प्रिथी। ग. प्रिथा। २२ ख. धरिके। ग. धरिकै। २३ ख. प्रगटाए। ग. प्रगटाऐ। २४ ख. माहापुराणमैं। ग. माहापुराणमें।

°यहांसे आगे इस पंक्तिमें— 'वेदव्यास सुकदेव जैसूंनैं गाये।

२५ ख. ग. गाये। २६ ख. ग. छभाका। २७ ख. वणण। २८ ख. ग. कीया। २९ ख. ग सिद्ध। ३० ग. वताऐ। ३१ ख. बुद्धिके। ग. बुधिके।

ˣइस पंक्तिसे पहले निम्न शब्द ख. तथा ग. प्रतियोंमें और मिले हैं—

माहा सकतिके वरदाई। ३२ ग. आलमसें।

---

१७१. कनक – स्वर्ण, सोना। जग्योपवीत – यज्ञोपवीत। रजत – चांदी, रौप्य। अमर-लोगके – स्वर्गके, अमरपुरके। अग्रकारी – अग्रगण्य। बुधके – बुद्धिके। दराज – महान्, बड़ा। आलम – संसार।

अधिकाई[1]। स्यांमधरमके सच्चे खुसबखतीके साहिब, सिंधुके[2] सभाव सरस्वतीके नाइब[3]। दातारूं सरूंके[4] दिलके[5] खुस्याळ[6]। सूंवूं[7] कायरूंके हीयूंके नाटशाल। दातार सूरूं[8] राजूंका[9] पुत्र जैसे[10] प्यारे। सूंवूं[11] कायर राजूंको[12] विख जैसे[13] खारे। राजसभाके भूखण* दिलके उदार। विरदूंके भारे समसेर बहादरूंके[14] समसेरूंके चितारे। अपणी[15] खाटी संपति जगतकूं खुलावै[16]। लख लहण सवालख विद्रवणका[17] विरद वुलावै[18]। वडे जंगूंमें[19] विरद बोल लोह[20] वाहूंकौं[21] जोम[22] चढ़ि[23] लड़ावै[24]। आप सवसैं[25] आगूं वीजूंजळ[26] वांहै[27]। दईवकै धणी और तीसरा न जांणै। अैसे[28] गुण अनेक कवि कहां[29] लग वखांणैं। च्यार प्रकारकी जुगति सात रूपकूंके विधांन[30]। पंच प्रकारकी उगति[31] अस्टाविधांन। तीन[32] प्रकारका गुण नव प्रकारकी रजधांणी[33]। ®दोय प्रकारका काइब[34] रूप च्यार प्रकारकी

---

१ ख. अधिकाइ। २ ख. सिंधूके। ग. सिधूंक। ३ ग. नायव। ४ ख. सूंरूंके। ५ ग दिके। ६ ख. ग. षुस्याल। ७ ख. ग. संवूं। ८ ख. ग. सूर। ९ ख. राजूंका। ग. राम्कूंका। घ. राजकूं। १० ग. जैसै। ११ ख. ग. सूंव। १२ ख. ग. राजूकू। १३ ग. जैसें।

*यहांसे आगे ख. तथा ग प्रतियोंमें निम्न पंक्तियाँ मिली हैं—
'सनेहके सझ्भरण मजलसके मुसताक माहाराजके मनरंजण।

१४ ग. वाहादरूके। १५ ख. ग. अपनी। १६ ग. पुलावैं। १७ ख ग. वीद्रवण। १८ ख. ग. बोलावै। १९ ख. ग. जंगूमैं। २० ख. ग. लौह। २१ ख. ग. वांहूंकू। २२ ख. ग. जौम। २३ ख. वाटि। ग. चाढ़ि। २४ ग. लड़ावै। २५ ख. ग. सव्वूंसै। २६ ख. वीजूजल। ग वीजूजळ। २७ ग. वावै। २८ ख. अैसै। २९ ग. कांहां। ३० ख. ग. निधांन। ३१ ख. ग. उकति। ३२ ख. त्रीन। ३३ ख. ग. रजढ़ांणी।

®रेखांकित पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं।

३४ ग. कायव।

---

१७१. स्यांमधरम–स्वामिभक्तिके। खुसवखती – समयकी अनुकूलता, समृद्धि। सिंधुके – समुद्रके। नाइव – नायव। खुस्याळ – खुश करने वाला। सूंवूं – कृपणों, सूमों। हीयूंके – हृदयके। नाटसाल – शत्रु योद्धा। विरदूंके – विरुदके। भारे – समूह। समसेर – तलवार। खाटी – उपार्जन की हुई। लख – लाख। लहण – लेने वाला। सवालख – सवा लाख। विद्रवणका – देने वालेका। जंगूंमें – युद्धोंमें। जोम – जोश। वीजूंजळ – तलवार। वांहै – प्रहार करते हैं। दईवकै – भाग्यके, प्रारब्धके। जुगति – युक्ति।

बांणी। सात प्रकारका सर च्यारसूं लेके[1] चढ़ावै। आठमै[2] सरकी झपट पर वे चौरासी बंध रूपकौंके[3] सरिजणहार[4]। ऐसे कविराज जिस बखत[5] महाराजाकी[6] राजसभाके वीच[7] भांति भांति गुण गावते[8] हैं। विद्याबांणीके[9] हिलोहळ[10] दरियावका[11] सा हिलोहळ[12] दरसावतै हैं[13]। जिस बखत[14] स्त्री महाराज[15] 'अभामाल' बोहतर[16] कळा चौदह विद्या विधांन रूपकौंकी[17] छाकसैं छाजै[18] आय स्त्री मुख[19] हुकम फुरमाया। जो आगैं[20] चौरासी बंध रूपकाके[21] सब[22] भेद नवरस अलंकार संजुगति[23] अैतो[24] सब ही सुणबेमें[25] आया। पै एक[26] खट-भाखाकी जुदी जुदी रहस्यतौ[27] कहां कहां किसी किसी कवीसुर[28] पास दरसाई। पै ठौड़ करि खटभाखा किसीनैं[29] न गाई[30]। जिससै[31] खट भाखा एक साथ कहिके[32] दिखावौ[33]। जिसी जिसी ग्रंथमें[34] वरणण किया[35] है तिसी तिसी ग्रंथकी[36] साखि लावौ[37]। अैसे[38] हुकम स्त्री महाराजनै[39] फुरमाए[40] सो कविराजूनैं[41] तीन सलांम करि सिरि ऊपर धारि[42] लिया[43]। हुकम माफक भाखा वरणणका[44] आरंभ किया[45] ॥ १७१

---

१ ख. ग. लेकै। २ ग. आठमैं।

*यहांसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्तियां मिली हैं—

वैसा कांम पड़ै तौ आंयें नवरस षटभाटा। अेकसौ अष्ट अलंकार अैसैं।

३ ख. रूपक। ग रूपकूं। ४ ख. ग. सिरजणहार। ५ ख. बषत। ६ ख. महा। ७ ख. ग. वीचि। ८ ख. जावते। ग. गावतं। ९ ख. ग. विद्यावांणीके। १० ख. हीलोहल। ग. हीझोहळ। ११ ख. ग. दरीयावका। १२ ख. ग. हीलोहल। १३ ख. है। १४ ग. वषत। १५ ख. ग. माहाराजा। १६ ख. ग. वौहोतर। १७ ख. ग. रूपकूंकी। १८ ग. छाकसें। १९ ख. ग. मुषि। २० ग. आगें। २१ ख. ग. रूपकूंके। २२ ख. ग. श्रव। २३ ख. सजुगत। ग. सयुगत। २४ ख. एतौ। ग. ऐतौ। २५ ख. सुणवेमैं। ग. सुणवेमें। २६ ग. ऐक। २७ ख. रहसितौ। ग. रहसतौ। २८ ख. ग. कवेसुर। २९ ग. किसीनें। ३० ख. ग. भाई। ३१ ग. जिसमैं। ३२ ख. ग. कहिकै। ३३ ग. दिषावै। ३४ ख. ग. ग्रंथमै। ३५ ख. ग. कीया। ३६ ख. ग. ग्रंथूंकी। ३७ ग. लावै। ३८ ग. अैसैं। ३९ ख. ग. माहाराजनै। ४० ग. फुरमाये। ४१ ख. कविराजूंनें। ४२ ख. ग. धार। ४३ ख. लाया। ग. लीया। ४४ ग. वर्णन। ४५ ख. ग. कीया।

---

१७१. निधांन – घर। छाकसैं – प्यालासे, शरावसे। चौरासी बंध रूपकौंके – डिंगलके चौरासी प्रकारके गीत छंदोंके। संजुगति – संयुक्त, सहित।

अथ खटभाखा वरणण[1] छप्पै

संसक्रत[2] है[3] सुरभाख, आदि पहिला[4] उच्चारूं[5] ।
सुजि भाखा दूसरी, सेस दूजै विसतारूं ।
तै अपभ्रंस तीसरै, मगधदेसी चवथम्मै[6] ।
सरस[7] सूरसेनीस, पढ़ू थांनक[8] पंचम्मै[9] ।
करि[10] थांन छठै प्राक्रत[11] कहूं, विधि आ घणी विसत्तरूं[12] ।
सर रचि प्रताप 'अभमाल सह', इम खटभाखा उच्चरूं ॥ १७२

*अथ प्रथम भाखा संसक्रत वरणण[13]

◎स्रीमन्नरेंद्र जमुना[14] तव खङ्गधारा ,
गंगेव कीतिरचला[15] प्रतिभाति नित्यं ।
स्रीयोधदुर्गाधिपतीर्थराजस्वयं- ,
बभौ[16] राघववंशजन्मा ॥ १७३

इति खटभाखा लक्षणौ:[17] ।
संस्कृतस्येदमुदाहरणमुक्त[18]

अथ नाग भाखा

वोलै[19] चाली पांण[20], वधै पांण[21] संमुख तारं ।
कथी[22] 'अभूमाणं', मंडलाघ[23] पैणा महिपत्ती[24] ॥ १७४

१ ख. वर्नन । ग. वरनन । घ. वरनन । २ ख. ग. संसकृत । ३ ख. ग. है । ४ ख. पहला । ५ ख. ग. ऊचारूं । ६ ख चवथ्थसै । ग. चवथंसै । ७ क. सरप । ८ ख. थांनि । ग. थांनिक । ९ ख. ग. पांचम्मैं । १० ख. का । ११ ख, ग. प्राकृत । १२ ख. ग. विस्ततरूं ।

*ग. प्रतिमें यह शीर्षक निम्न प्रकार है— 'अथ प्रथम संस्कृत भाषा वर्नन ॥ श्लोक'

१४ ख. वर्नन ॥ श्लोक ॥ १५ ख. यमुना । ग. यना । १६ ग. किीतिरचला । १७ ख. ग. वभो । १८ ख. ग. लक्षणे । १९ ख. मुक्तं । ग. प्रति में यह शब्द नहीं है । २० ख. वोले । २१ ख. ग. पाणं । २२ ख. ग. वद्दे । २३ ख. कथा । २४ ख. ग. मंडलाग्र । २५ ख. ग. महिपती ।

१७२. सुरभाख – सुरभाषा, देववाणी । सुजि – फिर, पुन: । सेस – शेपनाग (यहां नाग भाषाके लिये प्रयोग किया गया है) । चवथम्मै – चौथी, चतुर्थी । सूरसेनीस – शौरसेनी भाषा । थांनक – स्थान ।

१७३. ◎इस श्लोकका पाठ निम्न प्रकारसे स्वर्गीय पं. श्री नित्यानन्दजी शास्त्रीने संशोधित किया है –

श्रीमन् नरेन्द्र ! यमुना तव खङ्गधारा
गङ्गेव कीतिरचला प्रतिभाति नित्यम् ।
श्रीयोधदुर्गाधिप तीर्थराज-
स्स्वयं बभौ राघववंशजन्मा ॥

नाग[1] भाखा टिप्पणं[2]

कश्चित् कवि[ः]राजानं[3] प्रति वदति[4], हे राजन् महदाश्चर्यमेतत्[5] किं न[6] एतत् महदाश्चर्यम्[7] ॥ १७५

अथ भाखा[8] अपभ्रंस[9]

रंगा नौ[10]गय धमयं[11], दिठांणे नताय गैदंते[12] ।
'अभा' एह[13] ऊभमयं[14], रटांणे[15] सतौय[16] चित्राळी ॥ १७६

अथ अपभ्रंस[17] टिप्पणं[18]

इ[द]मन्यत्[19] महदाश्चर्यं किं हे राजन यैः चित्रमिद[मन्दि]रै[20] पग-जानद्र[थ गजेन्द्र][21] द्वास्तेषा[द्वारतेषां][22] बहूतरा[23] दंती[24] न त्वया[25] दता यदमेवाश्चर्यं[26] ॥ १७७

अथ मगध देसी भाखा

जुगे[27] अठ कठाणं[28] सिधाणं[29], लही ए[30] स्रगाणं[31] ।
खगे पल्ल मझाणं, रिपाणं च[32] अप्पवं चरियं[33] ॥ १७८

अथ मगधदेसभाखा टिप्पणं[34]

हे[35] राजन् मगधदेसयं[36] तृतीयमिदमाश्चर्यं यैः सिधैः[37] अष्टांग योग-भ्यासेन[38] स्वर्ग न प्रापते[39] तत[40] स्वर्ग शत्रुणां[41] त्वयाखङ्गेन[42] तृणमावेण[43] दत्तंइहं ॥ १७९

---

१ ग. अथ नाग । २ ख. टीपण । ग. टीपनं । ३ ग. कवि- राजानां । ४ ख. ग. प्रतिवदतिः । ५ ग. मंहदश्चर्यमेतत् । ६ ख. त । ७ ख. महदाश्चर्यं । ग. महदाश्चयं । ८ ग. भाप । ९ ख. अंपभ्रंस । १० ख. नो । ११ ग. वनयं । १२ ख. गैदते । ग. गेदंते । १३ ग. ऐह । १४ ख. ग. उभमयं । १५ ख. रटाणे । ग. ठटाणे । १६ ख ग. शतोय । १७ ख. अपभ्रंश । १८ ख. ग. टीपणं । १९ ख. इदमन्यत् । ग. इदमनात् । २० ख. चित्रमंदिरे । ग. चित्रमंदिरै । २१ ख. पगपान-दृष्टा । ग. पिगनानदृष्टा । २२ ख. स्तेषां । ग. स्तेषी । २३ ख. वहुतरा । ग. पहुतरा । दति । २४ ख. ग. नस्त्वया । २५ ख. ग. इदमेवाश्चर्यं । २६ ख. ग. २७ ख. ग. अठु । २८ ग. कठ्ठाणं । २९ ख. ग. सिद्धाणं । ३० ग. ऐ । ३१ ख. ग. अगाणं । ३२ ख. प्रतिमें नहीं है । ग. स । ३३ ख. अप्पवंचरी । ग. अप्पवंचरीयंयां । ३४ ख. ग. टीप्पणं । ३५ ख. राजन्न । ३६ ख. ग. मगधदेसजं । ३७ ख. ग. सिद्दैः । ३८ ग. योगाभ्यासेन । ३९ ख. ग. प्राप्यते । ४० ख. ग. तत् । ४१ ख. ग. स्त्रूणा । ४२ ख. त्वयासखङ्गे । ग. त्वयास्वखङ्गे । ४३ ख. ग. तृणमात्रेण ।

---

१७५. कश्चित् कवि[ः]राजानं प्रति वदति, हे राजन् ! महदाश्चर्यमेतत् । किं न एतन् महदाश्चर्यम् ?

१७७. इ[द]मन्यद् महदाश्चर्यम् । किम् ? हे राजन् ! यैश्चित्रमन्दिरेऽपि गजा न दत्तास्तेषां [द्वारि] वहुतरा दन्तिनस्त्वया दत्ता इदमेवाश्चर्यम् ।

१७९. हे राजन् ! मगधदेशजं तृतीयमिदमाश्चर्यं यैः सिद्धैः अष्टाङ्गयोगाभ्यासेन स्वर्गं न प्राप्यते तत् स्वर्गं शत्रूणां त्वया खड्गेन तृणमात्रेण दत्तमिदम् ।

अथ सूरसेनी

गजागमणि[1] अवासौ[2], वामौ[3] सत्र[4] तव[5] सुणि[6] दूंदभी[7] ।
अगागमणि बनासौ[8], आचंभम पंचमं[9] कत्थं ।। १८०

अथ सुरसेनमिदमाश्चर्यं[10] हे राजन्[11] गजगामन्या[12] स्वशत्रुस्त्रिया, स्वमंदिरे तव दुंदभे[13] श्वुनं[14] श्रुत्वा आरण्येमृगवत्[15] पलायनं कृतं इदमपी[16] आश्चर्यं ।। १८१

*अथ प्राकृत[17] भाखा वरणण दूहा

इम[18] पंच भाखा उच्चरे[19], सुणि ग्रंथां तत सार ।
अब कुळ भाखा उच्चरूं, पराक्रमी[20] अणपार[21] ।। १८२
व्रजभाखा[22] मुरधर विमळ, आदि करे[23] उच्चार ।
देस देस[24] भाखा डंबर[25], वरणूं करि[26] विसतार[27] ।। १८३

अथ व्रजभाखा[28] वरणण अदभुत[29] रसोक्ति[30] सवैया

अरि भुंडनुतें[31] रिनु[32] सिंघ अनैं, भुजदंडनि पांनि[33] प्रचंड रचै[34] ।
किरमालतें[35] मंगल ज्वाल[36] उठै, मुनिराज विलोकत[37] हास्य[38] मचै[39] ।

१ ख. गज्जागमणि । २ ख. ग. अवासो । ३ ख. ग. वामो । ४ ख. शत्र । ग. शत्रू । ५ ग. तवं । ६ ख. ग. स्त्रुणि । ७ ख. दुंदभि । ग. दुंदभ । ८ ख. वनासो । ग. वनासो । ९ ख. पंचमं । १० ख. ग. सूरसेनजमिदमाश्चर्यं । ११ ख. ग. राजन् । १२ ख. गजगामिमा । ग. गजगामिन्या । १३ ख. दुंदभे । ग. दुंदुभे । १४ ख. ग. स्वनं । १५ ख. अरण्येमृगवत् । ग. अरण्येत्रगवत् । १६ ख. ग. इदमपि । १७ ख. ग. प्राकृत ।

*ग. प्रतिमें यह शीर्षक निम्न प्रकार है— 'अथ भाषा प्राकृत वर्नन ।'

१८ ख. ग. यम । १९ ग. उच्चरं । २० ख. ग. पराकृत । २१ ग. उणपार । २२ ख. ग. वृजभाषा । २३ ग. करै । २४ ग. देश । २५ ख. डमर । ग. डंमर । २६ ग कर । २७ ग. विस्तार । २८ ख. ग. वृजभाषा । २९ ख. ग. अदभूत । ३० ख. ग. रसउक्ति । ३१ ख. झुंडुनतैं । ग. झूंडुनते । ३२ ख. ग. रनु । ३३ ख. पानि । ३४ ग. रचि । ३५ ख. ग. किरमालतै । ३६ ग. ज्वाळ । ३७ ख. ग. विलोकित । ३८ ख. हास्य । ३९ ख. मच्चे । ग. मचें ।

१८१. अथ शौरसेन्यामिदमाश्चर्यम् । हे राजन् ! गजगामिन्या स्वशत्रुस्त्रिया स्वमन्दिरे तव दुन्दुभेःस्वनं श्रुत्वा आरण्यमृगवत् पलायनं कृतमिदमप्याश्चर्यम् ।

१८२. पराक्रमी – शक्तिशाली । अणपार – अपार, असीम ।

१८३. डंबर – वैभव, शौर्य ।

१८४. पांनि – हाथ । किरमाल – तलवार । मंगल – अग्नि । ज्वाल – आगकी लपट । विलोकत – देखते हैं ।

अनि[1] मंगल[2] जलवारे[3] बचै[4], त्रिण[5] वारे जलै यह रीति सचै ।
अदभूत चरत्रकी रीति यह है, जलवारे जरै[6] * त्रणवारे[7] बचै[8] ।। १८४

अथ[9] द्वितीय इकतीसा कवित्त[10]

साहके[11] कटहरे[12] विफरि ठाढ़ौ अभैसाह[13] -
मारन[14] तुजकमीर रोसकी रटारीयै[15] ।
मीरखांन चक्रत[16] अमीर परे मुरझाइ[17],
छोहकी कटक देखि छटक छटारीयै ।
मोतीमाल साह दे[18] मनायौ[19] खांन दौरां[20].... मिल[21]-
उझक[22] विलोकै[23] तहां वेगमां[24] अटारीयै[25] ।
पांन धारचौ प्रगट गुमांनी धारचौ जोधपुर -
दिल्ली सोच धारचौ कर धारचौ तैं कटारीयै ।। १८५

अथ मुरधर[26] भाखा[27] दूहा[28]

लाल वदन चख लाल, कर जमदढ़ दीधां कमध[29] ।
उण वेळा 'अभमाल', जोवण जेहड़ौ[30] 'अजणउत'[31] ।। १८६

---

१ ख. अति । २ ख. मंगतौ । ३ ग. जलबारै । ४ ख. वचै । ग. बच्चें । ५ ख, ग. तृन । ६ ग. जरें ।

*यहांसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्तिां हैं—(जलवारे जरै यह रीति सचें । अदभूत चरित्रकी रीति यहै जळवारै जरें (त्रिनवारे वचें) ।'

७ ख. ग. त्रिनवारे । ८ ख. वचै । ग. वचे । ९ ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह नहीं है । १० ख. ग. सवैया । ११ ग. साहकें । १२ ग. कटहरें । १३ ख. ग. अभसाह । १४ ख. मारनु १५ ख रटारीपें । ग. रटारीपे । १६ ख. ग. चक्रित । १७ ख. ग. मुरछाय । १८ ख. ग. दै । १९ ग. मनायौं । २० क. दौरां । ग. दौंरा । २१ ख. ग. मिलि । २२ ख. ग. उझकै । २३ ग. विलौकें । २४ ख. वेगम । ग. बेगम । २५ ख. पैं । ग. पें । २६ ग. मुरधरा । २७ ख. ग. भाषा । २८ ख. दोहा । ग. दुहा । २९ ख. कमंध । ३० ख. चेहड़ो । ३१ ख. ग. अजणऊत ।

---

१८४. सचै – सत्य, साँच । चरत्रकी – चरित्रकी ।

१८५. कटहरै – कटघरा । विफरि – क्रोध कर के । ठाढ़ौ – खड़ा है । अभसाह – अभयसिंह । तुजकमीर – अभियान या जलूस आदिकी व्यवस्था करने वाला । चक्रत – चकित, आश्चर्ययुक्त । छोहकी – कोपकी, क्षोभकी ।

१८६ वदन – मुख । चख – चक्षु, नेत्र । जमदढ़ – कटार विशेष । अभमाल – महाराजा अभयसिंह । जेहड़ौ – जैसा । अजणउत – महाराजा अजीतसिंहका पुत्र ।

कवित्त प्रताप वरणण[1]

सूरज हिंदवांणरौ[2], गाढ़ तोलरौ[3] गिरंदह ।
रूपकरौ रिझवार, अनै रूपरौ अनंगह ।
वरदायक सकतिरौ[4], कंत[5] कीतरौ[6] कहावै ।
उरड़ जोम अंगरौ, अवर पह[7] मींढ़ न आवै ।
दौलति[8] प्रताप जैचंदरौ[9], कंत गह सभाव 'गजबंध'रौ ।
'अभमाल' इसौ 'अजमल्ल'रौ[10], क्रोड़ि[11] जुगां राजिस[12] करौ ॥ १८७

उत्तरकी भाखा[13] पंजाबी नीसांणी

रज्जा[14] तं[15] वड्डा[16] सवै, सिरपोस[17] रजंदा ।
रूप दुडंगा[18] रज्जिए[19], तपतेज तुजंदा[20] ।
अज्जा[21] तेडा[22] अगाळे[23], आग्गौ[24] 'जैचंदा' ।
नाळ जिन्हूंदी[25] हिंद[26], देस सब भूप सझंदा ॥ १८८
तूंदा रावल[27] व्याहितै[28], रंक राव[29] रचंदा ।
दिद्दा[30] अत्थूं[31] दायजै[32], चित्रौड़[33] दिपंदा[34] ।

---

१ ख. वरनन । ग. वर्ननं । २ ग. हिंदवांणरो । ३ ख. तोलरो । ४ ख. सतिरौ । ५ ग. कंति । ६ ख. ग. कीतिरौ । ७ ख. ग. पीहो । ८ ख. ग. दौलत । ९ ख. जयचंदरौ । १० ख. ग. अजमाल । ११ ख. ग. कोडि । १२ ख. ग. राजस । १३ ख. ग. भाषा । १४ ग. रझ्झा । १५ ग. तूं । १६ ख. ग. वड्डा । १७ ख. सिरथोस । ग. सिरपौस । १८ ख. ग. दुडांदा । १९ ख. रज्जीए । ग. रझ्झीऐ । २० ख. तुझंदा । ग. तुफंदा । २१ ख. ग. आजा । २२ ख. तैडा । ग. तैडा । २३ ख. अग्गलै । ग. आगलै । २४ ख. जगो । ग. जग्गै । २५ ख. जिन्हुं । २६ ख. ग. दे । २७ ख. तूंट्टारागळ । २७ ग, व्याहितें । २९ ग. रा । ३० ख. ग. दिद्या । ३१ ख. अथूं । ३२ ख. दाइजै । ३३ ख. चित्रोड । ३४ ग. दियंदा ।

---

१८७. हिंदवांणरौ – हिन्दुस्तान । गाढ़ – दृढ़ता, मजबूत । गिरंहद – पर्वत । रूपक – काव्य, कविता । रिझवार – प्रसन्न होने वाला । अनै – और । अनंगह – कामदेव । वरदायक – वरदान प्राप्त करने वाला । कंत – पति । कीत – कीर्ति । उरड़ – साहस, शक्ति । मींढ़ – समानता, बराबरी । गह – गम्भीर । गजबंधरौ – गजसिंहका । अभमाल – महाराजा अभयसिंह । अजमल्ल – महाराजा अजीतसिंह ।

१८८. रज्जा – राजा । तं – तू । वड्डा – बड़ा, महान । सिरपोस – शिरत्राण । दुडंगा – सूर्य (?) । तुजंदा – तेरा । अज्ज – महाराजा अजीतसिंह । तेड़ा – तेरे, तेरा । अगाळे – पूर्व, पहिले । अग्गौ – पूर्व । नाळ – (?) । जिन्हूंदी – जिनकी ।

१८९. तूंदा – तेरा । दिद्दा – दिया । अत्थूं – अर्थ, रुपया, धनदौलत । दायजै – दहेजमें । चित्रौड़ – चित्तौड़ गढ़ । दिपंदा – शोभायमान होता है ।

ईसानूं दें अंकड़े, कत्थे[1] न करंदा ।
जित्थे[2] जित्थे जोइये[3], तित्थी[4] दरसंदा ।। १८९
कल्ह तुझंदा पित्र[5] सो, 'अजमाल' उपंदा ।
जंदा रक्खंदा[6] सजै, राजस रांणंदा[7] ।
रज्ज[8] डिगंदा[9] रक्खिया[10], अंबं नयरंदा[11] ।
दिलूं उमंदा 'अभै'[12] दिठूं[13], तू खाट तिन्हंदा ।। १९०
तैंडा उन्नूंदा तुझक[14], दूणे दनसंदा[15] ।
एक थपंदा असपई, एकै[16] उथपंदा ।
दरियावंदा[17] फेर[18] दिल, लहरूं आमंदा ।
लक्ष[19] लहंदा अक्ख, तैंतै लक्ष[20] दियंदा[21] ।। १९१
दीपंदा 'अभमल' दुडंद[22], तूं सख तेरंदा ।
तैंडी[23] नाळ गुसांईयां, सब[24] आलम दंदा ।
देव तरंदा रूप दिढ़, सरणाय सझंदा ।
एक[25] तुझंदा[26] एक[27] अंग, जग सब जांणंदा ।। १९२

---

१ ख. ग. क्वथै । २ ख. ग. जिथै जिथै । ३ ख. ग. जोइयै । ४ ख. ग. तिथी । ५ ख. पित । ग. पित्त । ६ ख. रखंदा । ग. राषंदा । ७ ग. रांणंदा । ८ ग. रझ्झ । ९ ख. डिमंदा । ग. ड़िगदा । १० ख. रखीया । ग. रषिया । ११ ख. ग. अंबा । १२ ख. ग. अभ । १३ ख. दिठ । १४ ख. तुजक । १५ ख. ग. दरसंदा । १६ ख. ग. ऐकै । १७ ख. दरीयावंदा । १८ ग. फेरि । १९ ख. ग. लष । २० ख. ग. लष । २१ ख. ग. दीयंदा । २२ ख. दुडंग्रद । दुड्चंद । २३ ख. ग. तैंडी । २४ ख. स्रव । २५ ख. ग. ऐक । २६ ग. तूझंदा । २७ ग. ऐक ।

---

१९१. कल्ह – कल । तुझंदा – तेरा । पित्र – पिता । अजमाल – अजीतसिंह । उपंदा – उत्पन्न (?) । जंदा – जिसका । रक्खंदा – रखा गया है । राजस – राज्य । रांणंदा – महाराणाका । रज्ज – राज्य । डिगंदा – डिगता हुआ । रक्खिया – रखा । अंब – आमेर । नयरंदा – नगरका । अभै – अभयसिंह । तिन्हंदा – उनका, उसका ।

१९२. तैंडा – (तेरा ?) । उन्नूंदा – उनका । थपंदा – स्थापित करता है । असपई – अश्वपति, बादशाह । उथपंदा – उखेड़ता है, हटाता है ।

१९३. दीपंदा – सुशोभित होता है । अभमल – अभयसिंह । दुडंद – सूर्य, भानु । सख – शाखा, वंश । तेरंदा – तेरहका । तैंडी – (तेरी ?) । तरंदा – (तरहका ?) । दिढ़ – दृढ़ । सरणाय – शरण, पनाह । सझंदा – सज्जित करते हैं । तुझंदा – तेरा । जांणंदा – जानता है ।

होय वंदा सो ऊवरै, खळ होय मरंदा ।
एहा[1] गुण तेंडा[2] 'अभा', किताक कहंदा ।
घण वरसंदा[3] बूंद ज्यां[4], नहिं पार लहंदा ।
पांन तरंदा पिक्खियै[5], पंथा उतरंदा ॥ १६३

तूझ गुणंदा पार नां, ज्यां[6] रैण[7] कणंदा ।
आजंदा दीठा[8] सवै, मैं[9] हौर[10] नरचंदा ।
तेंडो[11] हुंडै[12] रज्जवी[13], नहिं[14] होर करंदा ।
.... ॥ १६४

अथ दक्खणकी[15] भाखा :: सोरठा[16]

आला मुदफर[17] खांन, घोए[18] चे आला अभा ।
जाला भज्जी[19] खांन, घौय[20] दिलीचा मग्गए[21] ॥ १६५

अथ सोरठकी भाखा :: सोरठा[22]

भूपति वाके[23] भाह, तडकै[24] त्रहखांपहतणा[25] ।
भोगै[26] कंत 'अभाह', एकौ[27] 'अजमलरावउत'[28] ॥ १६६

---

१ ग. ऐहा । २ ख. ग. तेंडा । ३ ख. वरसंदा । ४ ख. ग. ज्यों । ५ ख. ग. पिष्पीयै । ६ ख. ग. ज्यों । ७ ख. ग. रेग । ८ ग. दिठो । ९ ख. मै । १० ख. ग. होर । ११ ख. तेंडी । १२ ख. हुडै । ग. हुडैं । १३ ख. ग. रज्झवी । १४ ख. ग. नहीं । १५ ख. ग. दषिण । १६ ख. दूहा । ग. दोहा । १७ ख. मुफर । १८ ग. वोऐ । १९ ग. भझ्भी । २० ख. ग. घोय । २१ ग. मग्गऐ । २२ ख. ग. दूहा सोरठा । २३ ख. वाके । ग. केवाके । २४ ख. ग. तड़दै । २५ ख. त्रहखांपतितणा । ग. त्रहखांपहतणां । २६ ग. भोगैं । २७ ख. हको । ग. ऐको । २८ ख. ग. अजमल-राउऊत ।

---

१६४. वंदा – भक्त, सेवक । ऊवरै – वचता है । तेंडा – तेरा । अभा – अभयसिंह । किताक – कितने ही । कहंदा – कहते हैं । घण – मेघ, बद्दल । वरसंदा – वरसने वाला । तरंदा – तैरता हुआ । पिक्खियै – देख कर । उतरंदा – उत्तर दिशाका ।

१६५. गुणंदा – गुणोंका । रैण – भूमि, पृथ्वी । कणंदा – कणोंका । आजंदा–आजके । नरचंदा – राजा । तेंडो – तेरी । हुंडै – वरावरी, समानता । रज्जवी – राजा ।

१६६. आला – (उच्चपदाधिकारी ?) । घोए – (निरस्त किया, भगा दिया ?) । अभा – अभयसिंह ।

१६७ वाके – (?) । भाह – (?) । तडकै – (कांपते हैं, विदीर्ण होते हैं ?) । त्रहखांपह तणा – (तीन खांपोंके ?) ।

*

अथ सिंधी[1] भाखा

कुरौ[2] अचे[3] हंमार, चंगा माढ़ू रज्जियां[4] ।
अडभा[5] तुज्झीभार, गंनण हत्थी[6] द्रंगड़ा ॥ १९७

अथ दवावैत

ऐसी भांतिसै खटि भाखा कहि वताई । चातुरी कलाकी भांति भांति चतुराई । जिसकी साख[7] प्रथम भाखा संसक्रत सो[8] तौ अनुभूति[9]-क्रत्य[10] सारस्वतसो[11] पाई । दूसरी नागभाखा सो[12] नागपिंगळसौ आई । अपभ्रंस[13] भाखा[14]⊙ प्राक्रतसो कुळ काविवार जिससेती प्राक्रत[15] भाखा विस्तार[16] करि गाई । जिसमैं पूरब पच्छिम[17] उत्तर दक्खिणकी[18] ए[19] च्यार भाखा कहि दिखाई । जिसमें[20] तीन भाखाएँ[21] एक[22] अंग करिके[23] वखांणी । चौथी[24] पच्छिमकी[25] भाखा जिसकी कहि[26] तीन प्रकारकी वांणी । ऐसे[27] तरहसैं[28]

---

*इस छन्दसे पूर्व ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्तियां और मिली हैं—

'सापं साप सकां भाषै, भापह जस भलां ।
ससि आदि तसमां रहस्यै, अजमलरावऊत ।

१ ख. ग. सिद्धी । २ ग. कुरौं । ३ ख. अचैं । ४ ख. रज्जीया । ग. रझ्झीयां । ५ ख. ग. अभ्भा । ६ ख. ग. हथी । ७ ख. ग. साषि । ८ ख. ग. संसकृत । ९ ख. ग. अनभूति । १० ख. ग. कृत । ११ ख. सौ । ग. सौं । १२ ख. सौ । १३ ख. अपभ्रंश । १४ ख. प्रतिमें नहीं है । १५ ख. ग. प्राकृत ।

⊙यहांसे आगे निम्न वर्णन ख. तथा ग. प्रतियोंमें और मिला है—

'(अपभ्रंस भाषा) ग्रंथ विनोद विजयसौं पहिचांणी । मगध देसकी भाषा जैंन सास्त्रंसैं जांणी । सूरसेनी भाषा हेम व्याकरणका विचार नर भाषा (प्राकृतसो कुलका विवहार जिससेती) ।'

१६ ख. ग. विसतार । १७ ख. ग. पछिम । १८ ख. ग. दक्षिणकी । १९ ग. ऐ । २० ख. जिसमैं । ग. जिसमैं । २१ ख. ग. भाषा । २२ ख. ग. एक एक । २३ ख. करिकै । ग. करिकैं । २४ ग. चोथी । २५ ख. पछिमकी । ग. पच्छिमकी । २६ ख. ग. कही । २७ ख. ग. अैसी । २८ ग. तरहसें ।

---

१९८. कुरौ – (?) । अचे – (?) । चंगा – श्रेष्ठ, स्वस्थ । माढ़ू – मित्र । रज्जियां – प्रसन्न करने पर । अडभा – अभयसिंह । गंनण – (?) । द्रंगड़ा – नगर ।

१९९. खटि – षट्, छः । अनुभूति – अनुभव, अनुभूतिक्रत्य । सारस्वतसो – अनुभूतिस्वरूपाचार्यकृत सारस्वत नामक व्याकरण ग्रन्थ । पाई – प्राप्त की । नागपिंगळसौ – एक प्रसिद्ध छंदोंका लाक्षणिक ग्रंथ नागपिंगल । काविवार – काव्यानुक्रमसे । जिससेती – जिससे । वखांणी – वर्णन की ।

भाखाका भांति भांतिका[1] वाखांण[2] करिकै दिखाया। दिल्लेसुर[3] पातिसाहूंकी[4] भाखा जिसमें[5] पारसीका इलम[6] गाया। ऐसी भाखाके[7] गुण जिस राजसभाके[8] बीच[9] चंडीके वरदायक कविराजूंनें[10] गाए[11]। लखूं गज[12] सांसणूंके इनांम पाए[13] ॥ १९८

दूहौ[14]—कुरब रीझ पाए[15] करै[16], कवि ओसीस प्रकास।
कायम 'अभमल' कोड़ि जुग, निज खट भाख निवास[17] ॥ १९९

अथ दवावैत

जिस वखतमें[18] और भी हुन्नरवंधूंनैं[19] सब हुन्नरका[20] तमासा दिखाया[21]। सो कैसे[22] कहि दिखाया[23]। जिस वखतका विहार[24] सूरति पाक होसनायकाँनैं[25] नजर गुजराए[26]। आसमांनी मौहरा[27] कियै[28] पल्लैसैं[29] झिलते आए[30]। छछोहै[31] हौसनायकूंकी[32] हमराहसैं[33] छूटे[34]। जगजेठूंकी[35] तरवीत[36] जोमसैं[37] जूटे[38]।

---

१ ख. ग. प्रतियोंमें नहीं है। २ ख. ग. व्यापांन। ३ ख. ग. दिलेसुर। ४ ख. पातसाहूंकी। ५ ख. जिससैं। ग. जिससैं। ६ ग. ईलम। ७ ग. भाषाकै। ८ ख. राजसभासे। ९ ख. ग. वीचि। १० ग. कविराजनें। ११ ख. ग. गाये। १२ ग. गझ्झ। १३ ग. पाऐ। १४ ख. अथदूहा। ग. अथदुहा। घ. दोहा। १५ ग. पाऐ। १६ ग. करें। १७ ख. मिवास। १८ ख. वखतमैं। ग. वखतमें। १९ ख. हुंनरवंधतैं। ग. हुंन्नरवंधूंनें। २० ख. हुंनरका। २१ ख. दिषलाया। २२ ख. कैसै। ग. कैसें। २३ ग. दिषाय। २४ क. तिहार। २५ ख. हौसनायककू। ग. हौंसनायकूं। २६ ग. गुजराऐ। २७ ख. ग. मोहौरा। २८ ख. कीए। ग. कीयै। २९ ग. पल्लेसे। ३० ग. आऐ। ३१ ग. छछोहे। ३२ ख. होसनायकूकी। ३३ ग. हमराहसें। ३४ ग. छूटै। ग. छुटै। ३५ ख. जगजेठकी। ग. जगजेठूंकी। ३६ ख. ग. तरवीत। ३७ ग. जोमसें। ३८ ख. जुट्टे। ग. जुट्टै।

---

१९९. वाखांण—वर्णन, व्याख्यान। दिल्लेसुर—दिल्लीश्वर, बादशाह। गाया—वर्णन किया। वरदायक—विरुद बखानने वाले अथवा वरदान देने योग्य। सांसणूंके—राजा द्वारा दानमें दी गई भूमि याग्रामोंके।

२००. कुरब—मान, प्रतिष्ठा। रीझ—पुरस्कार, दान। अभमल—महाराजा अभयसिंह। भाख—भाषा, वाणी।

२०१. हुन्नरवंधूंनैं—कलाको जानने वालोंने। पाक—पवित्र। होसनायकाँनैं—चतुरोंने (?)। हमराहसैं—साथी, मित्र। जगजेठूंकी—पहलवानोंकी। तरवीत—(तरतीब, व्यवस्था ?)।

पहलवांनीरौ वरणण

स्रंगूंकी[1] खाटक चौटी[2] बंगड़ीके दाव। हमरांनी कंमरपेच दाबूंके[3] लगाव। तरह तरहके दाव जंगूंके झणाके अपणै[4] अपणै कुरंगूंकी हमराहा हौसनायकूंके हाके जोधांण मेड़तो[5] वीरखेतके जाए[6] भाजै[7] न लहवहै[8] जेते[9] लड़े[10] तेते[11] बरौबर[12] रहे[13]। पायकांके[14] हमल्ले[15] बांक[16] पट्टे फूलहत्थूंका[17] दाव। नजरवछेकका हुंन्नर अंगूंगा वचाव। हणमंत रूप जगजेठूनैं[18] भुजंग[19] दंडूंपर* दस्तताळ दिया[20]। मांनूं[21] अनेक[22] रणजीत त्रंबागळूंके सीस इक डंका किया[23]। अवासूं[24] गिरंदूंके वीच[25] पडसाद[26] फुट्टे। जाजुळमांन[27] काळा गोरा वीर[28]

---

१ ख. ग. भ्रृंगूंकी। २ ख. ग. चोटी। ३ ख, ग. दावूंके। ४ ख. ग. अपणे अपणे। ५ ख. मेंडता। ६ ग. जाऐ। ७ ख. भांजे। ८ ग. लहवहैं। ९ ख. जेतै। १० ख. ग. लड़ै। ११ ख. ते। १२ ख. वरोवर। ग. वरोबर। १३ ख. रहै। ग. रहैं। १४ ख. ग. पायकूंके। १५ ख. ग. हमले। १६ ख. ग. वांक। १७ ख. ग. फुलहथूके। १८ ग. जगजेठनैं। १९ ख. ग. भुजताळ।

*(दंडू पर) यहाँ से आगे ग. प्रति में निम्न पंक्तियाँ और मिली हैं—

'(दंडू पर) मुसताकि हवा आदम अलाह। सिघ अभै हिंदग्रे वादस्याह महताब दिगर सुमां आफताव आलम तमांम तारीफ त्रंजाव। हफतविलाइत हे मुदई। हिंदसथांनके सिरताज द्रुमि कुनम उमरदराज (दस्तताळ दिया)।'

२० ख. ग. दीया। २१ ग. मांन्नूं। २२ ख. ग. अन्नेक। २३ ख. ग. कीया। २४ ग. आवासूं। २५ ख. गिरदूंके वीच। ग. गिरदूंके वीचि। २६ ख. पडसाह। ग. पड़साद। २७ ख. ग. जाजुलिमांन। २८ ग. वीर।

---

२०१. स्रंगूंकी – सिरोंकी। खाटक – ध्वनि, आवाज, टक्कर। बंगड़ीके – दाव विशेष (?)। कंमरपेच – कुश्तीका एक दाव, कमरपेटी (?)। जंगूंके – जांघोंके। झणाके – ध्वनि विशेष। कुरंगूंकी – (?)। हमराहा – साथ। हाके – आवाज, शोरगुल। वीरखेतके – वीर प्रसविनी भूमि। जाए – उत्पन्न। लहवहै – जब तक अवसर हो, युद्ध करते रहते हैं। पायकांके – सिपाहीके, पहलवानके। हमल्ले – आक्रमण, टक्कर। बांक – तलवार विशेष। पट्टे – प्रायः दो हाथ लंबी किर्चके आकारकी लोहेकी पट्टी जिससे तलवारकी काट या बचाव सिखाया जाता है। फूलहत्थूंका – तलवारका। हणमंत – हनुमान। जगजेठूनैं – पहलवानने। भुजंग...दस्तताळ – भुजाएँ ठोकी, भुजा पर ताल लगाये। त्रंबागळूंके – नगाड़ोंके। अवासूं – भवनोंके। गिरंदूंके वीच – घेर, आवेष्टन (?)। पडसाद – प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि। जाजुळमांन – ज्वाजल्यमान। वीर – महादेवका रूप विशेष जिसे भैरवदेव भी कहते हैं।

जैसे जगजेठ जुट्टै। नजरूंका निहार पंजूंका दाव। कदमूंका[1] फुरत डोरयूंका घाव। जड़ं तेहै डोरी लथोवथ[2] होय[3] जावै। एकल[4]-गिड-वाराहूंकी[5] दंतळू झड़ औझड़ अैसै दरसावै[6]। स्रोणके फुंहारे आस-मांनको[7] छूटे[8]। लगो[9] धख जमीं पर लौटण ज्यूं[10] लुट्टै। ऐसे[11] किसबूंका[12] हुन्नर[13] करि मुजरैको[14] आवै[15]। कड़े सूंनैकी[16] गुरज इनांमूंमें[17] पावै[18]।

हाथियांरी लड़ाईरी वरणण

जिस वखत[19] लाड़ांणूं[20] लगो[21] महावतूंनै[22] छोडै[23] छंछाळ। झरणां गिरंदसे नीझर[24] वहत[25] विकराळ। जगरूप भयांणंक जमाति[26] जांणै डाकदारूनै डाकके[27] हुन्नरसे[28] आंणे। अंगूंके अवनाड़[29]। चालते पहाड़[30]। अगडूंपरि[31] आय जूटे[32] वीफरे[33]

---

१ ग. कंदमूका। २ ख. लथोपूय। ग. लथोवय। ३ ख. ग. हौय। ४ ख. एकलि। ग. ऐकल। ५ ख. वराहूंकी। ग. वराहूंकी। ६ ग. वरसावे। ७ ख. आसमांनकूं। ग. आसमानकु। ८ ख. छुट्टे। ग. छुटै। ९ ग. लग्गे। १० ग. ज्यौं। ११ ग. अैसे। १२ ख. किसवका। ग. किसवका। १३ ख. हुंनर। १४ ख. मुजरेको। ग. मुजरेकौ। घ मुजरेकौं। १५ ग. आवैं। १६ ख ग. सुन्नेकी। १७ ख. इसांमूंमै। ग. इनांसमें। १८ ग. पावैं। १९ ख. ग. वषतत। २० ख. लडाणूं। ग. लड़ाणूं। २१ ख. लगे। ग. लग्गे। २२ ग. महावतांनैं। २३ ख. ग. छोडे। २४ ख. निझर। ग. नींझर। २५ ग. वहत। २६ ख ग. जमजमात। २७ ग. डाककै। २८ ख. हुंनरसैं। ग. हुंन्नरसैं। २९ ग. अवनाड। ३० ग. पाहाड। ३१ ख. ग. अगडपर। ३२ ख. जुट्टे। ग. जुटे। ३३ ग. वीफरे।

---

२०१. जुट्टै – भिड़े, टक्कर ली। नजरूंका – दृष्टिका। लथोवथ – गुथंगुथ्थ। एकलगिड वाराहूंकी – एक दांत वाले सूअरकी। दंतळूं – दांत। झड़ औझड़ – प्रहार टक्कर। स्रोणके – शोणितके, खूनके। लौटण – कबूतर विशेष। कड़े – वलय। गुरज – शस्त्र विशेष। लाड़ांणूंलगो – लड़ानेके लिये। छंछाळ – हाथी। गिरंद – पर्वत। नीझर – निर्झर, झरना। विकराळ – महान, जबरदस्त। जमरूप – यम-तुल्य। भयांणंक – भयावह। जमाति – जमात, समूह। जांणै – मानों। डाकदारनै – मस्त हाथीको अपने स्थान पर लाने वाला व्यक्ति। डाक – एक प्रकारका छोटा भाला जो मस्तहाथीको अपने स्थान पर लानेके लिए उपयोगमें लिया जाता है। अवनाड़ – जबरदस्त, प्रचंड। अगडूं परि – हाथियोंका बंधस्थल। वीफरे – कुपित हुए।

वच्छर[1] दतूंसळूंके खाटक कैसे दरसावै[2]। इंद्र वज्रकी झाट[3] ऐसी[4] नजर आवै। चाचरूंकी भचक सुंडाडंडूंका[5] उपाट*। चरखूंकी भभक धोम धड़हड़का अंधार। वीरघंट किलावूंकी घोर भमरूंका गुंजार। पौतकारूंका[6] पांन फौजदारूंका हलकार जगजेठ ज्यूं[7] जूटै[8] जांण[9] आबू गिरनार[10] झाटकते[11] हैं पोगर[12] आसमांनूंकूं उपाड़ि इनांमूंकी उरड़ ऐसी गजराजूंकी राड़ि ऐसे[13] समैं मीर सिकारूंनै[14] सलांम करि अरज गुजराई। जिस[15] पर हुकम हुआ[16]।

---

१ ख. वछर। ग. वेत्छर। २ ग दरसावें। ३ ख. ग. झाटक। ४ ख. अैसे। ग. अैसै। ५ ख. ग सुंडाडंडूका।

*यहांसे आगे निम्न पंक्ति ख. तथा ग. प्रतियोंमें मिली हैं—

'कूंभा थलूं पर वज्रकी काळदार भुजंगूंकी-सी झाट।

६ ख. पौंतकारूका। ग. पौतकारूका। ७ ख. ज्यौं। ग. ज्यौं। ८ ख. जुट्टै। ग. जुट्टै। ९ ख. ग. जांणि। १० ख. झिरनार। ११ ग. झाटकतै। १२ ख. ग. पौगरा। १३ ग. अैसै। १४ ग. सिकारूंनैं। १५ ग. तिस। १६ ख. ग. हुवा।

---

२०१. वच्छर – (?)। दतूंसळूंके – हाथीके मुंहके बाहरके दांत। खाटक – टक्कर, आघात। दरसावै – प्रभाव दिखाना। झाट – प्रहार, चोट। चाचरूंकी – माथेकी, लिलाटकी। भचक – टक्कर, आघात। सुंडाडंडूंका – सूंडका। उपाट – उठाना। चरखूंकी – चरखी नामक औजार विशेष में बांसकी दो नलियाँ जो लगभग सवा फुट लम्बी होती हैं और उनमें बारूद भरा हुआ रहता है। यह नलियाँ एक दूसरीको काटती हुई ऊपर नीचे लगी रहती हैं और एक लम्बे बांसके सिरे पर मजबूतीसे लगाई हुई रहती हैं। वि०वि०

जब हाथी पूर्ण मस्तीमें होता है और वह किसी आदमी पर झपट कर उसे मारने ही वाला होता है तो एक आदमी मैदानके किनारे बांस पर लगी इस चरखीको लिए खड़ा रहता है जो चरखीदार कहलाता है। उस समय वह चरखी लेकर चलता है, उसके पास भी एक सूतका पलीता जला हुआ रहता है, वह उसको फूंक लगा कर आग ताजा कर के चरखीके बारूद को जलाने की वत्ती (पलीता) को जला देता है, इससे चरखीके दोनों नलियों का बारूद जल जाता है। बारूद जलते ही बांसके सिरे पर वह चरखी जोरसे घूमने लगती है और बड़ी जोर की फटाफटकी आवाज करती है, उसमेंसे धूंआ भी निकलता है। रखीदार उसको हाथीके मुंहके आगे ले जाता है जिससे हाथी घबरा कर आदमीका पीछा छोड़ देता है और भाग जाता है। भभक – धधक, विस्फोट। धोम – अग्नि, आग। धड़हड़ – ध्वनि, आवाज। वीर-घंट – हाथी के पाखारके साथ बंधा घंटा। किलावूंकी – एक मोटा रस्सा जिससे हाथी को गर्दन से बांध रखते हैं। पौतकारूंका – जोश दिलाने वाला। पांन –(?) फौजदारूंका – महावतोंका। हलकार – हुंकार। जगजेठ – पहलवान। जूटै – भिड़ते हैं। झाटकते – टक्कर लेते। पोगर – हाथीकी सूंड। राड़ि – लड़ाई, टक्कर। मीर – सरदार। सिकारूंनै – शिकारोंके। अरज गुजराई – प्रार्थना या निवेदन किया।

सिकाररी वरणण

सिकारकी चढ़ाई। जिस वखत हवालगीरूंनै[1] सलांम वजाय असवारीका सरांजांम[2] सब हाजर[3] किया[4]। किस किस[5] तरहके[6] कहि वताय[7]। घोड़-वहलि माफे इक्के खासे सुखपाळ मेघाडंवर[8] हौंदूसें गजराज साभूंमें[9] झळूंस[10] * अनेक खास-वरदारूंनैं धारी परि[11] पंखी सजि आए[12] मीर-सिकारी तिस वखत स्री महाराज[13] सवज पौसाक[14] पहरि आखेट व्रतके आवध धारे[15] तीसरे नगारेके डंके[16] रकेव पाव धारे। बाजराज[17] आरोह[18] कैसे[19] दरसावै। सूरज[20]-सापतासका[21] सा रूप नजर आवै। छतीस वंस राजकुळ बाजराजूं अरोहि है। घुमर[22] हल्लै[23]। छौल जळूंसें जांणि समुंद्र[24] छिल्लै

---

१ ख. ग. हवालगीरूंनौं। २ ख. सरंजाम। ३ ख. हार। ४ ख. ग. कीया। ५ ख. किसि किसि। ६ ख. तरैंहै। ग. तरैंहै। ७ ख. ग. वताय। ८ ख. ग. मेघाडंबरौ। ९ ख. साजूंमें। ग. साजुंमें। १० ख. ग. झलूस।

*यहांसे आगे निम्न पंक्तियां ख. तथा ग. प्रतियोंमें मिली हैं—

'वाजराज दुसाल। लाहानूर नळवरकी वंदूक साजूसें झलूस।'

११ ख. ग. पर। १२ ग. आऐ। १३ ख. ग. माहाराज। १४ ग. पौसाष। १५ ग. धारैं। १६ ख. दंके। १७ ख. वाजराजूं। १८ ग. आरोहि। १९ ख. ग. कंसे। २० ख. ग. सूरिज। २१ ग. आफलास। २२ ख. घुंम्मर। ग. घुंम्मंर। २३ ख. ग. हल्ले। २४ ख. ग. सामुंद्र।

---

२०१. हवालगीरूंनै – खवर देने वालोंने (?)। सरांजांम – सामग्री, सामान। घोड़-वहलि – एक प्रकारकी घोड़े द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी। माफे – (?)। खासे – राजा या वादशाहकी सवारीका घोड़ा। सुखपाळ – एक प्रकारकी पालकी। मेघाडंवर – एक प्रकारका छत्र विशेष। हौंदूसें – हाथीकी पीठ पर कसा जाने वाला चारजामा। साभूंमें – उपकरणमें, सामग्रीमें। झळूंस – सुसज्जित। वरदारूंनैं – लेजाने वालोंने, वहन करने वालोंने। मीर-सिकारी – शिकार करने वालोंमें प्रमुख अथवा राजा वादशाहोंके शिकारगाहका प्रबंध करने वाला, मीरे-शिकार। सवज – हरे रंगका, सब्ज। आखेट – शिकार। आवध – शस्त्र, आयुध। रकेव – घोड़ेकी काठीका पावदान। वाजराज – घोड़ा। आरोह – सवार हो कर। घुमर – समूह। हल्लै – गतिमान होते हैं, चले। छौळ – तरंग, हिलोर। जळूंसें – जलूस। जांणि – मानों। छिल्लै – उमड़ते हैं, सीमाके वाहर होते हैं।

नगारूंकी घोर नकीबूंके[1] हाके[2] छपै[3] कपोलूं क्रीला करते[4] छुटै[5] छंछाळ छाके रज डंबरका[6] पूर चढ़ि ढ़के भांण। ठांमठांमूंसैं फौजूंके[7] डंबर[8] उछटते केकांण। ऐसे[9] विमरीर दळूंसैं विकट गिर भिगर घेरे। फौजूंके लगस चौतरफकूं फेरे।

सिघांरी सिकार

तहां सौनहरी-पटैत[10] विकराळ रूप बाघ भभकार ऊठे[11]। रोसका[12] रूप जांणि जमराज[13] रूठे। जिन्हूंसैं[14] सांम्हे[15] जाइ[16] जूटै[17] महाराजके[18] जोधांणके[19] राव। हथलूं पहल कीए[20] बीजळूंके घाव। केतेक[21] वाघूंपर आप असि धरै। सेल तरवारूंका घाव स्री हथूंसैं[22] करै। * नाहरू रजपूतांकी[23] राड़ि पौरस[24] अलेखे। सूरज भी रथ खांचि[25] तिसका कवतग देखै।

सिघां अर भैंसांरी लड़ाई

केतेग[26] सेर नवहत्थे[27] मारिके[28] गिराए केतेक[29] जाळियूंकेवीच[30]

---

१ ख. नकीबूंकै। २ ख. हाक। ३ ख. छप्पै। ४ ग. करतै। ५ ख. छूटे। ग. छुटे। ६ ख. ग. डम्मरका। ७ ग. फौजूंकै। ८ ख. डम्मर। ग. डम्मर। ९ ख. असे। १० क. पटेत। ११ ख. उठे। ग. उठें। १२ ख. रोकसे। १३ ख. ग. जमराव। १४ ख. जिहुंसे। १५ ख. सांम्है। ग. सांम्हें। १६ ख. ग. जाय। १७ ख. जुदे। ग. जुटे। १८ क. माहारावके। १९ ग. जोधरणके राव। २० ग. कीऐ। २१ ग. केतेके। २२ ख. ग. हथसै।

*यहांसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्तियां मिली हैं—

'लगी नरहै असें करत घाय जहां लगै तहां दोय टूक हुय जाय।'

२३ ख. ग रजपूतूंकी। २४ ख. औरस। २५ ख. ग. थांभि। २६ ख. कैतक। ग. केतक। २७ ख. ग. नवहथे। २८ ख. मारिकै। ग. मारकै। २९ ग. कैतक। ३० जालीयांके वीचि।

---

२०१. घोर – ध्वनि, आवाज। हाके – आवाज। छपै – (षट्पद) भौंरे। कपोलूं – गंडस्थल। क्रीला – क्रीड़ा। छंछाळ – हाथी। रज – धूलि। डंबरका – समूहका। पूर – पूर्ण। भांण – भानु, सूर्य। ठांमठांमूंसैं – स्थान-स्थानसे। केकांण – घोड़ा। विमरीर – विकट, जबरदस्त। लगस – समूह। सौनहरी-पटैत – एक प्रकारका सिंह। विकराळ – भयंकर। भभकार – दहाड़ कर, कोप कर। रोसका – कोपका, क्रोधका। रूठे – कोप किया। जिन्हूंसैं – जिनसे। सांम्हे – सम्मुख, सामने। जूटै – भिड़े। हथलूं – सिंहका अगला पंजा जिससे वह शत्रु पर प्रहार करता है। बीजळूंके – तलवारोंके। स्री हथूंसैं – अपने हाथसे। नाहरूं – सिंहों। राड़ि – लड़ाई। पौरस – शक्ति, बल। अलेखे – अपार, असीम। कवतग – कौतुक। केतेग – कितने ही। नवहत्थे – नौहत्था सिंह। जाळियूंके वीच – फंदोंके वीच, जालके वीच।

कैदमे[1] ल्याए[2] । तिनूं परि[3] महिषूके चख झाळ तूटै[4] । जमराजके राजवांण आरणै[5] जूटै[6] । सो कैसे[7] भयाणंक[8] गजराजूंके[9] आकार आरोध[10] कंधे[11] । चोगजे[12] सावळसे स्रंग[13] जोमसै अंधे । धिखते[14] आरणसे लोयण जमराजसे असवार कालीनाग ज्यूं[15] करते फुरणूंका फूंकार[16] ऐसे[17] सारवांनूंके[18] हाकलेसै[19] विमरीर[20] वाघूं परि[21] धाए । उस तरफ केसरसिंघ[22] पटैत[23] नले[24] झाड़[25] भभकार सांमुहै[26] आए । नळूं हाथळूंका दाव औझड़ि[27] झड़[28] स्रंगूंका घाव[29] दारुणूंके[30] हाथळ[31] लगणै[32] न* पावै । आरणूंकैं स्रंग[33] पार होय[34] जावै । फूटे[35] घड़[36] आफळते[37] है[38] ज्वाळानळ ज्यौं जलते हैं । रुइके[39] पहल ज्यौं[40] स्रंगू पर[41] चढ़ाइ[42] रोळै[43] ।

---

१ ख. केदमै । ग. केदमें । २ ख. ग. लाए । ३ ख. ग. तिन पर । ४ ख. तुट्टे । ग. तुट्टै । ५ ख. ग. आरणे । ६ ख. छूटे । ग. छुटैं । ७ ख. कैसै । ८ ख. भयाणय । ग. भयानक । ९ ख. गजराजोंके । ग. गजराजूंकै । १० ख. ग. आरोट । ११ ख. ग. कंध । १२ ख. ग. चौगजे । १३ ख. अंग । १४ ख. धिपतै । १५ ख. कालींनाग ज्यूं । ग. काळीनण ज्यौं । १६ ख. फुंकार । १७ ख. असे । ग. असै । १८ ख. ग. सारंवानूके । घ. सारवांनूकं । १९ ख. हाकलैसै । २० ख. ग. विमरीर । २१ ख. ग. वाघूं पर । २२ ख. ग. केसरीसिंघ । २३ ख. पट्टैत । २४ ग. नलै । २५ ख. ग. झाड़ि । २६ ग. सांम्हे । २७ ख. ग. औझड । २८ ख. ग. झड । २९ ग. हाघाव । ३० ख. ग. दारणूंक । ३१ ख. ग. हाथल । ३२ ख. ग. लगणे ।

*रेखांकित पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

३३ ग. श्रृंग । ३४ ग. हुय । ३५ ख. में नहीं है । ग. फूटैं । ३६ ख. में नहीं है । ग. घट्टू । ३७ ख. फलते । ३८ ग. हैं । ३९ क. रुईके । ४० ग. पहलजूं । ४१ ख. श्रृगूंपर । ४२ ख. ग. चढ़ाय । ४३ ग. रोले ।

महिषूके – भैंसोंके । चख – नेत्र । झाळ – कोप, कोपाग्नि । राजवांण – राजाके वाहन । आरणै – जंगली भैंसे । भयाणंक – भयावह, भयंकर । सावळसे – भाला विशेषसे । स्रंग – सींग । जोमसै – जोशसे । धिखते – प्रज्वलित । आरणसे – लुहारकी भट्टीसे । लोयण – नेत्र, लोचन । फुरणूंका – नाकके नथनेका । सारवांनूंके – ऊंटके सवारके । हाकलेसै – हाँक करके । नले – ललाट । भभकार – कोप कर । सांमुहै – सम्मुख, सामने । नळूं – ललाट । औझड़ि झड़ – भयंकर रूपसे प्रहार या टक्कर । स्रंगूंका – सींगोंका । दारुणूंके – भयंकरके । आरणूंके – भैंसोंके । रुइके पहल ज्यौं – धुनी हुई रुईकी मोटी तह जैसी । रोळै – फेंकते हैं ।

छूटे[1] हंस पड़े जांणे[2] मंजीठ बोळे। इस उजैका[3] तमासा देखि गिर[4] भ्रंगरूंवीचि[5] घैसाहर[6] फेरे[7]। ग्रैरूंके[8] झुंड[9] नटूंके[10] तटाक घण घुमरूंसैं[11] घेरे। तहां सेती[12] होकरि[13] ऊठै[14] ग्रंधकंध गिड़दी[15] ढाळ अगनकुंडसें[16] चखूंवीच[17] भभकते[18] क्रोधकी झाळ। हमफरते[19] तोपका[20] गोळाज्यूं[21] ग्राए[22]। जिन्हूं[23] पर ठांमठांमसेती फौजूंके लड़ंग धाए।

सूरांरी सिकाररौ वरणण

दंतूसळूंकी[24] ग्रौझड़[25] घोड़[26] भड़ांसूं[27] लड़ते हैं। जाजुळमांन[28] जोधार सेलूंसें[29] जड़तै हैं। ऐसे[30] वाराहूंके[31] ऊपर घण वीजूजळांका[32] घाव। सो कैसे[33] सांमळे वदूळपर[34] वीजूजळांका[35] सिळाव। ऐसे[36] भयांणख एकलगिड़ वराह[37] ढाए[38]।

---

१ ख. छुट्टे। ग. छूटै। २ ख. जांणि। ३ ख. वजैका। ग. वजैकी। ४ ख. गिरि। ५ ग. भींगरूवीचे। ६ ख. ग. घांसाहर। ७ ख. फेर। ग. फेरे। ८ ग. ग्रैरारूं। ९ ख. झंड। ग. झूंड। १० ख. नट्टू। ग. नडू। ११ ख. ग. घूंमरसैं। १२ ख. सैती। १३ हौकरि। ग. हौकर। १४ ग. करि उठे। १५ ख. गिडदा। ग. गीडदा। १६ ख. ग. ग्रगनकूंडसे। १७ ख. ग. चषूंवीचि। १८ ख. ग. भभकतै। १९ ख. हमफरतै। ग. हौफरतै। २० ख. ग. तौपके। २१ ख. ग. गोळाज्यौं। २२ ग. ग्राऐ। २३ ग. जिन-पर। २४ ख. ग. दंतुसलूंके। २५ ख. ग. ग्रौझड़ झड़। २६ ख. घोरू। ग. घोड़ू। २७ ख. भलूसें। ग. भड़सें। २८ ख. जाजुलिमांन। ग. जाजूलामांन। २९ ग. सैलूंसौं। ३० ग. ग्रैसे। ३१ ख. ग. वाराहूंके। ३२ ख. ग. वीजूंजळूंका। ३३ ख. ग. कैसा। ३४ ख. वद्दलपर। ग. वदनपरि। ३५ ख. ग. वीजलूंका। ३६ ख. ग्रैसे। ग ग्रैसा। ३७ ख. वराह। ग. वाराह। ३८ ख. ग्रनेक ढाहे। ग. ग्रनेक ढाऐ।

---

२०१. छूटे हंस……बोळे – उनके प्राण छूट गये और वे खूनसे लथपथ ऐसे प्रतीत होते हैं मानों मजीठ घोलमें सरावोर हों। उजैका – प्रकारका। घैसाहर – सेना, दल। घण – बहुत। घूमरूंसैं – समूहसे, दलसे। घेरे – ग्रावेष्टन, घेरा। सेती – से। होकरि – दहाड़ कर। चखूं – नेत्र। भभकते – प्रज्वलित होते। झाळ – ज्वाला, ग्राग। हमफरते – तेजीसे स्वास लेते हुए। जिन्हूं – जिन पर। ठांमठांमसेती – स्थान-स्थानसे। लड़ंग – टुकड़ी, दल। दंतूसळूंकी – मुंहके बाहरके दांत। ग्रौझड़ – टक्कर। भड़ांसूं – योद्धाग्रोंसे। जाजुळमांन – जाज्वल्यमान, तेजस्वी। जोधार – योद्धा, भट। सेलूंसें – भालोंसे। जड़तै हैं – प्रहार करते हैं। वाराहूंके – सूग्ररोंके। वीजूजळांका – विजलीका, तलवारोंका। सांमळे – श्याम रंगके, कृष्ण। वदूळपर – बादलों पर, मेघों पर। सिळाव – चमक, दकम। भयांणख – भयानक। एकल……वराह – जंगलोंमें ग्रकेला रहने वाला सूग्रर। ढाए – गिरा दिए, मारे।

खरगोस हिरणादिरी सिकाररी वरणण

एतेमें[1] केतैंक[2] खिरगोस[3] म्रिग[4] सांमरूंके जूथ आए। तिसपर चित्रु[5] कूतूंका[6] धाव। सीहगोसूंके[7] दाव। ऊछट[8] झपटसैं मिलते[9] हैं। मोहरा[10] जड़ाव करते हैं। पाछै रंजक[11] मुडियांण[12] काळे गोरे म्रग[13] खरगोस जांणै[14] न पावै। जहां देखै[15] तहां मारि गिरावै। पंखी[16] जिनावरूंकी[17] सिकार। कंदीलूंका[18] विसतार। मीर-सिकारूंका हुन्नर[19] नजर होत[20] है। लगतू[21] रमतूंके आतुरी।

---

१ ख. एतमैं। ग. ऐते। २ ग. केतेक। ३ ख. ग. षरगोस। ४ ख. ग. मृग। ५ ख. चीतूं। ग. तींतूं। ६ ख. कुतूंका। ७ ख. साहगोसू। ग. सीहगोसू। ८ ख. उछल। ९ ग. मिलतैं। १० ग. मोहोरा। ११ ख. ग. रंज। १२ ग. मुडीयांण। १३ ख. ग. मृग। १४ ख. जांणे। १५ ग. दैषैं। १६ ख. ग. पंष। १७ ख. ग. जानवरूंकी। १८ ग. कदिलूंका। १९ ख. हुन्नर। ग. हुंन्नर। २० ख. होते। २१ ख. ग. लगतु।

---

२०१. एतेमें – इतनेमें। केतैंक – कितने ही। म्रिग = मृग – हरिण। सांमरूंके – भारतीय मृगोंकी एक जाति विशेषके। वि.वि. – इस जातिका मृग बहुत बड़ा होता है। इसके कान लंबे होते हैं और सींग बारहसिंगोंके सींगोंके समान होते हैं। इसकी गर्दन पर बड़े-बड़े बाल होते हैं। जूथ – समूह, टोली। चित्रु – एक प्रकारके शिकारके लिए शिक्षित किए हुए चीते, इनकी आंख पर ढक्कन लगे रहते हैं। शिकारके समय आंखका ढक्कन उस समय खोल देते हैं जब हरिणोंकी टोली सामने आ जाती है। ज्योंही आंखका ढक्कन खोला जाता है त्योंही ये चीते सीधे हरिण पर झपट कर उसे पकड़ लेते हैं। उस समय इन चीतोंको शिक्षित करने वाला आदमी दौड़ कर उनके पास पहुँचता है। चीता शिकारका खून चूसनेमें लगा रहता है और आदमी वापिस इसकी आंख पर ढक्कन लगा कर पट्टी बांध देता है। कूतूंका – कुत्तोंका। धाव – आक्रमण, हमला। सीहगोसूंके – सियहगोस नामक एक जंगली पशु विशेषके। ऊछट – कूद कर, फांद कर। झपटसैं – हमलेसे, आक्रमणसे। मोहरा······करते हैं – उछल कर आक्रमण करते हैं, कोप कर झपटते हैं। पाछै – एक प्रकारका हरिण। रंजक – एक प्रकारका हरिण। मुडियांण – एक प्रकारका हरिण जिसके सींग नहीं होते हैं। काळे – कृष्ण हरिण। गोरे – गौर वर्णके हरिण। पंखी – पक्षी। कंदीलूंका – (?)। मीरसिकारूंका – शिकारकी व्यवस्था करने वाला प्रधान कर्मचारी, मीर-शिकार। हुन्नर – कला, हुनर। लगतूं – लगतू या लगडू नामक पक्षी विशेष जो पक्षियोंका शिकार करनेमें शिक्षित किया जाता था।

चरज[1] सींचांणूं सो लाग आतुरी। बाज बहरूंकी झपट। कुही[2] *कुही लूगूंकी[3] ऊछट[4]। लावै[5] तीतरि[6] कल तीतर नंहरू[7]* चाढ़ि ऊझटसैं[8] गिरावते हैं। नहरूं परूं चूंच[9] जड़े चरज बटेर मरगाबूंकूं[10] धर आवतैं[11] हैं। आसमांनके[12] खेल नजरूं निहारै[13]। अलंगांसूं[14] चढ़ि कुलंगको[15] मारि उतारै[16]। असै[17] तमासै[18] अनेक भांति भांति पातिसाहूंकी[19] दसतूरीकी[20] सिकार। हौसनायकांकी[21] जीवन[22] स्री महाराजाजीकी रीझवार[23]। आतुसूंके[24] धमके बांणूंकी[25] चोट[26]। संमळ[27] चीतळ पाठे केते लोटपोट। ऐसी आखेट करि नौबत बाजतूं[28] आए[29]। दुसमणूंकूं[30] दाह साजणूंके मन भाए[31]। तिस बखत हौसनायकूं[32] चाक चढ़ाय टंकणै[33] बणवाए[34]।

---

१ ख. ग. चरग। २ ख. कुही। ग. कुहीकु। ३ ख. लूंगीकी। ग. लंगूंकी। ४ ख. ग. उछट। ५ ख. ग. लावे। ६ ख. ग. तीतर। ७ ख. ग. नहरूं।

*चिन्हित पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है।

८ ग. उछटसे। ९ ख. ग. चचू। १० ग. मुरगा। ११ क. आवते। १२ ग. आसमानकें। १३ ग. निहारे। १४ ख. ग. अलंगूंसू। १५ ख. कुलंगूंको। ग. कुलगूंको। घ. कुलंगकु। ङ. कुलुंगूंकूं। १६ ग. उतारे। १७ ख. ग. अैसे। १८ ख. ग. तमासे। १९ ख. ग. पातसाहूंकी। २० ख. दस्तूरकी। ग. दसतूर। २१ ख. हौसनायकूंकी। ग. हौसनायकोंकी। २२ ग. जावन। २३ ख. ग. रिझवार। २४ ख. ग. आतसूंके। २५ ख. वांणूंकी। २६ ग. चौट। २७ ख. संम्मल। ग. सांमल। २८ ख. वाजतूं। ग. वाजत। २९ ग. आऐ। ३० ख. दुसमणोंकूं। ग. दुसमणूंका। ३१ ग. भाऐ। ३२ ग. हौसनायकों। ३३ ख. ग. टांकणे। ३४ ख. ग. वणवाये।

---

२०१. चरज – पक्षी विशेष। सींचांणूं – शिकारी पक्षी विशेष, सचान (यह बाजसे भिन्न होता है)। बाज – शिकारी पक्षी विशेष। बहरूंकी – पक्षी विशेषकी। झपट – टक्कर, भिड़ंत। कुही – शिकारी पक्षी जो छोटी-छोटी चिड़ियोंको मारता है, कुरही। लूंगूंकी – पक्षी विशेषकी। ऊछट – छलांग, झपट, भिड़ंत। नंहरू – (पक्षी विशेष) । ऊझटसैं – टक्करसे। बटेर – पक्षी विशेष। मरगाबूंकूं – मुर्गेकी जातिका एक पक्षी विशेष, मुर्गाबी। अलंगांसूं – दूरसे। कुलंगको – पक्षी विशेषको। दसतूरीकी – नियमकी, कायदेकी। हौसनायकांकी – (?) । रीझवार – प्रसन्नता, पुरस्कार, इनाम। आतुसूंके – आतशबाजीके। धमके – आवाज। संमळ – काला हरिण। चीतळ – एक प्रकारका हरिण। पाठे – एक प्रकारका हरिण। लोटपोट – कुलांच। दाह – जलन, कुढ़न। साजणूंके – सज्जनके। चाक चढ़ाय – (?)। टंकणै – (?)

मांस तथा भुंजाईरौ वरणण

छुरूं खंजरूंके विहार[1] सूर संवरूं[2] असे[3] दरसाए सुपेत लाल भंभार घाट मानूं[4] नारनौळकी लूट[5] खूटै[6]। वजाजूंके[7] हट[8] यस[9] वजै[10] ठांम ठांम छिनौती कर[11] कर कड़ियाल[12] तोलूं[13] चढ़ाए। हौसनायकांनैं[14] मसाले चाढ़ि चंडी भोग वणाए[15]। चुरूं[16] आतसूंके झळपट जग्गे अथाह। दूसरे सठ मठ राजूंके हियै[17] पर दाह। भांति[18] भांतिके कडियाल[19] चरू[20] चढ़े सकाज। भांति भांतिके पकवांन भांति[21] भांतिके अनाज। रोगांन[22] मसालेसैं[23] सूलूंकी सीक वणावै[24]। अनेक[25] भांतिके साग तिसका पार न आवै[26]। कड़ियालूंके वीचि[27] कूड़छूरूं[28] खरडाते[29] वग्गे[30]। दावागरूंके हियै[31] विच[32] सूलसे[33] लग्गे[34]। ऐसी विध[35] भुंजाईकी[36] तैयारी[37] करि हवालगीरूंनै[38]

---

१ ग. विहारसूं। २ ख. सांवर। ग. सांवर। ३ ख. असे। ग. ए। ४ ग. मांनौ। ५ ख. लूटि। ६ ख. षुटे। ग. पूटे। ७ ख. ग. वजाजूके। ८ ख. ग. हाट। ९ ख. ग. इस। १० ग. वजे। ११ ग. करि। १२ ख. कडीयाल। ग. कडीयाले। १३ ख. ग. तौलूं। १४ ख. हौसनायगूंनै। ग. हौसनायकूंनै। १५ ख. वणवाए। ग. वणवाऐ। १६ ख. चूनूं। ग. चुरू। १७ ख. हीये। ग. हिये। १८ ग. भांत भांत। १९ ख. कडीयाल। ग. कडियाल। २० ख. चरूं। २१ ख. भांत भांत। २२ ख. रोगात। २३ ग. मसालेंसे। २४ ख. ग. दणवावै। २५ ख. अन्नेक। २६ ख. पावै। २७ ख. ग. कडीयाळूंकेवीचि। २८ ख. कुडछूंका। २९ ख. ग. परडाट। ३० ख. वगो। ग. वग्गे। ३१ ख. हाये। ग. हीऐ। ३२ ख. ग. वीचि। ३३ ख. ग. सेल। ३४ ख. लगो। ग. लग्गे। ३५ ख. विधि। ३६ ख. भौंजाई। ग. भोजाइ। ३७ ख. ग. तयारी। ३८ ग. हवालगीरौंने।

---

२०१. छुरूं – छुरा। खंजरूंके – खंजर नामक शस्त्रके, एक प्रकारके छुरेके। विहार – विदीर्ण कर चीर कर। सुपेत – श्वेत। भंभार – बहुत बड़ा। खूटै – खोला हो। हट – दुकान। ठांम ठांम – स्थान-स्थान। छिनौती – उत्तेजना, चुनौती। कड़ियाळ – बड़ा कड़ाह। चंडी – देवी, दुर्गा। भोग – नैवेद्य। चुरूं – भोजन पकानेका बड़ा बर्तन विशेष। आतसूंके – अग्निके, आगके। झळपट – आगकी लपट या लपट लगनेसे होने वाला चिन्ह। सठ मठ – कृपण, कंजूस। रोगांन – घी तेलादि स्निग्ध पदार्थ। सूलूंकी – शिकंजे पर पकाये जाने वाले मांसकी। सीक – लोहेकी सलाख पर पकाया जाने वाला मांस। कूड़छूरूं – बड़ी डांडीका चमचा, कलछा। खरडाते – रगड़ते। दावागरूंके – शत्रुके, दुश्मनके। सूलसे – शल्यसे, कसकसे। हवालगीरूंनै – वह जिसके अधिकारमें हो।

अरज गुजराई । तिस वखत खिलव्रतके[1] लोगूंके[2] वीच[3] मजलस वणवाई ।

सैफलरौ वरणण

सोनै[4] रूपै[5] जड़ाऊंके[6] तूंग[7] ऐराक फूलसू[8] भरवाए[9] । रसके पूर सूंलूंकी नुकल[10] वांटि[11] प्याला[12] फिरवाए । दोऊ मिसलसै उमराऊंके[13] हुकम माफक[14] देते[15] हैं । सलांम वजाय फूल छाक लेते[16] हैं । कविराजूंकू[17] स्रीमुख हुकम करि वगसावते हैं । *सलांम असीस करि चंडी[18] मंत्र पढ़िकै चढ़ावते हैं ।* आप लेते हैं प्याला[19] तब बोलते हैं कविराव । सत्रु[20] सोखिये[21] मित्र पोखिये[22] । गढ़ू कोटूंपर अमल रंगका[23] चढ़ाव तिस वखत रंगराज केहौक[24] (वै) रस[25] रहिसकी बात । अमलूंका चढ़ाव सोभा दरसात । संग असम संगमरवर कस्मीर बिलवर

---

१ ख. पिलवतेनै । ग. पिलवतिनै । २ ख. लोग । ग. लोगन । ४ ख. वीचि । ३ ख. सोने । ग. सोनै । ५ ख. ग. रूपे । ६ ग. जडायु । ७ ख. ग. तुंग । ८ ग. फुल । ९ ख. ग. भरेआए । १० ख. नुकुल । ११ ख. वंटि । १२ ख. ग. प्याले । १३ ख. ऊमरावूंके । ग. उमरावूंके । १४ ग. माफिक । १५ ख. देतै । १६ ग. लेतै । ग. लेते । १७ ख. कविराजांकूं । ग. कविरजादूंकौ । १८ ग. चंडि ।

*चिन्हित पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

१९ ख. ग. प्याले । २० ख. सत्रु । ग. सत्रू । २१ ख. ग. सोषीयै । २२ ख. ग. पोषीयै । २३ ग. अमलरंगकूं । २४ ख. कैहौक । २५ ख. ग. पेरस ।

---

२०१. खिलवतके – मित्र-मंडलाक । मजलस – सभा, जुलूस, नाचरंगका स्थान । तूंग – शराव रखनेका वड़ा पात्र । ऐराक – तेज शराव । सूंलूंकी – शिकंजे पर आग पर पकाये हुये मांसकी । नुकल – वह चीज जो शराव अफीमके साथ खाई जाय, नुकल, गजक । मिसलसै – पंक्तिसे, सिलसिलेसे । उमराऊंके – सरदारोंके । माफक – माफिक, अनुकूल । फूल – भट्टीसे प्रथम वार निकाला हुआ हलका शराव । छाक – शराव पीनेका प्याला । स्रीमुख – स्वयं, खुद । वगसावते हैं – प्रदान करते हैं । असीस – आशीष । सोखिये – नाश कीजिये । पोखिये – पोषण कीजिये । तिस – उस । केहौक – हर्षोल्लास । रस – आनन्द । संग असम – श्याम रंगका एक बहुत प्रसिद्ध पत्थर, असंग सवद 'संगे-यशव' । संगमरवर – संगमरमर । कस्मीर – कश्मीरका पत्थर विशेष । बिलवर – एक प्रकारका सफेद रंगका पत्थर विशेष, विल्लौर ।

सूनै[1] रूपैके[2] मौरियांनूं[3] जड़ाऊके प्याले फिरते हैं। जिस प्यालूंके वीच[4] ही[5] अन्नार दालचीनीं परतकाली[6] अंगुरी[7] गले कुलाव ऐसी[8] भांति भांतिके फूल ऐराक भरते हैं। उस वखत चौसरिये[9] पंति[10] करि जरकसी समियांनां[11]। स्रीसापका मंगसखांना[12]। खडा करि[13] सुनहरीकी[14] चौकी धरि[15]। तिस परि[16] भोजन पूर कनकथाल विराजमांन करि[17] खिजमतगारूंनै[18] अरज कीवी[19] भौंजाईकी[20] तयारी।

भोजनांरो वरणण

तहां सुभड़ कविराजूं[21] सहित[22] आय विराजे[23] छत्रधारी। परूसवारेकी ऊरड़[24] ठांम ठांमसै लगी। चंडी भोग[25] अनाजूंके गंजूं-पर रोगनूंकी छौल[26] वगी[27]। जीमणूंके गंज एते दरसावै। जिसकी[28]

---

१ ख. ग. सूंने। २ ख. ग. रूपे। ३ ख. मोती पत्रूं। ग. मोरी पत्रूं। ४ ख. ग. वीचि। ५ ख. ग. वीही। ६ ख. परकाली। ७ ख. अंगूरी। ८ ख. अैसे। ग. अैसै। ९ ख. चौसरीयै। ग. चोसरीयैं। १० ख. ग. पांते। ११ ख. ग. समीयांनां। १२ ख. मंगस-पाता। १३ ख. ग. कर। १४ ख. तथा ग. प्रतियोंमें नहीं है। १५ ख. ग. धर। १६ ख. ग. पर। १७ ख. कर। १८ ग. षिजमतगारौंनें। १९ ख. अरजकीवि। २० ख. भौजाई। ग. भौजायी। २१ ग. कविराजां। २२ ग. सहत। २३ ग. विराजै। २४ ख. ग. उरड। २५ ख. भोम। २६ ग. छोल। २७ ख. वग्गी। २८ ख. विसकी।

---

२०१. मौंरियांनूं – प्यालेके ऊपरका भाग, प्यालेका मुख (?)। जड़ाऊके – जटित, पच्चि-कारी किया हुआ। गले कुलाव – (?) । फूल ऐराक – हल्के नशेका शराब। चौसरिये – (?) । पंति – पंक्ति। समियांनां – तंवू। स्रीसापका – एक प्रकारके कपड़ेका। मंगसखांना – (?)। सुनहरीकी – स्वर्णिमकी, सोनेकी। चौकी – पाटा। कनक – स्वर्ण, सोना। विराजमांन – शोभायमान, रख कर। खिजमतगारूंनै – सेवकोंने, अनुचरोंने। सुभड़ – योद्धा। विराजे – बैठ गये, शोभाय-मान हुए। छत्रधारी – राजा। परूसवारेकी – परोसनेका कार्य करने वालेकी। ऊरड़ – उमंग, जोश। ठांम ठांमसैं – स्थान-स्थानसे। चंडी – देवी, दुर्गा। गंजूं – ढेर। रोगनूंकी – घीकी, तेल आदि स्निग्ध पदार्थोंकी। छौल – धारा, प्रवाह। वगी – गतिमान हुई। जीमणूंके – भोजनोंके। एते – इतने। दरसावै – दिखाई देते हैं।

ओट[1] जीमणहारूं[2] नजर[3] न आवै। कुमाच[4] मैहेली[5] महरि[6] ए[7] मंडोवरके मूंग[8] सुखदा[9] सराय। भोग[10] लंजहा के भात जायके[11] फूलांकी[12] सोभा दरसात। और[13] भी भांति[14] भांतिके सो कैसे[15] कैसे कहि दिखाय। कमोद[16] तुलछी[17] स्यांमजीरा[18] दधि मोगर चीनी एळची पूरव कपूर पोहप[19] प्रसंग हरेवी सौरंभ[20] कुसुमवा किय[21] जगनाथ भोग अैसी चौरासी[22] भांति जिन्हुंके[23] गंज[24] दरसावै। सुपेत[25] केसरियै[26] रंग कविराजूंसैं गिणणैमें[27] नावैं[28]।

मांसांरौ वरणण

कलिया[29] पुलाब[30] विरंज[31] दुप्याजा[32] जेरी[33] बिरियां[34] अखनीं चखताळा भांति भांतिके मजे। भांति भांतिका[35] मसाला

---

१ ख. वोट। २ ख. जिमणहार। ग. जीमणहार। ३ ख. नजरूं। ग. निजर। ४ ख. ग. कुमाच। ५ ख. ग. मैहेल। ६ ख. ग. महरी। ७ ग. ऐ। ८ ख. मुंग। ९ ख. सूपदा। १० ग. मोग। ११ ख. लंहके। ग. के। १२ ख. फूंलूंकी। ग. फूलकी। १३ ग. ओर। १४ ख. भांत भांत। ग. भांत भांति भांतके। १५ ग. कैसे कसे। १६ ख. ग. कमौद। १७ ग. तुलसी। १८ ग. सामजीर। १९ ख. ग. पौहौप। २० क. सोरंभ। २१ ख. कीया। ग. कीया। २२ ख. चौरासी जातिके। ग. चौरासी जातकै। २३ ख. जिहुं। ग. जिन्हूं। २४ ख. जंग। २५ ख. सुपेद। २६ ख. केसरीए। ग. केसरीये। २७ ख. गिणणैमैं। २८ ख. ग. न आवै। २९ ख. कलिया। ३० ख. युलाव। ग. पुलाव। ३१ ख. ग. विरंज। ३२ ख. दुप्पाजा। ग. दुप्पाजी। ३३ ख. ग. जेर। ३४ ख. विरीयां। ग. विरांयां। ३५ ख. ग. भांति भांतिके।

---

२०१. जीमणहारूं – भोजन करने वाले। कुमाच – (?)। मैहली – (?)। महरि ए – (?)। लंजहा – श्रेष्ट, स्वादिष्ट। कमोद – एक प्रकारके चावल। तुलछी – तुलसी। स्यांमजीरा – शाहजीरा, कृष्णजीरा। मोगर – छिलका उतारी हुई दाल। एळची – इलायची। पोहप – पुष्प, फूल। हरेवी – एक प्रकारकी खटाईयुक्त दाल। सौरंभ – सुगंध, महक। जिन्हूंके – जिनसोंके, भोज्य-पदार्थोंके। गंज – समूह, ढेर। कलिया – दही डाल कर बनाया जाने वाला मांस विशेष। पुलाब – एक प्रकारका प्रसिद्ध खाद्य जो मांसके साथ चावल डाल कर बनाया जाता है, पलाव, पुलाव। बिरंज – एक प्रकारके पकाए हुए मीठे चावल। दुप्याजा – एक प्रकारका मांस जिसमें केवल प्याज ही पड़ती है, दुपियाज। जेरी बिरियां – एक प्रकारका पकाया हुआ गोश्त। अखनीं – मांसका रस, शोरबा। चखताळा – (?)। मजे – आनन्द।

रोगांनी[1] * रौसनीं[2] केसरियां[3] चक्खी[4] भांति भांतिकी मिठाई। मेवैकी[5] पुलाव अनेक[6] आई। अजरख[7] जमीकंद रताळूका विसतार। अंबु[8] नींबू[9] अंगीर[10] कैरूंका आचार[11]। वादांमी सावूनी[12] सरेसं[13] जुड़ी। भांति[14] भांति सिखरणी[15], भांति[16] भांति पुड़ी[17]। मेवैंकी[18] खीर नमखकी दोइ[19] करवा छूंदा करार जीमै सहकोई[20]। जुज-स्टळकासा[21] ज्याग कुमेरका भंडार। इत्यादिक साक पतूंका[22] अंत न पार। गौरसकी[23] उभेल जींमे[24] परज्याद[25]। सकरसै[26] वीहै[27] तरतकरका[28] सवाद। ऐसी विध[29] रस[30] आई। राजेस्वरूंकी[31] भूंजाई[32]। ◈कविराजूंनै संखेप सी कही। सव कहिणैंमें[33] ना[34] आई◈।

---

१ ख. ग. रोगनी।

*यहां निम्न पंक्तियां ख. तथा ग. प्रतियोंमें और मिली हैं—

'(रोगनी) छूटि कहलवांनी मसालेदार। सीक चढ़त ली अलवंटे वांन सूले अपार रोगांनी।'

२ ख. ग. रोसनीके। ३ ख. ग. केसरीयां। ४ ख. ग. चप्पी। ५ ग. मेवे। ६ ख. ग. अन्नेक। ७ ख. ग. अदरष। ८ ख. आंवू। ग. आंव। ९ ख. ग. नीवूं। १० ख. ग. अंगूर। ११ ख. ग. अचार। १२ ख. सावूं। ग. सावू। १३ ख. ग. सीरेसे। १४ ग. भांत भांत। १५ ख. सिपरणि। १६ ग. भांत भांत। १७ ख. पुडी। ग. पुरी। १८ ख. मेवेकी। ग. प्रतिमें नहीं है। १९ ख. ग. दोय। २० ख. ग. सवकोय। २१ ख. ग. जुजष्टल। २२ ख. ग. पत्रूंकी। २३ ख. ग. गोरसकी। २४ ख. ग. जीमैं। २५ ख. ग. परजाद। २६ ख. ग. सक्करसे। २७ ख. ग. विहै। २८ ख. ग. तरत-क्करकी। २९ ख. ग. विधि। ३० ख. ग. रसि। ३१ ख. ग. रांजेस्वरंकी। ३२ ख. ग. भोंजाई।

◈चिन्हित पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं।

३३ ग. कहीणैसं। ३४ ग. ना।

---

२०१. रोगांनी – स्निग्धतायुक्त, जो घी या तेलयुक्त हो। चक्खी – (?) मिठाई विशेष। अजरख – अद्रक। रताळूका – एक प्रकारके भूमिकंदका जिसका शाक बनाया जाता है। अंबु – कच्चा आम। अंगीर – अंगूर। कैरूंका – करील वृक्षके हरे और कच्चे फलका जिसका शाक बनाया जाता है। वादांमी – वादामके रंगकी। सावूनी – एक प्रकारकी मिठाई। सिखरणी – दही और चीनीका बनाया हुआ एक प्रकारका मीठा पदार्थ या शर्बत जिसमें केसर, कपूर तथा मेवे आदि डाले जाते हैं। जुजस्टळका सा – युधि-ष्ठिरके समान। ज्याग – यज्ञ। गौरसकी – दूधकी। उभेल – तरंग, हिलोर। रस आई – आनन्दयुक्त हुई। भूंजाई – भोजन। संखेप – संक्षेप।

जिस बखत सब लोगांनै[1] चळू किया[2] जिसकी जलधारा[3] जाई[4]। जिस[5] चळू[6] विच[7] अदेवाळ[8] राजूंका[9] मगज वहि जाइ[10]। तिस बखत स्त्री महाराजा पांन कपूर अरोगि[11] हुकम किया[12]। हुकमसैं पांन कपूर उमराव कविराजूंकूं दियो[13]। जिस बखत कविराजूं पांन कपूर लेकर[14] आसीस[15] करते हैं *जिस आसीसूंमें[16] चूंडराव[17] चरू सुकाळका विरद धरते हैं।* २०१

तिसका[18] कायव[19] दुहा[20] (सोरठा)

चाचर चरू सुकाळ, जग[21] 'अभमल' 'चूंडा'[22] जिहीं[23]।
खलक चरू[24] जळ खाळ, मठा[25] पहां वहिया[26] मगज ॥ २०२

दवावैत

जिस वखत स्त्री महाराज[27] सब लोककी[28] रुसनाईका[29] मुजरा लेकरि[30] राजमिंदरूं[31] पधारै[32]। आगू[33] वरणन[34] किया[35] तैसा[36]

---

१ लोगूंने। ग. लोगूने। २ ख. ग. कीया। ३ ख. जालधारा। ४ ख. ग. जाय। ५ ख. ग. तिस। ६ ख. चलूके वहालू। ग. जलूके वाहालूं। ७ ख. वीचि। ग. प्रतिमें नहीं है। ८ ग. देषाल। ९ ख. ग. राजूं रावूके। १० ख. ग. जाय। ११ ख. अरोग्य। ग. आरोग। १२ ख. कीया। १३ ग. दीया। १४ ग. लेकं। १५ ग. असीस। १६ ग. आसीसमैं। १७ ग. चौंडराव।

*...*रेखांकित पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं।

१८ ख. ग. जिसका। १९ ख. ग. कायव। २० ख. ग. दोहा। २१ ख. ग. जगि। २२ ख. ग. चौंडा। २३ ख. ग. जहीं। २४ ख. ग. चलू। २५ ख. जठा। २६ ख. ग. वहीया। २७ ख. माहाराज। २८ ख. ग. लोकका। २९ ख. रोस्ताईका। ग. रोस्नाई। ३० ख. लेकर। ३१ ग. राजमिंदरौ। ३२ ख. पधारे। ३३ ख. आगूं। ३४ ख. वर्णन। ग. वर्नन। ३५ ख. कीया। ३६ ग. जैसा।

---

२०१. अदेवाळ – नहीं देने वाले, कृपण। मगज – गर्व। चूंडराव – राव चूण्डा। चरू सुकाळका – राव चूंडाका विरुद था जिसने भूखी प्रजाको भोजन खिला कर यश प्राप्त किया था।

२०२. कायव – काव्य, कविता। चाचर – भाग्य, ललाट। अभमल – अभयसिंह। जिहीं – जैसे ही। खलक – संसार। खाळ – नाला। मठा – कृपण।

२०३. रुसनाईका – रोशनीका संध्योपरान्त। मुजरा – अभिवादन।

सुख विलास आणंद[1] धारै[2]। इस उजै[3] हरहमेस[4] उछाह कौतूहळका डंवर जगजीत विरदूंका जहूर दातारूंका[5] दातार। सूरां सूर जिस[6] देखेसै[7] सब हिंदुवांण[8] गरब धारै[9]। ऐसै[10] तपतेज[11] प्रतापसूं स्रीं महाराजा[12] 'अभमाल' गढ़ जोधांण राज करै। रीझैसै[13] तारै। खीजैसै[14] मारै। वंदगी[15] अरु[16] वैर दिलसै न विसारै। जिसका मयांनां[17] जे तूंनै दिल सुध वंदगी[18] कीवी जिनूंकू[19] निवाजस कर[20] वडे किये। राव 'इंद्रसिंघसै' वैर जिस पर दाव दिया[21]। सो वयर किस वजैसूं कहि दिखाया[22]। महाराज[23] जसराज[24] सुरगलोक[25] सिधाए[26]। 'अजमाल' बाल अवस्तामें[27] उतनकूं[28] आए। तिस वखत रावनै छळ द्रौह किया[29]। जोधांण अपणै[30] मुनसफमें[31] लिया[32]। सचतौ[33] जिणही[34] दिन जोधांणके उमरावांसै[35] पायो। पवर[36] कायम जैतगढ़[37] आरै[38] कीया। जिस वैरकी धक[39]

---

१ ख. आनंद। ग. आंनंद। २ ख. ग. धारे। ३ ख. वजेह। ग. वजह। ४ ख. हमेस। ग. हमेस। ५ ख. ग. प्रतियोंमें नहीं है। ६ ग. जिसकै। ७ ग. देपै। ८ ख. हींदवांण। ९ ख. ग. धरै। १० ख. अैसे। ११ ख. ग. तेज। १२ ख. माहाराजा। १३ ख. रीझै। १४ ग. षीजे। १५ ग. वंदीगी। १६ ख. ग. अर। १७ ख. मायनां। ग. मैयनां। १८ ख. ग. वंदगी। १९ ख. जिनोको। ग. जिनांको। २० ख. ग. सकरि। २१ ख. ग. दीया। २२ ख. ग. दिषाय। २३ ख. ग. माहाराज। २४ ग. जसवंत। २५ ख. ग. देवलोक। घ. अमरलोक। २६ ग. सिधाऐ। २७ ग. अवस्थामे। ग. अवस्तामै। २८ ग. उत्तनको। २९ ख. कीया। ३० ख. ग. अपणे। ३१ ख. मुनसपमै। ग. मुनसवमे। ३२ ग. लीया। ३३ ख. सच्चतो। ३४ ख. ग. जिसीही। ३५ ख. ऊमरांऊ। ग. उमरावांसे। ३६ ख. ग. पैवैर। ३७ ख. जैतैगढ़। ग. जेतैगढ़। ३८ ग. ओर। ३९ ख. ग. धप।

---

२०३. विरदूंका – विरुदका। जहूर – प्रकाश। हिंदुवांण – हिन्दुस्तान। रीझैसै – प्रसन्न होनेसे। खीजैसै – क्रुद्ध होनेसे। विसारै – विस्मरण करते हैं। मयांनां – अर्थ, मतलव। जे – अगर, यदि। वयर – वैर, शत्रुता। जसराज – महाराज यशवंतसिंह। अजमाल – महाराजा अजीतसिंह। अवस्तामें – आयुमें, अवस्थामें। उतनकूं – वतनको, जन्मभूमिको। मुनसफमें – मनसवमें (?)। धक – क्रोध।

स्री महाराजा[1] 'अजमाल'[2] नागदुरंगपर[3] दाव दिया[4]। रावइंद्रसींघ ऊपर[5] जडा रुद्रकासा[6] कोप किया[7]। हैदल पैदल रथ गजराज हुकमसै वांण आए[8]। जगूंके साज छत्तीस कारवां[खा]नूंके[9] हवालगीरूंनै[10] सब जंगूंका[11] सराजांम[12] हाजर किया[13]। नागदुरंगकी तरफ फरासूंनै[14] पेसखांनां खड़ा[15] किया[16]। जबर ठठरूंके ऊपर भयांणंख[17] नाळ अतिभार। किलकिला काळिका ज्वाळामुखीका अवतार। जलूंसै[18] यकी[19] यावलूंका चरचार। भैसाबाकरूंका[20] रुधर[21] चाढ़ै[22] मदकी धार। तेल सिंदूरसें[23] चरचि धमळूंके जूंट जोय। टल्लूंसूं[24] दोवड़े गजपीठ होय। तबल्लूंकी[25] घोर गजटिल्लूंसै हल्ली। चोळ धजाबोळ[26] मोहरूंसै[27] ऐसी[28] अनेक चल्ली[29]। सीसा सौरडेरूं अटालूंके भार[30]।

---

१ ख. ग. माहाराजा। २ ख. ग. अभमाल। ३ ख. नागदुरंम। ४ ख. दीया। ग. कीया। ५ ग. रावइंद्रसींघऊपर। ६ ख. इंद्रकासा। ग. रूद्रकासा। ७ ख. कीया। ८ ख. ग. वणवाए। ९ ख. स्कारषांनाके। ग. कारषांनौंकै। १० ग. हवालगीरांनै। ११ ख. ग. जगूंका। १२ ख. सरंजाम। ग. सरांजांम। १३ ख. ग. कीया। १४ ग. फरांसांनै। १५ ख. प्रतिमें यह शब्द नहीं है। १६ ख. कीया। १७ ख. भयानष। ग. भयाणष। १८ ख. जसूंसै। १९ ख. ग. धोय। २० ख. ग. भैंसूं। २१ ख. ग. रुधिर। २२ ख. चौढ़े। ग. चाढ़े। २३ ख. सिंदूरसै। २४ ख. टिलूंसू। ग. टिल्लूंकूं। २५ ख. ग. तवलूंकी। २६ ग. धजाचोल। २७ ग. मोहरूंसै। २८ ग. अैसा। २९ ग. चली। ३० ख. सोरडेकूं। ग. सोरडेरू।

---

२०३. नागदुरंगपर – नागौरके किले पर। दाव – हक, अधिकार। रुद्रकासा – महादेवकासा। हैदल – घुड़सवार, घुड़सेना। कारवां[खा]नूंके – महकमोंके। हवालगीरूंनै – (?)। जंगूंका – युद्धका। सराजांम – सामान। पेसखांनां – वह खेमा जो अगले पड़ाव पर पहलेसे लगा दिया जाय ताकि दौरेके पदाधिकारियोंको कष्ट न हो, पेशखेमा। ठठरूंके – अस्त्र-शस्त्र, तोपादिको ले जानेकी गाड़ीके। भयांणंख – भयानक। नाळ – तोप। किलकिला – एक प्रकारकी तोप। चरचि – पूजा कर के। धमळूंके – बैलके। जूंट – दो, युग, जोड़ा। टल्लूंसूं – आघातसे। दोवड़े – दो तहके। चोळ – लाल। सौरडेरूं – बारूदका गोदाम। अटाळूंके – विविध सामानके (?)।

ऊंटांरौ वरणण

कठठे हठी[1] पाकेटूकी कतार। सो कैसे वगलूंके *उरळे गिर सिखरूंसे[2] थूंभा[3]। जूवळूंके[4] घाट देवळूंके थांभा[5] *। अजगरके[6] कंध टांमकसे[7] सीस। ◈चखूंके[8] चोळग सैल[9] रीस। नौहत्थी[10] भीक[11] भागूंड भल्लेस◈। कड़े[12] छंट चसळकते[13] नेस। गाजतै[14] चलै[15] राकसूंका दरसाव। धमणसे धोम फींफरूंका फुलाव[16]। जिस वखत छत्तीस वंस राजकुळ उमराव सिलह ❝आंवधूंसै कड़ाजूड़ होयके[17] पखरेतूं[18] चढ़ि आए[19] दळूंका पारंभ❞ समंदसा दरसाए। जिस वखत स्री महाराज[20] महामायाका[21] आराध करि ऊंच पौसाक[22] धरि वीर आवध धारि[23] पौरससै[24] पूर अंदरसै वाहिर पधारे। ग्रीखमसे[25] भांणकासा रूप पटाभर[26] ज्यौं पाव धारे। हजारूंकी आसीस[27] हजारूंकी

---

१ ख. ग. हठीघघकी।

*···*चिन्हित पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं।

२ ग. सिघरसे। ३ ग. थुभा। ४ ग. जवळूंकै। ५ ग. थंभा। ६ ख. ग. अजगरसे। ७ ख. ग. टामंक। ◈···◈रेखांकित पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है।

८ ग. चप्पूके। ९ ग. सेल। १० ग. नौहथी। ११ ग. भोक। १२ ख. मकडे। ग. मकडै। १३ ख. चसळक्वते। १४ ग. गाजते। १५ ख. चल्ले। १६ ख. फुल्लाव। ग. पुलाव। ❝···❞चिन्हित पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं हैं।

१७ ग. होयकरि। १८ ग. पघरेत। १९ ग. आऐ। २० ख. ग. माहाराजा। २१ ख. ग. माहामायाका। २२ ग. पौसाष। २३ ग. घरि। २४ ख. पौरसमै। २५ ख. ग्रीखमके। २६ ख. पट्टाभर। २७ ख. ग. असीस।

---

२०३. पाकेटूकी – ऊंटकी। वगलूंके – वगलके। उरळे – चौड़े। थूंभा – कोहान। जवळूंके – पहाड़के, पर्वतके। घाट – रचना, वनावट। देवळूंके – देवालयके। थांभा – स्तंभ। टांमकसे – नगाड़ेसे। चखूंके – चक्षुके, नेत्रके। चोळग – लाल, रक्तवर्ण। नौहत्थी – नौ हाथ लम्बी (?)। भीक – ऊंटके बैठनेका स्थान या ढंग। भागूंड – फेन। भल्लेस – (?)। कड़े छंट – ऊंट प्राय: मस्तीमें पेशाब करते समय अपनी पूंछको वार-बार ऊंचा-नीचा भपटता रहता है, इस क्रियाको कड़े छंट कहते हैं। चसळकते नेस – ऊंट मस्तीमें प्राय: मूंहसे दांतोंको टकराता हुआ ध्वनि करता है। धमणसे – धौंकनीसे। फींफरूंका – फेंफड़ेका। फुलाव – फूलना क्रिया। सिलह – कवच। आंवधूंसै – अस्त्र-शस्त्रोंसे। कड़ाजूड़ – सुसज्जित। पखरेतूं – घोड़ों। महामायाका – देवीका, दुर्गाका। आराध – प्रार्थना। ऊंच – ऊंची श्रेष्ठ। पौरससै – पौरुषसे, वलसे। भांणकासा – सूर्यकासा। पटाभर – हाथी।

सलांम[1] हजारूंकी निगैदासत[2] हजारूंपर इतमांस। वींझाजळ[3] रूप गयंद चढ़ि मेघाडंबर विराजे[4]। नौवतूंके[5] निहाव वीरारस वाजे[6]। जिस बखत जळावोळ हालोहळसैं[7] फौज हल्ली। नाळूंके[8] निहाव सेती धरती थरसली[9]।

नागौर पर हल्लो

गजराजूंकी हळवळ[10]। वाजराजूंकी[11] कळहळ। नाळूंका निहाव। साबळूंका सिळाव। त्रंबागळूंके[12] डाके। जसोल्लूंके[13] हाके। भूलाळूंकी भळहळ। पैदलूंकी हळवळ। ढ़ालूंकी ढ़ळक। चपड़ास[14] फूलूंकी भळक। महीमुछट[15]* रजडंबरका घटाटोप। तिमरका चढ़ाव। भाद्रवैकी[16] अमावस घटाका वणाव। अैसे[17] विमरीर दळूँसै[18] गढ़ नागपुर[19] घेरे। तोपूँका[20] जंजीरा चौतरफ फेरे। दोऊ तरफ[21] दगी[22] तोपू[23] अताळ। झालूँका भळहळ गोळूंका वरसाळ। धोमूंका

१ ग. सिलांम। २ ख. निगैदास्त। ३ ख. वींझाझल। ग. वींझाझळ। ४ ग. विराजैं। ५ ग. नौवतांके। ६ ग. वाझे। ७ ख. हीलोहलसे। ८ ग. नालौंकै। ९ ख. थर-सल्ली। ग. थरहली। १० ग. हलबल। ११ ख. वाजराकूंकी। १२ ग. त्रंबागलौंके। १३ ख. जसौलूंके। ग. जसौलौंके। १४ ख. ग. चपरास। १५ ख. महीमुरात। ग. माहीमुरात।

*यहांसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पद्यांश मिला है—

'बाकाडंबर नीसांणूंका फरहर जलेबदारूंकी झपट। कोतळू की आछट।'

१६ ख. ग. भाद्रवेकी। १७ ग. अैसै। १८ ग. दलांसै। १९ ग. नागोर। २० ख. तोवूं। २१ ख. ग. तरफसें। २२ ग. लगी। २३ ग. तोप।

२०३. निगैदासत – संरक्षा, हिफाजत, निगरानी। इतमांस – बन्दोबस्त, प्रबन्ध। वींझाजळ – विन्ध्याचल। मेघाडंबर – छत्र विशेष। निहाव – ध्वनि। जळावोळ – जलपूर्ण। हालोहळसैं – समुद्रसे, सागरसे। हल्ली – गतिमान हुई। नाळूंके – तोपोंके, बन्दूकोंके। थरसली – कम्पायमान हुई। हळवळ – आवाज, हल्ला। वाजराजूंकी – घोड़ोंकी। कळहळ – हिनहिनाहटकी ध्वनि। साबळूंका – भालोंका। सिळाव – चमक, दमक। त्रंबागळूंके – नगाड़ोंके। जसोल्लूंके – यशगायकके, यशका वर्णन करने वालेके। हाके – आवाज। भूलाळूंकी – पाखर, भूल। भळहळ – चमक। हळवळ – कोलाहल। फूलूंकी – फुलड़ीकी। भळक – चमक, दमक। रजडंबरका – धूलि समूहका। तिमरका – अन्धेरेका। वणाव – बनावट। विमरीर – वीर, बहादुर। नागपुर – नागौर। जंजीरा – आवेष्टन, घेरा। चौतरफ – चारों ओर। अताळ – (बेहद ?)। झालूंका – आगकी लपटोंका। भळहळ – चमक, दमक। वरसाळ – वर्षा। धोमूंका – धुंओंका।

अंधार। धमाकूंका धीठ। ओळूंकी[1] असण ज्यूं[2] गोळूंकी[3] रीठ। ज्वाळा तै जम्मीके[4] थरहरते थाळ। कमठका कंध सेसका कपाळ। प्रळैकाळका पावस आतसूंका उक[5] भुरजाळ। सिखराळ दुरंगूंके[6] भड़ भिड़ज भूक काळ। चक्र मोरचूंका दवाव[7] नजीक[8] लिया[9]। हाकूंसे धूजे[10] रावके[11] हिया[12] ॥ २०३

कवित्त– निडर भूप नागौर[13], समर झोके दळ सव्बळ[14]।
क्रोध धूप कळकळे[15], तूप सींचे किर[16] मंगळ।
इंद्रसिंघ औद्राव[17], ग्रांम[18] गोळां[19] विखमी गति।
राव पाव छाडि गौ, जीव साटै दे ईजति[20]।
नौवत[21] वजाइ[22] जीतौ[23] नरिंद, लाखां भाखां जस लभै।
'गजबंध' हरै नागौर गढ़, एण[24] भांत[25] लीधौ[26] 'अभै' ॥ २०४

---

१ ख. ग. औळूंकी। २ ख. ग. ज्यौं। ३ ग. गोलौंकी। ४ ख. ग. तैजमीके। ५ ख. ऊत। क. ऊक। ६ ख. ग. दुरंगूंके। ७ ख. ग. दवाव। ८ ख. ग. नजदीक। ९ ख. लीया। १० ग. धूजै। ११ ख. ग. रावका। १२ ख. हाया। ग. हीया। १३ ख. ग. नागोर। १४ ख. सच्चल। ग. सावल। १५ ग. कळकळै। १६ ख. ग. किरि। १७ ग. ओद्राव। १८ ख. ग्राव। १९ ग. गौळा। २० ख. ईझ्झति। २१ ख. नौवति। ग. नौवति। २२ ख. ग. वजाय। २३ ग. जीतो। २४ ग. ऐण। २५ ख. भांति। २६ ग. लीधो।

---

२०३. धमाकूंका धीठ – एक प्रकारकी वजनी वड़ी वन्दूककी, आवाजका। (?)। असण – (अशनि, वज्र?)। रीठ – प्रहार। थरहरते – कम्पायमान। थाळ – स्याल, वड़ी थाली। कपाळ – मस्तक। प्रळैकाळका – प्रलयकालका, संहारके समयका। पावस – वर्षा। आतसूंका – (?)। ऊक – धारा, प्रवाह। भुरजाळ – गढ़, किला। सिखराळ – शिखर वाला। दुरंगूंके – दुर्गोंके, गढ़ोंके। भड़ – योद्धा। भिड़ज – घोड़ा। भूक – चूर, चूरा। काळ – यमराज। चक्र – सेना। नजीक – निकट। हाकूंसे – हल्लेसे, शोरसे। रावके – राव इन्द्रसिंहके।

२०४. समर – युद्ध। झोके – झोंक दिये। दळ – सेना। सब्बळ – शक्तिशाली। धूप – तपत। कळकळे – खोलता है, गर्म होता है। तूप – घी, घृत। किर – मानों। मंगळ – अग्नि। औद्राव – भय, डर। ग्रांम – समूह। विखमी – भयंकर। पाव – पैर, चरण। साटै – एवजमें। गजबंध – महाराजा गजसिंह। एण – इस। अभै – अभयसिंह।

छंद दंग

जीत[1] दळ सभि हले राजा, वाजतां[2] रिणजीत[3] वाजा।
राव 'ईंदौ'[4] मांण रोळे[5], भीम गयंदां हूंत भेळे[6] ॥ २०५

दावागर[7] कर तास दावा, उण समैं[8] मेड़तै आवा।
जोध जिससै सेर.... जूटा[9], लोक मारा[10] रखत लूटा[11] ॥ २०६

भगा[12] पौरस मांण भग्गौ[13], अड़ सगर उमराव अग्गौ[14]।
ताप सुणि म्रग[15] जेम तासा, वसे खळ गिर-भिंगर वासा ॥ २०७

थटे आयौ[16] जैत[17] थंडे, मेड़तै मुक्कांम[18] मंडे[19]।
चुरस पातां कीध चौजां, मेड़तै गजगांम मौजां ॥ २०८

जस विरद सुणि दुरंग जैरां, नजर भेजी 'वीकनैरां'।
एह[20] सुणि वीकांण[21] अक्खे[22], रावळां बह[23] निजर रक्खे[24] ॥ २०९

---

१ ग. जीति। २ ग. वाजंतां। ३ ख. रंणजीत। ग. रणजीति। ४ ख. इदौ। ग. इंद्रो। ५ क. रेलं। ग. रेळे। ६ क. भेलं। ग. भेळे। ७ ख. दाउंगर। ग. दाऊगर। ८ ख. ग. समैं। ९ ख. जुट्टा। ग. जुटा। १० ग. मारे। ११ ख. लुट्टा। १२ ख. भागा। १३ ख. भग्गै। ग. भगै। १४ ख. ग. अग्गै। १५ ख. ग. मृग। १६ ग. आयो। १७ ग. जेत। १८ ख. मुक्वांम। ग. मुकाम। १९ ख. ग. मंडे। २० ख. येह। २१ ख. ग. जेसांण। २२ ख. ग. अख्पे। २३ ख. वहौ। ग. बोहो। २४ ख. ग. रख्पे।

---

२०५. राव ईंदौ – नागौरका अधिपति राव इन्द्रसिंह। मांण – गर्व, मान। रोळे – गमा कर, नष्ट कर। भीम – पांडुपुत्र भीम। गयंदां हूंत – हाथियों सहित। भेळे – शामिल कर के।

२०६. दावागर – शत्रु। जूटा – भिड़े। रखत – धन, द्रव्य।

२०७. भगा – नाश हो गया। भग्गौ – भाग गया, मिट गया। अग्गौ – अगाड़ी। ताप – आतंक। तासा – (त्रास, डर ?)। गिर भिंगर – गिरिकुंज, पर्वतोंका वन। वासा – निवास-स्थान।

२०८. थटे – वैभवयुक्त हो कर। जैत – विजय। थंडे – प्राप्त कर। चुरस – श्रेष्ठ। पातां – कवियों। चौजां – हर्ष, प्रसन्नता। मौजां – पुरस्कार।

२०९. नजर – भेंट। वीकनैरां – वीकानेरके। एह – यह। वीकांण – वीकानेर। अक्खे – कहा।

सुणे रूपा[1] दुरां[2] सत्थां[3], अधक नजरां कीध अत्थां[4]।
सुणि फतै[5] किय[6] निजर[7] साजा, रचै हित 'जैसाह' राजा ॥ २१०
थाटपति मेवाड़ थांणै, रचे[8] निजरां[9] दीध 'रांणै'।
वापहूं[10] चवगुणी[11] बाजी, गुमर धरियौ[12] वियै[13] 'गाजी' ॥ २११
विढ़ण पहल अयाक वागा, लखे तप सह[14] पाय लागा।
जोम अचड़ां[15] जगत जांणी, एक हुकमां भोमि आंणी ॥ २१२
लड़े इम नागौर लीधौ[16], दुझल बँधवनू[17] पटौ[18] दीधौ।

जैसळमेररा विवाहरौ वरणण

सोईज व्रद[19] महाराज[20] साजा, रहे सेवग राव राजा ॥ २१३
सझे अचड़ां[21] दळ सवायौ, एण विध[22] 'जेसांण'[23] आयौ।
सझे[24] तोरण चित्र साजा, जैत आगम महाराजा[25] ॥ २१४

---

१ ख. ग. रूप। २ ख. ग. दुरंग। ३ ग. सथां। ४ ख. ग. अथां। ५ ख. फतै। ६ ख. ग. कीय। ७ ख. ग. नजर। ८ ग. रचै। ९ ख. ग. नजरां। १० ग. हौं। ११ ख. चवगणी। १२ ख. ग. धरीयौ। १३ ख. वीयै। ग. वायै। १४ ख. ग. सौहौं। १५ ख. अचडा। ग. अचंडां। १६ ग. लीधो। १७ ख. तथा ग. प्रतियोंमें नहीं है। १८ ख. ग. पटै। १९ ख. ग. वृद। २० ख. ग. माहाराज। २१ ख. अचलां। २२ ख. ग. विधि। २३ ख. जैसांण। २४ ग. सजे। २५ ख. ग. माहाराजा।

---

२१०. रूपा – रूपावत शाखाके राठौड़। नजरां – भेंटें। अत्थां – अर्थ, धन। जैसाह – सवाई राजा जयसिंह।

२११. थाटपति – वैभवशाली, सेनापति। थांणै – स्थान, चौकी। दीध – दी। वापहूं – पितासे। चवगुणी – चौगुणी। बाजी – मान, विजय (?)। गुमर – गर्व। वियै – दूसरे, द्वितीय। गाजी – महाराजा गजसिंह।

२१२. विढ़ण – युद्ध। अयाक – (?)। लखे – देख कर। तप – ओज, तेज। पाय – चरण, पैर। जोम – जोश, शक्ति। अचड़ां – महत्त्वपूर्ण कार्यों। भोमि – भूमि, धरा। आंणी – ले आया।

२१३. लीधौ – लिया। दुझल – वीर। पटौ – जागीर। दीधौ – दिया। सोईज – वही।

२१४. सवायौ – अधिक, विशेष। जेसांण – जयसलमेर।

उछ्छब[1] मिळ[2] त्रिय[3] जूथ[4] आए[5], गांन मंगळचार गाए।
अग्र[6] कांम[7] कळस्स[8] आंणे[9], पहव[10] वंदण कीध पांणे ॥ २१५

द्रव्य[11] रूप भराइ दीधौ[12], कमंध तोरण वंदण[13] कीधौ।
जोइयौ[14] पह्[15] नगर जेहौ[16], अगै वरणण[17] कीध एहौ[18] ॥ २१६

दळां[19] गहमह कीध[20] डंबर[21], चौसरा सिर[22] हुवा[23] चंम्मर।
गाजतां[24] गजमेघ गाजा, वाजतां मंगळीक वाजा ॥ २१७

एम[25] गढ़[26] निज प्रौळ[27] आवै[28], गांन सहचर[29] झूल गावै[30]।
कुंभ सनमुख निजर[31] कीधौ, लखे छत्रपति वांद[32] लीधौ ॥ २१८

धरे तारक द्रव्य[33] धारां, वँदे[34] तोरण जेण वारां।
ऊतरे[35] गजहूंत[36] ऽयारां[37], जरी पगमँड[38] पड़ि[39] जियारां ॥ २१९

---

१ ख. उछ्व। ग. उछ्वा। २ ख. ग. मिली। ३ ख. त्रीय। ४ ख. ग. जूंथ। ५ ग. आऐ। ६ ख. अग्रि। ७ ख. ग. कांमणि। ८ ख. ग. कळस। ९ ख. आणे। ग. आंणे। १० ख. ग. पौहोव। ११ ख. द्रव्व। १२ ख. दीधो। १३ ख. वदण। ग. वंदन। १४ ख. जोवीयो। ग. जोवियौ। १५ ख. ग. पौहौ। १६ ग. जेहो। १७ ख. वणण। ग. वरणण। १८ ग. ऐहो। १९ ख. दलं। २० ख. कीयां। ग. कीधां। २१ ख. डंम्मर। २२ ख. सिरि। २३ ख. हुता। ग. हूतां। २४ ख. ग्गजतां। २५ ग. ऐम। २६ ख. ग. निज गढ़। २७ ख. ग. पौळि। २८ ख. ग. आऐ। २९ ग. सहचरि। ३० ख. गाए। ग. गाऐ। ३१ ख. ग. नजर। ३२ ख. वांदि। ३३ ख. द्रव्व। ग. द्रव्य। ३४ ग. वद। ३५ ग. ऊरितरै। ३६ ख. गजहूं। ३७ ख. नियारां। ग. यांरां। ३८ ख. ग. पगमँडि। ३९ ख. ग. मंडि।

---

२१५. त्रिय – स्त्रिएँ। जूथ – समूह। मंगळचार – मांगलिक। कांम – कामिनी। पहव – राजा। वंदण – अभिवादन। पांणे – हाथसे।

२१६. जोइयौ – देखा। अगै – पहिले। एहौ – ऐसा।

२१७. गहमह – भीड़, समूह। डंबर – उत्सव, हर्ष। चौसरा – चारों ओर। चंम्मर – चंवर। मंगळीक – मांगलिक।

२१८. प्रौळ – प्रतोली, तोरणद्वार। सहचर – सखिएँ, सहेलिएँ। झूल – समूह। कुंभ – कलश। लखे – देख कर। वांद – अभिवादन कर के।

२१९. तारक – चांदी, मोती ?। जेण – जिस। वारां – समयमें। जरी – चांदी-सोनेके तार, जिन पर सुनहला मुलम्मा हो। पगमँड – आदरके लिए किसी महात्मा या राजा महाराजाके मार्गमें पैर रखनेके लिये बिछाया हुआ कपड़ा।

विछायत समियांन[1] वणिया[2], तई[3] जरकसि[4] हीर तणिया[5]।
सिघ आसण छत्र सोहै, महा जगमग[6] हंस मोहै ॥ २२०

उरस छिवतौ[7] भूप आए, प्रगट वह[8] स्रंगार[9] पाए।
चम्मरां[10] ढुळतेस[11] चारे[12], तखत बैठौ छत्रधारे[13] ॥ २२१

भड़ां मँत्रियां[14] जूथ भारा, सजै[15] निज[16] दरबार[17] सारा।
भलां पातां जूथ[18] भेळा, वखांणै[19] पह[20] जेण वेळा ॥ २२२

आज 'अभमल' भूप एहौ[21], जुधां जीपण 'पंग' जेहौ।
सांसणां गयंदां समापै, कुरंद[22] पातांतणा[23] कापै[24] ॥ २२३

जोवतां हिंदवांण जोपै, अवर भूप न जोड़ ओपै।
दांन खगरी अचड़ दहुंवै, चढ़ी कीरत[25] चकां चहुंवै ॥ २२४

---

१ ग. सामियान। २ ख. वणियां। ३ ग. तेइ। ४ ख. ग. जरकस। ५ ख. तणीयां। ६ ग. गजमग। ७ ख. छविती। ग. छवितो। ८ ख. ग. चोक। ९ ख. ग. श्रृंगार। १० ख. ग. चंम्मरे। ११ ग. ढुळे। १२ ग. सीस चारे। १३ ग. छत्रधार। १४ ख. ग. मंत्रीयां। १५ ख. सभ्है। ग. सभ्है। १६ ख. नजरां। ग. नझरां। १७ ख. दरव। ग. दरव। १८ ख. ग. भूल। १९ ख. ग. वपांणे। २० ख. पौहो। ग. पोहो। २१ ग. ऐहो। २२ ख. ऊरचंद। ग. कुरचंद। २३ ख. तणां। ग. तणो। २४ ग. काप्पै। २५ ख. ग. कीरति।

---

२२०. समियांन – तंबू, खेमा। जरकसि – सोने-चांदीके तारोंका काम। तणिया – तने। सिघ आसण – सिंहासन। जगमग – चमक-दमक। हंस – मन, आत्मा।

२२१. उरस – आसमान। छिवतौ – स्पर्श करता हुआ। चम्मरां ढुळतेस – चंवर डोलाते समय।

२२२. जूथ – यूथ, समूह। भारा – बहुत। पातां – कवियों। वखांणै – प्रशंसा करते हैं। वेळा – समय।

२२३. एहौ – ऐसा। जीपण – जीतनेके लिये, जीतने वाला। पंग – राजा जयचंद। जेहौ – जैसा। समापै – देता है। कुरंद – निर्धनता, कंगाली। कापै – मिटाता है, दूर करता है, काटता है।

जोवतां – देखने पर, देखते ही। जोपै – जोशमें आता है। जोड़ – समानता। [illegible] – शोभा देते हैं। दहुंवै – दोनों। चकां – दिशाऐं। चहुंवै – चारों।

जावसी[1] नह जुगां जातां[2], वात रहसी वीस वातां।
बहसि[3] जोड़[4] न होय बीजै[5], कोड़[6] जुग लग राज कीजै ॥ २२५
सुणे[7] वयण[8] इम सकाजा, रीझ बगसै[9] महाराजा[10]।
आरती द्विजराज[11] आंणै[12], प्रीत उच्छब[13] कीध पांणै[14] ॥ २२६
'अभौ' जयचँद जेम आजा[15], राजमिंदर[16] वसै[17] राजा।
पतिव्रता बह[18] उछब पाए[19], अनम गढ़ तदि[20] जीति[21] आए॥ २२७
नवल रंग उछाह नेहा, जुगति रति रतिराज जेहा।
गुमर धरियां[22] झिलै गोखां, जोधपुर[23] गढ़ करै जोखां[24] ॥ २२८
अधिक राजस छक अथाहै[25], मुणै जिहवा[26] बैंत माहै[27]।
.... ॥ २२९

दूहा[28]—दवावैंत[29] मझि दाखियौ[30], इसड़ौ राज[31] अपाल।
जोधांणै जोधांण-पति, मांणै धर 'अभमाल' ॥ २३०

---

१ ख. ग. जावसे। २ ग. जांतां। ३ ख. वहसि। ग. वसी। ४ ग. होड़। ५ ग. वीजौ। ६ ग. क्रोडि। ७ ग. सुणै। ८ ख. वयणा। ग. वयणां। ९ ख. वगसे। १० ख. माहाराजा। ११ ख. ग. द्विजराज। १२ ख. ग. आणे। १३ ख. ग. उछव। १४ ख. पाणे। ग. पांणे। १५ ग. अजा। १६ ख. राजमिंदरा। ग. राजमिंदरां। १७ ख. ग. वसे। १८ ख. वहो। ग. वहु। १९ ख. आए। ग. पाये। २० ख. ग. पति। २१ ख. ग. जीत। २२ ख. धरीयां। २३ ख. जोधपुरि। २४ ग. जोषां। २५ ख. अथाहे। २६ ख. ग. जिमह्वा। २७ ख. ग. माहे। २८ ख. दोहा। ग. दोहो। २९ ख. ग. दवावैत। ३० ख. दापीयौ। ३१ ख. राजस।

---

२२५. जुगां – युगों। वात···वीस वातां – निश्चय, अटल। वहसि – शोभा देगा। बीजै – दूसरे। लग – पर्यन्त।

२२६. रीझ – पुरस्कार, इनाम। बगसै – प्रदान करते हैं। द्विजराज – ब्राह्मण। पांणै – हाथोंसे।

२२७. आजा – आज। वसै – निवास करता है। अनम – नहीं झुकने वाले।

२२८. नवल – नवीन, नया। रंग – आनन्द। उछाह – उत्साह। नेहा – स्नेह। रति – कामदेवकी पत्नी। रतिराज – कामदेव। गुमर – गर्व। झिलै – शोभायमान हो रहा है, कांतियुक्त हो रहा है। जोखां – आनन्द, मौज।

२३०. मझि – में। दाखियौ – कहा, वर्णन किया। इसड़ौ – ऐसा। अपाल – बेरोकटोक, निःशंक। मांणै – उपभोग करता है।

इम खट रित करि उछ्व अति, दिल आणंद दुझाल ।
दरसण काज दिलेसरां[1], मेले दळ 'अभमाल' ॥ २३१

महाराजारो दिल्ली प्रस्थांन

मिळिया दळ जोधांणमझि, देखे भूप दुवाह[2] ।
डेरा दिल्ली दिस[3] दिया[4], सुभ मुहरत[5] 'अभसाह' ॥ २३२

कूच[6] नगारा वज्जिया[7], गिर गज्जिया[8] गहीर ।
समँद उलट्ट[9] जिम सजळ[10], वट्टे[11] लगे वहीर[12] ॥ २३३

अठठ[13] अटाळां[14] भार अति, कठठे जूंग कतार ।
तोप कठट्ठे[15] गज टलां[16], जूटां[17] धमळ जियार ॥ २३४

वह[18] जूटां[19] कठठेस वह[20], अनि[21] आराव[22] अपार ।
पमँग गजां भड़[23] पड़तलां, वणि हिलोळ विसतार ॥ २३५

---

१ ख. ग. दिलेस्वरां । २ ख. ग. दुवाह । ३ ख. दिसि । ४ ख. दीया । ५ ख. मोहीरत । ग. मोहरत । ६ ख. कूंच । ७ ख. वज्जीया । ग. वाजिया । ८ ख. गज्जीया । ग. गंजीया । ९ ख. उलटां । ग. उलट्टां । १० ख. ग. सुजळ । ११ ख. वट्टां । ग. वाटां । १२ ग. वहीर । १३ ख. अटठ । १४ क. अताळां । ग. अटालो । १५ ख. ग. कठटै । १६ ख. ग. टिलां । १७ क. जूयां । १८ ख. वही । ग. वोहो । १९ ग. भूटां । २० ख. वहो । ग. वोहो । २१ ख. ग. अति । २२ ख. आरवां । ग. आरवा । २३ ख. ग. भर ।

---

२३१. खट रित – छः ऋतुएँ । दुझाल – वीर, योद्धा । दिलेसरां – वादशाहके । दळ – पत्र चिट्ठी । अभमाल – अभयसिंह ।

२३२. दुवाह – वीर, योद्धा । अभसाह – अभयसिंह ।

२३३. कूच – प्रस्थान । वज्जिया – ध्वनित हुए । गिर – पर्वत । गज्जिया – गर्जित हुए, ध्वनित हुए । गहीर – गंभीर । वट्ट – वाट, मार्ग । वहीर – प्रस्थान ।

२३४. अठठ – अटूट, अपार (?) । अटाळां – सामान । कठठे – कठठकी ध्वनि करते चलना । जूंग – ऊँट । कठट्ठे – वोझ आदिके कारण शकटादि ध्वनि करते चले । टलां – टक्कर । जूटां – दो, युग्म । धमळ – वैल । जियार – जव ।

२३५. वह – वहुत । जूटां – जुतने पर । कठठेस – ध्वनि जो भारसे लदे शकटादिके चलने पर होती है । अनि – अन्य । आराव – तोप । पमंग – घोड़ा । भड़ – योद्धा । पड़तलां = भड़पडतलां – योद्धाओं के परतले जिनमें तलवारें लटकाई जाती थीं । हिलोळ – समुद्र ।

सौधां खांनां[1] वेल सजि[2], वटां[3] कहार वहाय ।
कावड़[4] सरवण धारि कंध, जांणै[5] तीरथ जाय ॥ २३६

भळहळ साजां गज भिड़ज, मफा[6] इका सुखपाल ।
घोड़-वहल खासा घणा, दरगह मुहर[7] दुझाल ॥ २३७

करि[8] तयार हाजर[9] किया[10], औधांदारां आय ।
साज[11] जरकसी सोवना[12], विध[13] विध नौख वणाय ॥ २३८

करि पौसाक[14] ससत्र[15] कसि, साजां[16] तुरंग[17] सिंगार[18] ।
इम चढ़ि चढ़ि भड़ आविया[19], दळ बह[20] राजदुवार[21] ॥ २३९

आतस झळ[22] पैदल[23] अधिक, बहल खासबरदार ।
दुझल नगारै दूसरै, आया दळ अणपार ॥ २४०

---

१ ख. वानां । २ ख. ग. सझि । ३ ग. वाटे । ४ ख. ग. कावडि । ५ ख. ग. जांणे । ६ क. पफा । ७ ख. मोहोर । ग. मोहोरि । ८ ग. कर । ९ ख. हरवर । १० ख. कीया । ११ ख. सा । १२ ख. सोवतां । १३ ख. विधि विधि । १४ ख. पौसाकां । ग. पौसाषां । १५ ख. ग. सस्त्र । १६ ख. जासां । ग. साजा । १७ ग. तुरंगि । १८ ग. सिंगारि । १९ ख. आवीया । २० ख. वहौ । ग. वोहौ । २१ ग. राजदवार । २२ ख. फळ । २३ ख. फैल ।

---

२३६. सौधां खांनां – राजप्रासाद, अन्तःपुर । वेल सजि – सरदारोंके पर्दानशीन जनानाकी सवारी विशेष जो बैलों द्वारा वहन की जाती है । वटां – मार्ग । कहार – पालकी आदिको उठा कर चलने वाला । कावड़ – बोझा ढोनेके लिये तराजूके आकारका एक ढांचा, कांवर । सरवण – श्रवणकुमार । जांणै – मानों ।

२३७. भळहळ – देदीप्यमान । साजां – घोड़े, ऊँट आदिके चारजामेके उपकरण । भिड़ज – घोड़ा । मफा – एक प्रकारकी सवारी । इका – इक्का । घोड़ वहल – घोड़ोंसे खींची जाने वाली गाड़ी विशेष । खासा – राजा या बादशाहकी सवारीका घोड़ा या हाथी । दरगह – दरबार । मुहर – अगाड़ी । दुझाल – वीर, योद्धा ।

२३८. औधांदारां – पदाधिकारी । सोवना – सोनेका । नौख – बढ़िया, श्रेष्ठ ।

२३९. कसि – धारण कर के, बाँध कर के । तुरंग – घोड़ा । सिंगार – सजावट कर के । दळ – सेना ।

२४०. आतस झळ – तोप । बहल – शकट या रथ विशेष । खास बरदार – वह नौकर जो बन्दूक या बल्लम ले कर मालिकके आगे चलता हो । अणपार – असीम, अपार ।

तखि[1] भूलै[2] जरतारियां[3], कूंची सोव्रन कांम ।
तंग चहूं[4] रेसम तणा, जंग किलंगी जांम ॥ २४१
मौहरी[5] डोरी रेसमी, नौखी चँदण नकेल ।
रूपाळक फण नाग रंग, बालक जुंग[6] बकेल ॥ २४२
पाव वड़ीं जोजन परा, जिके सहज मझ[7] जाय ।
कसि मलूक गदरा किया, इसड़ा हाजर ग्राय ॥ २४३
सकति पूजि[8] 'ग्रभमल' सुपह, पहरि ऊंच पौसाक ।
करि दधबँध[9] ग्रावध कसे, मलपे छक मुसताक ॥ २४४
हाल कलोहळ वह[10] हुतां, मुजरा छक मैंमंत ।
तांम नगारै[11] तीसरै, गज[12] चढ़ियौ गहतंत ॥ २४५
चौसर सिर[13] हूतां[14] चमर, दळ[15] सझि हले दुझाल ।
मिळण 'साह महमंद'हूं, महाराजा[16] 'ग्रभमाल' ॥ २४६

---

१ ख. ग. तपी । २ ख. ग. भूल । ३ ख. जरतारीयां । ४ ख. ग. चहुवै । ५ ख. मौहौरी । ग. मोहौरी । ६ ख. ग. जूंग । ७ ख. ग. मझि । ८ ग. पूज । ९ ख. दधिवंध । ग. दधिवद । १० ख. वौहौ । ग. वौहौ । ११ ख. तगारै । १२ ख. गजि । १३ ख. सिरि । १४ ग. हुतां । १५ ख. दलि । १६ ख. माहाराजा ।

२४१. तखि – ऊंटके चारजामेके नीचे लगाई जाने वाली गद्दी विशेष । भूलै – झूल ऊंट, घोड़ा, बैल ग्रादिकी पीठ पर डालनेका कपड़ेका बना उपकरण । जरतारियां – जिसमें सोने-चांदीके तारोंका काम हो । कूंची – ऊंटका चारजामा । सोव्रन – सुवर्णका, स्वर्णिम । तंग – ऊंट या घोड़ेकी जीन कसनेका पट्टा । जंग – जंगी, बड़ी (?) । किलंगी – पक्षियों के पंखों या चमकदार जरतारों से बना शिरका ग्राभूषण विशेष । जांम – (जाम ?) ।

२४२. मौहरी – ऊंटको नाकके साथ बांधनेकी रस्सी विशेष । नौखी – उत्तम, बढ़िया । नकेल – ऊंटके नाकमें डालनेका काष्ठ या धातुका बना उपकरण विशेष । रूपाळक – चांदीके, रोप्यके । जुंग – ऊंट । वकेल – मस्त ।

२४३. सहज – ग्रासानीसे । मझ – में । मलूक – सुंदर । इसड़ा – ऐसा ।

२४४. सकति – शक्ति, देवी । ग्रभमल – महाराजा ग्रभयसिंह । ऊंच – श्रेष्ठ, उत्तम । दधबंध – (?) । ग्रावध – ग्रायुध । मलपे – (?) । छक – जोश । मुसताक – उत्कंठित (?) ।

२४५. हाल – गति, चाल । कलोहळ – कोलाहल । मुजरा – ग्रभिवादन । मैंमंत – मस्त । तांम – तब । गहतंत – मस्त ।

२४६. चौसर – चारों ग्रोर । सझि – सुसज्जित कर के । दुझाल – वीर ।

छंद हणूंफाल[1]

नग तुरँग घमघम नाळ, थट भोम धमहम थाळ ।
धसमसत धर धहराय, जदि सेस नमि नमि जाय ॥ २४७
करि कटक हलत कमंध, कसकंत कूरम कंध ।
उडि गरद चढ़ि असमान[2], भर[3] तिमर ढंकिय[4] भांण ॥ २४८
जसवळ[5] [i] हाक सजोर, घंटबीर[6] घग्घर[7] घोर[8] ।
भळकंत चित्रत भाल, ढळकंत बह[9] रंग[10] ढ़ाल[11] ॥ २४९
दुति सेल[12] फळ दमकंत[13], किरणाळ जिम चमकंत* ।
बँब[14] गजर[15] घोर त्रंबाळ, तळ वितळ चळचळ ताळ ॥ २५०
बहतास उरस विहंग, पर धार भार पनंग[16] ।
अकुळाइ[17] पड़त अनेक, कुरंगांण मूझत[18] केक ॥ २५१

---

१ ग. हणुफाल । २ ख. ग. असमांण । ३ ख. ग. भर । ४ ख. ग. ढ़ंकीयौ । ५ ख. ग. जसवल्ल । ६ ख. ग. घंटवीर । ७ ख. ग. घूघर । ८ क. कोर । ९ ख. वही । ग. बोही । १० ख. गज । ग. गझ । ११ ख. ग. ढाल । १२ ख. ग. सेल । १३ ख. दमकंति । *'किरणाळ जिम चमकंत ।'—पद्यांश ख. प्रतिमें नहीं है ।
१४ ख. वंव । १५ ग. राज । १६ ग. पन्नंग । १७ ख. ग. अकुळाय । १८ ग. मूंझत ।

---

२४७. नग – पैर, चरण । घमघम – ध्वनि विशेष । नाळ – घोड़ेके सुमके नीचे वलयके आकारका लगाया जाने वाला लोहेका उपकरण । थट – वैभव । धमहम – कम्पायमान (?) । थाळ – स्थाल । धसमसत – धसती है । धर – भूमि । धहराय – कम्पायमान होती है । सेस – शेषनाग ।

२४८. कमंध – राठौड़ । कसकंत – दबता है, धसता है । कूरम – कूर्मावतार । गरद – धूलि । ढकिय – आच्छादित हो गया । भांण – सूर्य ।

२४९. जसवळ – यशगायक, यश । हाक – आवाज । सजोर – जोरपूर्ण । घंटबीर – वीरघंट, हाथीकी झूलके साथ लटकने वाला घंटा । घग्घर – ध्वनि । तेज । भळकंत – चमकता है । भाल – ललाट । ढळकंत ढाल – पीठ पर लटकती हुई ढाल ।

२५०. दुति – द्युति, कांति । सेल – भाला । फळ – भालेका अग्र भाग, भालेकी नोंक । दमकंत – चमकता है । किरणाळ – सूर्य । बंब – नगाड़ा, नगाड़ेकी ध्वनि । गजर – ध्वनि (?) । त्रंबाळ – नगाड़ा । तळ – सात पातालोंमें प्रथम पाताल । वितळ – पुराणानुसार सात पातालोंमेंसे तीसरा पाताल । चळचळ – कम्पायमान । ताळ – (पाताल ?) ।

२५१. उरस – आसमान । पर धार – पंख वाले । पनंग – सर्प, नाग । कुरंगांण – हरिणसमूह, हरिण । मूझत – दम घुटता है, घुटन होती है ।

वजि स्वास[1] नास ग्रहास, तर भुड़द ग्रातस तास।
लंगरां[2] खरळक लागि, उडि[3] पड़त गिरउर[4] ग्रागि ॥ २५२

हूकळां[5] कळहळ हूंत, कळकळा झगझग कूंत।
ग्रसि फेण फवि धर एम, तै उरस उडगण तेम ॥ २५३

सर सुखत[6] जळ सरितास[7], खित चौक मंडित[8] खास।
दिन केक[9] मांहि[10] दुझाळ, इम लियां[11] दळ 'ग्रभमाल' ॥ २५४

रवि जेम[12] मध्रिसम[13] रूप, भळहळत झांमति[14] भूप।
ग्रति उछव[15] डमर[16] ग्रनंग[17], ग्राबियौ[18] दिली ग्रभंग ॥ २५५

तव[19] ग्ररज बगसी तांम, विध[20] ग्रागमण वरियांम।
जिण[21] सुणे[22] साह जवाव[23], तेड़ियौ[24] भूप सताब ॥ २५६

खित[25] नकौ जोतिस खूंच, ऽवा हीज सायत ऊंच।
साहरा डील सधीर, एवज्ज[26] मौज ग्रमीर ॥ २५७

---

१ ख. ग. सास। २ ख. लंगारां। ग. लंगर। ३ ग. उड। ४ ख. ग. गिरवर। ५ ग. हुकला। ६ ग. सौष। ७ ख. ग. सलितास। ८ ख. ग. मंडित। ९ ख. केइक। ग. कैयक। १० ग. मांझि। ११ ख. लीयां। ग. लीया। १२ ग. जेठ। १३ ख. मध्यसम। ग. मधसम। १४ ग. झसती। १५ ख. ग. उछव। १६ ख. ग. डंवर। १७ ख. ग. उमंग। १८ ख. ग्रावीयौ। ग. ग्रावियो। १९ ग. तवि। २० ख. ग. विधि। २१ ग. जिणे। २२ ग. सुणै। २३ ख. जवाव। २४ ख. तेडीयौ। ग. तेडीयो। २५ ख. ग. षिति। २६ ग. एवज।

---

२५२. नास – नाक। ग्रहास – घोड़ा। भुड़द – गिरते हैं ग्रातस – उष्णता। तास – त्रास, डर। लंगरां – हाथीके पैरकी जंजीरें। खरळक – शृंखला या लंगरकी ध्वनि। गिरउर – गिरिवर, पर्वत।

२५३. हूकळां – घोड़ोंके हिनहिनाहटकी ध्वनि। कळहळ – कोलाहल। हूंत – होता है। कळकळा – अत्यन्त उष्ण, तेज। झगझग – चमकते हैं (?)। कूंत – भाला। फेण – फेन, झाग। फवि – शोभा देकर।

२५४. सरितास – नदी। खित = क्षिति – पृथ्वी।

२५५. भळहळ – देदिप्यमान होता है, चमकता है। झांमति – कांति, दीप्ति। उछव – उत्सव। डमर – समूह। ग्रभंग – वीर, योद्धा।

२५६. बगसी – बख्शी, वह अधिकारी जो लोगोंको वेतन देता हो। ग्रागमण – ग्रागमन, ग्राना। वरियांम – श्रेष्ठ। तेड़ियौ – बुलाया। सताव – शीघ्र।

२५७. खूंच – कमी (?)। सायत – शायद, मुहूर्त ?। डील – व्यक्ति, ग्रादमी।

दिल्लीस मुनसपदार, अम्मीर[1] स्रब[2] उणवार ।
दळ पूर संग[3] दरियाव, औ[4] अमीरल उमराव ।। २५८

विध[5] सांमुहौ वरियांम, निज खांनदौरां नाम ।
मेल्हिया[6] घण[7] अम्मीर, सांमुहा भूप सधीर ।। २५९

सूजि नमै[8] साह समांन[9], विध[10] कहै[11] हुकम विधांन ।
सुणि हले पह[12] 'अभसाह', दिल्लेस दिस[13] दरगाह ।। २६०

जवनेस दरगह जाय, ऊतरे गजहूं आय ।
छक चढ़े पूर छछौह[14], वह[15] जांणि संग्रफ वौह[16] ।। २६१

मुख[17] उदत[18] जांणि[19] प्रमांण[20], जगचक्ख[21] बारह[22] जांण ।
.... ।। २६२

कवित्त छप्पै[23]

आंबखास मभि 'अभौ', उरसि[24] छिबतौ पह[25] आए ।
दुहूं[26] राह देखतां, अरज बगसी गुजराए ।। २६३

---

१ ख. ग. अमीर । २ ख. ग. अव । ३ ख. ग. संगि । ४ ख. यौ । ग. यौं । ५ ख. विधि । ग. धि । ६ ख. मेल्हीया । ७ ग. यण । ८ ग. नमे । ९ ख. समाज । १० ख. ग. विधि । ११ ख. ग. कहे । १२ ख. ग. पौहौ । १३ ख. ग. दिसि । १४ ख. ग. छछोह । १५ ख. ग. बौहौ । १६ ख. वौंह । ग. वोह । १७ ग. मुखि । १८ ख. ग. उदित । १९ ख. ग. जोति । २० ख. प्रमांणि । २१ ख. ग. जगचप्प । २२ ख. जांणि । २३ ग. छप्पे । २४ ख. ग. उरस । २५ ख. पौहो । ग. पौहौ । २६ ख. डुहुं । ग. द्रुहू ।

---

२५८. अमीरल उमराव – अमीर उमराव ।

२५९. खांन दौरां – बादशाहके एक दरबारीका नाम ।

२६०. अभसाह – महाराजा अभयसिंह । दिल्लेस – बादशाह । दिस – तरफ, ओर । दरगाह – दरबार ।

२६१. जवनेस – बादशाह । छक – जोश । छछोह – तेज ।

२६२. उदत – कांति, तेज । प्रमांण – समान । जगचक्ख – सूर्य, भानु ।

२६३. आंबखास – आमखास । अभौ – महाराजा अभयसिंह । उरसि – आसमान । छिबतौ – स्पर्श करता हुआ । राह – सम्प्रदाय, पंथ, मार्ग । गुजराए – पेश की ।

तई मीर तुझकेस, नजर दौलत ऊचारे[1]।
वदन नयण[2] विलकुलै[3], साह वह[4] कुरब सधारे[5]।
"सौ सौ सलांम जोड़ग सभै, नरिंद तठै अनमी नभै*।
दे हेत सवै साहसुं मिळे, नरंद जठै अनमी नभै" ॥ २६३
वहुत[6] "नजीक बुलाय, कहै[7] इम साह हेत कर।
हौ चंगे खुसवखत, महाराजा[8] राजेस्वर[9]"।
वहुत[10] दिनूंसै[11] मिळे, आज हमैं[12] खुस होई।
दिगर खैर अफियत्त[13], सुमां सुभ निजर[14] सकोई।
अंबखास जोति दूणी उदति[15], सोभा तप सरसाविया[16]।
तुरकांण हेक हिंदवांण तड़, दुहूं भांण दरसाविया[17] ॥ २६४
डेरां डंवर वणे, सीख करि तांम सधारे[18]।
गज अरोह[19] दरगाह, प्रथो[20] रछपाळ[21] पधारे।

---

१ ग. उच्चारै। २ ग. भयन। ३ ख. ग. विलकुलै। ४ ख. ग. वहौ। ५ ग. सधारै।
"..."ये दो पंक्तियां प्राप्त सभी प्रतियोंमें अस्पष्ट हैं।
*यहांसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्तियां मिली हैं—
'तरजवी पेच कोरां तितै अतिहठ हो आगे अभै।'
६ ख. वोहौत। ग. वहौत।
"..."चिन्हित पंक्तियां ग. प्रतिमें नहीं है।
७ ख. कहे। ८ ख माहाराजा। ९ ख. राजेसुर। १० ख वहौत। ग. बहौत। ११ ग दिनौ। १२ ख. हम्मै। ग. असै। १३ ख. आफियत। ग. आफिइत। १४ ख. ग. नजर। १५ ख. ग. उदित। १६ ख. सरसावीया। ग. दरसावीयौ। १७ ख. दरसावीया। ग. दरसावीयौ। १८ ग. सिधारै। १९ ख. ग. अरोहि। २० ख ग. प्रिथी २१ ग. रछिपाळ।

---

२६३. तई – उस, आततायी। मीर तुझकेस – अभियान या जलूस आदिकी व्यवस्था करने वाला। नजर दौलत ऊचारे – "नजर दौलत" कहा। वदन – मुख। विलकुलै – (?)। सौ सौ......सभै – बराबर के वैभव वाले सौ-सौ बार अभिवादन करते हैं।

२६४. चंगे – स्वस्थ। खुसवखत – खुशकिस्मत, सौभाग्यशाली। अफियत्त – सुख, चैन, स्वास्थ्य, आफियत। सुमां – (?)। दूणी – द्विगुणित। सरसाविया – सुशोभित हुए। तुरकांण – यवन। तड़ – दल। दरसाविया – दिखाई दिये।

२६५. डेरां – पड़ावों या ठहरनेके स्थानों। डंवर – समूह। रछपाळ – रक्षक।

आय डेरां ऊतरे[1], तेण[2] मौसर पतिसाहां।
भेजे खिजमतिगार[3], पौस[4] जरकसी जिलाहां।
अंगूर नासपाती बिही[5], घणी सेव सरदा घणा[6]।
मेलिया[7] खूब[8] महमांनियां[9], तरह तरह मेवां तणा॥ २६५

तै खुसबखती अतर, रचे डंबर रिझवारां[10]।
गुल-क्यारां रंग गहर, हौद चादरां फुंहारां।
जळ धारां कढ़ि[11] जमी, रोसदारां रसतारां।
नीझारां कारजां[12], जिलहदारां गुलजारां।
'जसराज-पुरा' गोढ़ै[13] जदिन, रचै 'अभै-पुर' रंगरौ।
इखतां हवाल ललचै अमर, उपवन जांणि अनंगरौ॥ २६६

हमीदखांका गुजरातमें आजाद होना

एम झिलै[14] 'अभपती'[15], सुणै रंगराग सकाजा।
झिलै साह महमंद, तई[16] आणंद[17] तराजा।

---

१ ख. उतरे। ग. ऊतरै। २ ग. तिण। ३ ख. षिजमतगार। ४ ख. ग. पोस। ५ ख. ग. वीही। ६ ग. घणां। ७ ख ग. मेल्हीया। ८ क. षूब। ९ ख. महमानीयां। ग. महमांनीयां। १० ख. रीझवारां। ११ ग. कढ़। १२ कारंजा। ग. करंजण. १३ ख. ग जोडै। १४ ग. झिले। १५ ख. अजपती। ग. अभपति। १६ ख. नई। ग. तेइ। १७ ग आणंदि।

---

२६५. मौसर – अवसर। खिजमतिगार – सेवक। पौस – पोशाक अर्थ ठीक बैठता है। जरकसी – सोने-चांदीके तारोंका काम। जिलाहां – (जिलह या चमकदार ?)। सेव – सेव नामक फल। सरदा – एक प्रकारका बढ़िया खरबूजा जो काबुलमें होता है। महमांनियां – आतिथ्य-सत्कारके लिये।

२६६. डंबर – सुगंध, महक। रिझवारां – (रीझ, प्रसन्न करने वाले ?)। गुल क्यारां – फूलोंकी क्यारियां। रोस - दारां – (?)। रसतारां – (?)। जिलहदारां – कांतियुक्त, मनोहर। गुलजारां – उपवनों। गोढ़ै – पास, निकट। जदिन – जिस दिन। इखतां – देखने पर। हवाल – हाल, स्थिति।

२६७. झिलै – मस्त होता है, हर्पयुक्त होता है। अभपती – महाराजा अभयसिंह। साह-महमंद – मुहम्मदशाह बादशाह। तई – उसके। तराजा – समान, तुल्य।

समै जेणि[1] दखिणेस[2], दुंद[3] *ऊठे[4] चढ़िया[5] दळ ।*
साहिजादौ[6] जंगळी, मुरड़ि गुजरात महाबळ[7] ।
हैमंद दिखणियां[8] एक हुय[9], असपति अमल उठाविया[10] ।
हाका पुकार सौबा[11] हणै[12], वाका दिल्ली आविया[13] ॥ २६७

सात हजारां सहित[14], मारि गिरधरा बहादर ।
वांणू[15] लख माळवौ[16], लीध उज्जीणतणी[17] धर ।
सौंबा[18] सूरततणा[19], अनै[20] अहमदपुर वाळा ।
ते काजम रा तीन, किलम दारण कळिचाळा ।
चाळीस सहस दळ चापड़ै, सौबा[21] जिकै[22] संघारिया[23] ।
अभरांमकुळी[24] रुसतम-अली, मुगल सुजाहत मारिया[25] ॥ २६८

पातिसाहरौ सर-बुलंदनै गुजरातरौ सूबादार वणाणौ

वाका सुणि[26] असपती, कहर कोपियौ[27] भयंकर ।
विदा कीध सिरविलंद, दूठ समसेर बहादर ।

---

१ ग. जेण । २ ख. दषिणसूं । ग. दक्षिणसुं । ३ ख. ग. दूंद । ४ ख. उठे । ५ ख. चढ़ीया । *...*ग. प्रतिमें — 'चढ़े उठि हियौ दळ ।' पाठ है ।
६ ग. साहिजादो । ७ ख. माहाबल । ८ ख. दषिणीयां । ग. दक्षिणियां । ९ ख. ग. होय । १० ख. उठावीया । ११ ख. ग. सोवां । १२ ख. हणे । १३ ख. आवीया । १४ ग. सहत । १५ ख. वाणूं । ग. वांणू । १६ ग. माळवो । १७ ख. उज्जेणतणी । ग. उजीणतणी । १८ ख. सूवा । १९ ख. ग. सूरततरा । २० ग. अनेक । २१ ख. ग. सोवा । २२ ख. ग. जिके । २३ ख. संघारीया । २४ ग. अभीरांमकुली । २५ ख. मारीया । २६ ग सुण । २७ ख ग. कोपीयौ ।

---

२६७. दखिणेस — दक्षिणके अधिपति या शासक । दुंद = द्वन्द — उत्पात, कलह, उपद्रव । साहिजादौ ... महाबळ — ।
हैमंद — हमीदखां । अमल — अधिकार । सौबा — प्रान्त, प्रदेश, सूबा । वाका — समाचार, वृत्तान्त ।

२६८. वांणू — बानवे । अनै — और । किलम — यवन, मुसलमान । कळिचाळा — योद्धा, वीर । चापड़ै — युद्धके मैदानमें, खुले मैदानमें ।

२६९. कहर — क्रोध, कोप । कोपियौ — कुपित हुआ । दूठ — जबरदस्त ।

दीध कोड़[1] हिक[2] दरब, दीध पच्चास[3] सहँस दळ।
सुजड़ खाग सिरपाव, मुसक असि दीध मद्दगळ[4]।
कत्तावम[5] मुरजल-मुलकका, दीध अराबा घण मुदित[6]।
ईरांन विरद उजवाळनूं[7], पांन दीध तूरांनपति ॥ २६९

सर-बुलंदरौ अहमदाबाद पर अमल करणौ

विखम दळां सझि 'विलंद', एम गूजर[8] धर आए।
अँग नायब आपरौ, चुरस हरवळां चलाए।
जांम सुणे जंगळी, चढ़े सांमुहां चलाया।
सझे अडाळत[9] समर, मारि दळ गरद[10] मिळाया।
आवियौ[11] 'विलंद' छिवतौ[12] उरस, चकि 'हैमँद' तदि चालियौ[13]।
दस सहँसहूँत सिर 'विलंद'रौ, हरवळ मारे हालियौ[14] ॥ २७०

सर-बुलंदखांका अहमदाबाद पर सुतंतर बादसाह बणणौ

साथ मंत्री साझिया[15], निडर दिल फिकर न धारे[16]।
खिस गौ 'हमंदखांन'[17], सरस तिण जोम सधारे।

---

१ ख. ग. कोडि। २ ग. क। ३ ग. पचास। ४ ख. मुद्दगल। ५ ख. कितावम। ग. किताव। ६ ख. मुदित। ७ ग. अजवाळनूं। ८ ख. गुज्जर। ग. गुजर। ९ ख. ग. अडालज। १० क. गिरद। ११ ख. आवीयौ। १२ ख. छिवतो। ग. छिवतो। १३ ख. चालीयौ। १४ ख. हालीयौ। १५ ख. साझीयां। १६ ख. वारे। १७ ख. ग. हैमंदषांन।

---

२६९. हिक – एक। दरब – द्रव्य। सुजड़ – कटार। असि – घोड़ा। मद्दगळ – हाथी। कत्तावम – खिताब, पद। मुरजल – मुबारिजुल-मुल्क—यह सर बुलंदखांकी उपाधि थी। अराब – तोप। घण मुदित – अत्यधिक हर्षित हो कर। तूरांनपति – तूरान तातारका एक नाम है। मुगल तातारकी तरफसे आये थे, अतः कविने बादशाह मुहम्मदके लिए तूरानपति शब्दका प्रयोग किया है।

२७०. चुरस – श्रेष्ठ। हरवळां – सेनाके अग्र भाग पर, हरावल। अडाळत – (?)। गरद – धूलि। छिवतौ – स्पर्श करता हुआ, छूता हुआ। हैमंद – हमीदखां। हालियौ – चला गया।

२७१. खिस गौ – खिसक गया, पराजित हो गया। हमंदखांन – हमीदखां। सरस – हर्ष-पूर्वक। जोम – जोश, उमंग।

इम मनसभ[1] जांणियौ[2], खूंद न गिणूं धर खाऊं।
अहमदपुर[3] अपणाय, जुदौ[4] पतिसाह कहाऊं।
करि इम सलाह मुरडे किसम, मेळ गनीमां मंडियौ।
आपरौ अमल कीधौ इळा, असपति अमल उचंडियौ[5] ॥ २७१

महाराजा अभैसींघजीरै प्रभावरौ वरणण

उठै 'दिली'[6] उणवार, 'अभौ' दारुण अतुळीवळ[7]।
उरस[8] छिवै[9] अधपती[10], झळळ पौरस[11] झाळाहळ[12]।
कमध[13] सहाई[14] करै, आप मन मझि जीयांणै[15]।
अन[16] अमीर सुर असुर, जियां तिलमात न जांणै।
ऊपटै[17] भुजां पौरस[18] अघट, भावै कितां अभावणौ।
धारियां[19] अडिग हिंदू धरम, तै सुभाव[20] घरवटतणौ ॥ २७२

महाराजा अभैसींघरौ दिलीमें सूररी सिकार करणी तथा बादसाहसूं आमखासमें नाराज होणौ अर पातसाजीरौ अभैसींघजीनूं मनावणौ

महमँद[21] रमणां[22] मांहि, दिली जाहर दरवारां।
सूर सौंस[23] आसुरां, सूर मारिया[24] सिकारां।

---

१ ख. मनसझि। ग. मनमझि। २ ख. जांणीयौ। ग जाणियो। ३ ग. अहमदपुर। ४ ग. जुदो। ५ ख उवंडीयौ। ग. उचंडियो। ६ क. अभौ। ७ ख अतुलीवल। ग. अतळीवळ। ८ ग. उरसि। ९ ख. ग. छिवै। १० ग. अवपति। ११ ग. पोरस। १२ ख. झालाहस। १३ ख. कंध। ग. कंधि। १४ ख. सह्राई। ग. सवाई। १५ ख. ग. जिम आणै। १६ ख. ग. अनि। १७ ग. ऊपडै। १८ ख. पौरिस। १९ ख. धारीयां। २० ग. सभाव। २१ ख. ग. महमद। २२ ख. ग. रमणा। २३ ग. सूंस। २४ ख. मारीयां।

---

२७१. खूंद – बादशाह। अहमदपुर – अहमदाबाद। अपणाय – अपने अधिकारमें कर के। जुदौ – पृथक ही। मुरडे – कुपित हो कर, विरुद्ध हो कर। मेळ – मित्रता। गनीमां – शत्रुओं। वि.वि. – यहां पर यह शब्द मरहठोंके लिये प्रयोगमें लिया गया है। मंडियौ – कर लिया। इळा – पृथ्वी। असपति – बादशाह। उचंडियौ – उठा दिया, हटा दिया।

२७२. अतुळीवळ – शक्तिशाली। अधपति = अधिपति – राजा। झळळ – देदीप्यमान। पौरस – पौरुष, शक्ति, बल। झाळाहळ – अग्नि, सूर्य। सहाई – मदद, सहायता। जियां – जिन। ऊपटै – उमड़ता है। अघट – अपार, असीम। भावै – चाहे। अभावणौ – अप्रिय, अरुचिकर। घरवटतणौ – वंशका, कुलका।

२७३. महमँद – बादशाह मुहम्मदशाह। सूर – सूअर। सौंस – शपथ।

ऊभौ तुरराबाज, सुणै[1] पाए[2] आपांणै।
अडस[3] लागि[4] आयौ[5], खाग[6] जाळण खुरसांणै।
किलमेस सहित रूठे कमंध, अंबखास ऊठावियौ[7]।
करि नजर[8] प्रीत[9] भय हूंत[10] करि, महमँद 'अभौ' मनावियौ[11] ॥ २७३

वादसाह मुहम्मद साह खनै गुजरातसूं खबर आवणी

दीवौ[12] करि देखिजै, इसी नह लाय अकारी।
जोर तळब जायगा[13], विदा कीजै छत्रधारी।
इम करतां आळोज, अरज वाकौ इम आयौ।
सिर[14] विलंद सिर जोर, अमल गुजरात उठायौ।
फुरमांण न वदै[15] आपरा, इम सुणि वचन अभाविया[16]।
ततवीर करण मसलति तणा, वडा अमीर बुलाविया[17] ॥ २७४
बगसी[18] अनै[19] वजीर, बहसि[20] अति जदा बरद्दी[21]।
उभै वेग[22] आविया[23], 'खांनदौरां'[24] कमरद्दी[25]।
सुणे[26] साह महमंद, सुणे[27] नव्वाब[28] सलाही।
रंग किया[29] राफजी[30], हुकम लोपिया[31] अलाही।

---

१ ख. ग. सुणे। २ ग. पायै। ३ ख. अडंस। ग. अडसि। ४ ग. लाग। ५ ख. आवीयौ। ग. आवियौ। ६ ख. ग. षागि। ७ ख. उठीयौ। ग. उठावीयौ। ८ ख. ग. नजरि। ९ ख. ग. प्रीति। १० ग. हुत। ११ ख. मनावीयौ। १२ ख. दिवौ। ग. दीयो। १३ ग. जायमा। १४ ख. सिरि। १५ ख. वंदै। १६ ख. ग. अभावीया। १७ ख. बुलावीया। १८ ख. ग. वगसी। १९ ग. अनै। २० ख. ग. वहस। २१ ख. ग. वरद्दी। २२ ख. ग. वेगि। २३ ख. आवीया। २४ ख. खांनदोरां। २५ ग. कमरदी। २६ ख. सुणै। ग. मुणै। २७ ख. सुणै। २८ ख. नव्वाव। ग. नवाव। २९ ख. ग. कीया। ३० ख. राफसी। ग. रापसी। ३१ ख. लोपीया।

---

२७३. अडस – डाह, दाह। किलमेस – वादशाह, यवन। अभौ – महाराजा अभयसिंह। मनावियौ – प्रसन्न किया, संतुष्ट किया।

२७४. दीवौ – दीपक। लाय – अग्नि काण्डकी अग्नि। अकारी – कमजोर। आळोज – विचार। वाकौ – वृत्तान्त, समाचार। सिर-जोर – वागी, विद्रोही, सरजोर। अभाविया – अप्रिय, अरुचिकर। ततवीर – अभिष्ट सिद्ध करनेके साधन, तदवीर। मसलती तणा – मस्लहतके, विचारके।

२७५. बरद्दी – (?)। राफजी – वह सेना या दल जो अपने अधिपतिको छोड़ दे; शीया मुसलमानोंका वह दल जिसने हजरतअलीके लड़के जैदका साथ छोड़ दिया था।

आळोज करण लागा असुर, कहै[1] न[2] जाव कहावियौ[3] ।
अहमदाबादहूंता इतै, वाकौ दूजौ आवियौ[4] ।। २७५

ईरांनी अतपाक[5], दखिण मिळ[6] किया[7] दुवाहां[8] ।
मंडिया[9] जठै गनीम, जठै सहनक पतिसाहां ।
आठ पहर रइयत्त[10] जहर पीधां सम जावै[11] ।
लूट[12] कहर करि लियै[13], सहर विवराळा[14] गावै ।
धन लियै[15] मारि नांखै धणी, साथ[16] होण[17] न दियै[18] सतो ।
असपती सोच वधियौ[19] अधिक, इसड़ी सुणे अजाजती ।। २७६

सर बुलंदसूं जुध करणसारू बादसाह मुहम्मदसाहरौ बीड़ौ फेरणौ

विहूं[20] तांम बोलिया[21], साह अमखास सभावौ[22] ।
नरिंद खांन करि निजर[23], फिजर[24] बीड़ा फिरवावौ[25] ।
फटे निसा फजरांन, अंब-दीवांण वणाया ।
तखत वैठ[26] सुरतांण, पांन हाजर पधराया ।
सिर[27] विलंद खांन 'साहू' सहित, आसँग[28] हुवै सु आवसी[29] ।
असमांन पड़ै थांभै अडर, औ नर[30] पांन उठावसी ।। २७७

---

१ ख. ग. कहे । २ ग. नीवाव । ३ ख. ग. कहावीयौ । ४ ख. ग. आवीयौ । ५ ख. ग. इतफाक । ६ ख. ग. मिलि । ७ ख. ग. कीया । ८ ख. ग. दुवाहां । ९ ख. ग. मंडीया । १० ख. ग. रईयत । ११ ग. जांवै । १२ ख. ग. लूटि । १३ ख. ग. लीयै । १४ ख. वेवराल । ग. वेवराल । १५ ख. ग. लीयै । १६ ख. ग. साथि । १७ ख. हौण । १८ ग. दीयै । १९ ख. ग. वधीया । २० ख. बिहू । ग. विहू । २१ ख. वोलीया । ग. बोलीया । २२ ग. सभावो । २३ ख. ग. नजर । २४ क. फिकर । २५ ख. ग. फिरवावो । २६ ग. वैठि । २७ ख. सिरि । २८ ख. ग. आसंगद । २९ ख. ग. आवसि । ३० ख. ओरन ।

---

२७५. जाव – उत्तर, जवाब । कहावियौ – कहलाया ।

२७६. अतपाक – इतिफाक । दुवाहां – वीरों । मंडिया – ठहरे । गनीम – लूटेरा, डाकू । सहनक – (?) । रइयत्त – प्रजा । कहर – कोप, आपत्ति । विवराळा – त्राहि-त्राहिकी पुकार । अजाजती – उपद्रव, उत्पात, ज्यादती ।

२७७. अमखास – आमखास । सभावौ – तैयार (करिये) । नरिंद – नरेन्द्र, राजा । फिजर – फजर, प्रातःकाल । निसा – रात्रि । फजरांन – प्रातःकाल । अंब-दीवांण – आम दीवाण । सुरतांण – बादशाह । आसँग – शक्ति, बल । थांभै – रोक दे ।

दवावैत[1]

जम्मीनके ऊपर परवरदिगारका[2] हुसन दिल्ली सहर जोगमाया[3] जिसके[4] दरम्यांन बावन[5] वीर चौसठ[6] जोगणीका वास[7]। जैवींती[8] विमर अकलका जहूर। पातिसाहूंका[9] तखत रुसनाईका[10] पूर। जंवाहरका[11] तखत जंवाहरका छत्र। तेजका अथाह ऐसैं[12] दिल्लीका[13] साहिब जिस तखत पर विराजै है महमंद साह साहिबका नायब पैकंबरूंकी जात कहता[14] है। कुरांन चौवीस पीरूंकी करामात जिसनै ऊगती[15] मौसरूं ताळेके[16] जोरसे[17] दिल्लीका[18] तखत पाया। ऐसा महमंदसाह पातिसाह[19] सिर[20] अंबखास[21] वणवाया। तिस अंब-खासके[22] वीच[23] दोऊ दीननै आय सिर नमाया[24]। पातिसाहूंका[25] एक इसारा पाया। जिस बखतका तेज कैसा पटैत केसर[26] सिंघ वाघ निजरूंके[27] वीच[28] आवै। तौ पातिसाहूंके[29] सांमूं[30] देखणै न पावै। हपतहजारी* चमरूंकी झपट करते[31] हैं। दोऊ मिसलत[32] खड़े हैं। हिंदू[33] मुसलमांन जिस बखत मीर-तुजकके दस्त पर[34] जंवाहरका

---

१ ग. दवावौ। २ ख. परवरदगारका। ३ ख. ग. जोगमाया लिछमीका प्रकास। ४ ख. जिनके। ५ ख. वावन। ६ ग. चौसठि। ७ ग. वासा। ८ ख. जंवंतीका। ग. जैमतीका। ९ ख. पातसाहूका। ग. पातसाहौका। १० ख. ग. रोसनाईका। ११ ग. जवारका। १२ ख. श्रैसी। ग. श्रैसा। १३ ख. ग. दिलीके। १४ ख. कहैता। १५ ग. उगती। १६ ग. ताळैकै। १७ ख. ग. जोरसैं। १८ ग. दिलीका। १९ ख. ग. पातिसाह जिसनैं। २० ख. ग. सरैं। २१ ख. ग. आंमपास। २२ ख. ग. आंम-पासकै। २३ ख. वीचि। २४ ग. नवाया। २५ ख. पातसाहूंका। २६ ख. ग. केसरी। २७ ख. ग. नजरूंकै। २८ ख. वीचि। २९ ख. पातसाहूंकै तेज सौं। ग. पातसाहूंके तेज सौं। ३० ख. ग. सांमुहां।

*ख. तथा ग. प्रतियोंमें यहांसे आगे— सपर समसेर धरते हैं हफत हजारी।'
३१ ग. करतै। ३२ ख. ग. मिसल। ३३ ख. हींदू। ग. हीदु। ३४ ग दसत।

---

२०८. परवरदिगारका – पर्वरदिगारका, ईश्वरका। हुसन – सौंदर्य, खूबसूरती, हुस्न। जहूर – प्रकाशन। रुसनाईका – प्रकाशका, रोशनीका। पैकंबरूंकी – पैगम्बरकी। जात – उत्पन्न। मौसरूं – श्मश्रुके वाल। ताळेके – भाग्यके। दीननै – मजहबोंने। सांमूं – सम्मुख, सामने। चमरूंकी – चंवरोंकी। झपट – चंवर डोलानेका झोंका। मिसलत – पंक्तियां। मीर-तुजकके – जलूस या अभियान आदिकी व्यवस्था करने वालेके। दस्त पर – हाथ पर।

पांनदांन। जिस बखत हाजर कौण-कौण। अंबखासका[1] बणाव। सत्तर खांन वहोतर[2] उमराव। दिल्लीपतिकी[3] सभा[4] इंद्रका समाजा[5]। सवूंका[6] सिरपोस[7] जोधांणका राजा। जिस वखत पातिसाहूंनै[8] स्रीमुख[9] हुकम फुरमाया। अमीर[10] 'नुदिखां'[11] मीर तुजक जो[12] कोरबंधीसैं फिरवाय[13] पांन। चित्रकेसे खड़े है हिंदू[14] और[15] मुसलमांन। जिस वखत मीर-तुजकूंनै[16] आदाव वजाय पांन फेरणंकूं[17] आया। जुबांनसैं सवाल सबूंकूं[18] सुणाया। यारौ[19] जे ये पांन[20] जो सकस लेवै उठाय। जो सिरविलंदखांन साहूसैं लड़िवेकूं[21] जाय। जिण[22] वखत पातिसाही[23] अमीर हाजर कौण[24] कौण सो कहि दिखळाय[25]। कमरदीखांनवजीर[26] इतमांदुदोलै[27] वहादर[28] चिनूंसरतजंग[29]।* रौसनदोलै तुररावाज खांसीमबगसी रुस्तमजंग[30]। सेर अफनखांन[31] समददोलेकी[32] किताव। खोजे[33] साहुदीखां[34] आतसमीर साहादतखां

---

१ ख. आमषासका। ग. आवषासका। २ ख. और वौहोतर। ग. और वहतर। ३ ख. ग. दिल्लीकी। ४ ख. ग. छभा। ५ ख. समाज। ६ ख. संव्वूंका। ७ क. सिरपौस। ८ ख. ग. पातसाहूंनें। ९ ख. श्रीमुषि। १० ग. अमीनु। ११ ख. द्दीषां। ग. दीषां। १२ ख. कुंजो। ग. कू कूजो। १३ ग. फिरवाया। १४ ख. ग. हींदू। १५ ख. प्रतिमें नहीं है। ग. ओर। १६ ग. तुजकौं। १७ ख. ग फेरणेकूं। १८ ख. सवूं। ग. सव्वू। १९ ख. ग. यारो। २० ख. एयांन। ग. एपांन। २१ ख. जंग करणेकूं जाय। ग. जंग करणैकौं जाय। २२ ख. जिस। २३ ख. ग. पातसाही। २४ ग. कौंन कौन। २५ ग. दिषलाया। २६ ख. ग. कमरदीषांवजीर। २७ ख. ग. यतमावुदौलैं। २८ ख. वहार। ग. बाहादर। २९ ख. चींनुंसरततजंग। चीनसरतजंग।

*यहांसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्तियां और मिली हैं—
'पांन दोरा मीर बगसी सम सांम दौले अमीरळ उमराव मनसूर जंग।'

३० ख. ग. रुसतमजंग। ३१ ख. ग. अफगनषांन। ३२ ख. सामंददौलैका। ग. समसामैदौलैका। ३३ ग. षोजै। ३४ ख. ग. साहुद्दीषां।

---

२७८. पांनदांन – एक प्रकारका डिब्बा जिसमें पान और पानके लगानेकी सामग्री रखी जाती है। वणाव – सजावट, सौंदर्य। सवूंका – सबका। सिरपोस – शिरत्राण, रक्षक। कोरबंधी – पंक्ति, कतार। सकस – शख्स, व्यक्ति, मनुष्य। लड़िवेकूं – युद्ध करनेके लिये।

बहादर[1] * दलेलजंग खां[2] बहादर ◈दारोगे खवासां उरहां नल मुलक अवदल..... मखां बहादर मीर जुमलांमु◈ जिकरियाखांन[3] सूंवेदार लाहौरके[4] दिलदलेलखां वहादुर[5] मीर जुमलामुखांन[6] खांना तारखां[7] बहादर जाफर[8] जंग सदरसहूर इरादत[9] मंदखां बहादुर[10] सरफ[11] दौलैकी[12] किताब। मुरसदकलीखां[13] जाफर खांन वसेरी अलैवरखां[14] बहादुर[15] मौतकदु[16] ❁दौले कर वल वेगी मदुफरखां[17] सूबेदार❁ अजमेर। ऐसे[18] ऐसे[19] हाजर बौहत[20] उस बेर[21]। दिलेसुर[22] देखते[23] है सिरपौस[24] जिहांन। ऐसूंके[25] वीचमें[26] फिरते[27] है पांन ॥ २७८

कवित्त[28] पांनूंका[29] वणाव

फिरै पांन साहरा, कितां[30] ह्वै ज्यांन थरत्थर[31]।
फिरै[32] पांन साहरा, कितां निजरां[33] न धरै कर।
तुजकमीर[34] कर[35] तांन, केइक मसतांन कहावै।
आंन आंन कथ कहै, पांन नह कोय उठावै।

---

१ ग. बहादरा। *यहांसे आगे निम्न लिखित पंक्तियां ग. प्रतिमें और मिली हैं—
'दारौगै पवासां ठुरहांनल मुलक। अवदळ समंदषां बहादर।'
२ ख. ग. पांन।
◈...◈चिन्हांकित पंक्तियां ख. तथा ग. प्रतियोंमें नहीं हैं।
३ ख. जिफरीयापांन। ४ ख. लाहोरके। ५ ख. ग. वहादर। ६ ख. ग. जुमलामुअजमपांन। ७ ख. ग. तरषां। ८ ख. ग. जफर। ९ ख. ग. यरादत। १० ख. वहादर। ग. बाहादुर। ११ ग. सर्फ। १२ ख. ग. दोलैका। १३ ख. मुरसदकुलीषां। ग. मुरसदीकुलीषां। १४ ख. अलैवरदीषां। ग. अलैवर्वीरदषा। १५ ख. वहादर। ग. बाहादुर। १६ ख. प्रतिमें नहीं है।
❁...❁चिन्हांकित पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है।
१७ ग. मुजफर। १८ ग. अैसै। १९ ग. अैसै। २० ख. ग. वहुत। २१ ख. ग. वेर। २२ ख. दिल्लेस्वर। ग. दिलेसुर। २३ ग. देषत। २४ ख. ग. सिरपोस। २५ ग. ऐसूकै। २६ ख. ग. वीचमैं। २७ ग. फिरत। २८ ख. कवित छप्पै। ग. छप्पै कवित। २९ ख. पांन फिरणैका। ग. पांन फिरणेका। ३० ख. किता। ग. किती। ३१ ख. ग. थर थर। ३२ ख. फिरफिरै। ३३ ख. ग. नजरां। ३४ ग. तुभकमीर। ३५ ख. करि।

---

२७८. ज्यांन – जान, प्राण। थरत्थर – कंपायमान।

'अभमाल' विनां हिंदू[1] असुर, दिल अंबखास दबावियौ[2] ।
मेरगिर भार[3] पांनां महीं, उण दिन निजरां[4] आवियौ[5] ॥ २७९

थरहरतै पंजरै, असुर लेवण कजि आवै ।
मीर तुजक चख मिळै, खांन दहसत चित खावै ।
मुगलां उडै गुमांन, उरड़ आसँग नह आरण ।
पांन देखि पालटै, वाघ दीठां जिम वारण ।
'अभमाल' भूप रघुनाथ[6] अंग, रवद भूप अनि राहरा ।
हर धनख[7] जनक[8] जिग जिम हुवा, पांन दिली पतिसाहरा ॥ २८०

महाराजा अभयसिंहजीरौ दरबारमें सेरविलंदसूं जुध करण सारू पांनरौ वीड़ौ उठाणौ

नी लियै[9] खांन निबाब[10], आंन न लियै[11] अधपत्ती[12] ।
तुजक-मीर करहूंत, पांन लीधा असपत्ती ।
ग्रहे[13] पांन निज करग, नजर[14] कमधज्ज[15] निहारै ।
रहे एक औसरा, एम पतिसाह उचारे[16] ।
तद[17] मुसलमांन[18] हिंदू तणी[19], आसंग किणहि न[20] आविया[21] ।
दईवांण देखि असपति दुचित, 'अभमल' पांन उठाविया[22] ॥ २८१

---

१ ख. हींदूर । ग. हींदू । २ ख. दबावीयौ । ग. दबावीयौ । ३ ख. धार । ४ ख. ग. नजरां । ५ ख ग. आवीयौ । ६ ग. रघूनाथ । ७ ख. धनक । ८ ख. प्रतिमें 'जनक जिम हुवा ।' ९ ख. लीवै । ग. न लीयै । १० ख. नवाव । ग. नवाव । ११ ख. ग. लीयै । १२ ग. अधपति । १३ ख. ग्रहै । १४ ग. निजर । १५ ग. कमधग्ज्ज । १६ ग. उचारै । १७ ख. ग. तदि । १८ ग. मुसलमांण । १९ ग. हीदूतणी । २० ख. किएहीन । ग. अवरन । २१ ख. ग. आवीया । २२ ख. उठावीया ।

---

२७९. अभमाल – महाराजा अभयसिंह । मेरगिर – सुमेरु पर्वत ।

२८०. थरहरतै – कंपायमान होते हुए । पंजरै – शरीर । चख – चक्षु, नेत्र । दहसत – भय, आतंक । गुमांन – गर्व । उरड़ – साहस । आसंग – शक्ति, बल । आरण – युद्ध । वारण – हाथी, गज । रवद – मुसलमान ।

२८१. आंन – अन्य । अधपत्ती – राजा । असपत्ती – बादशाह । करग – हाथ । निहारे – देखे । औसरा – अवसर, मौका । दईवांण – राजा । दुचित – खिन्नचित । अभमल – महाराजा अभयसिंह ।

बीड़ा ले बोलियौ[1], कमध[2] घाते[3] मूंछां कर।
उछब[4] करौ असपती, सोच मति[5] धरौ दिलेसुर[6]।
मारि[7] सीस मोकळूं, काथ पकडे पौहचाऊं[8]।
अजळ भाजि ऊबरै, मुगळ दळ गिरद मिळाऊं।
अहमदाबाद हूंता असुर, एक दिवस मझि ऊथलूं[9]।
विण[10] पत्रां रूंख जिम सिरविलंद, करे दिली[11] दिस[12] मोकळूं ।। २८२

बादसाह मुहम्मद साहरौ महाराजा अभयसिंहजीनूं जोस दिराणौ

सुणि इम कहियौ[13] साह, महाराजा[14] राजेसुर।
आगै[15] घर[16] आपरै, हुवा 'गजबंध' नरेसुर।
जेण[17] चाड जंहगीर[18], 'भीम' हणि 'खुरम' भजाया।
लड़ि दखिणी[19] लूटिया[20], बोलबाला[21] करि आया।
जुध फतै[22] दिली ईसांन जस, करि आया सोईज[23] करै।
मो तखत लाज 'महमँद' मुणै, 'अभा' भरोसै आपरै ।। २८३

---

१ ख. बोलीयो। ग. बोलियो। २ ग. कमंध। ३ ग. घातं। ४ ख. ग. उछव। ५ ग. मत। ६ ख. दिलेस्वर। ग. दिलेसर। ७ ख. मार। ८ ख. पोहो। ग. पहुं। ९ ख. उथलूं। ग. उत्थलूं। १० ख. विणि। ११ ख. दिली। १२ ख. ग. दिसी। १३ ग. कहियो। १४ ख. ग. माहाराजा। १५ क. आगे। १५ ग. घरि। १७ ख. ग. जेणि। १८ ख. ग. जहांगीर। १९ ग. दषणी। २० ख. लूटीया। २१ ख. ग. बोलवाला। २२ ख. फते। २३ ग. सोहीज।

---

२८२. घाते – डाल कर, रख कर। कर – हाथ। सोच – चिंता। दिलेसुर – बादशाह। मोकळूं – भेज दूं। काथ – अथवा, या। पौहचाऊं – पहुँचा दूँ। अजळ – अति नीच, बहुत ही कमीना। भाजि – भाग कर। ऊबरै – बच जाय। दिवस – दिन। ऊथलूं – हटा दूं, पराजित कर दूं, गिरा दूं।

२८३. घर – वंश, कुल। आगै – पहले, पूर्व। गजबंध – महाराजा गजसिंह जोधपुर। नरेसुर – राजा, नृप। चाड – मदद, सहायता। भीम – सीसोदिया भीमसिंह। (वि वि. – परिशिष्टमें देखें)। लड़ि–युद्ध कर के। बोलबाला–विजय, अधिकार (?)। ईसांन – अहसान। सोईज – वही। मुणै – कहता है। भरोसै – सहारे पर, विश्वास पर।

बादसाह मुहम्मदसाहरी ओरसं महाराजा अभयसिंहजीनूं जुधारथ सहायता सारू धन अर अस्त्रसस्त्र देणा

ताज कुलह सिर पेंच, जरी तोरा जर कंबर[1]।
खंजर जमदढ़ खड़ग, पवग[2] सिरपाव फटाभर।
तई[3] लोक तावीन, तोपखांनां[4] गजवांणां[5]।
सभे[6] साह बगसीस, लाख[7] इकतीस खजांनां।
अहमदाबाद[8] दीधौ[9] उतन, असपति सोच उथालियौ[10]।
ईखतां दोइ[11] राहां 'अभौ', होय विदा इम हालियौ[12] ॥ २८४

महाराजा अभयसिंहजीरौ डेरां आंणौ अर अहमदाबादरै जुद्धरी खबर चारों ओर फैलणी

*गज चढ़ि डेरां गयौ[13], निहस बाजतां[14] नगारां।
बात उडे चहुं वळां[15], खबरदारां हलकारां[16]।

---

१ ख. कंव्वर। ग. कम्मर। २ ग. पमंग। ३ ग. तइ। ४ ख. ग. तोबषांनां। घ. तोबरषांना। ५ ख. जगवानां। ग. गजबाना। ६ ग. सभै। ७ ख. ग. लाष। ८ ख. ग. अमदावाद। ९ ग. दीधो। १० ख. ग. उथालीयौ। ११ ख. ग. दोय। १२ ख. ग. हालीयौ।

*इससे पहले ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न कवित्त छप्पै मिला है—
'पठां डार मझि प्रचंड, हले हेकल करि होफर।
मुकनांग यां दांमाहि, गयंद दताळ पटाभर।
अनि सिघां मझि अडर, दुरत नरसिंघ बहादर।
पीयण जहर मलपियौ, जांणि सिव थटां जटाधर।
वौहौ सस्त्र विनां पौहौ सस्त्र बंध, किलम विलंद सिर कोपीयौ।
अंबपास अमीरां मझि 'अभौ', इम मल्हपंतौ ओपीयौ ॥'

१३ ख. अयौ। ग. आयौ। १४ ख. वाहस बाजतां। १५ ग. वळां। १६ ख. हरकारां।

---

२८४. ताज – मुकुट कुलह – (?)। जरी – सोने-चांदीका बना हुआ। तोरा–तोड़ा, पैरका आभूषण विशेष। जर कंबर – (?)। खंजर – शस्त्र विशेष। जमदढ़ – कटार विशेष। पवंग – घोड़ा। पटाभर – हाथी। तावीन = तईवीन – आधीन। तोपखांनां – तोप चलानेका सामान। गजवांणां – (?)। दीधौ – दिया। उतन – देश। उथालियौ – मिटा दिया। ईखतां – देखते हुए। अभौ – महाराजा अभयसिंह। विदा – कूच। हालियौ – चला, प्रस्थान किया।

२८५. डेरां – ठहरनेका स्थान। निहस – जोशपूर्ण। बात··वळां – चारों ओर फैल गई। खबरदारां – समाचार ले जाने वालों। हलकारां – दूतों।

देस देस सिरहदां[1], समाचारां तफसीलां[2]।
किया[3] विदा कासीद, आप आपणां उकीलां।
'अहमँद' सतार[4] गढ़ वात ऐ[5], पमंग डाक खत पूजिया[6]।
तिणवार 'विलंदै' 'साहूतणा[7]', धड़क[8] जीव उर धूजिया[9] ॥ २८५

चढ़े सभे चतुरंग, तिकण मौसर[10] 'अभपत्ती'[11]।
तोप कठठि[12] गज टिलां, जूट धवलां[13] सांजत्ती[14]।

महाराजारो दिलीसूं विदा होय जयपुर आवणो

बूग[15] छडालां[16] खिवै[17], होय नक्कीवां[18] हाकां[19]।
हुय[20] दळवळ[21] हाथियां[22], धसळ ऊडंड[23] धसाकां[24]।
मुरतवा, तौग[25] नेजां महीं, धज[26] बहरक फरहर धजां[27]।
दळहिले[28] एम मुरधर दिसी[29], समंद ऊझळै[30] जळसजां ॥ २८६

---

१ ख सिरहद्दां। ग. सरहदां। २ ख. तपसीलां। ३ ख. कीया। ४ ख. ग. सितार। ५ ख. ग. वातए। ६ ग. पूजीया। ७ ख. साहूतणा। ८ ख. धडकि। ९ ख. ग. धूजीया। १० ग. मोसर। ११ ख. अगपती। १२ ख. ग. कठटि। १३ ख. ग. धमलां। १४ ख. साझंती। ग. साझत्ती। १५ ख. वूंग। १६ क. छडालें। ग. छडाळां। १७ ख. पीवै। ग. पिवे। १८ ख. नववीवां। ग. नकीवां। १९ ख. ग. होय। २० ख. हलवल। ग. हळवळ। २१ ख. हाथीयां। २२ ख. ऊडडंक। ग. ऊडडत। २३ ख. ग. पचाकां। २५ ख. ग. तोग। २६ ख. ग. धज फरहर बहरक। २७ ख. जधां। २८ ख. ग. दलहले। २९ ख. दिली। ३० ख. उभलले। ग. ऊझले।

---

२८५. तफसीलां – तफसील, विस्तृत वर्णन। कासीद – सन्देशवाहक। उकीलां – वकीलों। अहमँद – अहमदाबाद। सतार – सतारा नगर। धड़क – भयभीत होकर। धूजिया – कम्पायमान हुए।

२८६. चतुरंग – चतुरंगिणी सेना। मौसर – अवसर, मौका। अभपत्ती – महाराजा अभयसिंह। कठठि – ध्वनि विशेष करते हुए चली। टिलां – टक्कर, आघात। जूट – युग्म, दो। धवलां – बैलों। सांजत्ती – सामान, उपकरण। बूग – भालों की नोंक। छडालां – भालों। खिवै – चमकती है। हाकां – आवाज। दळवळ – तैयारी। धसळ – घोड़ेका जोश या मस्तीमें होनेका भाव। ऊडंड – घोड़ा। धसाकां – (?)। नेजां – भालों। धज – ध्वजा। बहरक – भालेकी नोंकके साथ बंधी रहने वाली छोटी झंडी या ध्वजा। फरहर – फहरा कर। दिसी – तरफ, ओर। ऊझळै – उमड़ता है।

चमर हुतां चौसरां, मेघ-डंबर[1] झड़ माया।
करहरतां[2] कोतलां, दळां पौरस[3] दरसाया।
राग रंग डंबरां, अतर केसरां अपारां।
जयगढ़हूंत नजीक[4], वणै[5] भूपति जिणवारां।
विलकुलै[6] वधाईदार[7] वधि, आणंद उछब[8] अथाह सूं।
आगम्म[9] खबर[10] 'अभसाहरी', जाय कहै 'जैसाह'[11]'सूं'* ॥ २८७

जयपुरमें महाराजा अभयसिंहजीरै स्वागतरी तैयारीरौ वरणण

कवित्त[12] दोढ़ौ

सुणि अविया[13] वह[14] सुधन, दुझल वध्धाई[15] दारां।
सझे अवासां[16] डंवर, चित्र अवछाड़ि[17] वजारां।
चादर हौज फुंहार, जळां भरि अतर खजांनां।
रचि चिगं पड़दा जरी, सरव[18] वज्जवे[19] सदांनां[20]।
ठांम ठांम विछि गिलम, विमळ आरांम वणाया।
वाग जयनिवासरा, माग कुमकुमे[21] छँटाया।

---

१ ग. मेघडंब्बर। २ क. फरहरतां। ३ ख. पोरस। ४ ख. निज। ५ ख. ग. वणे। ६ ख. विलिकुले। ग. विलकुले। ७ ग. वधाईदार। ८ ख. ग. उछव। ९ ग. आगगम। १० ग. पवरि। ११ ग. जयसाहसु।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है।

१२ ख. दोढ़ौ कवित। ग. प्रतिमें यह शीर्षक नहीं है। १३ ख. ग. अवीया। १४ ख. वहौ। ग. वहौ। १५ ख. ग. वधाई। १६ ख. आवासां। १७ ख. ग. अवछाड। १८ ख. ग. सरस। १९ ख. वजवे। ग. वजवि। २० ख. ग. सादांनां। २१ ख. ग. कुमकुमै।

---

२८७. चौसरां – चारों ओर। मेघडंबर – मेघाडंबर, एक प्रकारका छत्र। करहरतां – उछल-कूद करते हुए। जयगढ़हूंत – जयपुरसे। विलकुलै – त्वरा करते हैं। वधाईदार – मांगलिक संदेश देने वाला, खुश-खबरी देने वाला। अभसाहरी – महाराजा अभयसिंहकी। जैसाह – सवाई राजा जयसिंह।

२८८. अविया – दिये। सुधन – श्रेष्ठ धन। वध्धाई दारां – खुशखबरी देने वालोंको। अवासां – भवनों। डंवर – सजावट। अवछाड़ि – (?)। चिग – चिलमन। वज्जवै – बजाये जाते हैं। सदांनां – शादियाना, मांगलिक वाद्य। ठांम – स्थान। गिलम – गद्दे। माग – मार्ग। कुमकुमे – कुंकुम, केसर। छंटाया – छिड़काये।

चतुरंग वणाय गजराज चढ़ि, वजित्र[1] अनेक वजाविया[2]।
'जैसाह' उछब[3] इम करि जदिन, 'अभमल' सांमा[4] आविया[5] ॥ २८८

दोनों राजावांरो मिळणो

छप्पय कवित्त

मिळे दहूं[6] महिपती[7], हेत मनुहार हुलासां।
चढ़े मेघ-डंबरां, प्रगट उच्छाह[8] प्रकासां*।
हुतां[9] चमर हालिया[10], अधिक रंगराग उछाहां।
जोए सहर जळूस[11], उरड़ गहमह उच्छाहां[12]।
तदि द्वार[13] जयनिवासतणै[14], आय[15] गजांहूं ऊतरै[16]।
तिणवार[17] तास जरकसतणा[18] तणा, वर पगमंडा विसतरै[19] ॥ २८९

दोनों राजावांरों जयनिवास वागमें पधारणो

वाग[20] तांम वरियांम, दहूं[21] आए चढ़ि[22] डंबर[23]।
कारंजां चादरां, नीर धरहरे विहत्तर।
एक[24] साथ[25] अन्नेक[26], फबै धरहरै फुहारां।
विमळ पुहप[27] विसतरे[28], भमर भणहणे गुँजारां।

---

१ ग. वाजित्र। २ ख. वजावीया। ३ ख. उछव। ४ ख. सांम्हां। ५ ख. आवीयों। ६ ख. ग. दुहुं। ७ ख. महपती। ८ ग. उछाह।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं हैं।

९ ख. हुंता। १० ख. हालीया। ११ ग. जासूस। १२ ख. ग. अणथाहां। १३ ख. ग. द्वारि। १४ ख. ग. जैनिवासहतणा। १५ ख. आइ। १६ ख. उतरे। ग. उतरै। १७ ग. तिणिवार। १८ ख. ग. जैसाहतणा। १९ ख. विसतरे। ग. विस्तरे। २० ख. वागि। २१ ख. दुहुं। २२ ख. सजि। ग. सझि। २३ ख. डंवर। ग. डंब्बर। २४ ख. एकणिसा। ग. एकणि। २५ ग. साथि। २६ ख. ग. अनेक। २७ ख. पहोप। ग. पोहप। २८ ग. विस्तरै।

---

२८८. चतुरंग – सेना। वजित्र – वाद्य। जैसाह – सवाई राजा जयसिंह।

२८९. महिपती – राजा। उरड़ – साहस। गहमह – भीड़, समूह। तास – कपड़ा विशेष। पगमंडा – पांवडा। विसतरै – फैलाये गये।

२९०. डंबर – हर्ष, उमंग, (?)। कारंजां – (?)। विहत्तर – ठीक। धरहरै – ध्वनि करते हैं। पुहप – पुष्प, फूल। भणहणे – भौंरे गुंजन (ध्वनि) करते हैं। गुँजारां – भौंरोंकी आवाज।

छत्रपती साह[1] तदि[2] हुव छभा, छक रंग उच्छव[3] छाजिया[4] ।
महपती दहूं[5] मुकत्तीमहलि[6], वांणिकहूंत विराजिया[7] ।। २९०

अँवर गुलाबी अतर[8], वँटे[9] विध[10] विध जिणवारां ।
मँडे अधिक मनुंहार, अमल वँटि मुफर अपारां[11] ।

दोनूं राजावांरौ अपणा सुभटांरै साथ भोजन करणौ

करै पांति[12] चौसरी, जरी तांणियां[13] सिमांनां ।
उठै[14] भूप आविया[15], थंभ दुहुं[16] हिंदुसथांनां[17] ।
पांतियां[18] विराजे तांम पह[19], महा उछव[20] गह मांनियां[21] ।
पनवाड़ि[22] पात्र थंडे पवित्र, मँडे वडी[23] महमांनिया[24]* ।। २९१

चँडी भोग चत्रअसी, भात चत्रअसी पुहप[25] भर[26] ।
पुड़ी[27] अस्ट[28] परकार[29], अनै आचार अपंपर ।

---

१ ख. ग. सहत । २ ख. ग. दुहुंवै । ३ ख. उछव्र । ग. उछक । ४ ख. ग. छाजीया । ५ ख. ग. दुहुं । ६ ख. ग. मुकतिमहल । ७ ख. विराजीया । ८ ग. अंतर । ९ ग. वंटे । १० ख. ग. विधि विधि । ११ ग. अणपारां । १२ ख. पांति । १३ ख. ग. तांणीयां । १४ ख. उभै । ग. उठे । १५ ख. ग. आवीया । १६ ग. दुहू । १७ ख. ग. हींदुसथांनां । १८ ख. पांतीयां । ग. पांतीयै । १९ ख. पोहो । ग. पौहो । २० ख. ग. उछव । २१ ख. ग. मांनीयां । २२ ग. पनवाड । २३ ग. कडे । २४ ग. महमानीयां ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

२५ ख. पोहोप । ग. पौहोप । २६ ग. भरि । २७ ख. पुडी । २८ ख. असट । ग. अष्ट । २९ ग. प्रकार ।

---

२९०. छत्रपती – राजा । साह – बादशाह । छभा – सभा । छक – हर्ष । रंग – आनन्द । छाजिया – सुशोभित हुए । मुकत्ती-महलि – मोतीमहल । वांणिकहूंत – शोभासे, सुंदरतासे । विराजिया – शोभायमान हुए ।

२९१. अंवर – एक सुगंधित वस्तु, यह ह्वेल मछलीकी अंतड़ियोंमें जमा हुआ एक पदार्थ है जो हिन्दुस्तान, अफ्रीका और ब्राजीलके समुद्री किनारे पर बहती हुई पाई जाती है । अमल – अफीम । मुफर – मनमें उमंग और उल्लास उत्पन्न करने वाला, वह औषध जो हृदयको आनंदित करे, मुफरेह । पांति – पंक्ति । चौसरी – चार पंक्तियोंकी । थभ=स्तंभ – रक्षक । पांतियां – भोजन करते समय बैठनेके लिये बिछाया जाने वाला कपड़ा । पनवाड़ि – (?) । थंडे – एकत्रित किये गये ।

२९२. चँडी भोग – मांस । चत्रअसी – चौरासी प्रकारके । भात – पकाए हुए चावल । अनै – और । अपंपर – अपार, असीम ।

पनरह सत प्रकवांन, पाक अड़तीस प्रमांणै[1]।
सरसा[2] साग बतीस[3], जियां[4] संख्या बहु[5] जांणै[6]।
कनंक[7] चौक[8] थाळह कनक[9], सांमिल दहूं[10] नरेसुरां[11]।
सासत्रां[12] जेम भोजन सतर, रीति आदि राजेस्वरां[13] ॥ २९२

तांम छौळ[14] घ्रततणी[15], वणै[16] ऊपरां बहौतरि[17]।
छकै मसालां डमर[18], तकै सौरंभां[19] अम्मरि[20]।
जीमै[21] पह[22] इण जुगति, सहत भड़ थटां कवेसर[23]।
तवन सुजळ करि तई, पांन कप्पूरह[24] हाजर।
कुण कहै पार वरणण सुकवि, जीमण तदि[25] वणिया[26] जिसौ[27]।
आंबेर[28] करै जोधांणनूं, कहौ तेण[29] अचिरज किसौ[30] ॥ २९३

महाराजा अभैसींघजी अर जैसींघजीरी आपसरी सलाह

इण[31] उछाह 'अभमाल', सभै[32] 'जैसाह'[33] सकाजा।
रहे केक दिन रचे, मिळे राजा महाराजा*।
रचे एम मचकूर, भुजा आपणां दिली भर।
जिसौईज[34] करि जबत, करां सोबा सर पद्धर।

---

१ ख. ग. प्रमांणे। २ ख. ग. सरस। ३ ख. ग. छतीस। ४ ख. जीयां। ५ ख. वहु। ग. बहौ। ६ ख. जांणे। ७ ग. कनक। ८ ख. ग. चोक। ९ ख. कनंक। १० ग. दुहुं। ११ ख. ग. नरेस्वरां। १२ ग. सास्त्रां। १३ ख. राजेश्वरां। १४ ग. छोळ। १५ ख. घततणी। १६ ख. ग. वणे। १७ ख. विहौतर। ग. वहौतर। १८ ख. डंवर। ग. डंवरं। १९ ख. सोरंभा। २० ख. अंम्मर। ग. अम्मर। २१ ख. जीमें। ग. जीमे। २२ ख. ग. पौहौ। २३ ख. ग. कवेसुर। २४ ग. कपूरह। २५ ग. तद। २६ ख. वणीया। ग. वणियां। २७ ख. ग. जसो। २८ ख. मे आमेर। ग. आंमेर। २९ ग. तिण। ३० ग. किसो। ३१ ख. ग. इन। ३२ ख. ग. सझे। ३३ ख. जेसाह। *यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है। ३४ ग. जिसोइज।

---

२९२. सरसा – रसपूर्ण। कनंक चौक – (?)। थाळह – स्थाल, भोजन करनेका बड़ा वर्तन। कनक – स्वर्ण, सोना। नरेसुरां – नरेश्वरों, राजाओं।

२९३. छौळ – प्रवाह, धारा। डमर – महक, सुगंध। तकै – ताकते हैं। सौरंभां – सुगंध, महक। अम्मरि – देवता। तवन – (?)। अचिरज – आश्चर्य। किसौ – कौनसा।

२९४. मचकूर – सलाह। (?)। भर – भार, उत्तरदायित्व। पद्धर – सीधा।

करि इम सलाह हित सीख करि, निडर तपोबळ[1] अनि नभौ[2]।
दिस[3] दखिण 'जसै' डेरा दिया[4], उतन दिसी[5] चढ़ियौ[6] 'अभौ' ॥ २६४

वधै[7] वंब[8] त्रंबाळ, वधे दळहले वधायक[9]।
उछव[10] वधे अणपार, वधे पातां[11] जस वायक।
भड़[12] वधे[13] छक भळळ, उछव[14] चित वधे[15] उमंगां।
वधे डांण मदभरां, पांण वह[16] वधे पमंगां।
गहतंत वधे फौजां लगस, वधे विनोद विळक्कुळे[17]।
'बखतेस' वधाई दियण वधि[18], ओठी वधिया[19] अग्गळे ॥ २६५

ऊंटांरो वरणण

वहै[20] साज वींटिया[21], विहद मुखमलां वनातां।
रेसम तँग मुहरियां[22], तखी[23] दुरखी[24] दरसातां।
सपनै कवु[25] न सुहाय, आच धारकां उताळां।
रुख फण अहि रोसंग, कंध राखिया कमाळां*।

---

१ ख. ग. तपोबल। २ ग. लभौ। ३ ख. ग. दिसि। ४ ख. ग. दीया। ५ ग. दिसि। ६ ख. चढ़ी चढ़ीयौ। ७ ख. ग. वधै। ८ ख. वंब। ९ ग. वधायक। १० ख. ग. उछव। ११ ख. पाता। ग. पांतां। १२ ख. ग. भडां। १३ ख. वधे। ग. वधे। १४ ख. ग. उछव। १५ ख. वधि। १६ ख. वहौ। ग. वहे। १७ ख. ग. विलकुले। १८ ग. विधि। १९ ख. ग. वधीया। २० ग. वहै। २१ ख. वींटीया। ग. वींटिया। २२ ख. मौंहोरीयां। ग. मौंहोरियां। २३ ख. लंपी। २४ ख. ग. सुरपी। २५ ख. कच। ग. कंच। *यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है।

---

२६४. जसै – सवाई राजा जयसिंह। उतन – वतन, जन्मभूमि। अभौ – महाराजा अभयसिंह।

२६५. वंब – नगाड़ा या नगाड़ेकी ध्वनि, वीरोंका उत्साहपूर्ण नाद। त्रंबाळ – नगाड़ा। वधायक – विशेष। अणपार – अपार, असीम। पातां – चारण कवियों। भड़ – योद्धा। छक – जोश। भळळ – तेज। डांण – हाथी, सिंह, ऊंट आदिके गर्दनसे टपकने वाला रस। मदभरां – हाथियों। पांण – शक्ति, बल। पमंगां – घोड़ों। गहतंत – मस्त, जोशपूर्ण। लगस – फौजकी टुकड़ी, सेनाका गतिमें लंबायमान होना। विळक्कुळे – प्रफुल्लित होते हैं। बखतेस – महाराजा अभयसिंहके छोटे भाई बखतसिंह। ओठी – शुतुर-सवार। अग्गळे – अगाड़ी।

२६६. साज – ऊंट, घोड़ा आदिके जीनके उपकरण। वींटिया – आवेष्ठित। विहद – अपार। वनातां – कपड़ा विशेष। मुहरियां – ऊंटको नाकसे बांधनेकी रस्सियां विशेष। तखी – ऊंटकी पीठ पर चारजामाके नीचे डाली जाने वाली गद्दी विशेष। दुरखी – दो तह। आच – हाथ। उताळां – तेज, त्वरायुक्त। रुख – ढंग, पुकार। अहि – सर्प, नाग। रोसंग – रोष या जोशपूर्ण। कमाळां – ऊंटों।

छच्छौह[1] पायगछ छड़हड़ा, धुरा विरद करवत धरा।
करि धाव जाव[2] इसड़ा तिकै[3], पाव घड़ी जोजन परा ॥ २९६

महाराजा अभैसींघजी अर वखतसींघजीरौ माहोमाह मिळणौ

आरोहक अैहड़ा, वेग आविया[4] वछेकां।
'वखत'[5] वधाई व्रवी[6], उरड़ धन लहे[7] अनेकां।
आणंद सुणि अधिराज, मिळण आए[8] सझि घूमर[9]।
हुय[10] सनेह वह[11] हरख, सुपह इम मिळे पवैसर[12]।
तदि[13] जोड़ रांम लछमणतणी, विध[14] वांणक[15] विसतारिया[16]।
वह[17] कळस वांदि[18] धर[19] रजत वह[20], पह[21] मेड़तै पधारिया[22]॥ २९७

महाराजा अभैसींघजीरौ जोधपुर दिस आगमन

सझे झळूसां साज, वाजराजां[23] गजराजां।
सझे[24] ऊंच पौसोक[25], सरव विध[26] राज समाजां।

---

१ ख. ग. छछोह। २ ख. ग. जाय। ३ ख. तिके। ग. जिके। ४ ख. आवीया। ५ ख. वषत। ६ ख. ग. व्रवे। ७ ग. लहै। ८ ग. आऐ। ९ ख. घुंमर। ग. घुम्मर। १० ख. ग. होय। ११ ख. वहौ। ग. वोहो। १२ ख. पवैसर। ग. पवेसर। १३ ख. ग. तदि। १४ ख. ग. विधि। १५ ख. ग. वांणिक। १६ ख. विसतारीया। ग. विस्तारिया। १७ ख. वौहौ। ग. बौहौ। १८ ख. वांधि। ग. वंदि। १९ ख. ग. धरि। २० ख. वौहौ। ग. वौहै। २१ ख. ग. पौहौ। २२ ख. ग. पधारीया। २३ ग. वीजराजां। २४ ग. सझै। २५ ख. पौसक। २६ ग. विधि।

---

२९६. छच्छौह – तेज। पायगछ – (?)। छड़हड़ा – (?)। धुरा – पूर्व, पहिले। विरद – विरुद। करवत धरा – भूमिको काटने वाला आरा, ऊंट। धाव – दौड़। जाव – जाना।

२९७. आरोहक – सवार। अैहड़ा – ऐसे। वेग – शीघ्र। वछेकां – (?)। वखत – वख़्तसिंह। वधाई – मांगलिक संदेश देने वालेको दिया जाने वाला पुरस्कार। व्रवी – दी। उरड़ – जोश। अधिराज – राजाधिराज महाराजा वखतसिंह। घूमर – दल। पवैसर – मानसरोवर। वांणक – ढंग, प्रकार। कळस वांदि – वधाने वाली स्त्रीके शिर पर धरे हुए कलशका अभिवादन कर के। रजत – चांदी। पधारिया – आये।

२९८. झळूसां – जुलूसों, समारोहों। वाजराजां – घोड़ों। गजराजां – हाथियों।

क्रसटवाळ[1] केसरां, करै[2] वहु[3] चढ[4] उजाळां ।
केसरिया[5] वहु[6] करै[7], मसत उच्छव[8] मतिवाळां[9] ।
अ्रगनाभ[10] अतर सौंधा[11] अ्रमळ[12], वँटि[13] अरगजा वळोवळां[14] ।
जदि चढ़े अनुज अग्रज गजां, हुतां हाल किलोहळां[15] ॥ २६८

हळाबोळ[16] चतुरंग, जळाबोळां[17] केसरियां[18] ।
हाकां खंभायचां[19], डोह उच्छव[20] डंबरियां[21] ।
अति घण[22] मोला[23] अतर, तई[24] म्रिगमद[25] घण तन्नां[26] ।
झोला सुगँध समीर, पड़ै[27] झोला जोजन्नां[28] ।
वाजंत[29] तबल गाजंत गज, इम दळ हलै अपालरौ[30] ।
जोधांण दिस्स[31] चढ़ियौ[32] जदिन[33], एम 'अभौ' 'अजमाल'रौ* ॥ २६९

---

१ ख. ऋसटवाल । २ ग. करे । ३ ख. वहौ । ग. वहौ । ४ ख. चडे । ५ ख. ग. केसरीयां । ६ ख. ग. वहौ । ७ ख. करे । ८ ख. उछव । ग. उछाव । ९ ख. ग. सतिवालां । १० ख. ग. मृगनाभ । ११ ख. सोधा । १२ ख. प्रवल । १३ ग. बंटि । १४ ख. वलोवलां । ग. वळोवळां । १५ ख. ग. कलोहळां । १६ ख. हलामोल । क. हलावोल । १७ ख. जलावोला । क. जळावोळां । १८ ख. ग. केसरीयां । १९ ख. पंभाइचां । क. पंभायचां । २० ख. ग. उछव । २१ ख. ग. डंवरीयां । २२ ख. घणा । २३ ख. ग. मूला । २४ ग. तेई । २५ ख. ग. मृगमद । २६ ख. तनां । २७ ख. पडे । २८ ख. जोजनं । २९ ग. वाजंत । ३० ख. अजमालरौ । ग. अभमालरौ । ३१ ग. दिसी । ३२ ख. चढ़ीयौ । ३३ ग. जदि ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

---

२६८. क्रसटवाळ – (?) । सतिवाळां – मस्त । अ्रगनाभ – किस्तूरी । सौंधा – सुगंधित पदार्थ विशेष । अ्रमळ – महक । वळोवळां – चारों ओर । अनुज – छोटा भाई । अग्रज – बड़ा भाई । किलोहळां – कोलाहल ।

२६९. हळाबोळ – बहुत, अपार । चतुरंग – सेना, दल । जळाबोळां – तरबतर, सराबोर । हाकां – आवर्ता । खंभायचां – खम्माच रागिनी, यह मालकोश रागकी दूसरी रागिनी है । यह रातके दूसरे पहरमें पिछली घड़ी में गाई जाती है । डोह – आनंद । डंबरिया – बाहुल्यता, समूह । अति-घण-मोला – अत्यन्त बहुमूल्य । म्रिगमद – कस्तूरी । तन्नां – (?) । झोला – प्रवाह । समीर – हवा । जोजन्नां – योजनों । अपालरौ – बेरोकटोकका, अपार । दिस्स – तरफ, ओर । अभौ – महाराजा अभयसिंह । अजमालरौ – महाराजा अजीतसिंहका ।

डाक तबल मुरसलां, हाक इतमांम जसोलां[1] ।
चंद[2] गोळ बाजुवां[3], हुवै रंगराग हरोलां[4] ।
हुवै[5] भ्रपट चंम्मरां[6], नाद हुवै[7] पैनायक ।
कोतल उछटां करै, नटां भ्रपटां है[8] नायक ।
आवंत लोक सनमुख अनँत, करि सलांम नजरां[9] करै ।
आवियौ[10] 'विभौ' धरि[11] इंदरौ, 'अभौ'[12] उतनगढ़ आपरै ॥ ३००

केसरियां[13] दळ कमध, एम मुरधरपति आया ।
वंदि[14] कळस वर तरणि, भार द्रब[15] कळस भराया ।
तोरण[16] चित्र जर तार, सहर बाजार सिंगारे ।
वर[17] नौबति[18] वाजतां, महिल[19] महाराज[20] पधारे ।
जागियौ[21] भाग जोधांणरौ, रंगराग[22] रळियांमणा[23] ।
हुय हरख विमळ उच्छब[24] हुवै, मंगळ धमळ वधांमणो ॥ ३०१

---

१ ग. जसौलां । * रेखांकित पद्यांश ख. प्रति में नहीं है ।
२ क. चंधि । ३ ग. वाजवां । ४ ग. हरौलां । ५ ग. ह्वै । ६ ग. चमरां । ७ ख. ग. हूवै । ८ ग. वै । ९ ग. निजरां । १० ख. आवीयौ । ११ ख. ग. धरीयांस यंद । १२ ग. अभो । १३ ख. ग. केसरीयां । १४ ख. ग. वांदि । १५ ख. द्रव । ग. द्रव्य । १६ ख. तुरण । १७ ग. बर । १८ ग. नांबति । १९ ख. ग. महलि । २० ख. ग. माहाराज । २१ ख. जागियौ । ग. भ्रागियौ । २२ ख. रंगराज । २३ ख. ग. रळयांमणा । २४ ख. ग. उछव ।

---

३००. डाक – डंका, वाद्य विशेष । तबल – वाद्य विशेष । मुरसलां – वाद्य विशेष । इतमांम – (?) । जसोलां – यश-गायक । चंद – सेनाका वह भाग जो सेनाके पीछे रक्षार्थ रहता हो चंदावल । गोळ – सेनाका मध्य भाग । बाजुवां – इर्द-गिर्द, बाजूमें । हरोलां – सेनाका अग्र भाग, हरावल । भ्रपट – चंवर डोलानेका झोंका । पैनायक – वाद्य विशेष । कोतल – जुलूसमें अगाड़ी चलाया जाने वाला सजासजाया घोड़ा जिस पर कोई सवार न हो अथवा स्वयं राजाकी सवारीका घोड़ा । उछटां – उछल-कूद, चंचलता । नटां-भ्रपटां-है-नायक – (?) । नजरां – भेंट । विभौ – वैभव, ऐश्वर्य । अभौ – महाराजा अभयसिंह ।

३०१. तरणि – तरुणी, युवा स्त्री । भार – समूह । द्रब – द्रव्य, धन । तोरण – वे मालाएं आदि जो सजावटके लिए खंभों और दीवारों आदिमें बांध कर लटकाई जाती हैं, वंदनवार । जर – स्वर्ण, सोना, तार, चांदी । जागियौ भाग जोधांणरौ – जोधपुर नगरका भाग्य खुल गया, वह अहोभाग्य या कृतकृत्य हो गया । रळियांमणा – आनंदपूर्वक, हर्षसहित, मनोहर । मंगळधमळ – मांगलिक गायन । वधांमणा – वधाईके गीत

सझि बतीस[1] नव सात, मिळे सुकिया[2] जुथ मेळा।
वांणी कोकिल विमळ, चवै चंदवदन[3] सचेळा।
गहर न्रत्त[4] गायणी, करै[5] उच्छव[6] अधिकारां।
महा[7] चित्रमिंदर[8], वसे[9] 'अभमल' जिणवारां।
नवरँग सनेह आणंद[10] नव, उझळ[11] प्रफूल[12] उझाळ सूं[13]।
रतिराज जोड़ नर[14] रज्जिए[15], महाराज[16] अभमाल सूं[17] ॥ ३०२

निस वीती[18] आणंद[19], उदत[20] सूरज उणवारे।
आय गौख[21] अैमास[22], नरिंद निज नगर निहारे॥
राजतिलक मौसरां, फतै नागौर[23] फवाई[24]।
जदि जदि दीठौ[25] जिसौ[26], उणां[27] हूंता अधिकाई।
तीसरी वार गढ़ सहर[28] तदि, ईखे अधिक अडंबरां।
तीसरै बोल[29] जेठातणै, अधिक चढ़े[30] रँग अंबरां[31] ॥ ३०३

---

१ ख. ग. छतीस। २ ख. सुकीया। ३ ख. चंद्रवदन। ग. चंदवदनी। ४ ख. नृत। ग. नृति। ५ ख. करे। ६ ख. ग. उछव। ७ ख. ग. संवेसन। ८ ख. ग. चित्रमंदिर। ९ ग. वसै। १० ग. आनंद। ११ ख. उछव। ग. उत्छव। १२ ख. ग. प्रफुल। १३ ग. उझाळसौ। १४ ग. नह। १५ ग. रजीए। १६ ग. माहा-राजा। १७ ग. अभमालसौ। १८ ख. विती। १९ ख. आणंदमैं। ग. आनंदमे। २० ख. ग. उदित। २१ ग. गोष। २२ ख. अैम्मस। २३ ख. नागोर। २४ ख. फबाई। २५ ग. दीठो। २६ ख. जिसै। २७. ख. वेण। ग. वैण। २८ ग. सहरि। २९ ख. वोल। ग. वौल। ३० ख. चढ़ै। ३१ ख. ग. अंम्मरां।

---

३०२. सझि वतीस नव सात – वत्तीस प्रकारके आभूषण और सोलह प्रकारके शृंगार करके। सुकिया – स्वकीया, पतिव्रता। जुथ – यूथ, समूह। मेळा – मिलाप। चवै – कहती है। चंदवदन – चंद्रमुखी। सचेळा – गंभीर, गांभीर्यपूर्ण। नृत – नृत्यका। अधिकारां– विशेष। महा चित्र मिंदर – महा चित्रमहल। अभमल – महाराजा अभयसिंह। नवरँग···आणंद नव – नये ही आनंद और नवीन ही स्नेह से। उझळ – उमड़ कर। प्रफूल – प्रफुल्लित। रतिराज – कामदेव। जोड़ – समानता। अभमाल – महाराजा अभयसिंह।

३०३. निस – रात्रि। उदत – उदय। अैमास – भवन, आवास। नरिंद – नरेन्द्र, राजा। मौसरां – श्मश्रुके बाल, अवसर। ईखे – देखा। अडंबरां – आडंबर, शोभा, सजावट। बोल – वचन, शब्द। जेठातणै – जेष्ठके।

भड़ घड़जै[1] भूपाळ, कड़ा मोतियां[2] वधारां।
असि सिरपाव अपार, दीध करि[3] कुरब अपारां[4]।
सोख घरां दिस[5] सभै, तवे[6] इम हुकम तवांनां।
सझि आवौ[7] सांमांन[8], जदिन अखै परवांनां।
जो हुकम कहै[9] पगवंदि जदि, एम सुभड़ घर[10] आविया[11]।
कमधेस तांम मोती कड़ा, सघण जेम वरसाविया[12] ॥ ३०४

कविराजा करि कुरब, तुरंग सिरपाव ध्रवे तदि।
समपे गज सांसणां, जड़ित नग कड़ा मुकत[13] जदि[14]।
हेत नजर[15] करि हरख, कहै[16] ऊचरे[17] हुकम्मां।
दै[18] असीस विरदाय, करे सिल्लांम[19] कदम्मां[20]।
हुय[21] विदा हले[22] बह[23] चित हरख, निज गुण कहत नरेसुरां।
डहकंत प्रथी[24] देखे डँबर[25], राजेस्वरां[26] कवेसुरां ॥ ३०५

जोख[27] एम जोधांण, रीझ मंडे महाराजा।
वागां गोठ वणाव, सझै[28] उच्छाह[29] सकाजा।

---

१ ख. ग. पूजै। २ ख. मोतीयां। ३ ग. कर। ४ ख. ग. उदारां। ५ ख. दिसि। ६ ग. तवै। ७ ख. आयौ। ८ ख. ग. सामांन। ९ ख. कहे। १० ख. ग. घरि। ११ ख. आवीयां। १२ ख. वरसावीया। १३ ख. मुगति। ग. मुगत। १४ ख. तदि। १५ ग. निजर। १६ ख. कहे। १७ ख. उच्चरे। ग. उच्चरै। १८ ख. ग. दे। १९ ग. सिलांम। २० ख. कद्दंमां। ग. कदंमां। २१ ख. ग. होय। २२ ख. हल्ले। २३ ख. वहौ। ग. वहौ। २४ ख. ग. प्रिथी। २५ ख. डंमर। २६ ख. ग. राजेसुरां। २७ ख. ज्योष। ग. जोष। २८ ग. सझै। २९ ख. ग. उछाह।

---

३०४. घड़जै – घड़ाते हैं। वधारां – विशेष, जागीर। दीध – दिये। कुरब – प्रतिष्ठा। तवे – कहा। तवांनां – नुकसानका मुआवजा, क्षति-पूर्ति, तावान। सझि – सुसज्जित होकर। परवांनां – हुक्म, आज्ञापत्र। जो हुक्म – जैसी श्रीमान्‌की आज्ञा हो। सुभड़ – योद्धा। कमधेस – राठौड़ राजा। सघण – घन, बादल, यहां इंद्र अर्थ ठीक बैठता है।

३०५. तुरंग – घोड़ा। ध्रवे – दिये। सांसणां – राजा द्वारा चारणोंको पुरस्कारमें दी गई भूमि या गांव। जड़ित – जटित। मुकत – मोती, मुक्ता। असीस – आशीष। विरदाय – विरदा कर। डहकंत – हक्का-बक्का होता है। डंबर – (डंमर) वैभव। राजेस्वरां – राजाओं। कवेसरां – कवीश्वरों।

३०६. जोख – आनंद, हर्ष। रीझ – दान, पुरस्कार।

रचै रौस[1] रौसरी, कळा बहुतरि अधिकारां।
रमै कमंध राजिंद्र[2], रौस रौसरी सिकारां।
जेठी कुरंग मदझर जुटै, होय[3] इनांमां हुन्नरां[4]।
क्रीड़ा विलास विधविध[5] करै, अभौ 'इंद'[6] आडंवरां॥ ३०६

जळ चादर धरहरां, जोख[7] वागीचां जोवै।
रँग चौगानां रमैं, हरख औछव[8] नित[9] होवै।
रमै वसँत राजंद[10], पतंग चरखां[11] अप्पालां[12]।
केसर[13] छौळ[14] अबीर, गूंज[15] डंवरां गुलालां।
मंजलसां खास चौकी मँडै[16], अतर गुलावां अंवरां।
क्रीळा[17] विलास विधविध[18] करै, 'अभौ'[19] इंद[20] आडंवरां॥ ३०७

महाराजा अभैसींघजीरो अहमदावादरै जुध सारू आपरा सामंतांनूं फुरमांण भेजणा

विधविध[21] भोग विलास, करै[22] उच्छब[23] कौतूहळ।
पछै किया[24] छत्रपती[25], विदा फुरमांण चहूंवळ।

---

१ ख. चौसरांस। २ ख. राजेंद्र। ग. राज्येंद्र। ३ ग. हौय। ४ ग. हुंन्नरा। ५ ख. ग. विधिविधि। ६ ख. ग. इंद्र। ७ क. जौष। ८ ख. ग. उछव। ९ ख. नित्य। १० ख. ग. राज्यंद। ११ ख. ग. पिचरकां। १२ ख. ग. अपालां। १३ ख. ग. केसरि। १४ ख. ग. छोळ। १५ ख. डंभ। ग. डूंभ। १६ ख. ग. मडै। १७ ख. क्रीडा। १८ ख. विधि। १९ ग. अभो। २० ख. ग. इंद्र। २१ ख. ग. विधिविधि। २२ ख. करे। २३ ख. ग. उछव। २४ ख. ग. कीया। २५ ग. छत्रपत्ती।

---

३०६ रौस – (?)। राजिंद्र – राजेन्द्र, महाराजा। जेठी – पहलवान। कुरंग – घोड़ा (?)। मदझर – हाथी। क्रीड़ा – खेल। अभौ – महाराजा अभयसिंह। इंद – इन्द्र। आडंवरां – वैभव, ठाठ।

३०७. धरहरां – आवाज, ध्वनि। रंग – आनंद। औछव – उत्सव। चरखा – कनकौआका डोरा लपेटनेका उपकरण। छौळ – धारा। गूंज – (?)। डंवरां – समूह। मजलसां – मजलिसों, सभाओं। अंवरां – अंवर नामक सुगंधित पदार्थ। क्रीळा – क्रीड़ा, आनंद। अभौ – अभयसिंह। आडंवरां – वैभव, ऐश्वर्य।

३०८. विदा – रवानगी, प्रस्थान। फुरमांण – फरमान। चहूंवळ – चारों ओर।

वांदि[1] वांदि फुरमांण, सिलह पाखर करि सामां।
आय[2] सबै[3] उमराव, सूर बह[4] मिळे[5] समामां।
दळ चढ़े पूर सामंद्र[6] दुति, कमंध दरगह कांमरा।
फिर[7] मिळे[8] पदम अड्ढ़ार[9] कपि, रांवण मारण रांमरा॥ ३०८

ठांम ठांमसूं मारवाड़रा सांमंतांरौ जोधपुरमें एकठौ होवणौ

हुकम वजीरां[10] हुवा, करौ लसकर अधिकारां।
तर कलमां दफतरां, हुवै अन्नेक हजारां।
रहै लोक अणपार, हुवै घूमरां मुहल्लां[11]।
आवै रहै अनेक, भड़ज[12] भड़ भल्ला भल्लां[13]।
दादनी उरड़ झड़ मँडि दरब, मिळे[14] सबळ दळ मांमरा।
किर[15] मिळै पदम अड्ढ़ार कपि, रांवण मारण रांमरा॥ ३०९

दळ बादळ बळ देखि, मगज[16] धरि भूप महाबळ।
तांणि मूंछ खग तोलि, हुकम इम दीध[17] झळाहळ।

---

१ ग. वांदि वांदि। २ ख. आप। ३ ख. ग. आय। ४ ख. वहौ। ग. वहौ। ५ ग. मिलै। ६ ख. ग. सामंद। ७ ख. किरि। ग. करि। ८ ख. मिलै। ९ ख. अढ़ार। ग. अढ्ढार। १० ख. ग. उजीरां। ११ ग. महल्ला। १२ ख. ग. भिड़ज। १३ ग. भला भला। १४ ख. ग. मिलै। १५ ख. किरि। १६ ख. मगध। १७ ख. ग. कीध।

---

३०८. सिलह – कवच। पाखर –युद्धके समय घोड़े या हाथीको पहिनाई जाने वाली झूल, हाथी या घोड़ेका कवच। सांमां – सामान या सुसज्जित। समांमां – अनुकूल। दुति – द्युति, प्रकार, ढंग, (?)। दरगह – दरबार। किर – मानों। पदम – गणितमें सोलहवें स्थानकी संख्या, पद्म, जो इस प्रकार लिखी जाती है १०००००००००००००००। कपि – वानर।

३०९. वजीरां – मंत्रियों। लसकर – सेना, फौज। तर.........हजारां – (?)। घूमरां – दलों। मुहल्लां – मोहल्ला, कूचा। भड़ज – घोड़ा। भड़ – योद्धा। भल्ला भल्लां – बढ़िया से बढ़िया, एकसे एक उत्तम। दादनी – धन्यवाद की ? उरड़ – अधिक, बहुत, समूह। झड़ – निरंतर होने वाली वर्षा। दरब – द्रव्य, धन-दौलत। मांमरा – (?)।

३१०. दल-बादल – एक प्रकार का बहुत बड़ा तंबू या खेमा। मगज – गर्व। तांणि...... तोलि – मूंछ पर ताव देकर हाथमें तलवार उठा कर। दीध – दिया। झलाहल – रोबपूर्ण, जोशपूर्ण।

हुजदारां[1] आपरां, वेग[2] ताकीद करावौ[3] ।
दखिण गुजराति[4] दिसा, पेसखांना[5] पधरावौ[6] ।

फौजरो सांमान लेजाणै वाळा ऊंटांरौ वरणण

सिर वंदि[7] हुकम तिण हिज[8] समें, दिया[9] कारखांनां दुवा ।
कत्तार भार-वरदार कजि, हुकम सारवांनां हुवा ॥ ३१०

वुगर बलौच बँवाळ, जूंग जाळोरी[10] जव्वर[11] ।
अजगर कंध अभौभ[12], भ्रगुट[13] मुदगर[14] भैराहर[15] ।
जोल[16] खंभ देवळा[17], कमठ ईडर कठठंता ।
घण भरतां जळ घाट, माट जैही[18] कठठंता[19]* ।

---

१. ख. ग. हुजदारां । २ ख. वेगि । ३ ख. करावो । ४ ख. ग. गुजरधर । ५ ख पेसषांनो । ग. पेसषांनां । ६ ख. पधरावो । ७ ख. वांदि । ग. वांदि । ८ ख. ग. हीज । ९ ख. ग. दीया । १० ख. जालोरी । ११ ग. जवर । १२ ख. ग. अभझोझ । १३ ख. ग. भृगुट । १५ ख. मुरगर । १७ ग. भेराहर । १८ क. जौल । ग. जोळ । १९ ग. देवळां । २० ग. जेही । २१ ग. मटठंता ।

* यह पंक्ति ख. प्रति में नहीं है ।

---

३१०. हुजदारां – (?) । वेग – शीघ्र । ताकीद – शीघ्रता । पेसखांना – सेनाका वह सामान जो पहिलेही उसके अगाड़ी भेज दिया जाता है, पेशखेमा । पधरावौ – भेज दीजिये । कारखांनां – सरकारी विभाग, महकमा । दुवा – दुआ आज्ञा, हुक्म । भार-वरदार – भारवाहक । कजि – लिये । सारवांनां – शुतर-सवारों ।

३११. वुगर – एक प्रांत विशेष जहांके ऊंट बढ़िया होते हैं अथवा इस प्रांतका ऊंट । बलौच – बिलोचिस्तान या बिलोचिस्तानका ऊंट । बंवाल – तेजस्वी, तेज । जूंग – ऊंट । जाळोरी – जालोर प्रांतका । जव्वर – जबरदस्त । कंध – कंधा, स्कंध । अभौभ – बड़ा । भ्रगुट – मस्तक । मुदगर – काठका बना एक प्रकारका गावदुमा दंड जो मूठकी ओर पतला और आगेकी ओर कुछ भारी होता है । पहलवान इससे कसरत करते हैं । भैराहर – कुएसे जल सींचनेका गिर्रारा जिसे चाकला भी कहते हैं । इसकी ऊंटके शिरसे उपमा दी जाती है । जोल – पैर । देवला – देवालयों । कमठ – कच्छप । ईडर – ऊंटके वक्षस्थलका अवयव विशेष जहांकी चमड़ी खुरदरी एवं कठोर होती है । कठठंता – जोशपूर्ण चलता हुआ, बोझके कारण ध्वनि विशेष करता हुआ ।

मजबूत[1] थूंम[2] डाचा मगर, जियां पूंछ करवत जिसा।
झोखियां[3] सिंधु[4] नुखतां झटकि, अंध कंध राकस इसा ॥ ३११
नवहत्थो[5] झोकरा, *मसत[6] फीफरा भरारा।
बगलां उरळी बिहूं, बगलि नीकळै[7] छिकारा[8]*।
रँग केइक रातड़ा, भसम धूंहर भमराळा[9]।
जटा जूट ऊजळा, केइक भूरा केइ[10] काळा।
मिळि रींछ रूप अधियांमणा[11], जकस[12] जिहाजां जम जिसो।
झोकियां[13] सिंधु[14] नुखतां झटकि, अधकंध राकस इसा ॥ ३१२
रव्वारां[15] थप्पले[16], घग्घ[17] पाकेट भयंकर।
नेसां चसळक नयण, झाळ झागूंडां नीझर।

---

१ ख. जमबूत। ग. मजंबूत। २ ख. थूंड। ग. थूभ। ३ ख. झेकीया। ग. झेकिया। ४ ख. सुंध। ग. संध। ५ ख. ग. नवहथो। ६ ग. मसक।
... रेखांकित पद्यांश ख. प्रति में नहीं है।
७ ग. नाकलै। ८ ग. बिकारा। ९ ख. ग. भंभराळा। १० ख. ग. के। ११ ख. ग. अधीयांमणा। १२ ख. ग. जकसि। १३ ख. झेकीयां। १४ ख. ग. संध। १५ ख. रैवालां। ग. रेवारां। १६ ख. थापले। ग. थापलै। १७ ख. ग. घघ।

---

३११. थूंभ – कोहान, डिल्ला। मगर – घड़ियाल नामक प्राणी। डाचा – मुख, खुला मुख। जियां – जिन। झोखियां – ऊंटको बैठाने पर। सिंधु – ऊंट, (?)। नुखतां – ऊंटका नाकसे बांधनेकी रस्सी, मोहरी। झटकि – झटके के साथ खींच कर।

३१२. नवहत्थो – नौ हाथ लंबा। झोकरा – ऊंटके बैठनेके स्थानका। मसत फीफरा-भरारा – वह इतने मस्त हैं कि उनके फेफड़े फूले रहनेसे मुखकी आवाज भर्राई सी होती है। बगलां – ऊंटके दोनों अगले पैरोंके पासका वह स्थान जहांसे वे ऊंटके धड़से मिलता है। उरळी – चौड़ी। बिहूं – दोनों। छिकारा – (खरगोश ?)। रातड़ा – लाल। भसम – भस्मीके समान रंगका। धूंहर – आकाशमें बाहुल्यतासे छा जाने वाले रज-कण या इस प्रकारके छा जाने वाले रज-कणके रंगके समान रंगका। भमराळा – भ्रमरके समान रंगका। जटा जूट – घने बालों वाला। ऊजळा – सफेद रंगका। काळा – श्याम रंगका। अधियांमणा – भयंकर। जकस – (?)। जिहाजां – जहाजों। झोकियां – ऊंटोंको भूमि पर बैठाने पर।

३१३. रव्वारां – रेबासे राजस्थानकी एक जाति विशेष जिसका प्रमुख कार्य ऊँट रखने और चरानेका होता है। थप्पले – पीठ पर थपेड़े देकर जोश दिलाता है। घग्घ – ऊंट। पाकेट – ऊंट। नेस – ऊंटके दांत। चसळक – मस्तीमें आए हुए ऊंट द्वारा अपने मुंहको चलाते हुए की जाने वाली दांतोंकी ध्वनि विशेष। झाळ – तेज। झागूंडां – फेन। नीझर – निकलते हैं।

आका रीठ कुरीठ, वयँड छोडे[1] वेछाड़ां[2] ।
इसा[3] दीठ अवनाड़, पीठ ले हलै पहाड़ां ।
कत्तार भार भर कठठिया[4], करै[5] गाज भंफट करै[6] ।
हालिया[7] जांणि[8] सांमंद्रहूं, भाद्रव[9] वादळ जळ भरै[10] ॥ ३१३

ऊंटांनै वैठा कर सामांन उतारणौ अर तंबू तांणणा

कठठ भार भेकिया[11], घग्घ[12] राकस घाटंबर ।
उतारिया[13] अप्पार[14], पेसखांना पाटंवर ।
करे नजर[15] भर कूंत, फजर तजबीज फरासां ।
जळ डंवर तर जूथ, चौक[16] धर सम[17] चौरासां ।
मेखां निहाव पड़ि मेखचां, ताळी तजे तपेसरा[18] ।
धर धूजि[19] धमक[20] विसहर धुकै[21], सहस धुकै[22] फण सेसरा ॥ ३१४
तांण[23] सरद चवतरफ[24], करे तजवीज कनातां ।
कनक भळाहळ कळस, वणे वंगळा वनातां ।

---

१ ख. जोडे । ग. भोडे । २ क. वेळाडां । ३ ख. यसा । ४ ख. कठटीया । ग. कठठीया । ५ ख. करे । ६ ख. ग. करे । ७ ख. हालीया । ८ ग. जांण । ९ ख. भाद्रवि । १० ग. भरै । ११ ख. भेभीया । १२ ख. ग. घघ । १३ ख. उतारीया । ग. उत्तारिया । १४ ख. ग. अपार । १५ ग. नजरि । १६ ख. ग. चौकि । १७ ख. समै । १८ ख. तपैसरां । १९ ख. धूज । २० ख. ग. धमकि । २१ ग. धूकै । २२ ग. धूकै । २३ ख. ग. तांणि । २४ ग. चौतरफ ।

---

३१३. आकारीठ – जवरदस्त । कुरीठ – भयंकर । वयँड – हाथी । वेछाड़ां – उदण्ड, मस्त । दीठ – दृष्टि । अवनाड़ – जवरदस्त । गाज – गर्जना । भंफट – वखेड़ा । भाद्रव – भादौ मास ।

३१४. भेकिया – ऊंटोंको भूमि पर वैठा दिये । घग्घ – ऊंट । राकस – राक्षस । घाटंवर – प्रकार, ढंग । पाटंवर – वस्त्र, रेशम । डंवर – शरावोर । तर – वृक्ष । चौरासां – चारों ओरसे । सम – समतल । निहाव – प्रहार, चोट । मेखचां – खूंटी ठोंकनेकी मुगरी, मेखचू । ताळी – ध्यानावस्था, समाधि । तपेसरां – तपस्वियों । धर – भूमि, धरा । धमक – प्रहार, चोट । विसहर – विषधर, सर्प । धुकै – (?) । सहस – सहस्त्र । सेसरा – शेषनागके ।

३१५. सरद – (?) । चवतरफ – चारों ओर । तजवीज – वंदोवस्त, तजवीज । कनातां – मोटे कपड़ेकी वह दीवार जिसे किसी स्थानको घेर कर आड़ करते हैं । वंगळा – हवादार छोटा तंवू ।

तण[1] पचरंग तणाव, गडे[2] मेखां त्रंबागळ[3]।
वंस[4] रजत सोव्रन्न[5], वणै डेरा दळ वादळ।
महराबदार मँडिया मँडप, ज्वाब ज्वाब[6] ऊपर[7] जुवा।
दखिणादि[8] धरा गुजरात दिस[9], हुवै हुकम डेरा हुवा॥ ३१५

करि गुलाब छड़िकाव[10], जरी[11] रावटी जगामग[12]।
झालरियां[13] मोतियां[14], तिलाकारी[15] पड़दा चिग।
मंडप तह मुखमुलां[16], खड़ग गहि बालां[17] खांनां।
जगमग खंभ जड़ाव, मँडे जरदोज[18] समांनां।
गिलमां विछायत[19] मसदां[20] गरक, परतकिया[21] धर[22] प्रेमरा।
जगमग जड़ाव वणिया जठै, हेम तखत छत्र हेमरा॥ ३१६

डेरांरौ वरणण

इम डेरां आपरां, और[23] डेरा उमरावां।
प्रगट व्यास प्रोहितां, कांमदारां कविरावां।

---

१ ख. तणि। २ ग. गजे। ३ ख. त्रांवागल। ग. त्रांवागळ। ४ ख. ग. वांस। ५ ख. ग. सोव्रन। ६ ख. ज्वाव ज्वाव। ग. ज्वावं ज्वाव। ७ ख. ग. ऊपरि। ८ ख. दषिणाध। ९ ख. ग. दिसि। १० ख. छडकाव। ग. छिडकाव। ११ ख. ग. जड़ी। १२ ख. ग. जगमग। १३ ख. झल्लारी। ग. झलारी। १४ ख. ग. मोतीयां। १५ ग. चिलाकारी। १६ ख. ग. मुषमलां। १७ ख. वाला। ग. वालां। १८ क. जरदौज। १९ ख. ग. विछाति। २० ख. मसंदा। २१ ख. ग. कीया। २२ ख. ग. धरि। २३ ग. ओर।

---

३१५. तण – खींच कर। तणाव – वे रस्सियाँ जिनके सहारे तंवू खड़ा किया जाता है। त्रंवागळ – ताम्रकी (?)। मँडिया – वनाये गये। मँडप – वहुतसे आदमियोंके बैठने या ठहरनेके लिये चारों ओरसे खुला परन्तु ऊपरसे छाया स्थान। ज्वाव ज्वाव – ठीक स्थान पर, जा-वजा। जुवा – पृथक, भिन्न।

३१६. रावटी – कपड़ेका वना एक प्रकारका छोटा डेरा जिसके वीचमें एक वंडेर होती है और जिसके दोनों ओर दो ढलुएं पर्दे होते हैं। यह वड़े खेमोंके साथ प्रायः नौकरों आदिके ठहरनेके लिये लगाये जाते हैं, छोलदारी। जगमग – चमक-दमक। तिलाकारी – सुनहरी कामदार। चिग – चिलमन। समांनां – सामियाना, तंवू। मसदां – वड़े तकिए, गोल तकिए।

मिसल मिसल ऊपरा[1], डहे लरी[2] भर[3] डँबर[4]।
वसँत जांण[5] वनपत्रां[6], भार अड्ढार[7] पुहप[8] भर[9]।
जोगणैतणै[10] सोसनं[11] जरद, असपक तणिया[12] ऊजळा।
सांमणे जांण[13] रँगरँग सिखर, वणे आंण[14] चहुंवै[15] वळा ॥ ३१७

जुधरा सांमांनरौ वरणण

सीसा भार सतोल, भार वांणां गाडाभर।
गंज[16] भार गोळियां[17], भार गोळां भैराहर।
भार सोर भातड़ां[18], सूत सिलहां[19] सांमांनां[20]।
सरब भार सिरताज, भार पुरकार खजांनां।
धर भार अरावां अरण-धज, *बेलां हमलां बारणां।
धुर भार सकट कट्ठठ[21] धमळ[22]*, भार बांण भारथरणां[23] ॥ ३१८

तोपांरी पूजा अर तोपांरी वरणण

साक पाक करि सुजळ, मात कहि[24] कहि महमाई[25]।
तेल धार[26] ततकाळ[27], चाढ़[28] मद-धार चढ़ाई।

---

१ ग. उपरा। २ ख. लहरी। ग. लहरि। ३ ख. भरि। ग. करि। ४ ख. डंव्वर। ५ ख. जांणि। ६ ख. ग. पनपती। ७ ख. ग. अठार। ८ ख. पोहोप। ग. पहोंप। ९ ग. सर। १० ख. ग. जोगणेतणे। ११ ख. ग. सौसन। १२ ख. ग. तणीया। १३ ख. ग. जांणि। १४ ख. ग. आणि। १५ ख. ग. चहुवै। १६ ख. ग. गज्ज। १७ ख. गोलीयां। १८ ख. भाडथां। ग. भायड़ां। १९ ग. सिलह। २० ख. सामानां। ग. सामांनां। २१ ग. कठटे। २२ ग. धवळ। २३ ख. ग. भाथारणां।

... चिन्हांकित पद्यांश ख. प्रतिमें नहीं है।

२४ ख. कदि। २५ ख. माहामाई। २६ ग. धारि। २७ ख. ततकाळि। २८ ख. चाटि। ग. चाढ़ि।

---

३१७. मिसल – पंक्ति। डहे – (?)। डँवर – (?)। भार अड्ढार – अष्टादश-भार। असपक – खेमा, तंबू। सांमणे – श्रावण मासमें। शिखर – वादल। चहुवै वळा – चारों ओर।

३१८. सीसा – सीसक नामक मूल धातु जिसकी वंदूककी गोलिएँ भी वनती हैं। गंज – ढेर। भैराहर – (?)। सोर – वारूद। भातड़ां – थैलों, तर्कशों। सिलहां – कवचों, अस्त्रशस्त्रों। अरावां – तोपों। अरणधज वेलां – प्रातःकाल। हमलां – हमालों। कट्ठठ – ध्वनि विशेष। धमळ – वैल।

३१९. महमाई – महामाता, देवी, दुर्गा। मद-धार – शरावकी धार।

बलि[1] चाढ़े बोकड़ा[2], रुधर भैंसड़ा जरूर[3]।
वदन चोळ[4] करि विखम, लोह[5] कांबियां[6] सिंदूर[7]।
धुबि[8] तबल[9] बंब[10] उडि अरणधज, हले[11] धमळ हुय[12] हळवळी।
हाथियां[13] टिलां बेलां[14] हमल, हठां नींठ कठठे[15] हली ॥ ३१६

कठठं[16] जूट रहकलां, जूट[17] नाळियां[18] जँबूरां[19]।
रथ वहलां रैवत्त[20], भार पडतल भरपूरां।
पंथ लगस पैदलां, सबद घण सोर सुराबां[21]।
धमळ कोडि बाळदां[22], गोड़ि गजराज गुराबां।
तिण दिन वहीर[23] डेरां तरफ, हाल कळोहळ करहली[24]।
निध[25] सुजळ जांणि[26] नवसै नदी, एकण साथे ऊभली[27] ॥ ३२०

हाथियोंका वरणण

मदतळ डांणां मसत, भरै भरणां गिर नीभर।
अन चारा तजि अरध, पियै[28] तड़कां नीरोवर।

---

१ ख. ग. वलि। २ ख. वोकडा। ग. बौकड़ां। ३ ख. ग. जरूरां। ४ क. चौळ। ५ ख वोल। ग. बोळ। ६. ख. ग. कांवीयां। ७ ख. ग. सिंदूरां। ८ ख. धुवि। ९ ख. तवल। १० ख. वंव। ग. वंव। ११ ग. हके। १२ ख. ग. होय। १३ ख. हाथीयां। १४ ख. ग. वेलां। १५ ख. ग. कठटे। १६ ख. ग. कठट। १७ ग. जूटि। १८ ख. नालीयां। १९ ख. जंत्ररां। २० ख. रेवतां। ग. रेमंतां। २१ ख. सुरावां। ग. सरादां। २२ ख. वादलां। ग. वळधां। २३ ग. वहिर। २४ ख. ग. करिहली। २५ ख. ग. निधि। २६ ग. जांग। २७ ख. ग. उभली। २८ ख. पीए। ग. पीऐ।

---

३१६. बोकड़ा – वकरा। भैंसड़ा – भैंसा। चोळ – लाल। विखम – भयंकर। धुबि – बज कर। तबल – वाद्य विशेष। बंब – नगाड़ा। अरणधज – अरुण ध्वजा, युद्धका झंडा। हळबळी – कोलाहल, आवाज। हमल – धक्का, टक्कर। नींठ – कठिनतासे। हाली – चली।

३२०. रहकळां – छकड़ा जिस पर बहुतसी बंदूकें लगी होती हैं। जूट – (समूह ?)। जंबूरा – एक प्रकारकी छोटी तोप। वहल – बैल गाड़ी। रैंवत – घोड़ा। पडतल – सामान, सामग्री। लगस – लंबायमान सेनाकी टुकड़ी। सुराबां – बारूद (?)। गुराबां – तोप विशेष। वहीर – प्रस्थान, रवाना। हाल – ध्वनि। निध सुजळ – समुद्र।

३२१. मद-तळ – हाथी। डांणां – हाथीके कंधेका मद। तड़कां – तड़ागों, तालावों। नीरोवर – जल, पानी।

डग[1] बेड़ियां[2] दुलट्ठ[3], लगां[4] चहुंवां[5] पग लंगर।
आकासी सारसी, करै अग्राज[6] भयंकर।
भभरूत रजी धोसर[7] भसम, काळदूत चख झाळ किध[8]।
वनि[9] वसै भूतकाळा वयंड, वनखंडी अवधूत[10] विध[11] ॥ ३२१

छच्छ[12] मास छाकियां[13], हुवा डाकियां[14] हठीलां।
प्रचँड नील जमि पीठ, निलै त्रसळै[15] जमि नीलां।
सघण गाज[16] जिम सुणे[17], गाज मदमसत गयंदां।
सादूळौ सिर पटकि, मरै संगार[18] मयंदां।
करि फौतकार[19] झुक्कै[20] कहर, चाढ़ि सूंड फण चाचरै।
सिखराळ गिरँद चढि जांणि[21] स्रप[22], काळदार झाटक करै ॥ ३२२

घणा इसा घेरिया[23], भचकि[24] करि गडां[25] भयंकर।
वैठ वैठ वोलतां, नीठ बैठा जोरावर।

---

१ ख. उग। २ ख. वेडीयां। ग. वेडीयां। ३ ख. दुठ्ठ। ग. दलव्व। ४ ख. लगां। ५ ख. ग. चहुवै। ६ ख. ग. आग्राज। ७ ख. ग. धूसर। ८ ख कीध। ९ ग. वलि। १० ख. ग. अवधूत। ११ ख. ग. विध्रि। १२ ख. छछं। ग. छछ। १३ ख. छाकीयां। १४ ख. डाकीयां। १५ ख. ग. त्रिसलै। १६ ख. जाग। १७ ग. सुणे। १८ ख. ग. सिणगार। १९ ग. फूतकार। २० ख. ग. भूकै। २१ ग. जांण। २२ ख. ग. श्रप। २३ ख. घेरीया। २४ ग. भचक। २५ ग. गढ़ा।

---

३२१. डग – हाथीके पिछले पैरोंको बांधनेका रस्सेका बन्धन विशेष। चहुवां – चारों पैरोंमें डाली जाने वाली जंजीर। सारसी – हाथीका मस्ती या जोशमें आकर अपनी सूंड़को उठा कर घुमाना। अग्राज – गर्जना। भभरूत – जोश या आवेगपूर्ण। रजी – धूलि। धोसर – धूलिमिश्रित। वयंड – हाथी।

३२२. छच्छ – छः-छः। छाकिया – मस्त। डाकिया – (डाकी, मोटे ?)। निलै – ललाट। त्रसळै – क्रोधादि के कारण ललाटमें पड़ने वाली तीन सिकुड़न। सादूळौ – शार्दूल, शेर। मयंदां – हाथी। फौतकार – सांप, बैल, हाथी आदिकी फूतकार। चाचरै – मस्तक पर, ललाट पर। सिखराळ – शिखर वाला। स्रप काळदार – कृष्ण सर्प। झाटक – सांपके फनका प्रहार।

३२३. घणा – बहुत। भचकि – (?)। गडां – गंडस्थलों (?)।

कलां[1] जळां सँपलाय[2], तेल आंमलां चढ़ावा ।
कलां जडे[3] कांटिया[4], कलां बांधिया[5] किलावा ।
कल हूंत तिलक सिर काढ़िया[6], प्रगट धनख[7] जिम पावसां ।
कज्जल[8] पहाड़ झळ मँगळ[9] किध, जांणै[10] सिधां अमावसां ॥ ३२३

रसां भीड़[11] रेसमां, झूल घँटवीर झळारी ।
परां गदीलां परठि, धरां[12] चाचरां अंधारी ।
जोख नोख गुलजार, कलाबूतां[13] वणि कम्मळ[14] ।
तरह कांम तारीफ, हौसनायक झाळाहळ[15] ।
जगमगत फूल जरदौजरा[16], वयँडां[17] पीठ[18] वखांणिया[19] ।
अंधार निसां जांणै वरस[20], तारामंडळ[21] तांणियां[22] ॥ ३२४

महावतांरो वरणण

नट कछनी करि निहंग[23], धरे अंगरखा बहादर[24] ।
जमदाढ़क गज वाग[25], कसे सहटीं कर कम्मर[26] ।

---

१ ख. कडां । २ ख. ग. संपडाय । ३ ख. जले । ४ ख. ग. कांटीयां । ५ ख. ग. वांधीया । ६ काढ़ीया । ७ ख. ग. धनक । ८ ख. ग. कझ्झल । ९ ग. मझळ । १०. ख. ग. जांणे । ११ ख. ग. भीडि । १२ ख. ग. घरे । १३ ख. कलायूलां । १४ ग. कमळ । १५ ग. झळाहळ । १६ ख. ग. जरदोजरा । १७ ख. वयंदां । १८ ख. ग. पीठि । १९ ख. ग. वषांणियां । २० ख. ग. उरस । २१ ग. तारामंडलि । २२ ख. तांणीयां । २३ ग. नींहग । २४ ख. ग. वहाधर । २५ ख. वाघ । ग. बाघ । २६ ग. कमर ।

---

३२३. सँपलाय – स्नान करा कर । कांटिया – हुक्क । कलां – कलासे, चतुराईसे । किलावा – हाथीके गलेमें पड़ी हुई कई लड़ोंकी रस्सी जिसमें पैर फंसा कर महावत हाथीको हांकता है । धनख जिम पावसां – मानो वर्षाकालमें इन्द्रधनुष । मँगळ – आग, अग्नि ।

३२४. रसां – रस्सों । भीड़ – कस कर, बांध कर । घँटवीर – वीरघंट । परां – (?) । गदीलां – गद्दों । अंधारी – हाथीके कुंभस्थल पर डाला जाने वाला प्रावरण । कम्मळ – मस्तक, शिर । (?) । वयँडां – हाथियों । वरस – उरस, आकाश । तांणिया – खींचे ।

३२५. कछनी – घुटनेके ऊपर तक पहिना या कसा जाने वाला वस्त्र विशेष । निहंग – (?) । जमदाढ़क – कटार । गज वाग – हाथीका अंकुश । सहटीं – दृढ़, मजबूत । कम्मर – कटि ।

आडि[1] पेच[2] करि अडिग[3], पाव पर धर हम्मां पर ।
लाज[4] विरज[5] ताईत, जंत्र[6] मुहरा[7] सिर ऊपर ।
इम सजे[8] साज मुख करि अरण, जांणै[9] सीह हकालिया[10] ।
सुत वळ वँधाय कहि कुळ कसव[11], चढ़ण[12] महावत चालिया[13] ।। ३२५

कहै[14] कुरांण कतेव, उरह[15] हुय[16] डम्मांडम्मां[17] ।
पैकंवरां पुकारि, मिळै[18] साजणां कुटम्मां[19] ।
सूरज करे[20] सलांम, भिड़े मौसरां[21] भुंहारे[22] ।
काय लियूं[23] ईनांम[24], काय जमधांम विचारे[25] ।
नजरां चुकाय[26] गज्जन[27] निजर[28], तके पीठ आसण तठी ।
दौड़िया लियण नट दौवड़ी[29], जांण[30] पट्ट[31] मंडिया[32] जठी ।। ३२६

छगां छगां धरि नगां, चढ़े आसणां महावत[33] ।
राह रूत रवि[34] पूत[35], धूत थापलिया[36] धूरत ।

---

१ ख. आडि । २ ग. पेट । ३ ख. ग. अडग । ४ ख. जाल । ५ ख. ग. वरज । ६ ग. जांत्र । ७ ख. ग. मोहरा । ८ ख. ग. सझे । ९ ख. जांणे । १० ख. हकालीया । ११ ख. किसव । ग. कोसव । १२ ग. चढ़त । १३ ख. चालीया । १४ ख. ग. कहे । १५ ख. ऊचर । ग. उवर । १६ ख. होय । ग. होइ । १७ ख. डंमाडंवा । ग. डंमाडंवा । १८ ग. मिलै । १९ ख. कुटंवां । ग. कुटंवां । २० ग. करै । २१ ख. ग. मौसर । २२ ख. भौहारे । ग. भौहारै । २३ ग. लीयू । २४ ख. ग. इन्नांम । २५ ग. विचारै । २६ ग. चकाय । २७ ख. ग. गज । २८ ख. ग. निजनजर । २९ ख. ग. दोवडी । ३० ख. जांणि । ३१ ख. पट्ट । ग. पटि । ३२ ख. ग. मंडीया । ३३ ख. महावल । ३४ ख. ग. रहि । ३५ ग. पूति । ३६ ख. ग. थापलीया ।

---

३२५ आडि-पेच – (?) । जंत्र – यंत्र । मुहरा – हाथीके मुंह ऊपर डाला जाने वाला उपकरण । अरण – अरुण, लाल । हकालिया – ललकारा । वळ-वंधाय – साहस दिलवा कर । कसव – वंधा, कार्य ।

३२६. डम्मां डम्मां – कम्पायमान, भयभीत । पैकंवरां – पैगम्बरों । साजणां – सज्जनों, मित्रों । कुटम्मां – कुटुंवियों । मौसरां – श्मश्रु, मूंछें । भुहारां – भौहें । काय – या, अथवा ।

३२७. छगां छगां – चलने की गति विशेष । नगां – पैरों, (?) । राह रूत – राहू ग्रहके समान । रवि पूत – यमराज । धूत – मस्त, उन्मत्त । थापलिया – उत्साहित किये, जोश दिलाया ।

वडै दळूंका तू-स, सिंगार तै सेर गिराए।
वडे गढूंका जैत, वार इम कहि विरदाए।
तरियलां[1] डाकदारां तलक, खूभारण नग खोलिया[2]।
सिध पलक खुले धारे सबद, बा··· पुकारे[3] बोलिया[4] ॥ ३२७

कलाबूत कांमरा, परठि कटहड़ा प्रचंडे।
जगमग नग्ग[5] जड़ाव, मेघ डंबर पर मंडे।
लाल हरो सिकलात, जिलह जाळियां[6] अजौदां[7]।
रसां कसे रेसमां, हेम रूपी[8] हरि[9] हौदां।
के सकत[10] पूज नौबत कसे, आरौहक[11] के आरबां[12]।
धर फरर चढ़े नीसांण धर, तोगां[13] मही-मुरातबां[14] ॥ ३२८

सूंडनाग[15] सांमळा[16], झोक आंमळा झपेटां।
दांतूसळ[17] ऊजळां, लगी[18] पांतळां लपेटां।

---

१ ख. तरीयलां। ग. तेरीयलां। २ ख. षोलीया। ३ ख. पूकारे। ४ ख. बोलिया। ५ ख. ग. नगां। ६ ख. जालीयां। ७ ग. अजांदां। ८ ख. रूप। ९ ख. हरी। १० ग. केसकति। ११ ख. आरोहक। ग. आरोह। १२ ग. आराबां। १३ ख. ग. तोगां। १४ ख. मुरातवां। १५ ख. ग. सूंडिनाग। १६ ख. सांमाला। १७ ख. ग. दंतूसलां। १८ ख. ग. लगां।

---

३२७. दळूंका – दलोंका, समूहोंका। तरियलां – (?)। डाकदारां – मस्त हाथीको राह पर लाने वाले वे घुड़सवार जिनके हाथमें प्रायः सूतका गुंथा चावुक-विशेष होता है, जिसे राजस्थानीमें साट भी कहते हैं। तलक – (?)। खूभारण – हाथीके बांधनेका स्थान। नग – पैर। सिध······पुकारे बोलिया—ध्यानावस्था में बैठे हुए तपस्वी की पलक भी खुल जाय।

३२८. कलाबूत कांमरा – सोने-चांदीके कसीदेके काम किया हुआ। कटहड़ा – काठका बना हाथीकी पीठ पर रखनेका चारजामा। मेघ डंबर – छत्र विशेष। सिकलात – बहु-मूल्य ऊनी वस्त्र। जिलह – चमक। जाळियां – (?)। अजौदां – (?)। सकत – शक्ति। आरौहक – सवार। आरबां – तोपों। नीसांण – झंडा। तोगां – मुगल साम्राज्यका ध्वज विशेष जिस पर सुरा गायके पूंछके वालोंके गुच्छे लगे रहते हैं। यह ध्वज मुगलकालमें उच्च पदाधिकारियोंको ही वादशाहकी ओरसे विशेष सम्मानके रूपमें दिया जाता था।

३२९. दांतूसळ – हाथीके बाहर निकले हुए दांत।

कोतक[1] हारां कळळ, अवर सुणजै[2] नह आहट।
सणगाहट[3] चरखियां[4], वीर घंटां ठणणाहट[5]।
गिल्लोलदार[6] गड - धरि[7] गहि, चरखदार मिळ[8] चालिया[9]।
गणपती लार वह[10] जांण[11] गण, हरदवार दिस हालिया[12] ॥ ३२९

लळवळतां[13] पोगरां[14], पाय खळहळता लंगर।
झळहळतां चख झाळ, चोळ[15] भळहळतां चाचर।
धरा धूळ धकरूळ, करै फूंकार[16] कराळां।
ग्रहि उखलै[17] गैतूळ, तूळ जिम मूळ तराळां।
नेजां दकूळ उडतां निहंग, हसत झूल मिळ[18] हालिया[19]।
कुळ असट[20] गिरंद जांणै[21] सकळ, थावस[22] सुज[23] जंगम थिया[24] ॥ ३३०

हसत जयारां[25] हले, खूंन करता खंधारां।
तरियल लारां[26] तळक, अरण मुख[27] धोम[28] अंगारां।
धोमारां धड़हड़ां[29], डाकदारां हौकारां।
चौवारां प्रज चढ़ै[30], पड़ै[31] हट नाळ बाजारां।

---

१ ख. ग. कोतगहारां। २ ख. ग. सुणजे। ३ ग. सणणाहटि। ४ ख. चरषीयां। ५ ग. ठणणाट। ६ ग. गिलोलदार। ७ ग. धारि। ८ ख. मिलि। ९ ख. चालीया। १० ख. वहौ। ग. वोहौ। ११ ख. जांणि। १२ ख. चालीया। ग. हालीया। १३ ख. ललवणतां। १४ ख. पोगरां। १५ ख. चोळ। १६ ख. ग. फोंकार। १७ ख. ऊथलै। १८ ख. ग. इम। १९ ख. हालीया। २० ग. अष्ट। २१ ख. ग. जांणे। २२ ख. ग. थावर। २३ ख. ग. सुजि। २४ ख. थीयां। २५ ख. जीयांरा। ग. जियारां। २६ ग. लारं। २७ ख. ग. चख। २८ ख. धो। २९ ख. ग. धड़हड़े। ३० ख. ग. चढ़े। ३१ ख. पडे।

---

३२९. कळळ – कोलाहल। चरखदार – चरखी चलाने वाला। ठणणाहट – ध्वनि विशेष।

३३०. लळवळतां – कोमलताके कारण इधर-उधर झुकने पर। पोगर – हाथीकी सूंड। झळहळतां – ध्वनि करता हुआ। लंगर – हाथीके पिछले पैरमें लगी जंजीर। धकरूळ – अधिक धूलि उड़नेसे छा जाने वाला अंधकार। गैतूळ – धूलि समूह जो उड़ कर आकाशमें छा जाता है। तूळ – रूई। तराळां – वृक्षों। नेजां – भालां। दकूळ – वस्त्र, कपड़ा। निहंग – आकाश। हसत – हस्ती, हाथी। थावस – स्थावर, अटल। जंगम – चलने वाला।

३३१. तरियल – (?)। चौवारां – ऊंचे मकान जिनके चारों ओर दरवाजे हों। प्रज – प्रजा।

झरतां[1] अप्पारां[2] मदझरर[3], धारां किर[4] घण धाविया[5]।
भणणतां[6] अपारां सिर भमर, इम दरबारां आविया[7] ॥ ३३१

तन घण[8] घटा तराज, धरर धर[9] वाज तिलक धन।
पंत दंत बक[10] पाज, वणै[11] सोभाज[12] सेत व्रन।
रणक घंट ददराज[13], गाज ज्यूंहीं[14] गज गाजत।
सिर अंकुस सिरताज, वीज[15] उपमा ज विराजत।
सोहिया[16] साज रँगरँग सिखर, सघण समाज सकज्ज रै[17]।
अग्राज[18] करै छिबता[19] उरस, राजद्वार 'अभरज्ज' रै[20] * ॥ ३३२

घोड़ांरौ वरणण

अैराकी[21] आरबी, घटी काछी खंधारी।
के बलखी[22] सौवनी[23], केक[24] तुरकी अग्रकारी।
मोती सुरंग कमेत[25], लखी अबलख फुलवारी।
रँग जड़ाव हमरंग, हरी सुनहरी हजारी[26]।

---

१ ख. धरतां। ग. धररतां। २ ख. ग. अपारां। ३ ग. मदधरर। ४ ख. किरि। ग. करि। ५ ख. ग. धावीया। ६ ख. भणणंता। ग. भणणंतं। ७ ख. आवीया। ८ ग. प्रतिमें यह शब्द नहीं हैं। ९ ख. धुज। ग. धुर। १० ख. ग बुक। ११ ख. ग. वणे। १२ ग. सोभान। १३ ख. ग. दडुराज। १४ ख. ग. जेहीं। १५ ख. वाज। १६ ख. सोहीया। १७ ख. ग. सकझ्झ रै। १८ ग. आग्राज। १९ ग. छविता। २० ग. अभराज। *यह पंक्ति ख. प्रति में नहीं है।
२१ ख. अैराकी। २२ ख. ग. बलषी। २३ ख. सोदनी। ग. सोवनी। २४ ख. ग. केइक। २५ ख. कमंत। ग. कुमेत। २६ ख. हझ्झारी।

---

३३१. किर – मानों। भणणतां – ध्वनि विशेष करते हुए, उड़ते हुए।

३३२. तराज – समान। पंत –पंक्ति। वक – बक पक्षी। रणक – ध्वनि विशेष। ददराज – उदधिराज, समुद्र। अभरज्ज – महाराजा अभयसिंह।

३३३. अैराकी – घोड़ा विशेष, ईराक देशोत्पन्न घोड़ा। आरबी – अरब देशोत्पन्न घोड़ा। घटी – घाट (ऊमरकोट) देशोत्पन्न घोड़ा। मोती – रंग विशेषका घोड़ा अथवा घोड़ेका रंग विशेष। सुरंग – लाल रंगका घोड़ा। कमेत – रंग विशेषका घोड़ा। लखी – रंग विशेषका घोड़ा। अबलख – चितकबरा घोड़ा। फुलवारी – रंग विशेषका घोड़ा।

मौंहरी[1] चँपा सेलो समँध[2], पचकल्यांण पहचांणिये[3] ।
अन्नेक रंग पसमां अलल, जेहा मुखमल जांणिये[4] ॥ ३३३

डाच लगांणां[5] डहै, इसा पंडवां[6] अपारां ।
रौल[7] पसम खुरहरां, मळै हाथळां अपारां ।
अँग काढ़ै[8] आरसी, पोत भरळकै[9] पसम्मां[10] ।
दरियाई[11] कस दीध, राळ[12] लूंबै[13] रेसम्मां[14] ।
भाकत्ति[15] किलावूत्ती[16] सभै, तँग[17] रेसम[18] जुग तांणिया[19] ।
ऊकड़ा[20] भीड़[21] उडणी इसा, उभै[22] कड़ा कसि आंणिया[23] ॥ ३३४

करे[24] पोस जरकसी, कड़ी[25] सोव्रन कोतल[26] कसि ।
वागडोर[27] रेसमी, तरह पचरंग[28] धरे तसि ।
एम खोल[29] आंणिया[30], परी करता नृत[31] पाए ।
सूरतपाक[32] सुचंग, जळज कुरँगां वधि[33] जाए ।
के रजत साज जंवहर कनक, छौगा मोत्रीयाळ[34] छजि ।
आंणे अनेक हाजर[35] इसा, कमंध[36] होण[37] असवार कजि ॥ ३३५

---

१ ख. ग. मुरहरी । २ ख. सवम । ३ ख. ग. पहचांणीयै । ४ ग. जांणीयं । ५ ख. णगाणा । ६ ख. पांडवां । ग. पांडवी । ७ ख. ग. रोलि । ८ ख. ग. काटे । ९ ख. ग. भरल्लकां । १० ख. पसंमां । ग. पसमां । ११ ख. ग. दरीयाई । १२ ख. साल । ग. याळ । १३ ख. लूवां । ग. लूवा । १४ ख. रेसंमां । ग. रेसमां । १५ ख. ग. सारवति । १६ ख. किलावूती । ग. कलावूती । १७ ख. तेग । १८ ग. रेसमां । १९ ख. ग. तांणीयां । २० ख. ग. ऊकटां । २१ ख. भीडि । २२ ख. ऊभै । २३ ख. ग. आंणीया । २४ ख. ग. कसे । २५ ग. कडा । २६ ख. ग. कोतिल । २७ ख. वागडोरि । ग. वागडोरि । २८ ग. पंचरंग । २९ ख. ग पोलि । ३० ख ग. आंणीयां । ३१ ख. ग. नृत । ३२ ख. ग. सूरतिपाक । ३३ ग वधि । ३४ ख. ग. मोतीयाळ । ३५ ख. हाजरि । ३६ ख. ग कमध । ३७ ख. हौण ।

---

३३३. सेली समँध – रंग विशेषका घोड़ा । पसमां – बाल । अलल – घोड़ा ।

३३४. डाच – मुख । लगांणां – लगाम । डहै – धारण करते हैं । खुरहरां – घोड़ोंकी पीठका मैल हटानेका उपकरण विशेष । हाथळां – (हथेलियों ?) । आरसी – आदर्श, शीशा । भरळकै – चमकते हैं ।

३३५. सुचंग – सुन्दर । जळज – (?) । रजत – रौप्य, चांदी ।

वाहणांरा नांम

घोड़[1] वहल रथ घणा, धमळ धुर के असि[2] धारी।
सुजि[3] खासा सुखपाल, इका[4] माफा असवारी।
सरब झळूंसां साज, जोति सूर[5] न जिगजग्गै[6]।
ऊभा[7] इसा[8] अनेक, आय नृप[9] दरगह अग्गै[10]।
हुय[11] कड़ाजूड़ पैदल वहल, धर[12] बँदूक कर[13] धाविया[14]।
सांमांन इता दरगह सुपह, एक नगारै[15] आविया[16] ॥ ३३६

ठांम ठांम नक्कीब[17], हाक ताकीद हजारां।
दळ पंडव[18] तिण दीह[19], सझे[20] असि कीध सिंगारां।
सझे[21] भड़ां पौसाक, कसे आवधां करारां।
सूर वंस खटतीस, तांम चढ़िया[22] तोखारां।
हालिया[23] समँद हीलोहळां[24], जिसा लगस[25] वह[26] जूजुवा[27]।
दळ प्रबळ नगारै दूसरँ, हाजर सह[28] रावत हुवा[29] ॥ ३३७

महाराजा अभैसींघजीरौ वरणण

सकति पूजि[30] 'अभसाह', तांम विधवत[31] छत्रपत्ती।
पहरि ऊंच पौसाक, अत्त[32] जवहर आदुत्तो[33]।

१ ख. घोडि। ग. घोड। २ ग. अस। ३ ख. सुज्य। ग. सुज। ४ ग. इक। ५ ख. ग. सूरज। ६ ख. जिमजग्गै। ग. जिमजागै। ७ ग. हुभा। ८ ग. यसा। ९ ख. ग. नृप। १० ग. आगै। ११ ख. ग. होय। १२ ख. ग. धरि। १३ ख. ग. करि। १४ ख. धावीया। १५ ग. नगरे। १६ ख. आवीया। १७ ख. नक्वीव। ग. नकीब। १८ ख. पंडवां। ग. पांडवां। १९ ख. दीध। २० ख. ग. साज। २१ ख. सजे। ग. सझै। २२ ख. चढ़ीया। २३ ख. हालीया। २४ ख. हींदोहलां ग. हिलोहलां। २५ क. लगत। २६ ख. वहौ। ग. वो। २७ ख. जूजूवा। ग. जूजुवा। २८ ख. सौ हौ। ग. सो हो। २९ ख. हूवा। ३० ग. पूज। ३१ ख. ग. विधि विधि। ३२ ख. ग. अतर। ३३ ग. अद्रुति।

३३६. धमळ – वैल। धुर – अगाड़ी। माफा – एक प्रकारका वाहन। झळूंसा – चमकदार। जिगजग्गै – चमकते हैं। कड़ाजूड़–सुसज्जित।

३३७. पंडव – यवन, वादशाह। तोखारां – घोड़ों। लगस – लम्बायमान सेना। जूजुवा – पृथक।

३३८. छत्रपत्ती – राजा। आदुत्ती – अद्वितीय (?)।

भीड़[1] ससत्र[2] भळहळा, साज बुलगार[3] सकाजा।
आए बाहर[4] अभँग, मसत गज महाराजा[5]।
हळवळां दळां मुजरा[6] हुवै[7], गह[8] हाका पहाड़[9] गह[10]।
तण 'अजण' नगारै तीसरै, सुंदर गज चढ़ियौ[11] सुपह ॥ ३३८

हुय[12] हूकळ कळहळां[13], हले[14] दळ प्रघळ[15] जळाहळ[16]।
धर सळकै[17] अहि धुकै[18], मरट वजि[19] कमठ कळम्मळ[20]।
रज डंवर[21] ढकि अरक, घंट[22] द्रगपाल[23] दहल घण।
समँद लंक थरसलै[24], तांम बोलियौ[25] वभीखण[26]।
मम संक[27] मथैयळ[28] महण[29] रै[30], लंक ग्रही इळ[31] रघुपती।
अग्रहां ग्रहै राजा 'अभौ', गहिया[32] गहै[33] न गढपती ॥ ३३९

वस[34] डेरां पह[35] वसै[36], थाट जाळंधर थांणै।
हसंब थाट[37] सझि हले, पंथ[38] गुजरात पयांणै।
सझै[39] नास 'सिंघला'[40], आस पास[41] मेवासां।
चत्रमासां गिर[42] चढ़ै[43], डडर[44] फाटै आसिहासां[45]।

---

१ ख. भीढि। २ ख. सस्त्र। ३ ख. ग. बुलगार। ४ ख. ग. बाहिर। ५ ख. ग. माहाराजा। ६ ग. मुझरा। ७ ख. हुवा। ग. हूवा। ८ ख. गज। ग. गजि। ९ ख. पहाड। ग. पाहड। १० ख. मह। ११ ग. चढ़ीयो। १२ ख. ग. होय। १३ ख. कळकळां। १४ ख. हले। १५ ख. प्रबल। ग. प्रबळ। १६ ख. ग. झळाहळ। १७ ख. ग. बसके। १८ ख. ग. धुके। १९ ग. तजि। २० ख. कलंमल। ग. कळमळ। २१ ख. टंवरि। २२ ख. ग. घंटां। २३ ख. ग. द्रिगपाळ। २४ ख. थरहलै। ग. थरसले। २५ ख. बोलीयो। ग. बोलियो। २६ ख. ग भभीषण। २७ ख. संकिम। ग. संकिम संकिम। २८ ख. थीयल। ग. थायळ। २९ ग. महळ। ३० ग. रे। ३१ ख. ग. यळ। ३२ ख. ग्रिहीया। ग. ग्रहीया। ३३ ख. ग. ग्रहै। ३४ ख. ग. वसि। ३५ ख. ग. पीहो। ३६ ख. ग. वसे। ३७ ग. हाट। ३८ ख. थंभ। ३९ ग. सझै। ४० ख. ग. सीघलां। ४१ ख. ग. पासां। ४२ ग. फिर। ४३ ग. चढ़े। ४४ ख. ग. ऊवर। ४५ ख. ग. असहासां।

---

३३८. बुलगार – (?)। तण – तनय, पुत्र।

३३९. हूकळ – घोड़ोंकी हिनहिनाहट। कळहळां – कोलाहल। प्रघळ – अपार, पुष्कल। जळाहळ–समुद्र। सळकै – कंपायमान होती है। अहि – शेषनाग। कमठ – कच्छ-पावतार। कळम्मळ – (?)। अरक – सूर्य। द्रगपाल – हाथी। दहल – भय। थरसलै – कंपायमान होती है। वभीखण – विभीषण। मथैयळ – मथा जाने वाला। महण = महार्णव–समुद्र।

३४०. जाळंधर – जालोर नगर।

महाराजा अभयसिंहका सिरोही पर आक्रमण

नीसांण नाद नौबत[1] निहसि[2], वीरनाद तदि[3] वाजियौ[4] ।
सिवपुरी बीह अरबद्द[5] सिर[6], 'अभौ' सीह[7] अग्राजियौ[8] ॥ २४०

रोहाड़ौ कर[9] सरद, मारि गिरद[10] में[11] मिळाए[12] ।
तर झंगर था तठै, वाढ़ि[13] चौगांन वणाए[14] ।
पौसाळियौ[15] पहट्ट[16], मिळे गिरद[17] में[18] मुकांमां ।
तटां चढ़े तिणवार, धरां रावां ऊधामां ।
फौजां लड़ंग दौड़े[19] फजर, धड़छे[20] खग[21] खळ ध्रोहियां[22] ।
सिर छाब भरे आंणै[23] सुभड़[24], सरदां जिम सीरोहियां[25] ॥ ३४१

गिर[26] गिर गजगांमणी, हुइ[27] अगगांमणि हल्ले[28] ।
लग[29] तर तर पालणौ[30], झंब बाळक बह[31] झल्लै[32] ।

---

१ ख. नौवति । ग. नौवति । २ ख. ग. निहस । ३ ख. ग. तजि । ४ ख. ग. वाजीयौ । ५ ख. ग. अरवद । ६ ख. ग. सिषर । ७ ग. सिंह । ८ ख. अग्राजीयौ । ९ क. ख. करि । १० ख. ग. गरद । ११ ख ग. मै । १२ ग. मिलाये । १३ ख. वाटि । १४ ख. वणाये । ग. वणाऐ । १५ ख. पोसालीयो । ग. पौसालियै । १६ ग. पहट । १७ ख. ग. गरद । १८ ख. ग. मैं । १९ ग. दोडै । २० ख. ग. धडछै । २१ ग. षगि । २२ ख. ग. धोहीयां । २३ ख. ग. आंणे । २४ ग. सुभट । २५ ख. सिरोहीया । ग. सीरोहीयां । २६ ख. गिरि गिरि । २७ ख. ग. हुई । २८ ग. हलै । २९ ख. ग. लगि । ३० ख. ग. पालणां । ३१ ख. वहौ । ग. वौहो । ३२ ख. झलै । ग. झेलै ।

---

३४०. नीसांण –वाद्य विशेष । वीरनाद – वाद्य विशेष । सिवपुरी – सिरोही नगर । बीह – भय, डर । अरबद्द – आबू पर्वत । अग्राजियौ – गर्जना की ।

३४१. रोहाड़ौ – रोहाडौ नामक एक गांव है । यहांका ठाकुर हीरादेवाड़ा मारवाड़में उत्पात करता था, सर्वप्रथम इसका महाराजा अभयसिंहजीने दमन किया । सरद – परजित । गिरद – धूलि । तर झंगर – घनी झाड़ी । वाढ़ि – काट कर । पौसाळियौ – सिरोही राज्यान्तर्गत एक गांवका नाम है । बांकीदासकी ख्यातके अनुसार महाराजा अभयसिंह गुजरात पर आक्रमण करते समय मार्गमें सिरोहीके रावके भाईकी पुत्रीके साथ इस पौसालिया गांवमें विवाह किया था । देखो—ऐतिहासिक वार्ता, ४४४ । पहट्ट – नाश कर, ध्वंस कर । लड़ंग – लंबायमान सेना । धड़छे – काट दिये. संहार कर दिये । ध्रोहियां – शत्रुओं, दुश्मनों । छाब – डलिया । सीरोहियां – सिरोही वालोंको ।

३४२. गजगांमणी – हाथीके समान मस्त चालसे चलने वाली । अगगांमणि – हरिणके समान चलने वाली । हल्ले – चली, गतिमान हुई । तर तर – तरु-तरु, वृक्ष-वृक्ष । पालणौ – झूला । झंब –टहनी, वृक्षकी शाखा ।

घर[1] घर धमै मसांण, बिनां सिर[2] सिर धड़[3] वैरी ।
कहि[4] हरि हरि कंपिया[5], भोम[6] परहरि[7] झळ भैरी ।
के वचे[8] त्रणां धरि धरि कमळ[9], तेग छोडि[10] जुध तेवड़ां[11] ।
इम कियौ[12] कोप करि करि 'अभै', दळे मांण भड़ देवड़ां ।। ३४२

करै[13] न घड़ां[14] कुंवारि[15], करे चढ़ि तेल[16] कुंवारे[17] ।
ससत्र[18] न कसे छतीस, अभ्रण छत्तीस अधारे ।
सभे न सोळह सार, सोळ सिंगार समारी ।
सिणगारी नह फौज[19], राजकुंवरी स्रंगारी[20] ।
'उम्मेदराव'[21] नांमै 'अभै', लूटि डंड[22] डोळौ[23] लियौ[24] ।
मछरीक करे[25] ताबीन[26] मझि, इम पालणपुर[27] आवियौ[28] ।। ३४३

---

१ ख. ग. घरि घरि । २ ख. सिर सिरि । ३ ख. ग. धड । ४ ख. ग. कहै । ५ ख. कंपीया । ६ ख. ग. भोग । ७ ग. परहर । ८ ख. ग. वचै । ९ ख. कमलि । १० ग. छाडि । ११ ख. ग. तेवडां । १२ ख. ग. कीया । १३ ख. करे । १४ ख. यडा । १५ ख. कुंआरि । ग. कुआर । १६ ग. ते । १७ ख. कुंआरे । ग. कुआरे । १८ ख. ग. सस्त्र । १९ ग. फोज । २० ख. ग. सिणगारी । २१ ग. उमेदराव । २२ ग. दंडि । २३ ख. डोलो । २४ ख. लीयौ । २५ ग. करै । २६ ख. ग. तावीन । २७ ग. पाल्हणपुर । २८ ख. आवीयौ ।

---

३४२. धमै – धुंआ निकल रहा । परहरि – छोड़ दी । झळ – धारण कर, पकड़ कर । भैरी – वाद्य विशेष । त्रणां – तिनकों । कमळ – मुख । तेवड़ां – विचार करके । दळे – नाश करके, मिटा करके, ध्वंस करके । मांण – गर्व । देवड़ां – चौहान वंशकी देवड़ा शाखाके योद्धाओंका ।

३४३. घड़ां कुंवारि – विना युद्ध किये युद्धार्थ सजी-धजी सेना । कुंवारे – कुमारी । अभ्रण – आभरण, आभूषण । अधारे – धारण किये । सार – अस्त्र-शस्त्र । समारी – सम्हाले, धारण किये । स्रंगारी – शृंगार करवाया । उम्मेदराव – सिरोहीके महारावका नाम । डोळौ – विवाहकी एक प्रथा विशेष जिसमें पिता अपनी पुत्रीको विवाह हेतु वरके यहाँ ले जाता था अथवा भेज देता था । मछरीक – चौहान राजपूत । ताबीन – मातहत, आधीन ।

कुल बळ[1] सहत[2] करीम, निहंग द्रब[3] सझि निजरामां[4] ।
मिलै[5] आय सांमुहौ, सझे अनेक[6] सलांमां[7] ।
कहि[8] करीम कर जोड़[9], सदा हम बंदा[10] खासा ।
अनुचर गिण[11] आपरौ, दीध भूपाळ दिलासा ।
सतरेंज[12] तणै[13] पहलै[14] सहर[15], दळ सझियौ[16] 'गजबंध' दुवौ।
उच्छाह[17] हुवौ सारो इळा, हद डेरां दाखलि[18] हुवौ* ॥ ३४४

सर बुलंदखांको महाराजारी पत्र लिखणौ

खत लिखिया दिस[19] खांन, डकर ◈धारै[20] वजराई[21]
कहर गरीबां करण, मकर◈ छाडौ[22] मुगळाई ।
कांम फैल मति[23] करौ, स्यांम[24] ध्रम धरौ[25] सिपाही ।
सराजांम दौ[26] सरब, तोपखांनां पतिसाही ।
अहमदावाद दीधौ[27] अम्हां, सुणौ[28] हुकम पतिसाहरौ ।
मांमलौ[29] तजौ[30] आवौ[31] मिळौ[32], किलौ[33] सहर खाली करौ[34] ॥ ३४५

---

१ ख. ग. दळ। २ ग. सहित। ३ ख. ग. द्रव्य। ४ ख. ग. नजरांमां। ५ ख. मिलो। ६ ग. अनेक। ७ ग. सिलांमां। ८ ख. ग. कहै। ९ ख. जोडि। १० ख. वंदा। ११ ख. गिणि। १२ ख. ग. सतरेंच। १३ ख. तणों। १४ ख. पहिले। ग. पहले। १५ ख. ग. सहरि। १६ ख. ग. सझियां। १७ ग. उछाह। १८ ग. दाखिल।
*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है।
१९ ख. ग. दिसि।
◈...◈चिन्हांकित पद्यांश ख. प्रतिमें नहीं है।
२० ग. धारो। २१ ग. उवराई। २२ ग. छांडो। २३ ख. मत। २४ ग. सांम। २५ ख. धरो। ग. धारौ। २६ ख. ग. द्यौ। २७ ग. दीधो। २८ ग. सुणो। २९ ग. सांमलो। ३० ग. तजो। ३१ ग. आवो। ३२ ग. मिलां। ३३ ख. किलो। ३४ ख. करो।

---

३४४. बळ – सेना, दल। करीम – पालनपुरके नवाबका नाम। निहंग – घोड़ा। द्रब – द्रव्य। निजरांमां – नजराना। दिलासा – सांत्वना। गजबंध दुवौ – दूसरा गजसिंह, महाराजा अभयसिंहके लिये प्रयोग किया गया है। हद – बहुत, असीम।

३४५. खांन – मुबारिजुलमुल्क सर बुलंदखां। डकर – जोश, आवेश। वजराई – वज्र जैसी कठोरता। कहर – ध्वंस, नाश। मकर – गर्व, अभिमान। छाडौ – छोड़ दो। मुगळाई – यवनत्व। फैल – उत्पात, उपद्रव। स्यांम ध्रम – स्वामी धर्म। सराजांम – सामान। अम्हां – हमको। मांमलौ – झगड़ा।

इम[1] लिखिया 'अभमाल', 'विलंद' कागज वचवाया।
'सयद[2] अली' 'जम्माल'[3], 'अली अहमंद'[4] बुलाया[5]।
तरियन[6] खांन पठांण, सेख अलियार[7] सलद्दी[8]।
मिळै[9] सेख मुजदाह[10], मुगल आगा मुतसद्दी[11]।
दामादखांन अबदल फता, साहिब जादा सांभळै[12]।
सिर[13] विलंद हूंत मसलत[14] सभ्रण, मुसलमांन एता मिळै[15] ॥ ३४४

आगा सेख मुसाद[16], कहै जँग इहां न कीजे[17]।
हूव[18] इलाहाबाद, लोह[19] कर उहां लड़ीजे[20]।
यहिज[21] फतैखां यलम[22], यहिज[23] कहि[24] साहिब जादा।
यह[25] हुकम्म[26] असपति[27], यहिंज[28] नौकरां इरादा।
सिर[29] विलंद मनै[30] न मनै असुर, च्यार वार[31] टेकां चड़ै[32]।
'अहमद'[33] 'जमाल' 'अलिहार' अर, तरियलखां[34] जुध तेवड़ै ॥ ३४५

मुगल निजांमन मुलक, दखण[35] सव मुलक दबाया।
फतै करी दुय[36] फौज, उहां[37] फिर[38] कोय[39] न आया।

---

१ ख. ग टाम। २ ख. ग. सईयद। ३ ख. ग. जमाल। ४ ख. अहवद। ५ ख. वुलवाया। ग. वुलवाया। ६ ख. ग. तरियण। ७ ख. ग. अलीयार। ८ ग. सल्द्दी। ९ ख. ग. मिले। १० ख. मुजहाद। ग. मजहाद। ११ ग. मुतसदी। १२ ख. संभिले। ग. संमिले। १३ ख. सिरि। १४ ख. ग. मसलति। १५ ख. ग. मिले। १६ ग. मुजाद। १७ ख. ग. कीजै। १८ ख. ग. हुवा। १९ क. लौह। २० ख. ग. लड़ीजै। २१ ख ग. यंहीज। २२ ख. ग. इलम। २३ ख. इहीज। ग. यहीज। २४ ख. कहे। ग. कही। २५ ख. यहीज। ग. यहज। २६ ख. ग. हुकम। २७ क. असत्री। २८ ख. ग. यहीज। २९ ख. सिरि। ३० ग. मानै। ३१ ख. यार। ग. च्यार। ३२ ख. ग. चढ़ै। ३३ ख. अहवद। ग. अहमदावाद। ३४ ख. ग. तरीयनषां ३५ ख. दषिण। ग. दक्षिण। ३६ ख. ग. दोय। ३७ ख. उहां। ग. हुंहां। ३८ ख. फिरि। ३९ ख. ग. कोई।

---

३४६. विलंद – मुबारिजुलमुल्क सर वुलंद। तरियनखांन – सर वुलंदकी सेनामें एक वीरका नाम। अलियार – अल्लाहयार नामक यवन।

३४७. लोह ·· लड़ीजे – अस्त्रों-शस्त्रोंसे वहाँ पर जा कर युद्ध करना चाहिए। यहिज – यह ही। इरादा – विचार। च्यार···चड़ै – चार वार अपनी वात पर पूर्ण रूपसे डटे रहे। तेवड़ै – विचार किया।

३४८. दखण···दवाया – दक्षिणको अपने पूर्ण अधिकारमें कर लिया।

इस[1] उज्जै तुम इहां, जंग कर[2] अमल जमावौ।
अवरन आवै इहां, आप पतिसाह कहावौ।
सुणि[3] एम कीध नौबत[4] सरू, इम जबाव[5] लिखिया[6] उतर[7]।
महाराज नांम[8] सिरविलंद में[9], सिर सेत्री धूंगा[10] सहर॥ ३४८

इम जबाव[11] सुणि असुर, खिजे कमधज[12] खेधायक[13]।
अँग[14] दवात उथपियां[15], नरिंद जांणै[16] रुघनायक[17]।
उझल कोप उणवार, दुझल 'अभमल'[18] दरसायौ।
काल जवन कथ कहै[19], जांण[20] मुचकंद जगायौ।
पुर न दूं[21] तोय नमिळं परति, वदै अभौ इम खळ बके[22]।
दिन तीन मांय[23] मेटूं[24] दळे, तीन टेक धारी तिके॥ ३४९

कहि यम[25] हैजम करे, विखम रूपी विकराळा।
चढ़ि मदझर चालियौ[26], तूर वाजतां[27] त्रंबाळा[28]।
तूटे[29] नदी तटाक, हाक खूटे ताळीहर।
पंगराव[30] जिम प्रबळ, हले फौजां घैसाहर[31]।

---

१ ख. ग. इसी। २ ख. ग. करि। ३ ग. सुनि। ४ ख. नौवति। ग. नौबति। ५ ख. जवाव। ग. जुबाब। ६ ग. लिषिग्रा। ७ ख. ऊतर। ८ ख. तांम। ९ ख. ग. मै। १० ख. द्युंगा। ग. द्यौगा। ११ ख. जवाव। ग. जुबाब। १२ ख. कमवध। ग. कमंधज। १३ ख. ग. षेधाइक। १४ ग. अंगि। १५ ख. उथपीयां। ग. उथपि। १६ ख. जांणे। १७ ग. रघुनायक। १८ ग. अभमाल। १९ ख. ग. कहे। २० ख. जांणि। २१ ख. ग. द्यौ। २२ क. वकै। २३ ख. ग. मांहि। २४ ग. मेटु। २५ ख. ग. इम। २६ ख. चालीयौ। २७ ख. वाजंतां। ग. वाजतां। २८ ख. त्रंवाला। ग. त्रांबाळां। २९ ग. तूटै। ३० ख. पंगएव। ३१ ख. घांसाहर। ग. घंसाहर।

---

३४८. उज्जै – वजह, कारण। सरू – आरंभ।

३४९. असुर – यवन, सर बुलंद खां। खिजे – कोप किया। खेधायक – शत्रु। रुघनायक – श्रीरामचंद्र। काल जवन – एक प्राचीन राजाका नाम जिसके पिता महर्षि गार्ग्य थे तथा माता गोपाली नामकी अप्सरा थी (वि. वि. परिशिष्ट देखें)। मुचकंद – अयोध्याके प्राचीन राजा मुचुकुंद (वि. वि. परिशिष्ट देखें)। परति – प्रत्यक्ष। वदै – कहता है। अभौ – महाराजा अभयसिंह। दळे – नाश कर के।

३५०. हैजम – सेना, दल। मदझर – हाथी। तटाक – तालाब। हाक – जोशपूर्ण आवाज। खूटे – घट गया। पंगराव – राठौड़ राजा जयचंद। घैसाहर – फौज, समूह।

हैनाळ पहट गिर तर हुवा, चढ़े घटा रज पर चँडे[1]।
सरसती नदी तटि सिंधपुर[2], महिपत्ती[3] डेरा मँडे ॥ ३५०

महाराजा अभयसिंहका सरदारांरै साथ बड़ौ दरबार करणौ अर सरदारांरौ जोसपूरण उत्तर देणौ

दुभ्झल सिरै[4] दरबार, उठे[5] कीधौ 'अभपती'।
तखत बैठ[6] तेड़िया[7], प्रबळ उमराव प्रभती[8]।
आठ मिसल उमराव, सूर आविया[9] सकाजा।
दुज मंत्री कवि दुभ्झल, मिळे दरगह महाराजा[10]।
'अभमाल' छभा वणि[11] दुभ्झल[12] इम, जगचख मुखि मुखि जोपिया[13]।
सांमठा सिंघ[14] नरसिंघ रै, आगळ[15] जांणै[16] ओपिया[17] ॥ ३५१

दरगह पूर दुभ्झाल, कहै[18] 'अभमाल' एम[19] कथ।
कहौ[20] भड़ां किम[21] करां, भिड़े मुगळांहूं[22] भारथ।
चांपावत-तदि चांपा बोलिया[23], सिरै 'माहव'[24] भड़ सारां।
करि आया जिम करां, 'गजण' खुरमह गजभारां।
तद[25] कहै 'कुसळ' 'हरनाथ' तण, मसतक छिवि[26] असमांनरै।
रण वसँत फाग खागां रमां, खासावाड़ै खांनरै* ॥ ३५२

१ ग. चढ़े। २ ख. ग. सीधपुरि। ३ ख. महिपती। ग. महपती। ४ ख. सरौ। ग. सरै। ५ ख. ग. उठै। ६ ग. बैठि। ७ ख. तेडीया। ८ ग. प्रभत्ती। ९ ख. आवीया। १० ख. माहाराजा। ११ ग. मिलि। १२ ख. ग. झूल। १३ ख. जोपीया। ग. जोइया। १४ ख. सींघ। १५ ख. ग. आगलि। १६ ख. जांणे। ग. जांणै। १७ ख. ओपीया। ग. उपीया। १८ ख. ग. कहे। १९ ग. येम। २० ग. कहो। २१ ख. इम। २२ ख. मूंगल। ग. मुगलहूं। २३ ख. बोलीया। २४ ख. ग. माह। २५ ख. ग. तदि। २६ ख. ग. छवि। *ख. प्रतिमें यह पंक्ति नहीं है।

३५०. हैनाळ – घोड़ोंके टापोंकी नाल। पहट – टक्कर लग कर। सरसती नदी – साबरमती नामक नदी। तटि – तट पर। सिंधपुर – स्थानका नाम।

३५१. प्रभती – तेजस्वी, प्रभायुक्त। दुज – द्विज ब्राह्मण। दरगह – दरबार। जगचख – सूर्य। मुखि – अगाड़ी। जोपिया – जोशपूर्ण हुआ। नरसिंघ – नृसिंहावतार।

३५२. चांपा – चांपावत शाखाके राठौड़। माहव – महासिंह चांपावत पोकरणका ठाकुर। गजभारां – हाथियोंकी सेना। कुसळ – आउआका ठाकुर हरनाथसिंहका पुत्र चांपावत कुशलसिंह। छिवि – स्पर्श कर के। खासावाड़ै – मुख्य दल जो राजा या सेनापतिके इर्द-गिर्द होता है।

बहसि[1] 'करण' बोलियौ[2], सुतण 'राजड़' तिण मौसर ।
तोलि भुजां असमांन, तोल[3] तरवार[4] बहादर[5] ।
ओरि[6] तुरँग असुररां, जँगी[7] हवदां लगि[8] जाऊं ।
सिर विहँडूं घण सत्रां, विखम निज सिर विहँडाऊं* ।
अभमाल आप छळि करि अचड़, वप विहँडाय[9] रँभा[10] वरूं ।
जँग[11] करण महाभारथ[12] ज्युंही[13], 'करण' नांम साचौ[14] करूं ।। ३५३

कहै अनावत सकत, जुड़ूं जिम भूप जुजट्ठळ[15] ।
कहै दलौ[16] 'मुकंद'रौ, हिचूं[17] ओर[18] असि हरवळ ।
दाखै 'भैरूंदास', लोह झेलूं र झिलाऊं ।
कहै 'लाल' 'सकत'रौ[19], विखम खग झाट वजाऊं ।
तदि कहि[20] 'किसन्न'[21] 'जसंवत' तण[22], अम्हां वडौ प्रब आजरौ ।
महाराज[23] सुछळ[24] जुध[25] राज मिळ[26] राज लहूं[27] सुरराजरौ[28] ।। ३५४

तेजावत तिणवार, 'रूप' बोलै मछराळौ[29] ।
विकराळा[30] दळ[31] विचै, करूं धमचक[32] कळिचाळौ ।

---

१ ख. ग. वहसि । २ ख. वोलीयौ । ३ ख. ग. तोलि । ४ ख. तरवारि । ५ ख. वहादर । ग. वाहादर । ६ ख. ग. वोरि । ७ ख. जंगि । ८ ग. लग ।

*यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

९ ख. विहंडाए । १० ख. रंभ । ग. अपछर । ११ ख. जगि । १२ ख. माहाभारथ । १३ ख. जहीं । ग. जट्टी । १४ ख. सांचौ । १५ ग. जुजठल । १६ क. दलू । १७ ख. ग. हिंचू । १८ ख. ग. वोरे । १९ ग. सकति । २० ख. ग. कहै । २१ ख. ग. किसन । २२ ख. ग. सुतण । २३ ख. माहाराज । २४ ख. ग. सुछलि । २५ ख. सुध । २६ ख. ग. मिलि । २७ ख. लहौ । २८ ग. सुरराजरौ । २९ ख. छमराळौ । ३० ग. विकराळां । ३१ ग. दळं । ३२ ख. धंमचकि ।

---

३५३. बहसि – जोशमें आकर । करण – पालीके ठाकुर राजसिंह चांपावतका पुत्र करण । राजड़ – राजसिंह । विहंडूं – नाश करूं । विहंडाऊं – करवा दूं, नाश करवा दूं । छळि – लिए, युद्धमें । वप – शरीर ।

३५४. सकत – शक्तिसिंहका । जुजट्ठळ – युधिष्ठिर । दलौ मुकंदरौ – मुकंदसिंहका पुत्र, दलसिंह । हिचूं – युद्ध कर । किसन्न – जसवंतसिंहका पुत्र किसनसिंह । सुछळ – युद्ध, लिये । सुरराजरौ – इन्द्रका ।

३५५. तेजावत ''रूप – रूपसिंह तेजसिंहका वंशज । मछराळौ – वीर, योद्धा । धमचक – जबरदस्त, भयंकर । कळिचाळौ – युद्ध ।

'केहर'[१] 'जसावत' कहै, घणां मुगळां खग[२] घाऊं[३] ।
काय आऊं जुध[४] कांम, कियै सिभजियत[५] कहाऊं[६] ।
वोलियौ[७] सुतण 'हरियँद'[८] वहसि, रुख मजीठ मुख[९] रंगरै ।
मल सहँस जेम कहि सहँसमल, जुड़ूं[१०] अखाड़ै जंगरै ॥ ३५५

इम 'चांपा' वोलिया[११], आदि विरदां अजवाळा[१२] ।
कूंपावत– पह[१३] 'कूंपा' पूछियौ[१४], कहै इण[१५] विध[१६] कळिचाळा[१७] ।
सिरै धणी 'आसोप', दुभल[१८] झळहळ तप दारण[१९] ।
रढ़ै[२०] 'कन्ह[२१] 'रांम'रौ, स्यांम कांम रौ सुधारण ।
रिण[२२] समंद[२३] किलकिला[२४] पंख रचि[२५], औरि[२६] तुरंग इम आहुड़ां ।
तन[२७] सेल मीर जादांतणै, जंगी हवदांमझि जड़ां ॥ ३५६

निडर 'चँडावळ'[२८] नाथ, रूप ग्रीखम रवि रावत ।
उदैभांण वोलियौ[२९], फौज सिरपोस फतावत ।
हाकलि असि हरवळी[३०], अणी दल 'विलंद' उडाऊं[३१] ।
खग झाटां खेलतौ[३२], जँगि हवदां लगि जाऊं[३३] ।

---

१ ख. ग. केहरि । २ ख. घगि । ३ ख. धांऊं । ग. घाऊ । ४ ख. जुधि । ५ ख. भुजीवत । ६ ग. कहाऊ । ७ ख. वोलीयो । ग. वोलियो । ८ ख. हरीयंद । ९ ख. रुप । १० ख. जुड़ूं । ग. जूड़ू । ११ ख. वोलीया । १२ ख. ग. उजवाळा । १३ ख. ग. पौहो । १४ ख. वोलीया । ग. पूछिया । १५ ग. इम । १६ ख. ग. विधि । १७ ग. कळचाळा । १८ ग. दुझह । १९ ग. दारुण । २० ख. ग. रटै । २१ ख. ग. कांन्ह । २२ ख. ग. रण । २३ ख. समदि । २४ ग. किलिकिला । २५ ख. ग. रुष । २६ ग. ओर । २७ ख. ग. तनि । २८ ख. ग. चंडावलि । २९ ख. वोलीयो । ३० ग. हरवलां । ४ ख. उडाउं । ५ ग. षेलतां । ६ ख. जांऊं । ग. जाउ ।

---

३५५. केहर जसावत – जसावत केसरीसिंह । सिभजियत = जीवित सिंह – युद्धमें घायल वीर । बोलियो······रंगरै – हरिसिंहका पुत्र सूरतसिंह या गजसिंह जोशमें आकर चेहरा लाल किये हुए बोला । मलसँहस – सहसमल वलुओत चांपावत । जुड़ूं – भिड़ जाऊं । अखाड़ै – युद्धस्थलमें ।

३५६. चांपा – चांपावत शाखाके राठौड़ । कूंपां – कूंपावत शाखाके राठौड़ । कळिचाळा – वीर, योद्धा । तप – कांति, तेज । रढ़ै – वीर । कन्हरांमरौ – रामसिंहका पुत्र कन्हीराम कूंपावत आसोपका ठाकुर । रिण समंद······जड़ां – युद्ध रूपी समुद्रमें किलकिला पक्षीके समान झपट मारते घोड़ोंको झोंक कर इस प्रकार युद्ध करूंगा कि हाथीके हौदों पर बैठे हुए मीरजादोंके शरीरमें भालोंका प्रहार करूंगा ।

३५७. रवि – सूर्य । रावत – योद्धा, वीर ।

मौताज[1] अम्हां हरवळ मिळण, सो[2] कुळवाट न वीसरूं।
'गोरधन' कियौ[3] 'गजबंध' अग्र, कळह आप अग्र मैं करूं ॥ ३५७

सुणि[4] 'रांमौ'[5] सबळरौ[6], एम बोलियौ[7] अड़ीखँभ[8]।
विड़ंग ओरि[9] दळ[10] 'विलँद', जवन[11] खग[12] हणू रूप जम।
घण झेलूं खग घाव, सांम निज कांम सुधारूं[13]।
सिर समपूं[14] सँकरनूं[15], रंभ चौसरि[16] गळ[17] धारूं[18]।
जगतणी मोह माया तजूं, जिम गोपीचंद भरथरी।
चढ़ि रथां अमरपुर मझि चढ़ूं[19], अमर कीत करि आपरी ॥ ३५८

भड़[20] बोलै[21] हरभांण[22], भांण[23] पौरस[24] भाळाहळ[25]।
असुर थाट[26] आछटूं[27], झाट बांणास[28] झळाहळ।
समर वाग[29] वज्र कुसम, भमर जिम करि भेदंगर।
दूं[30] दूहां[31] मझि[32] एक[33], सुवप अम्मर[34] काइ[35] संकर।

---

१ ग. मोताज। २ ग. सौ। ३ ख. कीयौ। ४ ग. सूणि। ५ ख. रामौ। ग. रामो। ६ ख. सवल रौ। ७ ख. वोलीयो। ग. वोलियो। ८ ख. ग. अडीषम। ९ ख. ग. वोरि। १० ग. दळि। ११ ग. जवण। १२ ख. ग. षगि। १३ ग. सुधारौ। १४ ख. समपो। १५ ग. नौ। १६ ख. ग. चौसर। १७ ख गळि। १८ ग. धारौ। १९ ग. चलौ। २० ख. भडि। २१ ख. वोले। ग. बोले। २२ ख. ग. हरिभांण। २३ ख. ग. भांण। २४ ख. पौरस्स। २५ ख. भलाहल। ग. भळाहळ। २६ ख. ग. छाट। २७ ग. आछट। २८ ख. वाणांस। ग. वांणांस। २९ ग. वागि। ३० ख. दु। ग. हू। ३१ ख. दुहुवां। ग. दुहूवां। ३२ ग. भझ। ३३ ख. ग. हेक। ३४ ख. अम्मर। ग. अमर। ३५ ख. ग. काय।

---

३५७. मौताज – मोहताज, इच्छुक। न वीसरूं – विस्मरण नहीं करूं। गोरधन – चंडावलका ठाकुर गोरधनसिंह जिसने महाराजा गजसिंहजीके पक्षमें रह कर शाहजादा खुर्रमसे भयंकर युद्ध किया था।

३५८. रांमौ – सबलसिंहका पुत्र रामसिंह। अड़ीखंभ – वीर। विड़ंग – घोड़ा। सांम – स्वामी। चौसरि – पुष्पहार।

३५९. हरभांण – भोपतोत हरिभाणसिंह कूंपावत। भेदंगर – भेदन करने वाला।

'सिरदार' 'पीथ' फतमालसुत, तई गयण भुज तोलिया[1] ।
जुध करां भीम 'अरजन'[2] ज्युंहीं[3], बँधव 'भांण' इम वोलिया[4] ।। ३५९

'सांवत'[5] रौ[6] 'सुरतांण', तांम वहसे[7] खग तोलै[8] ।
रंग लाल रोसंग, वोळ लोयण करि वोलै[9] ।
असि झोकै आतसां, धसां घड़ 'विलँद' समर धर ।
कर[10] वहसां[11] खग करां, विखम तहसां वैरीहर ।
ऊससां[12] ससत्र[13] झेलां उरड़ि[14], सिर वगसां[15] ससि इंदरै ।
रथ चढ़े हसां गळवांह रँभ, एम वसां पुर इंदरै ।। ३६०

मेड़तियां[16] सिर मौड़[17], 'सेर' वोलै[18] वळ सव्वळ[19] ।
गाहट हरवल[20] गोळ, वहूं[21] हौदां वीजूजळ[22] ।
पाड़ू घणा प्रचंड, मसत मैंगळ खळ मुग्गल[23] ।
काय भेदुं[24] हथक्कमळ, काय जीव[25] पंच कम्मळ[26] ।
'सिरदार' सुत[27] छिवतौ[28] उरस, अरण वदन इम उच्चरै[29] ।
निज करै सिरारौ कुरब नृप[30], कळह 'सरौ' जिमहिज करै ।। ३६१

---

१ ख. तोलीया । २ ग. अरजुन । ३ ख. ग. जहीं । ४ ख. वोलीया । ५ ख. ग. सांमंत । ६ ग. रां । ७ ख. ग. वहसे । ८ ख. तोले । ९ ख. वोले । ग. वोले । १० ख. ग. करि । ११ ख. ग. वहसां । १२ ग. उससां । १३ ख. स । ग. सस्त्र । १४ ख. ग. उरड । १५ ख. वसां । १६ ख. ग. मेडतीयां । १७ ग. मोड । १८ ख. वोले । ग. वोले । १९ ख. सव्वल । ग. सवल । २० क. हरवत । २१ क. चहूं । ग. वांहू । २२ ग. वीजूजळ । २३ ख. मूगल । ग. मुगळे । २४ ख. ग. भेदूं । २५ ख. ग. जीवत । २६ ग. कमल । २७ ख. ग. सुतण । २८ ख. ग. छवितो । २९ ग. उचरै । ३० ख. ग. नृप ।

---

३५९. सिरदार – सरदारसिंह फतहसिंह कूंपावतका पुत्र । पीथ – पृथ्वीसिंह फतहसिंह कूंपावतका पुत्र । भांण – उदयभांणसिंह फतहसिंह कूंपावतका पुत्र ।

३६०. सुरतांण – सामंतसिंहका पुत्र सुरतांणसिंह कूंपावत । बोळ – लाल । लोयण – नेत्र । ऊससां – जोशमें । ससि इंदरै – महादेव ।

३६१. सेर – रीयां ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया । गाहट – ध्वंस कर, संहार कर । गोळ – सेना, दल । वीजूजळ – तलवार । मैंगळ – हाथी । सरदार – रीयां ठाकुर सरदारसिंह ।

अभँग 'पदम' बोलियौ[1], अगन[2] पौरस ऊघाड़ै[3] ।
साजूं[4] जुध सहदेव, एम कुरखेत अखाड़ै ।
जपै 'सूर' सुत[5] 'जैत', मुगळ बह[6] खग झट मारूं ।
पहल वीर भद्र सुवप, धरे संकर वप[7] धारूं[8] ।
तदि[9] कहै 'भीम' 'मौकम'[10] तणौ, वप उपाट छक झळ वरण ।
जवनां निराट साबळ[11] जड़े, घाट करूं[12] रँगमाट घण ।। ३६२

जदि मुकँदावत 'जसौ', कहै उच्छाह[13] समर करि ।
ले जाऊं[14] लोहड़ां, धड़छि धड़[15] 'विलँद' हीक धरि ।
पछटि खगां झिल[16] पड़ूं[17], काय रणखेत सकाजा ।
काय बचूं[18] छक करे, सिंभु जीवत व्रिद साजा ।
'कलियांण'[19] तणौ[20] 'रांमौ'[21] कहै, सझूं[22] समांमौ[23] खग समर ।
करि जीत विहद कांमौ[24] करूं, इळा सुजस नांमौ[25] अमर ।। ३६३

मतवाळौ[26] इम मुणै, कमँध दारण[27] 'कुसळावत' ।
जाऊं खासा गजां, घणां मुगळां दळ घावत ।

---

१ ख. वोलीयो । २ ख. ग. अगनि । ३ ख. ऊघाडै । ग. उघाडै । ४ ख. ग. साझूं । ५ ग. सूत । ६ ख. वहौ । ग. वहु । ७ ग. वपु । ८ ग. धारौ । ९ ग. तद । १० ख. महौकम । ग. मोकम । ११ ख. ग. सावल । १२ ग. करौ । १३ ख. ग. उछाह । १४ ख. जाउं । १५ ख. गड । ग. घड । १६ ख. ग. झिलि । १७ ख. पडं । ग. पडु । १८ ख. ग. वचूं । १९ ख. केलीयांण । २० ग. तणो । २१ ग. रामो । २२ ग. सझो । २३ ग. समांमों । २४ ग. कांमो । २५ ख. नामौ । ग. नांमो । २६ ख. मतिवालौ । ग. मतिवोलो । २७ ख. दारुण ।

---

३६२. पदम – पद्मसिंह । सूर – सूरसिंह मेड़तिया । जैत – जैतो या जैतसिंह मेड़तिया जो सूरसिंहका पुत्र था । वीर भद्र – शिवके एक गणका नाम जो उनके पुत्र और अवतार माने जाते हैं, कहते हैं कि दक्षका यज्ञ इन्होंनेही ध्वंस किया था । भीम – भीमसिंह मेड़तिया । मौकम – मुहकमसिंह मेड़तिया । निराट – बहुत, भयंकर । जड़े – प्रहार कर के ।

३६३. मुकँदावत – मुकंनसिंहका पुत्र । जसौ – जसवंतसिंह । लोहड़ां – शस्त्रों, तलवारों । हीक – प्रहार । पछटि – प्रहार कर के । सिंभु जीवत – वह वीर जो युद्धमें अनेक शस्त्र-प्रहार सहन कर जीवित रह जाता हो । कलियांण – कल्याणसिंह । रांमौ – रामसिंह । समांमौ – उत्तम, श्रेष्ठ । विहद कांमौ – महान कार्य ।

३६४. मुणै – कहता है । कुसळावत – कुशलसिंहका पुत्र । खासा गजां – वे हाथी जिन पर बादशाह या राजा स्वयं सवारी करता है ।

उडै खाग ऊपरा, हसै नारद रिख हासौ।
विढ़ण[1] एम[2] वेखवै, तरण रथ थांभि[3] तमासौ।
झड़ पड़ूं[4] लोह पूरां[5] झिलै[6], भीम कहै व्रद[7] भारऊं।
अपछरां हाथ[8] प्याला अम्रत[9], पीती सुरग[10] पधारऊं[11] ॥ ३६४

जोधांनाथ जियार[12], जोध पूछै[13] जोधाहर।
'भीम' सुतण अणभंग, वहसि[14] बोलियौ[15] वहादर[16]।
असि भेळूं करि उमंग, रंग बीमाह महारिण[17]।
तीर[18] अक्षत[19] झेलतौ[20], वींद[21] जिम तोरण वंदण[22]।
खुरसांण विहँड[23] सावळ खड़ग, चोळ करां गज चाचरां।
'अभमाल' प्रताप रिण[24] आपरै, कहै 'प्रताप' फतै करां ॥ ३६५

झूंझावत फतमाल, कहै नाहर करणावत।
जग[25] लालावत जैत, दुग्रद[26] 'मोहण' ऊदावत[27]।

---

१. ख. विढ। ग. विढूं। २ ग. येम। ३ ख. ग. थांभ। ४ ख. झडि पडूं। ग. झडि पडौ। ५ ग. पूर। ६ ग. झलै। ७ ख. ग. वृद। ८ ग. होय। ९ ख. ग. अमृत। १० ग. सुरगि। ११ ग. पधारउ। १२ ख. जीयार। १३ ख. पूछे। १४ ख. ग. वहसि। १५ ख. वोलीयौ। १६ ख. वहादर। ग. वाहादर। १७ ख. महारण ग. महारण। १८ क. तोन। १९ ख. ग. अपत। २० ग. झेलतो। २१ ग. वींद। २२ ख. ग. वांदण। २३ ग. विहंडि। २४ ख. ग. तप। २५ ल. ग. जगि। २६ ख. दुविदां। ग. देपि। २७ ग. उदावत।

---

३६४. विढ़ण – युद्ध। वेखवै – देखता है, देखेगा। तरण – तरणि, सूर्य। झड़⋯झिलै – पूर्ण शस्त्र-प्रहारोंको सहन करता हुआ वीरगतिको प्राप्त होऊंगा।

३६५. जोधांनाथ – महाराजा अभयसिंह। जोधाहर – राव जोधाके वंशज। भीम – भीमसिंह। महारिण – महायुद्ध। तीर⋯वंदण – तीर रूपी अक्षत (न टूटे हुये चावल जो देव-पूजामें देवताओंको चढ़ाये जाते हैं या मांगलिक अवसरों पर तिलक करनेमें लिये जाते हैं) को धारण करता हुआ जिस प्रकार दुल्हा तोरण पर आता है वैसे हीमैं युद्धस्थलमें जाऊंगा। खुरसांण – यवन, मुसलमान। विहँड – नाश कर, ध्वंस कर के। प्रताप – प्रतापसिंह।

३६६. झूंझावत फतमाल – झूंझारसिंहका पुत्र फतहसिंह। नाहर – नाहरसिंह करणावत। लालावत जैत – लालसिंहका पुत्र जैतसिंह। मोहण – मोहनसिंह।

साहिव[1] खां 'जोध'रौ, 'वाघ' कहै सुतण[2] विहारी।
'फतमल' सिवदांनरौ, भीच लीधां व्रद[3] भारी।
अै[4] कहै 'सूर' दारण इता, जरद पोस सेलां जड़ां।
वरियांम[5] मुहर[6] 'सिर[7] विलँद' हूँ, रमां[8] डंडे हड रूकड़ां॥ ३६६

बहसि[9] 'हठी' बोलियौ[10], उरस छिबतौ[11] 'जोगावत'।
चोळ वदन चखचोळ, रूप ग्रीखम रवि रावत।
पमँग ओरि स्रब पहिल[12], करूं जुध घड़ा कुंवारी[13]।
सिर तूटै तौइ[14] जुटूं, ऐह[15] मो चित इकतारी।
रँभ वरूं सराहै हाथ रवि, अर पग सारा है उरगि[16]।
जोगेस कठण[17] पावै जिकौ[18], सहज[19] तिकौ[20] पाऊं सरगि[21]॥ ३६७

मुहर[22] भूप पित मुहर[23], गुमर धर कुंवर 'गुमांनौ'।
सादूळौ सिंघली, एम बोलियौ[24] 'अमांनौ'।
जुड़ी[25] एम जोसरां[26], वेस नां चढ़ै[27] वपच्छर[28]।
मँडूं गळै मौसरां, पहल[29] चौसरां अपच्छर[30]।

---

१ ग. साहिब। २ ग. प्रतिमें यह नहीं है। ३ ख. वृंद। ४ ग. अे। ५ ख. वरीयाम। ग. वरियास। ६ ख. महौरि। ग. महौर। ७ ग. सिरि विलंद। ८ क. रिमां। ९ ख. ग. वहसि। १० ख. वोलीयौ। ग. बोलियो। ११. ख. छिबीयौ। ग. छिवीयो। १२ ख. ग. पहल। १३ ख. ग. कुंआरी। १४ ख. ग. तहीं। १५ ख. एह। १६ ख. ख. उरग। १७ ख. ग. कठिण। १८ ख. जिको। १९ ग. सहजि। २० ख. ग. तिको। २१ ख. ग. सुरग। २२ ख. नौहोरि। ग. मोहोरि। २३ ख. मौहरि। ग. मोहरि। २४ ख. वोलीयौ। ग. बोलियो। २५ ग. जुड्ड। २६ ग. जौसरां। २७ ख. ग. लगे। २८ ख. ग. वपछर। २९ ग. पहिल। ३० ख. अपछर। ग. अपछरां।

---

३६६. जोधरौ – जोधसिंहका पुत्र। वाघ – वाघसिंह। विहारी – बिहारीदास। भीच – योद्धा। जरद पोस – कवचधारी। डंडे हड – चरचरी नृत्य, होलिका नृत्य। रूकड़ां – तलवारों।

३६७. हठी – हठीसिंह। रावत – योद्धा, वीर। घड़ा कुंवारी – विना युद्ध किये हुए सुसज्जित सेना। जोगेस – योगीश, महायोगी।

३६८. मुहर – अगाड़ी, अग्र। गुमांनौ – गुमानसिंह। सादूळौ – शार्दूलसिंह। सिंघली – वीर।

वड़[1] पड़ू[2] विहर[3] थाटां 'विळंद'[4], भुजलग[5] झट सेलां भचड़ि[6] ।
लुग[7] दसूं कहै 'हटमल' सुतन, अमूनि[8] जिम खाटै अचड़ि[9] ।। ३६८

उठै[10] उमेदहवार, रिधू दूजौ 'रतनागर' ।
'अगसत' जिम आचऊं, समर अरि घूंमर[11] सागर ।
भिड़[12] सिर[13] भद्र जातियां[14], विहर[15] खग[16] गंज वणाऊं ।
माळ आदि मोतियां[17], उमां भूखण पहराऊं[18] ।
जिम करूं वीरभद्र दक्ष[19] जग्यन[20], कचर-घांण किलमांणरौ ।
इम 'अभा' हूंत मिसलति[21] अरज, रटै 'पतौ' 'महिरांणरौ' ।। ३६९

उदावत—ऊदां[22] वूझै[23] 'अभी'[24], 'हदौ'[25] वोलियौ[26] वहादर ।
हद जूनौ खिलह्वार, जोध वदियौ[27] धमजग्गर[28] ।
छळ वळ समर वछेक, वीर[29] असि लोह उडाऊं[30] ।
घाऊं[31] खळ दळ घणां, चुरसि[32] कुळि सुजस[33] चढ़ाऊं ।

---

१ ख. वढ़ि । ग. विढ़ि । २ ग. पड । ३ ख. ग विलंद । ४ ख. विहंड । ग. विहंडि । ५ ख. भुजलंग । ६ ख. ग. भचड । ७ ख. ग. थुगि । ८ ख. ग. अभिमुनी । ९ ख. ग. अचड । १० ग. उठे । ११ ख. ग. घुम्मर । १२ ख. ग. भिडि । १३ ख. ग. सिरि । १४ ख. ग. जातीयां । १५ ख. ग. विहरि । १६ ग. पगि । १७ ख. ग. मोतीयां । १८ ख. ग. पहिराऊं । १९ ख. ग. दषि । २० ख. ग. जिगन । २१ ख. ग. मसलति । २२ ख. ऊदा । ग. उदा । २३ ख. वूझे । ग. वूझै । २४ ख. ग. अभै । २५ ग. हदो । २६ ख. वोलीयौ । २७ ख. ग. विदीया । २८ ग. धमजागगर । २९ ख. वोर । ग. वोरि । ३० क. उंचाऊ । ३१ ख. घांऊं । ग. घावु । ३२ ख. ग. चुरस । ३३ ख. ग. सुजल ।

---

३६८. थाटां – दलों, सेनाओं । भुजलग – तलवार । भचड़ि – टक्कर खा कर । हटमल – हठीसिंह । अमूनि – अर्जुनपुत्र वीर अभिमन्यु ।

३६९. रिधू – निश्चय, अटल । रतनागर – रत्नाकर समुद्र । अगसत – अगस्त मुनि । आचवूं – आचमन करलूं । घूंमर – सेना (?) । भिड़ – टक्कर लेकर । भद्र-जातियां श्वेत रंगके हाथियों । कचर-घांण – ध्वंस, संहार । पतौ – प्रतापसिंह । महिरांणरौ – समुद्रसिंहका ।

३७०. ऊदां – उदावत शाखाके राठौड़ । हदौ – रिदेराम उदावत । धमजग्गर – युद्ध । वीर – झोंक कर । लोह उडाऊं – शस्त्र-प्रहार करूं ।

स्रीरांम मुहरि[1] लंका समरि[2], कियौ[3] 'अजै'[4] कपि जिम करूं* ।
झागड़ू सेर-विलँदहुं, अमर पुर जाऊं अर रंभ वरूं॰ ॥ ३७०

उण वेळां बोलियौ[5], अडर 'जसराज'[6] पतावत ।
वरण अरण फबि[7] वरण, अरण लोयण दरसावत ।
हरवळ अस[8] हाकले, सत्रां धमरोळूं[9] साबळ[10] ।
गोळ जड़ू सिर गयँद, खंभ[11] जंगी हवदां खळ ।
घण लोह वाहि[12] झेलूं[13] घणा, वप चुख[14] चुख हौ रँभ[15] वरूं ।
काय होय सिभजीवत कळह", कर मरंग[16] मुजरौ करूं ॥ ३७१

'जगड़' हरां मधि[17] जोध, एक हूंतौ[18] उणवारां ।
एक लाख एरसौ[19], विखम पौरस[20] विसतारां[21] ।

---

१ ख मौहौरि । ग. मोहर । २ ख. ग. समर । ३ ख. कीयौ । ४ ग. अजो ।

* ख. तथा ग. प्रतियोंमें यहां पर निम्नलिखित पंक्ति है—
'आपरै मोहर राजा अभा. धड असुरां असि नग धरूं ।'

॰ यह पंक्ति ख. तथा ग. प्रतियोंमें नहीं है ।

५ ख. वोलीयौ । ग. वोलियो । ६ ग. जसुराज । ७ ख. ग. फवि । ८ ख. ग. असि । ९ ग. धमरोलौं । १० ख. सावल । ग. साबल । ११ ख. ग. षंभ । १२ ग. वाहि । १३ ख. लेहूं । १४ ग. चष चष । १५ ख. ग. होयरंभ ।

" यह पद्यांश ग. प्रतिमें निम्न प्रकार है—
'काय होय जीवत सिभु ज्यौं कलह ।'

१६ ख. करिमरंगि । ग. करि मररंग । १७ ख. मभि । ग. मभियोध । १८ ग. हुतो । १९ ग. ऐरसौ । २० ख. पौरिस । २१ ग. विसतारौ ।

---

३७० अजै कपि – अंजनीपुत्र हनुमान । झागड़ूं – युद्ध करूं ।

३७१. धमरोळूं – संहार करूं, मारूं । सावळ – भाला विशेष । गोळ – एक प्रकारका भाला । जड़ूं – प्रहार करूं । खळ – शत्रु । सिभजीवत – वह वीर जो युद्धस्थलमें शस्त्र-प्रहारोंसे क्षतविक्षत हो कर जीवित रह जाय ।

३७२. जगड़ हरां मधि – जगरामसिंहके वंशजोंमें ।

कहै सिलह नह[1] करूं[2]*, मिळूं खग झाट[3] समेळा।
नजर चढ़ै नीसांण, वाज[4] औरूं[5] तिण वेळा।
धारण सलाह चित नह[6] धरै, आरण करण उतावळौ[7]।
वावळा गयँद मसतां[8] विधी, वींफरियौ[9] रिण वावळौ॥ ३७२

करणावत–'करणावत' कळिचाळ, तांम[10] पूछै[11] 'अभपत्ती'।
रगावत 'अभमाल', पांण छक कहै प्रभत्ती।
ओरे[12] स हरवळां, सेल खळ[13] खगां[14] सँघारूं[15]।
गज असवारां गोळ, घड़छि घण लोह लोह सँघारूं[16]।
ह्वां अमर काय सिभजोत[17] ह्वां, विखम 'विलँद' फौजां[18] विहरि[19]।
करमाळ रँगे मुजरौ[20] करूं, केसरिया[21] झक वोळ[22] करि॥ ३७३

---

१ ग. न। २ ग. करौ।

* यहांसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न वर्णन मिला है—

'(कहै सिलह नह करूं), सपर नह वोट सधारौ।
सुजड धारि पग सेल, भिडज वौरौ गज भारौ।
घण मुगल वेघ पछट घणा, घण विपतोरण वामरौ।
वरियांम हूंत इण विध वदै, मांन सिंघ सुभ रांमरौ।
जैता पूछै जदिने, ओट पायक ओरावत।
पहल पतौ पूछीयौ, गुमर धार कणौ रावत।
कहै जैजन करौ, (मिलूं पग झाट समेळा)।'

३ ख. झाटि। ४ ख. वाजि। ५ ग. ओरू। ६ ग. एणविध। ७ ग. उत्तावळौ। ८ ख. ग. मसतांन। ९ ख. वीफरीयौ। १० ग. तेम। ११ ख. ग. पूछे। १२ ग. ओरे। १३ ख. ग. वगि। १४ ख. ग. पलां। १५ ग. सिघारौ। १६ ख. ग. सधारूं। १७ ख. ग. सिभ । १८ ग. फोजां। १९ ग. विहर। २० ग. मुजरो। २१ ख. केसरीयां २२ ख. वोल।

---

३७२. मिळूं···समेळा – जहां पर भयंकर तलवारका प्रहार होता होगा वहां जा कर युद्ध करूंगा। वाज ओरूं – घोड़ा झोंक दूंगा। वींफरियौ – क्रोध किया। रिण वावळौ – रणोन्मत्त।

३७३. करणावत – राठौड़ोंकी एक शाखा जिसमें वीर दुर्गादास जन्मा था। करणावत शाखाका राठौड़। कळिचाळ – योद्धा, वीर। दुरगावत अभमाल – देशभक्त वीर राठौड़ दुर्गादासका पुत्र अभयसिंह। गोळ – सेना, या सेनाका पीछेका अथव सेनाका मध्य भाग। घड़छि – काट कर, संहार कर। सिभजीत – वह वीर जिसके शरीर पर युद्धस्थलमें युद्ध करते समय अगणित शस्त्र-प्रहार हो गये हों।

जैतौ[1] अगिग[2] व्रजागि, तांम बोलै[3] महक्रन तण[4]।
अंग पौरस[5] ऊफणै[6], घणै छकहूंत विरद घण।
कहै ओरि केकांण, सेल असुरांण करूं सळ।
वीसहथी हथवीस[7], ओक[8] पाऊं रत[9] ऊजळ[10]।
भुज लगां 'विलँद' घड़ भड़ भिड़ज, धरा पाटि[11] झाटकि[12] धरूं[13]।
आपरा लूण[14] हूंता[15] 'अभा', कळह बोलबाला[16] करूं॥ ३७४

ऊंती[17] मौसरां, अडर सिघ[18] 'करण अभावत'[19]।
कंवरां[20] गुर इम[21] कहै, वरण मुख अरण वधावत।
अणी फूल ऊपरा, झोकि ऊडंड झळाहळ।
सझूं राड़ सांघणी, वाहि सांबळ[22] वीजूजळ।
जरदाळ घण पखराळ जुड़ि, विहँड[23] खाळ[24] नारँग वहै।
हद करां इसौ[25] जुध विहदहूँ, करां झोकि[26] सूरिज[27] कहै॥ ३७५

---

१ ग. जेतो। २ ख. ग. आगि। ३ ख. वोले। ग. बोले। ४ ग. महक्रनतन। ५ ख. पौरिस। ग. पोरस। ६ ख. ग. ऊफणै। ७ ग. हथवास। ८ ख. ग. ओक। ९ ख. ग. रथ। १० ख. ऊझल। ग. उझल। ११ ख. ग. पाट। १२ ग. झाटक। १३ ग. धरौ। १४ ख. लूंण। १५ ग. हुता। १६ ख. वोलवाला। ग. वोर वालक। १७ ख. ग. उंगंती। १८ ग. सिंध। १९ ग. अभाव। २० ख. ग. कवरां। २१ ख. इ। २२ क. सामल। ग. सावल। २३ ख. विहंडि। २४ ख. षालि। २५ ग. इसो। २६ ख. ग. झोक। २७ ख. ग. सूरज।

---

३७४. जैतौ····· महक्रन तण – महकरण या महेकावतका पुत्र करणोत जेता वज्राग्निके समान था, उस समय बोला। ओक – देवीका खप्पर जिससे वह पान करती है, अञ्जलि रत – रक्त, खून। भिड़ज – घोड़ा। धरा पाटि – भूमिको पाट कर। अभा – महाराजा अभयसिंह। कळह – युद्ध। बोलबाला – विजय, जीत।

३७५. ऊगंती – निकलती हुई। मौसरां – श्मश्रु, श्मश्रुके वाल। सिघ – करणोत सिंघ जो अभकरणका पुत्र और वीर दुर्गादासका पौत्र था। करण अभावत – अभयकरणका पुत्र। सांघणी – बढ़िया। वाहि – प्रहार कर के। वीजूजळ – तलवार। जरदाळ – कवचधारी योद्धा। पखराळ – कवचधारी घोड़ा। जुड़ि – भिड़ कर। नारँग – रक्त, खून। हद·····कहै – मैं इस प्रकारसे भयंकर युद्ध करूंगा कि मेरे हाथोंको सूर्य भगवान भी धन्यवाद देंगे।

करमसिहोत–पुहव[1] तांम पूछियौ[2], करमसोयोत कमधज ।
उदैसींघ[3] बोलियौ[4], छाक पीरस बळ ऊछज[5] ।
भिड़ज हरोळां भेळि, रवद सावळां जड़े[6] रिम ।
जांहूं लोपि सतेज, तोप वाळां गोळां तिम ।
दळ 'दिलँद' घणा[7] विहँडे[8] दुजड़, उरड़[9] गोळां धज ऊनगे[10] ।
करि दुसह भूक मुजरौ[11] करां[12], रूक सेल दहुंवै[13] रँगे ॥ ३७६

भदौ[14] 'दलौ'[15] कुळ[16] भांण, 'कलौ'[17] संग्रांम[18] श्रणंकळ ।
रांणावतां झुंझार[19], 'सिवौ'[20] 'वालां'[21] सहंसबळ ।
'भीम' धवेचां भांण, 'माल' 'राजल'[22] महवेचां ।
जैतमालां 'नरहरौ'[23], 'मग्घ'[24] पातां जुध मेचां ।
केसवौ[25] भड़ां मँडळां 'मुकँद'[26], वीदां हिंदू[27] सिंघ वण ।
श्रै कहै करौ[28] खग झट इसो, रवि साराहै हाथ रिण[29] ॥ ३७७

---

१ ख. ग. पहोव । २ ख. ग. पूछीया । ३ ख. ग. उदैसिंघ । ४ ख. बोलीयो । ५ ख. उछज । ६ ख. ग. जडे । ७ ग. घणू । ८ ख. ग. विहंडे । ९ ग. उडज । १० ग. श्रनंगे । ११ ख. ग. मुजरो । १२ ख. करूं । ग. करौं । १३ ख. ग. दुहुवें । १४ ख. ग. भदां । १५ ग. दलौ । १६ ख. कुलि । ग. कुण । १७ ख. ग. कलां । १८ ख. संगराम । ग. सगरांम । १९ ख. ग. जुझार । २० ख. सिवो । २१ ग. वालं । २२ ख. ग. रावल । २३ ग. नरहरां । २४ ख. ग. मेव । २५ क. कस्सवौ । २६ ख. ग. मुकट । २७ ख. ग. हीदू । २८ ख. ग. करां । २९ ख. रणि । ग. रवि ।

---

३७६. करमसीयोत – राठौड़ोंकी एक उपशाखा या इस शाखाका व्यक्ति । रवद – मुसलमान । दुजड़ – कटार । दुसह – शत्रु । भूक – संहार, ध्वंस ।

३७७. भदौ – राठौड़ोंकी भदावत शाखाका वीर । दलौ – दलसिंह । कलौ – कल्याणसिंह । श्रणंकळ – वीर । रांणावतां – राठौड़ वंशकी एक शाखाका । बालां – राठौड़ोंकी बाला शाखाके व्यक्तियोंमें । धवेचां – राठौड़ोंकी धवेचा शाखाके व्यक्तियोंमें । माल – मालदेव । महवेचां – राठौड़ोंकी महवेचा शाखाके व्यक्तियोंमें । जैतमालां – राठौड़ोंकी जैतमालोत शाखाके व्यक्तियोंमें । पातां – राठौड़ोंकी पातावत शाखाके व्यक्तियोंमें । मँडळां – राठौड़ोंकी मंडला शाखाके व्यक्तियोंमें । वीदां – राठौड़ोंकी वीदावत शाखाके व्यक्तियोंमें ।

भोजहरां[1] 'नाहरौ', 'मोकमल'[2] भड़ भारमलोतां[3] ।
भीमोतां[4] 'साहिबौ', त्युंहिज[5] 'जसक्रन' भीमोतां[6] ।
'सुरतौ'[7] 'गांगावतां'[8], नरां 'पदमौ'[9] नर नायक ।
अणभँग 'चूंडावतां'[10], 'विजौ' कमधां[11] वरदायक ।
दूझड़ां[12] रायपालां[13] दुझल, वयल धरां[14] सिर[15] दुंद[16] वण[17] ।
अै कहै करौ[18] खग झट इसी, रवि वाखांणै हाथ रिण[19] ।। ३७८

विखम रूप वांकड़ौ[20], कहै ऊहड़ कळिचाळौ ।
सयद पठांणां सिरै, पमँग[21] झोकूं[22] पखराळौ ।
समर धीबि[23] अड़सलां[24], रवद जरदैतां राळूं ।
आज लूंण आपरौ, 'अभा' जुध करि अजवाळूं[25] ।
केवांण पांण कणकण करूं, आछट[26] घड़ असुरांणरी ।
कपिराज जेम कर[27] ग्रहि करूं, पोथी वेद पुरांणरी ।। ३७९

भाटी-भाटी पूछै[28] भूप, छकां 'उद-भांण'[29] वरै[30] छजि[31] ।
जिणरौ[32] दादौ[33] 'रांम', आयौ[34] मुरधर कजि ।

---

१ ग. भोजहरौ । २ ख. ग. मौहक । ३ ग. भारमलौतां । ४ ख. भीमोतो । ग. भोमौतां । ५ ख. त्यूंहीज । ग. त्यौहीज । ६ ख. रूपोतां । ग. रूपौतां । ७ ख. ग. सुरतो । ८ ख. गंगावतां । ९ ग. पदमो । १० ख. चौंडावतां । ग. चांडावतां । ११ ख. ग. कमधज । १२ ख. ग. दूदडौ । १३ ख. रायपालो । १४ ख. धरौ । १५ ख. ग. सिरि । १६ ख. ग. दूद । १७ ख. ग. वणि । १८ ख. ग. करां । १९ ख. ग. रणि । २० ख. वांकडौ । ग. वांकडो । २१ ख. पमंग । ग. पवंग । २२ ग. झोकौ । २३ ख. धीवि । ग. धीव । २४ ख. ग. सावलां । २५ ख. अजुवालूं । ग. उजवालू । २६ ग. आछटि । २७ ख. ग. करि । २८ ख. ग. पूछे । २९ ग. उदभांण । ३० ख. ग. सिरै । ३२ ग. छज । ३२ ग. जिणरो । ३३ ग. दादो । ३४ ग. आयो ।

---

३७८. भोजहरां – राठौड़ वंशकी भोजावत शाखाके व्यक्तियोंमें । भारमलोतां – राठौड़ वंशकी भारमलोत शाखाके व्यक्तियोंमें । भीमोतां – राठौड़ वंशकी भीमोत शाखाके व्यक्तियोंमें । नरां – राठौड़ वंशकी नरावत शाखाके व्यक्तियोंमें । चूंडावतां – चूंडावत शाखाके व्यक्तियोंमें । विजौ – विजयसिंह । रायपालां – राठौड़ोंकी रायपाल शाखाके व्यक्तियोंमें ।

३७९. ऊहड़ – राठौड़ोंकी ऊहड़ शाखाका व्यक्ति । कळिचाळौ – योद्धा, वीर । पखराळौ – कवचधारी घोड़ा । अड़सलां – शत्रुओं । जरदैतां – कवचधारी योद्धाओं । केवांण – कृपाण, तलवार । घड़ – सेना ।

स्यांमध्रमी[1] चितसाच, सूर दारण मसलत्ती ।
वहसि 'भांण' बोलियौ, पांण तप भांण प्रभत्ती* ।
सम[2] एम पमँग औरूं समर, पमँग कसै धारक पदम ।
समसेर भांण[3] विहँडां[4] सत्रां, करे मेर जेही[5] कदम ।। ३८०

'सूर' सुतण तिण समैं, 'हठी' बोलियौ[6] झळाहळ[7] ।
उमंग समर उछाह, दुमँग[8] पौरस[9] दावानळ ।
कहै झोक[10] केकांण, पहल धजि[11] कूंत धपाऊं ।
पछै[12] विलँद थट परा, अजर खग पछट उडाऊं ।
मसतक्क[13] हाथ पग जड़[14] मुगळ, ®तेग[15] अरण झक बोळ तिम® ।
'विलँद'रा जोध[16] दमँगळ विचे[17], जुड़े करूं नट भगळ जिम ।। ३८१

'नाहर' सुत नरनाह[18], कहै हाजर[19] छक कारण ।
घैसाहर[20] सिणगार[21], दुती[22] भैराहर दारण ।
कहै निवाहर[23] कथन, तुरँग नाहर जिम तोरूं ।
दळ धू माहर दुसह, अणहथा हर[24] मझि[25] ओरूं[26] ।

---

१ ख. स्यांमध्रमी । ग. सामध्रमी ।

* यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

२ ख. ग. समि । ३ ख. झाटि । ग. झाट । ४ ख. विहंडं । ग. विहंड्ड । ५ ख. जंही । ६ ख. वोलीयौ । ग. बोलियो । ७ ग. झळाझळ । ८ ख. ग. दुगम । ९ ग. पौरिस । १० ख. ग. झोकि । ११ ख. ग. धज । १२ ख पछौ । ग. पछो । १३ ख. मसतक । ग. मसतकि । १४ ख. ग. जडि ।

® यह पद्यांश ख. तथा ग. प्रतियोंमें अलग अलग निम्न प्रकार है—

ख. 'तैझ कवोल मजीठ तिम ।' ग. 'तेझ कवोल मजीठ तिम ।'

१५ ख. तैझ । ग. तेझ । १६ ग. जौध । १७ ख. ग. विचै । १८ ग नरनाथ । १९ ख. ग जाहर । २० ख. घंसाहरस । ग. घांसाहर । २१ ख. ग. सणगार । २२ ख. ग. दुरत । २३ ग. नवाहर । २४ ग. हड़ । २५ ग. मधि । २६ ख. वोरूं ।

---

३८०. पांण - प्राण, शक्ति, बल । प्रभत्ती – प्रभा, कांति । समसेर – तलवार । विहँडां – संहार कर दूं ।

३८१. सुतण – पुत्र । हठी – हठीसिंह । सूर – सूरसिंह । झळाहळ – तेजस्वी । उमंग – जोश । दुमँग – अग्नि-कण । थट – सेना । पछट – प्रहार । दमँगळ – युद्ध । नट भगळ जिम – इन्द्रजालके खेल करने वालेके समान ।

३८२. घैसाहर – सेना, दल ।

धौंखळे[1] रिमां खग झट धजर[2], धुर[3] मौहर चौसर धरूं[4]।
कर[5] सूर सराहै इम[6] कळह, कहै 'सूरजादौ' करूं[7] ॥ ३८२

'सहँसौ'[8] बोलै[9] सूर, अडर उण वार 'अखा'रौ[10]।
पमँग[11] ओरि[12] स्रव[13] पहल, करूं घमसांण करारौ।
वाहूं[14] साबळ वीज[15], सहूं वीजळ बहु[16] साबळ[17]।
वाढ़ि मुगळ दळ वढ़ूं, चढ़ूं रंभा रथ चंचळ।
हालऊं सुरग चमरां हुतां, अमरां मझि वप धर[18] अमर।
अजवाळि[19] रिजक राखूं अखै, सा ऊजळ[20] कीरत[21] समर ॥ ३८३

चौहान– बहसि[22] तांम बोलिया[23], बिन्है[24] चहुंवांण बहादर[25]।
'अजवौहरौ'[26] अभंग, रत्त[27] मुख चख रातंबर[28]।
जंग झोकि जंगमां, असह खग[29] वरँग[30] उडावां[31]।
तै सरियत[32] कुळ तणी[33]; करे कुळ विरद कहावां।
भखियौ ज लूण भूपाळरौ, घणा रिजक सांमल[34] घणौ।
कहि संभरीक ऊजळ[35] करां[36], तिकौ[37] लूण सांभर तणौ[38] ॥ ३८४

---

१ ख. घौषले। ग. धूषले। २ ग. धजरि। ३ ख. ग. धूरि। ४ ग. धरौ। ५ ख. सर। ६ ख. ग. यम। ७ ख. करौ। ८ ग. सहंसो। ९ ख. वोले। १० ख. अषारौ। ११ ग. पवंग। १२ ख. वोरि। ग. वोरे। १३ ख. ग. श्रव। १४ ग. वाहूं। १५ ग. बीज। १६ ख. ग. वहौ। १७ ख. सांवल। ग. सावल। १८ ख. ग. धरि। १९ ख. उजवाळि। २० ग. ऊझ्झळ। २१ ख. ग. कीरति। २२ ख. ग. वहसि। २३ ख. वोलीया। ग. बोलीया। २४ ख. विह्नै। ग. विह्नै। २५ ख. बादर। ग. बाहादर। २६ ख. अजवौह। ग. बाह। २७ ख. ग. रंग। २८ ख. ग. रातंवर। २९ ख. ग. षगि। ३० ख. ग. वरंग। ३१ ख. उडावा। उडांवां। ३२ ख. ग. सरीयत। ३३ ख. कुळ तणा। ३४ ख. सांमिल। ग. सौमिल। ३५ ख. उजल। ३६ ग. करौं। ३७ ख. तिको। ३८ ख. संभरि। ख. सांभर तणूं।

---

३८२. धौंकळे – ध्वंस कर के। धजर – भाला।

३८३. अखारौ – अक्षयसिंहका। घमसांण – युद्ध। वीज – तलवार। वीजळ – तलवार।

३८४. रातंबर – लाल। जंगमां – घोड़ों। वरँग – खंड, टूक। संभरीक – चौहान राजपूत।

दुजणसिंघ दईवांण, सूर वोलै[1] 'सवळावत' ।
भूप भड़ां भुजदंड[2], पटा इण कजि पूजावत[3] ।
आज[4] तिकौ[5] अवसांण, घाव खग करि 'साऊ' घड़ ।
सत्रां खाग घण सहूं, भाग धिन[6] मूझ[7] कहै भड़ ।
पिंड विहँड होय चुख चुख[8] पड़ूं, ताय वरूं रँभ हित[9] तिकौ[10] ।
सुलभ ही जिकौ[11] पाऊं सुरग, जगत वणौ दुल्लभ जिकौ ।। ३८५

उण वेळा[12] वोलियौ[13], 'दली' सोनगरी[14] दारण ।
तुरँग थाट तुरकांण, वीच ओरूं[15] घड़ वारण ।
वगतर धार वँगाळ, कहर खग धार पछट करि ।
घण विहरूं[16] खळ घाट, पाट तर[17] चँदण तणी परि ।
घण प्रळय लोह झेलूं घणा, रंभ वरूं सुख सरग[18] रिध ।
इळ नौख अचड़ राखूं अमर, वीरम रांणग[19] देव[20] विध[21] ।। ३८६

खांप खांपरा खत्री[22], एम वोलै[23] भड़ अड्डुर[24] ।

राजगुरु पुरोहित केसरीसिंह

राजा प्रोहितराज, जठै पूछै[25] छक जाहर ।

---

१ ख. वोले । २ ग. भुजडंड । ३ ग. पुजावत । ४ ख. आजि । ५ ख. जिको । ग. जिको । ६ ख. धनि । ग. धन । ७ ग. जझि । ८ ग. चप चप । ९ ग. हिव । १० ख. ग. तिको । ११ ख. ग. जिको । १२ ख. वेलां । १३ ख. वोलीयौ । १४ ख. सोनगिरौ । १५ ख. ग. वोरुं । १६ ग. विहंडू । १७ ख. ग. रत । १८ ख. सरगि । ग. सुरगि । १९ ख. रांणंग । २० ख. दैव । २१ ख. ग. विधि । २२ ग. क्षत्रि । २३ ख. वोले । ग. वोले । २४ ख. ग. अडर । २५ ख. पूजै ।

---

३८५. दईवांण – वीर, समर्थ । सवळावत – सवलसिंहका पुत्र । भुजदंड – समर्थ, शक्तिशाली । साऊ – शाहू मरहठा जो सर वुलंदकी तरफ था । चुख चुख – खंड-खंड, टक-टूक ।

३८६. सोनगरी – चौहानोंकी सोनगरा शाखाका व्यक्ति । दारण – जवरदस्त । तुरँग – घोड़ा । थाट – सेना । वारण – हाथी । वँगाळ – मुसलमान । कहर – कोप । रिध – ऋद्धि, अटल ।

३८७ खांप – शाखा, गोत्र ।

कहै प्रोहित 'केहरी', अम्हां घरवट अधिकाई।
सांम सुछळ[1] सत्र वाढ़ि[2], वडा[3] जुध तरै वडाई[4]।
रिण[5] सेल खाग जमदढ़[6] रिमां[7], वाहि झेल[8] अपछर वरूं।
महाराज[9] आज महाराज छळि, कीधौ 'दळपति' तिम[10] करूं॥ ३८७

चारण कवि–तदि बोलियौ[11] सतेज, 'सुभौ' जैसिंघ समोभ्रम।
वप तौ छोटी वेस, सूर कुळ वाट[12] वडी[13] स्रम।
आप मुहरि[14] 'अभपती', भिड़ज औरूं गजभारां।
जड़ूं मुगळ जरदैत, धमक झळहळ चव धारां[15]।
इम धसूं गोळ मझि करि उरड़, मसत लोपि घड़ मैंगळां।
ऊजळा करूं पीळा-अक्षत[16], असुर विहँड खग ऊजळां॥ ३८८

पह[17] बारट[18] पूछियौ[19], बहसि 'गोरख' जद[20] बोलै।
असमांण[21] छबि अडर, तांण[22] मूंछां खग तोलै।
जुड़े 'गजण' जालोर[23], रमै[24] 'राजड़' खग[25] धारां।
'अजा' सुछळि[26] 'केहरी', प्रगट जुध कीध अपारां।

---

१ ख. ग. सुछलि। २ ख वाटि। ३ ख. वढ़ा। ग. वढ़ां। ४ ख. लडाई। ५ ख. ग. रणि। ६ ग. जमदाढ़। ७ ग. रिम। ८ ख. ग. झेलि। ९ ख. माराराज। १० ख. ग. जिम। ११ ख. वोलीयौ। ग. वोलियो। १२ ग. वाटि। १३ ग. चडी। १४ ख. मोहौरि। ग. मौहरि। १५ क. भवधारां। ग. भवधारौ। १६ ख. ग. पीळा अषित। १७ ख. ग. पौहो। १८ ख. ग. वारट। १९ ख. ग. पूछीया। २० ख. तदि। ग. तद। २१ ग. आसमांन। २२ ख. तांडि। ग. ताणि। २३ ख. ग. जालौर। २४ ख. रमे। २५ ख. वग। २६ ख. सुछल।

---

३८७. केहरी – केसरीसिंह पुरोहित। घरवट – वंश, वंश-गुण। वाढ़ि – काट कर। वडाई – वड़प्पन, महानता। जमदढ़ – कटार। रिमां – शत्रुओं। वाहि – प्रहार कर के। झेल – सहन कर के। वरू – वरण करूं। छलि – युद्ध, लिये।

३८८. समोभ्रम – पुत्र। वपतौ – शरीर तो। जरदैत – कवचधारी। धमक – प्रहार। चवधारां – भालों। गोळ – सेना। पीळा अक्षत – मांगलिक अवसरों पर कुंकुमपत्रिकाके स्थान पर प्रयोगमें लिये जाने वाले केसरमें रंगे चावल।

३८९. गोरख – गोरखदान बारहठ। राजड़ – राजसिंह बारहठ। केहरी – केसरीसिंह बारहठ।

ऽवां[1] जेम[2] ओरि असि रिण[3] अथग, साजूं[4] 'विलँद' समाजसूं।
असुरांण रुधिर खग करि अरुण[5], सझूं दवा महाराज[6] सूं॥ ३८९

कवित्त दोढ़ौ[7]

सूर सती सुत सूर, रटै रुघपत्ती[8] रोहड़।
विढू झाट वीजळां, घाट विमरीर[9] त्रवधि[10] घड़।
कहि 'द्वारौ' धधवाड़[11], असुर असि धकै चढ़ाऊं।
तिसी झाट रूपकां, जिसी खग झाट वजाऊं।
वींद ज्युं हीं चढ़ि वांन, तेजवांनह अति तीखौ।
'मुकन'[12] जेणि[13] मौसरां, सुकवि जोवबा[14] सरीखौ[15]।
तुररौस[16] धारि औरूं तुरँग, हई[17] सेल खागां हणे।
सुभराज करूं महाराज सूं[18], वीर साज इण[19] विध वणे॥ ३९०

सुतण 'नाथ' 'खेतसी', वदै सांदू खग वाहण[20]।
'वखतौ'[21] खिड़ियौ[22] वदै, रचूं 'अमरा' जैही रण।

---

१ ख. ग. वां। २ ख. ग. जेमि। ३ ख. ग. रण। ४ ख. ग. साझूं। ५ ख. अरण। ६ ख. ग. माहाराज। ७ ख. दोढ़ो। ग. दौढ़ौ। ८ ग. रुघपति। ९ ख. ग. विपमरी। १० ख. ग. त्रिवध। ११ ख. दधवाड। १२ ख. ग. मुकंद। १३ ग. जेण। १४ ख. जोउवा। ग. जोयवा। १५ ख. सरिषो। १६ ख. तुररोसु। ग. तुररोस। १७ ख. हुइ। १८ ग. सौ। १९ ग. इणि। २० ग. वांहण। २१ ग. वपतो। २२ ख. पडीयो। ग. पडियौ।

---

३९०. रुघपत्ती – रघुनाथसिंह। रोहड़ – रोहड़िया शाखाका चारण कवि। वीजळां – तलवारों। घाट – प्रकार। द्वारौ धधवाड़ – द्वारकादास धधवाड़िया गोत्रका चारण कवि। रूपकां – कविताएँ अथवा डिंगल गीत (छंद विशेष)। मुकन – मुकंददान चारण कवि। सुकवि...सरीखौ – मुकंददान चारण कवि जो उस समय देखने योग्य था। हई – घोड़ा। सुभराज – अभिवादन, जिसका अर्थ आपका राज्य अथवा आप स्वयं सबके लिये कल्याणदायक हो।

३९१. नाथ – नाथूसिंह सांदू गोत्रका चारण। खेतसी – नाथूसिंह सांदू चारणका पुत्र। सांदू – चारणोंका गोत्र विशेष। वखतौ खिड़ियौ – खिड़िया गोत्रका वखता नामक चारण कवि जो अपने समय का प्रसिद्ध कवि था। अमरा – यह वखतां खिड़ियाका पिता था, इसने महाराज। अजीतसिंहके समय बड़ी स्वामी-भक्ति प्रदर्शित की थी।

मुणै नवल महियार[1], रहूं हरवळां महारण* ।
रटै वीर रूपकां, चवै इण विध[2] कथ चारण ।
सझि[3] सझि सलांम[4] बहसै[5] सुभड़[6], जियां[7] कहै ब्रद[8] जूजवा[9] ।
रस्सवीर क़वी सोभा रचै[10], ❀ हेक जांणि वह[11] वप हुवा[12] ॥ ३६१

पूछै व्यास पवित्र, तांम महाराज 'अजण'तण ।
स्यांमध्रमी[13] बुध[14] सरस, घणूं[15] सुभचित[16] देखि[17] घण ।
'दीपावत' 'फतमाल', एम बोलै[18] अग्रकारी ।
सझि खग सत्र रत्र[19] सीस, जुगत[20] पूजूं[21] जटधारी ।
आसरीवाद करि करि अचड़, जँग[22] सुरंग[23] धारूं जलौ[24] ।
ताजीम[25] कुरब दीधौ[26] तिकौ[27], आदि दिखाऊं ऊजळौ[28] ॥ ३६२

सुत्तुद्दो-पह[29] वजीर पूछिया[30], धरा थंभण बुधधारी[31] ।
स्यांमध्रमी दिल साच, एक खांवद[32] इकतारी ।
एक हुकम आधीन, अवर सद्धन[33] नह[34] आंणै ।
आप[35] सूर उदार[36], जोध विदिया[37] सह[38] जांणै ।

---

१ ग. मीहयार । *यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।
२ ख. विधि । ३ ग. सजि सजि । ४ ख. ग. सलाह । ५ ख. ग. वहसै । ६ ग. सुभट । ७ ख. जीयां । ८ ख. ग. वृद । ९ ख. जूजूवार । ग. जूजुवार ।

❀ ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पद्यांश निम्म प्रकार है—
'रसवीर सुकवि सोभा रचै ।'

१० ख. रचे । ११ ख, ग. वहौ । १२ ख. हूवा । १३ ग. सांमध्रमी । १४ ख. वुधि । ग. वुधि । १५ ग. घण । १६ ग. सुभच्यंत । १७ ख. ग. देषि । १८ ख. बोले । १९ ख. रन । ग. रत । २० ख. ग. जुगणि । २१ ख. पूजुं । ग. पूजू । २२ ख. ग. रंगे । २३ ग. सूरंग । २४ ख. जलौं । २५ ख. जीम । २६ ख. दीधो । २७ ख. तिको । २८ ग. ऊळौ । २९ ख. ग. पहौ । ३० ख. ग. पूछीया । ३१ ख. वुधिधारी । ३२ ख. ग. खवांयद । ३३ ख. साधन । ग. साधण । ३४ ग. नहि । ३५ ख. ग. आपै । ३६ ख. ग. उदार । ३७ ख. विदीया । ३८ ख. ग. जुध ।

---

३६१. मुणै – कहता है । नवल महियार – नवलदान महियारिया गोत्रका चारण कवि ।
३६२. फतमाल – व्यास पदवी धारण करने वाला ब्राह्मण । अग्रकारी – अग्रगण्य । सत्र – शत्रु । रत्र – खून, रक्त । जटधारी – महादेव ।
३६३. बुधधारी – बुद्धिमान । स्यांम''इकतारी – सच्चे दिलसे जो स्वामी-भक्त था तथा एक ही मालिकको मानने वाला था ।

बोलिया[1] 'रतन' 'गिरधर' विनै[2], सिरै दीवांण[3] सकाजरा ।
झट खाग रमां खासां झंडां, मंत्री तौ महाराज[4] रा ॥ ३६३

राजभार व्रद[5] रछिक, कहै 'धनरूप' एम[6] कथ ।
असि झोकां[7] उजबकां, भिड़ूं जरदेतां भारथ ।
'दलौ'[8] 'लखौ'[9] दईवांण, कहै जुध करां[10] किरम्मर[11] ।
पुणै[12] एम[13] गोपाळ, जड़ूं[14] हरवळ धमजग्गर ।
वगसी वाळ किसन्न[15], कहै जरदैतां कापूं ।
सिरवंधी[16] रातळां, अमख जवनां तिण[17] आपूं ।
तिण वार[18] व्रहम[19] जयदेव तण, निहँग छिबै[20] आरक नयण[21] ।
महाराजा[22] तांम पूछै मतै, राजखांन 'सांमां' 'रयण'[23] ॥ ३६४

वदै 'रयण' तिणवार, सार संसार एह सति ।
सरस मरण अवसांण, पछट खग धार सुछळ[24] पति ।
कथ इम सासत्र[25] कहै, दुलह[26] लहिजै[27] पूरव[28] दत[29] ।
आज दोय अधिकार, मध्धि[30] सरस्वति[31] द्वारामति ।

---

१ ख. बोलोया । ग. बोलीया । २ ख. विहूं । ग. विहू । ३ ख. दिवांण । ४ ख. माहाराजा । ५ ख. व्रिद । ग. वृंद । ६ ग. ऐम । ७ ख. ग. झोके । ८ ग. दलो । ९ ग. लषो । १० ग. करौ । ११ ख. ग. किरंमर । १२ ग. पुणे । १३ ग. ऐम । १४ ख. जुडु । ग. जुडू । १५ ख. ग. वाळकिसन । १६ ख. सिरि । १७ ख. ग. वित । १८ ख. ग. वार । १९ ग. व्रह्म । २० ख. ग. छिवै । २१ ग. नयन । २२ ख. माहाराज । २३ ख. रयण । २४ ख. ग. सुछलि । २५ ख. सास्त्र । २६ ग. दुलभ । २७ ख. ग. लहजै । २८ ग. पुरव । २९ ग. दति । ३० ख. मधि । ग. मद्य । ३१ ख. ग. सरसती ।

---

३६३. रतन – रतनसिंह, भंडारी शाखाका ओसवाल । गिरधर – यह भी भंडारी शाखाका ओसवाल था ।

३६४. उजबकां – तातारियोंकी उजबक जातिका व्यक्ति । धमजग्गर – युद्ध । रातळां – मांसाहारी पक्षी विशेष । अमख – आमिष, मांस । निहँग – आकास । आरक – लाल ।

३६५. वदै – कहता है । रयण – रतनसिंह । सति – सत्य । पछट – प्रहार कर के । सुछळ – लिए, युद्ध । दुलह – दुर्लभ । पूरव दत – प्रारब्ध । मध्धि – मध्य । सरस्वति – सावरमती नदी । द्वारामति – द्वारका ।

नज फतै आप संदेह नह, नृप[1] प्रब[2] हूं[3] चूकूं[4] नहीं ।
किलमांण[5] विहँड[6] खग[7] म्रत[8] करूं, जुध द्रोणाचारज[9] ज्युंही[10] ॥ ३६५

रटै अवर कथ 'रयण', सूर स्रंगार[11] सँपेखै[12] ।
सरब धरम सिरपोस[13], स्यांमध्रम ध्रम[14] संदेखे[15] ।
सूरलोक[16] सतपुरी, ध्रता[17] धांमिकां धरां[18] ध्रति ।
इंद्रपुरी सुख अधिक, उमा[19] उमळा विमळा रति ।
सुज[20] लहै सूर खग म्रत[21] सझै, निरजर लखि व्रखभै[22] नहीं ।
किलमांण[23] विहँड[24] खग म्रत करूं, जुध द्रोणाचारज ज्युंहीं[25] ॥ ३६६

सिरै इता अवसांण, बहल[26] मो बाधि[27] भगत-बळ ।
अयं[28] अरथ ले[29] जाय, आय सनकादक[30] ऊजळ[31] ।
मिळै[32] मुकति-सांमीप, हुवै हरि दरस दसा हिम ।
पुरी सूर इंद्र पुरी, जिकै[33] दीसै दासी जिम ।
सुजि लहूं प्रीति भारी सझै, मो इकतारी[34] चित महीं ।
किलमांण विहँड[35] खग म्रत[36] करूं, जुध द्रोणाचारज ज्युंही[37] ॥ ३६७

---

१ ख. ग. नृप । २ ख. प्रव । ३ ग. हौं । ४ ख. चूकू । ग. चूकौं । ५ ख. किलिमांन । ६ ख. विहंडि । ७ ग. षळ । ८ ख. ग. मृत । ९ ग. ध्रोणाचारज । १० ख. ग. जहीं । ११ ख. ग. शृंगार । १२ ख. संपेषे । १३ ग. सिरपोस । १४ ख. ग. धरम । १५ ग. सदेषै । १६ ग. सुरलोक । १७ ख. धृतां । ग. धाता । १८ ख. ग. परा । १९ ख. ग. रुमा । २० ख. ग. सुजि । २१ ख. ग. मृत । २२ ख. ग. वृखभै । २३ ख. किलिमांण । २४ ख. ग. विहंडि । २५ ख. ग. जही । २६ ख. ग. वहल । २७ ख. वाधि । ग. बांधि । २८ ख. ग. अयां । २९ ख. मेळे । ३० ख. ग. सनकादिक । ३१ ख. उज्जल । ग. उज्झळ । ३२ ख. मिळे । ग. मिळै । ३३ ख. ग. जिके । ३४ ख. इकतारा । ३५ ख. ग. विहंडि । ३६ ख. ग. मृत । ३७ ख. ग. जहीं ।

---

३६५. प्रब – पर्व, पुण्य अवसर । किलमांण – यवन, मुसलमान । विहँड – संहार कर के । द्रोणाचारज – द्रोणाचार्य्य ।

३६६. सँपेखै – देखता है । सिरपोस – श्रेष्ठ, शिरमौर । सूरलोक – वीरगति प्राप्त होने वाले वीरोंको प्राप्त होने वाला लोक । सतपुर – पतिके साथ सती होने वाली सतियोंको प्राप्त होने वाला लोक । ध्रता – (?) । धांमिकां – (?) । निरजर – देवता । व्रखभै – (?) ।

३६७. बाधि – विशेष, उत्तम । भगत-बळ – भक्तिका बल । मिळै – प्राप्त होते हैं । मुकति-सांमीप – एक प्रकारकी मुक्ति जिसमें मुक्त जीवका भगवानके समीप पहुँच जाना माना जाता है । पुरी सूर – सुरलोक । इकतारी – एक ही, दृढ़ ।

महाराज[१] 'अभमाल', पूछ[२] धावड़ महपत्ती[३] ।
एक रंग अणभंग, वोल[४] करि[५] अ्रगुट[६] विरत्ती[७] ।
आप काज[८] इण वार, सुभज[९] कुळ लाज सुधारूं[१०] ।
वाज[११] ओरि[१२] घड़ 'विलँद', आज[१३] जगि नांम उचारूं[१४] ।
निरख[१५] नाग थट निजर[१६], धजर ज्यां सीस धमोड़ूं[१७] ।
वजर[१८] जेम वांणास[१९], अजर पिसणां[२०] अंग[२१] तोड़ूं ।
पळचार[२२] आस पूरूं[२३] प्रगट, चित उछाह इसड़ौ[२४] चहै ।
वणि अमर देह अपछर वरूं, करूं एम धावड़ कहै ॥ ३९८

विहूं[२५] बँधव[२६] विरदैत[२७], अनड़ धांधल[२८] अतुळीबळ ।
अभँग नरै 'भगवांन', अरज कीधी पह[२९] आगळ ।
आप मुहरि[३०] असि[३१] ओरि, घणां मुगळां खग घाऊं[३२] ।
आवां कांम[३३] अचूक, पुरी सातह सुर पाऊं[३४] ।

१ ख. ग. माहराजा । २ ख. ग. पूछि । ३ ख. महपती । ४ ख. वोलि । ५ ख. कर । ६ ख. भृगुट । भृगुटि । ७ ख. विरती । ग. विरत्ती ८ ख. काल । ९ ख. ग. सुभुज । १० ग. सधारू । ११ ख. वाजि । ग. वाज । १२ ग. श्रोर । १३ क. आस । १४ ख. ग. उगरूं । १५ ख. ग. निरपि । १६ ख. ग. नजर । १७ ख. ग. धमोड़ू । १८ ख. वजर । ग. वज्र । १९ ख. ग. वाणास । २० ख. ग. पिसुणां । २१ ख. अगि । ग. अंग । २२ ग. पलच्यार । २३ ग. पूरु । २४ ग. इसडौ । २५ ख. विहुं । ग. विहूं । २६ ख. वंधव । ग. वंधव । २७ ख. वरदैत । २८ ख. धाधिल । ग. धांधिल । २९ ख. ग. पौह । ३० ख. मौहोरि । ग. मौहर । ३१ ख. असवो । ग. असवार । ३२ ख. घावां । ग. घावां । ३३ ख. कांमि । ३४ ख. ग. पावां ।

---

३९८. धावड़ – राजकुमारको दूध पान कराने वाली स्त्रीका पति । अणभंग – वीर, योद्धा । अ्रगुट – मस्तक, ललाट । विरत्ती – (?) । सुभज – श्रेष्ठ । वाज – घोड़ा । घड़ – सेना । नाग थट – हाथी-दल । धजर – भाला । धमोड़ूं – प्रहार करूं । वजर – वज्र । वांणास – तलवार । अजर – अजयी । पिसणां – शत्रुओं । पळचार – मांसाहारी ।

३९९. विरदैत – यशस्वी, विरुदधारी । अनड़ – वीर । धांधल – राठौड़ोंकी एक शाखा अथवा इस शाखाका व्यक्ति । अतुळीबळ – अतुल्य बलशाली । नरै – नरावत शाखाका राठौड़ । आगळ – अगाड़ी । मुहरि – अगाड़ी । घाऊं – संहार कर दूं । अचूक – निश्चय ही ।

तिण वार कहै तिजड़ाहथौ, 'केहर'[1] खीची जोस करि ।
खग झटां करे दहवट[2] खळां, वसू[3] अमरपुर रंभ वरि[4] ॥ ३९९

दूहा[5]– तदि[6] मसलति समझि तेड़ियौ[7], नरिंद बँधव नरनाह ।
वेळा तिण[8] आयौ 'बखत', गहमहत्त[9] दरगाह ॥ ४००
*अनुज नमे[10] तदि अग्रजे[11], ठह[12] ताजीमां ठीक ।
करो[13] कुरव्वां[14] पलक करि, दिय[15] आसण नजदीक* ॥ ४०१
सेनापति दूजौ[16] सगह, तेड़े पह[17] तिण वार ।
विखम भड़ां लीधौ 'विजौ'[18], आयौ[19] मँत्री उदार ॥ ४०२
नमे[20] कदम्मां[21] तदि निजर, यसारत[22] बरियांम[23] ।
तदि[24] पाए[25] बैठौ[26] मँत्री, सझे[27] तीन सल्लांम[28] ॥ ४०३
प्रथम 'अभैपति'[29] 'पूछियौ'[30], भूप कणैठी[31] भ्रात ।
अब झगड़ौ कीजे किसूं, बखतसिंघ वडगात⊗ ॥ ४०४

---

१ ख. केहरि २ ग. देहवट । ३ ग. वसु । ४ ग. वर । ५ ख. ग. दोहा । ६ ग. तद । ७ ख. तेडीयो । ग. तेडियो । ८ ख. तिणि । ९ ख. गहमहतै । ग. गहमहते । १० ख. नमैं । ११ ख. पौहो अग्रज । १२ ख. ठहि । १३ ख. करां । १४ ख. पलकां कुरव । १५ ख. दीय ।

- यह दोहा ग. प्रतिमें नहीं है ।

१६ ग. दूजो । १७ ख. पौहो । ग. पौह । १८ ग. विजो । १९ ग. आयो । २० ख. ग. नमे । २१ ख. कदमां । ग. कदंमां । २२ ख. ग. इसारति । २३ ख. वरियाम । ग. वरीयांम । २४ ग. ततदे । २५ ग. पायै । २६ ग. वैठां । २७ ग. साजे । २८ ख. ग. सलांम । २९ ग. अनैप्रत । ३० ख. पूछीयो । ३१ ग. कणीठी ।

⊗ यह पंक्ति ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न प्रकार है—

'कर जोडे कीधी अरज, वखतसिंघ वडगात ।'

---

३९९. तिजड़ाहथौ – खड्गधारी वीर । केहर – केसरी सिंह । खीची – चौहान वंशकी खीची शाखाका व्यक्ति । झटां – प्रहारों । दहवट – ध्वंस, संहार ।

४००. तेड़ियौ – बुलाया । नरिंद – नरेंद्र, राजा अभयसिंह । नरनाह – नरनाथ, राजा । वेळा – समय । बखत – बखतसिंह । गहमहत्त – जनसमूह । दरगाह – दरबार ।

४०१. ठह – ठहर कर । कुरव्वां – सम्मान ।

४०२. सगह – सगर्व । तेड़े – बुला कर, बुलाया । विजौ – भंडारी विजयराज ।

४०३. यसारत – इशारा या संकेत, इशारत । बरियांम – श्रेष्ठ । सल्लांम – अभिवादन ।

४०४. कणैठी – छोटा, कनिष्ठ । झगड़ौ – युद्ध । वडगात – वीर, महान ।

छंद द्वक्खरी [वेअखरी[1]]

स्री महाराज[2] आप[3] कुळ सूरिज[4] ।
धरपति तेरह साख कमंधज ।
*कर ग्रहि मूझ निवाजस कीधौ ।
दूजौ[5] राज नागपुर[6] दीधौ* ॥ ४०५

नेजा खासा तोग नवव्वति[7] ।
पह[8] दीधा मो[9] विनां[10] दिलीपति[11] ।
सो ऊजळा करूं कसि सारां ।
भिड़ज वधे ओरूं[12] गज-भारां ॥ ४०६

राज[13] मौहरि[14] उपति[15] रघुराई ।
भिड़ूं[16] जेण[17] विध[18] लखमण भाई ।
भिड़ि[19] पल थाट करूं जुध भूकां ।
रांवण जेम 'विलँद' दळ रूकां ॥ ४०७

उडती झाळां लोपि[20] अरावां ।
वह[21] गजघड़ खगि हणूं निवाबां[22] ।

---

१ ख. वे अक्षरी । ग. वे अक्षरी । २ ख. ग. माहाराज । ३ ख. ग. आज । ४ ख. ग. सूरज । ५ ग. दूजो । ६ ग. नागपूर ।

··· ये दो पंक्तियां ख. प्रतिमें नहीं मिली हैं ।

७ ख. ग. नववत्ति । ८ ख. ग. पौहो । ९ ख. मी । १० ख. विनों । ११ ग. दिलीपत्ति । १२ ग. गेरु । १३ ख. राजि । १४ ग. सोहरि । १५ ख. अभपति । ग. अभमल । १६ ग. भिडे । १७ ग जेसा । १८ ख. ग. विधि । १९ ग. लडि । २० ग. लोप । २१ ख. वहो । ग. वही । २२ ख. ग. नबावां ।

---

४०५. धरपति – राजा । तेरह साख – राठौड़ वंशकी प्रमुख तेरह शाखाएं । निवाजस – महरबानी, बख्शीश । नागपुर – नागौर ।

४०६. नेजा – भाला । खासा – राजा या बादशाहकी सवारीका हाथी या घोड़ा । नवव्वति – नौबत । सारां – तलवारों । भिड़ज – घोड़ा । गज भारां – हाथीदल ।

४०७. मौहरि – पूर्व, अगाड़ी । उपति – महाराजा अभयसिंहके लिए प्रयोग किया गया है (?) । रघुराई – श्रीरामचंद्र भगवान । लखमण – लक्ष्मण । पल थाट – शत्रु-सेना । भूकां – ध्वंस, नाश । रूकां – तलवारों ।

४०८. झाळां – आगकी लपटें । अरावां – तोपें । गजघड़ – गजघटा, हस्तिसमूह ।

कूंभाथळां विहरि घण काळां ।
मारि[1] गजां लोपूं मछराळां[2] ॥ ४०८

इम हरवळ दळ डोहि[3] अथागां ।
खासां - भँडां वजाऊं खागां ।
भिलम समेत[4] किलम सिर भाड़ूं[5] ।
पखरैतां जरदैतां पाड़ूं[6] ॥ ४०९

'सिर[7] - विलँदेस'[8]- तणा घैसाहर[9] ।
पाड़ूं खग भट घणौ[10] पँवाहर[11] ।
वीज अखाढ़ जेम[12] खग वाढ़ां[13] ।
गोळ दरोळ करूं अवगाढ़ां ॥ ४१०

भेलूं[14] लोह अनेक भिलाऊं ।
अरुण होय मुजरा कजि आऊं[15] ।
रैवँत सहित होय रातंबर[16] ।
करूं[17] सलांम[18] रंगियै किरमर ॥ ४११

---

१ ग. मार । २ ख. ग. मतिवालां । ३ ग डौहि । ४ ख. सहेत । ग. सहित । ५ ख. भाडं । ग. भाडूं । ६ ख. जरपाडूं । ७ ख. सिरि । ८ ग. विवळदेस । ९ ख. ग. घांसाहर । १० ख. घणो । ग. घणा । ११ ख. ग. पवाहर । १२ ग. जैम । १३ ख. वाहां । १४ ग. भेलौ । १५ ख. आंऊं । १६ ख. रावंतवर । १७ ग. करौ । १८ ग. सिलांम ।

---

४०८. कूंभाथळां – कुम्भस्थलों । विहरि – विदीर्ण करके । मछराळां – वीरों ।

४०९. डोहि – विलोड़ित करके, मंथन करके । अथागां – अपार, असीम । वजाऊं खागां – तलवारोंके प्रहार करूं । भिलम – युद्धके समय सिर पर धारण करनेका टोप विशेष । किलम – मुसलमान । भाड़ूं – काट डालूं । पखरैतां – कवचधारी घोड़ों । जरदैतां – कवचधारी योद्धाओं ।

४१०. सिर-विलँदेस – सर बुलंदखां । घैसाहर – सेना, दल । पँवाहर – (?) । वीज – विजली । अखाढ़ – आषाढ़ मास । वाढ़ां – कांटों । गोळ – सेना, फौज । दरोळ – उपद्रव । अवगाढ़ां – वीरों, धैर्यवानोंमें ।

४११. भेलूं लोह – प्रहार सहन करूं । अरुण – लाल । मुजरा – अभिवादन । रैवँत – घोड़ा । रातंबर – लाल । किरमर – तलवार ।

रटूं जेणिहूं[1] करूं[2] वाधि रिण[3] ।
तौ आपरौ वँधव 'अजमल'तण ।
इम सुणि वयण हुवौ[4] आणँद[5] वर[6] ।
स्यावासियौ[7] वँधव राजेसुर ॥ ४१२
प्रफुलत वदन होय 'अभमल' पह[8] ।
सुभड़ 'धिराज'तणा पूछै सह[9] ।
कहै[10] भड़ां किण[11] विध[12] जुध कीजै ।
दिल मझि[13] होय तेम कहि दीजै ॥ ४१३
छोटां दिनां वेस वप[14] छोटी ।
मोटी अकल लाज कुळ मोटी ।
करि[15] करि तीन सलांम जेम कर[16] ।
वहसि[17] वहसि वोलिया[18] वहादर[19] ॥ ४१४
अणभँग सिरै जोध करणावत ।
अणचळि[20] सूरज······करणावत* ।
तायक जोध 'पतौ' 'महक्रन'[21] तण ।
घणछक दुहूं[22] वोलिया[23] व्रद[24] घण ॥ ४१५

---

१ ग. हु । २ ग. करू । ३ ख. ग. रण । ४ ख. हुऔ । ५ ग. आनंद । ६ ख. ग. उर । ७ ख. सावासीयौ । ग. सावासियौ । ८ ख. ग. पौहौ । ९ ख. सौहौ । ग. सोहौ । १० ख. ग. कहौ । ११ ख. प्रतिमें यह शब्द नहीं है । १२ ख. विधि । १३ ग. मझि । १४ ग. वप । १५ ख. कर कर । १६ ख. ग. करि । १७ ख. ग. वहसि वहसि । १८ ख. वोलीया । १९ ख. वहादर । ग. वाहादर । २० ख. ग. अणचल ।

* ख. तथा ग. प्रतियोंमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है—'अणचल सूरज करण अभातव ।'

२१ ख. महिक्रन । २२ ग. दूहूं । २३ ख. वोलीया । ग. वोलीया । २४ ख. ग. व्रिद ।

---

४१२. वाधि – विशेप । तण – तनय, पुत्र । वयण – वचन, वाक्य । स्यावासियौ – उत्साहित किया, जोश दिलाया ।

४१३. सुभड़ – योद्धा । धिराज – अधिराज, महाराज वखतसिंह ।

४१४. वेस – वयस, आयु । वप – शरीर । मोटी – महान, वड़ी ।

४१५. अणभँग – वीर, योद्धा । जोध – योद्धा । करणावत – राठोड़ वंशकी एक शाखा या इस शाखाका व्यक्ति । अणचळि – अटल, दृढ़ । पतौ – प्रतापसिंह । महक्रन – महकरण । घणछक – युद्ध (?) । व्रद घण – अनेक विरुदोंको धारण करने वाले ।

धसे[1] हरवळां[2] चौड़ै[3] - धाड़ै ।
आडा[4] लोहां[5] लड़ां अखाड़ै[6] ।
हरखे[7] पह[8] बूझिया[9] झळाहळ[10] ।
मेड़तिया— मेंड़तिया[11] बोलिया[12] महाबळ[13] ॥ ४१६

दाखै तांम 'कुसळसी' दूजौ ।
सिरदारोत[14] महाभड़[15] 'सूजौ'[16] ।
साकुर पहल ओरलूं सारां ।
धमरोळूं[17] हरवळ चौधारां[18] ॥ ४१७

रँग मट फूट[19] घट करि रवदाळां ।
कळह झाट खेलूं[20] किरमाळां ।
जाजळमांन[21] भयंकर जोसां ।
पाड़ूं बह[22] खळ बगतर - पोसां ॥ ४१८

घण ठेलूं मुग्गळ - दळ घेरां ।
सांमै[23] मुख[24] झेलूं समसेरां ।

---

१ ख. ग. धसि । २ ख. ग. हरवल । ३ ग. चोडैधाड़े । ४ ख. आडी । ५ ख. षगां । ग. षागां । ६ ख. ग. आषाड़ै । ७ ग. हरषै । ८ ख. ग. पौहौ । ९ ख. वूझीया । ग. वूझिया । १० ख. झाळाहळ । ११ ख. ग. मेडतीया । १२ ख. वोलीया । १३ ग. माहाबळ । १४ सिरदारौत । ग. सिरदारांत । १५ ग. महीभड़ । १६ ग. सूजो । १७ ग. धमरोळां । १८ ख. चवधारां । ग. चौवधारां । १९ ख. ग. फुट । २० ख. षेल्हूं । २१ ख. जाजुलिमांन । ग. जाजुलमांन । २२ ख. वौहौ । ग. वोहो । २३ ख. सांम्है । ग. सांमै । २४ ख. मुषि ।

---

४१६. चौड़ै-धाड़ै – खुले आम । आडा···लड़ां – तलवारोंसे युद्ध करेंगे । अखाड़ै – युद्ध । बूझिया – पूछे । झळाहळ – तेजस्वी ।

४१७. सिरदारोत – सिरदारसिंहका पुत्र । सूजौ – सूरजमल या सूरजसिंह । साकुर – घोड़ा । धमरोळूं – संहार कर दूं, मारूं । चौधारां – भालों ।

४१८. रंग मट – रंग डालनेका मिट्टीका पात्र । घट – शरीर । रवदाळां – यवनों, मुसलमानों । किरमाळां – तलवारों । बगतर-पोसां – कवचधारी ।

४१९. घण···घेरां – मुगलोंके अपार दल समूहको पीछे हटा दूंगा । झेलूं – सहन करूंगा । समसेरां – तलवारों ।

वर[1] अपछर[2] जग क्रीत[3] वधाऊं ।
का[4] सिभजीवत विरद कहाऊं ॥ ४१९
विढ़तां नारद सँकर वखांणै ।
पह[5] तो[6] रिजक लियौ परमांणै ।
आगि[7] व्रजागि[8] वोलियौ[9] अन्नड़[10] ।
'भोज' तणौ 'अखमाल' महाभड़[11] ॥ ४२०
वधि[12] खळ थटां करूं[13] झळ वेगां ।
तखा भुजंग ज्युं[14] हीं झल[15] तेगां[16] ।
झळहळ गदा जेम खग झाड़ूं ।
भीम पँडव[17] जिम गजां भमाड़ूं[18] ॥ ४२१
'हरियँद'[19] 'भाऊ'[20] सुतन[21] हठाळौ ।
'चंद' हरौ[22] वोलै कळिचाळौ ।
ओरूं[23] वाज हरवळां ऊपर[24] ।
जरदैतां खेलूं खग गज्जर[25] ॥ ४२२

---

१ ख. ग. वरुं । २ ख. ग. अछर । ३ ख. ग. क्रीति । ४. ख. ग. काय । ५ ख. पौहौ । ग. पोहौ । ६ ख. तौ । ७ ग. आग । ८ ग. व्रजाग । ९ ख. वोलीयौ । ग. वोलियो । १० ख. ग. अनड । ११ ख. माहाभड । १२ ग. विधि । १३ ग. करौ । १४ ख. ग. जहीं । १५ ख. ग. झट । १६ ख. तेधां । १७ ग. पांठवि । १८ ख. भंमाडूं । १९ ग. हरयिंद । २० ग. भीव । २१ ख. सुतण । ग. सूतण । २२ ख. हलौ । २३ ख. ग. वोरूं । २४ ग. उपर । २५ ग. गजर ।

---

४१९. वर – वरण करके, पाणिग्रहण करके । क्रीत – कीर्ति । का – या, अथवा । सिभ-जीवत – युद्धमें बहुतसे अस्त्र-शस्त्रके घावोंको सहन कर घायल होने वाला वह वीर जो जीवित रह गया हो ।

४२०. विढ़तां – युद्ध करते हुएको । वखांणै – प्रशंसा करें । रिजक – जागीर । आगि-व्रजागि – वज्राग्निके समान । अन्नड़ – योद्धा, वीर ।

४२ . वधि – संहार करके । थटां – सेनाओं । झळ – अग्नि । तखा – तक्षक नाग, तेज । झल – धारण करके । तेगां – तलवारों । झळहळ – चमचमाती हुई, देदीप्यमान । झाड़ूं – प्रहार करूं, प्रहारसे गिरा दूं । भमाड़ूं – भ्रमायमान कर दूं ।

४२२. हरियँद – हरिसिंह । हठाळौ – हठीला वीर । हरौ – वंशज । कळिचाळौ – वीर । वाज – घोड़ा । गज्जर – प्रहार ।

दुगम जवन घड़ि[1] कांमणि दोळीं ।
हुय[2] खेलूं गेहरियां[3] होळी ।
खग झट वसँत महारिण[4] खेलूं ।
झट खग सुजळ अनि रता झेलूं ॥ ४२३

बळे करूं रिण[5] मंझि[6] विमाहौ[7] ।
सुध दस रेख खाग झट साहौ ।
हेकणि[8] हाथ अछर हथळेवौ[9] ।
करि हिक खग वाहूं[10] धर केवौ ॥ ४२४

पड़ि रिण[11] रथ[12] चढ़ि सुरग[13] पधारूं ।
इळा एण विध[14] अचड़ उबारूं ।
रटै हेक 'पदमौ'[15] 'रतनावत' ।
दूजौ[16] 'पदम' रटै[17] 'दौलावत' ॥ ४२५

वाहि[18] वुहाय[19] घणी वीजूजळ ।
तंडळ खगां[20] करे ह्वां[21] तंडळ ।

---

१ ख. ग. घड । २ ख. ग. होय । ३ ख. गेहरीयो । ४ ख. माहारण । ग. महारण । ५ ख. ग. रण । ६ ख. मझि । ग. मझ । ७ ख. ग. वीमाहौ । ८ ग. हेकण । ९ ख. ग. हथळेवो । १० ग. वाहू । ११ ख. ग. रणि । १२ ख. रथि । १३ ख. सुरगि । १४ ख. ग. विधि । १५ ग. पदमो । १६ ग. दूजो । १७ ग. रटें । १८ ख. वाहि । १९ ख. ग. वह्वाय । २० ख डलां । ग. षोळां । २१ ख. ग. ह्वां ।

---

४२३. दुगम – दुर्गम, कठिन । घड़ि – घटा, सेना । कांमणि – कामिनी । दोळी – चारों ओर । गेहरियां – फाल्गुन मास का गेहर नामक नृत्यमें भाग लेने वाला । महारिण – महारण, बड़ा युद्ध ।

४२४. बळे – फिर, पुनः । विमाहौ – विवाह । साहौ – विवाह-लग्न । हेकणि – एक । हथळेवौ – पाणिग्रहण, पाणिपीडन ।

४२५. सुरग – स्वर्ग । पधारूं – गमन करूं । इळा – पृथ्वी, भूमि । अचड़ – महत्त्वपूर्ण कार्य, कीर्ति ।

४२६. वाहि – चला कर, प्रहार करे । वुहाय – चलवा कर । वीजूजळ – तलवार । तंडळ – ध्वंस, नाश, खंड-खंड ।

इम प्रथमी[1] सिर[2] क्रीत[3] उबारां ।
परणे ग्रपछर सुरगि पधारां ॥ ४२६
दारण वाघ रूप दरसावत ।
चांपावत– चोळ नयण बोलै[4] चांपावत[5] ।
तेज पुंज 'सुरतौ'[6] 'हरियँद'[7] तण ।
'ग्रचळावत' 'तेजौ'[8] 'पँचग्रांणण' ॥ ४२७
चवै एह कुळ[9] सुजळ चढ़ावां[10] ।
विखम थाट खग झाट वजावां ।
तिण वेळा रावत 'वखता'रा ।
कूंपावत– कूंपावत वोलै[11] कळि[12] नारा ॥ ४२८
देवीसिंघ 'संमत'[13] सुत दारण ।
'रांम' सुतण रघुपति रोसारण ।
दाखै[14] ग्रै गज घड़ां[15] दमंगळ ।
वाह[16] करै[17] हाथळ वीजूजळ ॥ ४२९

---

१ ख. ग. प्रिथमी । २ ख. ग. सिरि । ३ ख. ग. क्रीति । ४ ख. वोले । ग. वोले । ५ ख. चंपावत । ६ ग. सुरतो । ७ ग. हियंद । ८ ग. तेजो । ९ ख. ग. कुळि । १० ग. वजावं । ११ ख. वोले । १२ ग. कळ । १३ ख. सामंत । ग. सांमत । १४ ख. दव्वै । ग. देवै । १५ ख. घडां । ग. घटां । १६ ग. वाह । १७ ख. ग. करां ।

---

४२६. सिर – ऊपर, पर । क्रीत – कीर्ति । परणे – विवाह करके । सुरगि – स्वर्गमें ।

४२७. दारण – दारुण, भयंकर । चोळ – लाल, रक्त । चांपावत – राठौड़ वंशकी एक उपशाखा अथवा इस शाखाका व्यक्ति । सुरतौ – सुरतसिंह । हरियँद – हरिसिंह । तेजौ – तेजसिंह ।

४२८. चवै – कहता है । सुजळ – कांति, ग्राभा । विखम – विषम, भयंकर । थाट – सेना, दल, समूह । खग...वजावां – तलवारके प्रहार करें, तलवारके घाट उतार दें । वेळा – समय, ग्रवसर । रावत – योद्धा, वीर । वखतारा – महाराजा वखतसिंहके । कूंपावत – राठौड़ वंशकी एक उपशाखा या इस शाखाका व्यक्ति । कळि नारा – वीर, योद्धा ।

४२९. संमत – सांमतसिंह कूंपावत । रांम – रामसिंह । रघुपति – रघुनाथसिंह । रोसारण – रोसमें लाल, जोशपूर्ण । दाखै – कहता है । गजघड़ां – हाथियोंके दल । दमंगळ – महान, जबरदस्त, युद्ध । वाह – प्रहार । हाथळ – हाथकी ।

उवरै संकर सकति[1] अरोधा ।
जोधा राठौड़— जाजुळमांन[2] महाभड़ 'जोधा' ।
जगि सुरतांणसिंघ 'झूंझावत'[3] ।
जाजुळमांन[4] 'दलौ' 'जगतावत' ॥ ४३०

घण ब्रद धार कहै त्रबंधी[5] घड़ ।
दुसहां खेलूं[6] रूक डंडेहड़ ।
तण 'राजल'[7] 'पातल'[8] अतुळीबळ[9] ।
हरनाथोत[10] 'करण' झाळाहळ ॥ ४३१

दुंहवै[11] कहै एण विध[12] दारण ।
विड़ंग झोकि लोपां घड[13] वारण ।
घाय खगां खळ करां बरंग घट ।
झेलां खळां तणी बह[14] खग झट ॥ ४३२

---

१ ग. सगति । २ ख. जाजुलिमांन । ग. जाजळमांन । ३ ख. ग. जूझावत । ४ ख. जाजुलिमांन । ग. जाजळमांन । ५ ख. ग. त्रिवधी । ६ क. खेलुं । ७ ख. ग. राजड । ८ ख. पातुल । ९ ख. अतुलीवल । ग. अतळीबळ । १० ख. हरिनाथोत । ग. हरिनायोत । ११ ख. ग. दहुंवै । १२ ख. ग. विधि । १३ ख. घण । १४ ख. वहो । ग. बहो ।

---

४३०. जोधा – राठौड़ोंकी एक उपशाखा या इस शाखाका व्यक्ति । झूंझावत – झूंझारसिंहका पुत्र । दलौ जगतावत – जगतसिंहका पुत्र दलौ ।

४३१. घण···धार – अपार विरुदोंको धारण करने वाला । त्रबंधी घड़ – तीन प्रकारकी सेनासे (पैदल, अश्व-दल और गज-दल) । दुसहां – शत्रुओं । रूक – तलवार । डंडेहड़ – होलिकोत्सवके समय गेहर नामक नृत्यमें उपयोगमें ली जाने वाली काष्टकी छड़ी । राजल – राजसिंह । पातल – प्रतापसिंह । अतुळीबळ – अतुल-बलशाली । हरनाथोत – हरनाथसिंहका पुत्र । करण – कर्णसिंह । झाळाहळ – तेजस्वी ।

४३२. विड़ंग – घोड़ा । लोपां – लांघ जाय । घड – सेना । वारण – हाथी, गज । घाय खगां – तलवारोंसे संहार कर के, तलवारके घाट उतार कर के । खळ···घट – शत्रुओंके शरीरको खंड-खंड कर दूंगा । झेलां···झट – और विपक्षियोंके अमित शस्त्र प्रहारोंको सहन करूंगा ।

पड़ि चुख चुख हुय[1] वरां अपच्छर[2] ।
अमरापुरां वसां हुय[3] अम्मर[4] ।
उदावत – अतुळीवळ[5] बोलै[6] ऊदावत ।
(भड़) सारां सिरै[7] 'चैन' सूजावत[8] ॥ ४३३

धख[9] करि फूल अणी असि धारूं ।
मुगळ सिलह बंध खग झट मारूं ।
खेलूं[10] झिलूं[11] अखाड़ां[12] खंडां[13] ।
झूल हणूं खळ खासां झंडां ॥ ४३४

कमध 'पतावत' मतै करारै ।
करमसीयोत– इणहिज विध[14] 'ऊदल' उच्चारै[15] ।
हुय[15] विमरीर रूप झाळाहळ ।
बोलै[16] 'करमसियोत'[17] महाबळ ॥ ४३५

---

१ ख. ग. होय । २ ख. ग. अपछर । ३ ख. ग. होय । ४ ख. अंम्मर । ग. अमर । ५ ख. अतुलीवल । ६ ख. वोले । ७ ख. ग. सिर । ८ ख. ग. सुभावत । ९ ख. ग. धंव । १० क. खिलूं । ११ ख. भिलूं । ग. झेलौं । १२ ख. अडां । ग. आडां । १३ ख. ग. षडां । १४ ख. विधि । १५ ख. ऊचारै । १६ ख. ग. होय । १७ ख. वोले । १८ ख. करमसीयोत ।

---

४३३. पड़ि······अपच्छर – तथा युद्धस्थलमें खंड-खंड हो कर गिरूंगा और वीरगति प्राप्त होता हुआ अप्सराका वरण करूंगा । अमरापुरां – स्वर्गका । अम्मर – अमर, देव । ऊदावत – राठौड़ोंकी एक उपशाखा तथा इस शाखाका व्यक्ति । भड़···सिरै – योद्धाओंमें सर्वश्रेष्ठ । चैन सूजावत – चैनसिंह सुजावत ।

४३४. धख – रोश, जोश, कोप । फूल अणी – तलवारकी नोंक । सिलह बँध – अस्त्रशस्त्रोंसे सुसज्जित, कवचधारी । खेलूं··खंडां – युद्धस्थलमें युद्धरूपी खेल खेलूं और शस्त्र-प्रहारोंको धारण करता हुआ विपक्षियोंको खंड-खंड करता हुआ उनके झुण्ड (झूल)के झुण्ड खासा झंडाके पास ही ध्वंस कर दूंगा ।

४३५. पतावत – प्रतापसिंहका पुत्र । मतै करारै – जबरदस्त विचारसे । ऊदल – उदावत शाखाका वीर । उच्चारै – कहता है । झाळाहळ – अग्नि या सूर्य । करमसियोत – राठौड़ वंशकी एक उपशाखा या इस शाखाका व्यक्ति ।

लाल नयण अंबर सिर लगतौ[1] ।
जद[2] बोलियौ[3] 'लखावत'[4] 'जगतौ'[5] * ।
वधि[6] हरनाथ तणौ[7] जिण[8] वारै[9] ।
इम हिज सिंभूसिंघ उचारै[10] ॥ ४३६

अचिरज किसौ[11] एह अधिकाई ।
भड़ विमरीर 'ऊद'रै[12] भाई ।
ऊहड़ राठौड़– घाय खगां भांजण[13] उजबक[14] घड़ ।
अणभँग तांम बोलियौ[15] ऊहड़ ॥ ४३७

ओपम नयण धिखंतां आरण ।
दाखै सूर 'विहारी' दारण ।
हाथियांतणां[16] जँगी हवदांमें[17] ।
रोपूं सेल घड़ां रवदांमें[18] ॥ ४३८

अँग झकवौळ[19] रुधर[20] हुय[21] आऊं[22] ।
कायम जीवत सिंभ[23] कहाऊं ।

---

१ ग. लगतो । २ ख. ग. जदि । ३ ख. वोलीयौ । ग. बोलियो । ४ ग. लाषावत । ५ ग. जगतो । * इस पंक्तिसे आगे ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न पंक्तियां मिली हैं—
'विधि विधि वीभळ झाळ वजाऊं ।
घण रवदाळ सिलह बंध थाऊं ।'
६ ख. विधि । ग. बधि । ७ ग. तणो । ८ ग. तिण । ९ ग. वारे । १० ख. उचरि । ११ ग. किसो । १२ ख. ऊदरौ । ग. ऊदरो । १३ ख. भां । १४ ख. जवक । १५ ख. वोलीया । ग. बोलिया । १६ ख. हाथीयांताणा । १७ ख. ग. हवदांमै । १८ ख. ग. रवदांमै । १९ ख. वोल । ग. बोल । २० ख. ग. रुधिर । २१ ग. होय । २२ ख. आंऊं । ग. जाऊं । २३ ग. सिभु ।

---

४३६. अंबर – आसमान । जगतौ – जगतसिंह ।

४३७. अचिरज – आश्चर्य । ऊदरै – उदयसिंहके । घाय ...घड़ – तलवारोंके प्रहारोंसे उजवकों (यवन शाखा विशेष)की सेनाका ध्वंस करूंगा । अणभंग – वीर । ऊहड़ – राठौड़ोंकी एक उपशाखा या इस शाखाका व्यक्ति ।

४३८. धिखंतां – प्रज्वलित । आरण – लोहारकी भट्टी । विहारी – विहारीसिंह । दारण – शक्तिशाली, वीर । हवदांमें – हाथियोंके हौदोंमें । रोपूं सेल – भाला (एक शस्त्र) खड़ा करूं ।

४३९. झकवौळ...आऊं – हाथीके हौदेमें भालेका प्रहार करूंगा और मैं स्वयं अस्त्रशस्त्रोंके प्रहारोंसे अपने शरीरको रक्तमें तरवतर करके ही आ कर महाराजासे सलाम करूंगा । जीवत सिंभ – युद्धमें हो कर जीवित रहने वाला वीर ।

चौहांण– जैं[1]संभरी संभर[2] उजवाळा[3] ।
चाहवांण[4] बोलै[5] कळिचाळा ।। ४३९

'लाल' सुतण मौकौ[6] अजरायल[7] ।
तै[8] बंधव[9] 'माहव'[10] रिण तायल ।
अै दाखै असि झोक[11] अथाहां ।
वधि वधि[12]खळां सीस[13] खग वाहां ।। ४४०

भाटी– अरण नयण चख रीस उपाटी ।
भड़ विमरीर वोलिया[14] भाटी ।
सूरजमाल सुतन भड़ 'सांमळ' ।
'जूंझा'[15]रौ 'नाथ'रौ झळाहळ ।। ४४१

कहै दुहूं ओरे[16] केकांणां[17] ।
घण खग झाट रमां घमसांणां ।
तण जगमाल 'हिमत' तिण वारै ।
आऊं[18] कांम[19] एम उच्चारै[20] ।। ४४२

---

१ ग. जे । २ ख. ग. संभरा । ३ ख. ग. ऊजाळा । ४ ख. ग. चाहुवांण । ५ ख. वोले । ग. वोले । ६ ख. मोहोंकौ । ग. मोहोको । ७ ख. ग. अजराइल । ८ ग. ते । ९ ख. वंधद । १० ख. ताव । ११ ख. झोकि । १२ ग. विधि । १३ ख. सीसि । १४ ख. वोलीया । १५ ख. ग. झूझा । १६ ख. ग. वोरे । १७ ख. कांणां । १८ ख. आंऊं । ग. आऊ । १९ ख. कांमि । २० ग. उचारे ।

---

४३९. जैं – जो । संभरी – चौहान वंशका विरुद, चौहान । संभर – सांभर नामक स्थान । उजवाळा – उज्ज्वल करने वाला । कळिचाळा – वीर, योद्धा ।

४४०. लाल – लालसिंह । मौकौ – मुहकमसिंह । अजरायल – वीर । माहव – माधवसिंह । तायल – (कोपवान ?) । अै – ये । दाखै – कहते हैं । झोक – झोंक कर । अथाहां – अपार । वधि वधि – बढ़-बढ़ कर । खग वाहां – तलवारका प्रहार करें, योद्धा ।

४४१. उपाटी – 　　　 – श्यामसिंह ।

४४२. केकांणां – घोड़ों । घण···घमसांणां – अपार तलवार प्रहार करते हुए युद्धस्थलमें युद्ध-खेल खेलेंगे । हिमत – हिम्मतसिंह । आऊं कांम – वीरगतिको प्राप्त हो जाऊंगा ।

घण व्रद पूर बारहट[1] घररौ ।
करणीदांन कहै केहररौ[2] ।
ओरूं[3] ऊछट[4] जोम अलीलौ ।
नेजायतां तणै विच[5] नीलौ ॥ ४४३

वीजळ कळहळ[6] धार विहारां ।
पछटूं जरद - पोस[7] अणपारां ।
भूलूं नह कुळवाट सुभाए ।
असी[8] सुरंगी[9] यै[10] खग[11] आए ॥ ४४४

कहै पिरोहित[12] राज अणंकळ[13] ।
'माहव'रौ 'विजपाळ' महाबळ[14] ।
भेळूं[15] तुरँग भमर गज भारां ।
धड़छूं दुसह ऊजळी धारां ॥ ४४५

तै पौहचूं लग नील[16] पताखां ।
इम उजवाळूं[17] पीळां - आखां[18] ।

---

१ ख. ग. वारहट । २ ख. कहरा । ३ ख. ओरूं । ग. ओरौं । ४ ख. उछट । ५ ख. ग. विचि । ६ ख. ग. झळहळ । ७ ख गरद ओस । ग. गरद पोस । ८ ख. ग. आसी । ९ ख. सूरंगी । ग. सूरंगि । १० ख. ए । ग. ऐ । ११ ख. ष । ग. षगि । १२ ख. पितोहित । १३ ख. अणंदकल । १४ ख. माहावल । ग. माहावळ । १५ ख. मेलू । १६ ग. वाळ । १७ ग. अजवालूं । १८ ख. ग. पीळाआखां ।

---

४४३. घण ·· पूर — अनेक विरुद धारण किये हुए । करणीदांन — यह मुदियाड़के ठाकुर केसरी सिंहका पुत्र था । केहररौ — केसरीसिंहका । ऊछट — विशेष, श्रेष्ठ । जोम — जोश । अलीलौ — घोड़ा । नेजायतां तणै—भाला-धारियोंके । नीलौ — रंग विशेषका घोड़ा ।

४४४. वीजळ — तलवार । कळहळ — युद्ध, युद्धका कोलाहल । कुळवाट — कुलमार्ग । असी — घोड़ा । सुरंगी — लाल रंग ।

४४५. अणंकळ — वीर । माहवरौ — माधवका (पुत्र) । भेळूं — झोंक दूं । भमर — श्याम रंगका घोड़ा । गज भारां — हाथियोंका दल । धड़छूं — संहार कर दूं । धारां — तलवारों ।

४४६. तै — उससे । पौहचूं — पहुंच जाऊं । लग — तक, पर्यन्त । नील पताखां — हरे रंगकी झंडी । उजवाळूं — उज्ज्वल कर दूं । पीळां आखां — मांगलिक अवसरों पर केशरमें रंगे हुए अक्षत । वि. वि. राजस्थानमें यह एक प्रथा है कि मांगलिक अवसरों पर अपने इष्ट मित्रों व संबंधियोंको चावलको केसर या पीले रंगमें रंग कर निमंत्रण-पत्रके तौर पर ब्राह्मणके साथ भेजे जाते हैं । यहां कविका तात्पर्य यह है कि महाराजाने मुझे मांगलिक अवसरों पर आमंत्रित किया है अतः आजके इस युद्धमें भी मैं अपना कर्त्तव्य पूर्ण करूंगा ।

'अधिराजरौ' दिवांण[1] उचारै ।
भेळूं असि खग कढ़ि[2] गज भारै ॥ ४४६
धड़चूं[3] (छूं) मुगळ पह[4] चख ज[5] धौळी ।
पुणै[6] एण[7] विध[8] 'लाल' पँचोळी[9] ।
कहै व्यास खळ हणां किरंमर[10] ।
नंदलाल हरलाल[11] नृभै[12] नर ॥ ४४७
तोले[13] खाग गयण भुज तोलै[14] ।
'वखतेस'रा जोध इम बोलै[15] ।
छक इसड़ौ 'अधिराज' छभारौ ।
औ[16] स्रब[17] तेज प्रताप 'अभा'रौ ॥ ४४८
उण मौसर[18] पह[19] लूंण उजाळौ[20] ।
पूछै[21] स्यांमध्रमी 'विजयाळौ' ।
सावधांन दहुंवै[22] गुण साहै[23] ।
मंत्रीपणा खत्रीवट माहै[24] ॥ ४४९

---

१ ख. ग. दीवांण । २ ग. कटि । ३ ख. ग. धडछूं । ४ ख. ग. पहौ । ५ ख. चिधज । ग. चिधिज ६ ग. पुणे । ७ ग. ऐण । ८ ख. ग. विधि । ९ ख. पचोली । ग. पचोळी १० ख. करिमर । ग. करिमर । ११ ख. ग. हरिलाल । १२ ख. ग. नृभै । १३ ग. तोलै । १४ ख. तोले । १५ ख. बोले । १६ ख. औपै । ग. ओ । १७ ख. प्रतिमें यह शब्द नहीं है । १८ ख. ग. मौसरि । १९ ख. ग. पौहो । २० ख. उजालूं । २१ ख. पूछे । २२ ख. ग. दुहुंवै । २३ ख. साहे । २४ ख. षत्रीवट माहे ।

---

४४७. अधिराजरौ – महाराज वखतसिंहका । भेळूं – झोंक दूं । गज भारै – हाथियोंके समूहमें ।

४४७. धौळी – श्वेत, धवल । पुणै – कहता है । लाल – लालचंद । पंचोळी – कायस्थ । किरंमर – तलवार ।

४४८. तोले – प्रहार हेतु तलवार उठा कर । गयण – आसमान । वखतेसरा – महाराजा वखतसिंहका । छक – तेज, रुतवा, प्रभाव । स्रब – सर्व, सब । अभांरौ – अभयसिंहका ।

४४९. मौसर – अवसर, मौका । विजयाळौ – विजयराज भंडारी । मंत्रीपणा – मंत्रीत्व । खत्रीवट माहे – क्षत्रियत्वमें ।

कीधी अरज 'विजै' जोड़ै कर ।
सुणिजे[1] महाराज[2] राजेस्वर[3] ।
आज प्रताप राजरौ[4] ऐहौ[5] ।
जग ऊपरां[6] सहँस[7]-किर[8] जेहौ[9] ।। ४५०
दळवळ[10] द्रब्ब[11] दांन खग दावै ।
अनि भूपाळ जोड़ नह[12] आवै ।
कूंत साहनूं हुतौ[13] सकाजा ।
मौहम[14] जिसी लीध[15] महाराजा[16] ।। ४५१
थाट दिलेस भार भुज थँभियौ[17] ।
आपां[18] जिसौ कांम आरँभियौ[19] ।
समर जीत 'गजण'हूं सवाई ।
आप तणा खग तणी अवाई ।। ४५२
खांन अवर दहसत[20] सब खावै ।
आपहूंत लड़वा नह आवै ।
सरस आप खग तप सरसांणै ।
'मुदफर' दळ भागा मुगळांणै ।। ४५३

---

१ ग. सुणजे । २ ख. माहाराजा । ग. महाराजा । ३ ख. ग. राजेसुर । ४ ग. आप । ५ ख. ग. एहौ । ६ ख. उपरां । ७ ख. ग. सहस । ८ ख. ग. कर । ९ क. जैहौ । १० ख. दलवल । ११ ख. द्रव्व । ग. द्रव । १२ ग. नहि । १३ ख. हुतो । ग. हूतो । १४ ग. मोहम । १५ ख. ग. लीधी । १६ ग. माहाराजा । १७ ख. थंभीयौ । १८ ग. आप । १९ ख. आरंभीयौ । २० ख. अव दहसत षावै । ग. सब दहसत षावै ।

---

४५०. विजै – विजयराज भंडारी । जोड़ै कर – करबद्ध होकर । प्रताप – प्रभाव, ऐश्वर्य । सहँस-किर – सूर्य ।

४५१. अनि – अन्य । जोड़ – समानता । कूंत – अनुमान । मौहम – (?) ।

४५२. थाट – सेना, दल । दिलेस – दिल्लीश, बादशाह । भार भुज – उत्तरदायित्वके रूपमें । थँभियौ – थाम्हा । समर – युद्ध । गजणहूं – महाराजा गजसिंह । सवाई – विशेष, अधिक । अवाई – खबर, संदेश ।

४५३. दहसत – भय, आतंक । सरस – जोशपूर्ण । तप – प्रभाव, तेज । सरसांणै – फ़ैल गया ।

आप तणा खग तेज अप्रवळ[1] ।
दहल[2] वगा[3] वाजींद तणा दळ ।
राव ताव्र खग देखि धोम रवि[4] ।
भज्ज[5] गयौ इंद्रसिंघ मनव[6] भवि[7] ॥ ४५४

वहसे[8] आप सिंव जिम वोलै[9] ।
तुररावाज[10] सीस[11] खग तोलै ।
पह[12] इम चढ़े लियण[13] निज पाया ।
अंबखास[14] दिस[15] घाट चलाया ॥ ४५५

आगम सुण[16] आपरी अवाई ।
स्रव जळ थाप[17] हुई[18] पतिसाही[19] ।
ऊठे[20] असपति गयौ ····अगेतौ[21] ।
सतर बहोतर[22] भड़ां सहेतौ[23] ॥ ४५६

इसड़ौ तप आपरौ 'अजावत' ।
आसंग किणहि[24] अमीर न आवत ।

---

१ ख. अप्रवल । ग. अपरवळ । २ ख. दहलि । ३ ख. ग. भगा । ४ ख. ग. रव । ५ ख. भाजि । ग. भाज । ६ ख. मांनि । ग. मांन । ७ ख. ग. भव । ८ ख. वहसे । ९ ख. वोले । १० ख. वाजि । ग. तुररावाजि । ११ ख. ग. सीसि । १२ ख. ग. पौहो । १३ ख. ग. लेयण । १४ ख. आंवपास । ग. आंवपास । १५ ख. ग. दिसि । १६ ख. सुणि । ग. सुणी । १७ ख. ग. थाळ । १८ ग. हुइ । १९ ख. ग. पतिसाई । २० ग. उठै । २१ ग. अगेतो । २२ ख. वहतर । ग. वहैतर । २३ ख. सहेतो । ग. सहैतो । २४ ख. किणहीं । ग. किण ।

---

४५४. अप्रवळ – अपार, असीम । दहल – भय । वगा – (?) । वाजींद तणा – (?) । राव – नागौर अधिपति इन्द्रसिंह । ताव – रौब । धोम – (?) । रवि – सूर्य । इंद्रसिघ – नागौराधिपति राव अमरसिंहका वंशज । मनव – मनमें । भवि – भय ।

४५५. वहसे – जोशमें आ कर ।

४५६. आगम – आगमन, आना । स्रव···पतिसाही – आपके आगमनकी सूचना सुन कर दिल्लीकी बादशाहत इस प्रकारसे कम्पायमान हो गई जैसे जलाशयके जलके मध्य थप्पड़ मारनेसे पानी विलोड़ित होता है ।

४५७. तप – रौब, प्रभाव । अजावत – महाराजा अजीतसिंहके पुत्र । आसंग – बल, शक्ति, सामर्थ्य ।

दिलीस्वरां[1] धर जिती दवाई[2] ।
स्रब[3] जोवतां दिली पतिसाही[4] ॥ ४५७

धर हिंदू[5] दूजां रजधांनी ।
तुरक 'इरांन'[6] अनै 'तूरांनी' ।
आपहूंत लड़िवा[7] कजि आवै ।
दोय अमीर इसा दरसावै ॥ ४५८

एक निजांम तेवड़ै आरण ।
दूजौ[8] सेर विलँदखां दारण ।
सूरापण[9] मसलत बळ सधतौ ।
'विलँद' निजांम हूंत पणि[10] वधतौ ॥ ४५९

अड़ताळीस[11] सहंस असवारां ।
खांनजिहां[12] जिण[13] हणे[14] खँधारां ।
धर पूरव्व[15] धीर छत्र धारे ।
साठि हजारां हूंत सँघारे ॥ ४६०

'सूर विलँद' विढ़तां[16] सुरतांणां ।
जीतौ सफरजंग जमरांणां ।
दळ सभि धसे समँदचै अंदर ।
'विलँद' लियौ[17] गढ़ छइया वंदर ॥ ४६१

---

१ ख. ग. दिलीसुरां । २ ख. दवाई । ग. दवाइ । ३ ख. श्रव । ग. सरव । ४ ग. पतिसाई । ५ ख. ग. हींदू । ६ ग. ईरांन । ७ ग. लडवा । ८ ग. दूजो । ९ ग. सुरापांन । १० ग. पण । ११ ख. ग. अठताली । १२ ग. षांणजहां । १३ ख. ग. जिणि । १४ ख. ग. हणै । १५ ख. पूरव्व । १६ ग. वढ़तां । १७ ख. लीयौ ।

---

४५७. दिलीस्वरां – बादशाहों ।

४५८. रजधांनी – राजधानी । दरसावै – दिखाई देते हैं ।

४५९. तेवड़ै – विचार करता है । आरण – युद्ध । दारण – जबरदस्त । सूरापण – शौर्य । मसलत – मस्लहत । सधतौ – साधन करता हुआ । पणि – भी । वधतौ – विशेष ।

४६१. जमरांणां – यमराजके तुल्य, जबरदस्त ।

इसड़ौ[1] 'विलँद' सँवाहै[2] आजा ।
मोटौ[3] भाग तूझ महाराजा[4] ।
सझै समर जीतसां सरोसौ ।
भाग आपरातणौ भरोसौ ॥ ४६२

इसड़ौ 'विलँद' मरै काइ[5] भाजै ।
छत्रपति[6] तूझ वडौ जस छाजै ।
इण[7] मारियां[8] काढ़ियां[9] इणनूं ।
दहल सोच पड़सी दक्खिणनूं[10] ॥ ४६३

साहू मंत्री मेळ[11] (सी) सकाजा[12] ।
मिळणे[13] आहूंता[14] महाराजा[15] ।
कर जोड़े[16] अरजां सुज[17] करसी ।
धणी जेम निजरां[18] द्रब[19] धरसी ॥ ४६४

उभ[20] कंठौ[21] 'पीलू' नह आसी ।
जो आसी लड़ि भाजे जासी ।
सत्र नमसी भय प्रीत[22] सकोई ।
करि[23] सिर कांन न कड्ढै[24] कोई ॥ ४६५

---

१ ग. इसडो । २ ख. सवाहे । ग. सिमाहे । ३ ग. मोटो । ४ ख. ग. माहाराजा । ५ ख. ग. काय । ६ ख. छत्रपती । ७ ख. यण । ८ ख. मारीयां । ९ ख. काढ़ीयां । १० ख. दछिण नूं । ग. दषणनू । ११ ख. ग. मेल्हसी । १२ ग. साजा । १३ ख. ग. मिलण । १४ ख. आपहूंत । ग. आपहूता । १५ ख. माहाराजा । १६ ग. जोडै । १७ ख. ग. सुजि । १८ ख. नजरां । ग. नजरौ । १९ ख. ग. द्रव । २० ख. ग. उभय । २१ ग. कंठो । २२ ख. ग. प्रीति । २३ ख. ग. कर । २४ ख. ग. कट्टै ।

---

४६२. विलँद – सर विलंद खां । सँवाहै – (?) । आजा – उज्वका बहुवचन जिसका अर्थ हाथ, पैर आदि शरीरके अवयव अथवा साहस । सरोसौ – रोशपूर्ण, रोशयुक्त ।

४६३. काइ – या, अथवा । छाजै – शोभायमान होगा । काढ़ियां – निकालने पर । दहल – आंतक, भय ।

४६५. सकोई – सब । करि···कोई – कोई भी तुमसे युद्ध करनेके लिए कान तक ऊंचा नहीं करेगा ।

खळ मेवास[1] धड़क सह[2] खासी ।
एक हुकम सारी धर आसी ।
वणसी अमल चकरवरतीरौ ।
तदि आवसी कि[3] पर[4] धरत्रीरौ[5] ।। ४६६

थाटनाथ होसी दहुं थाटां ।
झळहळ भड़ां परख खग झाटां ।
असपति[6] सुणे करेसी आणँद ।
मुनसप पटा मेलसी[7] 'महमँद' ।। ४६७

पह[8] सांभर[9] लगि[10] सामँद[11] पाजा ।
रहसी दास होय अनि राजा ।
कुळ पैंतीस सेव स्रब[12] करसी ।
भूपति रैत जेम दँड भरसी ।। ४६८

महि हम तम खमसी अतिमांमां[13] ।
सौ सौ गजहूं करसि सलांमां ।
सिलह ससत्र[14] करि वीर समाजा ।
जुध वैगौ[15] कीजे[16] महाराजा[17] ।। ४६९

---

१ ग. मैवास । २ ख. ग. सौहौ । ३ ख. ग. की । ४ ख. ग. प । ५ ख. ग. धरती । ६ ख. असपती । ७ ख. ग. मेल्हसो । ८ ख. ग. पौहो । ९ ख. ग. संभरि । १० ख. ग. लग । ११ ग. सांमद । १२ ख. सव । ग. सव । १३ ग. अतमानां । १४ ख. ग. सस्त्र । १५ ख. वैगो । ग. वेगो । १६ ख. ग. कीजै । १७ ख. माहाराजा ।

---

४६६. मेवास – डाकुओं या लुटेरोंके सुरक्षित रहनेके स्थान । धड़क – भय, आतंक । अमल – अधिकार । चकरवरती – चक्रवर्ती । पर – शत्रु, अन्य, दूसरा । धरत्री – धरती ।

४६७. थाटनाथ – सेनापति । परख – परीक्षा । असपति – बादशाह । मुनसप – मनसब । पटा – जागीरकी सनद ।

४६८. लगि – तक । सामँद – समुद्र । पाजा – सीमा, हद ।

४६९. महि – पृथ्वी । हम तम – हम और तुम, राजस्थानमें प्रचलित अनादर-सूचक प्रयोग । खमसी – सहन करेंगे । अतिमांमां – (?) । वैगौ – शीघ्र ।

आप मुहरि[1] हूं लड़ूं अचूकां ।
रांम मुहरि[2] हणमत जिम रूकां ।
इसड़ी वात सुणे[3] 'अभपत्ती' ।
मंत्री थापलियौ[4] महिपत्ती[5] ।। ४७०

वीर जके[6] तावीन[7] विचारी[8] ।
'अभमल' पह[9] पूछै[10] अग्रकारी ।
करि सलांम बोलै[11] कलिनारौ ।
वेढ़क सांमतसिंघ 'विजा'रौ ।। ४७१

ओरे तुरँग थाट अवियाटां[12] ।
झळहळ भगळ रमूं खग झाटां ।
करवत विहर करूं केवांणां[13] ।
काठ चँदण जेही किलमांणां ।। ४७२

झेलूं लोह अनेक झिलाऊं ।
कळहण[14] जीवतसिभ कहाऊं ।
'ईंदावत' 'सत्रसल' भड़ आखै ।
'दौळौ'[15] 'पदमावत' इम दाखै ।। ४७३

---

१ ख. ग. मोहोरि । २ ख. मौहरि । ग. मोहरि । ३ ग. सुणै । ४ ख. ग. थापलीयौ । ५ ख. ग. महपत्ती । ६ ख. ग. जिके । ७ ख. ग. तावीन । ८ ख. ग. विजारी । ९ ख. ग. पौहो । १० ख. पूछे । ११ ख. बोले । १२ ख. ग. अवियाटां । १३ ग. केवांणी । १४ ख. ग. कलहणि । १५ ग. दोलो ।

---

४७०. मुहरि – अगाड़ी, अग्र । हणमत – हनुमान । रूकां – तलवारों । थापलियौ – उत्साहित किया, जोश दिलाया । महिपत्ती – राजा ।

४७१. तावीन – आधीन । वेढ़क – योद्धा, वीर ।

४७१. अवियाटां – युद्धों । भगळ – ऐंद्रजालिक खेल । रमूं – खेल खेलूं । विहर – विदीर्ण । केवांणां – तलवारों । जेही – जैसे ही । किलमांणां – यवनों, मुसलमानों ।

४७३. झेलूं – सहन करूं । लोह – शस्त्र-प्रहार । झिलाऊं – अनेकों पर शस्त्र-प्रहार करूं । कळहण – युद्ध । जीवतसिभ – वह योद्धा जो रणक्षेत्रमें अनेक अस्त्र-शस्त्रोंके घावोंसे आहत होने पर भी जीवित रह जाता है । आखै – कहता है । दाखै – कहता है ।

असि[1] दळ. मुग्गळ[2] ओर[3] अथागां ।
खेलां[4] भगळ झळाहळ खागां ।
तद[5] बोलै[6] 'जालम'[7] 'केहर' तण ।
घण मगरूर सूर पीरस[8] घण ॥ ४७४

घूमर[9] असि झोके सत्र घाऊं ।
अधर भ्रकुट[10] वीजळा[11] उडाऊं ।
वहसि[12] रईस लिये[13] झक बौळा[14] ।
गवड़ खेलवादी जिम गोळा[15] ॥ ४७५

बोळ[16] करे[17] असमर[18] रत[19] वोहां[20] ।
लालंबर हुय पूरा[21] लोहां[22] ।
सत्र विहंड[23] खुरसांण सकाजा ।
मुजरी[24] करूं[25] एम महाराजा[26] ॥ ४७६

धज कुळ वाट[27] मेड़ता धुरतौ ।
'सेरावत' वोलै[28] भड़ 'सुरतौ' ।

---

१ ख. ग. असि । २ ख. मूगल । ग. मुगल । ३ ख. औरि । ग. और । ४ ग. षेल्हां । ५ ख. ग. तदि । ६ ख. वोले । ग. वोले । ७ ख. ग. जालिम । ८ ख. पोरस । ग. पिड पोरस । ९ ख. घूमर । ग. घूमर । १० ख. भृगुट । ११ ग. वीझळा । १२ ख. वहौसि । ग. वौहौसि । १३ ख. ग. लीयै । १४ ख. वोला । ग. वोळा । १५ ख. वोला । ग. गोळा । १६ ख. वोल । ग. वोळ । १७ ग. करै । १८ ख. ग. असिमर । १९ ग. रति । २० ख. वोहां । २१ ग. पुरा । २२ ख. लोहां । ग. लोहा । २३ ख. ग. विहंडे । २४ ग. मुजरी । २५ ख. ग. करौं । २६ ख. महाराजा । ग. माहाराजा । २७ क. दाट । २८ ख. वोले । ग. वोले ।

---

४७४. ओर – झोंक कर । अथागां – अपार । मगरूर – गर्वधारी, गर्व ।

४७५. घूमर – समूह, दल । सत्र – शत्रु । घाऊं – संहार कर दूं । भ्रकुट – शिर, मस्तक । वीजळा – तलवार । वहसि – जोशमें आकर । झक बौळा – खूनमें तरबतर, सराबोर । गवड़ खेलवादी – गौड़िया बाजीके समान ।

४७६. बोळ – लाल, रक्तपूर्ण । असमर – तलवार । रत – रक्त, खून । वोहां – प्रवाह, (?) । लालंबर – लाल रंग पूर्ण । लोहां – शस्त्र-प्रहारों । विहंड – ध्वंस करके । खुरसांण – यवन, मुसलमान । मुजरी – अभिवादन ।

४७७. धज – ध्वज । कुळ वाट – कुल-मार्ग, वंश-गुण । धुरतौ – धारण करता हुआ ।

अणभँग राजसिंघ[1] 'पेमावत' ।
सिंभूसिंघ वोलियौ[2] 'हटी' सुत ।। ४७७

जवन हरौळ विहरि मधि जावां ।
असुर गोळ मझि[3] लोह उडावां ।
'गजण' 'सवाई' तणौ खत्री[4] गुर ।
आखै जड़ूं सावळां[5] आसुर ।। ४७८

लोही ताळ सिलहवँध लोभै ।
समँद वीच[6] जिम वादळ सोभै ।
दाखै 'विजपाळोत'[7] 'बहादर' ।
हरवळ अणी हाकलूं[8] हैमर ।। ४७९

करूं[9] झाट झळहळ केवांणां ।
मछ ओछा[10] जळ ज्यूं मुगळांणां ।
भिड़ जस मेलूं[11] खळ[12] दळ भारै ।
एम[13] 'हटी' सुत 'सिवौ'[14] उचारै ।। ४८०

खाग पछट काढूं रत खाळां[15] ।
रँगमट[16] जेम[17] अगुट[18] खदाळां ।

---

१ ग. राजांसिर । २ ख. वोलीयो । ग. वोलीयो । ३ ग. महि । ४ ख. पत्र । ५ ख. सांवलां । ग. सावलां । ६ ख. वीचि । ग. बीच । ७ ख. ग. विजपालरो । ८ ख. ग. हाकलू । ९ ग. करो । १० ख. ग. वोछा । ११ ग. मेळो । १२ ख. पग । १३ ग. हेम । १४ ख. ग. सिवो । १५ ख. पाला । १६ ख. रंगमंट । १७ ख. ए । ग. एम । १८ ख. ग. सूगुट ।

---

४७७. अणभँग – नहीं झुकने वाला वीर । पेमावत – पेमसिंहका पुत्र । हटी – हटीसिंह ।

४७८. विहरि – विदीर्ण कर के, नाश कर के । मधि – मध्य, बीच । गोळ – सेना, दल । लोह उडावां – शस्त्र-प्रहार करें । गजण – गजसिंह । सवाई – सवाईसिंह । आखै – कहता है । जड़ूं – प्रहार करूं । सावळां – भालों विशेषों । आसुर – यवन, मुसलमान ।

४७९. ताळ – तालाब । सिलहबँध – कवचधारी या अस्त्र-शस्त्रधारी । लोभै – लोभायमान होते हैं । अणी – सेना, अनीक । हैमर – घोड़ा ।

४८०. झाट – प्रहार । झळहळ – चमकदार । केवांणां – तलवारों । मछ – मछली, मत्स्य । मुगळांणां – मुसलमान । सिवौ – शिवसिंह ।

४८१. पछट – प्रहार कर के । काढूं – निकाल दूं । खाळां – नाला । रँगमट – रंग डालने या घोलनेका पात्र विशेष । खदाळां – मुसलमानों ।

अणभँग कहै जोध 'ऊदावत'[1] ।
आगि व्रजागि 'गजौ'[2] 'लालावत' ।। ४८१
लोहां भड़ ओझड़ां[3] लगावां ।
असुर दड़ां जिम सीस उडावां ।
जाजुलि जुध[4] झेळूं असि जालिम[5] ।
'सिरदाररौ' कहै भड़ 'सालिम'[6] ।। ४८२
धख कथ एण हीज विध[7] धारूं ।
'मौहकम' 'रांम'[8] 'अमर' सुत मारूं ।
वदै वहूं[9] खेलां[10] जुध वागां ।
खासा झँडे[11] डंडेहड़ खागां ।। ४८३
कमँध हठीसुत[12] रूप कराळौ ।
चवै गुलाब सिंघ[13] कळिचाळौ ।
घण खळ असि झोके खग[14] घाऊं[15] ।
वयळ मँडळ नट कुँडळ वणाऊं ।। ४८४
अरि हति[16] फूल धार झेलै[17] अति ।
भूत गणां संकर पूजावति[18] ।

---

१ ख. ग. इंदावत । २ ख. गलो । ग. गजो । ३ ग. ओझडां । ४ ख. ग. जुधि । ५ ग. जालम । ६ ग. सालम । ७ ख. ग. विधि । ८ ग. राव । ९ ख. ग. त्रिहूं । १० ख. षेल्हां । ११ ख. ग. झंडां । १२ ग. हठीसूत । १३ ख. सिघ सिघ । १४ ख. ग. पगि । १५ ख. ग. घावूं । १६ ख. हय । ग. हथि । १७ ख. झेटूं । ग. झेलू । १८ ख. ग. पूजभति ।

---

४८१. ऊदावत – राठौड़ वंशकी एक शाखा या इस शाखाका व्यक्ति । गजौ – गजसिंह । लालावत – लालसिंहका वंशज ।

४८२. ओझड़ां – प्रहार । दड़ां – गेंद । जाजुलि – जाज्वल्यमान । झेळूं – झोंक दूं । जालिम – जबरदस्त । सिरदाररौ – सिरदारसिंहका । सालिम – सालिमसिंह ।

४८३. धख – जलन, जोश । एण – इस । वदै – कहता है । डंडेहड़ – होलिका नृत्यके समय प्रयोगमें लिया जाने वाला डंडा या छड़ी ।

४८४. चवै – कहता है । कळिचाळौ – वीर, योद्धा । घाऊं – ध्वंस कर दूं । वयळ मँडळ – सूर्यमंडल । नट कुँडळ – (?) ।

४८५. अरि – शत्रु । हति – संहार कर के । फूल धार – तलवार ।

करूं सनांन विहर रत कम्मळ[1] ।
जटी[2] सनांन जेम[3] गंगाजळ ॥ ४८५
वदै 'गुलाव' नेह अवरीरा ।
पहरूं हार गुलाब परीरा ।
चमर हुतां[4] रथ[5] चढ़े चलाऊं ।
जुगति एण अमरापुर[6] जाऊं ॥ ४८६
गजघड़[7] तुरँग हाकलूं गहतंत ।
सुत 'गोकळ' दाखै इम 'सांमँत' ।
धीवै[8] सेल सनाह[9] धड़ाळां ।
वरघळ[10] कर[11] पाड़ूं[12] वंगाळां ॥ ४८७
वदै 'किसन' 'पिथ' सुत कुळ वाटां ।
भाड़ूं[13] सूर खळां खग भाटां ।
'रांम' सुजाव मौड रिमराहां ।
वदै भोक[14] असि वीजळ वाहां ॥ ४८८
अरि करनत्त न[15] हंस उडाऊं[16] ।
कहै 'रतन' जस उतन कहाऊं[17] ।

---

१ क. कम्मल । २ क. जवन । ३ ग. सिनांन । ४ ख. हुंता । ५ ख. ग. रथि । ६ ख. अमरापुरि । ७ ख. गगजघड । ग. गजघट । ८ ख. धीवे । ग. धीवे । ९ ख. संन्नाह । ग. सन्नाह । १० ख. ग. वरघल । ११ ख. करि । १२ ख. पाडूं । १३ ख. भाटूं । १४ ख. ग. भोकि । १५ ख. ग. करिनतन । १६ ख. ऊडावूं । ग. उडावूं । १७ ग. कहावूं ।

---

४८५. विहर – काट कर । रत – रक्त, खून । कम्मळ – शिर । जटी – महादेव ।
४८६. अवरीरा – नागकन्या विशेष जिसको वीरगति प्राप्त करने वाले वीर ही प्राप्त करते हैं । परीरा – अप्सराके । अमरापुर – स्वर्ग ।
४८७. गजघड़ – हाथी दल । तुरँग – घोड़ा । हाकलूं – हांकूं, चलाऊं । गहतंत – मस्त । दाखै – कहता है । सांमँत – वीर, योद्धा, सामंतसिंह । धीवै – प्रहार कर के, मार कर के । सनाह – कवच । धड़ाळां – (?) । वरघळ – बड़ा छेद । पाड़ूं – संहार कर दूं । वंगाळां – यवन, मुसलमान ।
४८८. वदै – कहता है । किसन – किसनसिंह । वीजळ – तलवार ।
४८९. हंस – प्राण । रतन – रतनसिंह । उतन – जन्मभूमि ।

'अजण' तणौ 'जगतेस' उचारै ।
सेळ असि हरवळां[1] मँझारै ॥ ४८९
किलम सिलहबँध खांडू[2] जस[3] कर[4] ।
प्रचँड किसन चाणूंर तणी पर[5] ।
इण हिज विध[6] 'सुरतेस' 'अखावत' ।
रटै धीर 'अमरावत' रावत ॥ ४९०
कहै 'भीम' सुत दारण 'केहर'[7] ।
रैंवत[8] ओरूं[9] जाडै घूमर[10] ।
घण रवदाळ साबळां घाऊं[11] ।
कहै 'रतन' 'जस' उतन कहाऊं* ॥ ४९१
इण हिज[12] विध[13] कथ कहै[14] उ चारण ।
दुझल 'सुखावत' 'केहर'[15] दारण[16] ।
रैवत[17] वधि ओरूं[18] धिकतै[19] रिण[20] ।
तवै एम 'भगवंत' 'भाऊ'[21] तण ॥ ४९२

---

१ ख. हरवले । २ ख. ग. पांडू । ३ ख. ग. जुध । ४ ख. ग. करि । ५ ख. ग. परि । ६ ख. ग. विधि । ७ ख. ग. केहरि । ८ ख. रेवंत । ग. रेवंत । ९ ख. ग. वोरू । १० ख. घूंमरि । ग. घूमरि । ११ ख. घांवू । घांवू ।

*यह पंक्ति ख. तथा ग. प्रतियोंमें निम्न प्रकार है—
'वीजळ हाथ लग जां वजावूं ।'

१२ ग. हीज । १३ ख. ग. विधि । १४ ख. ग. करै । १५ ख. ग. केहरि । १६ ख. दारुण । १७ ख. रेवंत । ग. रेवत । १८ ख ओरु । ग. ओरू । १९ ख. ग. धिषतै । २० ख. ग रण । २१ ग. भावू ।

---

४८९. अजण – अर्जुनसिंह । जगतेस – जगतसिंहका वंशज । हरवळां – हरावल । मँझारै – मध्यमें ।

४९०. सिलहबँध – अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित । चाणूंर – कंसका पहलवान जिसका श्रीकृष्णने वध किया ।

४९१. भीम – भीमसिंह । केहर – केसरीसिंह । रैंवत – घोड़ा । जाडै घूमर घने दलमें । साबळां – भालों । घाऊं – संहार करूं ।

४९२. दुझल – वीर । सुखावत – सुखसिंहका पुत्र । केहर – केसरीसिंह । दारण – जबरदस्त । वधि – बढ़ कर, जोशमें आ कर । धिकतै – प्रज्वलित । रिण – युद्ध । तवै – कहता है । भगवंत – भगवतसिंह । भाऊ – भाऊसिंह ।

जड़कूं सेल जैतखँभ जेहै[1] ।
असि असवार कहै[2] चित्र एहै[3] ।
'भूप' कहै सुत 'देव' सुभेवौ[4] ।
काढ़ू देव दांणवां[5] केवौ[6] ॥ ४९३

खग भट 'विलँद' थटां परि[7] खेलूं ।
असुरां नारँग ताळ उभेलूं ।
कह[8] 'जैसिंघ'[9] 'सिंभु'सुत[10] इम कथ ।
भुज-लग भट विहँडूं खळ भारथ ॥ ४९४

विहँड[11] खळां वह[12] स्रोण[13] वहाऊं ।
पत्र भरि भरि[14] काळिका धपाऊं ।
'रांम' सुतन[15] वोलै[16] 'सिंघ[17] राजड़[18]' ।
घण खग हाथळ वहूं त्रविध[19] घड़ ॥ ४९५

मारूं 'भैरव' सुतण महावळ[20] ।
'वैरौ'[21] वोलै[22] तोले[23] वीजळ[24] ।
मेळूं असि घूंमर मुगळांणां ।
करूं निहाव घाव[25] केवांणां ॥ ४९६

---

१ ख. ग. जेही । २ ख. ग. रहै । ३ ख. एही । ग. ऐहीं । ४ ग. सुभेवो । ५ ख. दांणवो । ६ ख. केवो । ७ ख. सिरि । ग. सिर । ८ ख. ग. कहै । ९ ग. जेसिंघ । १० ख. सिंभूसुत । ११ ग. विहंडि । १२ ख. वोहो । ग. वोहो । १३ ख. श्रोणि । ग. श्राण । १४ ग. भर । १५ ख. ग. सुतण । १६ ख. वोले । ग. सिंघ । १७ ग. वोलै । १८ ग. राज । १९ ख. त्रिवध । ग. त्रिवघ । २० ख. माहावल । ग. महाभड । २१ ख. वैरो । २२ ख. वोले । २३ ख. तोलै । २४ ग. वीजळ । २५ ख. पाव ।

---

४९३. जड़कूं – प्रहार करूं । जैतखँभ – जयस्थंभ । सुभेवौ – श्रेष्ठ, रहस्यपूर्ण, (?) । केवौ – शत्रुता, प्रतिकार, संकट ।

४९४. थटां – दल, सेनाएं । नारँग – रक्त, खून । ताळ – तालाव । उभेलूं – उभड़ा दूं । भुज-लग – तलवार । विहँडूं – मार-काट करूं, ध्वंस करूं । भारथ – भारत, युद्ध ।

४९५ स्रोण – शोणित, खून । धपाऊं – तृप्त कर दूं । सिंघ राजड़ – राजसिंह । हाथळ – शस्त्र-प्रहार (?) । घड़ – सेना ।

४९६ तोले – प्रहार हेतु शस्त्र उठा कर । वीजळ – तलवार । घूंमर – दल । मुगळांणां – मुगलों, यवनों । निहाव – प्रहार । केवांणां – तलवारों ।

घुमर[1] खळां विहंडि खग घाटां ।
झेलूं वहळ खळां खग झाटां ।
विच[2] गळ रंभ वरूं[3] वरमाळां[4] ।
ओयण[5] मझि उभळतां[6] अँत्राळां ॥ ४९७

झाड़ूं[7] खळां[8] सिलहबँध झळहळ ।
दुरदां टिला[9] करूं दांतूसळ[10]
इम चुख-चुख[11] हुय[12] पड़ूं अखाड़ै ।
चंचळ तांम अछर रथ चाड़ै ॥ ४९८

झळहळ खेड़ि[13] विवांणां झोकां ।
सुर हुय[14] इम जाऊं[15] सुरलोकां ।
इम बोलै[16] मेड़तिया[17] अडुर ।
धुर जोधार[18] पुछै[19] पाटोधर ॥ ४९९

चौरँग[20] जिण गिळिया[21] 'चौडावत' ।
औ[22] बोलै[23] 'राजड़' 'किसनावत' ।

---

१ ख. घूंमर । ग. घूमर । २ ख विचि । ३ ख. धरूं । ग. धरौ । ४ ग. वरमालौं । ५ ख. ओघणां । ग. ओयणां । ६ ख. उलझटां । ग. उलभतां । ७ ग. झडू । ८ ख. ग. षगां । ९ ख. टिलां । १० ख. दंतूंसल । ग. दंतूसल । ११ ग. चष चष । १२ ख. होइ । ग. होय । १३ ख. षेडि । ग. षेलि । १४ ख. ग. होय । १५ ख. जांऊ । १६ ख. वोले । १७ ख. मेडतीया । १८ ख. ग. जोधां । १९ ख. ग. पूछै । २० ख. ग. चौरंगि । २१ ख. गिलीया । २२ ख. ओ । २३ ख. वोले ।

---

४९७. घुमर – सेना । विहंडि – ध्वंस करके, संहार करके । वहळ – अपार, बहुत । गळ – कंठ, गर्दन । रंभ – अप्सरा । ओयण – पैर, चरण । मझि – में । उभळतां – बंधते हुए । अँत्राळां – आंतें ।

४९८. दुरदां – द्विरदों, गजों । टिला – टक्कर, आघात । दांतूसळ – हाथीका बाहरका दांत । चुख-चुख – खंड-खंड । पड़ूं – वीरगति प्राप्त हो जाऊं । अखाड़ै – युद्धमें । चंचळ – चपल । तांम – तब । अछर – अप्सरा ।

४९९. विवांणां – विमानों, वायुयानों । मेड़तिया – राठौड़ वंशकी एक शाखा । अडुर – निर्भय । धुर – प्रथम । पाटोधर – राजसिंहासनाधिकारी, राजा ।

५००. चौरँग – युद्ध । (?) । गिळिया – निगल गया । चौडावत – राव चूंडाका वंशज । राजड़ – राजसिंह ।

'राजड़' कहै दळां खदाळां ।
कळह वसँत खेलूं[1] किरमाळां ॥ ५००

इम वोलै[2] जोधा छक ऊजळ[3] ।
'ऊदा' पूछै तांम 'अभैमल' ।
सिरै 'मांन' भड़ 'कांन'[4] समोभ्रम ।
सूरा[5] च्यार दुजा[6] इण हिज[7] सम ॥ ५०१

उचरै[8] पंचां[9] भड़ां अभंगां ।
जुड़ां[10] पांच पंडव[11] जिम जंगां ।
रजवट छक वोलै[12] इम[13] रावत ।
'करणौ'[14] 'भाऊ' सुत कूंपावत[15] ॥ ५०२

जरदैतां ओरे[16] असि जाऊं[17] ।
वजर धजर घण गजर वजाऊं ।
'अभै' तांम पूछै वड रावत ।
सूरवीर कूरम सेषावत ॥ ५०३

---

१ ग. पेलौ । २ ख. वोले । ३ ख. उजल । ग. उझल । ४ ख. कांन्ह । ग. कान्ह । ५ ख. ग. सूर । ६ ख. ग. दूजा । ७ ख. ग. हीज । ८ ख. ऊचरे । ९ ख. पाचां । ग. थांचां । १० ग. जडा । ११ ख. पांडवां । ग. पंडवां । १२ ख. वोले । ग. बोले । १३ ख. ग. वड । १४ ग. करणो । १५ ख. कुंपावत । १६ ख. वोरे । ग. वोरे । १७ ख. जांऊं ।

---

५००. खदाळां – यवनों । किरमाळां – तलवारों ।

५०१. जोधा – राव जोधाके वंशज, राठौड़ोंकी एक उपशाखा । छक – सभा, समूह । ऊदा – राठौड़ोंकी उदावत शाखा । तांम – उन, तत्र । अभैमल – महाराजा अभयसिंह । सिरै – श्रेष्ठ । मांन – मानसिंह । भड़ – योद्धा । कांन – कानसिंह । समोभ्रम – पुत्र । दूजा – दूसरे । सम – समान ।

५०२. जुड़ां – भिड़ जाय । रजवट – क्षत्रियत्व । छक – जोश । रावत – योद्धा । कूंपावत – राठौड़ वंशकी एक उपशाखा ।

५०३. जरदैतां – कवचधारी योद्धाओं । वजर – तलवार । घजर भाला । गजर – प्रहार । वड रावत – महावीर । कूरम – कछवाहा वंश । सेषावत – कछवाह वंशकी एक शाखा ।

लाल तांम बोलै[1] चख लालां ।
ढाहूं खग झाटां गज[2] ढालां ।
काकौ 'लाल' तणौ कळिनारौ[3] ।
इम सुणि[4] बोलै[5] 'विसन' 'अभारौ'[6] ।। ५०४

जवन हरोळ[7] विहँडि मधि जाऊं[8] ।
वीजळ खासा गजां वजाऊं ।
सर सावळ[9] खग खँजर दुसारां ।
पंजर हुवां[10] लड़ूं अणपारां ।। ५०५

पाड़ि[11] घड़ा[12] मुगळांण पठांणां ।
वरि अपछर[13] इम चढ़ूं विवांणां[14] ।
पह[15] जोधांण सुछळ[16] जस पावां[17] ।
इम आंबेर[18] दुरंग अँजसावां[19] ।। ५०६

नरिंद सिखर हर[20] पूछि[21] निवाहर[22] ।
नरूहरा पूछै[23] नर नाहर ।

---

१ ख. वोले । २ ग. गळ । ३ ख. ग. कलनारौ । ४ ग. सुण । ५ ख. वोले । ६ ख. ग. अनारौ । ७ ख. हरौल । ८ ख. जावूं । ९ ग. सावळ । १० ग. हूवां । ११ ग. पाड । १२ ख. ग. घणां । १३ ख. ग. अपछर वरि । १४ ग. विमांणां । १५ ख. ग. पौहो । १६ ख. ग. सुछळि । १७ ख. ग. पाऊं । १८ ख. आंवेर । १९ ख. ग. अंजसाऊं । २० ग. हरि । २१ ख. वूझि । ग. वूझ । २२ ग. निवाहै । २३ ख. ग. पूछे ।

---

५०४. ढाहूं – गिरा दूं, मार दूं । गज ढालां – हाथीके मस्तक ऊपर युद्धके समय धारण कराया जाने वाला उपकरण । काकौ – चाचा । लाल तणौ – लालसिंहका । कळिनारौ – योद्धा, वीर । विसन – विसनसिंह ।

५०५. मधि – मध्यमें, बीचमें । वीजळ... वजाऊं – बादशाहके सवारीके हाथी पर तलवारका प्रहार करूं । सर – तीर । सावळ – भाला विशेष । खँजर – एक प्रकारका छुरा या शस्त्र विशेष । पंजर – शरीर । अणपारां – अपार, असीम ।

५०६. पाड़ि – मार कर । घड़ा – सेना । वरि – वरण कर के । अपछर – अप्सरा । विवांणां – विमानों । सुछळ – श्रेष्ठ युद्ध । आंबेर – आमेर नगर । अँजसावां – गौरवान्वित करूं ।

५०७. नरिंद – नरेंद्र, राजा । सिखर हर – शेखावत (?) । नरूहरा – नरूका शाखाके कछवाह ।

छाक बँवाळ[1] अपछरां[2] छायल ।
अरज कीध 'पदमै' अजरायल ।। ५०७
हरवळ वीच[3] हाकलूं हैमर ।
पार करूं साबळ खळ पिंजर ।
झळहळ वीज[4] रूप खग[5] झाड़ूं ।
पिसण घणां जरदैत पछाड़ूं ।। ५०८
वणि होळिका[6] थंभ जुध वेरां[7] ।
सिर पर वह[8] झेलूं[9] समसेरां ।
धार विहार अणी घट[10] धौरँग ।
चुख-चुख होय पड़ूं रिण[11] चौरँग ।। ५०९
वरूं[12] अपछर[13] चढ़ि कनक[14] विवांणां[15] ।
इम[16] जाऊं[17] सुरिइंद[18] आथांणां ।
भूलि[19] त्रहूं[20] इण विध[21] झाळाहळ ।
मसलत[22] सझ[23] बोलियौ[24] महाबळ ।। ५१०
इम भड़ उरड़ देखि छक ऊजळ[25] ।
अति ग्रब पह[26] धारियौ[27] 'अभैमल' ।

१ ख. वंवाल । २ ख. ग. अपछारां । ३ ख. वीचि । ४ ग. वाज । ५ ग. चप चग । ६ ग. होळका । ७ ग. वेरां । ८ ख. वहौ । ग. वहौ । ९ ख. झेलौ । १० ग. वट । ११ ख. ग. इम । १२ ख. ग. वरू । १३ ख. अछर । १४ ग. क । १५ ख. ग. विमांणां । १६ ख. ग. यम । १७ ख. जांऊं । ग. जाऊ । १८ ख. सुरइंद । ग. सुरियंद । १९ ख. ग. भूल । २० ख. ग. त्रिहूं । २१ ख. ग. विधि । २२ ख. ग. मसलति । २३ ख. ग. मझि । २४ ख. वोलीया । ग. वोलीया । २५ ख. ग. उझल । २६ ख. पौहौ । ग. पोहो । २७ ख. ग. धारीयौ ।

५०७. छाक बँवाळ — महा जबरदस्त । अपछरां छायल — अप्सरा वरण करनेको प्रबल उत्सुक । पदमै — पदमसिंह । अजरायल — जबरदस्त ।

५०८. हैमर — घोड़ा । पिंजर — शरीर । झाड़ूं — प्रहार करूं । पिसण — शत्रु ।

५०९. झेलूं — सहन करूं । विहार — विदीर्ण होकर । अणी — शस्त्रकी नोक या पैना भाग । घट — शरीर । धौरंग — (?) । रिण चौरँग — युद्धस्थल, युद्ध-भूमि ।

५१०. कनक — स्वर्ण, सोना । सुरिइंद — इन्द्र । आथांणां — घर, भवन ।

५११. उरड़ — साहस ।

महाराज अभैयसींघजीरौ वरणण

कहि[1] जिण वार 'अभैमल' केहौ ।
जळधर वांध[2] लियौ[3] लँक जेहौ ॥ ५११
सुपह जांणि प्रगट्यौ[4] तेरह सख ।
जग चख वसि तेरमौ जगाचख[5] ।
जोत[6] वदन उद्योत उजाळा ।
झळहळ नयण तेज मय झाळा[7] ॥ ५१२
सामँद जळाबोळ[8] वप सव्बळ[9] ।
हळाबोळ[10] जळ[11] जोम हिलोहळ ।
वप तप इम दीसै उण वेळा ।
भांण वार[12] चक्र सुद्रसण भेळा[13] ॥ ५१३
उण[14] वाररौ[15] कमंध 'अजावत' ।
'अभौ'[16] जोम इसड़ै[17] दरसावत ।
जदि[18] द्रगपाळ[19] रंक करि जांणै ।
पाहड़[20] दीसै रती प्रमांणै ॥ ५१४
उरस छिवै रस वीर उछाहां ।
साझण काज दिली पतिसाहां ।

---

१ ख. ग. कहे । २ ख. वांधि । ग. वांधि । ३ ख. लीये । ग. लियै । ४ ख. ग. प्रगटौ । ५ ख. जगचष । ग. जगचषि । ६ ख. ग. जोति । ७ ग झीळां । ८ ख. जळावोल । ९ ख. सव्वल । १० ख. हळावोल । ग. हलोपाळ । ११ ख. जम । ग. जग । १२ ख. वार । १३ ख. वेला । १४ ख. ऊण । १५ ग. रो । १६ ख अभौ । १७ ग. इसडौ । १८ ख. ग. जगि । १९ ख. द्रिगपाल । २० ख ग. पाहाड ।

---

५११. जळधर – समुद्र । लंक – लंका ।

५१२. सख – शाखा । उद्योत – प्रकाश । झाळा – आग ।

५१३. जळाबोळ – जलपूर्ण । वप – शरीर । सव्बळ – वलवान । हळाबोळ – अपार, वहुत, जोश । हिलोहळ – समुद्र । तप – तेज, कांति । भांण – भानु, सूर्य । वार – वारह । चक्र सुद्रसण – सुदर्शन चक्र ।

५१४. द्रगपाळ – दिक्पाल । रती – रक्तिका, वहुत छोटे ।

५१५. साझण – सफल करनेको ।

तपत बांण[1] कीधौ हर[2] तांणिक ।
वांमी - बंध एरसै वांणिक ।। ५१५
गुण कवि[3] इकठा[4] इक लग[5] गावै ।
'अभौ' तदिन दीठां वणि आवै ।
घण छक इसाहूंत पौरिस[6] घण ।
तोले खग वोलौ[7] 'अजमल'तण ।। ५१६

महाराजा अभैसींघजीरौ जोस

बूतौ[8] किसूं निबाव तणौ[9] बळ[10] ।
दळ सझि मोसूं[11] करै दमंगळ ।
जूटै मूझहूंत उण दिन जिम ।
अठ पतिसाह ग्रहै[12] जैचंद इम ।। ५१७
आसँग[13] करे[14] खाग ऊछाजै[15] ।
भिड़ियां[16] मुगळ भिड़ै[17] का[18] भाजै ।
मारे[19] दळ सह[20] गिरद मिळाऊं ।
लूटे[21] रखत अराबा लाऊं[22] ।। ५१८
असुर तणौ दळ बळ ऊखेलूं[23] ।
भिसत काय जमद्वारां[24] भेळूं[25] ।

---

१ ख. वांण । २ ख. ग. हरि । ३ ग. किवि । ४ ख. ग. कठा । ५ ख. ग. एकलग । ६ ख. पौरसि । ग. पारस । ७ ख. वोले । ग. वोले । ८ ख. ग. वूतौ । ९ ख. नवावतणै । ग. नवावतणै । १० ख. वल । ११ ग. मोसौ । १२ ख. ग्रहूं । १३ ग. आसंग । १४ ख. घरै । ग. घरे । १५ ख. उछाजै । १६ ख. भिडीया । १७ ख. ग. मरै । १८ ख. ग. काय । १९ ग. मारै । २० ख. सौहौ । ग. सोहौ । २१ ख. लूटे । ग. लूटै । २२ ख. लांऊं । ग. लाउ । २३ ख. अुषेलूं । २४ ख. ग. ध्रमद्वारां । २५ ख. भेलूं । ग. भेलू ।

---

५१५. वांमी वंध – राठौड़ । एरसै – ऐसे । वांणिक – शोभा, कांति ।
५१६. इकलग – लगातार, निरन्तर । घण छक – समूह ।
५१७. वूतौ – शक्ति, वल, सामर्थ्य । दमंगळ – युद्ध । जूटै – भिड़े, टक्कर लें ।
५१८. आसँग – साहस, वल । ऊछाजै – उठावे । का – या, अथवा । रखत – धन-दौलत, द्रव्य । अराबा – तोपादि, युद्ध-उपकरण ।
५१९. ऊखेलूं – उन्मूलन करदूं । भिसत – भिश्त, स्वर्ग । भेळूं – मिला दूं, भेज दूं ।

औ कहि असुर न दिया[1] अराबां* ।
औहिज[2] दिये[3] करां[4] तजि आबां ॥ ५१९

वदै असुर गढ़ न दूं[5] वरग्गां ।
कूंची दे आपरा करग्गां[6] ।
असुर कहै मिळबा[7] नह[8] आवां ।
पड़ै आप[9] समहौ निज पावां ॥ ५२०

इण विध[10] त्रहुंवै[11] टेक उतारूं[12] ।
असुर 'विलँद' तदि[13] जीव उबारूं ।
एम असुर ध्रमद्वार चेलाऊं[14] ।
जीप[15] गुजरधर अमल जमाऊं[16] ॥ ५२१

इण विध[17] करूं कहै 'अभपत्ती'[18] ।
सेवग[19] तौ[20] अंबका[21] संगत्ती[22] ।
धणी वयण[23] संभळ[24] इम धारण ।
दूणै जोम[25] चढ़ै भड़ दारण ॥ ५२२

---

१ ग. दिउ ।

* यह पंक्ति ख. प्रतिमें नहीं है ।

२ ग. ओहिज । ३ ख. ग. दियै । ४ ख. ग. सुकरां । ५ ख. द्यूं । ग. द्यो । ६ ग. करगां । ७ ख. ग. मिलवा । ८ ग. नहि । ९ ख. सांम्हौ । ग. सांमौ । १० ख. ग. विधि । ११ ख. ग. तूहुवै । १२ ख. ग. उतारौ । १३ ख. तदि । ग. तब । १४ ग. चलाउ । १५ ख. ग. जीपि । १६ ग. जमाउ । १७ ख. ग. विधि । १८ ख. अभपती । ग. अभपत्ति । १९ ग. सेवक । २० ख. तौ । ग. तो । २१ ख. अंविका । ग. अवका । २२ ख. सकती । ग. सकत्ती । २३ ख. ग. वचन । २४ ख. सांभलि । ग. सांभल । २५ ख. जोमि । ग. जोम ।

---

५१९. आवां – पानी ।

५२०. वरग्गां – शत्रुओं (?) । करग्गां – हाथोंसे । समहौ – सम्मुख ।

५२१. त्रहुंवै – तीनों । टेक – प्रतिज्ञा । जीप – जीत कर, विजय कर ।

५२२. वयण – वचन ।

महाराजा अभैसींघजीरौ सेनामें भासण तथा सूरवीरां धरम समझाणौ

सुभड़ां[1] पह[2] खत्रवाट सिखावै ।
सूरां धरम कहै[3] समझावै ।
ग्रंथ विनोद वीर[4] गुण गायक ।
विसवामित्र[5] राज - रिख वायक ॥ ५२३

अलप आव[6] जिणहूंत[7] न होई ।
कळजुग[8] मध[9] असमेध[10] न कोई[11] ।
वदियौ[12] सिख जोड़े[13] कर वायक ।
नासत किम आसत[14] रिखनायक ॥ ५२४

विसवामित्र[15] वोलियौ[16] मुनिवर ।
उण[17] संदेह मेट[18] प्रत - उत्तर[19] ।
सझि दुय[20] फौज[21] आहुड़ै[22] सूरा ।
पतिचै कांम स्यांमध्रम[23] पूरा ॥ ५२५

धारै पग सांमा[24] सुणि त्रँब[25] धुनि ।
पग पग जिग[26] असमेधतणौ[27] पुनि ।
सिख[28] वळि रिख पूछै बुधि[29] साजा ।
तपसी सिध[30] सूरहूंत राजा ॥ ५२६

---

१ ख. सुभडा । ग. सुभटां । २ ख. पौहो । ग. पौह । ३ ख. कहे । ४ ग. वीज । ५ ख. ग. विसवामित्र । ६ ख. आयु । ७ ख. ग. तिणहूंत । ८ ख. कलियुग । ग. कळिजुग । ९ ख. मझि । ग. मध्ये । १० ख. अस्वमेध । ग. अश्वमेध । ११ ग. कोइ । १२ ख. वदीयौ । ग. वदियो । १३ ख. जोडे । ग. जोडै । १४ ख. ग. आसति । १५ ख. ग. विश्वामित्र । १६ ख. वोलीयौ । ग. वोलीयो । १७ ख. ऊण । १८ ख. ग. मेटण । १९ ख. ग. प्रतिऊत्तरि । २० ख. दोय । ग. दोय । २१ ग. फोज । २२ ग. आहूडै । २३ ग. सांमध्रम । २४ ख. साम्हां । २५ ख. त्रंब । ग. त्रंबा । २६ ख. जिम । २७ असमेदतणो । २८ ख. सिषि । २९ ख. ग. वुधि । ३० ख. सिद्ध ।

---

५२३. सुभड़ां – योद्धाओं । खत्रवाट – क्षत्रियत्व । राज-रिख – राजर्षि । वायक – वाक्य, वचन ।

५२४. अलप आव – अल्पायु । असमेध – अश्वमेध । वदियौ – कहा । नासत – नास्ति, अभाव । आसत – शक्ति, वल, सत्ता ।

५२५. प्रत-उत्तर – प्रत्युत्तर । आहुड़ै – भिड़ते हैं, युद्ध करते हैं ।

५२६. त्रँब – नगाड़ा । धुनि – ध्वनि, आवाज । जिग – यज्ञ । रिख – ऋषि ।

इम रिख[1] सिखहूं तांम उचारा ।
धुर खत्र मारग खंडा धारा ।
विधि सिख सुणि रिज कहै करूं[2] विध[3] ।
सूर जोड़ न हुवै तपसी सिध ॥ ५२७

अंग तपसी सुख कारण आपै ।
तप पँच अगनि[4] धूमरा तापै ।
भुजँग घोख साझै[5] तप भारी ।
धारै मूनि[6] वरध[7] कर[8] धारी ॥ ५२८

थाटेसरी[9] अकास मुनी[10] थट ।
जळ सझि[11] करै वधारै नख जट ।
जोबन[12] हूं[13] तरण[14] (णी) तज[15] जावै[16] ।
छोडि अवास[17] गिरां मझि छावै ॥ ५२९

सीत घांम दुख व्रखा सहाये[18] ।
अनि[19] तजि[20] कंदमूळ[21] खणि[22] खाये[23] ।
दुख अनेक इम तन मझि दाझै ।
सुख आगिला[24] जनम कजि साझै ॥ ५३०

---

१ ख. रिषि । २ ख. ग. कहूं । ३ ख. ग. विधि । ४ ग. अग्नि । ५ ग. साजै । ६ ख. ग. मुनि । ७ ख. उरध । ग. करध । ८ ग. क । ९ ख. थाढेसरी । ग. थांढेसरी । १० ख. मूंनि । ग. मुनि । ११ ग. सजि । १२ ख. जोवन । ग. जोवम । १३ ख. ग. हूंत । १४ ख. ग. तरणि । १५ ख. ग. तजि । १६ ख. ग. जांवें । १७ ग. आवास । १८ ख. सहाए । ग.सहाऐ । १९ ख. ग. अन । २० ग. तज । २१ ग. मूलकंद । २२ ग. पनि । २३ ख. षाए । ग. षाऐ । २४ ग. आगला ।

---

५२७. तांम – तव । जोड़ – समान, बराबर ।

५२८. धूमरा – अग्निका । भुजँग घोख – भुजाओं और शरीरको झुका कर (?) । साझै – सिद्ध करता है, सफल करता है ।

५२९. थाटेसरी – वैभवशाली । जट – जटा, केस । तरण – युवा स्त्री, तरुणी । छावै – निवास करे ।

५३०. सीत – सर्दी । घांम – उष्णता । व्रखा – वर्षा । अनि – अन्न, अनाज । खणि – खोद कर । तन – शरीरमें । आगिला – आने वाला ।

कळहणि[1] सूर सांमरै कारण[2] ।
ऽवै[3] सुख[4] तजै पलक मझि आरण[5] ।
सूरां तेज इसौ[6] दरसावै ।
इण विध[7] तपसी जोड़ न आवै ॥ ५३१

सिख सिध सूर कही समताई ।
विध[8] सुणि सुजि सूरमां[9] वडाई ।
भय मन[10] काळ तजै नर भोगां ।
जम नेमादि सझै अठजोगां[11] ॥ ५३२

प्रथम करै आसण[12] पदमासण[13] ।
प्रगट असट[14] त्रण[15] अवर प्रगासण[16] ।
पूरक कुंभ करै[17] चक पूरै ।
धारण अनिल[18] चढ़ै[19] मग धूरै ॥ ५३३

विखम क्रिया[20] विखमी साधन वक्र ।
चौके[21] पंचभेदवे खट-चक्र ।

---

१ ख. कलहण । २. ख. कारणि । ३ ख. वे । ग. वि । ४ ग. सुखे । ५ ख. आरणि । ६ ग. यसो । ७ ख. ग. विधि । ८ ख. ग. विधि । ९ ख. ग. सूरिमां । १० ख. ग. मनि । ११ ग. अट्ठजोगां । १२ ग. आसण । १३ ग. पदमासन । १४ ख. अस । ग. असी । १५ ग. तृण । १६ ख. ग. प्रकासण । १७ ख. करे । १८ ख. अनल । १९ ख. ग. धरै । २० ग. क्रीया । २१ ख. चोकै । ग. चौकै ।

---

५३१. कळहणि – युद्धमें । सांमरै – स्वामीके । कारण – लिए । आरण – युद्ध ।

५३२. समताई–समानता । सूरमां – वीरों । वडाई – महानता । भोगां – भोग-विलास । जम नेमादि – यमनियमादि । अठजोगां – आठ प्रकारके योग, अष्ट योग ।

५३३. पदमासण – योगका एक आसन विशेष, पद्मासन । प्रगासण – प्रकाशन । पूरक – प्राणायाम विधिके तीन भागोंमेंसे प्रथम भाग जिसमें श्वासको नाकमें खींच कर अंदर ले जाते हैं अथवा योग विधिसे नाकके दाहिने नथुनेको बंद कर के बायें नथुनेसे श्वासको भीतरकी ओर खींचना । कुंभ – प्राणायामका एक भाग जिसमें श्वास लेकर वायुको शरीरके भीतर रोक रखते हैं, यह क्रिया पूरकके बाद की जाती है, कुंभक । चक पूरै – (पूरा करें ?) । अनिल – वायु, हवा । मग – मार्ग । धूरै – ध्रुव अटल ।

५३४. विखम क्रिया – विषम क्रिया । खट चक्र – शरीरके भीतर कुंडलिनीके ऊपरके छः चक्र, यथा : १. आधार, २. स्वाधिष्ठान, ३. मणिपूर, ४. अनाहत, ५. विशुद्धि और, ६. प्रज्ञा ।

वंकीनाळि चढ़ावै वाटां[1] ।
घण अटकै[2] हीरामण[3] घाटां ।। ५३४
तिल हिक[4] अमख कपाट सतूटै[5] ।
छेदे तास गयण मग[6] छूटै ।
झीणै[7] तँत[8] जिम नाद झणंकै ।
भमर गुंजारउ[9] सबद[10] भणंकै ।। ५३५
असट[11] पँखी पँख सहँसह[12] आवै ।
दीपत परमहंस दरसावै ।
सरसति जमना[13] गंग त्रवेणी ।
त्रहुंवै[14] उलटी[15] वदै[16] त्रिवेणी[17] ।। ५३६
जगमग जोति उदोत[18] जगासै[19] ।
पच्छिम[20] दिसा भांण परकासै[21] ।
अंगुस्ट[22] जोति भूंह[23] आथांणै ।
ऽवा[24] मूरत[25] दिव्य[26] नयणां आंणै[27] ।। ५३७

---

१ ख. ग. वाढ़ां । २ ख. हटकै । ३ ख. हीरामणि । ४ ख. ग. हेक । ५ ख. सूतूटै । ग. सुतूटै । ६ ख. ग. मझि । ७ ख. ग. झीण । ८ ख. ग. तंति । ९ ख. ग. गुंजारव । १० ख. ग. सवद । ११ ख. ग. अष्ट । १२ ख. सहसह । ग. सहस । १३ ख. जिमनां । ग. जमनां । १४ ख. ग. त्रिहुवै । १५ ग. उलटि । १६ ख. ग. वहै । १७ ग. त्रीवेणी । १८ ग. उदोति । १९ ख. ग. उजासै । २० ख. ग. पछिम । २१ ख. परगासै । २२ ख. ग. अंगुष्ट । २३ ख. ग. भौह । २४ ख. ग. वा । २५ ख. ग. मूरति । २६ ख. ग. दिव्द । २७ ख. आवै ।

---

५३४. वंकीनाळि – शरीरकी एक नाड़ी, साधुओंकी बोलचालमें सुषुम्ना नाड़ी जो मध्यमें मानी गई है ।

५३५. हिक – एक । अमख – (?) । झीणै – अत्यन्त महीन । तँत – वाद्यका तार । झणंकै – ध्वनिमान हो । गुंजारउ – गुंजन ।

५३६. असट पँखी – अष्ट पंखड़ीयुक्त । वि० वि० – राजस्थानीमें योग और तंत्रमें माने जाने वाले अष्टकमल जिन्हें हिन्दीमें षट्चक्र ही मानते हैं । राजस्थानीके अनुसार अष्टकमल या अष्टचक्र निम्नलिखित हैं—१. अनाहत, २. आज्ञाचक्र, ३. ब्रह्मरंध्र, ४. भंवरगुफा, ५. मणिपुर, ६. मूलाधार, ७. विशुद्ध, ८. स्वाधिष्ठान । सहँसह – सहस्रार । परमहंस – वह सन्यासी या महात्मा जो ज्ञानकी परमावस्थाको पहुंच गया हो अर्थात् सच्चिदानंद मैं ही हूं इसका पूर्ण रूपसे जिसे अनुभव हो गया हो । त्रवेणी – हठ योगके अनुसार इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना इन तीनों नाड़ियोंका संगम-स्थान ।

५३७. जगासै – प्रकाशमान करें । भाण – सूर्य ।

भमर-गुफा मझि रमै तजै भ्रम ।
जीतै निंद्रा त्रिकुटी संजम ।
मन मोहणी नागणी मारै ।
स्रवै तांम अम्रत[1] तत[2] सारै ।। ५३८

जदि त्रख[3] खुधा दहूं[4] मिट[5] जावै[6] ।
लगै समाधि रहै चित[7] लावै[8] ।
अगा तंस अर अंस अगाता ।
मद विण[9] इम घूमै[10] मदमाता ।। ५३९

जरा[11] काळ कोयक[12] दिन जीतै* ।
वय[13] औपर[14] वीतां दिन वीतै ।
वरस लक्खि[15] इम जोम[16] वधाए ।
जोगी तरै सुरग पुर[17] जाए[18] ।। ५४०

करै कळाप[19] जीववा कारण ।
धारै कठण जुगत[20] इम धारण ।
माया झपट[21] करै विच[22] माहै ।
जुगति सको है[23] वीर[24] हि जाहै[25] ।। ५४१

---

१. ख. ग. अमृत । २ ख. ग. तन । ३ ख. विष । ग. त्रिष । ४ ग. दुहू । ५ ख. ग. मिटि । ६ ख. ग. जायै । ७ ख. ग. लव । ८ ख. ग. लायै । ९ ख. विणि । १० ख. घूमैं । ११ ख. ज्वुरा । ग. जुरा । १२ ख. कोइक ।

* ग. प्रतिमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है—

'जुरा काळ कढ़ि कोइ न जीतैं ।

१३ ख. वष । ग. वप । १४ ख. आर्षार । ग. आपरि । १५ ख. ग. लष्य । १६ ख. जोग । १७ ग. पूरि । १८ ग. जायै । १९ ख. ग. कलाप । २० ख. ग. जुगति । २१ ख. झप । ग. झपटि । २२ ख. विधि । ग. विचि । २३ ख. वै । ग. बै । २४ ख. ग. ठीर । २५ ख. ग. हिजाए ।

---

५३८. भमर-गुफा – योगके आठ कमलोंमेंसे एक । त्रिकुटी – दोनों भौंहोंके बीच कुछ ऊपरका स्थान । संजम – संयम । मन…मारै – मनको मोहित करने वाली माया-रूपी नागिनको मार डाले ।

५३९. त्रख – तृषा । खुधा – क्षुधा, भूख । मद – नशा ।

५४०. जरा – वृद्धावस्था । वय – आयु ।

५४१. कळाप – परिश्रम, यत्न ।

इसी[1] रीत[2] सिध[3] आदि[4] अनादा ।
जोगेसां लालच तन जादा ।
सूर जिकौ[5] पति छळ[6] घमसांणै ।
जीरण वसत्र[7] जिहीं[8] तन[9] जांणै ॥ ५४२

रखतां कठण जुगत[10] अंतराभै ।
लख वरसां स्त्रग[11] जोगी लाभै ।
औ[12] स्त्रुग[13] धणी सुछळ[14] भड़ आवै ।
पलक मांहि सूरौ स्त्रग[15] पावै ॥ ५४३

इम सूरौ पति धरम इरादा ।
जोगेसरां[16] सिधांहूं जादा ।
लड़ै नचित[17] लोह नह लागै ।
जिकौ[18] सूर तपसी सम जागै ॥ ५४४

अणभँग लागां लोहां आवै ।
सूर जिकौ[19] सिध पर[20] दरसावै[21] ।
सूर अनेक लोह बहि[22] साहै[23] ।
महा[24] अचेत पड़ै रिण[25] माहै[26] ॥ ५४५

---

१ ग. यसी। २ ख. ग. रीति। ३ ख. ग. सिधि। ४ ग. करै। ५ ख. तिको। ग. जिको। ६ ख. ग. छळि। ७ ख. ग. वस्त्र। ८ ख. जहीं। ग. जिही। ९ ग. तम। १० ख. ग. जुगति। ११ ख. श्रुग। ग. श्रुगि। १२ ख. ग. श्रो। १३ ख. श्रुग। ग. श्रुगि। १४ ख. ग. सुछलि। १५ ख. ग. षग। १६ ख. जोगेस्वरां। ग. जोगेसुरां। १७ ख. निचंत। ग. निंचित। १८ ख. ग. जिको। १९ ख. जिको। २० ख. ग. सम। २१ क. दसरावै। २२ ख. ग. वहि। २३ ख. ग. साहे। २४ ख. माहा। २५ ख. रण। २६ ख. माहे।

---

५४२. अनादा – अनादिकालसे। जोगेसां – योगीशों। जादा – ज्यादा। छळ – लिए, निमित्त। घमसांणै – युद्धमें। जीरण – पुराना, जीर्ण। वसत्र – वस्त्र। जांणै – समझते हैं।

५४३. धणी – स्वामी। सुछळ – निमित्त, लिए। सूरौ – शूरवीर। स्त्रग – स्वर्ग।

५४४. जोगेसरां – योगीश्वरों। जिकौ – वह।

५४५. अचेत – मूर्च्छित, संज्ञा-शून्य। पड़ै – वीरगतिको प्राप्त होता है। माहै – में।

इम रिणहूंत[1] अचेत उठावै ।
कायम जीवतसिभ[2] कहावै ।
भिड़ि[3] पति सुछळि पड़ै गज भारां ।
साचै जीव[4] ऊजळा[5] सारां[6] ।। ५४६

नर सुर अहि उण जोड़ न कोई ।
सिध तपसी उण उरै सकोई ।
सुरईंदहूंत[7] अधिक सरसावै[8] ।
दईवतणौ[9] नायब दरसावै ।। ५४७

सिखहूं[10] रिख इम कहै सकाजा ।
रटै[11] भड़ांहूंता तिम राजा ।
सूरां धरम सीख[12] सँभळाहे[13] ।
स्रीमुख हुकम कियौ खग साहे ।। ५४८

चित मो उछव[14] अेण[15] विध[16] चाहूं[17] ।
वधि[18] वधि खाग स्रीहथां वाहूं[19] ।
देखूं[20] हाथ आज दइवांणां ।
किसड़ा एक[21] तुटौ[22] केवांणां ।। ५४९

---

१ ख. ग. रणहूंता । २ ख. ग. सिभु । ३ ख. ग. भिड । ४ ख. जीवि । ५ ग. उजळा । ६ ग. सारं । ७ ख. सुरिइंदहूंत । ग. सुर्यरिद । ८ ख. दरसावै । ९ ग. दइवतणो । १० ग. सिखहीं । ११ ख. रटै । १२ ग. साष । १३ ख. संभलाहे । १४ ख. ग. उछव । १५ ग. एजि । ग. एण । १६ ख. ग. विधि । १७ ग. चाहीं । १८ ग. विधि विधि । १९ ग. वाहां । २० ग. देपो । २१ ख. इक । २२ ख. जूटौ । ग. जूटो ।

---

५४६. कायम – अटल, दृढ़ । जीवतसिभ – युद्ध-भूमिमें शस्त्र-प्रहारोंसे घायल हो कर जीवित रहने वाला वीर । भिड़ि – युद्ध कर के । सुछळि – युद्धमें, लिए । गज भारां – हाथी-दल । सारां – तलवारों ।

५४७. उरै – इस ओर । सकोई – सब । सुरईंद – इन्द्रसे, सुरेन्द्रसे । सरसावै – प्रसन्न रहे । दईवतणौ – ईश्वरका ।

५४८. सिखहूं – शिष्यसे । सँभळाहे – सुना कर । स्रीमुख–स्वयं । साहे – धारण कर के ।

५४९. वधि वधि – बढ़-बढ़ कर । वाहूं – प्रहार करूं । दइवांणां – वीरों । केवांणां – तलवारों ।

रवि रथ थांभि[1] विलोकै राजा ।
सो[2] आपरा जोध सिरताजा ।
दे दे पाव गजां दांतूसळ[3] ।
वाघां[4] जेम चढ़ां वीजूजळ ॥ ५५०

ग्रहै[5] जँगी हवदां अवगाढ़ां ।
जवनां हियै[6] जड़ां जमदाढ़ां ।
धड़ मीरजां वंधि इम धांखां[7] ।
नट किलकिला[8] चौंड[9] जिम नांखां ॥ ५५१

कीरत[10] सारौ जगत कहेसी[11] ।
रवि[12] ससि जेतै नांम रहेसी[13] ।
समर[14] सिरै चढ़ियां[15] सारीसौ ।
आच कँकण केहौ आरीसौ ॥ ५५२

भाळै[16] जोम पूर इण भत्ती ।
पौ तारिया[17] भड़ां 'अभपत्ती' ।
करि मुजरा बाहुड़ै करारा ।
सिलह करण आया भड़ सारा ॥ ५५३

---

१ ग. थंभि । २ ख. तैं । ग. तो । ३ ख. ग. दंतूसळ । ४ ग. वाघां । ५ ख. ग्रहे । ६ ख. हीये । ७ ख. धापां । ग. धोपां । ८ ग. किलाकिला । ९ ख. ग. चोट । १० ख. ग. कीरति । ११ ग. कहैसी । १२ ख. रसि । १३ ग. रहैसी । १४ ग. समरि । १५ ख. ग. चढ़ीयौ । १६ ख. ग. भाले । १७ ख. तांरीयां । ग. तारीयां ।

---

५५० थांभि – रोक कर । विलोकै – देखे । दांतूसळ – हाथीके वाहरका दांत । वीजूजळ – तलवार ।

५५१. हवदां – हौदों । अवगाढ़ां – वीरों । हियै – हृदय, वक्ष-स्थल । जड़ां – प्रहार करें । मीरजां – यवनों । वधि – संहार कर, वध कर ।

५५२. कीरत – कीर्ति । सारौ – सब । सारीसौ – समान । आच – हाथ । आरीसौ – दर्पण, आरसी ।

५५३. भाळै – देखता है । जोम – जोश । इण भत्ती – इस प्रकार । पौ – योद्धा । मुजरा – अभिवादन । बाहुड़ै – वापिस लौटे, मुड़े । सिलह – कवच, अस्त्र-शस्त्र ।

जोधारांरी तयारीरी वरणण

कवित्त[1]—इम सलाह करि 'अभै', हुकम दीधा हुजदारां ।
करौ वेग[2] ताकीद[3], जंग साजति जोधारां ।
ठाह[4] ठाह ठहरिया[5], कांम अति कांमागारां[6] ।
मँडिया[7] झड़ रूप में[8], ससत्र[9] खटतीस समारां ।
ऊससै कमँध लागै उरसि[10], रोजा चढ़ियौ[11] वीररस ।
उण वार लोह मुंहगौ[12] हुवौ, सोनाही हूंता सरस ।। ५५४

पमँग गजां पाखरां, जँगी हवदां[13] समरीजै ।
चाठां[14] वगतर चढ़ै, कूंत अणियां[15] काढ़ीजै ।
फेरै वाढ़[16] झळाळ[17], काळ[18] जमदढ़ केवांणां ।
तूटै दमँग[19] अताळ, झाळ छूटै[20] खुरसांणां ।
हमगीर करण जुध[21] हैमरां, धोम अरावां धरहरै ।
चिलतह[22] छतीस[23] आवध[24] चुरस, कुळ छतीस राजस[25] करै ।। ५५५

---

१ ख. ग. कवित्त छप्पै । २ ख. ग. वेगि । ३ ग. ताकीस । ४ ग. ठांम ठांम । ५ ख. ठहरीया । ६ ख. कामागारां । ग. कामांगारां । ७ ख. मंडीया । ८ ख. ग. मै । ९ ख. ग. सस्त्र । १० ख. उरस । ११ ख. चढ़ीयौ । १२ ख. मुंगो । ग. मूहगो । १३ ग. होदा । १४ ग. चाढ़ां । १५ ख. अणीयां । १६ ख. वाट । १७ ग. झळाहल । १८ ख. काल । १९ ग. दमंगल । २० ग. छटै । २१ ख. ग. गज । २२ ख. चिलत । २३ ख. छहतीस । २४ ख. आवधा । २५ ख. ग. साजति ।

---

५५४. हुजदारां – (?) । वेग – शीघ्र, जल्दी । ठाह ठाह – स्थान-स्थान । कांमागारां – काम करने वाले । ऊससै – जोशमें आते हैं । मुंहगौ – महंगा । सरस – वढ़ कर, श्रेष्ठ ।

५५५. पमँग – घोड़ा । पाखरां – घोड़ा या हाथीका कवच । कूंत – भाला । वाढ़ – तलवारादि शस्त्रका पैना भाग । झळाळ – चमकयुक्त तेज । दमँग – अग्निकण । अताळ – तेज । खुरसांणां – शस्त्र पैना करनेका औजार, शान । हैमरां – घोड़ों । धोम – अग्नि, धूंआ । अरावां – तोपों । धरहरै – ध्वनि करती हैं । आवध – आयुध । चुरस – श्रेष्ठ ।

गँज सीसा घण गळै[1], भरै सच्चाळ[2] भरारां ।
गंज पड़ै गोळियां[3], विखम गोळां विसतारां[4] ।
नसतर धर नायकां, मिळै पायकां समेळा ।
मेवा जेसळ मिळै, ऊर[5] रूपा[6] सम चेळा ।
तूजियां[7] जेब[8] कीजै तई, धांनंखी[9] चिल्ला[10] धरै ।
इण भांत[11] थटां 'अभमाल'रा, कुळ छतीस साजत करै ॥ ५५६

वळ काढ़िजै[12] गांसियां[13], परां चाढ़िजै[14] पँखाळां ।
वाढ़ अणी करि वलक[15], आब[16] कीजै अणियाळा[17] ।
बंध[18] वँदूकां[19] बंध[20], धुपं छौळां[21] जळधारां ।
दियै[22] फूल दारुवां, रजिक[23] पाड़िजै[24] अपारां ।
छजि[25] फूल वाढ़[26] खँजरां छुरां, धारै अणियां[27] धजधरै[28] ।
इण भांत[29] थटां[30] 'अभमाल'रा, कुळ छतीस साजत[31] करै ॥ ५५७

---

१ ख. लगै । २ ख. सचालां । ग. संचाळ । ३ ख. गोलीया । ४ ग. वसतारां । ५ ख. तुरस । ग. चुरस । ६ ग. रूपी । ७ ख. तूजीया । ८ ख. जेव । ग. जेम । ९ ख. धात्रकी । ग. धाम्नकी । १० क. चित्ता । ११ ग. भांति । १२ ख. काढ़ै । ग. काटै । १३ ख. गांसीयां । ग. गांसियां । १४ ख. चाढ़जै । ग. चाढ़जे । १५ ग. वळक । १६ ख. ग. ओप । १७ ग. अणीयाळां । १८ ख. वंध । १९ ख. वदूकां । २० ख. वंधै । ग. वंधै । २१ ग. छोळ । २२ ख. ग. दीयै । २३ ख. ग. रंजक । २४ ख. पाडीजै । ग. पाडजै । २५ ख. छलि । ग. छजि । २६ ग. वाट । २७ ख. अणीयां । २८ ख. धज्जरै । ग. झझरै । २९ ख. भांति । ३० ग. थट । ३१ ख. ग. साजति ।

---

५५६. नसतर = नश्तर – चीर-फाड़ करनेका औजार विशेष जिसका अगला भाग नुकीला होता है और प्रायः इसके दोनों ओर धार होती है। नायकां – मरहमपट्टी करने वाले। तूजियां – धनुष। धांनंखी – धनुषधारी योद्धा। चिल्ला – धनुषकी प्रत्यंचा। थटां – दलों।

५५७. वळ – ऐंठन। गांसियां – तीरका अग्र भाग। पँखाळां – पर वाले, सपंख, तीरों, वाणों। वाढ़ – शस्त्रका पैना भाग। वलक – (?)। आब – चमक। अणियाळां – भालों। फूल – तलवार (?)।

हूनरवंधां[1] हुनर[2], घणी तिण दिन मुंहगाई[3] ।
चत्र रुपियां[4] चौवधी[5], जँगम खुरताळ जड़ाई ।
वगसै[6] मोलकबांण[7], करै तदि चाक कवांणां ।
मोल[8] सेल[9] लै माप, सेल चाढ़ै खुरसांणां* ।
काढ़ै[10] जौ वाढ़ पूणी कटै[11], झळळ दुग्रंगल झेरमां ।
तेगरौ[12] मोल दीजै तरैं, तेग समारै तेरमां[13] ॥ ५५८

छौळ[14] अंव घण छौळ[15], औळ सांमळां उतारै[16] ।
कपड़ वंध गज कठां, रौळ[17] चाकां कर[18] धारै[19] ।
धरै[20] मँझारां धूप, आपतापा[21] आतापां[22] ।
थेलां[23] दारू[24] थँडे[25], गजां[26] गोळां अणमापां ।
कांवियां[27] रंग मौहरा[28] करै[29], रंग बां[30] भैंसा[31] रगति[32] ।
जदि चाढ़ि मदां ज्वाळामुखी, सझै[33] तांम तोपां सगति[34] ॥ ५५९

१ ग. हुंनरवंधा । २ ख. हुंनर । ३ ख. मौहोगाई । ग. मोहौगाई । ४ ख. ग. रूपीयां । ५ ख. चैवंवी । ग. गोवंधी । ६ ख. ग. वोगसै । ७ ख. मोलकवांण । ग. मोलकमांण । ८ ख. ग. मोल । ९ ग. सैल ।

*ग. प्रतिमें यह पंक्ति निम्न प्रकार है—
'मोल सैल लागा पमेल चाढ़ै पुरसांणां ।'

१० ख. ग. काढ़ । ११ ख. कढ़ै । १२ ख. तेगरो । १३ ख. तेगमां । १४ ख. छौलि । ग. छोळि । १५ ख. छौलि । ग. छोळि । १६ ख. उतारे । १७ ख. ग. रोलि । १८ ख. ग. करि । १९ धारे । २० ख. धरे । २१ ग. आपतापा । २२ ग. आलपां । २३ ख. ग. थैला । २४ ख. ग. दारू । २५ क. थंडै । २६ ख. ग. मजां । २७ ख. कांवीया । ग. कवियां । २८ ख. महौरां । ग. मोहरां । २९ ख. फरे । ३० ख. रंगेवकर । ग. रंगेवकर । ३१ ख. ग. भैसां । ३२ ख. रगति । ग. रकत्ति । ३३ ख. ग. सझै । ३४ ख. ग. सकति ।

---

५५८. जँगम – घोड़ा । करै...कवांणां – धनुषोंको तैयार करते हैं । पूणी – धुनी हुई रूईकी वत्ती जो चरखे पर कातनेके लिए तैयार की जाती है । झळळ – चमकदार । दुग्रंगल – दो उंगलीके मापकी लंवाई या चौड़ाई ।

५५९. औळ सांमळां – श्याम रंगका मैल । कपड़...कठां – कपड़ा लिपटे हुए काष्ठके वने गज । रौळ – घुमा कर । चाकां...धारै – तैयार करते हैं । आपतापा – सूर्य । आतापां – अग्नि । थँडे – डाल कर, ठूंस कर । कांविकां रंग – लाल रंग । मोहरा – मुख । रंग...रगति – वकरों और भैंसोंके खूनसे (तोपोंके मुख) रंग कर । मदां – हाथियों ।

कवित्त दोढ़ौ[1] : फौजरी कूच

वजै[2] ध्रीह त्रंबाळ[3], पमँग साकति सभि[4] पक्खर[5] ।
कसि हौदां[6] कुंजरां, तई[7] पाखरां बगत्तर[8] ।
सिलह करै[9] कसि ससत्र[10], तांम[11] भड़ चढ़े[12] तुरंगां ।
हाजर दरगह[13] हुवा, सूर लोयणां सुरंगां ।
वट्टां हले वहीर, विखम पहटां अविघट[14] वट ।
राजद्वार[15] आवियौ[16], थटे 'बगतेस'[17] वीर थट ।
करि वप सनाह आवध कसे,लिये[18] सकति जप जय[19] लभौ ।
चक्रवती झपट[20] ह्वैतां[21] चमर[22], आय गयँद चढ़ियौ[23] अभौ[24] ।। ५६०

छप्पै

हुय[25] मुजरौ[26] रावतां, होय हाका पड़-सद्दां ।
हाक जसोलां[27] हुई[28], निहस[29] त्रंबागळ[30] सद्दां[31] ।
वोम गोम हुय[32] विकट, धोम चढ़ि गरद अँधारां ।
हालै[33] समँद हिलोळ, प्रचँड दळ वहल अपारां ।

---

१ ग. दोढ़ौ। २ ख. ग. वजे। ३ ख त्रांवाल। ग. तावाल। ४ ग. साजि। ५ ख. पाषर। ग. पाषरं। ६ ख. होंदां। ७ ग. तेई। ८ ख. ग. विहतर। ९ ख. करे। १० ख. ग. सस्त्र। ११ ग. महा। १२ ग. चढ़ै। १३ ख. ग. दरगै। १४ ख. ग. अवघट। १५ ख. राजद्वारि। १६ ख. आवीयौ। १७ ख. ग. वषतेस। १८ ख. लीयै। ग. लियै। १९ ख. जप। २० ग. झपटां। २१ ग. हुवैतां। २२ ख. चंमर। २३ ख. चढ़ीयौ। २४ ग. अभो। २५ ख. ग. होय। २६ ख. ग. मुजरा। २७ क. जसौलां। २८ ख. ग. होय। २९ ख. निहसि। ग. निहंस। ३० ख. त्रांवागल। ग. त्रांबागल। ३१ ख. नद्दां। ग. नदां। ३२ ख. ग. होय। ३३ ख. ग. हाले।

---

५६०. ध्रीह – नगाड़ेकी ध्वनि, आवाज। त्रंवाळ – नगाड़ा। पमँग – घोड़ा। साकति – जीन। पक्खर – घोड़ेका कवच। कुंजरां – हाथियों। बगत्तर – कवच। सिलह – कवच। तुरंगां – घोड़ों। लोयणां – नेत्र, लोचन। सुरंगां – लाल रक्त। बगतेस – महाराजा बखतसिंह। सनाह – कवच। आवध – आयुध, अस्त्र-शस्त्र। चक्रवती – चक्रवर्ती, राजा। झपट – झोंका। अभौ – महाराजा अभयसिंह।

५६१. मुजरौ – अभिवादन, सलाम। हाका – आवाज, हल्ला-गुल्ला। पड़-सद्दां – प्रतिध्वनि। जसोलां – यश-गायकों। निहस – आवाज। त्रंबागळ – नगाड़ा। सद्दां – शब्द, ध्वनि। वोम = व्योम – आकाश। गोम – गौ, पृथ्वी, भूमि। धोम – धुंआ। गरद – धूलि। हिलोळ – तरंग, लहर।

धर धुकै[1] सेस कूरम[2] धड़कि, काळीका[3] ऊछह[4] किया[5] ।
मगरूर रूप अध्रियामणौ[6], अडालच[7] डेरा दिया[8] ।। ५६१

खबरदार खांनरा, कहै[9] दळ रूप कराळां ।
काळ रूप कटकियां[10], चाळ वंधण[11] कळिचाळां[12] ।
रूप सचाळां भड़ां, संभळि[13] रवदाळां ।
आसँग[14] नह आविया[15], छोह झाला छड़ियालां[16] ।
आवियौ[17] चोट खग नह असुर, ओट अरावां[18] आवियौ[19] ।
नवकोट थाट देखे निडर, कोट 'विलँद' साजत[20] कियौ[21] ।। ५६२

सेरविलँदरी तैयारी

दुय[22] दुय सहँस[23] बँदूक, सहति[24] वगसरां[25] सकाजां ।
तैं दस दस भरि तोप, डहै[26] बारह दरवाजां[27] ।
भुरज भुरज आरबा, दुगम जुथ[28] गोळंदाजां ।
मतिवाळां मेलिया[29], कँगुर[30] कंगुरे[31] सकाजां ।
फिरणिया[32] चहूं तरफां फिरै, काळ रूप अरवाचकां[33] ।
काढ़िया[34] खगां किलकां[35] करे[36], डका ढोल तबलां डकां ।। ५६३

---

१ ख. धुके । २ ख. कुरम । ३ ख. ग. काळिका । ४ ख. ग. उछव । ५ ख. कीया । ६ ख. ग. अध्रियामणे । ७ क. अंडालच । ८ ख. दीया । ९. ख. ग. कहे । १० ख. दलकीया । ग. दळकिया । ११ ख. वांधण । १२ ख. कलिचालां । ग. कळिचाळां । १३ ख. ग. सांभळि । १४ ग. असंग । १५ ख. आवीया । १६ ख. छडीयालां । १७ ख. आवीयो । ग. आवियो । १८ ग. ओरावां । १९ ख. आवीयो । ग. आवियो । २० ख. ग. साजति । २१ ख. ग. कीयौ । २२ ख. ग. दोय दोय । २४ ख. ग. सहस । २५ ख. सांहथि । ग. सहथि । २६ ख. ग. वगसरां । २७ ख. ग. डहे । २८ ग. दरवाजां । २९ ग. जूथ । ३० ख. ग. मेल्हीया । ३१ ग. कांगुर । ३२ ग. कांगुरे । ३२ ख. ग. फिरणीयां । ३३ ख. अरवांचकां । ग. अरवांचका । ३४ ख. ग. काढ़ीया । ३५ ख. ग. किलकै । ३६ ख. ग. करै ।

---

५६१. मगरूर – गर्वोन्मत्त । अध्रियामणौ – भयावह, जबरदस्त । (अडालच – एक दूसरेसे अड़े हुए, समीप ?) ।

५६२. सचाळां – तेजस्वियों । आसँग – साहस, शक्ति । छड़ियालां – भालों । नवकोट – मारवाड़ । थाट – सेना, दल । साजत – तैयार ।

५६३. वगसरां – यवनों । डहै – ठहरे, मुकर्रर हुए । भुरज – बुर्ज । आरवा – तोप । जुथ – यूथ, समूह । फिरणिया – फिरने वाले, घूमने वाले, एक प्रकारका शस्त्र (?) । किलकां – कोलाहल । डका – ढोल या नगाड़ेको वजानेका डंका ।

डफ खंजरी दुतार, विखम रोहिला वजावै ।
पसतौ[1] अरबी[2] पाड़[3], गजल कड़खा बह[4] गावै ।
किवळा सिजदा करै, किलम उच्चरै कुरांणी[5] ।
जांणि प्रेत जागिया[6], महारिण[7] काळ मसांणी[8] ।
जुड़ि मीरखांन आया जदिन[9], मुगळ भीड़[10] दरगह मिळी ।
कळिचाळ सिरै[11] दरबार करि, बैठौ[12] 'विलँद' महाबळी[13] ॥ ५६४

दवावैत

जिस वखत सिर-विलंदखां[14] बहादुर[15] ममरजुलमुलक[16] पीरोज-जंग[17] मीरजादू खांनजादूके[18] वीच[19] कैसा[20] दरसावै। लंकाकी छभा राकसूंकै[21] बीच[22] दसकंध सा निजर[23] आवै[24]। तिस वखत परवर-दिगारकूं सिजदा करि महमंद[25] मरतुजाअलीकौ[26] याद करि दाहिणै[27] दसत सेती समसेर तोल हुकम फुरमाया। जो[28] यारो[29] दिल्लीके[30]

१ ख. पसतो। ग. पिसतो। २ ख. अरवी। ग. आरवी। ३ ख. ग. पाढ़। ४ ख. वौहो। ग. वौहो। ५ ख. कुसणां। ग. कुरांणां। ६ ख. जागीया। ७ ख. ग. म्हारण। ८ ख. मसांणां। ९ ख. जदिन। १० ख. भीडि। ११ ख. सरौ। ग. सरां। १२ ख. वैठौ। ग. वैठो। १३ ख. महावली। ग. महावला। १४ ख. सिरिविलंदखां। १५ ख. वाहादर। ग. बाहादर। १६ ख. ममीरजुलमुलक। ग. ममारजुलमुलक। १७ ग. पारोज-जंग। १८ ख. ग. जादूषांन। १९ ख. वीचि। ग. विचि। २० ग. केसा। २१ ख. राकसुंकै। २२ ख. वीचि। ग. वीच। २३ ख. ग. नजर। २४ ख. आवें। २५ ग. महमुद। २६ ख. मुरतजअलीको। ग. मुरतजाअलीकौ। घ. मुरतज्जाअलीकूं। २७ ख. दांहिणे। ग. दांहणै। २८ ग जौ। २९ ग. यारौ। ३० ख. ग. दिलीके।

---

५६४. डफ – देशी वाद्य विशेष। खंजरी – वाद्य विशेष। दुतार – दो तारका वाद्य विशेष। रोहिला – एक मुसलमान कौम। पसतौ – पश्तो साढे तीन मात्राका ताल जिसमें दो आघात होते हैं, इसके बोल निम्न प्रकार हैं— तिं, तक, धिं, धा, गे। अरबी – वाद्ययंत्र, तासा। पाड़ – मिला कर ?। कड़खा – राजस्थानी छंद विशेष जो प्रायः युद्धके समय ही पढ़ा जाता है। किवळा – (किबला, सम्माननीय ?)। जांणि – मानों। मसांणी – श्मशान भूमिका।

५६५. ममरजुलमुलक = मुबारिजुलमुलक – सर बुलँदखांका खिताब। पीरोजजंग – (?)। मीरजादू खांनजादूके – अमीरों और खानोंके पुत्रोंके बीच। छभा – सभा। दसकंध – रावण। परवरदिगारकूं = पर्वरदिगारको – पालन-पोषण करने वालेको, ईश्वरका। सिजदा – ईश्वरके लिए सर झुकाना, नमाजमें जमीन पर सर रखना, प्रणाम, सिज्दः। मरतुजाअलीकौ – हजरतअलीकी एक उपाधि, हज्रतअली। दसत – हाथ।

पातिसाहके[1] हुकम सेती मुझ[2] पर गुस्सा[3] कर[4] हिंदुस्थांनका[5] पाति-साह[6] जंग करणैकूं[7] आया सो[8] जंग करणैका[9] मनसुभा[10] ठहरावौ। जिसी[11] जिसीकी अकल[12] हिम्मतके[13] दरम्यांन आवै तिसी वजै जबांसेती[14] कहिकै दिखावौ। इस हुकम पर आदाव वजाय[15] खड़े सो सिपा[16] कैसै। उरसके खंभ सेरूंके[17] झुंड[18] जैसै[19]। कळळूके[20] बाराह दिल्लूंके[21] उमंदा। गल्ले[22] गुलावूंके पियाक पुलाबूंके खुरंदा[23]। सूरतके[24] भयांणख जमरांणूंके जोस। जंगूंके जालम तीरमदाजूंके सिरपोस। रूंहके सुरख चमरूंके[25] मंजार। रोसके झाळाहळ[26] आतसके अंगार। खावंदके[27] हुकमपर जमसेती जंग करैं। निमखकी[28] सरीयत[29] पर ज्यांन कुरवांन करै। हूर वर[30] वरणैकी उछाह[31] आंणै। मरणा[32] अरि[33] मारणा खेल करि[34] जांणै। आपणै[35] खावंदकी[36] फौजूंके[37] लोहैकी[38] ढाल। सेरूंकी सावजूं चित्रूंकी[39] मिसाल। जमकेसे फिरसते[40] लगे[41] असमांण जिनूंके[42] देखैसे[43]

---

१ ख. ग. पातसाहके। २ ख. ग. मुज। ३ ख. ग. गुसा। ४ ग. करि। ५ ख. हिंदुसयांनका। ग. हिंदुसथानका। ६ ख. पातसाह। ७ ख. ग. करणेको। ८ ग. सु। ९ ख. ग. करणेका। १० ख. मनसूवा। ग. मनसूवा। ११ ग. जिस जिसकी। १२ ग. अकलि। १३ ख. हिम्मतिके। ग. हींम्मति। १४ ख. ग. जवां। १५ ख. ग. वजायकर। १६ ख. ग. सिपाह। १७ ख. सेरुंके। १८ ग. झूड। १९ ख. जैसे। २० ख. कल्लूंके। ग. कलूके। २१ ग. दिलूके। २२ ग. गल्लू। २३ ख. पियाक। २४ ख. सुरतके। ग. सूरनके। २५ ख. चम्मूंके। ग. चष्युके। २६ ग. झीळाहळ। २७ क. खावंदके। ख. घांइदके। २८ ग. निमकाकि। २९ ख. ग. सरियत। ३० ख. ग. प्रतियोंमें यह शब्द नहीं है। ३१ ख. हौस। ग. हांस। ३२ ग. मरण। ३३ ख. अर। ग. अरु। ३४ ख. कर। ३५ ख. अपणे। ग. अपनै। ३६ ख. ग. ख्वाइदकी। ३७ ग. फौझौके। ३८ ख. लोहेकी। ग. लोहकी। ३९ ख. ग. चित्तूंकी। ४० ग. फीरसते। ४१ ख. लगो। ग. लगै। ४२ ख. जिन्हूंके ग. जिहुके। ४३ ख. देपेते।

---

५६५. मनसुभा — विचार। कळळूके — कलियुगके। दिल्लूंके — दिलके, हृदयके। गल्ले गुलावूंके — गुलावके फूलोंकी शरावके। पियाक — पीने वाला। पुलावूंके — व्यंजन जो मांसको चावलोंके साथ पकानेसे बनता है। खुरंदा — खाने वाले। भयांणख — भयावने, भयानक। जमरांणूंके — यमराजके। सिरपोस — यहां श्रेष्ठ अर्थ ठीक बैठता है। रूंहके — कान्ति, रूप। झाळाहळ — तेजस्वी। आतसके — अग्निके, आगके। खावंदके — मालिकके। सरीयत — पालन, नियम। सावजूं — सिंहके बच्चे। चित्रूंकी — चीतोंकी। जमकेसे फिरसते — यमराजके दूत जैसे।

सूकै[1] मदमसत फीलूंके[2] डांण। फुरकांन[3] इजील तौरतें[4] जंबूनके[5] निडाह मांन। ऐसे सबूंका सिरपोस सईद[6] आबद-अलीखांन[7] सो आवध-अलीखांन[8] कैसा। दिलावरखांनका[9] फरजन दिलावरखांन[10] जैसा। जिन[11] दिलावरखांननै कल्हके रोज दक्षनके[12] दरम्यांन निजांमन[13]-मुलकसेती जंग किया[14]। च्यार हजार दुसमनकूं[15] मार समसेरूंकी[16] धारसेती निमककी[17] सरियतपर[18] सिर दिया। अपनी[19] मनीके[20] आगे[21] औरूंकी[22] खातर न आंणै। वाहरेकी समसेरकूं सब आलम जांणै। जैसाही[23] आप जैसा जमाल अलीखां[24] भाई। दोनूं[25] सइयदूंनै[26] तिस बखत अरज गुजराई। नवाब[27] फील असवार होय नजरूंके[28] वीच[29] धरै। हरवळके[30] पेस होय हम-जंग जरै[31]। आगेही[32] वडै[33] महाराज[34] 'अजमाल'सैं[35] संभरके[36] खेत हमारै[37] बिरादर हसनखां गिरदखां हुसैनखांनैं जंग कर[38] सच्चै[39] दिलसैं[40] सिर दिया[41]। जिन्हुंनके[42] मरणैसे[43] तारीफके सवाल सब आलम

---

१ ग. सूके। २ ख. कीलूंके। ग. फीलूके। ३ ग. फुरकांन्ह। ४ ख. तौरल। ग. तौरैत। ५ ख. ग. जवूलके। ६ ख. सईयद। ग. सइय। ७ ख. ग. आवदअलीखां। ८ ख. आवदलीषांन। ग. आवदलापां। ९ ख. ग. दिलावरषांका। १० ख. ग. दिलावरषां। ११ ख. ग. जिस। १२ ख. दषिणके। ग. दष्यिणके। १३ ख. निनामन। १४ ख. ग. कीया। १५ ख. दुसमनूंकी। ग. दुसमनौकी। १६ ख. ग. समसेरांकी। १७ ख. ग. नमककी। १८ ख. ग. सरतपर। १९ ख. अपणी। ग. अपणं। २० ग. मनाकं। २१ ख. आगं। ग. अगं। २२ ख. औरकूं। ग. ओरको। २३ ख. जैसाई। ग. जैसाइ। २४ ख. इलीषां। २५ ख. दोयूं। ग. दोयू। २६ ख. सईयूंदूजै। ग. सइव्तंदूनै। २७ ख. नव्वाव। २८ ग. निजरूंकी। २९ ख. विचि। ग. विच। ३० ख. ग. हरवलकै। ३१ ख. ग. करै। ३२ ख. ग. आगेभी। ३३ ग. वडा। ३४ ख. ग. माहाराजा। ३५ ख. अजमालसै। ग. अजमलसे। ३६ ख. सांभरकै। ३७ ख. हमारे। ३८ ख. करि। ३९ ग. सच्चे। ४० ख. दिलसै। ग. दिलसे। ४१ ख. दीया। ४२ ख. जिन्हूके। ग. तिन्हके। ४३ ख. मरणैसै।

---

५६५. मदमसत – मदमस्त, मदोन्मत्त। फीलूंके – हाथियोंके। डांण – हाथीकी गर्दनका मद। फुरकांन – मुसलमानोंका धर्म-ग्रंथ, फुर्कान, कुर्आन। इजील – ईसाइयोंकी मुख्य धार्मिक पुस्तक, ईजील। तौरतें – वह आस्मानी-ग्रंथ जो हजरत मूसा पर उतरा था, तौरात। जंबूनके–जवूनके, नीचके। फरजन – संतान। सरियत पर – शरअित पर। आलम – संसार, दुनिया। संभर – सांभर नामक स्थान। बिरादर – भ्रातृ, भाई, बरादर।

परि[1] जिया[2]। उसी[3] उजाह[4] जाय असीलूंकी[5] चोट खेलै[6]। सिरोहियांकी[7] चोट[8] झेलै[9]। पुरजां[10] पुरजे होय[11] जावै भिसतकूं[12] चलि[13] हूरके हाथूंसे लेवै नूरके प्याले इस वजेका[14] ज्वाब[15] आवधअलीखां[16] जमालअलीखांनै दिया[17]। तिस पछै तरीयनखां पठांणनैं इल तमास किया[18]। राठोड़ू पठांणूंके जंग आगूंसै लेखा जिसी बखत मुकालबा[19] हुवा तिसी बखत आफताफनै असिपकड़ि[20] तमासा देखा फेर हमारै माहाराजासै[21] वैर आगै यनूंकै[22] वडे[23] महाराज[24] गजसिंघ जहंगीरके[25] हरवळ होय हमारे तरीयन[26] समसेरखां[27] बहलोलखां[28] केतांई[29] मारिकरि[30] फतै पाई। वहैं[31] वैर लेणै यहै सायत आई जिससेती जनेवूं मुरगबूंकी झाट खासूं[32] झंडूंके वीच[33] खेलैंगे[34]। सिरोही[35] जोधांणकी समसेरूंके घाव सिर ऊपर[36] झेलैंगे[37]। अैराकूंके[38] छाकसै छाके जमो पर जावैंगे[39] हूरूंकूं[40] व्याहि करि

१ ख. ग. पर। २ ख. ग. जीया। ३ ख. ग. उसही। ४ ख. जहुंस। ग. उजह। ५ ख. अस्टीलूंकी। ग. असीलोका। ६ ख. षेलहै। ७ ख. सीरोहीयूंकी। ग. सीरोहियोंका। ८ ग. चौट। ९ ग. जेलै। १० ख. पुरजे। ग. पुरजां। ११ ख. हुइ। १२ ग. जिससकूं। १३ ख. चाले। ग. वाके प्याले। १४ ग. वजेका। १५ ख. ज्वाव। १६ ख. ग. आवदअली। १७ ख. ग. दीया। १८ ख. ग. कीया। १९ ख. मुकाविला। ग. मुकालवा। २० ख. असपकसि। ग. असपकसित। २१ ख. माहाराजूसै। ग. माहाराजौंसै। २२ ख. ग. इन्हूकै। २३ ख. प्रतिमें यह शब्द नहीं है। २४ ख. माराजा। ग. माहाराजा। २५ ख. जांहांगिरके। ग. जांहांगीरके। २६ ख. तरीयत। २७ ग. पठांण समसेरषां। २८ ख. ग. वहलोल। २९ ग. कैतांई। ३० ख. ग. मारीकरि। ३१ ख. ग. वह। ३२ ख. ग. षासे। ३३ ख. ग. वीचि। ३४ ख. षेलैंगे। ग. षेलैंगे। ३५ ख. ग. सीरोही। ३६ ग. ऊपरै। ३७ ख. झेलैगे ग. झैलैगै। ३८ ख. ग. एराकूंकी। ३९ ख. जावैंगे। ग. जावैंगे। ४० ग. हुरूंका।

५६५. उजाह – वजह, कारण। असीलूंकी – बढ़िया लोहके अस्त्रकी। सिरोहियांकी – सिरोहीकी बनी तलवारोंकी। झेलै – सहन करते हैं। भिसतकूं – बिहिश्तको, स्वर्गको, हूरके – यवनोंको वीर गति प्राप्त होने पर स्वर्गमें मिलने वाली अप्सराके। नूरके – चहरेकी आबोतावके, मुखछटाके। मुकालबा – मुकाविला, भिड़ंत। आफताफनै – सूर्यने। हरवळ – सेनाके आगे रहने वाला, हरावल। तरीयन – सबसे अधिक। यहै – यह। सायत – समय, अवसर। जनेवूं – तलवारों। मुरगाबूंकी – एक प्रकारकी तलवार (?)। झाट – टक्कर। समसेरूंके – तलवारोंके। अैराकूंके – तेज शराबके। छाकसै – शराब पीनेके प्यालोंसे। छाके – छके हुए, मस्त।

भिसतमें[1] आवैंगे[2]। तरीयनखां अैसे बोले[3] तिन[4] वार। कायमखां सैद सेख बोले अलीहार[5]। तीन पौहरूंका आफताफ[6] राठौड़ूंपर रौसनाई[7] ठहरावैं। चौथैं पहरकी[8] रौसनाई[9] सब आलमपर[10] आवैं। अैसे[11] राठौड़ूके[12] पातिसाह[13] जिन्हूंसेती[14] समसेरूंका जंग करैं। फीलूंके[15] विचमैं[16] फीलूंकूं धरैं। सेलूंकूं पहरि समसेरूंकूं[17] चलावै। निमककी[18] सरीयत[19] सो[20] पाक[21] करि दिखलावै। जीवै तौ लेवैं सितरहजार गुजरातका राज। मरै तौ हूर[22] भिस्तका समाज[23]। इस वजैसैं बोले[24] च्यार हजार[25]। सौ[26] पालकी-नसीन[27] आठ फीलूंके[28] असवार। जमराजकासा[29] दरबार[30] जोम सैंग[31] हम हताहै[32] अमराऊं[33] उमीरूंकूं[34] आस्रीवाद[35] कहता है तिस बखत निबाब[36] उमराऊंसे[37] कह्या। जैसा[38] था भरोसा[39] तैसा[40] तुमनै[41] ज्वाब दिया[42]। जंगका तजबीर[43] ऐ भी मनजूर[44] किया[45]। पैं-गढ़का सामांन[46] तोपूसै[47] झाड़ि। तिस पीछै करैंगे[48] चौड़ेकी[49] राड़ि ॥ ५६५

---

१ ख. ग. भिस्तमैं। २ ख. आवैंगे। ग. आवैगैं। ३ ख. वोले। ४ ख. ग. तिस। ५ ख. अलिहार। ग. अलिआर। ६ ख. आफताप। ७ ख. रोसनाई। ग. हौंसनाइ। ८ ख. पोहोरकी। ग. पोहरकी। ९ ख. रोसनाई। १० ग. आलमपैं। ११ ग. अैसैं। १२ ग. राठौड़ांके। १३ ग. पातसाह। १४ ख. जिन्हूंसेती। ग. जहू। १५ ग. फीलूंकै। १६ ख. वीचमैं। ग. वीचिमैं। १७ ग. समसेरांकूं। १८ ख. ग. निमषकी। १९ ख. ग. सरियत। २० ग. सौ। २१ ख. प। ग. पकी। २२ ग. हुर। २३ ग. समाजा। २४ ग. बोलैं। २५ ग. हजारी। २६ ख. ग. सो। २७ ग. पालषीनसीन। २८ ग. फीलौंकैं। २९ ख. जमराका। ग. जमराजकैसा। ३० ख. ग. दरवार। ३१ ख. ग. सैंग। ३२ ग. ताहै। ३३ ख. उमरावूं। ग. उमराऊं। ३४ ख. उमीरूकी। ३५ ख. वाद। ग. आश्रीवाद। ३६ ख. ग. नबाब। ३७ ग. उमरांवुसैं। ३८ ग. जेसा। ३९ ग. भरोसैं। ४० ग. तिसा। ४१ ख. नमूंनै। ग. तमैंनि। ४२ ख. ग. दीया। ४३ ख. ग. ततवीर। ४४ ग. मंजूर। ४५ ख. कीया। ४६ ग. समान। ४७ ख. तोपूसैं। ग. तोपौसैं। ४८ ख. करैंगे। ग. करैंगैं। ४९ ग. चौडौंकी।

---

३६५. रौसनाई – प्रकाश। भिस्तका – वहिश्तका, स्वर्गका। चौड़ेकी – खुले मैदानकी। राड़ि – युद्ध।

महाराजा अभैसिंघजीरो सरबुलंदरै प्रत संदेस

कवित्त—कुंडळियौ

वेळा[1] उण खत 'विलँदनूं', इम मेल्हे 'अभमाल' ।
हूं[2] आयौ[3] लड़जे हमैं, धरि मुहरै[4] गज[5] ढाल ।
धरि मुहरै[6] गज ढाल, आय चौड़ै पति-ईरां ।
कोट[7] ओट[8] मति[9] तके[10], अडर लड़ि रीत[11] अमीरां ।
हूं आयौ तोहूंत, घणूं जूटण खग घाए[12] ।
कदम[13] अडग[14] कीजिये[15], जोम[16] छाडे[17] मति जाए[18] ।
इम[19] वाच[20] ज्वाब 'अभमाल'रा, धरि अजागि बळ[21] धांखियौ[22] ।
घ्रत[23] जेम[24] आग[25] सींची घणूं[26], उरस लाग[27] उपड़ांखिपौ[28] ॥ ५६६

सरबुलंदरौ जवाब

नीसांणी

लिख[29] भेजे[30] खतका जवाब[31], करि रीस अकारी[32] ।
मैं दावा 'महमंदसूं[33]', कीया सकरारी ।
मैं पग छुंडूं[34] किस वजै, हुय[35] हास हमारी ।
तेग बँधी[36] मैं तखतसैं[37], काचो[38] नह धारी ॥ ५६७

---

१ ख. ग. वेला । २ ग. हु । ३ ग. आया । ४ ख. मौहोरे । ग. मोहोरै । ५ ग. गय । ६ ख. ग. मौहोरै । ७ ख. कोटि । ८ ख. ओटि । ९ ख. मत । १० ख. तकै । ग. करै । [११] ख. ग. रीति । १२ ग. घाऐ । १३ ग. क़दम । १४ ख. ग. अडिग । १५ ख. कीजिए । ग. क़ीजियै । १६ ख. ग. जंग । १७ ग. छाडे । १८ ग. जाऐ । १९ ख. एम । २० ख. ग. वांचि । २१ ख. वल । ग. वलि । २२ ख. घाषीयौ । ग. घषियौ । २३ ख. ग. घृत । २४ ख. जांणि । ग. जांणै । २५ ख. ग. आगि । २६ ख. ग. घणैं । २७ ख. ग. लागि । २८ ख. उपडालीयौं । ग. उपडापीयौ । २९ ख. ग. लिषि । ३० ख. भे । ३१ ख. ग. जवाव । ३२ ख. करी । ३३ ख. महमंदसौं । ग. महमंदसौ । ३४ ख. छाडूं । ग. छाडू । ३५ ख. ग. होय । ३६ ख. वांधी । ग. वंधी । ३७ ग. तखतसौं । ३८ ग. कांची ।

---

५६६. मेल्हे – भेजे । अभमाल – महाराजा अभयसिंह । हूं – मैं । हमैं – अब । मुहरै – आगे । पति-ईरां – ईरानियोंका स्वामी । जूटण – भिड़नेको । जोम – जोश, उमंग । वाच – वचन । ज्वाब – जवाब । धांखियौ – प्रज्वलित हुआ (?) । उपड़ांखियौ – जोशीला, वीर ।

५६७. अकारी – तेज । सकरारी – प्रतिज्ञापूर्ण । वजै – कारण । काची – कच्ची ।

अेती लिखी[1] अजाजती[2], सो भली विचारी ।
इहां[3] ढील कुछ भी नहीं, यां[4] है सब[5] त्यारी[6] ।
मुझकूं[7] लड़णैका[8] मगज[9], तिस[10] परि[11] इकतारी ।
सझणै जँग आवौ सताब[12]; धर छक छत्रधारी ॥ ५६८
मैं नांही चीनी[13] फरौस[14], मै हफत-हजारी[15] ।
.... ॥ ५६९

महाराजा अभैसिघरौ वखांण

छंद पद्धरी

सुणि खत जबाब[16] इम 'अभैसाह'[17] ।
सूरमां[18] मौड़[19] पहरै[20] सनाह[21] ।
ओपियै[22] तेज झळहळ नरिंद[23] ।
सुणि[24] जांणि तेज उझळे समंद[25] ॥ ५७०
लालंबर लोयण[26] वदन लाल ।
उद्योत[27] भांण बारह[28] अपाल ।
सझि खाग सुजड़ धांनख[29] सीस[30] ।
रवदाळतणै सिर[31] काळ रीस ॥ ५७१

---

१ ग. लिषि । २ ख. ग. जाजती । ३ ख. ग. यहां । ४ ख. यहां । ग. इहां । ५ ख. ग. सबै । ६ ख. तयारी । ग. तियारी । ७ ख. मुजकुं । ग. मुजनू । ८ ख. डलते । ग. लडनैं । ९ ख. मुगज । १० ग. तीस । ११ ख. ग. पर । १२ ख. सताव । ग. सिताब । १३ ग. चीन्ही । १४ ख. फरोस । १५ ग. मैंहफत हजारी । १६ ख. जवाव । १७ ख. ग. अभयसाह । १८ ख. सूरिमा । ग. सूरिमां । १९ ख. मौड । ग. मौडि । २० ख. परे । २१ ख. सताह । २२ ख. ओपीयौ । ग. ओपियो । २३ ख. ग. नरिंद्र । २४ ग. सुजि । २५ ख. समंद्र । २६ ग. लोयन । २७ ख. उद्योत । ग. उद्यौत । २८ ख. ग. वारह । २९ ख. ग. धानंष । ३० ग. कसीस । ३१ ख. ग. सिरि ।

---

५६८. अजाजती – (?) । इहां – यहां । ढील – विलम्ब । यां – यहां । मगज – गर्व । सताव – शीघ्र । छक – जोश, उमंग । छत्रधारी – राजा ।

५६९. चीनी फरौस – चीनी मिट्टीके खिलौने वेचने वाला । हफत – हजारी ।

५७०. सूरमां मौड़ – शूरवीरोंमें श्रेष्ठ । सनाह – कवच । ओपियै – शोभित हुए । झळहळ – सूर्य । नरिंद – नरेंद्र, राजा । उझळे – उमड़ा हो ।

५७१. लालंबर – पूर्ण लाल । लोयण – लोचन, नेत्र । वदन – मुख । अपाल – (?) । सुजड़ – कटार । रवदाळतणै – यवनके ।

उण वार फबे 'अभमाल' एम ।
जुध करण लंक स्रीरांम जेम ।
अड्ढ़ार[1] पदम जिम भड़ अड़ूड़ ।
जरदैत ससत्र[2] कसि कड़ाजूड़ ।। ५७२

'वखतेस' 'लखण' जिम महा वीर ।
सझि सिलह संसत्र[3] कसियां[4] सधीर ।
'विजपाळ' हणूं जिम रिण[5] व्रजागि ।
लोह में[6] सझे[7] भड़ उरस[8] लागि ।। ५७३

एकणी[9] नगारै थाट अेम ।
हल्ले वहीर[10] जिम सलित हेम ।
पंडवां[11] करे साकति पमंग ।
सजि[12] पाखर वादळ घड़ सुचंग ।। ५७४

हाथियां[13] मेघ-डंबर[14] हवद्द[15] ।
जंगी कसि हवदां विखम जद्द[16] ।
पाखरां पूर कीधा अपाल ।
ढुळि[17] चमर चाचरां ढलकि[18] ढाल ।। ५७५

---

१ ख. अढ़ार । २ ख. ग. सस्त्र । ३ ख. ग. सस्त्र । ४ ख. कसीयां । ग. कसाया । ५ ख. ग. रण । ६ ख. ग. मै । ७ ग. सझै । ८ ग. उरसि । ९ ग. एकण । १० ख. वहीर । ग. वहीर । ११ ख. ग. पांडवां । १२ ख. ग. सझि । १३ ख. ग. हाथियां । १४ ख. डंव्वर । १५ ख. ग. हव्वद । १६ ख. द्द । १७ ख. ग. टलि । १८ ख. ढलक ।

---

५७२. अड़ूड़ – जबरदस्त । जरदैत – कवचधारी । कड़ाजूड़ – सुसज्जित ।

५७३. लखण – लक्ष्मण । विजपाळ – भंडारी विजयराजके लिए प्रयोग किया है जिसने अहमदाबादके युद्धमें मेड़तिया राठौड़ोंके तीसरे मोर्चे पर बड़ी बहादुरीका कार्य किया था । हणूं – महावीर हनुमान ।

५७४. एकणी – एक ही । थाट – सेना, दल । वहीर – प्रस्थान, कूच । सलित हेम – हिमालय पहाड़की नदी (?) । पंडवां – यवनों, मुसलमानों । घड़ – सेना । सुचंग – (?) ।

५७५. हवद्द – हौदा । हवदां – हौदों । जद्द – जब । ढुळि चमर – चँवर डुला कर । चाचरां – मस्तकों, ललाटों । ढळकि – लुढकती हो । ढाल – हाथीके मस्तक पर युद्धके समय धारण कराया जाने वाला उपकरण ।

धरि[1] नवबति चढ़ि नीसांण धार ।
पर तौग[2] मही-मुरतब प्रकार ।
धर[3] सकति पूंज[4] द्रूज[5] चढ़े धांम ।
त्रहुं[6] घड़ा सुभड़ असि चढ़े तांम ।। ५७६

धुजि[7] चढ़े[8] गजां हथनाळ[9] धारि[10] ।
द्वरदाळ[11] आंणियां[12] राजद्वार[13] ।
'बखतेस' 'विजौ' दहुं[14] घड़ वणाय ।
उण वार खड़ा दरगाह आय ।। ५७७

अति कड़ाजूड़ पैदल अनंत ।
धोम मै ससत्र[15] तोड़ाधिकंत[16] ।
तदि[17] अरज कीध खिजमत्तिदार[18] ।
पह[19] हाजर त्रहुंवै[20] घड़ अपार ।। ५७८

दूसरौ[21] डँका वाजे दमांम ।
धर गिर तर धूजे[22] दुसह[23] धांम ।
जिण वार भूप करि सकति जाप[24] ।
पढ़ि जैत मंत्र सोळह प्रताप[25] ।। ५७९

---

१ ख. ग. धर । २ ख. ग. तोग । ३ ख. धरि । ग. धलि । ४ ग. पूज । ५ ख. द्रुज । ग. द्रूज । ६ ख. त्रिहु । ग. चिहूं । ७ ख. ग. धुज । ८ ग. चढ़ै । ९ ख. ग. हथनालि । १० ग. धरि । ११ ख. ग. दुरदाल । १२ ख. आंणीया । १३ ख. राजद्वारि । १४ ख. दुहुं । ग. दुहूं । १५ ख. ग. सस्त्र । १६ ख. तोडाधिषंत । ग. तोडाधुषंत । १७ ग. तद । १८ ख. षिजमतगार । ग. षिजमतिगार । १९ ख. पौहौ । ग. पोहो । २० ख. त्रहुंवै । ग. त्रिहोवै । २१ ख. दूसरौ । ग. दूसरो । २२ ग. धूजै । २३ ख. सुसह । २४ ग. जार । २५ ग. प्रकार ।

---

५७६. नवबति – नौबत । नीसांण – झंडा ।

५७७. धुजि – ध्वजा, झंडा । हथनाळ – तोप विशेष । द्वरदाळ – हाथी । आंणियां – लाने पर । बखतेस – महाराजा बखतसिंह । विजौ – विजयराज भंडारी (?) । घड़ – सेना । दरगाह – दरबार ।

५७८. कड़ाजूड़ – अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित । धोम मै – अग्निमें, क्रोधाग्नि में । तोड़ाधिकंत – प्रज्वलित पलीता लिए हुए । खिजमत्तिदार – सेवक ।

५७९. दमांम – नगाड़ा । दुसह – शत्रु । धांम – स्थान । जाप – जप, पठन-पाठन ।

साबळ झलि[1] हालै[2] पह[3] सधीर ।
वप रूप जांणि[4] नरसिंघ वीर ।
गहतंत अयौ बाहर[5] गरूर ।
सिहरहूं[6] प्रगटियौ[7] जांणि[8] सूर ।। ५८०

सिर नमे हजारां बंध साथ ।
निज करे कुरब[9] जोधांण नाथ ।
धरियां[10] छक चढ़ियौ[11] गयंद धांम ।
तीसरौ[12] नगारौ[13] हुवौ[14] तांम ।। ५८१

तदि वड्डि[15] अरण धज वजि तबल्ल[16] ।
हलि तोप गजां धमळां हमल्ल[17] ।
भरि[18] दारू गोळां मजां भार ।
आरबा[19] अवर[20] कठठे[21] अपार ।। ५८२

महाराजा अभैसिंघजीरी सेनारौ वरणण

घण छपन[22] कोड़ि[23] धुजि[24] घाट[25] ।
थरसले अनड़[26] बह[27] हले थाट ।

---

१. ख. सझि । २ ख. हाले । ग. हलि । ३ ख. ग. पौहो । ४ ग. जांण । ५ ख. वाहरि । ६ ग. सिहिरहू । ७ ख. प्रगटीयौ । ग. प्रगटीयो । ८ ग. जाण । ९ ख. कुंवर । १० ख. धरीयां । ११ ख. चढ़ीयौ । ग. चढ़ियो । १२ ग. तीसरो । १३ ग. नगारो । १४ ख. हुओ । ग. हुवो । १५ ख. ग. उडि । १६. ख. तव्वल । १७ ख. हम्मल । ग. हमल । १८ ख. ग. भर । १९ ख. आरवां । २० ख. अरव । २१ ख. कठटे । २२ ख. छयन । २३ ग. कोटि । २४ ख. धुर । ग. ध्रर । २५ ग. घंटा । २६ ख. अनल । २७ ख. वौहो । ग. वहो ।

---

५८०. नरसिंघ – नृसिंहावतार । गहतंत – गर्वपूर्ण । गरूर – गर्व । सिहर – शिखर, बादल ।

५८१. छक – जोश, उत्साह ।

५८२. अरण धज – अरुण-ध्वजा, लाल झंडा । धमळां – बैलों । हमल्ल – (?) । दारू – बारूद । मजां भार – (?) । आरबा – तोप । कठठे – ध्वनि करते चले ।

५८३. थरसले – कंपायमान हो गये । अनड़ – पर्वत ।

काळायण कठठे काळ - कीठ[1] ।
दुति सिखर[2] भमर गजराज दीठ ॥ ५८३

उडि गरद धोम चढ़ि आसमांण ।
भमरंग दिसा[3] दीसै[4] न भांण ।

सेनारी घण-घटासूं रूपक बांधणौ

पखरैतां कांठल[5] भमर पाज ।
गाजंत[6] गयँद नौबत्ति[7] गाज ॥ ५८४
हैमरां दादुरां कळळ होय ।
जगि तोडां दमँग[8] खिदौत[9] जोय ।
जसवळांतणां[10] हाका-स जोर ।
मिळि[11] सबद जांणि[12] चात्रग[13] मोर ॥ ५८५

वादळां सिलह पोसां वणाव[14] ।
साबळां[15] भळक वीजळ सिळाव ।
नीसांण धनँख फरहर अनंत ।
दुरदां हरौळ बक[16] पंत दंत ॥ ५८६

---

१ ग. कालकीट । २ ग. भमर सिषर गजराज··· । ३ ख. ग. निसा । ४ ग. दीसे । ५ ग. काठल । ६ ग. गाजंति । ७ ख. नौवति । ग. नौवत्ति । ८ ख. दमंगि । ९ ख. ग. षिदोत । १० ग. जसवळांतणा । ११ ग. मित्रि । १२ ग. जांण । १३ ख. चात्रग । ग. चात्रक । १४ ख. वणाय । १५ ख. सावलां । १६ ख. ग. बुक ।

---

५८३. काळायण – श्याम घन-घटा । काळ-कीठ – अत्यन्त श्याम ।

५८४. धोम – धुंआ । भमरंग दिसा – दिशाएँ धूलि आच्छादित हो गई है । पखरैतां – कवचधारी घोड़ों या योद्धाओं ।

५८५. हैमरां – घोड़ा । दादुरां – मेंढकों । कळळ – ध्वनि । तोडां – पलीतों । खिदौत – खद्योत, जुगनू । जोय – देख । जसवळांतणा – यशगायकोंके । हाका-स – आवाज । चात्रग – चातक ।

५८६. सिलह पोसां – कवचधारियों । भळक – चमक, द्युति । वीजळ – विजली या तलवार । सिळाव – विजलीकी चमक । नीसांण – झंडा । धनँख – इन्द्रधनुष । दुरदां – द्विरदों, हाथियों । हरौळ – अगाड़ी । बक – बक-पक्षी । पंत – पंक्ति ।

धरहरै[1] सुजळ मद गयंद धार ।
इळ वीच कीच माचै अपार ।
दळ रवदतणा भांजण[2] दुकाळ ।
वरससी[3] अगे गोळां व्रसाळ ॥ ५८७

है नास सास धुबि वीर हाक ।
धूजिया[4] दसै द्रिगपाळ धाक ।

फेर दूसरौ रूपक

भिड़जाळ नाळ[5] धर धसकि[6] भार ।
हुबि[7] सेस सीस लटिया हजार ॥ ५८८

डाकां जिम अहि[8] फण चोट दीध ।
कमठरी पीठ त्रंवाळ[9] कीध ।
कड़कियौ[10] कमठ घट कळमळेस ।
धड़कियौ[11] त्रकुट[12] औदक धनेस ॥ ५८९

वाजतां त्रंबागळ डाक वाधि ।
सिध गिरँद गुफा छूटै[13] समाधि ।
भमता खग उडता बह[14] भुजंग ।
कळमळै[15] पड़ै[16] मूभै[17] कुरंग ॥ ५९०

---

१ ग. धरहरे । २ ग. भाजत । ३ क. वरसीस । ४ ख. धूजीया । ५ ग. नळ । ६ ख. धसिकि । ७ ख. ग. हुवि । ८ ख. ग. अह । ९ ख. त्रांवाल । ग. तांबाळ । १० ख. कडकीयौ । ग. कडकिया । ११ ख. धडकीयौ । ग. वरकियो । १२ ख. तृकुट । ग. त्रिकुट । १३ ख. ग. छूटे । १४ ख. वहौ । ग. वहु । १५ ग. कळमळे । १६ ग. पडे । १७ ग. मुभै ।

---

५८७. धरहरै – ध्वनिमान होते हैं । इळ – इला, पृथ्वी । कीच – पंक, दलदल । दळ – सेना । रवदतणा – यवनके । भांजण – नष्ट करनेका । दुकाळ – दुष्काल, दुर्भिक्ष । व्रसाळ – वर्षा ।

५८८. है – हय, घोड़ा । नास – नासिका, नाक । धाक – भय, आतंक । भिड़जाळ – घोड़ा । नाळ – घोड़ेके सुमके नीचे लगाया जाने वाला उपकरण । हुबि – दब कर ।

५८९. डाकां – नगाड़ा बजानेके डंके । दीध – दी । कमठरी – कच्छपावतारकी । त्रंवाळ – नगाड़ा । कड़कियौ – बोझके कारण दबनेसे आवाज हुई । कळमळेस – तड़फड़ाता है । धड़कियौ – भयभीत हुआ, कंपायमान हुआ । त्रकुट – त्रिकुटाचल पर्वत । औदक – भयभीत हुआ । धनेस – कुवेर ।

५९०. त्रंबागळ – नगाड़ा । सिध – सिद्ध । गिरँद – गिरींद्र । समाधि – ध्यानावस्था । कळमळै – वेचैन होते हैं । मूभै – अमूभते हैं । कुरंग – हरिण ।

चौगड़द धोम रज डंमर चाक ।
वीछटिया[1] मेळा चक्रवाक ।
दळ इसा पंग जिम किया[2] दूठ ।
रवदाळ 'विलँद'सिर[3] काळ रूठ ॥ ५९१

अहमंदपुरहूंत नज्जीक[4] आय ।
चौकियौ[5] दुरँग रसवीर चाय ।
'सिर विलँद' न आवियौ[6] खागि[7] साहि ।
मुगळेस सँभाहे[8] किला मांहि ॥ ५९२

उणवारतणौ[9] दळ बळ अपार ।
पुणतां नह आवै जेण पार ।
.... ।
.... ॥ ५९३

इति सप्तम प्रकरण ।

इति मध्य भाग ।

---

१ ख. वींछटीया । ग. वीछटियम । २ ख. कीयां । ३ ख. विलंदसिरि । ग. सिरविलंद । ४ ख. ग. नजीक । ५ क. चौकीयां । ग. चौकीयौ । ६ ख. ग. आयौ । ७ ख. ग. षाग । ८ ख. संवाहें । ग. समाहे । ९ ग. उणवारतणो ।

५९१. चौगड़द – चारों ओर । धोम – धुंआ । रज – धूलि । डंमर – समूह । चाक – दिशा । वीछटिया – पृथक हो गये । पंग – जयचंद राठौड़ । दूठ – जबरदस्त । काळ – यमराज ।

५९२. नज्जीक – निकट । चौकियौ – आवेष्ठित किया, घेर लिया । दुरंग – दुर्ग, गढ़ । खागि साहि – तलवार संभाल कर ।

५९३. उणवारतणौ – उस समयका ।

॥ श्रीः ॥

परिशिष्ट १

नामानुक्रमणिका

आ

घ

च

ध

र

ल

व

॥ श्री ॥

परिशिष्ट २

संगीत एवं नृत्य संबंधी शब्द तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के वाद्यों की नामानुक्रमणिका

*तान—

संगीत शास्त्र में मूर्छनाओं के आधार पर चौरासी तानें मानी गई हैं। उनमें उनचास षाडव और पैंतीस ओडुव हैं। (शुद्ध मूर्च्छनाओं की संख्या सात होने के कारण) षड्ज ग्राम में षाडव मूर्च्छनाओं का लक्षण सात प्रकार का है। यथा—षड्ज ग्राम में षड्ज, ऋषभ, पञ्चम और निषाद से रहित चार तानें हैं।[1] [शेष फुट नोट पृ० २४ पर]

---

[1] मूर्च्छनासंश्रितास्तानाश्चतुरशीतिः। तत्र एकोनपंचाशत् षट्स्वराः पंचत्रिंशत् पंचस्वराः। लक्षणं तु षट् स्वराणां सप्त विधम्। यथा—षड्जर्षभगन्धारहीनाश्चत्वारस्तानाः षड्ज ग्रामे। भरत०, बंबईसंस्करण अध्याय २८, पृ० ४३७।

[पृ० २३ का फुट नोट]

इसी प्रकार मध्यम ग्राम में, षड्ज, ऋषभ और गान्धार से हीन तीन तानें मानी गई हैं। इस प्रकार से सब मूर्च्छनाओं में की जाने वाली ये (षाडव) तानें उनचास होती हैं[२], जो इस प्रकार हैं—

उत्तर मन्द्रा—

१. × रे ग म प ध नि
२. स × ग म प ध नि
३. स रे ग म × ध नि
४. स रे ग म प ध ×

रजनी—

५. नी × रे ग म प ध
६. नी सा ग म प ध
७. नी सा रे ग म × ध
८. × सा रे ग म प ध

उत्तरायता—

९. ध नी × रे ग म प
१०. ध नी स ग म प
११. ध नी स रे ग म ×
१२. ध × स रे ग म प

शुद्ध षड्जा—

१३. प ध नी × रे ग म
१४. प ध नी सा × ग म
१५. × ध नी सा रे ग म
१६ प ध × सा रे ग म

मत्सरी कृता—

१७. म प ध नी × रे ग
१८. म प ध नी सा × ग
१९. म × ध नी सा रे ग
२०. म प ध × सा रे ग

अश्वक्रान्ता—

२१. ग म प ध नी × रे
२२. ग म प ध नी स ×
२३. ग म × ध नी स रे
२४. ग म प ध × स रे

अभिरुद्गता—

२५. रे ग म प ध नी ×
२६. × ग म प ध नी स
२७. रे ग म × ध नी स
२८. रे ग म प ध × स

सौवीरी (मध्यम ग्राम)—

२९. म प ध नी × रे ग
३०. म प ध नी स × ग
३१. म प ध नी स रे ×

हारिणाश्वा—

३२. ग म प ध नी रे
३३. ग म प ध नी स ×
३४. × म प ध नी स रे

कलोपनता—

३५. रे ग म प ध नी ×
३६. × ग म प ध नी स
३७. रे × म प ध नी स

शुद्धमध्या—

३८. × रे ग म प ध नि
३९. स × ग म प ध नि
४०. स रे × म प ध नि

मार्गी—

४१. नी × रे ग म प ध
४२. नी सा × ग म प ध
४३. नी सा रे × म प ध

[शेष टिप्पणी पृ० २५ पर]

---

[२] मध्यम ग्रामे तु षड्जर्षभ गान्धार हीनास्त्रयस्तानाः। एवमेते सर्वासु मूर्च्छनासु क्रियमाणा भवन्त्येकोन पंचाशत्तानाः। भरत०, बंबई संस्करण, अध्याय २९, पृ० ४२६

[पृ० २४ का फुट नोट]

पौरवी—

४४. ध नी X रे ग म प
४५. ध नी स X ग म प
४६. ध नी स रे X म प

हृष्यका—

४७. प ध नी X रे ग म
४८. प ध नी स X ग म
४९. प ध नी स रे X म

संगीत शास्त्र के अन्तर्गत पाँच स्वर वाली तानों का लक्षण पाँच ही प्रकार का है। उदाहरणार्थ षड्ज ग्राम में 'षड्ज पंचमहीन', 'ऋषभ पंचमहीन' और 'गान्धार निषाद-हीन' तीन तानें (एक मूर्च्छना) में होती हैं। मध्यम ग्राम (की एक मूर्च्छना) में गान्धार निषादहीन' और 'ऋषभ धैवत हीन' दो तानें होती हैं। इस प्रकार सब मूर्च्छनाओं में बनाई जाने वाली औडुव तानें पैंतीस होती हैं; षड्ज ग्राम में इक्कीस और मध्यम ग्राम में चौदह।[1] इनके रूप निम्नलिखित हैं।

उत्तर मन्द्रा—

१. X रे ग म X ध नि
२. स X ग म X ध नि
३. स रे X म प ध X

रजनी—

४. नी X रे ग म X ध
५. नी स X ग म X ध
६. X स रे X म प ध

उत्तरायता—

७. ध नी X रे ग म X
८. ध नी स X ग म X
९. ध X स रे X म प

शुद्ध षड्जा—

१०. X ध नी X रे ग म
११. X ध नी स X ग म
१२. प ध X स रे X म

मत्सरी कृता—

१३. म X ध नी X रे ग
१४. म X ध नी स X ग
१५. म प ध X स रे X

अश्वक्रान्ता—

१६. ग म X ध नी X रे
१७. ग म X ध नी स X
१८. X म प ध X स रे

अभिरुद्गता—

१९. रे ग म X ध नी X
२०. X ग म X ध नी स
२१. रे X म प ध X स

सौवीरी (मध्यम ग्राम)—

२२. म प ध X स रे X
२३. म प X नी स X ग

---

[1] पंच स्वराणां तु पंच विधमेव लक्षणम्। यथा षड्ज पंचम हीना ऋषभ पंचम हीना गान्धार निषाद हीना इति त्रयस्तानाः षड्ज ग्रामे। मध्यम ग्रामे तु गान्धार निषाद वद् धीना वृषभ धैवत हीनाविति द्वौ तनौ। एवं पंचस्वरा सर्वासु मूर्च्छनासु क्रियमाणास्तानाः पंच त्रशद् भवन्ति। षड्ज ग्राम एक विंशतिर्मध्यम ग्रामे चतुर्दश।

भरत० बंबई संस्करण, अध्याय २८

[पृ० २५ का फुट नोट]

हारिणाश्वा—

२४. X म प ध X स रे

२५. ग म प X नि स X

कलोप नता—

२६. रे X ग म प ध X स

२७. X ग म प X नि स

शुद्ध मध्या—

२८. स रे X म प ध X

२९. स X ग म प X नि

मार्गी—

३०. X स रे X म प ध

३१. नि स X ग म प X

पौरवी—

३२. ध X स रे X म प

३३. X नि स X ग म प

हृष्यका—

३४. प ध X स रे X म

३५. प X नि स X ग म

इस प्रकार उनचास षाडव तानों और पैंतीस औडुव तानों को जोड़ने से तानों की संख्या चौरासी होती है।[1]

[1] एव मेत एकत्र गम्यमानाश्चतुरशीति र्भवन्ति। भरत०, बंबई संस्करण, पृ० ४३६

तान पर दी गई टिप्पणी इस संबंध में देखें।

*मूरछना—

संगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक जाने में सातों स्वरों का आरोह अवरोह ग्राम के सातवें भाग का नाम मूर्च्छना है। भरत के मत से गाते समय गले को कंपाने से ही मूर्च्छना होती है और किसी किसी का मत है कि स्वर के सूक्ष्म विराम को ही मूर्च्छना कहते हैं। तीन ग्राम होने के कारण मूर्च्छनाएँ २१ होती हैं जिनका विवरण निम्न प्रकार से है।

षड्ज ग्राम	मध्यम ग्राम	गान्धार ग्राम
ललिता	पंचमा	रौद्री
मध्यमा	मत्सरी	ब्राह्मी
चित्रा	मृदुमध्या	वैष्णवी
रोहिणी	शुद्धा	खेदरी
मतंगजा	अंता	सुरा
सौवीरी	कलावती	नादावती
षड्मध्या	तीव्रा	विशाला।

मतान्तर से मूर्च्छनाओं के नाम इस प्रकार भी मिलते हैं—

उत्तर-मुद्रा	सौवीरी	नंदा
रजनी	हारिणाश्वा	विशाला
उत्तरायणी	कपोलनता	सोमपी
शुद्ध षड्जा	शुद्ध मध्या	विचित्रा
मत्सरीकृता	मार्गी	रोहिणी
अश्वक्रांता	पौरवी	सुखा
अभिरुता	मंदाकिनी	अलापी

॥ श्री ॥

परिशिष्ट ३

विशेष प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों की नामानुक्रमणिका

परिशिष्ट ४

वस्त्र तथा वस्त्रों संबंधी शब्दों की नामानुक्रमणिका

परिशिष्ट ५

आभूषणों की नामानुक्रमणिका

* श्री *

परिशिष्ट ६

छंदानुक्रमणिका